॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

अ. भा. जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी महाराज की शिष्या

कृष्णगढ़ महाराजाधिराज श्रीराजसिंहजी की महारानी श्रीमती ब्रजकुंवरीजी बांकावती

उपनाम "श्रीब्रजदासी" कृत

श्रीब्रजदासी-भागवत

[श्रीमद्भागवत महापुराण का भाषा-पद्यानुवाद]

(द्वितीय खण्ड)

प्रकाशक :

अ. भा. जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

किशनगढ़ - राजस्थान

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥
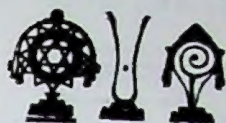
॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥ ॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

अ. भा. जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी की शिष्या,
कृष्णगढ़ महाराजाधिराज श्रीराजराजेश्वर श्रीराजसिंहजी की महारानी एवं श्रीनागरीदासजी की विमाता

श्रीमती ब्रजकुँवरीजी बांकावती उपनाम 'श्री ब्रजदासीजी' कृत

॥ श्री ब्रजदासी भागवत ॥

(श्रीमद्भागवत महापुराण भाषा पद्यानुवाद)

❀ द्वितीय खंड ❀

(श्रीमद्भागवत - नवम स्कंध से द्वादश स्कंध तक)

संरक्षक एवं प्रकाशक

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज
के लोकहितार्थ प्रेरणात्मक मनोरथ से
अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, श्रीनिम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद (राज.) के तत्वावधान में
भक्तप्रवर श्री बंकटलाल बाहेती, श्री ब्रजमोहन छापरवाल तथा
श्री प्रकाशचन्द्र बाहेती
के आर्थिक सौजन्य से प्रकाशित

सम्पादक एवं शोधकर्ता

डॉ. रामप्रसाद शर्मा, एम. ए. पीएच. डी.
श्रीनिम्बार्कभूषण, निवर्तमान हिन्दी विभागाध्यक्ष, किशनगढ़ (राज.)

वि. सं. २०५३ निम्बार्क सं. ५०९१ सन् १९९६ ई.

डी. टी. पी. निर्माता

गणेश ऑफसैट, 26, आदर्श नगर, अजमेर।

मुद्रक

दिशादृष्टि ऑफसैट प्रिंटिंग प्रेस, अजमेर।

मुद्रण व्यवस्थापक

श्री भँवरलाल उपाध्याय

(श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय, श्रीनिम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद की ओर से)

वितरक

(१) अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, श्रीनिम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद (राज.)

(२) श्रीजी की बड़ी कुंज, प्रताप बाजार श्रीवृन्दावन धाम (उ. प्र.)

(३) द्वारा - श्री बंकटलाल बाहेती, इचलकरंजी, श्री ब्रजमोहन छापरवाल, सूरत तथा श्री प्रकाशचन्द्र बाहेती, बम्बई

अन्य विवरण - (दो खंडों में प्रकाशित - पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध)

प्रथम संस्करण - एक हजार प्रतियाँ

न्यौछावर - 200

(परामर्श मण्डल)

।। श्रीसर्वेश्वरोजयति ।।

।। श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ।।

अ. भा. ज. श्री निम्बार्काचार्य पीठाधिपति श्री वृन्दावनदेवाचार्य जी की शिष्या

कृष्णगढ़ महाराजाधिराज श्रीराज राजेश्वर राजा श्रीराजसिंहजी की महाराणी

श्रीमती ब्रजकुँवरीजी बांकावती उपनाम ''श्रीब्रजदासी'' कृत

।। श्री ब्रजदासी - भागवत ।।

(श्रीमद्भागवत महापुराण का भाषा - पद्यानुवाद)

- द्वितीय खंड -

विषय - सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ संख्या
	नवम - स्कंध	
१.	वैवस्वत मनु के पुत्र राजा सद्युम्न की कथा	५९७
२.	पृषध्र आदि मनु के पांच पुत्रों का वंश	६००
३.	महर्षि च्यवन और सुकन्या का चरित्र; राजा सर्याति का वंश	६०३
४.	नाभाग और अम्बरीष की कथा	६०७
५.	दुर्वासाजी की दुःख निवृत्ति	६१३
६.	इक्ष्वाकु के वंश का वर्णन तथा मान्धाता और सौभरि ऋषि की कथा	६१५
७.	राजा त्रिशंकु और हरिश्चन्द्र की कथा	६२०
८.	सगर चरित्र	६२३
९.	भगीरथ - चरित्र और गंगावतरण	६२६
१०.	भगवान श्रीराम की लीलाओं का वर्णन	६३०
११.	भगवान श्रीराम की शेष लीलाओं का वर्णन	६३५
१२.	इक्ष्वाकु वंश के शेष राजाओं का वर्णन	६३८
१३.	राजा निमि के वंश का वर्णन	६४०
१४.	चन्द्रवंश का वर्णन	६४२
१५.	ऋचीक व जमदग्नि और परशुरामजी का चरित्र	६४६
१६.	परशुराम जी के द्वारा क्षत्रिय संहार और विश्वामित्र जी के वंश की कथा	६५०
१७.	क्षत्रवृद्ध, रजि आदि राजाओं के वंश का वर्णन	६५४
१८.	ययाति - चरित्र	६५५

दसम स्कंध (पूर्वार्द्ध)

दशम स्कंध - उत्तरार्द्ध

एकादश स्कंध

द्वादश स्कंध

॥ इति ॥ (पृ. १२६६)

॥ श्री सर्वेश्वरोजयति ॥

॥ श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

(कृष्णगढ़ महाराजाधिराज श्री राज राजेश्वर राजा श्री राजसिंघ जी की महाराणी श्रीमती ब्रजकुँवरी जी बाकांवती 'श्री ब्रजदासी' जी कृत श्रीमद्भागवत भाषा नवम स्कन्ध लिष्यते ॥)

॥ द्वितीय खंड ॥

॥ नवम स्कंध ॥

॥ अथ प्रथमोऽध्यायः ॥

(वैवस्वत मनु के पुत्र राजा सुद्युम्न की कथा)

(मंगलाचरण)

छप्पय - जयति गुरु वृन्दावन देव, जयति पीठ निम्बारक।
जय रसिक राजेस्वर कृस्नं, श्री वृन्दावन नाइक॥
जयति श्री बृषभांनु सुता, स्वामिनि सुष रासीय।
जयति श्री भागवत भगत, प्रभु चरन उपासीय॥
इन्ह पांइ क्रिपा परिनांम करि, ब्रजदासी आनंद भरि।
कहिहैं अबै स्कंध नवम कौं, किय आरंभ उमाह धरि॥ १ ॥

॥ अथाख्यान ॥

दोहा - अब बरनन हम्ह करत हैं, ससि सूरज कौ बंस॥
सोइ कथा ईस्यांन है, समझहुँ भेद प्रसंस॥ २ ॥

॥ राजोवाच ॥

राजा पूछत है कि हे, मुनि सुनिय जु सुकदेव॥
तुम्ह हम्ह सौं जो कछु कह्यौ, ताकौं लह्यौ जु भेव॥ ३ ॥
चवदहौं मन्वंतरन कौं, बरनन कियौ सुनाय॥
तामैं कह्यौ चरित्रहिं हरि, सौ हम्ह सुन्यौ सुभाय॥ ४ ॥
अरु राजा सत्यब्रत जो, द्रबिड़ दैस कौं राय॥
ताहि ग्यांन उपदेस किय, मच्छ प्रभू सुषदाय॥ ५ ॥
सौ राजा सत्यब्रत अबैं, रबि सुत प्रगट्यौ आय॥
बैवस्वत जिहिं नांम हुव, अरु मनु पदवी पाय॥ ६ ॥
तिन्हकैं आदि इछा कहूं, दस सुत अति अभिरांम॥
सौ तो तुम्ह बरनन करै, हम्ह जु सुनै सुत नांम॥ ७ ॥
तिन दसौंन कैं बंस अरु, उन्ह बंसी नरपाल॥
कीनैं हौहिं जु चरित्र जे, कहियै मुनि या काल॥ ८ ॥
हौहि चुकैं अरू हौहिंगैं, हैं पुनि अब जो राय॥
तिन्हकौं कहौ जु चरित्र मुनि, हम्हकूं भलैं सुनाय॥ ९ ॥

॥ श्री सूत उवाच ॥

सूत कहत है नृपति कैं, ऐसैं सुनिकैं बैंन॥
फिरि बोलै सुक देव जू, महामुक्ति कैं अैंन॥ १० ॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

नृप तुम्ह मनु वैवस्वत कौं, सुनौ बंस संछैप॥
सुनि न जात सत बरसहूं, जुत बिसतार प्रषैप॥ ११ ॥
जे सबकैं मारु हैं हैं, ईस्वर जें भगवांन॥
प्रलै काल कै समैं मैं, बैही रहै निदांन॥ १२ ॥
तिन्हकैं नाभी कंवल तैं, प्रगट भयौ मुष च्यार॥
जाकैं प्रगटैहुं पुत्र रिषि, मरीच्यादि उहिं बार॥ १३ ॥
जिन्हकैं कस्यप प्रगट हुवै, अदिति तिया तिन धांम॥
प्रगट भयै ता गरभ तैं, सूरज पुत्र अभिरांम॥ १४ ॥
सूरज कैं अस्त्री हुती, संग्या नांम सुढार॥
ताकैं सुत बैबस्वतु मनु, प्रगट भयौ निरधार॥ १५ ॥
हे नृप मनु बैबस्वतु कैं, हुती सुधरमा भांम॥
जाकैं प्रगटै पुत्रहिं दस, सुनियैं तिनकैं नांम॥ १६ ॥
नृग इष्वाकु पृषध्र कविधष्ट, दिष्ट अरु सरीयात॥
अरु नभग करूषक अवर, नरिष्यंत आदि बिष्यात॥ १७ ॥
अरु जब मनु बैबस्वतु कैं, हुतै पुत्रन अैं नांहिं॥
तब बसिष्ठ रिषि क्रिपा करि, आय नृपति ग्रह ठांहिं॥ १८ ॥
मित्राबरुण सुर नांम कौ, जिग्य बैबस्वतुहिं पास॥
करबायौ जु बसिष्ठ रिषि, वाहिं पुत्रहिं की आस॥ १९ ॥
अस्त्री मनु बैबस्वतु की, सरधा नांम सुढार॥
हौम करनिवारै द्विजनि, सुँ कहत भइ वहिं बार॥ २० ॥
अैसौं कीजै जो हौम, तुम्ह जांसु कन्या हौइ॥
उन्ह बैसैंहीं हौम की, आहुति अग्नि सुमौइ॥ २१ ॥
इला नांम प्रगटी कन्या, अग्नि कुंड कैं मांहिं॥
अदभुत सुंदर रूप जिहिं, ससि सम परत लषांहिं॥ २२ ॥
ताकौं लषि बैबस्वतु मनु, बोलै हौहि अप्रसंन॥
इहीं कन्या कइसैं भई, हुतौ पुत्रहिं कौं प्रस्न॥ २३ ॥
तुम्ह तौ आछैं मंत्र कैं, हौ द्विज जांननि हार॥
इहि अैसैं कइसैं भई, बात उलटि अनुसार॥ २४ ॥
सुनि अैं बचन बसिष्ठ जू, बोलै या अनुभाय॥
तिया तुम्हारी कौनुँ है, चरित समझियैं राय॥ २५ ॥
तिया तुम्हारी कैं कहैं, बिप्रनि हौम वारैंन॥
पढै सुता कौं मंत्र इह, तातैं भई सुषैंन॥ २६ ॥
करिहौं याकौं पुत्रहिं म्हैं, तुम्ह मानहुँ निरधार॥
यौं कहि हरि की अस्तुति किय, रिषि बसिष्ठ वहिं बार॥ २७ ॥

अरु कीनी बिनती इहै, सुता पुत्रहिं ह्वै जाहुँ॥
अैसी करहुँ क्रिपा अबै, हे स्वांमी जग नाहुँ॥ २८॥
तब दीनौं भगवांन वर, तासौं वाही बार॥
पुत्र सद्युमन जु नांम हुवै, पुत्री तैहिं निरधार॥ २९॥
सौ सद्युमन मंत्रीन जुत, ह्वै कैं अस्व सवार॥
कवच पहरि धनुवांन लैं, षैलन गयौ सिकार॥ ३०॥
गिरि सुमेरु की तरहठी, उत्तर दिसा की वौर॥
अस्थल भवानी सिंभू कौं, षंड इलाब्रत तौर॥ ३१॥
जांह जाय प्रापति भयौ, भाग्य जोग अनुसार॥
कुंअर सद्युमन बीचहुँ बन, मृगया करन बिहार॥ ३२॥
वांह जात ही सद्युमनहिं, निज संगिन संजूप॥
अस्त्रीहिं हौहिं गयौ अरु, घौडा घौडी रूप॥ ३३॥

॥ राजोवाच॥

नृप पूछत वा देस कौ, अैसौं कहा प्रताप॥
जांसौं सबहीं ह्वै गयै, अस्त्री पुरुष जु आप॥ ३४॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि सिव सिवा सौं, इक दिन मिलि अैकांत॥
करत हुतै जु बिलास सुष, निज मन ईछा तंत॥ ३५॥
जाहँ सिव कैं दरसन करन, निकसै रिषिगन जाय॥
उहिं ठाढै हुव लषि सिवा, पहरैं बस्त्र लजाय॥ ३६॥
निकसि उहां तैं रिषि चलै, गयै बद्रिका सुठौर॥
तब सिवनैं अति रीस करि, दियौ श्राप या तौर॥ ३७॥
अब तैं जो या ठौर मैं, पुरुष निकसि ह्वै आय॥
सोइ अस्त्री ह्वै जायगौ, मौ आग्यां अनुभाय॥ ३८॥
ता दिन तैं वा ठौर मैं, पुरुष कोउ नहिं जात॥
भूलैं जो कौउ जाइ तौं, ह्वै अस्त्री जु बिष्यात॥ ३९॥
तांह सद्युमन जु कुंअर लहि, अस्त्री रूप सुढार॥
फिरत हुतौ बिच बननि कैं, निज ईछा अनुसार॥ ४०॥
वाकौं ससिसुत देषि कैं, चाहत भयौ सुभाय॥
अरु बह तियहुँ चाहति भइ, ससि सुत कौं जुत चाय॥ ४१॥
बुध तैं वा तिय कैं भयौ, सुत पुरुरवां जु नांम॥
कुँअर सुद्ध मन यौं भयौ, तिया रूप उहिं ठांम॥ ४२॥
कुँवर रूप सद्युमन तबै, तिया रूप कै मांहिं॥
सुमिरन कियौ बसिष्ठ कौं, धारि ध्यांन हिय ठांहिं॥ ४३॥

तब बसिष्ठ वांह आयकैं, वाकीं दसा निहारि॥
करत भयै सिव अस्तुति वहिं, करन पुरुष निरधारि॥ ४४॥
बचन कहै सिव क्रिपा करि, इही सद्युमन कुमार॥
तिय रहिहैं इक मास इक, मास पुरुष आकार॥ ४५॥
राज करैं या रीति सौं, इहि अपनैं घर जाय॥
राज करत भौ सुद्ध मन, अैसौ सिव बर पाय॥ ४६॥
अैंक महीना तिय रहैं, पुरुष महीनां अैक॥
तासौं नहिं राजी भई, परजा हुती जितैक॥ ४७॥
पुत्र सद्युमनहूं कैं भयै, पुरुष समैं मैं तीन॥
सुनियै उतकल गय बिमल, यैं तिहुँ नांम प्रवीन॥ ४८॥
बैं तिहुँ दछिनी देस कैं, हौत जु भयै नृपाल॥
अरु सुत भयौ जु पुरूरवा, तिय सरूप कैं काल॥ ४९॥
ताहि प्रतिष्ठा नगर कौं, दैं कैं सद्युमन राज॥
करन तपस्या बन गयौ, छांड़ि सकल सुष साज॥ ५०॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥

(पृषध्र आदि मनु के पांच पुत्रों का वंश)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - सुक कहत कि सद्युमन सुत, बन गवन्यौ तप काज॥
तबै बैबस्वत मनु करि, चिंता सहित जु समाज॥ १॥
मनु बैबस्वत कामनां, करि सुत की चित मांहिं॥
करत भयै तपस्यां भलैं, जमुना जू कैं ठांहिं॥ २॥
किय प्रभु कौं सेवन भलैं, करि मन कर्म प्रवाकु॥
तब बैबस्वत कैं भयैं, दस सुत आदि इष्वाकु॥ ३॥
तिन्ह दसौंन कैं मध्य इक, पुत्र पृसध्र जू नांम॥
गौ रछया करिबै रह्यौ, रिषि बसिष्ठ कैं धांम॥ ४॥
अैक समैं घन राति कौं, बरषत हौ तिहिं ठांहिं॥
आय सिंघ पकरत भयौ, गाय षरिक कै मांहिं॥ ५॥
गाय डरपि भाजत समैं, गही सिंघ इक गाय॥
तब पृसध्र लैं कैं षडग, दौरि पहूँच्यौ जाय॥ ६॥

षड़ग चलायौ सिंघ परि, लग्यौ गाय कैं अंग॥
कांन कट्यौ इक सिंघ पैं, गौ सिर कट्यौ कुवंग॥ ७॥
जात रह्यौ भजि सिंघ तौ, निसि बिति भयौ संवार॥
तबै मूई लषि गाय दुष, कियौ पृसध्र अपार॥ ८॥
रिषि बसिष्ठ लषि मृतक गौ, दियौ पृसध्रहिं श्राप॥
नांहिं छत्री तूं सूद्र है, कियौ कुकर्म अमाप॥ ९॥
श्राप पृसध्रहिं यौं लग्यौ, तब बनहीं कैं मांहिं॥
फिरत रह्यौ तपस्या करत, चित धर प्रभु पद ठांहिं॥ १०॥
मिलैं सहज मैं जो कछू, करैजु भौजन आप॥
धारै आत्म बिचार चित, प्रभु पद ठौर सथाप॥ ११॥
वासुदेव भगवांन की, करत भयौ वहिं भक्ति॥
मन इंद्री बस कियै तज्यौ, सब निसंग यौं जक्ति॥ १२॥
जड बहिरौ अंध बावरौ, सौ निज रूप लषाय॥
फिरत भयौ बिच प्रिथ्वी कैं, हरि मैंहिं चित लगाय॥ १३॥
दावागनि बन मैं लगी, तामैं निज तन जारि॥
प्राप्त भयौ भगवांन कौ, सब निज कार्ज संवारि॥ १४॥
बैबस्वत मनु कौ कुँअर, अैक पृसध्र जु नांम॥
नाकी तौ इह गति भई, जानहुँ नृप गुन धांम॥ १५॥
बैबस्वत मनु कौं तनय, लघुकवि नांम कहाय॥
राज छौंडि तप करि भयौ, प्रभु कौ प्रापति जाय॥ १६॥
बिषै भोग कै करन की, बाकैं हुती न चाह॥
चित लगाय भगवांन मैं, पाई मुक्ति अथाह॥ १७॥
अरु इक कुँअर करूष हुव, बैबस्वत कैं धांम॥
तातैं छत्री प्रगट हुवै, कारूषैय जू नांम॥ १८॥
बैइ उत्तर दिसि वोर कैं, भयै ब्रह्मन्य नृपाल॥
करि सेवा ब्राह्मणन की, बाद्यौ सुजस बिसाल॥ १९॥
धष्ट नांम चोथौ कुँअर, बैबस्वत मनु गैहि॥
ताही सौं छत्री भयै, धारिष्ट नांम जु बैहि॥ २०॥
फेरी भयै छत्रीन तैं, बै ब्राह्मण निरधार॥
करत भयै द्विज कर्म कौ, तजि छत्रीन बिबहार॥ २१॥
मनु बैबस्वत कैं हुतौ, पंचम सुत नृग नांम॥
ताकैं स्वमति पुत्रहिं पुनि, भूत ज्योतिहीं ठांम॥ २२॥
भूत ज्योतिहिं कैं पुत्र वसु, ताकैं पुत्रहुँ प्रतीक॥
अरु प्रतीक कैं पुत्र हुवै, बोधबांन धार्मीक॥ २३॥

बोधवांन कैं पुत्र भयौ, बोधबांन ही नांम॥
पिता पुत्रन कैं अैकहीं, भयौ नांम अभिरांम॥२४॥
ताहीं कैं सुकन्या भई, बौधवती जिहिं नांम॥
सौ ब्याही जु सुदरसनहिं गुन जुत सुंदर वांम॥२५॥
मनु बैबस्वत कौ सुवन, छठौ नांम नरिस्यंत॥
रु चित्रसैंन ताकैं भयौ, जांकै रिछ बुधवंत॥२६॥
जाकैं हुव मीढ्वांन सुत, जिहिं सुत कूर्च जु नांम॥
इंद्रसैंन ताकैं भयौ, बीतिहौत्र जिहिं धांम॥२७॥
बीतहौत्र कैं सत्यश्रवा, जिहिं उरश्रवा सुपूत॥
देवदत्त ताकैं भयौ, तिहिं सुत अग्नि अभूत॥२८॥
तीन नांम तिहिं अग्नि कैं, भयै सुनहूं नृपाल॥
अग्निवेस्य कांनीन अरु, जातूकर्ण्य सुढाल॥२९॥
आगैं वाकैं बंस कै, ब्राह्मण भयै प्रसंस॥
बैबस्वत कौ दिष्ट सुत, जिहिं अब सुनियैं बंस॥३०॥
भयौ दिष्टि कैं पुत्रहिं जिहिं, नांम सुनहुँ नाभाग॥
हौय गयौ सौ वैस्य बहि, कुल मरजादा त्याग॥३१॥
भयौ भलंदन पुत्रहिं जिहिं, वत्स प्रीति सुत जास॥
जाकैं भयौ सुप्रांस सुत, प्रमति पुत्र हुवै तास॥३२॥
ताकै पुत्रहिं षनित्र हुव, जाकै चाषुस नांम॥
जांकै पुत्र हुवै विंविसति, रंभ पुत्रहिं जिहिं धांम॥३३॥
रु जिहिं सुत हुवै षनित्र तिहिं, पुत्र करंधम जु नांम॥
जांकै अवीषित हुव पुत्र, मरुति तिन्ह जू धांम॥३४॥
मरुवि नांम सुत सौ भयौ, चक्रवर्ती नर पाल॥
जिहिं जस पुहमि प्रसध्य है, बाढ्यौ महा बिसाल॥३५॥
पुत्रहिं अंगिरा कौ प्रगट, रिषि संवर्ति जु नांम॥
सौ जिग्य करावत भयौ, मरुति पास अभिरांम॥३६॥
मरुति नृपति कौ सौ भयौ, जिग्य कहूं कौं नांहिं॥
सामग्री जू सुबरन की, सकल भई जग मांहिं॥३७॥
सोम पांन करि जिग्य जिहिं, बासब हुवै संतुष्ट॥
पाई दछिनां बउत कछु, बिप्र भयै सबै पुष्ट॥३८॥
बैठे जिहिं जिग्य सभा मैं, बिस्वै देवा आय॥
वा जिग्य की कौ कहि सकैं, अधिक बषांनि बढाय॥३९॥
पुत्र मरुतहुँ कैं दम भयौ, राजबर्धन सुत जास॥
ताकैं सुधृत सुत भयौ, तिहिं सुत नर सुषरास॥४०॥

ताकैं केवल पुत्रहिं जिहिं, पुत्र बंधुमति जु नांम॥
बेगबांन जांकै भयौ, तिहिं सुत अति अभिरांम॥ ४१॥
जास सुवन त्रणबिन्दु सौ, अदभुत सुंदर सरूप॥
तिहुँ अलंबुषा अपसरा, ब्याहत भई अनूप॥ ४२॥
तांकै इक कन्या भई जास, इडविडा जिहं सुनांम॥
सौ ब्याही विश्रवा तिहिं, सुत कुबैर अभिरांम॥ ४३॥
सून्य बंधु धूम्रकेत रु, बिसाल पुत्र अैं तीन॥
भयै नृपति तृणबिन्दु कैं, सुनियैं नृपति प्रवीन॥ ४४॥
नगरी बैसाली रची, अदभुत कुँअर बिसाल॥
हेमचन्द्र तांकै भयौ, पुत्र सुपरम जु रसाल॥ ४५॥
धूमराष तांकै भयौ, सुत संजम हुव जास॥
जांकै सुत सहदेव भौ, ताकै देवज कृसास॥ ४६॥
जांकै पुत्रहिं भयौ प्रगट, सोमदत्त भयौ नांम॥
अस्वमेध करि जिग्य जिन्हि, लही मुक्ति अभिरांम॥ ४७॥
सुमति पुत्र जांकैंहिं भयौ, जिहिं जनमैंजय पूत॥
हुव बिसाल कै बंस मैं, इतै नृपति अदभूत॥ ४८॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते द्वितीयोऽध्यायः ॥ २॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

(महर्षि च्यवन और सुकन्या का चरित्र तथा राजा सर्याति का वंश)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि मनु बैबस्वत, जाकैं पुत्र सरियात॥
बडौ बेद सुबक्ता भयौ, प्रिथवी बिच बिष्यात॥ १॥
रिषि अंगिरा कैं जिग्य मैं, जिन किय बेद बिधांन॥
रही सुकन्या नांम की, जांकै सुता सुजांन॥ २॥
ताकौ लै सरियात नृप, जात भयै बन मांहिं॥
हौ आश्रम रिष च्यमन कौ, वाही वन की ठांहिं॥ ३॥
सहित सषिन कन्या बहै, फिरत हुती बन ठौर॥
तहँ बांबी मैं द्वै लषै, प्रगट दौ जुगनुँ तौर॥ ४॥
नैत्र हुतै रिषि च्यमन कैं, दौऊ वांहिं निदांन॥
तिन्हमैं कांटै सौं कियौ, छिद्र कन्या अनजांन॥ ५॥

बहि बांबी कै मधि तैं, निकसि चली रक्तधार॥
नृप सैनिक कैं रुकि गयै, मल रु मूत्र बहिं बार॥ ६॥
तब राजा बोल्यौ सुन्यौ, जिग्य हुवै हैं इ ठांहिं॥
तुम्ह नैं कछु रिषि च्यमन की, करी चूक तौ नांहिं॥ ७॥
तब बौली कन्या नृपति, वहै सुकन्या जु नांम॥
चमकतही ह्वै जोति सी, ज्यौं नछित्र व्यौम ठांम॥ ८॥
सौ म्हैं डारे छेदि तिनि, कांटै तैं अनजांन॥
इही चूक मो तैं बनी, सुनियैं पिता निदांन॥ ९॥
अै कन्या कै बचन सुनि, डरपि नृपति सरयात॥
धसि बांबी मधि प्रसंन किय, च्यमन रिषिहिं बहुभांत॥ १०॥
रिषि कौं जांनि मनोर्थ नृप, दिय निज सुता बिबांहि॥
तब हुव सब सैनिक सुषी, नृप गौ अपनीं ठांहिं॥ ११॥
बहै सुकन्या नृपति सुता, ह्वै सैवा आधीन॥
प्रसंन्न कियौ रिषि च्यमन कौ, आछी भांति प्रवीन॥ १२॥
अैंक दिनां रिषि च्यमन कैं, आश्रम बिचि निरधार॥
बैदस्वर्य के भ्रात दोऊ, आयै अस्वनि कुमार॥ १३॥
तिन्हकी पूजा करि च्यमनि, रिषि बोलै या भाय॥
हम्हहीं बृद्ध तैं तरुनि करि, दीजै किहूं उपाय॥ १४॥
जो तुम्ह हम्हहीं तरुनि करि, दैहौं किहूं प्रकार॥
तौ हम्ह तुम्हकौं दैहिंगैं, जिग्य भाग निरधार॥ १५॥
अब तांई तुम्हकौं किंहू, जिग्य भाग दिय नांहिं॥
अैसौं करि यौं रूप मो, जांसौ तिय मुहिं चांहिं॥ १६॥
इहिं सुनिकैं बौलत भयै, अैसैं अस्विनि कुमार॥
अैक सरोवर सिद्ध कौ, है इह रच्यौ सुढार॥ १७॥
यामै करौ सनांन तुम्ह, हे रिषि च्यमन उदार॥
जासौं जोबनबंत तुम्ह, ह्वै हौं भलैं प्रकार॥ १८॥
यौं कहि अस्वनि कुमार रिषि, कौं करवायौ सनांन॥
अरु सनांन किय आपहूं, रिषि कैं संग निदांन॥ १९॥
निकसै वा कुंड तैं तिहूं, करि सनांन उहिं बार॥
अदभुत सुंदर रूप धरि, तीनौं इक अनुसार॥ २०॥
पहरैं पंकज माल अरु, भूषण बस्त्र सुढार॥
तिहैं सुकन्या देषि कैं, किय संदेह बिचार॥ २१॥
बृद्ध भयै रिषि च्यमनि कच, स्वेत झुरहिं तन ठांहिं॥
तातैं सोची सुकन्या, मो पति कौ इन्ह मांहिं॥ २२॥

अस्तुति जु अस्वनि कुमार की, तबै सुकन्या जु कीन॥
अस्वनि कुमार प्रसंन ह्वै, पति बताय तिहुँ दीन॥ २३॥
याकैं पतिब्रत तैं प्रसंन, ह्वै अस्वनि जू कुमार॥
चढि बिमांन व्है सुवर्ग कौं, गवन कियौ निरधार॥ २४॥
कियौ मनोरथ जिग्य कौं, तब राजा सरयात॥
तब लैं बहि सुकन्या रिषिहिं, बन गवन्यौ अग्यात॥ २५॥
तहँ इक रबि सम पुरुष लषि, निज सुकन्या कैं पास॥
अति अप्रसंन चित मांहिं हुव, राजा धर्म निवास॥ २६॥
चरन छुयैं सुकन्या तिहुँ न, दिय नृप आसीर्बाद॥
अरु अैसैं बोल्यौ बचन, चित लहि अधिक बिषाद॥ २७॥
तैनैं इही का कीनौं, हे सुकन्या बुधि हीन॥
लियौ कलंक बिचार बिनु, तैं निज कुलकौं दीन॥ २८॥
बंदन सब रिषि च्यमन कौं, करत लौक निरधार॥
तांहिं तज्यौं तैं बृद्ध लषि, मूरषता अनुसार॥ २९॥
और पुरुष तैं कियौ पति, अंगीकार अनर्थ॥
उपजि ऊँचै कुल मैं बुधि, तुव हुवै किहूँ अर्थ॥ ३०॥
बंस पिता पति दुहुँन कौं, दियौ नरक मैं डारि॥
इही सुनि सुकन्या बहुरि, बौलत भई सम्हारि॥ ३१॥
इह जँवाइ रावरौ है, पिता जु रिषि निरधार॥
और कौहुं है नांहिनैं, सुनियैं भेद प्रकार॥ ३२॥
यौं कहिकैं इन सब कही, तरुन हौंन की बात॥
तबै पुत्री सौं प्रसंन ह्वै, मिलै नृपति सरयात॥ ३३॥
रिषिहिं जुत निज कन्या नृपति, अपनैं घर लैं आय॥
करत भयौ नृप जिग्य कौं, बड आरंभ रचाय॥ ३४॥
भाग च्यमन रिषि जिग्य मैं, अस्वनि कुमारहिं दीन॥
इंद्र च्यमन रिषि कौ हतन, बज्र रीस करि कीन॥ ३५॥
कह्यौकि क्यूं रिषि च्यमन किय, अस्वनि कुमारहिं भाग॥
आयौ रिषि मारिबै कौं, क्रौध बढाय अथाग॥ ३६॥
तबै च्यमन रिषि आपनैं, दीरघ तेज प्रभाय॥
भुजा थामि राषत भयै, बासब की बड दाय॥ ३७॥
बज्र चलाय सक्यौ नांहिं, बासब किहूं प्रकार॥
जिग्य भाग तब तैं लहन, लागै अस्वनि कुमार॥ ३८॥
इहि लौं इन्हकौं जांनिकैं, बैंद सुरनि कैं मांहिं॥
देत रहै हैं जिग्य कौं, इन्हैं भाग कौ नांहिं॥ ३९॥

बैद कर्म निंदत महा, कहियतु बेदन मध्य॥
जासौं इन्हें दियौ न किहुं, जिग्य भाग सु प्रसध्य॥ ४० ॥
भूरिषेन उतानबर्हि, आनर्त अरु यैं तीन॥
पुत्र नृपति सरयातुहुँ कैं, प्रगटै परम प्रवीन॥ ४१ ॥
पुत्र भयौ जू आनर्त कैं, रैवत गुन सुषधांम॥
पुरी रची जिनि सिंधु बिच, कुसाथली जिहँ नांम॥ ४२ ॥
राज करत भौ तां रही, जुत समाल अभिरांम॥
तांकै सौ सुत प्रगट हुव, बडौ कुकदमी नांम॥ ४३ ॥
सौइ कुकदमी निज सुता, लै गवन्यौ बिधि पास॥
देहुँ कौनुँकौं मो सुता, इह पूछत धरि आस॥ ४४ ॥
गावत है गंधर्ब चुप, छिन इक मैं उहिं बार॥
जबै उछव पूरन भयौ, बिधि सुं करि नमसकार॥ ४५ ॥
तब बिधि सौं बोल्यौ नृपति, इह मो सुता सुढार॥
देहुँ कौनुँकौं सौ कहौ, मो सौं आनन च्यार॥ ४६ ॥
तब बिधि हंसि अैसैं कह्यौ, हे राजा भुव ठौर॥
तू लषि आयौ हौ नृपति, बडे बडे सुभ तौर॥ ४७ ॥
तिन्हकैं सुत नातीन जुत, रह्यौ बंस पूत नांहिं॥
सौ छिन इक बीत्यौ रह्यौ, ठाढौ तू या ठांहिं॥ ४८ ॥
इतनैं मैं भुव लौक कैं, बिच तौ समैं प्रकार॥
बीस रू सत जुग चौकरी, हुव वितीत निरधार॥ ४९ ॥
तातैं अब भुव लौक मैं, संकरषन अवतार॥
प्रगट भयै भगवांन कैं, अदभुत रूप सुढार॥ ५० ॥
तिन्हकौं देहुँ बिबाहि तुम्ह, निज कन्या लै जाय॥
टारन कौं भुवभार वैं, प्रगटै हैं सुषदाय॥ ५१ ॥
उन्हकौं नांम जु जगत कौं, करत पवित्र जु सुभाय॥
इही सुनि नृप कन्या सहित, अपनीं नगरी आय॥ ५२ ॥
इहां कुबैर जछ दुष दिय, नगरी मैं जू आय॥
तिन्ह डर सौं नृप भ्रात सब, गयै दिसान भजाय॥ ५३ ॥
हलधर जु कौ ब्याह दिय, नृप कन्याहिं सुष पाय॥
गवन्यौ बद्रीनाथ दिसी, तपस्या मैं चित लाय॥ ५४ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

(नाभाग और अम्बरीष की कथा)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - **सुक कहत कि सुनि नृपति मनु, बैबस्वत कौ पूत॥**
नभग नांम हौ जास अब, कहौं बंस अदभूत॥ १॥

चौपई - सुनौं नभग कौं सुत नाभाग। ह्वै ब्रह्मचारी करि ग्रह त्याग॥
गयौ पढन कौं गुरु कैं गैह। ता पाछैं भायन बिन नैह॥ २॥
बांटि पिता कौं धन सब लीन। याकौं बांट नांहिनैं कीन॥
तब पढि इह अपनैं घरि आय। भायन सौं कहि बचन सुनाय॥ ३॥
म्हेरौ बांट कांह है भाइ। सौ अब हम्हकूं देहुँ बताइ॥
यौं सुनिकैं यौं बोलै भ्रात। तौ बँट मैं हम्ह दीनौं तात॥ ४॥
अब नाभाग पिता पैं आय। भेद पिता कौं सकल सुनाय॥
कह्यौकि तुम्ह म्हेरै बंट आय। धन भायन लिय म्है तुम्ह पाय॥ ५॥
इहि सुनि बोल्यौ पिता सचाहिं। तू का करिहैं लै कैं मोहिं॥
अैक उपाय बताऊँ तोहि। म्है कहूं तुम्हहीं करो सोहि॥ ६॥
इहां अंगिरा रिषि कौं बंस। जिग्य करत है बिप्र प्रसंस॥
तांह वे जिग्य कर्महिं मांहिं। परत संदेह भुलि भुलि जांहिं॥ ७॥
तिन्हैं बिस्व देवा कैं जाप। दोय सूक्त तू देहुँ संजाप॥
बै प्रसंन ह्वै तोकौं दैहिं। जो कछु धन जिग्य बिच बचैंहिं॥ ८॥
इह सुनि बांह गयौ नाभाग। जिग्य करत वे द्विज जिहँ जाग॥
दियैं द्विजन कौं मंत्र बताय। प्रसंन भये बे बिप्र सुभाय॥ ९॥
धन जो बच्यौ जिग्य कै मांहिं। सौ याकौं दै कैं उहिं ठांहिं॥
रिषिन स्वर्ग कौं गवन जु कीन। इन्ह नाभाग बच्च्यौ धन लीन॥ १०॥
तांह अब उत्तर दिस तैं अैक। आयौ पुरुष जु सहित बिबैक॥
स्यांम रूप अैसी बिधि बोलि। सत्य नाभाग कुँअर कौं तौलि॥ ११॥
इहि धन तौ है निश्चै म्हैर। तू कइसैं लैं हैं नहिं तैर॥
कहि नाभाग रिषिन मुहि दीन। म्हैं निज मन तैं नांहिंन लीन॥ १२॥
फिरि बहि पुरुष कह्यौ समुझाइ। तू तौं तातहिं पूछौ जाइ॥
बहि जो कहिहैं बचन सु अबैहिं। सु हम्ह तुम्ह मानैगैं सबैहिं॥ १३॥
तब नाभाग पिता पैं आय। कह्यौ भेद सब मर्म सुनाय॥
पिता समझि कैं अैसैं जोहिं। अहो पुत्र बे सिव हैं सोहिं॥ १४॥
बचै कछु जो जिग्य कैं मांहिं। सौ सिव भाग रिषिन ठहरांहिं॥
तातैं देहुँ उन्हहिं लै जांन। तू मति लैहुँ पुत्र बुधिवांन॥ १५॥
तब नाभाग आय सिव पास। बोल्यौ बचन जु सहित हुलास॥

भाग तुम्हारौ इह निरधार। लीजै आपु भलैं अनुसार॥ १६॥
आग्या इही पिता मुहि दीन। सोई सीस धारि म्हैं लीन॥
हौं तुम्हकौं अब करत प्रनांम। पारबती बर सिव निहकांम॥ १७॥

दोहा - तब सिव बोलै तो पिता, कहै धर्म कैं बैंन॥
अरु तू हूं बौलत भयौ, सांचै बचन सुषैंन॥ १८॥
तातैं करिहौं तौहि म्हैं, भलैं ग्यांन उपदैस॥
जासौं हौहिं प्रसंन प्रभू, परम पुरुष अषिलैस॥ १९॥
यौं कहि सिव उपदेस करि, अदभुत पूरन ग्यांन॥
अरु धनहूं दै कैं भयै, आप सु अंतर ध्यांन॥ २०॥
इही चरित्र जो कौऊ सुनैं, सांझ प्रात व मध्यांन॥
सौ ग्याता हुव मंत्र कौ, पावै मुक्ति सथांन॥ २१॥
सुपुत्र भयौ नाभाग कैं, अंबरीष जिहिं नांम॥
जाहिं लग्यौ नहिं श्राप द्विज, अति बैष्णव अभिरांम॥ २२॥

॥ राजोवाच॥

श्री सुक सौं पूछत भयौ, भक्त जु परीछित राय॥
अंबरीष नृप कौं चरित, कहियै भलैं बनाय॥ २३॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक बोलै अंबरीष नृप, ताकैं धन अधिकाय॥
सप्त दीप पति अवनि कौं, अंबरीष हुव राय॥ २४॥
पै राजा लछमी लषी, निश्चै सुपन समांन॥
अरु बिचार कीनौं इहै, अपनैं हिर्दै सथांन॥ २५॥
लछमी कर प्राणीन कैं, प्रगटत है अग्यांन॥
अहंता ममता बढि अधिक, हौत सुधारि निदांन॥ २६॥
परम भक्ति नृप कैं रहै, प्रभु अरु साधन मांहिं॥
राजऔर पदारथ सब, मृतिका सम ठहरांहिं॥ २७॥
मन लाग्यौ श्रीकृस्नं कैं, चरन कँवल कैं मांहिं॥
बचनन सौं बरनन करत, भयौ प्रभू गुन चांहिं॥ २८॥
कानन सूं हरि की कथा, सुनत भयौ चित लाय॥
हाथन सूं लीपत भयौ, प्रभु मंदिर सुषपाय॥ २९॥
प्रभु सरूप निरषत भयौ, नैत्रन कैं अनुसार॥
साधुन सौं निज अंग करि, मिलत भयौ निरधार॥ ३०॥
तुलसी पद प्रभु चरन की, तिहूँ सुगंध सुढार॥
नृपति नासिका तैं भयौ, लैत भलैं अनुसार॥ ३१॥
रु रसना सौं लैत भयौ, महाप्रसाद सुस्वाद॥
पायन सौं तीरथ करत, भयौ धरत अहलाद॥ ३२॥

सिरसौं प्रभुहिं प्रनांम किय, नित प्रति सहित हुलास॥
धरत भयौ मन कांमना, हौहुँ प्रभू कौं दास॥ ३३॥
और कांमना नहिं कछू, करत भयौ मन ठांहिं॥
कर्म समर्पित दैहि बह, सदा प्रभू कैं मांहिं॥ ३४॥
बैस्नव अरु ब्राह्मण कहै, ताही रीति प्रभाय॥
नृपति प्रजा की करत भौ, रिछया अति सुषदाय॥ ३५॥
बउत दछिनां सहित कियैं, नृपति जिग्य अस्वमेध॥
भक्ति धरम धारी महा, यांहिं प्रकृति कौं बेध॥ ३६॥
निर्जल धनु देस मधि बे, नदी सरस्वती तीर॥
जिग्य करवायौ गौतम, असित बसिष्ठ मति धीर॥ ३७॥
जिहिं जिग्य मैं रिषि सभा कैं, बैठन हार सु जांन॥
और देवता अैकसैं, भयै सुसौभा मांन॥ ३८॥
मनुष जिहिं नृप राज मैं न, चहै स्वर्ग सुष कंद॥
कहत सुनत हरि की कथा, सब रहि बिच आनंद॥ ३९॥
हरि भक्तन कैं स्वर्गहूं, की न हौत है चाह॥
प्रभु सौं प्रीति लगाइ कैं, लहत परम पद लाह॥ ४०॥
अैसैं राजा भक्ति तप, अपनौं धरम निबांहिं॥
अधिक प्रसंन भगवांन कौ, करत भयौ सुषचांहिं॥ ४१॥
त्याग कियौ सब संग कौ, समझि नृपति तत्व ग्यांन॥
हरि भक्तन कौ संग इक, करत भयौ बुधिवांन॥ ४२॥
घर अस्त्री सुतबंधु धन, असु गज रतन भंडार॥
बस्त्र आभरन रतन अैं, बस्त सकल निरधार॥ ४३॥
इन्हकौं नृप जांनत भयौ, सदा झूठ अनुसार॥
सत्य अैक भगवांन ही, जांनै भलैं प्रकार॥ ४४॥
प्रसंन हौय नृप भक्त सौं, प्रभू गरीब निबाज॥
चक्र सुदरसन नृपति पैं, राष्यौ रिछया काज॥ ४५॥
नृप अस्त्री जुत उमगि कैं, अैक बरस उनमान॥
लैत भयौ अैकादसी, ब्रत कौं नेम सुजांन॥ ४६॥
इक दिन कार्तिक मास मैं, करि त्रिय निस उपवास॥
हरि की पूजा करत भौ, बिच मधुपुरी निवास॥ ४७॥
धूपदीप फल फूल सौं, विधिवत पूजा ठांनि॥
द्विजनि जांनि हरि रूप नृप, पूजत भयौ निदांनि॥ ४८॥
श्रृंग हेम मय लसत अरु, रजत मई पुर ठौर॥
भलै बस्त्र जुत बच्छ जुत, तरुन उदार सुतौर॥ ४९॥

ऐसीं छह अर्बुद गऊ, दई द्विजन कौं राय॥
अरु आछे भोजन दियै, जो बिप्रनि चित्त चाय॥५०॥
दिवस द्वादसी कौं नृपति, बिप्रननि आग्यां पाइ॥
चाह्यौ करिबैं पारनौं, द्वादसि कैं अनुभाइ॥५१॥
दुरबासा रिषि ता समैं, आयै राजा पास॥
नृप उठि ठाढे ह्वै कियै, बंदन सहित हुलास॥५२॥
आसन दै पूजा करी, बिनती करत नृपाल॥
आजि हम्हारै ही करौ, भोजन अहो कृपाल॥५३॥
दुरवासा रिषि मानिकैं, नौतौ आपु निमित्त॥
जमुना मैं करिबै गयै, हुतै जु कछु नितकृत॥५४॥
ऐक घरी ही द्वादसी, रहि जु गई बहिं बार॥
ताही कैं मधि पारनौं, नृपहिं कर्यौ निरधार॥५५॥
दुरवासा आयै नांहिं, उन्ह बिनु भोजन दीन॥
राजा कइसैं पारनौं, आपुन करैं प्रवीन॥५६॥
इहै धर्म संकट पर्यौ, राजा कौं उहिं बार॥
तब राजा बाह्मणन सौं, पूछत भयौ बिचार॥५७॥
बिन जिमायैंहिं बिप्र कौं, जीमूं तौ है दोष॥
अरु बिन जीमैं द्वादसी, हौय जात है ओष॥५८॥
बीति द्वादसी जाय तौ, सधै पारनौं नांहिं॥
तौ म्हेरौ ब्रत भंग ह्वै, तिहुँ इलाज कहुँ नांहिं॥५९॥
तातैं मो बतावहुँ तुम्ह, हे द्विज ऐसी रीति॥
जासौं मोहि लगैं न अघ, बेद बिदित है नीति॥६०॥
तब द्विज आग्यां पाइ नृप, नीर आचमन लीन॥
दुवादसी कौ पारनौं, ऐसैं साधन कीन॥६१॥
करत ध्यांन भगवांन कौं, दुरवासा मग चांहिं॥
अम्बरीष राजै भलैं, बैठे निज ग्रह ठांहिं॥६२॥
जमुना तैं ताही समैं, दुरवासा रिषि आय॥
जांनि गयै जल आचमन, जौ लीनौं हौ राय॥६३॥
दुरवासा कैं क्रोध अति, बाढ्यौ चढि गइ भौंहि॥
ठाढे जौरै हाथि नृप, दुरवासा कैं सौंहिं॥६४॥
दुरवासा जिहिं नृपति सौं, बोलै या अनुसार॥
इह राजा है कूर अति, लछमी तैं मतवार॥६५॥
बिस्नु भक्त इह नृप नांहिं, धर्म उलंघन कीन॥
मौहि जिमावैहीं बिना, इन्ह भौजन करि लीन॥६६॥

ताकौं फल म्हैं याहि अब, दिषावतहुँ या बार॥
रिषि यौं कहिकैं प्रिथी पर, पटकी जटा उषार॥ ६७॥
काल अग्नि सम प्रगट हुवि, जासौं कृत्या अैक॥
लैं कृपांन कर नृपति पैं, दौरी बिनां बिबैक॥ ६८॥
चल्यौ नांहिं ठाढौ रह्यौ, राजा बाही ठौर॥
कछु मन मैं लायैं नांहिं, प्रभू भरोसै तौर॥ ६९॥
चक्र सुदर्सन नृपति पैं, नृप की रिछया काज॥
राष्यौ हौ करता पुरुस, प्रभू गरीब निवाज॥ ७०॥
बही सुदरसन चक्र कियै, कृत्या भसम निदांन॥
तब दुरवासा डरपि कैं, भजैं भूलि अभिमांन॥ ७१॥
चक्र सुदरसन लगत भौ, दुरासा की पीठ॥
गिरि सुमेर की गुफा मैं, रिषि दुरि भयै अदीठ॥ ७२॥
प्रिथी दिसा आकास गिर, सुवर्ग सिंधु या पाताल॥
इन्द्र आदि जु सब लोक की, जितनी ठौर रसाल॥ ७३॥
दुरवासा जहँ जहँ फिर्यौं, ताहँ ताहँ निज संग॥
चक्र सुदरसन आवतौ, दैषत भयौ अभंग॥ ७४॥
दुरवासा बिधि कै सरन, जाय कहैं यौं बैंन॥
चक्र सुदरसन तैं करौ, तुम्ह मो रिछ्या सुषैंन॥ ७५॥

॥ ब्रह्मोवाच॥

बिधि बोलै जा प्रभू की, भौंहिं तिरछ कैं मध्य॥
नष्ट हौत संसार मो, अस्थल जुत सुप्रसध्य॥ ७६॥
सिव इंद्रादिक दिछ भृगु, परजापति अवनीस॥
मो जुत सब जा प्रभू की, आग्यां राषत सीस॥ ७७॥
तातैं हम्ह आधीन हैं, वा प्रभु कैं सब कौय॥
हे दुरवासा तौ रिछ्या, मो पै सकत न हौय॥ ७८॥
इह सुनि दुरवासा गयै, सिव सरनैं कैलास॥
अब अैसैं बौलत भयै, सिवहूं ग्यांन निवास॥ ७९॥

॥ श्री रुद्र उवाच॥

जिन्ह अनैंक ब्रह्मांड की, रचना किय करतार॥
तिन्हमैं हम्हसैहूं कैइ, थापै हैं निरधार॥ ८०॥
बैठि यैक ब्रह्मांड मैं, हम्ह मांनत अभिमांन॥
जांनत हौं हम्हहीं बडै, हैं लघु सकल जहांन॥ ८१॥
नारद सनत कुमार बिधि, म्हैं रिषि मारीचादि॥
धर्म कपिल आसुरि रु सिध, ग्यांनी दइबल आदि॥ ८२॥

अैं सब हम्ह माया मुहित, लषत रहत निरधार॥
जा प्रभु की या प्रकृति कौं, पाय सकत नहिं पार॥ ८३॥
जा प्रभु कौ इह है सही, चक्र सुदरसन सस्त्र॥
तासौं बै करिहैं रिछ्या, गहहु सरन उन्ह अस्त्र॥ ८४॥
रिषि गवन्यौ बैकुंठ कौं, इह सुनि हौय निरास॥
रमां सहित सौभित जांह, हरि आनंद निवास॥ ८५॥
चक्र सुदरसन तैं जरत, कांपत लहि संताप॥
तांय परे हरि चरन पैं, दुरवासा रिषि आप॥ ८६॥
अरु यौं बोल्यौ हे प्रभू, हौ विस्बपालक आप॥
म्हैं अपराधी हौं अबैं, छमा करहुँ मो पाप॥ ८७॥
प्रभू रावरै भक्त कौं, म्हैं कीनौं अपराध॥
म्हैं प्रताप नहिं रावरौ, जान्यौ प्रभू अगाध॥ ८८॥
तुम्ह अब मो रिछया करौ, हे स्वांमी सुषधांम॥
पापीहूं सुभ गति लहत, लियै तुम्हारौ नांम॥ ८९॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

इह सुनिकैं बौलत भयै, भक्तबछल भगवांन॥
हे ब्राह्मण सुनि कहत हौं, जो निश्चै बंधान॥ ९०॥
मम भक्तननि आधीन हूं, नहिं म्हैं मो आधीन॥
मो कौं अति प्रिय साध हैं, जिन्ह मो मन हरि लीन॥ ९१॥
म्हैं भक्तननि बिनु आपहूं, कौ चाहत हौं नांहिं॥
अरु लछमीहूं की नाहिं, धरत चाह चित्त ठांहिं॥ ९२॥
म्हैं साधुन की गति सही, अरु म्हैरी गति साधु॥
साधुनहीं कौं करत हौं, म्हैं निसदिन आराधु॥ ९३॥
स्वजन पुत्र धर प्राण तिय, इहै लोक परलोक॥
सब तजि आवत सरन मो, अति सनेह की वोक॥ ९४॥
तिन्हकौं म्हैं कइसैं तजौं, तजैं लगत है लाज॥
भक्तबछल मोह बिरदकी, सब जग जगी आवाज॥ ९५॥
अपनौं मन म्हैरे बिषैं, दीनौं जिननि लगाय॥
समदरसी सब ठौर जैं, मुहि बसि करत सुभाय॥ ९६॥
जइसैं पति कौं बसि करैं, पतिबरता ज्यौं नारि॥
ज्यूंही मोकौ बसि करत, म्हैरै साधु सुढारि॥ ९७॥
मुक्तिहूं च्यार प्रकार की, चहत साधु मो नांहिं॥
तैं स्वर्गादिक की कहा, धरैं चाह मन मांहिं॥ ९८॥
म्हैं साधुन कौं हिदैं मो, हिदैं साधु सुभ ढार॥
साधुन कैं अपराध सौं, बुरौ हौत निरधार॥ ९९॥

और कछू मो साधु जन, मो बिनु जांनत नांहिं॥
अरु म्हैं साधुन बिनु कछू, नहिं जांनत चित्त ठांहिं॥ १००॥
तातैं यैक उपाय म्है, तौंकौं देत बतांहिं॥
जाकौं किय अपराध तुम्ह, जाहू जिहिं सिर नांहिं॥ १०१॥
बिद्या रु तपस्या द्विजन की, दाता मुक्तिहुँ निदांन॥
अैहीं बिचार कुबुधिकौं, दुषदाता पहचांन॥ १०२॥
तातैं हे रिषि जाय तुम्ह, अम्बरीष कैं पास॥
छमा कराबहु चूक तब, ह्वैहुँ कल्यांन प्रकास॥ १०३॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ पंचमोऽध्यायः ॥

(दुर्वासा जी की दुःख निवृत्ति)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि प्रभु कैं बचन, दुरवासा धरि सीस॥
चक्र सुदरसन सौं डरपि, गयै निकट अवनीस॥ १॥
अम्बरीष नृप कैं चरन, छुवत भयौ रिषि जाय॥
जासौं अति लज्जित भयौ, राजा चित सकुचाय॥ २॥
आई नृप कैं चित क्रिपा, रिषि की दया प्रभाय॥
चक्र सुदरसन की तबैं, करी अस्तुति या भाय॥ ३॥

॥ अम्बरीष उवाच॥

रबि ससि प्रिथवी अग्नि जल, तनमात्रा नभ वाय॥
इंद्री जुत इन सबन कैं, तुम्हहीं रूप सुभाय॥ ४॥
तुम्ह मधि आरा सहस हैं, हौ हरि कैं प्रिय दास॥
तुम्हकौं करत प्रनांम म्हैं, चितधर अधिक हुलास॥ ५॥
तुम्ह सब सस्त्रन कैं सदा, करता नास निदांन॥
अैसौं कीजै हौय जब, जामैं द्विज कल्यांन॥ ६॥
लौकपाल जिग्य धर्म कैं, अरु अमृत औ सत्य॥
इन्ह सबकैं आत्मा प्रभू, तुम्ह जिन तेज प्रछत्य॥ ७॥
अषिल धर्म कैं तुम्ह सही, पालक प्रगट निदांन॥
असुर अधरमी जारिबै, तुम्ह हौ अग्नि समांन॥ ८॥
तुम्हहिं रछक त्रयलोक कैं, अति उज्जल तुम्ह कांति॥
बेगि तुम्हारौ मन जु सम, अदभुत करम सुभांति॥ ९॥

है प्रकास रबि आदि मैं, तुम्हरौ ही निरधार ॥
तुम्ह महिमां आवत नांहिं, कहिबैं कैं अनुसार ॥ १० ॥
जबै चलावत हरि तुम्हैं, सत्रुहूं तन अनुभाय ॥
तब तुम्ह दानव दइत कैं, दल बिच पैठ रिसाय ॥ ११ ॥
बाहु चरन सिर अरिन कैं, काटत औसर पाय ॥
यौं सौभित हौ जुद्ध मैं, दुष्टनि काल लषाय ॥ १२ ॥
राषै दुष्टनि मारिबै, प्रभु तुम्हकौं मौ पास ॥
द्विज तौ मो कुल दैव हैं, हूं बिप्रननि कौं दास ॥ १३ ॥
यहि द्विज कौं कल्यांण है, सौ अब करौ इलाज ॥
बडौ अनुग्रह इहीं सही, मो परि है माराज ॥ १४ ॥
जो साध्यौ म्हैं धरम निज, दांन जिग्य करि कौय ॥
अरु म्हैरौ कुल द्विजन कौं, पुनि जो सैवक हौय ॥ १५ ॥
तौ मोकौं सब फल इही, हौंहु भलैं अनुसार ॥
दूरि हौंहुँ संताप या, ब्राह्मण कौं या बार ॥ १६ ॥
जे प्रभु सबहीं गुनन कैं, निधि हैं दीन दयाल ॥
वै मो परि जो प्रसंन हैं, असरन सरन क्रपाल ॥ १७ ॥
हम्ह सबहीं प्राणीन मैं, जो मांनत भगवांन ॥
तौ याकौं फल हौहुँ इहि, हौय बिप्र कल्यांन ॥ १८ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

चक्र सुदरसन नृपति की, सुनि बिनती या भाय ॥
छौड्यौ द्विज कौं जारिबौ, अपनौं क्रोध नसाय ॥ १९ ॥
चक्र सुदरसन तैं छुटै, दुरवासा जिहिं बार ॥
करत भयै नृप की अस्तुति, मगन हौय निरधार ॥ २० ॥
हरि भक्तन की म्हैं जु लषी, महिमां आजु निदांन ॥
म्हैं कीनौं अपराध पैं, तुम्हहिं किय मौ कल्यांन ॥ २१ ॥
निश्चै साधु बडैन कौं, कठिन बात कछु नांहिं ॥
जिन्ह कीनैं भगवांन बसि, चित्त दैं प्रभु पद ठांहिं ॥ २२ ॥
सहजहिं जारहिं नांम तैं, पुरुष सुनिरमल हौय ॥
जिहँ हरिदासन कौं दुर्ल्लभ, नांहिनैं कछू कौय ॥ २३ ॥
दयावंत हौ नृपति तुम्ह, मो परि अनुग्रह कीन ॥
मोअपराध गिन्यौ न मौ, प्रांन रिछ्या करि लीन ॥ २४ ॥
अैसैं रिषि कैं बचन सुनि, हरि कैं भक्त बिसाल ॥
भौजन करवावत भयै, छुअ द्विज चरन नृपाल ॥ २५ ॥

॥ दुर्वासा उवाच ॥

दुरवासा बौलत भयौ, भौजन करितैं बार॥
हे राजा अब आपहूं, भौजन करौं सुढार॥२६॥
दरसन बौलन रावरै, तैं हौं भयौ पबित्र॥
म्हैं तुम्ह पैं अति प्रसंन हूं, सुनियैं नृपति बिचित्र॥२७॥
गावैंगी तुव चरित इहि, अपसर सर्गहीं ठांहिं॥
अरु बड कीरति रावरी, ह्वै हैं प्रिथवी मांहिं॥२८॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि अैसैं बचन, नृप सौं कहि निरधार॥
दुरवासा बिधि लौक कौं, गवन कियौ उहिं बार॥२९॥
चक्र सुदरसन कौं महा, दुरवासा भय पाय॥
जांह तांह इक बरस लौं, डौलत भयै भ्रमाय॥३०॥
जब लौं भोजन अंन कौ, राजा कीनौं नांहिं॥
रहै यैक जलपांन करि, धरै धीर अधिकांहिं॥३१॥
भोजन करि रिषि गवन किय, तब नृप भोजन कीन॥
अपनैं परि प्रभु की क्रिपा, जांनत भयौ प्रबीन॥३२॥
अैसैं रहै अनैक गुण, अंबरीष नृप मांहिं॥
रही पूर्न हरि भक्ति सम, नरक सुवर्ग दरसांहिं॥३३॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत अंबरीष नृप, दैहिं पुत्रन कौं राज॥
बन गवनैं पधराय उर, प्रभू गरीब निवाज॥३४॥
अंबरीष नृपकौं चरित, कहै सुनै इह कौय॥
ताकौं पूरन भक्ति हरि, निश्चै प्रापति हौय॥३५॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

(इक्ष्वाकु के वंश का वर्णन तथा मान्धाता और सौभरि ऋषि की कथा)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - श्री सुक कहत बिरूप अरु, केतुमांन संभु तीन॥
पुत्र रहै अंबरीष कैं, सुनियैं नृपति प्रवीन॥ १॥
प्रगट्यौ रूप विरूप कैं, जास प्रसदस्व नांम॥
जांकै सुत हुव रथीतर, सुतन भयौ जिहिं धांम॥ २॥

तांकी पतनी तैं भयैं, अंगिरा तैं संतान॥
भयै कहावत पुत्र जैहिं, ब्राह्मण ही जु विदांन॥ ३॥
बैबस्वत मनु इक समैं, छीकैं जिहिं अनुसार॥
पुत्र नासिका तैहिं प्रगट, हुव इष्वाकु सुढार॥ ४॥
बडौ भयौ सोई कुँअर, पुत्र दसुनहिं कैं मांहिं॥
बर्नन ताकौ बंस करि, अब हम्ह तुम्हैं जताहिं॥ ५॥
बैबस्वतहिं कैं पुत्र नव, बरनि चुकै तिन्ह बंस॥
अब दसवैं इष्वाकु कौं, सुनियैं बंस प्रसंस॥ ६॥
सौ सुत हुवै इष्वाकु कैं, तीन बडै तिन मध्य॥
निमि दंडक रु विकुषि तिहूँ, नांम जु सुनौं प्रसध्य॥ ७॥
आगै आर्यावर्त तैं, सौ सुत मांहिं पच्चीस॥
हुवै समुद्र पर्जंत कैं, भली भांति अवनीस॥ ८॥
बिंध्याचल अरु हिमाचल, बीच भौम कौ नांम॥
कहियतु है आर्यावरत, सुनियै नृप अभिमांन॥ ९॥
बाकी कैं सुतसौंन मैं, उत्तर दछिनहूं ओर॥
हौत भयै राजा भलौं, गहि गहि अपनी ठौर॥ १०॥
अरु आर्यावर्त मध्य कैं, राजा सुत हुव तीन॥
बडै सुजस संजुत जिन्हनि, राज्य भली बिधि कीन॥ ११॥
मनु बैबस्वत इक दिनां, श्राद्ध दिवस कौं जांनि॥
पुत्र बिकुषि सौं नृप कह्यौ, बचन रीति उनमांनि॥ १२॥
अहौ पुत्र बन जाहूं तू, करिकैं बेगि सिकार॥
पिंड दांन कैं काज कौं, ल्याव मांस या बार॥ १३॥
बिकुषि जाय बन बउत मृग, मारत भयौ निसंक॥
बढ्यौ याहि लै आवतै, महाभूष आ.ंक॥ १४॥
अैक ससा कौ मांस तब, इननैं लीनौं षाय॥
भूलि गयौ सुधि श्राद्ध की, और नृपहिं दिय ल्याय॥ १५॥
श्राद्ध जु करवावत हुतै, रिषि बसिष्ठ उहिं ठौर॥
जांनिगै बै रु यौं कह्यौ, इहि पल झूठौ कौर॥ १६॥
श्राद्ध जोग्य है नांहिनैं, हैं अपबित्रहिं निदांन॥
मनु बैबस्वत सुनि इहै, सिसु अपराध पिछांन॥ १७॥
नृपति क्रोध करि जू सुतहिं, बन मैं दियौ निकासि॥
धर्म रीति परतीति मैं, द्रिढ राजा सुष रासि॥ १८॥
रिषि बसिष्ठ पैं सीषिकैं, मनु बैबस्वत जोग॥
प्रभु प्रापत हुव त्यागि तन, मिट्यौ प्रकृति कौ रोग॥ १९॥

बिकुषि पिता पाछैं बहुरि, बन तैं निज घर आय॥
राज्य करत भौ रु बऊत, जिग्य कियैं सुष पाय॥ २०॥
मांस ससा कौ भूष बस, पहलि गयौ हो पाय॥
तातैं यांकौं नांम फिरि, प्रगट ससाध कहाय॥ २१॥
तांकै प्रगटयौ पुत्र इक, जास तीन हुव नांम॥
इंद्र बाहु अरु पुरंजय, पुनि कुकुस्थ गुन ग्राम॥ २२॥
सुनियैं नांम तिहूंन कौं, कारन कहूं जताय॥
अैक समैं आसुरन तैं, सुरननि गयै पलाय॥ २३॥
जब राजा कैं सरन मैं, आयै अमर समाज॥
तब हति दैत्यन कौं नृपति, दिय सँवारि सुरकाज॥ २४॥
इंद्र बैल कौ रूप धरि, हुकम बिस्नु कौ पाय॥
राजा कौ बाहन भयौ, बाहि बिरियाँ सुभाय॥ २५॥
राजा बगतर पहरि कैं, धनुष बांण लैं हाथि॥
स्वार बैल कैं ककुद परि, ह्वै कैं सुर गन साथि॥ २६॥
असुर नगर रौकत भयौ, बिस्नु तैज जुत राय॥
बउत असुर हति असुरन सुँ, कियौ जु जुध अधिकाय॥ २७॥
जांके बांणन सौं डरपि, असुर भजै ग्रह त्यागि॥
दैत्यन कैं धन जीति पुर, इन्द्रहिं दियौ अथागि॥ २८॥
तब या राजा कैं भयै, तीन नांम निरधार॥
अब तिहुं नांमन कौं सुनौं, जुदौ जुदौ अनुसार॥ २९॥
राजा कौ बाहन भयौ, बासब जिहिं अनुभाय॥
नांम इंद्रवाहन भयौ, बिच पुहमी प्रगटाय॥ ३०॥
चढ्यौ बैल कैं ककुद पैं, हुव ककुस्थ तिहुँ नांम॥
भयौ पुरंजय नांम करि, फलै असुर पुर धांम॥ ३१॥
पुत्र पुरंजय कै भयौ, नांम अनैना जास॥
ताकैं सुत प्रथु नांम कौ, प्रगट्यौ सुगुण निवास॥ ३२॥
विश्वरंध ताकैं भयौ, तिहिं सुत चंद्र जु नांम॥
जाकै सुत युवनास्व अरु, सावस्ति पुत्र जिहँ धांम॥ ३३॥
नगरी सावस्ती रची, जिहिं सावस्ति जु नृपाल॥
जास ब्रहदस्व पुत्र जिहिं सुत, कुवलयास्व रसाल॥ ३४॥
रिषि उतंक कै कहै तैं, कुवलयास्व भुव पाल॥
सुत इकीस हजार संग, लै सजि सैंन बिसाल॥ ३५॥
जु धुंधु दैत्य कौं हति भौ, करि गाढौ संग्राम॥
धुंधुमार तातैं भयौ, या राजा कौ नांम॥ ३६॥

धुंधुं दैत्य मुष अग्नि तैं, सुत इक्कीस हजार॥
राजा कैं जरि भसम हुव, बचै तीन निरधार॥ ३७॥
दृढास्व कैं हरीयस्व, नांम कौ सुत सुभास॥
जाकै भयौ निकुंभ सुत, बरहिणास्व सुत जास॥ ३८॥
ताकै भयौ कृसास्व पुनि, पुत्र सैंनजित तास॥
ताकै भौ जुवनास्व सुत, भय न तिहिं सुत प्रकास॥ ३९॥
जबै नृप जुवनास्व कैं, भई न कौउ संतान॥
तब राजा जुवनास्व लैं, सौ तिय संग निदांन॥ ४०॥
करत भयौ बन कौ गवन, बिना पुत्रहिं सुष मांनि॥
तब सब रिषिगन प्रसंन्न हुवै, क्रिपा नृपति परि ठांनि॥ ४१॥
पुत्र अर्थ बासब निमत, जिग्य बहीं बन ठौर॥
नृप पैं करवाबत भयैं, सब रिषि गन सुभ तौर॥ ४२॥
रिषिन मंत्र पढि नीर लै, राष्यौ कलसहिं मध्य॥
वहै जल पियै सु गर्भवति, हौय जात सुप्रसध्य॥ ४३॥
निसि कौं द्विज सब सो रहैं, नृप कौं लागी प्यास॥
बहि जल राजा पी गयौ, पाय त्रिषा की त्रास॥ ४४॥
प्रातहिं उठि बिप्रननि कह्यौ, इह जल किन्ह पिय लीन॥
राजा बोल्यौ म्हैं पियौ, हौय त्रिषा आधीन॥ ४५॥
इहि सुनि रिषिननि प्रनांम किय, प्रभु कौं निज कर जौरि॥
अरु बोलै बलबंत हरि, करैं चहैंसौ तौरि॥ ४६॥
समैं पाय जुवनास्व की, कुषा दाहिनी फारि॥
प्रगट्यौ पुत्र जियौ नृपति, हरि द्विज क्रिपा प्रकारि॥ ४७॥
सतन पांन की ठौर वा, बालक कैं मुष मध्य॥
बासब अपनीं आंगुरी, मैलत भयौ प्रसध्य॥ ४८॥
धर्यौ मानधाता द्विजनि, वा बालक कौं नांम॥
तपस्यां करि जुवनास्व नृप, लही मुक्ति अभिरांम॥ ४९॥
नृपति मानधाता भयै, महाबली बुधिवांन॥
रावणादि राजिस डरै, जांसौं अति भय मांन॥ ५०॥
देत भयौ बासव समझि, त्रसप्रदस्यु जिहँ नांम॥
राज्य मानधाता कियौ, सप्त द्वीप भुव ठांम॥ ५१॥
कियै मानधाता नृपति, प्रभू निमित बहु जिग्य॥
बहु दांनी ग्यांनी बडै, राष्यौ धर्म अथग्य॥ ५२॥
उदय अस्त रबि हौत अरु, जहिं लौं सूर्ज उजास॥
मानधाताहिं कौं भयौ, तहँ लौं प्रिथी निवास॥ ५३॥

देसकाल द्रव्य मंत्र जिग्य, रित्वज धर्म जजमांन॥
बिधि संजुत यै जांनियैं, प्रगट रूप भगवांन॥ ५४॥
ससाबिन्दु नृपति की सुता, बिन्दु मनी जिहँ नांम॥
बरी मानधाता नृपति, गुन जुत सुंदर भांम॥ ५५॥
तीन पुत्रहिं जाकैं भयै, अति अदभुत अभिरांम॥
अंबरीष पुरुकुत्स अरु, भौ मुचिकुंद सुनांम॥ ५६॥
अरु पचास कन्या भई, गुन जुत रूप रसाल॥
रिषि सौंभरि कौं तैं सबैं, ब्याहत भयौ नृपाल॥ ५७॥
सौंभरि रिषि तप करत है, जमुना जु कैं तीर॥
तहँ बिहार करतैं लषैं, मछु मछी बिची नीर॥ ५८॥
रिषिहूं कैं ईछा भई, चारौं करन बिलास॥
जाय अैक मांगी कन्या, मान्धाता नृप पास॥ ५९॥
राजा निज बूढौ लष्यौ, अैसौ कह्यौ बिचारि॥
रीझि कहै तुम्हकौं सोइ, कन्या लेहूं सुढारि॥ ६०॥
जांनि गयै रिषि बृध म्हैं, हालत म्हैरौ सीस॥
तातैं मों हांसी करी, राजा बिस्वाबीस॥ ६१॥
तातैं अपनौं रूप म्हैं, अैसौं रूप बनाय॥
जासौ सुरतिय मुहित है, का नृप सुता गनाय॥ ६२॥
अदभुत सुन्दर रूप रिषि, अैसौ धरि निरधार॥
उन पचास कन्यान पैं, जात भयौ उहिं बार॥ ६३॥
बै पचासहूं कन्यका, सबहीं रीझि सरांहिं॥
सौभरि रिषिहिं बिबाहती, भई अधिक धरि चांहिं॥ ६४॥
बहु सरवर फुलवारि बहु, रिषि सौंभरि जिहिं ठांम॥
लागै करन बिलास उन, अस्त्रीन सौं अभिरांम॥ ६५॥
आसन भूषन बस्त्र अरु, सेज सुगंध समांन॥
भौजन बउत प्रकार जुत, निबहैं भलैं निदांन॥ ६६॥
अैसैं स्थलन मध्य रिषि, सौंभरि करत बिलास॥
तैं लषि मान्धाता नृपति, कियै निज गर्वहि नास॥ ६७॥
बिषै भोग अैसैं करत, त्रिपति भयौ रिषि नांहिं॥
अग्नि त्रिपति नहिं हौत ज्यौं, घीव अनंत कुढांहिं॥ ६८॥
इक दिन कियौ बिचारि रिषि, तिय संगति अनुसार॥
यौंहीं गइ तपस्यां मोहि, सबै बिषैं बिबहार॥ ६९॥
रु हुतौ तपस्वी म्हैं भलौं, करतौ ब्रत अपार॥
मच्छ मच्छी लषि ब्याह करि, तप षोयौ निरधार॥ ७०॥

मुक्ति चहै सौ नहिं करै, कबहूं बिषयन संग॥
अरु आधीन ह्वै न रहै, इंद्रनि कैं बहु रंग॥ ७१॥
रहै सदा अैकांत मैं, धरै हिर्दै हरि ध्यांन॥
साधुनि की संगति करै, समझि भलैं सुभ मांन॥ ७२॥
करत भयौ तपस्या भलैं, म्हैं इकलौ जलमांहिं॥
ब्याही तिया पचास सुत, पांच सहस प्रगटांहिं॥ ७३॥
तौ परि म्हैरौ मन भयौ, त्रिपति बिषैं तैं नांहिं॥
इह बिचार करि तियनि जुत, रिषि गवनैं बन ठांहिं॥ ७४॥
करी तपस्या बीच बन, आत्मा मैं चित्त लाय॥
रिषि सौंभरि सब तियनि जुत, लही मुक्ति सुषदाय॥ ७५॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते षष्ठोऽध्यायः ॥ ६॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

(राजा त्रिशंकु और हरिश्चंद्र की कथा)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - अंबरीष जेठौ कँवर, मान्धाता कैं गेह॥
ताकौं मान्यौ पुत्र करि, दादै बिनु संदेह॥ १॥
ताकैं हुव जुवनास्व सुत, जाकै हुव हारीत॥
मानधाता कैं दुसरौ, सुत पुरुकुत्स अभीत॥ २॥
ताहिं नर्मदा बहन निज, सर्पनि दीनी ब्यांहिं॥
तासौं नृप पुरुकुत्स की, भई अधिक चित चांहिं॥ ३॥
वा तिय कौं पुरुकुत्स नृप, कह्यौ मांनि निरधार॥
जाय रसातल मैं कियौ, बउत जछिहिं संघार॥ ४॥
सर्पन कैं बैरी हुतै, वै गंधर्ब निदांनि॥
उन्हहिं मारि सर्पन दियौ, सुष अतुलित उनमांनि॥ ५॥
तब सर्पनि पुरुकुत्स कौं, बर दिय या अनुभाय॥
सुनै चरित पुरुकुत्स कौं, सौं अहि भय नहिं पाय॥ ६॥
पुत्र भयौ पुरुकुत्स कैं, ताकौ त्रसदस्यु नांम॥
अरु अनरण्य सुत प्रगट हुव, नृप त्रसदस्यु कैं धांम॥ ७॥
अनरण्य कैं हरियस्व भय, ताकैं अरुण कुमार॥
पुत्रहिं त्रिबंधन अरुण कैं, प्रगट जु भयौ सुढार॥ ८॥

जाकैं सत्य ब्रत जु पुत्र भौ, ताकै भयौ त्रिसंकु॥
सौ निज गुर कौं साप लहि, हुव चंडाल बुधि बंक॥ ९॥
बिस्बामित्र परताप सौं, सौ नृप संजुत देह॥
गयौ स्वर्ग उहिं तैं गिर्यौ, गुरु कैं साप अरेह॥ १०॥
निज तपस्यां कैं जोर सौं, बिस्बामित्र जु रिषैस॥
प्रिथवी परि गिरि नहिं दियौ, बहै त्रिसंकु नरैस॥ ११॥
सौ लटकत अधबीचहीं, तर सिरन उपरि पांय॥
हरिश्चंद्र ताकैं भयै, पुत्रहिं महा सुषदांय॥ १२॥
तिन्ह पैं बिस्वामित्र धन सब, जिग्य मैं लियै छीन॥
अरु राजा कौं बेरि उहिं, महा प्रबल दुष दीन॥ १३॥
तब दियै बिस्बामित्र कौं, रिषि बसिष्ठ इहि साप॥
तू ह्वै हैं आडी पंछी, लागि अनंत या पाप॥ १४॥
फिरि दियै बिस्बामित्र नैं, रिषि बसिष्ठ कौं साप॥
तू ह्वै हैं बगुला पंछी, दैषहुँ म्हैरी धाप॥ १५॥
तब वै दौऊ पंछिन कौ, धारि रूप उहिं बार॥
लरत भयौ आपस महीं, दुहु रिषि रीस प्रकार॥ १६॥
हरिश्चंद्र बिनु पुत्र तबै, नारद आग्यां पाय॥
जाय बरुण कैं सरण सुत, मांगत भयै सुभाय॥ १७॥
अरु इह कियौ करार जो, म्हैरै सुत प्रगटांहिं॥
वाहि तिहारै निमत तौ, हौम दैहुँ जिग्य मांहिं॥ १८॥
तब वर दीनैं बरुण कैं, पुत्र भयौ नृप गैह॥
ताकौ रौहित नांम भौ, इछा दईव अछैह॥ १९॥
तबैं बरुण बोल्यौ सुतहि, हौमि अबैं बलि दैहु॥
तब नृप बोल्यौ दस दिवस, बीतै सुध बलि लैहु॥ २०॥
दस दिन बीतै तब बरुण, कह्यौ कि अब बलि दैहु॥
तब बोल्यौ नृप रद प्रगट, हौय जबैं बलि लैहु॥ २१॥
रद प्रगटै तब बरुन नैं, कह्यौ कि अब बलि दैहु॥
तब नृप बोल्यौ दांत यैं, गिरै तबै बलि लैहु॥ २२॥
दांत गिरै तब बरुन नैं, कह्यौ कि अब बलि दैहु॥
जब नृप बोल्यौ और रद, प्रगटै तब बलि लैहु॥ २३॥
फिरि रद आयै तब बरुन, कह्यौ अबैं बलि दैहु॥
जब नृप बोल्यौ अस्त्र इह, पहरैं तब बलि दैहुँ॥ २४॥
अैसैं नृप सुत नेह सौं, कहै बरुन कौं बैंन॥
बात बनावत ही बउत, बीतयैं दिन सुषैंन॥ २५॥

रोहित डरप्यौ हौमि मुहि, पितु दैहैं किहुँ बार॥
तातैं वनकौं निकसिगौ, लै धनुबांन सुढार॥ २६॥
बचनहिं नृप कैं लषि बरुण, क्रौध कियौ अनषाय॥
तातैं नृप कैं प्रगट हुव, रोग महौदर आय॥ २७॥
तब रौहित सुत पिता कौं, सुनि कलैस अधिकाय॥
कानन तैं घरिकौं चल्यौ, इंद्र मनैं किय आय॥ २८॥
इंद्र कह्यौ अैसौ बचन, बचबै या जिय घात॥
प्रिथवी बिच तीरथ करत, फिरनौं आछी बात॥ २९॥
इहि सुनि रौहित बनहिं बिच, जहँ तहँ फिर्यौ अनंत॥
अैक बरस बीत्यौ तबै, फिरि आयौ पितु चिंत॥ ३०॥
जब घरि कौं आवन लग्यौ, बरज्यौ बउत सुरेस॥
तब फिरि फिर्यौ भ्रमंतहूं, तीरथ करत सुवेस॥ ३१॥
पांच बार आवन चह्यौ, पांच बरस मैं गेह॥
तबि तबि बरज्यौ इन्द्र यौं, धरि बृद्ध द्विज की देह॥ ३२॥
छठै बरस रौहित कुंवर, आयौ अपनैं गेह॥
पाल्यौ अपनौं पिता सौं, पूरन धरम सनेह॥ ३३॥
अजीगर्ता नामा सुद्विज, हुतै पुत्र तिहूं तीन॥
जिन्हमैं यक सुत बीचकौं, रौहित मोल जु लीन॥ ३४॥
वा लरिका कौं संगि लै, आयौ निज पितु पास॥
नमसकार करतौ भयौ, जुत आनंद सहाय॥ ३५॥
पलटै अपनैं जु पुत्र कैं, बह ब्राह्मण कौं बाल॥
हौमि दैंन कीनौं मतौ, हरिश्चंद्र बहि काल॥ ३६॥
बडी बउत है इह कथा, बाढै कहै प्रसंग॥
फेरि बरुन नृप पैं प्रसंन, भयै रोग हुव भंग॥ ३७॥
हरिश्चंद्र कौं जिग्य मैं, बिस्बामित्र जु रिषैस॥
भयै होम करता भलैं, सुकहैं सुनहुँ नरैस॥ ३८॥
रिषि जमदग्नि बसिष्ठ लौं, आदि रु बिधि उहिं बार॥
भयै अध्वर्यु सु जिग्य मैं, नृप बिप्र क्रिपा प्रकार॥ ३९॥
हरिश्चंद्र कै जिग्य मैं, ह्वै अति प्रसंन सुरेस॥
वा द्विज बालक की करी, रछया भांति सुदेस॥ ४०॥
अरु राजा कौं इंद्र दिय, रथ कंचनमय ल्याय॥
आगै कहिहैं इहि कथा, तुम्हकौं नृपति सुनाय॥ ४१॥
बिस्बामित्रहूं प्रसंन हुव, राजा पैं बहिं बार॥
कियौ ग्यांन उपदेस सुभ, करिकैं क्रिपा सुढार॥ ४२॥

राजा ग्यांन बिचार सौं, मन लय करि भुव मांहिं॥
भुवकौं करि लय नीर मैं, नीर अग्नि कैं ठांहिं॥ ४३॥
अग्निहिं लय करि वायु मैं, वायुहिं नभ मंझार॥
आकासहिं अहंकार मैं, महतत्व बिच अहंकार॥ ४४॥
नाम महतत्व विषैं कियौ, ग्यांन कला कौ ध्यांन॥
तासौं करत भयौ सबैं, दूरि महा अग्यांन॥ ४५॥
आत्मस्वरूपहिं जांनि फिरि, तजि ध्यांनहु निरधार॥
हरिश्चंद्र राजा भयै, मुक्ति रूप सुभ द्वार॥ ४६॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अष्टमोऽध्यायः ॥

(सगर - चरित्र)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - रौहित नृप कैं सुक कहत, हुव सुत हरित जु ग्यांन॥
जिहँ सुत चम्प भयौ रची, चम्पापुरी सुठांम॥ १॥
रु जाकैं पुत्र सुदेव भौ, बिजै भयौ सुत जास॥
भयौ बिजै कैं भरुक सुत, वृक सुत भरुक निवास॥ २॥
वृक कैं सुत बाहुक भयौ, जिहँ बाहुक नृप पास॥
छीनि लियौ हैं कैं सबल, सत्रुनि प्रिथवी निवास॥ ३॥
नृप बाहुक अस्त्रीन सहित, कियौ बन मैं निबास॥
नृप मृत्यु कौ प्रापत भयौ, सकल तत्व लहि नास॥ ४॥
हौंन लगी तिय गर्भवति, सती नृपति कैं लार॥
ताकौं औरव रिषि मनैं, करत भयौ उहिं बार॥ ५॥
सौतिन बिष दिय वा तियहिं, तउ न मरी बहि बांम॥
औरव रिषि कीनी रछ्या, भौ सुत सगर सुनांम॥ ६॥
चक्रवर्ति नृप सगर हुव, महाबली जग मध्य॥
जाकैं सुतनि समुद्र सब, कीनै प्रगट प्रसध्य॥ ७॥
तालजंघ सक हैहयै, अरु जवन हुव सजोर॥
जितै इन्हनि हतत भौ पै, गुरु कहै हति न और॥ ८॥
उन्ह तुरकनहूं कैं कितै, भैष बुरै अति कीन॥
कैउ पहरि पट काछि बिनु, कैउ उपरि पट हीन॥ ९॥

औरव रिषि की पायकैं, आग्यां सगर नरैस॥
करत भयौ अस्वमेध जिग्य, चौर्यौ अस्व सुरैस॥ १० ॥
नृप की अस्त्री सुमति तैं, सुत हुव साठ हजार॥
तैं सब अस्वहिं ढूंढिबै, निकसै दौरि कुमार॥ ११ ॥
तैं ढूंढत चहुँ वोर कौं, षौजत प्रिथ्वी सजौर॥
आयै कपिलाश्रम लष्यौ, अस्व बंध्यौ उहिं ठौर॥ १२ ॥
कपिल देव जू कौं अस्थल, उत्तर दिसा की ओर॥
तांह गयौ हौ बांधि कैं, बासव अस्वहिं चोर॥ १३ ॥
नृप पुत्र बहि रिषि कौं मुंदै, नैत्रन चोर बिचारि॥
मारौ मारौ याहि कहि, दौरे सस्त्र संभारि॥ १४ ॥
कपिल देव द्रिग षौलि कैं, सुनि कौलाहल सौर॥
साठि हजारहिं भसम हुव, रिषि अपराध अकौर॥ १५ ॥
रिषि तौ अति ग्यांनी हुतै, उन्हैं क्रौध क्यौं हौइ॥
अैं अपनैं अपराध सौं, भयै भसम सुष सौइ॥ १६ ॥
सांष्य सास्त्र निज प्रगट किय, नांव समांन सुढार॥
जांसौं प्राणी जांहिं तिरि, इहि सागर संसार॥ १७ ॥
अैसन कैं उपजैं कहा, भेद बुद्धि निरधार॥
भेद बुद्धि बिनु क्रौधहूं, क्यौं उपजैं किहुँ बार॥ १८ ॥
सगर नृपति कैं दूसरी, तिया केसनि जु नांम॥
ताकैं इक उपज्यौ कुंवर, असमजंस अभिरांम॥ १९ ॥
अैक पुत्र ताकैं भयौ, अंसुमांन स प्रसध्य॥
असमजंस जोगैस हौ, पूर्ब जन्म कैं मध्य॥ २० ॥
बहि चरित अैसैं जु करैं, जिन्हसौं अप्रस्नं प्रजांन॥
सरजू मैं लै डारि दैं, निज संगी लरिकांन॥ २१ ॥
तब असमजंस नांमक सुत, राजा दियौ निकासि॥
जात रह्यौ बहि बन बिषै, चितधरि अधिक हुलास॥ २२ ॥
बालक जै डारै हुतै, सरजू सरिता मांहिं॥
जोग सक्ति तैं काढि तैं, राषि गयौ तट ठांहिं॥ २३ ॥
पुरी अजोध्या कैं सबै, वासी सिसुनि निहारि॥
अति अचिरज मांनत भयै, निज निज चितहिं बिचारि॥ २४ ॥
पछितानै राजा सगर, सुनि कैं चितहिं सुढार॥
हा क्यूं अैसौं पुत्रहिं म्हैं, दिय निकास निरधार॥ २५ ॥
अंसुमांन पोतौ सगर, नृपति जोगहीं बार॥
अस्व ढूंढबै काज कौं, लै संग सैन अपार॥ २६ ॥

षौज लैंन पहुँच्यौ इहै, कपिलदेव कैं पास॥
साठ सहस पुरुषा लषै, भसम भयैं धर जास॥ २७॥

॥ अंसुमानुवाच॥

अंसुमांन करि जोरि कियै, कपिल अस्तुति उहिं बार॥
हे प्रभु हम्ह तुम्ह जांनत न, अग्यांनी निरधार॥ २८॥
बड जोगैस समानहूं, तैं न परष तुम्ह हौय॥
तौ तुम्हकौं हम्ह सारषैं, का पहिचांनै कौय॥ २९॥
मोहित माया गुणनि सौं, जे जन बिच संसार॥
तैं सरूप प्रभु रावरौ, नहिं जांनत निरधार॥ ३०॥
तुम्ह हौ ग्यांन सरूप गुण, प्रकृति आप म्हैं नांहिं॥
रिषि सनंद लौं आदि तुम्ह, ध्यांन करत हिय ठांहिं॥ ३१॥
म्हैं तुम्हकौं जांनौं कहा, तुम्ह हौ पुरुष पुरांन॥
नांम रूप तैं जुदे हौ, हे करता भगवांन॥ ३२॥
करन ग्यांन उपदेस कौं, तुम्हलीनौं अवतार॥
नमसकार म्हैं करत हौं, तुम्हकौं बारंबार॥ ३३॥
लौक रच्यौ तुम्ह प्रकृति करि, मूरष सत्य जनांय॥
काम ईरषा लौभ पुनि, मोह जु बीच भ्रमांय॥ ३४॥
इह दरसन प्रभु रावरौ, आजि भाग्य तैं पाय॥
मोह पास सब कटि गयौ, भयौ जु पबित्र सुभाय॥ ३५॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि अैसैं अस्तुति, अंसुमांन जब कीन॥
तब बोलै श्री कपिल मुनि, हौय क्रिपा रसलीन॥ ३६॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

अहो पुत्र इहै अस्व लै, जा तूं दादै पास॥
अरु अैं साठि हजार तौ, पुरुषनि पायौ नास॥ ३७॥
तैं कृतार्थ सब हौंहिंगैं, गंगा सपरस पाय॥
अब इलाज या बात कौं, कीजै भलैं बनाय॥ ३८॥
अंसुमांन रिषि प्रसंन करि, दै परिकर्मा सुढार॥
अस्व लैंकैं नृप सगर पैं, आवत भयौ कुमार॥ ३९॥
सगर जिग्य करि पूर्न दै, अंसुमांन कौं राज॥
औरव रिषि सौं ग्यांन लैं, लह्यौ मुक्ति सुष साज॥ ४०॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते अष्टमोऽध्यायः ॥ ८॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ नवमोऽध्यायः ॥

(भगीरथ चरित्र और गंगावतरण)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - कहत हैं श्री सुकदेव जु, गंगा ल्यावन काज॥
करी तपस्या बऊत दिन, अंसुमांन महाराज॥ १॥
अैं पैं ल्याय जु सकत नहिं, गंगा जू भुव ठांम॥
नृपति काल प्रापति भयै, भयौ न पूरन कांम॥ २॥
अंसुमांन कौं पुत्रहू फिरि, दिलीप जू तप साध॥
काल ग्रस्यौ ल्याय न सक्यौ, गंगा प्रवाह अगाध॥ ३॥
नृप दिलीप कौं पुत्र तप, साध्य भागीरथ फेरि॥
गंगा जू कौं प्रसंन कियै, अति आराधन हेरि॥ ४॥
गंगा जू अति प्रसंन ह्वै, दरसन दीनौं आय॥
अरु किह्यौ कि बर मांगि तूं, जो तैरै चित चाय॥ ५॥
नृप बोल्यौ हे जननि तुम्ह, प्रिथ्वी लौक मैं आय॥
करिय म्हेरै पुरखन कौं अबै उद्धार समाय॥ ६॥

॥ गंगा उवाच ॥

गंगा जू बौली कि म्हैं, नभ तैं भुव पर आहुँ॥
पैं कौ थांमैं बैग मो, कहियै ताकौं नांमु॥ ७॥
म्हैं तो प्रिथवी फोरि कैं, रहिहौं जाय पताल॥
अरु पापी अघ मारिहैं, मौ मैं न्हाय षुस्याल॥ ८॥
सौं अघ कइसैं दूरि ह्वै, जो तुम्ह कहौ उपाय॥
तौ म्हैं अनिष्ट करूँ प्रिथी, परि तौ सकूँ न आय॥ ९॥

॥ भागीरथ उवाच ॥

नृप बोल्यौ हैं साधु जन, जगतहिं त्यागन हार॥
ब्रह्मग्यांनी जे श्रिधि बिनु, करन पबित्र संसार॥ १०॥
हरि जिन्ह हिदैं बिराजहीं, अैसैं साधु सुजांन॥
तुम्ह मैं वै करि सनांन अघ, दैं हैं टारि निदांन॥ ११॥
बेग तुम्हारौ धारि हैं, महादैव त्रय नैंन॥
जिन्हकैं ह्वै आराध्य इह, सिगरौ जक्त सुषैंन॥ १२॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

यौं कहि राजा भगीरथ, सिव की तपस्या कीन॥
थोरै हीं दिन मैं भयै, सिव तब प्रसंन प्रवीन॥ १३॥
सिव सुनि बिनती नृपति की, गंगा राषी सीस॥
चरनौदक भगवांन कौं, जांनि सु बिस्वाबीस॥ १४॥

भसम हुतै पुरुषां जांह, नृप कैं साठि हजार ॥
गंगा जू कौं लै गयौ, नृप उहिं ठां निरधार ॥ १५ ॥
पवन बेग सम रथहिं चढि, आगैं चल्यौ नृपाल ॥
चलत भयौ पाछे प्रगट, गंग प्रवाह बिसाल ॥ १६ ॥
करत पबित्रहिं अनैंक पुर, पहुँची जिहँ ठां जाय ॥
साठ सहस जहँ सगर सुत, हुतै भसम थिर थाय ॥ १७ ॥
गंगा जू नित नीर सौं, सीचैं जिन्हैं सुभाय ॥
भसम भये तैं मुक्ति हुँव, बहिं जल सपरस पाय ॥ १८ ॥
अरु श्रद्धा सौं जेहि करत, सैवन गंग जल जाय ॥
तैं पहुँचत हैं स्वर्ग मैं, अचिरज कछु न लषाय ॥ १९ ॥
चरणोदक भगवांन कौं, गंगा जल निरधार ॥
जेंहिं पबित्र जग कौं करत, सौं अचिरज न बिचार ॥ २० ॥
जा प्रभु मैं चित लाय मुनि, तीनौं गुण कौं जीति ॥
मुक्ति भयैहुँ अैसी सुनौं, प्रभु महिमा परतीति ॥ २१ ॥
पुत्र भगीरथ जु कैं भयौ, हुव जाकौं श्रुत नांम ॥
ताकैं नांभहिं भयौ सुत, सिंधुद्वीप तिहि धांम ॥ २२ ॥
वांकैं अयुतायु पुत्र हुव, अयुता कैं रितु पर्ण ॥
सौ नृप नल कैं सषा हुव, अति सनेह चितु धर्ण ॥ २३ ॥
अरु असु बिद्या रीतु पर्ण, सीष्यौ नृप नल पास ॥
आप जूवा बिद्या नृपहिं, सिषाइ सहित हुलास ॥ २४ ॥
पुत्र भयौ रीतुपर्ण कैं, सर्वकांम अभिरांम ॥
जाकैं पुत्रहिं भयौ प्रगट, जासु सुदास जु नांम ॥ २५ ॥
प्रगटयौ पुत्र सुदास कैं, नांम जु जिंह सुउदास ॥
सौ रांनी मदयंती कौं, पति भौ करन बिलास ॥ २६ ॥
कल्माषांघ्रि अरु मित्रसह, अैं दोनौं हूं नांम ॥
भयै अधिक सउदास कैं, सुनौं नृपति गुनधांम ॥ २७ ॥
रिषि बसिष्ठ कैं साप सौं, राछस भयौ नृपाल ॥
अरु जाकैं संतानहूं, भयौ नहिं किहूं काल ॥ २८ ॥

॥ राजोवाच ॥

नृप पूछत सउदास कौं, क्यूं बसिष्ठ दिय साप ॥
सौ कारन समुझाय कैं, मोहि कहौ रिषि आप ॥ २९ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि सउदास नृप, इक दिन समैं सिकार ॥
इक राछस मार्यौ तज्यौ, जासु अनुज मति धार ॥ ३० ॥

रिषि बसिष्ठ सउदास कैं, इक दिन भौजन काज॥
आयैं तब राछस इहै, समैं बिचार निलाज॥ ३१॥
आमिष रांध्यौ मिनष कौ, रूप रसुइया धारि॥
पुरुसत भयौ बसिष्ठ कौं, नृप सौं बैरि बिचारि॥ ३२॥
जांनि अभष आमिष बहै, रिषि दिय नृप कौं साप॥
हे राजा नर देह तजि, राछस हूजै आप॥ ३३॥
फिरि राछस कौं दोस लषि, नृप निरदोष बिचारि॥
रिषि बोलै बारह बरस, ह्वै राछस अवतारि॥ ३४॥
नृप आपहिं निरदोष लषि, लैं जल अंजुलि पांनि॥
रिषि बसिष्ठ कौं दैंन हित, साप मन मैं कुठांनि॥ ३५॥
रांनी तबै मदयंती, मनैं कियौ गहि पांनि॥
जब जल डारन बह सुनृप, ठौर न लषी निदांनि॥ ३६॥
तब राजा निज चरन पैं, बह जल दीनौं डारि॥
भुव पर डारैं जंतु बहु, मरतैं जरि निरधारि॥ ३७॥
भयैं आप कैं नीर सौं, कारै नृप कैं पाय॥
रिषि बसिष्ठ कैं साप सौं, राछस भयौ कुदाय॥ ३८॥
बिषै भोग कौं करत हौं, द्विज द्विजनी बन मांहिं॥
नृप कौ राछस जनम मैं, लगी भूष बहि ठांहिं॥ ३९॥
बै द्विज द्विंजनी नृप लषैं, दोयौं असमैं षांनि॥
पकरि लियौ बह बिप्र तबै, ह्वै निरदय अग्यांनि॥ ४०॥
जब बौली बह ब्राह्मणी, नृप तूं राछस नांहिं॥
प्रगट भयौ तूं जग बिदित, बंस इष्वाकुहिं मांहिं॥ ४१॥
मदयंती कौं पति जु तू, राजा धरम बिचारि॥
म्हैरै पति कौं षाय मति, इह अधरम अधिकारि॥ ४२॥
म्हैरै मन है कांमनां, प्रगट हौंन संतान॥
पुरषारथ दाता इहै, है नर देह निदांन॥ ४३॥
या द्विज कैं बध करन मैं, अधिक होयगौ पाप॥
इह द्विज तप गुण सील जुत, आराधत हरि आप॥ ४४॥
सब प्राणिन मैं लषत हैं, आत्म रूप भगवांन॥
रु इहै ब्रह्म रिषि बिप्र है, तू रिषि राज निदांन॥ ४५॥
तू याकौं बध मति करै, तौहि जोग है नांहिं॥
पिता पुत्र कौ बध ज्यूं क्यूं, हूं नांहिंनैं करांहिं॥ ४६॥
इह द्विज ग्यांनी साधु हैं, बरजित पाप उपाधि॥
तातैं करनौं जोग्य नहिं, या ब्राह्मण कौं बाधि॥ ४७॥

अरु जो तू याकौं भषै, तौ पहिलैं मुहि षाहुँ॥
या बिनु म्हैं जियहौं नांहिं, जरिहौं संगि निज नाहुँ॥ ४८॥
यौं बिलाप करि ब्राह्मणी, बोली नृप सौं बैंन॥
तउ राजा छोड्यौ न द्विज, मोहित आपु सुषैंन॥ ४९॥
षात भयौ बाहिं बिप्र कौं, ह्वै निरदय निरधार॥
जइसैं सिंघ पसून कौं, षाय भूष अनुसार॥ ५०॥
लष्यौ ब्राह्मणी इन्ह भष्यौ, म्हैरौ पति या बार॥
दैंत भई तब सोच करि, नृप ही स्त्राप सुढार॥ ५१॥
म्हैरौ पति अैकांत मैं, तैं लीनौं हौं षाय॥
तातैं समैं अैकांत मैं, तुहू मृत्यु दुष पाय॥ ५२॥
यौं नृपकौं दै स्त्राप निज, पति कीं अस्ति संकेरि॥
सती हौत भइ ब्राह्मणी, अति दुष लहि उहिं बेरि॥ ५३॥
नृप कौं बारह बरस कौं , पूर्न हौंत भौ स्त्राप॥
तब बहुर्यौ राजा भयौ, आयौ निज घर आप॥ ५४॥
निज अस्त्री कैं निकटगौ, तब उन्ह मनैं जु कीन॥
तू मो पैं मति आहु तुहि, स्त्राप ब्राह्मणी दीन॥ ५५॥
ब्रह्मचर्ज हीं सौं रह्यौ, जा दिन तैं सउदास॥
ताही तैं संतान नहिं, प्रगट्यौ नृपति निवास॥ ५६॥
तब राजा की तिया कैं, नृप की आग्यां पाय॥
रिषि बसिष्ठ तैं गर्भ रही, हुव संतान सुभाय॥ ५७॥
सात बरस भयै गर्भ तैं, बालन कैं निरधार॥
तब राजा तिय उदर मैं, कीनौं उपल प्रहार॥ ५८॥
जबै बालक प्रगट भयौ, अस्मक ताकौ नांम॥
रु मूलक सुत प्रगटत भौ, नृप सउधस कैं धांम॥ ५९॥
छत्रिननि कौं मारत रहै, जिहँ बेरां द्विज रांम॥
तब या मूलक की रछ्या, करत भई मिलि वांम॥ ६०॥
तातैं भौ नारी कवच, वा राजा कौ नांम॥
रु जाकैं दसरथ पुत्र भौ, इडबिड पुत्र बिहिं धांम॥ ६१॥
भयै बिस्वसह इडबिड कौ, जिहँ सुत भयै षट्वांग॥
सुर बिनती सौं बहु असुर, जिन्ही लरि डारि छांग॥ ६२॥
दौय महूरत मात्र जिन्ह, अपनीं मृत्युहिं जांनि॥
ग्रेह आय हरि ध्यांन किय, परम मित्र पहिचांनि॥ ६३॥
नृप इहि कियौ बिचारि मुहि, जइसैं द्विज प्रिय आंहिं॥
तइसैं तिय सुत राज्यहूं, प्रिय लागत है नांहिं॥ ६४॥

लगी न बालकपनैहुं, मो बुधि अधरम मांहिं॥
जांनत हरि ससि रूप निति, औरहिं जांनत नांहिं॥ ६५॥
म्हैं हरिहीं कैं ध्यांन मैं, सदा रह्यौ चित लाय॥
दैत रहैं बर देवता, सौं न लियौ ललचाय॥ ६६॥
अमरनहूं की रत नाहिं, बुद्धि इंद्री ठहराय॥
प्रभू बिराजत हिर्दै मैं, तैं तिन्हकौं न लषाय॥ ६७॥
सकल पदारथ जगत कैं, माया तैं प्रगटाय॥
नगर गंधर्बी सम प्रगट, अैं सब झूठ कहाय॥ ६८॥
तिन्हकौं छौडि बिचारियौ, सकल ठौरि भगवांन॥
इहै बिचारि करि चित नृप, लग्यौ आतम सथांन॥ ६९॥
जे प्रभु हैं परब्रह्म अति, सूछिम सून्य जु नांहिं॥
जांनि परत हैं सून्य सौं, जगमगात जग मांहिं॥ ७०॥
बासुदैव भगवांन प्रभु, जिन्हकौं भाषत साध॥
जा प्रभु कौं प्रापति भयौ, नृप हरि भगति अगाध॥ ७१॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ दसमोऽध्यायः ॥

(भगवान श्रीराम की लीलाओं का वर्णन)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - श्री सुक कहत षट्वांग कैं, सुत भय दीरघ बाहु॥
रु जिन्हकैं प्रगटै पुत्र रघु, तिन्ह कैं अज नरनाहु॥ १॥
महाराज दसरथ भयै, तिन्हकैं पुत्रहिं उदार॥
जिन्हकैं सुत श्री राम जुत, प्रगटै च्यार सुढार॥ २॥
चारौं प्रभु अवतार हुव, भक्तन दैंन आनंद॥
भरत सत्रुघन लछिमन श्री, रामचंद्र सुषकंद॥ ३॥
तिन्हकौं रिषिननि चरित बहु, गायौ है सुषसार॥
सौ तौ तुम्ह ह्वै है सुन्यौ, राजा भलैं प्रकार॥ ४॥
राम चरित हम्हहिं कहत हैं, अब संछैप प्रभाय॥
सिगरौ अैक सिलौक मैं, बरनत हैं सुनि राय॥ ५॥
राज छोडि कैं पिता की, आग्यां कैं अनुसार॥
फिरत भयै सिय संगि लैं, बहु बन ठौर सुढार॥ ६॥

लछमन जू हनुमांन जू, दोनौं भलैं प्रभाय॥
मग परिस्त्रम टारत भयै, सैवा करि चित लाय॥ ७॥
सूर्पनषा कैं जिन प्रभू, काटै नाक रू कांनि॥
रावन किय सियहरन जब, बिरह जुक्त रिस आंनि॥ ८॥
कीनी भ्रकुटी बंक तब, भय समुद्र अति पाय॥
सेतुबंध तापरि कियौ, छय रावन कुल जाय॥ ९॥
ऐसैं प्रभु श्रीराम जू, म्हैरी करौ सहाय॥
अबै कहत बिसतार सौं, करिकैं ह्वै जु अथाय॥ १०॥
बिस्वामित्र कैं जिग्य मैं, लछमन लषत निदांन॥
मारिचादि राछस हतै, जिन्ह बिनु भालै बांन॥ ११॥
बड्ड बीरन की सभा बिच, सीया स्वयंबर मध्य॥
रुद्र धनुष लैं आवतैं, त्रय सौ मुष्य प्रसध्य॥ १२॥
ता धनुषहिं श्री राम जू, तौर्यौ ऐसैं भाय॥
ज्यौं गज सांठां तौरहीं, कछू न परिस्त्रम पाय॥ १३॥
सील अंग वय रूप गुन, जुत लछमी अवतार॥
ऐसी सीता आप सम, जांनि जीति निरधार॥ १४॥
दूरि कियौ मग आवतै, परसराम कौं मांन॥
करी हुती जिन्ही प्रिथवी, नछत्री जू बलवांन॥ १५॥
दसरथ तिय आधीन ह्वै, बंधै सत्य सौं राय॥
जिन्हकी आग्यां मांनिकैं, छौडि राज अधिकाय॥ १६॥
भयै पधारत बन बिषैं, लछिमन सीय समेत॥
जहँ बनबासी रिषिन कौं, सुषदीनौं करि हेत॥ १७॥
सूपर्नषा कौं नाक अरु, काटै कांन रिसाय॥
महाभयानक रूप करि, दैत भयै छिटकाय॥ १८॥
षरदूषन त्रिसरा तिहूं, सूर्पनषा कैं भ्रात॥
सहस चतुर्दस असुर संग, ल्यायै लरन बिष्यात॥ १९॥
उन्ह सबकौं मारत भयै, दसरथ सुत श्रीरांम॥
रावन सुनि सिय रूपहूं, ब्याकुल मौहित कांम॥ २०॥
तब रावन मारीच कौं, पठवत भौ दस सीस॥
बह निकस्यौ मृग रूप धरि, पास राम अवनीस॥ २१॥
बा षल कौं मारत भयै, बांणन सौं रघुराय॥
सिया अकैली जांनि कैं, रावन लई चुराय॥ २२॥
करत बिलाप फिरै बनहिं, लछिमन जुत रघुराय॥
गति अस्त्री संग हीन की, जगतहिं दई दिषाय॥ २३॥

पितृ गति पंछी जटायु कौं, दै बांकौ तन दांहिं॥
मार्यौं फेरि कबंध कौं, दिय गंधर्ब पद वांहिं॥ २४॥
फिरि बाली बानर हत्यौ, मित्र जु सुग्रीवहिं कीन॥
सुधि मंगाय बानरन पैं, सिय की राम प्रवीन॥ २५॥
लै संग बानर सैंन हुव, प्रापत सिंधु तट आय॥
बिधि सिब पूजत जिन चरन, ऐसैं श्री रघुराय॥ २६॥
मच्छ मकर लागै जरन, जिन रिस सौं जल मांहिं॥
सब्द करत समुद्र जब रहि, गयौ उरि हियै ठांहिं॥ २७॥
लै पूजा की सौंज सब, धरि निज सुन्दर रूप॥
करि प्रनांम प्रभु चरन कौं, बोल्यौ बचन अनूप॥ २८॥
हम्ह जड़ तुम्हकौं जांनत न, आदि पुरुष अषलैस॥
अपरम पारि अनादि प्रभु, हे स्वामी अवधैस॥ २९॥
सुर सत्व गुण तैं प्रजापति, रज गुण कैं अनुभाय॥
भूत तमोगुण तैं इतै, सब तुम्ह सौं प्रगटाय॥ ३०॥
तातैं ज्यौं तुम्ह ह्वै इछ्या, त्यौं मो हूजै पार॥
सिय ल्यावहुँ अरु कीजियै, रावण कौं संघार॥ ३१॥
हे प्रभु बांधहुँ सेतु अब, या म्हैरै जल ठांहिं॥
यामैं अति जस रावरौ, फैलैंगौ जग मांहिं॥ ३२॥
निकसैंगैं दिगबिजय कौं, कैउ इहिं तैं नृपाल॥
तैंउ दैषि जस रावरौ, ह्वै हैं गाय निहाल॥ ३३॥
बानर ल्यायै नग सिषर, बांध्यौ सैतु बनाय॥
समैं सोध सिय पहिलहीं, दीन्ही लंक जराय॥ ३४॥
हनूं नील सुग्रीवहिं जुत, मनु जु बिभीषन पाय॥
प्राप्त भयै श्रीराम जु, निकट लंक कैं आय॥ ३५॥
दरवाजै घर नगर कैं, सथल बिहार अनैंक॥
सभासथल रु अंनधन कैं, कोठा भरै जितैंक॥ ३६॥
अैं ठौरैं सब बानरैं, रौकि लैत भय जाय॥
सकल धुजा घर चौहटै, ढांहन लगै रिसाय॥ ३७॥
तब लंका ब्याकुल भई, रावन लषि अकुलाय॥
बिदा कियै राछिस कहूं, तिन्हकैं नांम गनाय॥ ३८॥
आदि धूम्राछ कुंभ निकुंभ, अरु प्रहस्त अतिकाय॥
दुर्मुष सुरांतक नरान्तक, बिकंपनहिं समझाय॥ ३९॥
अरु अपनैं सुत सबन कौं, पठवत हौं उहिं बार॥
कुंभकर्न निज भ्रात कौं, कियौ फौज सिरदार॥ ४०॥

अस्त्र सस्त्र साजें बडी, राछिस सैंन कराल ॥
निकसी करन संग्राम मैं, मनु मुष पैंठी काल ॥ ४१ ॥
लछिमन जू सुग्रीवहिं अरु, जाम्बुबांन हनुमांन ॥
नील गंध मादन पनस, अंगद अति बलवांन ॥ ४२ ॥
इन्ह जुत सैंना संग सब, लैकैं श्री रघुराय ॥
राछिस सैंना सामुहैं, जात भयैं रिस छाय ॥ ४३ ॥
रावन की चतुरंगिनी, सैंना सौं उहिं बार ॥
बानर संग सुग्रीव लौं, कियौ जुद्ध दंद सुढार ॥ ४४ ॥
नग तरु बांण गदानि सौं, बानर करत प्रहार ॥
तासौं चकनाचूर सब, रांवण सैंन अपार ॥ ४५ ॥
सीता जी की चूक तैं, आयुर्बल दस सीस ॥
नष्ट भई हैं इहां लषी, जांनहुँ बिस्बासीस ॥ ४६ ॥
ता रावण की सैंन कौं, कहा कठिन संघार ॥
पैं प्रभु जतयौं जांनिकैं, रावन कौं अधिकार ॥ ४७ ॥
तबैं आप निकसत भयौ, करन जुद्ध बहिं बार ॥
रावण लषि निज सैंन कौं, नष्ट भई निरधार ॥ ४८ ॥
रावण कौं रथ स्वार लषि, बासव रथ लैं आय ॥
ता परि चढि श्रीराम जू, बरसैं बांण रिसाय ॥ ४९ ॥
अरु बोलै श्रीराम जू, रावण सौं इहिं भाय ॥
है असुरन मैं अधम तूं, अति ही नीच कुपाय ॥ ५० ॥
तूं लै आयौ सिया कौं, हम्ह बिनु इकली पाय ॥
तूं निलज्ज ताकौं अबैं, तुहि फल देहुँ जताय ॥ ५१ ॥
यौं कहि छौड्यौ राम जू, रावण परि इक बांन ॥
तासौं रावण कौं हिर्दै, फटि हुव चूर निदांन ॥ ५२ ॥
आनन तैं लौहू गिरत, धरनि पर्यौ दससीस ॥
पुनि बीतैं सुर स्वर्ग तैं, ज्यौं गिरहिं बिस्बाबीस ॥ ५३ ॥
तबै हजारनि राछिसी, निकसि लंक तैं आय ॥
मंदोदरी जुत करत भइ, अति बिलाप दुषपाय ॥ ५४ ॥
निज निज पति बंधून कौं, मिलि मिलि रुदत पुकारि ॥
निज कर सौं निज अंग मैं, करत प्रहार जु नारि ॥ ५५ ॥
हे रावण सब लौक कौं, रुदिन करांवन हार ॥
तौ बिनु हम्हहूं जिवत ही, सकल मरी निरधार ॥ ५६ ॥
तौ बिनु इह अब कौंनुं कैं, सरन रहैंगीं लंक ॥
तू अमरन सौं बौलतौ, बहि बढि बचन कुबंक ॥ ५७ ॥

होय कांम बस तैं नहिंन, जान्यौं सिया प्रताप॥
तातैं अैसी दसा सौं, भूमि परे हौं आप॥५८॥
हम्ह सबकौं अरु लंक कौं, तैंनैं बिधवा कीन॥
अरु भौजन तौ देहकौं, करहीं गीध सरीन॥५९॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि लहि बिभीषण, राम हुकम उहिं बार॥
अपनैं बंधुन की क्रिया, करत भयौ निरधार॥६०॥
लषत भयै श्रीराम सिय, बनी असौकहिं मांहिं॥
महाबिरह तैं लटि रहीं, बैठी बृछ तर ठांहिं॥६१॥
अरु निहार निज मिलन सौं, प्रफुलित सिय मुषचंद॥
स्वार जु पुषप बिबांन पैं, करी सहित आनंद॥६२॥
सीय लछमन सुग्रीव अरु, बिभिषन जुत रघुराय॥
चलै अजोध्या वौर कौं, फतै निसांन बजाय॥६३॥
लंक बिभीषण कौं दई, जुक्त राज सब साज॥
अरु आर्बल इक कल्प दिय, राम गरीब निवाज॥६४॥
करी अस्तुति ब्रह्मादिकनि, बरसै सुरगन फूल॥
देव सथल आनंद हुव, मिट्यौ सौक दुषमूल॥६५॥
गऊ मूत्र मैं रांधि जौ, भरत रहत है षाय॥
बलकल पहरैं सैंन भुव, जबसैं प्रभु बिछराय॥६६॥
इहै बात श्रीराम जू, सुनि अति षेद सुकीन॥
मग लगाइ नहिं बार झट, पउँचै अवधि प्रवीन॥६७॥
मंत्री प्रौहित अरु नगर, बासी लै सब संग॥
भरत सीस निज धरि चलै, प्रभु पादिका अभंग॥६८॥
सहित गीत बादित्रहिं अरु, बेद धुनि जै उच्चार॥
चलै सामुहैं ल्यायबै, श्रीरामहिं सुभ ढार॥६९॥
सकल साथ जुत भरत जू, प्रभु पद छुअै सुभाय॥
आगै धरिकैं पादुका, ठाढै अदब बजाय॥७०॥
मिलत भयै श्रीराम जू, चलि नैंननि जलधार॥
सिय लछिमन श्रीराम किय, द्विजनि प्रनांम सुढार॥७१॥
सब परजा श्रीराम कौं, करत भई परिनांम॥
बिजनांहिं लियौ जु सुग्रीव, अरु छत्र हाथि हनुमांन॥७२॥
लीयौ सत्रुघनहिं धनु अरु, तरकस अपनैं हाथ॥
बहु तीरथ जल पात्र लैं, चली सिया जू साथ॥७३॥
अंगद लीनौं षडग पुनि, जांबुबांन लिय ढाल॥
अैसैं पुसप बिवांन चढि, चालै दसरथ लाल॥७४॥

ज्यौं तारन मैं चंद्रमा, यौं सौभित रघुराय॥
करत जात आछै अस्तुति, बंदीजन सुषपाय॥७५॥
करि प्रवेस निज नगर मैं, प्रभु अपनैं घर आय॥
मिलैं आपणी मात अरु, सब मीतन सौं धाय॥७६॥
सिय लछिमन जुत राम जू, मातनि कियौ प्रनांम॥
मातनि इन्ह गोद लिय जल, चूमैं नैंननि ठांम॥७७॥
जटा दूरि कियै राम जु, अदभुत कियै स्त्रिंगार॥
पहरी माला फूल की, कोटि कांम न्यौछार॥७८॥
कियौ राज्य अभिषेक मिलि, बिप्रननि समैं सुढार॥
सीता जू हिय उमंगि कैं, करत भई सिणगार॥७९॥
भाइनहूं पहरै उमंगि, भूषन बस्त्र अनूप॥
सज धज सौं सब लषि परत, सरस कांम तैं रूप॥८०॥
बिनती कीनी भरत जू, जब नृप आसन लीन॥
पितु समांन सब प्रजा की, रछ्या राम प्रभु कीन॥८१॥
श्री रघुपति कै राज्य बिच, त्रेता जुग कैं मांहिं॥
रह्यौ जु सतजुग कौं समैं, या प्रिथवी जग ठांहिं॥८२॥
षंड द्वीप परबत नदी, बन समुद्र लौं जु आदि॥
करत भयै सब प्रजा कौं, पूर्न मनोरथ ज्यादि॥८३॥
आधि ब्याधि दुष सौक भय, जरा रु असमैं नास॥
अैं बातैं नांहिंन रहीं, रामराज बिच भास॥८४॥
इक पतनी ब्रत धार अरु, धरमधार श्रीराम॥
औरन कौं सिषवत भयै, महाधरम कैं काम॥८५॥
सेवा करिकैं प्रेम जुत, जनक सुता सुषधाम॥
करत भई अति ही प्रसंन्न, अवधेस्वर श्रीराम॥८६॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते दसमोऽध्यायः ॥ १० ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ औकादसोऽध्यायः ॥

(भगवान श्रीराम की शेष लीलाओं का वर्णन)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि श्री राम जू, प्रभु कै रूप सरीन॥
जु उत्तम सामग्रीनिन सौं, जिग्य अनैंक सुकीन॥१॥

हौम करनवारै द्विजहिं, पूर्ब दिसा दिय दांन॥
जिग्य मैं हौ बिधि ठौर तिहुँ, दिय दछिनादि सथांन॥ २॥
पछिम दिसा अध्वर्यु कौं, देत भयै श्रीराम॥
सामग कौं देतै भयै, उत्तरहिं दिसा सुठाम॥ ३॥
और प्रिथी संपूर्न दिय, आचारज कौं दांन॥
दांन पात्र द्विज जांनि अरु, दियौ दांन जुत मांन॥ ४॥
पहरैं भूषन बस्त्र जें, बैठै जिग्य बिच रांम॥
नथ लौं भूषन बस्त्र अधर, सीया अंगहिं ठांम॥ ५॥
सौइ रह्यौ अरु औरु सब, दियौ राम जू दांन॥
रघुपति ब्रह्मन्यिता लषि, द्विज रीझै सुजांन॥ ६॥
दैत भयै श्रीराम जू, ही कौं द्विज भुव फेरि॥
अरु लैही ऐसैं बचन, प्रभु सौ अति हित हेरि॥ ७॥
प्रभु तुम्ह भगवांन हौ, बसि हम्ह हिर्दै सथांन॥
दूरि करत अग्यांन सौं, इही बडौ है दांन॥ ८॥
ब्रह्मनि दैव जिन्ह बुधि बडी, बडौ सुजस सुषदाय॥
ग्यांनी जन जिन्हकैं चरन, राषत हिर्दै सुभाय॥ ९॥
ऐसैं तुम्ह श्रीराम जू, तिन्हकौं है परिनांम॥
जगत बिदित जिनकौं सुजस, फैलि रह्यौ अभिरांम॥ १०॥
इक दिन निस कौं राम जू, फिरै गुपत पुर ठांहिं॥
तांह सुन्यौ ऐसौं बचन, ऐक पुरुष मुष मांहिं॥ ११॥
निज तिय सौं इह कहत हौ, पुरुष बचन या भाय॥
तू तौं है अपतिब्रता, बैठत परघर जाय॥ १२॥
तौहि राषिहौं नांहिं म्हैं, अस्त्री लौभ लुभाय॥
ज्यौं सीय रावन कैं गइ, फिरि राषी रघुराय॥ १३॥
तइसैं तौहि न राषि हौं, म्हैं अपनैं घरमांहिं॥
यौं निज निंदालौक मैं, सुनि निज अवननि ठांहिं॥ १४॥
सिय त्यागन श्रीराम जू, करत भयै उहिं बार॥
बालमीक आसरम बसि, सीता जू निरधार॥ १५॥
दौय पुत्र जिहीं ठां भयैं, सिय कैं लवकुस नांम॥
बालमीक उन्हकौं कियौ, जाति कर्म उहिं ठांम॥ १६॥
चित्रकेतु रु अंगद भयै, लछमन कै द्वै पूत॥
पुस्कल तछ भयै दोऊ, भरतहिं पुत्र अदभूत॥ १७॥
हुव सुबाहु स्रुतसैंन द्वै, पुत्र सत्रुघन जू गैह॥
जुद्ध करिकैं जीतत भयै, भरत गंधर्ब अछैह॥ १८॥

बांह तैं धन ल्यायै दिय, श्रीरामहिं निरधार॥
चहत भयै प्रभु दास्य पद, करि चित तत्व बिचार॥ १९॥
मधु सुत राछिस लवण हति, सत्रुघन जुध कैं मध्य॥
भयै बसावत मधुपुरी, सौ बिच जक्त प्रसध्य॥ २०॥
सीता जू परवेस भुव, कियै प्रभु इछा भाय॥
सिय गुण सुधि करि राम जू, हुव ब्याकुल अधिकाय॥ २१॥
त्रिय प्रसंग ईस्वरन हूं, दरसायौ दुषदाय॥
औरन की वां का चली, दुष सुष समैं प्रभाय॥ २२॥
ता दिन तैं श्रीराम जू, ब्रह्मचर्ज ब्रत लीन॥
अग्नि हौत्र करतै भयै, बरस सहसदस तीन॥ २३॥
श्री प्रभू चरन चरित निज, भक्तनिनि हिर्दै सुभाय॥
भयै पदारथ लौक निज, अपनीं ईछा पाय॥ २४॥
सुर प्रार्थनां सौं प्रगट, भयै हुतै श्रीराम॥
जिन बांध्यौ हठि सैतु कइ, असुर हतै अघधाम॥ २५॥
प्रभु सौं अचिरज नांहिंनै, अचिरज लषै सुकौनुं॥
बांनर संग लैं जुध किय, सौ प्रभु चरित सुठौनुं॥ २६॥
जिन्हकौं जस गावत सकल, अबहूं लौं बडभाग॥
फैलि रह्यौ जस दिसन कैं, अंति आदिलौं जाग॥ २७॥
नर सुर जिन्हकैं चरन कौं, करत उमगि परिनांम॥
भजत भक्त निज मुक्ति कौं, अैसैं श्रीरघुरांम॥ २८॥
जिननि राम जू कौ कियौ, दरसन सपरस चाय॥
अैसै बासी अबधि कैं, गति जोगिनि की पाय॥ २९॥
कहै सुनै जो पुरुष कौ, रामचरित सुभ ठार॥
छुटै सुबंधन कर्म तैं, प्राणी बिची संसार॥ ३०॥

॥ राजोवाच॥

नृप पूंछत श्रीराम जू, सौं तिहुँ भ्रात सुभाय॥
प्रसंन रहे कै नांहिं सौ, सुक मुनि कहौ सुनाय॥ ३१॥
अरु चाहत रहि प्रजा सब, श्रीरामहिं किहिं भाय॥
सौऊ आछे बरनिकैं, हम्हकौं देहुँ बताय॥ ३२॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि श्रीराम जू, रहै अजोध्या धांम॥
भायन कौं पठवत भयै, जीतन सर्बदिस ठांम॥ ३३॥
याही मैं जांनी परी, प्रसंन हुतै सब भ्रात॥
अरु आग्यां कैं बसि हुतै, छौडि कपटि उतपात॥ ३४॥

छिरकी रही सुगंध सौं, भूमि अजोध्या मांहिं॥
गज मदहीं जल की कीच, अति रही सबै ठांहिं॥ ३५॥
हौ आनंदित नगर सब, मुष रघुराय निहारि॥
ज्यौं प्रफुलित अरिबिंद कैं, रबि कौं उदै बिचारि॥ ३६॥
सभा सदन घर नगर कैं, सुर मंदिर सब ठौर॥
सुबरन् कलस धुजान सौं, मंडित पुर सुभ तौर॥ ३७॥
कैरि सुपारी आरसी, बस्त्र पुहप दल माल॥
इन्हकी रचना ह्वै रही, जहँ तहँ भलैं रसाल॥ ३८॥
जांह पधारैं राम जू, पुरबासी तिहुँ ठौर॥
भैंट करै अरु दैहिं मिलि, आसिरबाद सुतौर॥ ३९॥
नित्यरांम दरसन चहैं, पुरबासी करि प्रीति॥
नारि कहा अरु नर कहा, इही सबन की रीति॥ ४०॥
जब निकसै श्रीराम जू, पुर बिच हौय सवार॥
तबैं फूल बरसा करै, हरषित नारि अपार॥ ४१॥
जांह बसैं श्रीराम जू, सौं मंदिर सुष भौंन॥
बहु प्रकार जंहं भोग की, सामग्री जू सुठौंन॥ ४२॥
थंभा मणि बैदूर्य कैं, बनि मूंगन कैं द्वार॥
आंगन मर्कित मणिन कैं, हीरा भीति सुढार॥ ४३॥
पुहप मुक्तमाला बंधी, रचना बस्त्र बनाय॥
धूपदीप फल फूल सौं, मंडित ठौर सुभाय॥ ४४॥
जहँ नरनारी सुरन सम, फिरत महा अभिरांम॥
बिहरैं सिय जुत राम जू, औसैं मंदिर ठांम॥ ४५॥
धर्म मारग सौं बहु बरस, कियौ बिषै अरु भोग॥
रामचरण कौं ध्यांन नर, करत रहै सुभ जोग॥ ४६॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते अैकादसोऽध्यायः ॥ ११ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ द्वादसोऽध्यायः ॥

(इक्ष्वाकु वंश के शेष राजाओं का वर्णन)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - कुस सुत हुव श्रीराम कैं, तिन सुत अतिथि जु नांम॥
जांकै पुत्रहिं भयौ निषध, जिहिं सुत नभ अभिरांम॥ १॥

चोपई - पुंडरीक नभ तैं सुत भाय। तिन सुत षेमधन्वा प्रगटाय॥
जिहँ सुत देवानीक कहाय। ताकैं सुत अनीह प्रगटाय॥ २॥
पारिजात सुत प्रगटै तांहिं। बल सुत प्रगट हौत भय जांहिं॥
जिहँ सुत प्रगट्यौ स्थल कुमार। जांकै भय बज्रनाभ सुढार॥ ३॥
सौ प्रगट्यौ सूरज कौ अंस। ताकैं सुत हुव षगुण प्रसंस॥
जिनकैं बिध्रत प्रगट्यौ पूत। हिरण्यनांभ जिहँ सुत अदभूत॥ ४॥
सौ जोगेस्वर भयौ सुजांन। जाग्यबल्क जिन सौं लिय ग्यांन॥
अरु जइमन्य कौं जो सिष भाय। तत्व ग्यांन तैं जिहँ उर छाय॥ ५॥
हिरण्यनाभि सुत ध्रुवसंधि नांम। पुत्र सुदर्सन ताकैं हिं धाम॥
अग्निवर्ण सुत उपज्यौ तांय। अरु प्रगट्यौ सीघ्र सुत जांय॥ ६॥
मरु सुत प्रगट भयौ बहि धांम। सौ बसिष्ठ बहु कलाप जु ग्राम॥
जासौं कलि कैं अंतजु मांहिं। सूर्ज बंस प्रगट्यौ प्रगटांहिं॥ ७॥
ताकैं पुत्र भय प्रसुश्रुत नांमि। संधि पुत्र प्रसु कैं ग्रह ठांमि॥
ताकैं अमर्षण भयौ कुमार। महस्वांन तिहुँ पुत्रहिं सुढार॥ ८॥
जास बिस्वसाहवहिं सुभाय। तास पुत्र प्रसेनजित सुठाय॥
प्रसेनजितहिं सुत तछक आय। ताकैं पुत्र ब्रहदवल सुहाय॥ ९॥
जिनकौ हे नृप पिता तुम्हार। बिच संग्राम छोह चढि मार॥
सुक कहत कि इह बंस जताय। म्हैं कह्यौ संछैप समझाय॥ १०॥

दोहा - **इतनै तौ नृप ह्वै चुकैं, बंस इष्वाकुहिं मांहिं॥
अरु अब आगैं हौहिंगैं, तैहूँ तुम्हैं सुनांहिं॥ ११॥
पुत्र बृहदवल कैं भयौ, नांम ब्रहदरण जांस॥
ताकैं उरुक्रिय हौहिगौं, वत्सबृध सुत तास॥ १२॥
जिहँ ह्वै हैं प्रतिव्यौम सुत, ताकैं ह्वै हैं भानु॥
ह्वै हैं पुत्र दिबाकहुँ जिहँ, तिहुँ वाहन पति जानु॥ १३॥
जिहँ ह्वै हैं सहदेव सुत, बीर ब्रहदस्व जास॥
जाकैं ह्वै हैं फिरि प्रगट, भानुमान सुत तास॥ १४॥
प्रतीकास्व ह्वै पुत्र जिहँ, तिहँ सुप्रतिक सुत ज़ांनि॥
ह्वैहिं जास मरुदेव सुत, ताहिं सुनछत्र पिछांनि॥ १५॥
जांकै ह्वै हैं पुष्कर सुत, पुत्र अंतरिषहिं जास॥
ताकैं सुतपा हौयगौं, सुतहिं अमित्रजित तास॥ १६॥
जांकै पुत्रहिं ह्वै हैं सौ, ब्रहद्राज नांमाय॥
ताकैं ह्वै हैं बरहि सौ, पुत्र कृतंजय पाय॥ १७॥
जाकैं ह्वै हैं रणंजय, ताकैं संजय नांम॥
जाकैं ह्वै हैं साक्य सुत, सुधौदहिं तिहीं धांम॥ १८॥**

ह्वै हैं लांगलहिं पुत्र जिहँ, सुत प्रसैनजित जास ॥
ताकैं छुद्रक हौहिगौ, रणक नांम सुत तास ॥ १९ ॥
जाकैं ह्वै हैं सुरथ सुत, तासु सुमित्र सुत जांनि ॥
इतै ब्रहदबल बंस मैं, नृप ह्वै हैं इह मांनि ॥ २० ॥
इहां तांई इष्वाकु कौं, चलि हैं बंस सुढार ॥
चलि हैं नांहिं सुमित्र तैं, आगै कलिजुग बार ॥ २१ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते द्वादसोऽध्यायः ॥ १२ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ त्रयोदसोऽध्यायः ॥

(राजा निमि के वंश का वर्णन)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि इष्वाकु कौ, बडौ बिकुष सुत जांनि ॥
ताकौ तौ हम्ह कह चुकै, बंस भलैं उनमांनि ॥ १ ॥
दुतिय पुत्र जु निमि नांम हौ, अब सुनियै तिहिं बंस ॥
निमि नृप तत्व ग्यांनी हुतौ, सौ बिच जक्त प्रसंस ॥ २ ॥
निमि नृप कह्यौ बसिष्ठ कौं, मोकौं जिग्य कराहुँ ॥
तबै रिषि बोलै चित धरि, बासब जिग्य उमाहुँ ॥ ३ ॥
पहिलि मोहि जिग्य कैं लियैं, इंद्र कहि गयै राय ॥
तातैं उन्हैं कराय जिग्य, तुम्हैं करैं हौं आय ॥ ४ ॥
यौं कहि गयै बसिष्ठ रिषि, जाय इंद्र कैं पास ॥
करवावत भयै जिग्य बहिं, आछैं सहित हुलास ॥ ५ ॥
राजा निमि संसार कौं, जांनि अनित्य प्रबीन ॥
और रिषिन कौं बौलि कैं, जिग्यांरंभ सौ कीन ॥ ६ ॥
पाछै तैं आवत भयौ, रिषि बसिष्ठ नृप पास ॥
दियौ स्राप रिषि नृपति कौं, कह्यौ कियौ तौ नास ॥ ७ ॥
तब नृप कह्यौ कि लौभ करि, तुम्ह मुहि दीनौं स्राप ॥
तातैं याही बार अब, नास पाय हौं आप ॥ ८ ॥
यौं कहि सक्ति जु जोग सौं, नृप निमि किय तन त्याग ॥
अरु बसिष्ठहूं छोडि कैं, अपनौं तन उहिं जाग ॥ ९ ॥
मित्राबरुण सुर तैं प्रगट, भयै उरबसी कूंष ॥
यौं बसिष्ठ रिषि फेरि तन, धरतैं भयै सरूप ॥ १० ॥

नृप तन बस्त्र सुगंध मैं, राषि निरषि उहिं बार॥
जिग्य पूर्न करि सुरन पैं, मांग्यौ बर या ढार॥ ११॥
इह राजा जीवै बहुरि, महा धरम कौ रूप॥
तब नभ मैं निमि नृपति यौं, बोलै बचन अनूप॥ १२॥
म्हैं चाहत नहिं तन धर्यौं, दुष्ष रूप है देह॥
तामैं लागी ही रहत, मृत्यु दुषदाय अछेह॥ १३॥
मुनि सैवत प्रभु कैं चरन, छूटत बंधन देह॥
तातैं म्हैं अब नहिं धरौं, करि सरीर सौं नेह॥ १४॥

॥ देवा ऊचुः॥

तब सुर बोलै हे नृपति, तुम्ह मति धरौ सरीर॥
बसौं सबनि कैं द्रिगनि मैं, तत्व ग्यांनी मति धीर॥ १५॥
जब तैं राजा निमि बसे, सबकैं नैत्रनि मांहिं॥
मूंदत षौलत पलक सौं, बैइ द्रिगनि कैं ठांहिं॥ १६॥
तब जु नृपति कौं तन मथ्यौ, रिषिनि मतौ मिलि ठांनि॥
तामैं तौ प्रगटत भयौ, बालक अँक निदांनि॥ १७॥
जनक बिदेह रु मिथिल हुव, यै तिहुँ ताकैं नांम॥
पुत्र उदाबसु प्रगट हुवै, जास नृपति कैं धांम॥ १८॥
ताकैं प्रगटयौ पुत्र तिहिं, नंदीबर धन धांम॥
जाकैं भयौ सुकेत सुत, देवरात्रि जिहिं नांम॥ १९॥
जाकैं सुत हुव ब्रहदरथ, महाबीर्य सुत जास॥
ताकैंहि सुधृत पुत्र भौ, धृष्टकेतु हुव तास॥ २०॥
जाकैं हरियस्व पुत्र भौ, जिहिं सुत मरु प्रगटाय॥
ताकैं भय प्रतीपक जिन, सुत कृतिरथ नांमाय॥ २१॥
देवमीढ ताकैं भयैं, बिस्रुत तिनकैं धांम॥
जाकैं सुत महाधृति जिहँ, सुत कृतिरात जु नांम॥ २२॥
जिहँ सुत महारोमां भय, स्वर्ण रोमां सुत जास॥
हुव पुत्र हरसुरोमां तिहँ, सीरध्वज सुत तास॥ २३॥
जिन्ह जिग्य निमत प्रिथ्वी षुदत, भुव तैं सिय प्रगटाय॥
सोइ सीरध्वज जनक की, पुंत्री भलैहुं कहाय॥ २४॥
जाकैं कुसध्वज पुत्र हुव, पुत्र धरम धुजहिं तास॥
कृतधुज रु मितधुज पुत्र द्वै, हुव धुजधरम निवास॥ २५॥
कृतधुज कैं सुत कैसिधुज, षांडिक मितधुज धांम॥
कृतधुजहिं कौं सुत कैसिधुज, हुव ग्यांनी अभिरांम॥ २६॥
अरु मितधुज कौं पुत्र हुवै, षांडिक मार्गी कर्म॥
जिग्य अनैंक जिननैं किय, जब तप संजम धर्म॥ २७॥

तेहुँ कैसिधुज तैं डरपि, भाजि गयै किहुं ठांम॥
प्रगट कैसिधुज कैं भयौ, भांनमांन सुत नांम॥ २८॥
जिनकैं हुव सतद्युम्न सुत, तिन्हकैं सुत सुचि नांम॥
जांकै सुत सनद्वाज हुव, उर्द्धकेतु तिहँ धांम॥ २९॥
जांकै अजसुत प्रगट हुव, पुरुज़ित जिहँ सुत जांनिं॥
तिन्हकैं नेमि अरिष्ट हुव, जिन्ह श्रुतायु सुत मांनि॥ ३०॥
तिन्हकैं भयै सुपार्स्वक, पुत्र चित्ररथ अरु जास॥
जिन्हकैं सुत षैमादि हुव, जाकै समरथ भास॥ ३१॥
समरथ कैं सतरथ भयौ, ताकैं उपगुर पूत॥
जांकै सुत उप गुपत हुव, अग्नि बंस अदभूत॥ ३२॥
वस्वनंत ताकैं भयौ, जिनकैं हुव युवधांन॥
भयौ सुभाषण तास सुत, ताकै श्रुत सुत जांन॥ ३३॥
ताकै जय जय कैं बिजय, ताकैं सुत रित नांम॥
जिनकैं सुनक जु पुत्र हुवै, बीतहब्य तिहँ धांम॥ ३४॥
जाकैं सुत धृति नांम हुव, समर बिषै अतिधीर॥
ताकैं हुव बहुलास्व सुत, भयौ प्रिथवि मधि वीर॥ ३५॥
तिनकैं कृत सुत प्रगट हुव, जिनकैहिं सुत महांन॥
वसी नांम जिहिं सुत भयौ, इन्हकैं कहा बषांन॥ ३६॥
राजा निमि कैं बंस मैं, सबै भयै जुत ग्यांन॥
सुषदुष तैं न्यारें रहैं, ग्रहहीं बिचि बुधिवांन्॥ ३७॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भापा ब्रजदासी
कृते त्रयौदसोऽध्यायः ॥ १३॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुर्दसोऽध्यायः ॥

(चन्द्रवंश का वर्णन)

॥ श्री सुक उवाच॥

दोहा - सुक कहत कि सुनियैं अबैं, चंद्रबंस हे राय॥
तामैं भयै पुरुरवा, अति धर्मग्य सुभाय॥ १॥
प्रभु कैं नाभी कंज तैं, प्रगट भयौ मुष च्यार॥
ता ब्रह्मा तैं अत्रि हुवै, ससि तिन्ह द्रिग अनुसार॥ २॥
तिहूँ नछित्र द्विज औषधनि, कौ पति ब्रह्मा कीन॥
जिग्य राजसू ससि कियौ, सुर रिषि बौलि प्रवीन॥ ३॥

तारा बृहस्पति की तिया, ससि हरि लिय बर जोर॥
दैत भयौ बहि नांहिनैं, सुर गुर बउत निहौर॥ ४॥
तब फिरि याही बात पर, किय सुर असुरनि जुद्ध॥
लै दयतन कौं सुक्र हुव, ससि वौरैं धरि क्रुद्ध॥ ५॥
ब्रहस्पति वौरैं सिव भयै, भूतगणनि लै साथ॥
सुर जुत ब्रहस्पति और भौ, अमरावति कौ नाथ॥ ६॥
बउत मरै वा जुद्ध मैं, सुर आसुर वा बार॥
तौहू ब्रहस्पति कौं नहिं ससि, दिय अस्त्री निरधार॥ ७॥
तब ब्रहस्पति बिधि सौं कह्यौ, ससि कौं षिजि मुष च्यार॥
तारा तिया दिवा दियै, ब्रहस्पति कौं निरधार॥ ८॥
गर्भवती अस्त्री रही, कह्यौ ब्रहस्पति तांहिं॥
त्यागि परायौ गरभ तुहि, भसम करौं म्हैं नांहिं॥ ९॥
तबै उन तिय लज्या सहित, कियौ गरभ कौ त्याग॥
अदभुत सुंदर गुन सहित, प्रगट्यौ सुत बडभाग॥ १०॥
जा काजै ब्रहस्पति रु ससि, झगरौ दुहूँन कीन॥
बह कहै म्हैरौ पुत्र बह, कहै मो पुत्र सरीन॥ ११॥
तारा कौं पूछत भयै, मिलि सब रिषि उहिं ठांहिं॥
तारा बौली कछुन मुष, भैद बतायौ नांहिं॥ १२॥
तब बालक बोल्यौ कि हे, माता कौ मो तात॥
तउ तारा बौली न मुष, कही ताहि सत्य बात॥ १३॥
ता पाछै पूछत भयै, तारा कौ मुष च्यार॥
सत्य कहौ कौ तैं भयौ, इही जो पुत्र सुढार॥ १४॥
तब तारा बौली कि है, ससि कौ सुत निरधार॥
जब दिबाय दियै पुत्र बह, ससि कौं बिधि उहिं बार॥ १५॥
बडौ भयौ बुधिवांन बहि, बालक जिहँ बुध नांम॥
जासौं भयौ पुरूरवा, गरभ इला तिय ठांम॥ १६॥
दानवीरता जुद्ध वर, सब गुण सील सरूप॥
जिहिं पुरूरवा नृपति कौं, सुनि उरवसी अनूप॥ १७॥
रीझि अपछर आवत भइ, नृप पुरूरवा पास॥
मित्राबरुण कैं स्राप तैं, कीनौं हौ भुव वास॥ १८॥
सौ लषि नृपकौं काम सम, मोहित हुव रिझिवार॥
राजा हूं लषि प्रसंन ह्वै, बोलै या अनुसार॥ १९॥

॥ पुरूरवा उवाच॥

तू आइ कियौ भलौ तूं, कहै करौं सौ वांम॥
मो सौं मिलिकैं तू सदा, रहौ जु म्हैरै धांम॥ २०॥

॥ उर्वसी उवाच ॥

इहि सुनि बौली उरबसी, हे सुंदर तू दैषि॥
कौनुँ न मौहित हौय तिय, करि चित चाह अलैषि॥ २१ ॥
अैं द्वै मीढां पुत्रहुँ सम, म्हैरै हैं निरधार॥
इन्हकी रछा करहूंतौ, म्हैं भी रहुँ तौ लार॥ २२ ॥
घी भौजन करिहौं रु तुहिं, नगन लषौं जिहिं बैंर॥
तौ तबहीं रहिहौं नांहिं, जात रहौं बिनु झैंर॥ २३ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

इह करार करि उरबसी, रही नृपति कैं धांम॥
राजा बौलै रूप तौ, हे तिय अति अभिरांम॥ २४ ॥
तौ सौं मोहित ह्वै नांहिं, अैसौं नांहिंन कौय॥
अरु तूं आई आपतैं, मो परि प्रसंन जु हौय॥ २५ ॥
नृप पुरुरवां अपछर जुत, निज ईछा अनुसार॥
बन जु चैत्ररथ आदि मैं, लागै करन बिहार॥ २६ ॥
अपछरा अंग मैं गंध जनु, कंबल बास निरधार॥
तासौं मौहित हौय कैं, किय बहु दिननि बिहार॥ २७ ॥
इंद्र कह्यौ बिनु उरबसी, मो कौं कछु न सुहाय॥
पठयैं ल्यावन उरबसी, गंधर्बनि जु बुलाय॥ २८ ॥
तब गंधर्बनि आनकैं, मैंढा लियै चुराय॥
मैंढा दुहूँ पुकारिबै, लागै तब अधिकाय॥ २९ ॥
तब बौली यौं उरबसी, मो पति हीन कहाय॥
झूंठि कहावै सूरता, ता दिन मैं दरसाय॥ ३० ॥
म्हैरै मैंढा पुत्रनि सम, तिन्हैं लियौ कौ जात॥
इहै छुडावत नहिं डरपि, सौंय रह्यौ लषि रात॥ ३१ ॥
नृप उर लागै बचन अैं, ज्यौं अंकुस गज सीस॥
नागौ ही लैं कैं षडग, दौरयौ बिस्बाबीस॥ ३२ ॥
गंधर्बनि मैंढा जु तजि, बिजुरी दिय चमकाय॥
ल्यायौ मैंढा नृपति पैं, तिया नगन लषि पाय॥ ३३ ॥
जात रही बहि अपछरा, बिरह बिकल नृप हौय॥
बोरौं सौ प्रिथवी बिषैं, फिरत भयौ दुष गौय॥ ३४ ॥
यैंक समैं कुरुषैत्र बिचि, पांच सषीन समेत॥
लषी अपछरा बह नृपति, जासौं हौ अति हेत॥ ३५ ॥

॥ पुरुरवा उवाच ॥

तब नृप बोल्यौ हे तिया, ठाढी रहि तू बाल॥
तू मुहि तजिबै जोग्य नहिं, सुनि मो बात रसाल॥ ३६ ॥

तू जो करिहैं प्रीति नहिं, तौ मो गिरि हैं देह॥
इह सुनि बौली उरबसी, सुधि करि अपनौं नेह॥ ३७॥

॥ उर्वसी उवाच॥

हे राजा तूं पुरुष है, धरि धीरज बुधिवांन॥
इंद्रिन कैं बस हौहुँ मति, किहूं की मित्र तियांन॥ ३८॥
अस्त्रीन कैं नांहिंन दया, निरदय सहज सुभाय॥
क्रौध रु साहस कौ बउत, अस्त्री हिर्दै बसाय॥ ३९॥
पति भाई हूं कौ हतन, लावै नांहिंन बार॥
अपतिब्रता अस्त्री वहै, निति नव पुरुष सुढार॥ ४०॥
तिनकैं काहू सौ कबहुँ, प्रीति हौत है नांहिं॥
भूलिहूं जिन बिस्बास नहिं, धरियै नृप मन मांहिं॥ ४१॥
बितै बरस इक मोहि तू, इक निसि मिलि है राय॥
तामैं म्हैरै हौहिंगौं, बालक प्रगट सुभाय॥ ४२॥

॥ श्री सुक उवाच॥

गर्भवती लषि उरबसी, नृप आयौ निजगेह॥
बितै बरस इक नृप गयौ, वा तिय पैं बंधि नेह॥ ४३॥
बस्यौ नृपति इक निस तिया, मोहित देष्यौ राय॥

॥ उर्वसी उवाच॥

तब बोली यौं उरबसी, हँसिकैं बचन सुनाय॥ ४४॥
नृप गंधर्बनि की करहुँ, सेवा चितहिं लगाय॥
जासौं मौकौं पाय हौं, दैत जु भैदि बताय॥ ४५॥

॥ श्री सुक उवाच॥

नृप गंधर्बनि की करत, भौ सैवा निज धांम॥
गंधर्वनि इक पात्र दिय, अग्नि स्थाली नांम॥ ४६॥
कह्यौ कि या करि अग्नि मैं, करिहौं हौम सुभाय॥
अपसरानि कैं लोक कौं, प्रापति ह्वै हौ जाय॥ ४७॥
इह राजा नैं अपसरा, अग्नि स्थाली जांनि॥
अग्नि स्थाली लै फिर्यौ, बनहीं बीच निदांनि॥ ४८॥
अग्नि स्थाली कौं बहुरि, नृप वनहीं मैं राषि॥
आयौ अपनैं गेह कौ, कछू न चित अभिलाषि॥ ४९॥
तीन बेद नृप हिर्दै तैं, प्रगट भयै निरधार॥
कर्म जिग्यादिक करत हैं, तिनसौं सब संसार॥ ५०॥
अग्नि स्थाली ठौर जिहिं, धरि आयै हैं राय॥
तांह बहुरि बनमैं गयै, कैतिक दिवस बिलाय॥ ५१॥

समी बृछ कैं बीच तांह, लषि पीपर बृछ राय॥
भयौ बनावत नृप इहै, द्वै अरणी चित लाय॥५२॥
तिन दुहूंन मैं अपन अरु, अपसर कौं किय ध्यांन॥
त्रतीय मंथन काष्ट कौं, सौ सुत गन्यौ निदांन॥५३॥
अरणी मंथन तैं प्रगट, भयौ अग्नि उहिं बार॥
ताकौं अपनौंहिं पुत्र करि, मान्यौ नृप निरधार॥५४॥
तासौं अपसर लौक की, धरि ईछा चित राय॥
करत भयौ प्रभु कैं निमित, जिग्य भलैं अनुभाय॥५५॥
अग्नि यैंकहू हौं सही, पहलैं सतजुग मांहिं॥
प्रणव मंत्रहू यैकही, हुतौ सबनि मुष ठांहिं॥५६॥
हुतै देवताहू प्रगट, प्रभु ही अैक सरीन॥
त्रेता मध्य पुरुरवा, अग्नि प्रगट किय तीन॥५७॥
प्राप्त भय नृप जिग्य करि, लौक गंधर्बनि जाय॥
मिल्यौ उरबसी सौ भलैं, उहाँ चितहिं सुषपाय॥५८॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते चतुर्दसोऽध्यायः॥ १४॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ पंचदसोऽध्यायः ॥

(ऋचीक व जमदग्नि और परशुराम जी का चरित्र)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - श्री सुक कहत पुरूरवा, तैं अपसर गर्भाय॥
पुत्र भयै छह प्रगट तिनी, अबहूं नांम गनाय॥ १॥
आयु श्रुतायु सत्यायु रय, बिजय रु जय इन नांम॥
सुत पुरूरवा कैं भयैं, गर्भ उरबसी ठांम॥ २॥
पुत्र जू प्रगट श्रुतायु कैं, हौत भयौ बसुमांन॥
सुत सत्यायु कैं श्रुतंजय, प्रगट भयौ बुधिवांन॥ ३॥
रयकैं सुत इक नांम हुव, जयकैं अमित जु नांम॥
रु भीम पुत्र भौ बिजय कैं, ताकैं कांचन धांम॥ ४॥
जाकैंहुं हौत्रक पुत्र भौ, जाकैं जन्हुं प्रगटाय॥
जे गंगा कौं पी गयै, महाजौग बल पाय॥ ५॥
पूरु पुत्र जन्हुं कैं भयौ, बलाक जिहिं सुत नांम॥
ताकैं प्रगट पुत्र अजकहुँ, बहुँ कुस सुत जिहँ धांम॥ ६॥

बसु कुसांबु कुसनाभ अरु, मूर्त तनय सुत च्यार॥
प्रगट भयै कुस नृपति कैं, राषन बंस सुढार॥७॥
प्रगटयौ पुत्र कुसांबु कैं, गाधि जु जांकौं नांम॥
सत्यवती हुव गाधि कैं, पुत्र अतिहिं अभिरांम॥८॥
रिषि रिचीक मांगत भयै, वा कन्या कौं चांहिं॥
तब नृप सौं या गाधि नृप, कह्यौ बचन अहुटांहिं॥९॥
मोहि ल्याय जौ देहुँ रिषि, अस्व सहस जिग्य हेत॥
अैंक कांन ह्वै स्यांम सब, और अंग हौ सेत॥१०॥
तौ म्हैं तुम्हकौं देहिं रिषि, निज पुत्री जु अभिरांम॥
बिनु अस्वल्यायै देहुँ नहिं, रिषि जइयैं निज धांम॥११॥
रिषि रिचीक इह सुनि गयैं, बरुण दैवता पास॥
बैसैं हीं अस्व सहस लैं, आयै सहित हुलास॥१२॥
गाधि नृपति कौं अस्व बैं, दैत भयै रिषि ल्याय॥
सत्यवती कन्या इहैं, बरी चित्तहिं सुष पाय॥१३॥
सत्यवती संतान की, बिनती पति सौं कीन॥
अरु माता सत्यवती की, भइ सुत चाह अधीन॥१४॥
तबै छत्री अरु बिप्रहुँ कैं, जोग मंत्र अनुसार॥
हौम अग्नि मैं करि भलैं, साधित तबहीं बार॥१५॥
दौय पात्र भरि षीर कैं, अस्त्री सासु निमंत॥
धरिकैं हौम सथांन मैं, रिषि रिचीक बुधिवंत॥१६॥
गवन्यै जमुनां स्नांन कौं, आवै इतनैं मांहिं॥
अैं माता पुत्री दौऊ, आय हौम कैं ठांहिं॥१७॥
सत्यवती की मायनैं, अैसौं कियौ बिचारि॥
रिषि निज तिय कैं काज कछु, ह्वै हैं कियैं सुढारि॥१८॥
सत्यवती कैं बांट की, माता लैं कैं षीर॥
सत्यवती की मायनैं, षाई हौय अधीर॥१९॥
अरु माता कैं बांट की, रही पात्र बिच षीर॥
सौ षाइ सत्यवती नैं, मूरषता कैं सीर॥२०॥
इह सुनि रिषि तिय सौं कह्यौ, बुरौ काम तैं कीन॥
निरदयी छत्री सारिषौ, ह्वै हैं जु पुत्र सरीन॥२१॥
अरु चहिं हैं तौ मात सुत, छत्री जु निरदय हौय॥
ताकैं ब्राह्मण हौयगौं, तामैं भेद न कौय॥२२॥
सत्यवती पति सौं तबैं, करी प्रार्थनां यैह॥
निरदयी छत्री सौ न ह्वै, मो सुत सुनि संदेह॥२३॥

तबै रिषि बोलै पुत्र तौ, ह्वैहिं हैं पुत्र सुभाय॥
पैं तुहि छत्री निरदय सौ, पौत्र प्रगटि ह्वै आय॥ २४॥
इह बर दीनौं रिषि तबैं, सत्यवती गरभाय॥
रिषि जमदग्नि सुढार सुत, समैं पाय प्रगटाय॥ २५॥
सत्यवती अस्त्री भई, नदी कौसकी नांम॥
तब नृप रैणुक की सुता, जमदग्नि बरि अभिरांम॥ २६॥
पुत्र भयै जमदग्नि कैं, आदि बसुमांन नांम॥
तिन्हमैं प्रगटै बडै सुत, परसरांम अभिरांम॥ २७॥
निरदयी छत्री सम भयै, जे प्रभु कौ अवतार॥
प्रिथवी बार इकीस दिय, जिन बिप्रननि निरधार॥ २८॥
छत्रीन हैहय नांम कैं, बंसन कौं करि नास॥
छत्री बिनु इक ईस बेर, किनौ प्रिथबी विनास॥ २९॥
छत्री दुष्ट रु अधर्म जुत, हुतै भार भुव रूप॥
अग्यांनी माया मयी, तिहँ रज तम गुण जूप॥ ३०॥
तातैं कम अपराध हीं, तैं प्रभु कियैं संघार॥
अैंहिं हेत प्रगटै पुहमि, साधुन कैं आधार॥ ३१॥

॥ परीछित उवाच॥

नृपति पूछत छत्री कहा, करत भयै अपराध॥
तातैं तिन्हकौं किय प्रभू, परसराम जू बाध॥ ३२॥

॥ श्री सुक उवाच॥

श्री सुक कहत कि इक हुतौ, छत्री अर्जुन जु नांम॥
अरु ताही कौं नांम हौ, सहसबाहु जग ठांम॥ ३३॥
दत्तात्रेय जांकी करी, हुती सैव उन राय॥
तातैं बल अरु पराक्रम, सहस भुजा जुत पाय॥ ३४॥
अष्ट सिद्धि अरु जोगहूं, जांकौं ग्रापति आय॥
जोग सक्ति सौं पवन सम, सब ठां फिर्यौं सुभाय॥ ३५॥
इक दिन रेवा नदी मैं, जुत अस्त्रीन चित चाह॥
बिहरत निजहीं भुजनि सौं, रोक्यौ जलहिं प्रबाह॥ ३६॥
रावण कहुँ वा नदी पर, बैठय़ौ अैक किनार॥
सिव की पूजा करत हौ, धरि चित ध्यांन सुढार॥ ३७॥
अरु उन्ह सहस्त्रबाहु नैं, रोक्यौ हौ बहिंनीर॥
तातैं रावन कैं बूडै, बिडा सिविर जिहिं तीर॥ ३८॥
तब उफन्यौ दससीस कौं, क्रौध अधिक उहिं बार॥
गयौ नृपति सौं जुध करन, रावण बिना बिचार॥ ३९॥

तब उन्ह सहस्त्र बाहु नैं, रावन कौं गहि लीन॥
ज्यौं बानर कौं पकरि बैं, करि अपनैं आधीन॥ ४० ॥
माहिषमति नगरी बिषैं, रौकि राष्यौ दससीस॥
फिरि उन्ह सहस्त्रबाहु दिय, छौडि लंक कौ ईस॥ ४१ ॥
अैसौं बली पराक्रमी, हौ बहि सहस्त्र बाहु॥
इक दिन गयौ सिकार बन, वह नृप चित करि चाहु॥ ४२ ॥
आस्त्रम रिषि जमदग्नि कैं, गयौ वांह बन मांहिं॥
सैना जुत नृपकौं दियौ, रिषि भौजन जिहँ ठांहिं॥ ४३ ॥
हुती रिषि जमदग्निहुँ कैं, कामधेनु इक गाय॥
जिन्ह पूरन सबहीं करी, सामग्रीहिं सुषदाय॥ ४४ ॥
अैसौं रिषि कैं गाय कौं, राजा देषि प्रताप॥
करि मनोर्थ गौ लैंन कौं, कह्यौ सैवकनि आप॥ ४५ ॥
सैवक बछरा सहित बह, पकरि लै चल्यौ गाय॥
गयौ अपनैं नगरहिं कौं, नृपति चित्तहिं सुषपाय॥ ४६ ॥
सुनि बात इह फरसा धर, नृपति लै गयौ गाय॥
बउत क्रौध करिकैं चलै, नृप पाछै अकुलाय॥ ४७ ॥
धनुष तीर षडग फरसू, इतनैं सस्त्र संभारि॥
नृपति सुकरि ऊपरि चलै, प्रभू सिंघ अनुहारि॥ ४८ ॥
औढै मृगछाला धरै, कर फरसा धनुबांन॥
सीस जटा अरु तेज जिन, सूरिज सम जु निदांन॥ ४९ ॥
परसरांम अैसैं प्रभू, आवत लषै नृपाल॥
पहुँच्यौ हौ निज पुर निकट, राजा हौय षुस्याल॥ ५० ॥
सैना सत्रह अषौनि तिहिं, पठई नृप जुध काज॥
सौ सब सैंन संघार किय, परसराम द्विज राज॥ ५१ ॥
बेग धरै जे पवन सम, सत्रुननि मारन हार॥
परसरांम फरसा अतुल, जहँ जहँ करै प्रहार॥ ५२ ॥
ताहँ ताहँ नर अस्व गज, कटि कटि परै अपार॥
सैनां सब चटकचुर हुव, बच्यौ न कौ निरधार॥ ५३ ॥
परसरांम कैं सस्त्र सौं, मरी सैंन सब ठांम॥
लषिकैं सहस्त्र बाहु रिसिं, आयौ करन संग्राम॥ ५४ ॥
धनुष पांच सैं षैंचि कैं, सहस भुजनि अनुसार॥
बाण चलावत भौ नृपति, सहस्त्रबाहु उहिं बार॥ ५५ ॥
परसरांम निज सस्त्र सौं, वै काटै सब बांनिं॥
राजा सहस्त्रबाहु जब, नग अरु बृछ लै आंनिं॥ ५६ ॥

परसरांम जू कैं ऊपरि, चलवत हौ उहिं बार॥
काटी अछुन कुठार सौं, नृप भुज फरसा धार॥ ५७॥
अरु पर्वत सिष सम ऊँचौ, काट्यौ नृप कौं सीस॥
नृप कै सुत दस सहस डरि, भजि गयै बिस्वाबीस॥ ५८॥
परसरांम जू पिता पैं, आयै लै निज गाय॥
कह्यौ बृतान्त आपनौं, मात पिता अरु भाय॥ ५९॥
तब बोलै जमदग्नि रिषि, पुत्र सुनहुँ द्विज रांम॥
तुम्ह कौं लाग्यौ अघ बडौ, कियै नृप बध अकांम॥ ६०॥
हम्ह द्विज हैं चहियैं हम्हहिं, षिमा चरित्र रिसि टारि॥
लह्यौ छिमाहीं तैं उत्तम, पद दादा मुष च्यारि॥ ६१॥
छमा बिप्र की सौभ है, इहि जांनौ मनमांहिं॥
द्विज सौभ रवि सम रिसि किय, प्रभू प्रसंन ह्वै नांहिं॥ ६२॥
द्विज बध सम बध नृपति कैं, इहै पाप अप्रमांनि॥
सौ जुत तीरथ ध्यांन हरि, करि टारहुँ बुधिवांनि॥ ६३॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते पंचदसोऽध्यायः॥ १५॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ षौडसोऽध्यायः ॥

(परशुरामजी द्वारा क्षत्रिय संहार और विश्वामित्र जी के वंश की कथा)

॥ श्री सुक उंबाच॥

दोहा - श्री सुक कहत कि पिता की, लहि आग्यां द्विज रांम॥
करि सनांन इक बरस मैं, सबहीं तीरथ ठांम॥ १॥
आयै बहुर्यौ पिता पैं, परसरांम सुष मांनिं॥
प्रसंन भयै अति पिताहूं, हुकम बजायौ जांनि॥ २॥
माता फरसा धरन की, हुती रेणुका नांम॥
सौ इक दिन जल लैंन कौं, गई गंगन तटि ठांम॥ ३॥
तहँ दैषि गधर्ब अरु, अपसर करत बिहार॥
ताकौं सुंदर रूप अति, मनौं कांम अवतार॥ ४॥
कछु इक मौहित हौंहिंकैं, ठाढी ह्वै रहि वांम॥
तातैं लगी अवार बहिं, बैग न पहुँची धांम॥ ५॥

रिषि जमदग्नि जु करत हे, हौम अग्नि कैं मांहिं॥
टहल करन कौं वा समैं, इह तिय पहुँची नांहिं॥ ६॥
अरु सुनि वा गंधर्ब कौं, हुतौ चित्ररथहुँ नांम॥
जल क्रीडा सुष करत हौ, लै संग अपसर वांम॥ ७॥
बहुर्यौं जल कौं कलस लै, आइ ग्रह कौं दौरि॥
रिषि आगै ठाढी भई, बउत डरपि कर जौरि॥ ८॥
रिषि रिस करि पुत्रननि कह्यौ, इही तुम्हारी मात॥
महा पापनी है सही, कीजै याकी घात॥ ९॥
माता कौ वै पुत्र जबै, भयै जु मारै नांहिं॥
परसरांम कौ जब पिता, दिय आग्यां उहिं ठांहिं॥ १०॥
इन्ह भाइन संजुक्त तुम्ह, हतौ तुम्हारी माय॥
भ्रातनि जुत माता हती, इन्ह पितु आग्यां पाय॥ ११॥
तप प्रताप जांनत रहै, पितु कौं फरसा धार॥
तातैं भ्रात रु जननि कौं, इन कीनौं संघार॥ १२॥
पिता प्रसंन ह्वै कैं कह्यौ, बर मांगहुं मो पास॥
परसरांम जू बर तबै, मांग्यौ सहित हुलास॥ १३॥
भ्रातु मातु यौं जी उठै, अरु इहि जांनै नांहिं॥
परसरांम हम्हकौं हतै, ह्वै निरदय चित मांहिं॥ १४॥
बै सब उठि ठाढे भये, जगैं करत हौ सैंन॥
रिषि बल तप अनुभायसौं, मरै रहै न सुषैंन॥ १५॥
परसरांम जू जुद्ध मैं, हत्यौ सहस्राबाहुँ॥
ताके सुत सहस दस हुव, दुषित भयै अन षाहुँ॥ १६॥
इक दिन बै भाई सबै, गयै हुतै बन मांहिं॥
बै आस्त्रम जमदग्नि कैं, जात भयै उहिं ठांहिं॥ १७॥
अग्नि हौत्र कैं ग्रेह मैं, रिषि जमदग्नि सुढार॥
करत हुतै हरि ध्यांन तहँ, किय नृप सुतनि प्रहार॥ १८॥
कियै जाचनां रैणुका, कह्यौ हतहुँ मति यांहिं॥
तउ बै रिषि कौं काटि सिर, लै गय मानी नांहिं॥ १९॥
तबै रैणुका दुषित ह्वै, रौय उठी वा बार॥
हे पुत्र हे पुत्र फरसुधर, बौली या अनुसार॥ २०॥
परसरांम जू सुनि इहैं, आयै मातुहिं पास॥
देष्यौ पिता मर्यौ पर्यौ, हुव चित महा उदास॥ २१॥
दुष करि बोलै हे पिता, हम्हहिं छौडि या बार॥
आप गयै हौ स्वर्ग क्यौं, है बड हाहाकार॥ २२॥

करि बिलाप भाईन कौं, सौंपि पिता तन धांम॥
छत्रिननि मारन मन कियौ, लै परसा क्रुर ठांम॥ २३ ॥
नगरी माहिषमती मैं, परसरांम जू आय॥
मारै सहस्राबाहु कैं, सुत दस सहस रिसाय॥ २४ ॥
उन्ह उन्हकैं माथैंन कौ, अैंक बनाय पहार॥
अरु उन्हकैं रक्त की रची, यक सरिता उहिं बार॥ २५ ॥
पिता हत्यौ दुष सौं भयौ, चित अति क्रोध प्रकास॥
तातैं कीनौं फरसुधर, सबै छत्रिन कौ नास॥ २६ ॥
अरु लौहू कैं कुंड नव, रचै बीच कुरुषैत॥
लै आन्यौ तब पिता कौं, सीस संग्राम विजैत॥ २७ ॥
सिरकौं धड सौं जोरिकैं, निज पिता लिय जिवाय॥
आपु कियै बहु जिग्य फिरि, बेद रीति अनुभाय॥ २८ ॥
जिग्य बिच करता हौम कौं, तहिं पूरब दिसि दीन॥
हौ ब्रह्मा जिग्य बीच तिहँ, दान दछिन दिस कीन॥ २९ ॥
पछिम दिसा अध्वर्यु कौं, दैत भयै कर दांन॥
अरु उदगाता कौं दयौ, उत्तर दिसां जु सथांन॥ ३० ॥
बिदिसा रित्विजन कौं दई, कस्यप कौं मधि देस॥
दई सभासद द्विजन कौं, प्रिंथवी और बिसेस॥ ३१ ॥
अरु नग बिंध्याचलहिं बीच, आर्जाव्रत जु ठौर॥
उपदिष्टा बिप्रहिं जू दई, परसरांम द्विज मौर॥ ३२ ॥
नदी सरस्वती मध्य फिरि, करि जिग्यांत सनांन॥
रबि ससि सै भय फरसुधर, टारि पाप बुधिवांन॥ ३३ ॥
जियै फैरि जमदग्नि रिषि, मरै नांहिं वा बार॥
जो सप्तरिषिन मैं अबहुँ, सौभित है निरधार॥ ३४ ॥
मन्वंतर आगै आगैं, बहुरि ह्वैहिं तिन मांहुँ॥
ह्वै हैं रिषि जे सातवैं, तिन मध्य फरसा नांहुँ॥ ३५ ॥
तब वै करिहैं जोग बलि, बेद ग्यांन बिसतार॥
सप्त रिषिन मंडल मांहिं, ह्वै हैं जिग्य निरधार॥ ३६ ॥
जबै महैन्द्र नग बिषैं, बैठै हैं या बार॥
सिधि चारण असतुति करत, भली भांति सुभढार॥ ३७ ॥
चंद्रबंस कैं मधि हुतौ, राजा गाधि उदार॥
सत्यवती ताकैं सुता, जुत गुन रूप अपार॥ ३८ ॥
सौ राजा दीनी हुती, रिषि रिचिक कौं जु ब्यांहिं॥
जाकैं रिषि जमदग्नि सुत, प्रगटै जोग्य सरांहिं॥ ३९ ॥

रु पुत्र जमदग्नि कौं, परसराम हरि अंस ॥
गाधि सुता कौ हम्ह कह्यौ, इह संतान प्रसंस ॥ ४० ॥
अब हम्ह राजा गाधि की, बरनत हैं संतान ॥
पुत्र भयौ नृप जु गाधि कैं, बिस्वामित्रहिं सुजांन ॥ ४१ ॥
तैहिं छत्री तैं बिप्र हुवै, करि तपस्यां अधिकाय ॥
तिन्हकैं पुत्र हुव अैक सत, अैक उपरि प्रगटाय ॥ ४२ ॥
तिन्ह सबनहिं मैं बीचलौ, भयौ मधु छन्दा नांम ॥
जु प्रिथवी मैं प्रसंस अति, बंस कियौ सुषधांम ॥ ४३ ॥
मधु छंदा तिन्ह सबनि कौं, भयौ अैक ही नांम ॥
जुदै जुदै नहिं नांम हुव, सुनियै नृप गुन धांम ॥ ४४ ॥
द्विज नांम अजीगरत सुत, बालक बलिहिं सुढार ॥
हरिश्चंद्र कैं जिग्य मैं, आयौ हौ निरधार ॥ ४५ ॥
रिषि बिस्वामित्र करी हुती, तिहिं रिछया वा बेर ॥
अरु तिनि पुत्रननि सौं कह्यौ, इहि बचन बिची झेर ॥ ४६ ॥
तुम्ह याकौ बड भ्रात करि, मांनहु भलैं प्रकार ॥
म्हैरी आग्यां है प्रगट, इहि तुम्ह कौं निरधार ॥ ४७ ॥
करी हुती वांकी रिछ्या, अमरन हूँ जिग्य ठांम ॥
दैवरात तातैं भयौ, वा बालक कौं नांम ॥ ४८ ॥
बचन जू बिस्बामित्रहुँ कौ, मान्यौ न पुत्र पचास ॥
तिन्हकौं दीनौं स्राप पितु, हौहुं मलैच्छ सभास ॥ ४९ ॥
इकांवनहिं छौटे कुँवर, बौलै अैसौ बैंन ॥
हे पितु आग्यां तुम्ह करौ, सु हम्हहुं करै सुषैंन ॥ ५० ॥
रिषि बिस्वामित्र कह्यौ उन्हैं, बढौ तुम्हारौ बंस ॥
उन्ह मान्यौ बड भ्रातकरि, बह द्विज बाल प्रसंस ॥ ५१ ॥
और गौत्र कौं बिप्रहुयौ, कुसिक गौत्र कैं मध्य ॥
जु बिस्बामित्र कैं सुतन मैं, बडौ भयौ सुप्रसध्य ॥ ५२ ॥
औरहुँ रिषि बिस्बामित्र कै, बेटा भयै जु नृपाल ॥
कृतुमान जय हारीतहिं, अरु अष्टक आदि ढाल ॥ ५३ ॥
अैसै कौसिक बंस मैं, बडै जु नृपति सुतौर ॥
बिस्बामित्रहिं कैं सुतन सौं, प्रवर आदि हुव और ॥ ५४ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी कृते षौडसोऽध्यायः ॥ १६ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ सप्तदसोऽध्यायः ॥

(क्षत्रवृद्ध ; रजि आदि राजाओं के वंश का वर्णन)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - श्री सुक कहत पुरूरवा, नृप कैं सुत हौ आयु॥
ताकैं सुत हुव पांच तिहिं, नांम कहूं समझाहुँ॥ १॥
नऊष षत्रब्रद्ध अनैना, रंभ रु रजि अैं नांम॥
सुत पुरूरवा केनकैं, हौ सुनि नृप गुन धांम॥ २॥
षत्रब्रद्ध कैं पुत्र हुवै, नांम सु हौत्र जु जास॥
जाकै सुत हुव तीन कुस, ग्रतंसमिद कास्य भास॥ ३॥
पुत्र भयौ ग्रतंसमिद कैं, जास सुनक हुव नांम॥
पढनहार रिगबैद सुत, रिषि सौनक तिहँ धांम॥ ४॥
कासि पुत्र भयौ कास्य कैं, सुत राष्ट्र भौ जास॥
तिहिं सुत दीर्घतमा भयौ, धन्वन्तरि हुव तास॥ ५॥
भयै अंस जे प्रभू कैं, जग बिच बैद कहाय॥
हुव जिग्य भुक्ता ध्यांन तिनि, कियैं रौग मिटि जाय॥ ६॥
धन्वन्तरि कैं पुत्र हुवै, कैतुमान तिहिं नांम॥
ताकैं सुत भौ भीमरथ, दिवौदास जिहँ धांम॥ ७॥
तिन्हकैं पुत्र द्युमान भौ, पुत्र प्रतिर्दन जु जास॥
और नांम तिहँ नृपति कैं, भयै तीन सप्रकास॥ ८॥
अैक नांम भयौ सत्रुजित, दुतिय सुरितध्वज जांनि॥
कुवलयासु तीजौ भयौ, लीजै नांमपिछांनि॥ ९॥
ताकैं भयै अलर्क नृप, प्रगटयौ पुत्र प्रवीन॥
साठि हजार रु साठि सौ, बरस राज जिन कीन॥ १०॥
अरु संतति पुत्र अलर्क कैं, प्रगट भयौ जग जीत॥
ताकैं भयौ सुनीथ सुत, तिन्ह सुकैतन सुनीत॥ ११॥
धर्म कैतु जाकै भयौ, सत्यकैतु सुत जास॥
धृष्ट कैतु जिहँ पुत्र भयौ, सुत सुकुमार जु तास॥ १२॥
बीति हौत्र जिहिं सुत भयौ, जास भर्ग सुत नांम॥
भार्ग भूमि प्रगटत भयौ, पुत्र सु जांकैं सुधांम॥ १३॥
षत्रबद्धि कैं बंस मैं, इतनैं भयै नृपाल॥
बहुरि कहत हैं रंभ कौं, बंस बरनि या काल॥ १४॥
पुत्र रंभहुँ कैं रभस भौ, तांकैं हुवै गंभीर॥
जाकै सुत अक्रीय भयौ, सुनियै नृपति सधीर॥ १५॥
पाछै वांकैं बंस मैं, द्विज ही भयै सुभाय॥
अबैं अनैंनहुँ कौं कहौं, तुम्ह कौं बंस सुनाय॥ १६॥

पुत्र अनैंनाहुँ कैं भयौ, सुद्ध नांम तिहिं जांनि ॥
जांकैं प्रगटयौ पुत्र सुचि, तिहुं त्रककुद सुत मांनिं ॥ १७ ॥
पुत्र धर्मसारथिहिं भयौ, नृप त्रककुद कैं धांम ॥
तिहिं सुत सांतरय जु भयौ, जिहिं कृतकृत्य सुनांम ॥ १८ ॥
अरु प्रगट रजि नृपतिहुं कैं, पंच सौ पुत्र निरधार ॥
अैक समैं रजि नै कर्यौ, दयतन सब संघार ॥ १९ ॥
स्वर्ग लौक लैंकैं दयौ, बासब कौं करि भीर ॥
बासब रजिहीं नृप कह्यौ, स्वर्ग लहिंहौं गहि धीर ॥ २० ॥
बहु सत्रुन सौं इंद्र डरि, किय न राज बहिं बार ॥
रजि नृप पाछे इन्ह सुतनि, कियौ राज सुषसार ॥ २१ ॥
बहुर्यौ मांग्यौ इन्द्र नैं, स्वर्ग राज्य उन पास ॥
तब बैही दैत भये न, बलधर स्वर्ग निवास ॥ २२ ॥
कही बृहस्पति इंद्र तब, जिग्य भलैं करवाय ॥
रजि सुत सब इंद्र हुतै, पापी हुवै कुपाय ॥ २३ ॥
षत्रब्रद्ध कौ पौत्र कुस, हुव संजय सुत जास ॥
संजय कैं सुत जय भयौ, क्रत सुत प्रगट्यौ तास ॥ २४ ॥
क्रत कैं सुत हुव हरियवन, तांकैं हुव सहदैव ॥
रु ताकैं भयौ हीन जिहिं, सुत जयसैन सुभैव ॥ २५ ॥
जाकैं प्रगटयौ संकृति, जिहँ सुत बिजय कहाय ॥
ताकैं षत्रधरमा सुवन, प्रगट भयौ सुभाय ॥ २६ ॥
इहै षत्रबृद्धि नृपति कौं, बरन्यौ बंस सुढार ॥
अबै नहुष नृप कौ सुनौ, बंस भलैं अनुसार ॥ २७ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते सप्तदसोऽध्यायः ॥ १७ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अष्टादसोऽध्यायः ॥

(ययाति चरित्र)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - सुक कहत कि नृप नहुष कैं, छह सुत भयै सुढार ॥
जइसैं हैं प्राणीन कैं, इंद्री छह निरधार ॥ १ ॥
आजति जजाति संजाति, जति विजति रु कृति नांम ॥
तिन्हमैं यति राज्य नाहिंन, लियौ हौय निहकांम ॥ २ ॥

जान्यौ जात न राज्य मैं, आतम रूप उदार॥
पर्यौ बिषैं कैं भोग मैं, झूठौ करै बिचार॥ ३॥
नृपति नहुष चढि पालकी, गौ इंद्राणी पास॥
तब अगस्त कैं स्राप सौं, सर्प भयौ तजि आस॥ ४॥
जब जजाति चहुँ भ्रात कौं, बांटि दिसा दिय चार॥
आपु मुष्य राजा भयौ, धार प्रगट बड भार॥ ५॥
सुता दैवजांनी हुती, सुक्राचारिज जु गेह॥
ब्याही तांहिं जजाति नृप, चित धरि अधिक सनेह॥ ६॥

॥ राजोवाच॥

पूछत नृप हे सुक द्विज, जिहँ पुत्री उहीं बार॥
कइसैंहुँ ब्याही जजाति, नृप है छत्रि निरधार॥ ७॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि सुनियै नृपति, अैक दिवस चित चाहि॥
बृषपर्वादि नृप की सुता, सहित सषीन उमांहिं॥ ८॥
संग देवज्यांनीहिं लैं, बन गइ करत बिहार॥
जहँ बहु बिधि फूलै कुसुम, भंवरन करत गुंजार॥ ९॥
बीच सरोबर करत भइ, मिलि अैं सबै बिहार॥
निज निज बस्त्र उतारि कैं, धरै जु नीर किनार॥ १०॥
बडै बृषभ पर सिवा जुत, सिव कौं तांह निहारि॥
लज्या करि सब डर तियानि, कीनैं बस्त्र सम्हारि॥ ११॥
तबै बृषपर्वा की सुता, सर्मिष्ठा उहिं जु ठांहिं॥
देवज्यांनी कैं बस्त्र लिय, पहरि सितावी मांहिं॥ १२॥
देवज्यांनी बौली तब, अैसैं बचन रिसाय॥
देषौ इहि दासी कियौ, कहा कर्म हुलसाय॥ १३॥
बस्त्र लियै म्हैरै पहरि, बिनु मौ आग्यां पाय॥
ज्यौं कुतिया भोजन करै, जिग्य सामग्री आय॥ १४॥
जिननिहिं तपस्यां तैं रच्यौ, सकल सृष्टि बिस्तार॥
रु जे प्रभू कौ है भलौ, पंथ चलावन हार॥ १५॥
इंद्रादिक सबै देवता, अरु प्रभु करत प्रनांम॥
अैसैं हैं ब्राह्मण सही, प्रगट प्रिथी या ठांम॥ १६॥
याकौ पिता जु सिष्य है, मो पति कौं निरधार॥
इन्ह पहरैं मौ बस्त्र ज्यौं, सूद्र बेद करधार॥ १७॥
सर्मिष्ठा अैसै बचन सुनि, बौली करि अति रोस॥
अहे भिषारिनि बउत क्यूं, बकत क्रौध कैं जोस॥ १८॥

पली हम्हारै गेह सौं, कहा करत अभिमांन॥
बढि बढि कैं बौलत बुरै, आप गमावत स्यांन॥ १९॥
अैसैहिं सरमिष्ठा बचन, कहिकैं बिना बिचारि॥
नग्न देवज्यांनीहि करि, दई कूप मैं डारि॥ २०॥
सरमिष्ठाहिं आवत भई, अपनैं घर वा बार॥
नृप जजाति आयै उहां, षैलत बनहिं सिकार॥ २१॥
तांह देवज्यांनी लषी, परी कूप कैं मांहिं॥
दै वौढन कौं बस्त्र निज, काढि लई गहिं बांहिं॥ २२॥
तबै देवज्यांनी कह्यौ, गह्यौ नृपति मो हाथ॥
तातैं मो कर गहन तैं, तू ही पति नर नाथ॥ २३॥
और न म्हैरै हौहिं पति, भई बचन हौं बंध॥
ईस्वर कृत तैं इहिं भयौ, इह सौ तौ सनबंध॥ २४॥
परी हुती म्हैं कूप मैं, तैं काढी मुहि आंनि॥
इही प्रभुहीं की ईछा, सही परत है जांनि॥ २५॥
बृहस्पति कैं कच पुत्र कौं, मोहि लग्यौ है स्राप॥
तासौं म्हैरै बिप्र जु पति, ह्वै हैं नांहिं सथाप॥ २६॥
अरु म्हैंहूं बहि स्राप दिय, बिद्या न फुरि हैं तोहि॥
तांतैं वाहू कौ नहिंन, भई बिद्या अवरोहि॥ २७॥
नृप जजाति अैसौं बचन, वा अस्त्री कौं मांनि॥
नृप जजाति करतै भयै, गवन सु आपु सथांनि॥ २८॥
गई देवज्यांनी रुदित, अपनैं घर दुषपाय॥
सरमिष्ठा की बात सबै, कही पिता सौं जाय॥ २९॥
सुक्राचारिज जु सुनि इहै, प्रोहित पदवी डारि॥
सुता सहित बन मैं गयै, अधिक अनष चित धारि॥ ३०॥
तबै बृषपर्वा असुर बन, जाय रु परिकैं पांय॥
सुक्राचारिज जु कौ भलैं, ल्यावत भयै मनांय॥ ३१॥
सुक्र कह्यौ मो सुता कौं, प्रसंन करहुँ या बार॥
म्हैं हूं याकी बात मैं, हौहुँ प्रसंन निरधार॥ ३२॥
बचन देवज्यांनी तबै, बौली अैसै ब्यंग॥
म्हैं जांह ब्याहु तां रहै, सरमिष्ठा मोह संग॥ ३३॥
बृषपर्वा मानी इहै, तबै सरमिष्ठा जाय॥
देवज्यांनी कियै टहल, सहित सषीन सुहाय॥ ३४॥
तब देवज्यांनि बरी सुत, नहुष जजाति जु चाय॥
तांह संग ताकैं गई, सरमिष्ठाहिं दुष पाय॥ ३५॥

तहँ सरमिष्ठाहुँ तैं भयौ, मोहित नृपति जजाति॥
अदभुत सुंदर रूप लषि, लगि मनोज सरघाति॥ ३६॥
सरमिष्ठा रितुवती हुवै, तबै निज चित्त उमांहिं॥
प्रारथनां संतान की, कीनी नृप सौं चांहिं॥ ३७॥
नृप जजाति मांन्यौं बचन, धरम भेव पहिचांनिं॥
तिय मनोरथ पूर्न कियौ, राजा भलैं निदांनिं॥ ३८॥
गर्भ देवज्यांनी भयै, जदु तुरबसु द्वै पूत॥
सरमिष्ठा सुत तीन हुवै, अणु पुरू द्रुहिय अभूत॥ ३९॥
तब सरमिष्ठा कैं गर्भ लषि, नृप जजाति मौं रूठि॥
गइ देवज्यांनी रिसाय, पितु कैं गेह अपूठि॥ ४०॥
बउत मनाई नृपति पैं, मनी नांहिं बहिं बारि॥
कीनौं दीरघ मान अति, पति सौं अनष बिचारि॥ ४१॥

॥ जजातिरुवाच ॥

सुक्र स्राप नृप कौं दियौ, अधिक क्रौध संजूप॥
बृधा अवसथा पाय तू, राजा हौहुँ कुरूप॥ ४२॥
काम भोग तैं नृप कह्यौ, तृपति भयौ म्हैं नांहिं॥
तांतैं सुष पैंहौं नांहिं, बृध अवसथा मांहिं॥ ४३॥

॥ सुक्र उवाच ॥

सुक्र कह्यौ बृध अवसथा, जो तुह लै हैं कौय॥
तौ तांकौ लगि जाइगी, नृपति तरुण तूं हौय॥ ४४॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

ऐसौ बचन जु सुक्र कौं, सुनि कैं नृपति जजाति॥
बडौ पुत्र जदुहिं ज्यांनि तिहुँ, कहत भयौ इह बाति॥ ४५॥
तुम्ह म्हैरी बृध अवस्था, लैहुँ पुत्र याहि बार॥
अरु तुव जोबन अवसथा, मोकौं देहुँ सुढार॥ ४६॥
तौ नाना कैं स्राप तैं, लग्यौ बृधापन मोहिं॥
तांको तू जो लैय तौ, कांम भौग मो हौहिं॥ ४७॥

॥ जदुरुवाच ॥

जदु बोलै सुष बिषैं तैं, त्रिपति भयौ म्हैं नांहिं॥
कइसी बिधि बृध अवसथा, हूं ल्यौं धरि चित चाहिं॥ ४८॥
ऐसैं ही तुर्वसु द्रुहिय, अणु जुत कह्यौ तिहूंन॥
तबै छोटै पुरु पुत्र सौं, कह्यौ प्रीति करि दूंन॥ ४९॥
सुत तूं मति नांहीं करै, बृध अवसथा लैहुं॥
अरु तौ जौबन अवसथा, मोहि सर्धा करि दैहुँ॥ ५०॥

॥ पुरुरुवाच ॥

पुरु बोलै पितु देह कौं, है उपजांवन हार ॥
ताकौं पलटौ दै सकै, पुत्र कहा किहूं बार ॥ ५१ ॥
जो उत्तम पुत्र करै सोइ, है जु पिता मनमांहिं ॥
करै पिता कैं कहैं तैं, सौ मध्यम बहि रांहिं ॥ ५२ ॥
अधरम असर्धा सौं करै, जो पितु आग्या दैय ॥
अरु जो सुत मलमूत्र सम, कह्यौ मानि नहिं लैय ॥ ५३ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

यौं कहि पुरु बृध अवसथा, लिय पितु आग्यां जोग ॥
तरुण अवसथा निज दई, जासौं किय पितु भोग ॥ ५४ ॥
प्रिथवी पालन करत नृप, कियै बिषैं कैं भोग ॥
प्रसंन देवज्यांनी कियौ, भरता कौ हित जोग ॥ ५५ ॥
जा प्रभु मैं झूठौ जगत, लषियतु सुपन समांन ॥
ज्यौं दरसत आकास मैं, मेघ छांह उनमांन ॥ ५६ ॥
ता मनु कौं करि ध्यांन बहु, कीनैं जिग्य नृपाल ॥
भोग कियौ बहु बरष तऊ, त्रिपति न हुव किहुँ काल ॥ ५७ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अष्टादसोऽध्यायः ॥ १८ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ ऐकोनविंसोऽध्यायः ॥

(ययाति का गृह त्याग)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि ऐसैं करत, बिषैं भोग अधिकाय ॥
नृप कैं चित उपजत भयौ, अति बैराग सुभाय ॥ १ ॥
कही देवज्यांनीहिं तब, ऐक कथा अवनीस ॥
हे सुनिहुँ पुत्री सुक्र की, कहूं कथा जगदीस ॥ २ ॥
बकरा इक निज इछा सौं, फिरत हुतौ बन मांहिं ॥
तांह यैक बकरी लषी, परी कूप बिचठांहिं ॥ ३ ॥
बहि बकरा निज सींग सौं, षौदि भूमि किय राह ॥
तब निकसी बकरी बहे, किय बकरा तैं ब्याह ॥ ४ ॥
औरहुँ बहु बकरि नै करि, बा बकरा सौं प्रीति ॥
बहि बकरा हूं प्रसंन किय, वै सब अजा सु रीति ॥ ५ ॥

उन्ह बकरी अैसौ लष्यौ, अैक दिवस ब्यबहार॥
इक बकरी किहुं और तैं, बकरा राषत प्यार॥ ६॥
अैसौ कांमी दुष्ट इह, बकरा अन्यां निहारि॥
जाति रही निज स्वामि ग्रह, रिस अपनैं चित धारि॥ ७॥
बकरा मनाइ पाय परि, तऊ मनी बहि नांहिं॥
बैठि रही ग्रह स्वामि कैं, रीस धरैं मन मांहिं॥ ८॥
वा बकरी कैं स्वामि वा, बकरा कौं इक अंग॥
काटि जोरि दीनौं बहुरि, आछी भांति सुधंग॥ ९॥
सौ अब बहि बकरा भलैं, बा बकरी कैं संग॥
भोग विषै कौ करत है, अधिक उछाह छरंग॥ १०॥
बउत दिवस बीतै तऊ, हुव संतुष्ट जु नांहिं॥
सौ तू ही बकरी रु म्हैं, बकरा हूं या ठांहिं॥ ११॥
तौ सौं मोहित भयौ हूं, गयौ अपुनि सुधि भूलि॥
बिषैं सुषन मैं निसि दिवस, मांनत मोदित फूलि॥ १२॥
अंन्न सुबर्ण पसु तियां, इन्ह सौं काहू बार॥
त्रिपति हौत हैं नांहिं जन, संसारी निरधार॥ १३॥
बिषै भोग अति कियैहूं, मिटत बासनां नांहिं॥
दिन दिन बढती ही रहै, प्रभु पद बिमुष सुआंहिं॥ १४॥
बउत घीव बिच अग्नि तैं, जइसैं दीनैं डारि॥
बुझहु नांहिं अधिकी बरै, हैं तिय दैषि बिचारि॥ १५॥
जब नर सबही ठौर मैं, राषै दिष्टि समांन॥
तजि दै सकल बिकार जब, सब सुष ठौर निदांन॥ १६॥
जिहँ अउर बुद्धी जी की, त्रिस्नाहुँ छुटै नांहिं॥
तांकु बृधापन मैं त्रिस्नां, प्रगटत अति अधिकांहिं॥ १७॥
तातैं जो कौ सुष चहै, सौ त्रिस्नां दै छौडि॥
त्रिस्नां दुष कौं मूल है, दैत नरन कौं बौडि॥ १८॥
पंडित हूं कौं करत है, इंद्री मुहित सजौर॥
माय बहन रु पुत्री हुवै, ह्वै नाहिंन इक ठौर॥ १९॥
बिषै भोग मांहिं मोकौं, बीतै बरस हजार॥
तौ पै त्रिस्नां बढत है, छूटत नहिं निरधार॥ २०॥
तातैं तजि त्रिस्नां इहै, ब्रह्म बीचि मन लाय॥
फिरि तूं म्हैं बन कैं बिषैं, मृगनि संग सुष पाय॥ २१॥
देषैं सुनैं बिषैंन कौं, तजि जो जांनै झूठ॥
ताकौं आतम ग्यांन सुभ, प्रगट जु हौय अछूठ॥ २२॥

यौं जजाति कहि पुरु सुतहिं, तरुण अवसथा दीन॥
अरु अपनीं बृध अवसथा, आपु उलटि फिरिलीन॥ २३ ॥
दैत भयै सुत द्रुहिय कौं, पूर्ब दिसा कौ राज॥
अरु दछिन दिसा कौं दियौ, जदुहिं राज सुषसाज॥ २४ ॥
तुरवसु कौं दिय पछिम दिसि, अणुहिं उत्तर दिस दीन॥
और सकल भुव कौं कियौ, राज्य पुरुहिं आधीन॥ २५ ॥
अरु पुरु कैं आधीन करि, दीनैं सबहीं भ्रात॥
जात भयै आपुन भलै, बनकौं नृपति जजात॥ २६ ॥
छौडि दियै सुष बिषै ह्वै, हौय नृपति निहकांम॥
ज्यौं पंषिन आयै तजित, पंछि जाय निजधांम॥ २७ ॥
संग छौडि सब ठौर कौं, आत्म रूप पहिचांन॥
भागवती गति नृप लही, तिहुँ गुन टारि निदांन॥ २८ ॥
देवज्यांनीहुं कथा सुनि, बकरा की उहिं बार॥
अपनैं चित समझत भई, अैसौ भलौ बिचार॥ २९ ॥
तिया पुरुष कौ संग है, अैसौ ही दुषदाय॥
राहगीर जल ठौर ज्यौं, हौत अैकठै आय॥ ३० ॥
तातैं सबहीं ठौर तैं, अपनौं चितहिं छुडाय॥
दियै लगाय श्रीकृस्नं मैं, देवज्यांनि सुषपाय॥ ३१ ॥
न्यारी माया गुणन तैं, भई भलैं अनुसार॥
देषैं सब प्राणीन मैं, निश्चै प्रभु करतार॥ ३२ ॥
बसत सकल प्राणीन मैं, बासुदैव भगवांन॥
जिन्हकौ है परिनांम यौं, कहि हुव मुक्ति निदांन॥ ३३ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते अैकोंनविंसोऽध्यायः ॥ १९ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ बिंसोऽध्यायः ॥

(पुरु के वंश, राजा दुष्यंत और भरत के चरित्र का वर्णन)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि अब सुनहुँ तुम्ह, राजा पुरु कौ बंस॥
तामैं तुम्ह प्रगटै नृपति, जिन जस जक्त प्रसंस॥ १ ॥
आयु बडौ नृपराज रिंभ, भयै बंस जिहँ मांहिं॥
जनमैजय सुत प्रगट हुव, नृप पुरु कैं ग्रह ठांहि॥ २॥

प्रचीन्वान जाकैं भयै, सुत प्रवीर हुव जास॥
ताकैं पुत्र भयै नमस्यु, पुत्र चारुपद तास॥ ३॥
सुद्यु पुत्रहुँ जाकैं भयै, जिहिं सुत बहुगव नांम॥
जासु पुत्र संयाति हुवै, अहंयाति तिहूँ धांम॥ ४॥
जाकैं हुव रौद्रास्व सुत, जिहिं सुत दस प्रगटाय॥
तिनकैं सुनियै नांम अब, आछै कहूं जिताय॥ ५॥
स्थंडलेषु रितेयु सतेयु, कुष्येयु अरु क्रतेयु॥
धर्मेयु संततेयु ब्रतेयु, जलेयु पुनि वानेयु॥ ६॥
अैं दस सुत रौद्रास कैं, प्रगट भयै हैं राय॥
अपछर घृताची गर्भ तैं, हुव दस कुमार आय॥ ७॥
रु प्रगटै पुत्र रितैयु कैं, रंतिभारत जु नांम॥
अप्रतिरथ समति रु ध्रुव तिहुं, सुत रितैयु कैं धांम॥ ८॥
अप्रतिरथ कैं सुत कण्व हुव, तिहुँ मेधातिथि पूत॥
प्रस्कण्व आदि सुति बाहु, बम्रा कैं बंस अभूत॥ ९॥
पुत्र सुमति कैं रैंभि हुवै, ताकैं हुव दुष्यंत॥
नृप दुष्यंत सिकार कौं, बन गवन्यौ किहुँ तंत॥ १०॥
रिषि कण्व कैं आस्त्रमहिं, जातौ भयौ नृपाल॥
जिहिं ठां देषी सुंदरी, अदभुत अैक रसाल॥ ११॥
वाकौं लषि मौहित भयै, अति हर्षित ह्वै राय॥
दूरि भयौ परिस्त्रम सबै, बोल्यौ या अनुभाय॥ १२॥

॥ दुष्यंत उबाच ॥

हे अस्त्री तू कौनुं है, किहुँ की पुत्रीहुँ आंहिं॥
अरु किहुँ काजै रहत है, तू आस्त्रम कैं मांहिं॥ १३॥
तू किहुं नृप की है सुता, मो परत है न जांनि॥
है अदभुत तेरौ रूप, कांतवंत सुषदांनि॥ १४॥
जोतू हौती ब्राह्मणी, तौ सुनियै हे नारि॥
तौ पै चित आसक्तहिं मौ, नहिं हौतौ किहुँ ढारि॥ १५॥

॥ शकुन्तलोवाच ॥

इह सुनिकैं बौलत भई, बहि अस्त्री अभिरांम॥
हूं पुत्री बिस्बामित्र की, सकुन्तला मौ नांम॥ १६॥
अपछर मैंनका गर्भ तैं, हौं प्रगटी हौं राय॥
म्हैं आस्त्रम हूं रिषि कण्वहुँ, रहत भलैं सुषपाय॥ १७॥
हे राजा तुम्ह कहौ सौं, म्हैं जु करौं निरधार॥
आजि आपु बसियै इह्यां, भोजन करौं सुढार॥ १८॥

॥ दुष्यंत उवाच ॥

इहि सुनि कैं बोल्यौ नृपति, छुटि चित्त तैं सब संस॥
है पुत्री बिस्वामित्र की, प्रगटी कुसिक जु बंस॥ १९ ॥
तातैं तू मो बरै तौ, नहिं अजोग्य इह बात॥
सही जोग्य है जांनियै, हे अस्त्री सुभ गात॥ २० ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

तिय सकुन्तला कौ नृपति, लषि मनोर्थ वा बार॥
गंधर्वा कियै ब्याह नृप, बासौ भलैं प्रकार॥ २१ ॥
अैक रात्रि जहँ नृप बसै, सकुन्तला कैं पास॥
बांकै गर्भ रहग्यौ अरु, नृप गय आपु निवास॥ २२ ॥
हुव सकुंतला गर्भ तैं, बालक प्रगट सुढार॥
जातकर्म ताकौं कियौ, कण्वु रिषि वां बार॥ २३ ॥
बडौ भयौ बालक बहे, निज बय औसर पाय॥
बांकौ भौ क्रीड़ा करत, गहि सिंघन कौ ल्याय॥ २४ ॥
वा बालकहिं पराक्रमी, सकुंतला पहचांनि॥
लै आई वाहि पुत्र कौं, नृप दुष्यंत सथांनि॥ २५ ॥
उन्ह नृपति अस्त्री पुत्र कौं, कियौ न अंगीकार॥
तब सबहिंन कैं सुनत हुव, नभवानी निरधार॥ २६ ॥
है लुहार की धूंकनी, सम माता हे राय॥
पुत्र पिताहिं कौं है सही, इह दिय निगम जनाय॥ २७ ॥
तातैं तू याहि पुत्र कौं, पालन करहुँ नृपाल॥
अरु सकुंतला की करहुँ, मति अवग्यां या काल॥ २८ ॥
पुत्र पिताहु कौं करत है, जमपुरहिं तैं उद्धार॥
प्रगट भयौ तुम्ह बीर तैं, बालक इहै सुढार॥ २९ ॥
सांची बात जु कहत हैं, इह सकुंतला भाम॥
नभवानी सुनि सुत तिया, राषै नृप निज धाम॥ ३० ॥
नृपति जु चक्रवर्ती भयौ, बहि सुत भरत सुनांम॥
सकल ठौर वाकौ भयौ, बडौ सुजस अभिरांम॥ ३१ ॥
भयौ प्रगट हरि अंस सौं, भरत पुत्र सुभहिं तौर॥
चिन्ह चक्र कौं हाथ मैं, कँवल चिन्ह पगठौर॥ ३२ ॥
सबनि राज्य अभिषैक किय, वांकौ भलैं प्रकार॥
भई बडी सौभा अतुल, बीच सकल संसार॥ ३३ ॥
पचपन जिग्य अस्वमेध किय, गंग जमुन कैं तीर॥
भयै पुरोहित जिहँ भलै, दीर्घतमा रिषि धीर॥ ३४ ॥

अठतरै घौरांननिसौं, और बउत जिग्य कीन॥
बांधि अस्व तैं तीरथ सब, राजनि अचिरज दीन॥ ३५॥
चौरासी तैरह सहस, गौ इक इक द्विज लीन॥
इतनी गायैं जिग्य मैं, जिन नृपति बिप्रन दीन॥ ३६॥
हाथी चौदह लाषि जिन्हिं, राजा दीनैं दांन॥
प्रभु माया जीतत भयै, भरत नृपति बुधिवांन॥ ३७॥
भरत नृपति सौ जिग्य करम, किहुँ राजा नहिं कीन॥
अरु करि है नांहिंन कौउ, राजा बडै प्रवीन॥ ३८॥
हूण किरात अंध कंक षस, सक पुनि जवन सुनांम॥
बीच दिगबिजै अैं सबै, हतै नृपति अभिरांम॥ ३९॥
पहलै अति बलि धरि दयत, देवतांनि कौं जीति॥
सुर अस्त्रीन कौं रसातल, लै गय करि करि प्रीति॥ ४०॥
वै तिय तिन्हकैं पास तैं, राजा भरत छुडाय॥
दैत भयै बहुर्यौ भलैं, देवतांन कौं ल्याय॥ ४१॥
इक छत्र नृप राज किय बर्स, सताहीसहिं हजार॥
पूर्न मनोर्थ प्रजांन कौं, किय प्रिथवी उहिं बार॥ ४२॥
इहीं राजा कै पुत्र ह्वै, जो जो दैषि निदांन॥
नरपति कौं नहिं रूप लषि, औरहिं रूप समांन॥ ४३॥
तब बांकी तिय डरपि कैं, पुत्रहीं डारै मारि॥
तांतैं बंस चल्यौ नांहिं, या नृप कैं निरधारि॥ ४४॥
तब इहि नृप सुत कैं लियै, आछै चितहिं लगाय॥
जिग्य करत भौ रीति सौं, मरुतिस्तोम नामाय॥ ४५॥
मरुति नाम तब देवता, ह्वैहिं प्रसंन अधिकाय॥
भरद्वाज नामी जु सुवन, दियौ नृपति कौं ल्याय॥ ४६॥
बहि बालक हौ कौनुँ सौ, अबहिं कहूं समझाय॥
बृहस्पति कौ भाई हुतौ, उतिथ नांम रिषि राय॥ ४७॥
तिहँ तिय गर्भवती रही, पहलैं ममता नांम॥
रिषि बृहस्पति मोहित भय, बहि निहारि कैं भांम॥ ४८॥
पहलैं बालक हुतौ जो, वा तिय गर्भहिं पासि॥
जिन्ह जिन्ह सुर गुर अंस कौं, दीनौं मारि निकासि॥ ४९॥
प्रगट भयौ वा अंस कौ, बालक तबहीं यैक॥
ममता अस्त्री उतिथ की, वाहि जतन किय टैक॥ ५०॥
तब बोल्यौ यौं बृहस्पति, इहि मो बीर्ज्य प्रभाय॥
रु भरद्वाज याही नांम, पालन करि चित लाय॥ ५१॥

तिया बौली तुम्हहिं करौ, या पालन निरधार॥
अैसौ कहि तजि पुत्र दोउ, जात इहै वा बार॥ ५२॥
अरु वाहि बालक गर्भ कौं, दीन बृहस्पति श्राप॥
म्हैं काढ्यौ मो अंस तू, आंधौ ह्वै है आप॥ ५३॥
भरद्वाज कौं मरुति सुर, आछै पालन कीन॥
पुत्र सोई नृप भरत कौं, ल्याय दैवतनि दीन॥ ५४॥
बै कह्यौ याही पुत्र सौं, हे नृप भलैं प्रकार॥
बंस तुम्हारौ चलैगौ, इहि मानौं निरधार॥ ५५॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते बिंसोऽध्यायः॥ २०॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अैकविंसोऽध्यायः ॥

(भरत वंश का वर्णन तथा राजा रन्तिदेव की कथा)

॥ स्त्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि भरद्वाज कैं, भयौ मन्यु सुत नांम॥
पांच पुत्र प्रगटतहुँ भयै, मन्यु नृपति कैं धांम॥ १॥
ब्रहतषत्र जय गर्ग नर, महावीर्य अैं पांच॥
बरनैं नांम गनाय कैं, सुनै सुनृप जस सांच॥ २॥
नर सुत संकृति कै भयै, रंति देव गुर नांम॥
रंतिदेव नृपकौं सुजस, सब गावत भुव ठांम॥ ३॥
रंतिदेव नृपकौं कछू, धन हौ प्रापति आय॥
सौ दै डार्यौ कुटंब जुत, भूषौ ही रहि जाय॥ ४॥
बिनु जल भोजन नृपति दिन, बीतैं अडतालीस॥
तबै अल्प जल अंन की, प्रापति लहि अवनीस॥ ५॥
भूष प्यास कैं कस्ट सौं, कंप भयौ नृप अंग॥
बैठै भौजन करन कौं, जब बढि भूष उतंग॥ ६॥
ताहि समैं आवत भयौ, भूषौ ब्राह्मण अैक॥
तिहिं ब्राह्मन भोजन दियौ, राजा सहित बिबैक॥ ७॥
भौजन करि ब्राह्मण बहि, जात रह्यौ वा बार॥
तब राजा भौजन करन, बैठै आपु सुढार॥ ८॥
तबि आयौ इक सूद्र कौउ, महा भूष आधीन॥
वाही कौं भौजन भलैं, स्त्रद्धा जुक्त नृप दीन॥ ९॥

ता पाछै इक मनष कौ, लियै स्वान बहु संग॥
नृप पैं आयौ और पुनि, कहै बचन या बंग॥ १० ॥
हे राजा स्वाननि सहित, मो कौं भौजन दैहुँ॥
भूषै इतनैं जीव हम्ह, तिनकी दया जु लैहुँ॥ ११ ॥
तब जु बच्यौ हौ अंन सौ, उनकौं दियौ नृपाल॥
वांकौं और कुतान कौं, किय प्रनांम उहिं काल॥ १२ ॥
रह्यौ नृपति कैं पास जल, लग्यौ पीवन तांहि॥
तब आयौ चांडाल इक, धरै नीर की चांहिं॥ १३ ॥
अरु बोल्यौ म्हैं प्यास सौं, महा बिकल हूं राय॥
मो कौ इहि जल आपु अबु, देहुँ क्रिपा करि भाय॥ १४ ॥
ऐसौ बांकौ बचन सुनि, दया नृपति चित आय॥
कहत भयै ऐसै बचन, प्रभु कौं सीस नवाय॥ १५ ॥
मुक्ति अष्ट सिद्धि उत्तम गति, म्हैं न चहत प्रभु पास॥
सुषी हौंहिं प्रांणी सबैं, इह मुहि चाह सभास॥ १६ ॥
भूष दीनता सोक स्रम, षेद मौह अरु प्यास॥
दूरि भई अरु चित्त तैं, इनि बातन की त्रास॥ १७ ॥
या चांडालहिं नीर इहि, दैनैं मैं या बार॥
अधिक भयौ आनंद दुष, दूरि भयौ निरधार॥ १८ ॥
बउत हुतौ प्यासौ नृपति, तउ ऐसै कहि बैंन॥
बहि जल बा चांडाल कौं, प्यावत भयौ सुषैंन॥ १९ ॥
ब्रह्मा बिस्नु महैस तिहुँ, परषन नृप कौं धीर॥
सूद्र बिप्र रु चांडाल कौं, आयै धारि सरीर॥ २० ॥
तिहूं दैवता प्रसंन ह्वै, पुनि नृप कौं उहिं बार॥
दैत भयै दरसन प्रगट, अधिक क्रिपा अनुसार॥ २१ ॥
तिहूं दैवतनि कौं नृपति, करत भयौ परिनांम॥
दिय लगाय चित लगन तैं, मिटि माया बिसतार॥ २२ ॥
प्रभु मैं चित लगाय कैं, मैटि माया बिस्तार॥
रंति दैव राजा भयौ, आत्म रूप आकार॥ २३ ॥
वाहि नृपति परताप सौं, संगीहूं अनपार॥
नारायण कै भक्त हुवै, लषि झूठौ संसार॥ २४ ॥
पुत्र भयौ सिनि जु गर्ग कैं, जिहँ सुत गार्ग्य सुनांम॥
आगैं ब्राह्मण ह्वै गयै, छत्री तैं भुवी ठांम॥ २५ ॥
महावीर्ज कैं दुरितषय, प्रगट्यौ परम प्रवीन॥
भयौ पुस्करारुणि जु सुत, कवि त्रयियारुणि तीन॥ २६ ॥

छत्रीन तैं तिहूँ पुत्र जे, ब्राह्मण भयै सुभाय॥
ब्रहतषत्रि कैं पुत्र हुवै, सौ हस्ती नामाय॥ २७॥
जिन हस्ती राजा रच्यौ, पुर हस्तिना सुढार॥
आछैं राज रचाय कैं, कियौ सुजस बिसतार॥ २८॥
हस्ती कैं सुत तीन हुबै, तिनकैं सुनियैं नांम॥
अजमीढ रु द्विमीढ पुरु, मीढ महा अभिरांम॥ २९॥
बंसहिं नृप अजमीढ कैं, प्रियमेधा लौं आदि॥
छत्रीनतैं ब्राह्मण भये, हिदैं अधिक अहलादि॥ ३०॥
और भयौ अजमीढ कैं, इक सुत ब्रहदिषु नांम॥
ताकैं ब्रहधनु पुत्र भौ, जिहँ सुत ब्रहत्का नांम॥ ३१॥
जाकैं जयद्रथ पुत्र भयौ, सुत बिसद हुवै तासु॥
तिहँ सुत प्रगट्यौ सैनजित, सुनि नृप ग्यांन निवासु॥ ३२॥
नृपति सैंनजित नांम कैं, प्रगट भयै सुत च्यार॥
वत्स कास्य दृढहनु अवर, रुचिरास्व अनुसार॥ ३३॥
द्वै सुत हुव रुचिरास्व कैं, पार और पृथुसैंन॥
नीप पुत्र हुवै पार कैं, जिहिं सुत सौ सुषदैंन॥ ३४॥
तांहिं कौं छाया सुक की, कन्या कृत्वी जु नांम॥
ब्याहि तासु प्रगट हुव सुत, ब्रह्मदत्तहिं अभिरांम॥ ३५॥
ब्रह्मदत्त कैं सुत प्रगट हुव, बिषुकसैंन जिहँ नांम॥
तिन लहिकैं उपदैस मुनि, जैगिषव्य जिहँ नाम॥ ३६॥
जोगग्रंथ अदभुत रच्यौ, महासुषन कौं सार॥
उदकसैंन जिहँ नृपति कैं, प्रगटयौ पुत्र उदार॥ ३७॥
उदकसैंन नृप कैं भयौ, सुत भल्लाद जु रसील॥
ब्रहदिषु नृप कैं बंस मैं, इतनै भयै नृपाल॥ ३८॥
प्रगट्यौ पुत्र द्विमीढ कैं, नांम यवीनर जास॥
ताकैं सुत कृत्यमांन हुव, पुत्र सत्यधृत्य तास॥ ३९॥
ताकैं सुत द्रिढनेम हुव, पुत्र सुपारस्व जास॥
सुमति नांम जिहिं सुत भयौ, संनतिमांन सुत तास॥ ४०॥
हिरण्यनाभि रिषि पास जिन, पढि कैं बेद रसाल॥
सामबेद की जिहिं करी, संहिता छह जु विसाल॥ ४१॥
जिहीं सुत प्रगटयौ नीप, तिहँ पुत्र भयौ उग्रायु॥
ताकैं षेम्य रु सुवीर, जिन रु रिपुंजय भायु॥ ४२॥
ताकैं बहुरथ पुत्र भयौ, सुनियैं नृपति सुजांन॥
अरु राजा पुरुमीढ कैं, भयी नांहिंन संतांन॥ ४३॥

हुती नृपति अजमीढ कैं, अस्त्री नलिनी नांम॥
ताकैं प्रगट्यौ नील सुत, सांति पुत्र जिहीं धांम॥ ४४॥
जाकैं पुत्रहिं सुसांति भौ, जिहं पुर्ज अर्क सुत जास॥
ताकैं सुत भरम्यांस्व हुव, पांच पुत्र हुवै तास॥ ४५॥
मुदगल कांपिल यवीनर, सृंजय ऐसै नांम॥
ब्रहदिषु ताकैं पुत्र भौ, परम धरम कौं धांम॥ ४६॥
दाता सूर सुजांन अति, चहुँ दिसि जांकौं नांम॥
प्रगट भये ऐं पंच सुत, नृप भरम्यास्वहिं धांम॥ ४७॥
अरु कह्यौ नृपति भरम्यास्व, मो सुत पांच सुजौर॥
करन रछया सामर्थ है, पंच देस की ठौर॥ ४८॥
तातैं पांचौ कहायै, बै भ्राता पांचाल॥
मुदगलही प्रगटत भयै, ब्राह्मण बुद्धि बिसाल॥ ४९॥
अरु मुदगल तैं प्रगट हुव, दिवोदास सुत नांम॥
भई अहल्या सुकन्यका, ब्याही गौतम धांम॥ ५०॥
सतानंद जिहँ सुता कैं, पुत्रहिं भयौ अभिरांम॥
धनुष बिद्यान मैं निपुण, सत्यधृत हुव तिहँधांम॥ ५१॥
सत्यध्रत कैं सुत प्रगट हुव, जास नांम सरद्वांन॥
तैं लषि अपछर उरबसी, मौहित भयै सुजांन॥ ५२॥
उन्हकौं बीर्ज पर्यौ हुतौ, वन जु सुरन कैं मांहिं॥
तासौं सुत कृप नांम अरु, कृपी सुता प्रगटांहिं॥ ५३॥
तिन्हकौं सांतनु नृपति लै, आयै समैं सिकार॥
ब्याही द्रौणाचार्य कौं, बहि तिय कृपी सुढार॥ ५४॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते ऐकविंसोऽध्यायः॥ २१॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ द्वाविंसोऽध्यायः ॥

(पांचाल, कौरव और मगधदेशीय राजाऔं के वंश का वर्णन)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक जु कहत कि मित्रायु सुत, दिवोदास कैं धांम॥
ताकैं सुत हुव च्यवन तिहँ, पुत्र सुदास जू नांम॥ १॥
तिन्हकैं हुव सहदेव सुत, जिन सुत सोमक नांम॥
ताकैं प्रगटै पुत्रनि सौ, सुनहुँ नृपति अभिरांम॥ २॥

जंतुहिं पुत्र तिनमैं बडौ, छौटौ प्रषत कहाय॥
प्रगट्यौ राजा प्रषत कैं, द्रुपदहिं पुत्र सुषदाय॥ ३॥
धृष्टद्युमन आदि लौं आदि, सुत भय द्रुपदहिं धांम॥
अरु इकहिं पुत्री द्रौपदी, प्रगट भई अभिरांम॥ ४॥
धृष्टद्युमन कैं पुत्र भयौ, धृष्टकेतु नांमाय॥
इतनैं नृपहिं पंचाल कैं, बंस भयै हे राय॥ ५॥
प्रगट भयौ अजमीढ कैं, रिषी नांम सुकुमार॥
संवरण जु तांकैं भयौ, कीनैं करम सुढार॥ ६॥
जिन्ह रवि की ब्याही सुता, सुंदर तपती नांम॥
तासौ सुत कुरु नांम भौ, नृप कुरुषेतहिं ठांम॥ ७॥
सुधन्वा परिषत जन्हु निषध, स्व कुरु सुत हुवै च्यार॥
ब्रहद्रथ कै जु कुसाग्र हुव, जिंह सुत रिषभ सुढार॥ ८॥
ताकैं सुत हुव सत्यहित, पुसपंहिं पुत्र तिहँ मांन॥
जाकैं जन्हु सुत प्रगट हुव, सुनियै नृपति सुजांन॥ ९॥
ब्रहद्रथ कैं तिय दूसरी, जास गरभ अनुसारि॥
बालक कैं द्वै टूक हुव, तिन्हैं मातु दिय डारि॥ १०॥
जरा राकसी नैं दुहूं, टूक जोरिबै दीन॥
जरासंधि तातैं भयौ, वाकौं नांम सरीन॥ ११॥
जरासंधि कैं पुत्र हुवै, जिहिं सहदैव जु नांम॥
जाकैं सुत सोमहपि हुव, सुतस्त्रवा तिहँ धांम॥ १२॥
कछु न परीषत कैं प्रगट, हौत भई संतांन॥
जन्हु कैं सुत भौ सुरथ तिहँ, बिदूरथ पुत्र निदांन॥ १३॥
तिहँ सुत सारवभौम भौ, जासु पुत्र जयसैंन॥
ताकैं राधिक सुत भयौ, अजुत पुत्र जिहिं अैंन॥ १४॥
ताकैं क्रौधन सुत भयौ, सुत देवातिथि जास॥
रु रिष्य पुत्र ताकैं भयौ, हुव दिलीप सुत तास॥ १५॥
पुत्र प्रतीपहिं दिलीप कौं, भयैपुत्र जिहीं तीन॥
बाल्हीक देवापि अरु, संतनु नांम प्रवीन॥ १६॥
राज्य छौडि देवापि जब, जात भयौ बन मांहिं॥
तब संतनु राजा भयै, या प्रिथवी कैं ठांहिं॥ १७॥
बडे बैद्य संतनु हुतै, पूर्ब जन्म कैं मध्य॥
भिषक जु इन्हकौं नांम हौ, पहलैं महा प्रसध्य॥ १८॥
जाकौ करसौं इहि छुवत, है सौ बृद्ध तैं ज्वांन॥
तासौं वा नृप कौ भयौ, सन्तनु नांम निदांन॥ १९॥

बारह वर्ष लौं मेघ नहिं, हुव बिच संतनु राज॥
कहत भयै अैसै तबै, सबही बिप्रन समाज॥ २०॥
बडौ भ्रात देवापि है, विद्यमांन निरधार॥
संतनु छौटौ भ्रात सौ, करत राज या बार॥ २१॥
निश्चै या अपराध सौं, नांहिंन बरसत मैहुँ॥
तब संतनु बड भ्रात सौ, कह्यौ राज्य तुम्ह लैहुँ॥ २२॥
तब छल करिकैं द्विज वरन, संतनु कौं बड भ्रात॥
बेद मारग सौं नस्ट करि, दैत भयै बिषयात॥ २३॥
उन किय निंदा बेद की, बुद्धि बिबैक बिसारि॥
तबैं राज कैं जोग बहि, नहिंन रह्यौ निरधारि॥ २४॥
तब संतनुहीं राज सुष, करत भयै मुदमांनि॥
अरु घनहूं बरसत भयै, आछे जबै निदांनि॥ २५॥
अब हुवहूं देवापि नृप, करत जोग अभ्यास॥
बसत जु ग्राम कलाप मैं, निज चित धरै हुलास॥ २६॥
संतनु आवैगौं जबैं, वाही नृप सौं फेरि॥
चंद्रबंस चलिहैं भलैं, नस्ट जु है कलि बेरि॥ २७॥
पुत्र भयौ बाल्हीक कैं, जास सौमदत्त नांम॥
भूरिश्रवा सल भूरि हुव, तीन पुत्र तिहीं धाम॥ २८॥
नृप संतनु कैं गंगा तिया, हुती जास गरभाय॥
भीषम बड धरमातमा, बैस्नव हुव सुषदाय॥ २९॥
परसरांम कौं जिनि कियै, प्रसंन जुध कैं मांहिं॥
अरु तन त्यागन समैं चित, राष्यौ प्रभू ठांहिं॥ ३०॥
संतनु नृपति मल्लाह की, कन्या बरी सुढार॥
जिहँ सुत हुव चित्रांगद अरु, बिचित्र बीर्ज निरधार॥ ३१॥
अरु जब सुता मल्लाह की, सत्यवती नांमाय॥
हुती कंवारी कन्यका, निज पितु गैह सुभाय॥ ३२॥
ता समैं रिषि पारासर, मोहित भयै निहारि॥
बेदब्यास जुत पुत्र तबै, प्रगटै हुतै सुढारि॥ ३३॥
जिन्हसौं हम्ह श्री भागवत, पढै महा सुषसार॥
जामैं नीकैं हरि चरित, कहै ब्यास बिसतार॥ ३४॥
और सिषन कौं भागवत, नहिं सिषाय श्री ब्यास॥
हम्हकौं सिषयौ क्रिपा करि, जांनि आपनैं दास॥ ३५॥
चित्रांगद नैं चित्रांगद, सौं मृत्यु औसरि पाय॥
तबै बिचित्र बीरज रह्यौ, माता पास सुभाय॥ ३६॥

कास्य नृपति की सुता उन्ह, बरी दौय अभिरांम॥
अंबिका रु अंबालिका, अैं दुहुं तिन्हकैं नांम॥ ३७॥
बहि बिचित्र बीरजहिं रह्यौ, अस्त्रीन कैं आधीन॥
तातैं ह्वै छय रोग लहि, मृत्यु प्रांन तज दीन॥ ३८॥
माता की आग्यां जबै, पाय ब्यास बुधिवांनि॥
बिचित्र बीरज तियांन सौं, कीन प्रगट संतानि॥ ३९॥
पांडु बिदुर धृतराष्ट्र तिहुँ, पुत्रन ब्यास प्रगटाय॥
गवन कियौ निज आस्त्रमहिं, प्रभू मैं चित लगाय॥ ४०॥
गांधारी तैं सौ भयै, धृतराष्ट्रहिं कैं पूत॥
बडौ पुत्रहिं जिन सबनि मैं, भयौ दुर्जोधन सूत॥ ४१॥
अरु कन्या प्रगटत भई, दुसला जांकौं नांम॥
सौ भायन कैं बीच बहि, बहनि यैक पितु धांम॥ ४२॥
स्त्राप लग्यौ हो पांडु कौं, तांतैं पंडु नृपाल॥
अस्त्री तैं न्यारै रहै, जांनि आपनौं काल॥ ४३॥
जिहँ नृपति कैं पटरानी, कुंती जु ही सुषदाय॥
तिन्हकैं प्रगटै धर्म तैं, सुपुत्र जुधिष्ठर राय॥ ४४॥
अरु प्रगटै सुत पवन तैं, भीमसैंन बलवांन॥
अर्जुन प्रगटै इंद्र तैं, बड बुधिवंत सुजांन॥ ४५॥
पांडु नृपति कैं दुतिय तिय, मांद्री नांम सुभैव॥
तिहिं सुत अस्विनि कुमार तैं, भयै नकुल सहदैव॥ ४६॥
पांच पांडवन तैं भयै, द्रौपदि कैं सुत पांच॥
तिन्हैं द्रौणसुत कहत भौ, दया न कीनी रंच॥ ४७॥
रु पुत्र जुधिष्ठर तैं भयौ, जिहँ प्रतिबिंध्य जु नांम॥
भीमसैंन तै पुत्र भयौ, स्त्रतुसैंन अभिरांम॥ ४८॥
अर्जुन तैं स्त्रुति कीर्ति सुत, हुव द्रौपदि गरभाय॥
सतानीक सुत नकुल तैं, परगट भयौ सुभाय॥ ४९॥
प्रगट्यौ सुत सहदेव तैं, स्त्रुतकरमा नांमाय॥
भयै भ्रात पिता कै अैं, जू पांचौ सुनि राय॥ ५०॥
तिया पूरबी नांमकी, हुती जुधिष्ठर धांम॥
प्रगट्यौ दैवक नांम सुत, ताकैं गर्भक ठांम॥ ५१॥
भीमसैंन कैं हिडम्बा, अस्त्री हुती सुढार॥
तिहँ सुत भयौ घटोत्कच, सुनियै नृपति उदार॥ ५२॥
हुती तृतीय तिया काली, भीमसैंन कैं धांम॥
प्रगटयौ ताकैं गर्भ सुत, जांस सर्वगत नांम॥ ५३॥

बिजया तिय सहदेव कैं, सुत सहौत्र हुव जास ॥
करैणुमति तिय नकुल कैं, सुत नरमित्र जु तास ॥ ५४ ॥
अर्जुन कैं तिय उलूपी, नागकन्या अति रूप ॥
पुत्र बभ्रुबाहनहुँ भयौ, ताकैं अति जु अनूप ॥ ५५ ॥
जो रह्यौ मणिपूर नृपति, नाना नार्न पास ॥
अर्जुन कैं तृतीय सुभद्रा, हुती जु तिय सुषरास ॥ ५६ ॥
ताकैं हुव अभिमन्यु सुत, पिता तुम्हारै राय ॥
अभिमन्यु कैं तिय उत्तरा, ताकैं तुम्ह प्रगटाय ॥ ५७ ॥
रछया तुम्हारी गर्भ मैं, किय श्रीकृस्न नृपाल ॥
समित किय ब्रह्मास्त्र कौं, करिकैं क्रिपा बिसाल ॥ ५८ ॥
जनमैजय स्रुतसैंन अरु, भीमसैंन उग्रसैंन ॥
अैं सुत च्यारौं तुम्हारै, हैं आछै सुषदैंन ॥ ५९ ॥
तुम्हकौं तछिक काटिहिहैं, तब जनमैजय रीसि ॥
हौमि हौहिंगैं जिग्य बिच, बहु सर्पन कौं बंसि ॥ ६० ॥
तुर काबिषेय प्रोहित करि, जनमैजय उहिं बार ॥
अस्वमेध जिग्य करि प्रिथी, जीतैंगौं सुभ ठार ॥ ६१ ॥
सतानीक सुत हौहिंगौ, जनमैजय कैं गैह ॥
जागिबल्क रिषि सौं पढिहैं, तीनौं बेद अछेह ॥ ६२ ॥
सउनक रिषि पैं लैंहिंगै, परम ग्यांन उपदैस ॥
क्रिपाचार्ज सौं सीषि है, सस्त्र बिद्या जु सुदैस ॥ ६३ ॥
तिनकैं सहस्त्रानीक सुत, अहै प्रगटहिं सुढार ॥
सुत अस्वमेधज नामकैं, ह्वै हैं नांम उदार ॥ ६४ ॥
तिनकैं असीम कृस्न सुत, ह्वै हैं प्रगट सुभाय ॥
तिनकैं ह्वै हैं प्रगट सुत, नैमिचक्र नांमाय ॥ ६५ ॥
जब जैहैं पुर हस्तिनां, बूडि गंगा जू मांहिं ॥
तबै वै बसहिं जायिंकैं, कौसांबी पुरठांहिं ॥ ६६ ॥
तिन्ही सुत ह्वै हैं चित्ररथ, जिह सुत कविरथ नांम ॥
जाकैं ह्वै हैं बृष्ठिमांन, सुत सुषैंन तिहिं धांम ॥ ६७ ॥
जिहँ सुनीथ सुत हौहिंगे, नृचषु पुत्र फिरि जास ॥
ह्वै हैं सुत जिहँ सुषीनल, पारिपलव सुत तास ॥ ६८ ॥
रु सुनय पुत्र तिहिं हौयगौं, सुत मेधावी ताहिं ॥
पुत्र नृपंजयहिं हौहिंगौं, दूर्ब पुत्र पुनिहिं जांहिं ॥ ६९ ॥
ताकैं तिमि सुत हौहिंगौं, ब्रहद्रिथ तिहिं कैं धांम ॥
ह्वै हैं तासु सुदास तिहँ, सतानीक सुत नांम ॥ ७० ॥

ताकैं ह्वै हैं दुर्दमन, पुत्र वहीनर जु जास॥
दंडपाणि तिहूं पुत्र अरु, निमि सुत ह्वै हैं तास॥ ७१॥
रु ताकैं ह्वै हैं पुत्र जू, षैमक नांम कहाय॥
षैमक तांई बीचि कलि, चलि है बंस सुभाय॥ ७२॥
जरासंधि कैं बंस मैं, ह्वै हैं जितै नृपाल॥
तिनकैं सुनियैं नांम अबु, हे नृप बुद्धि रसाल॥ ७३॥
जरासंधिहुँ कैं पुत्र हैं, तिहँ सहदैव जु नांम॥
तिहुँ ह्वै हैं मार्जारि सुत, श्रुतस्रवा तिहिं धांम॥ ७४॥
ह्वै हैं जिहिं अयुतायु सुत, तांसौं पुत्र निरमित्र॥
ताकैं ह्वै हैं प्रगट सुत, नांम ताहि सुनषित्र॥ ७५॥
ताकैं सुत ह्वै हैं प्रगट, बृहत्सैंन जिहिं नांम॥
ताकैं ह्वै हैं करमजित, स्रुतंजय सुत तिहिं धांम॥ ७६॥
तासु हौंहिंगे बिप्र सुत रु, तांकै सुचि सुत नांम॥
जाकैं ह्वै हैं षैमसुत, सुब्रत पुत्रहिं उनि धांम॥ ७७॥
धरमसूत्र जिहिं हौंहिंगौ, सम सुत ह्वै हैं जास॥
द्युमत्सैंन तिहिं हौंहिंगैं, सुमति पुत्र पुनिहिं तास॥ ७८॥
रु सुबल पुत्र जिहिं हौहिंगैं, ताकैंहिं पुत्र सुनीत॥
तिहुँ सुत ह्वै हैं सत्यजित, तांकै सुत बिस्वजीत॥ ७९॥
ताकैं ह्वै हैं रिपुंजय, इतनैं नृपति प्रसंस॥
सहस बरस बिच हौंहिंगैं, जरासंधि कैं बंस॥ ८०॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते द्वाविंसोऽध्यायः ॥ २२ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ त्रयोविंसोऽध्यायः ॥

(अनु, द्रुह्यु, तुर्वसु और यदु के वंश का वर्णन)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - श्री सुक कहत जजाति कैं, हुतौ पुत्र जु अणु नांम॥
अरु चषु परोष सभानर, तीनहिं पुत्र बहिं ठांम॥ १॥
पुत्र सभानरहुँ कैं भयौ, जास कालनर नांम॥
ताकैं संजय पुत्र भयौ, जनमैजय तिहिं धांम॥ २॥
महासील ताकैं भयौ, महानांम सुत जास॥
महामना तिहिं सुत रु सुत, तितिषु उसीनर तास॥ ३॥

सिव बन समि दछि च्यार सुत, भयै उसीनर धांम॥
पुनि सिवि कैं हुव च्यार सुत, तिन्हकैं सुनियैं नांम॥ ४॥
ब्रसादर्भ कैकय रु मद्र, चौथौ नांम सुबीर॥
रुसद्रिथ सुत भौ तितिषु कैं, सुनियैं नृपति सधीर॥ ५॥
रुसद्रिथ कैं सुत हैम भौ, ताकैं सुतपा नांम॥
ताकैं भौ बलि नांम सुत, सुनौं नृपति अभिरांम॥ ६॥
अंग बंग रु कलिंग अंध्र, पुंडर सुह्म नांमाय॥
दीर्घतमा रिषि तैं भयै, अैं बलि तिय गरभाय॥ ७॥
तब अपनैं अपनैं नांम कैं, तिननि बसायै दैस॥
षनपान पुत्र भौ अंग कैं, कीनैं कर्म बिसैस॥ ८॥
ताकैं दिविरथ पुत्र भयौ, पुत्र धर्मरथ जू जास॥
तिहिं सुत प्रगटयौ चित्ररथ, हुव संतान न तास॥ ९॥
बही जु चित्ररथ नृपति कौं, रौमपाद भौ नांम॥
ताकौं दसरथ नृपति दिय, निजु कन्या अभिरांम॥ १०॥
ताकौं निजी पुत्री करी, रौमपाद सुष पाय॥
ताहिं दई रिषि सृंग कौं, ब्याहि भलैं अनुभाय॥ ११॥
रौमपाद कैं दैस मैं, मैह जु बरसै नांहिं॥
तब बोलै रिषि सृंग कौ, राजा निज पुर आंहिं॥ १२॥
हुतै पुत्र रिषि सृंग तैंहि, रांनी कैं निरधार॥
उन्हकौं बैस्यां मुहित करि, नृत्य गीत अनुसार॥ १३॥
ल्याई नृप कैं दैस मैं, तब अति बरसै मैह॥
रौमपाद कैं चितहिं कौं, सौच मिट्यौ अनछैह॥ १४॥
अरु उन्हहीं रिषि सृंग नैं, राजा दसरथ पास॥
जिग्य करायौ सुतहीं तैं, आछी बिधि सहुलास॥ १५॥
तब प्रगटै श्रीरांम जू, दैन परम आनंद॥
मैंटन प्रकृति अंध्यार कैं, पूरन अदभुत चंद॥ १६॥
भयौ पुत्र चतुरंग जु नृप, रौमपाद कैं धांम॥
रु तिनकैं प्रगटै पुत्र जिहिं, हुव प्रथुलाष जु नांम॥ १७॥
तीनहिं पुत्र जांकै भयै, तिन्हकैं नांम जु अैहुं॥
ब्रहद्रथ ब्रहत करमा अरु, ब्रहदभानु सुनि लैहुँ॥ १८॥
ब्रहद्रथ कैं सुत प्रगट हुव, ब्रंहदमना सुत जास॥
ताकैं जयद्रथ सुत भयौ, बिजय पुत्र भयौ जास॥ १९॥
अरु धृति पुत्र ताकैं भयौ, तिहिं सुत धृतब्रत नांम॥
सतकरमा ताकैं भयौ, अधिरथ ताकैं धांम॥ २०॥

सौ नृप अधिरथ गंग तट, क्रीडत रह्यौ सुभाय॥
तांह जल मैं संदूक बिच, उन इक बालक पाय॥ २१॥
सौ बालक संदूक मैं, हुतौ करण नृप नांम॥
भयै हुतै कन्या समैं, कुंती गरभहिं ठांम॥ २२॥
अधिरथ नृप वा बालकहिं, पुत्र जू अपनौं कीन॥
रु भयौ करण कैं पुत्र तिहिं, ब्रजसैंन नांम दीन॥ २३॥
हौ जजाति कौ द्रुहिय सुत, बभ्रु पुत्र भयौ जासु॥
रु सैतु पुत्र जाकैं भयौ, आरब्ध जु सुत तासु॥ २४॥
जासु पुत्र गांधार भयौ, पुत्र धरम जिहीं धांम॥
जांकैं प्रगटयौ पुत्र धृत, तिहुँ सुत दुर्मना नांम॥ २५॥
तिहँ सुत प्रगटै प्रचैता, सौ सुत हुव तिन धांम॥
भयै मलैच्छनि कैं नृपति, बै उत्तर दिसी ठांम॥ २६॥
अरु सुत नृपति जजाति कौं, तुर्वसु जांकौं नांम॥
ताकैं प्रगटयौ पुत्र बन्हि, भर्ग पुत्र तिहूं धांम॥ २७॥
भानुमांन जिहँ सुत भयौ, तांकैं भयौ त्रिभानु॥
जाकैं सुत करंधम तासु, मरूत सुत जू जांनु॥ २८॥
तिन नृप कीनैं दुस्यन्तु कौं, अपनौहिं पुत्र निदांन॥
अधिकप्रीति राषत भयौ, वासौ भल उनमांन॥ २९॥
पुत्र जू नृपति जजाति कैं, बडौ हुतौ जदु नांम॥
ताकैं सुनियैं अब भलैं, बंस महा अभिरांम॥ ३०॥
प्रगट भयै जिहँ बंस मैं, कुंवर कृस्न भगवांन॥
बंसगाथ सौ सुनै तैं, मिटत पाप अग्यांन॥ ३१॥
क्रौष्ठा नल रिपु सहस्त्रजित, सुत हुव जदु कैं च्यार॥
सुत सहस्त्रजित कैं भयौ, सतजित नांम सुढार॥ ३२॥
तासु महाहय बैणुहय, हैहय सुत हुव तीन॥
हैहय कैं सुत धरम भौ, सुनियैं नृपति प्रवीन॥ ३३॥
ताकैं प्रगट्यौ नैत्र सुत, पुत्र कुंति भयौ जासु॥
पुत्र भयौ सौहंजि तिहूं, महिषमांन सुत तासु॥ ३४॥
अरु पुत्र भद्रसैंनक भयौ, महिषमांन कैं धांम॥
ताकैं प्रगट्यौ दौय सुत, धनक रु दुर्मद नांम॥ ३५॥
रु च्यार पुत्र प्रगटत भयै, धनक नृपति कैं धांम॥
कृतवीर्ज कृताग्नि कृत, वर्मा कृतौजा नांम॥ ३६॥
पुत्र जु भयौ कृतवीर्ज कैं, अर्जुन नांम सुढार॥
दत्तात्रैय सौं ग्यांन जिनि, सीष्यौ भलैं प्रकार॥ ३७॥

जोग जिग्य दांन मांन मैं, कौउ अर्जुन सम नांहिं॥
बरस पच्यासी सहस्त्र जिन, कियौ राज भुव ठांहिं॥ ३८॥
भयै हजारन पुत्रहिं जिहिं, रहै पांच जिन मध्य॥
सूरसैन जयंध्वज वृषभ, मधु ऊर्जित सु प्रसध्य॥ ३९॥
जय ध्वज कैं सुत प्रगट भौ, तालजंघ जिहँ नांम॥
सौ प्रगटै तांकैं सुवन, सुनौ नृपति अभिरांम॥ ४०॥
बीति हौत्र तिनमैं भयौ, बडौ पुत्र सुनिय राय॥
बृस्नि आदि सुत सौ भयै, मधु कैं धांम सुभाय॥ ४१॥
ता दिन तैं उन बंस कैं, जितै नृपति प्रगटाय॥
माधव बार्स्नैय यादव, पुहमी बीच कहाय॥ ४२॥
राजा जद कैं दूसरौ, सुत जू क्रौष्टा नांम॥
तांकैं प्रगट्यौ पुत्र सौ, ब्रजिनवांन अभिरांम॥ ४३॥
तांकैं स्वाहि पुत्र भौ सुत, रुसैकु हुवै तास॥
जांकै सुत भयौ चित्ररथ, हुव ससबिन्दु जु जास॥ ४४॥
भौ ससबिंदु महाजोगी, महाभौज तिहुँ नांम॥
बडौ चक्रबर्ती जु भयौ, सौ राजा भुव ठांम॥ ४५॥
जासु हुती तिय सहस्त्र दस, सुत दस लाष हजार॥
तिनमैंहुँ पुत्र बडै भयै, छह आछैं अनुसार॥ ४६॥
उन छहून मैं यैक सुत, हौ प्रथुस्त्रवा जु नांम॥
ताकैं प्रगटयौ धर्म सुत, उसना सुत तिहँ धांम॥ ४७॥
तिन किय सौ अस्वमेध जिग्य, रुचक पुत्र भयौ जास॥
पांच पुत्रनि प्रगटत भयै, राजा रुचक निवास॥ ४८॥
ज्यामघ प्रथु पुरुजित रुकम, अरु पंचम रुकमैसु॥
अैं बरनैं पांचौन कैं, नांम जु सुनौ प्रजैसु॥ ४९॥
राजा ज्यामघ कैं हुती, रांनी सैव्या नांम॥
ताकै डरसौं और नृप, ब्याहि सकैं नहिं भांम॥ ५०॥
वा डर सौं रांनी बहै, सैव्या नांम निदांन॥
ताकैं पुत्री रु पुत्र कछू, हौय नांहिं नृप थांन॥ ५१॥
अैक समैं ज्यामघि नृपति, लरि सत्रुननि कौं जीति॥
कन्या भौज्यां नांम की, ल्यावत भयौ सुरीति॥ ५२॥
रानी सैव्या सौ कन्या, लषि नृप कैं रथ मांहिं॥
कह्यौ कि हे कपटी इहै, क्यूं ल्यायौ या पांहिं॥ ५३॥
तब राजा ज्यामघि डरपि, बचन कह्यौ या भाय॥
इह तेरै सुत की बहू, है जानहुं सुष दाय॥ ५४॥

तब हँसि कैं बौलत भई, सैव्या रांनी बैंन॥
म्हैंहू बांझ भयौ प्रगट, पुत्रहिं गरभ मौ तैंन॥ ५५ ॥
भई कांह तैं इहि बहू, मौ सुत कैं या बार॥
तब राजा बौलत भयौ, फिरि अैसैं अनुसार॥ ५६ ॥
तेरैं बैटा हौहिंगौं, इह ह्वै हैं तिय जास॥
यौं कहि अस्त्री कौं नृपति, दैत भयौ बिसबास॥ ५७ ॥
बिस्वैदैवा अरु पितरनि, सुनि राजा कैं बैंन॥
सत्य करत भयै नृप बचन, करि अति दया सुषैंन॥ ५८ ॥
रांनी सैव्या कैं भलैं, गरभ रह्यौ निरधार॥
सुत बिदर्भ भौ ताहि बहि, ब्याही कन्या सुढार॥ ५९ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते त्रयोविंसोऽध्यायः ॥ २३ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुर्विंसोऽध्यायः ॥

(विदर्भ के वंश का वर्णन)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - श्री सुक कहत बिदर्भ कैं, प्रगट भयै सुत तीन॥
रौमपाद कुस क्रथ तिहुँनि, अैं हैं नांम प्रवीन॥ १ ॥
रौमपाद कैं बभ्रु सुत, ताकैं सुत कृति नांम॥
जाकैं भयौ उसीक सुत, चैदि सुत तिहू धांम॥ २ ॥
दमघौष सिसुपाल आदि, चैदि कैं सुत अनैंक॥
क्रथ कैं प्रगटयौ कुन्ति सुत, जास धृष्टि सुत यैंक॥ ३ ॥
न्रिबृति सुत जांकैं भयौ, जास दसारह पूत॥
ब्यौमहुँ पुत्र जांकैं भयौ, जासहुँ पुत्र जीमूत॥ ४ ॥
जाकैं हुव बिकृति पुत्र सुत, भीमरथ हुवै जास॥
ताकैं नवरथ पुत्र भयौ, सुत दसरथ हुव तास॥ ५ ॥
रु सकुनि पुत्र जाकैं भयौ, सुत किरंभ तिहं धांम॥
देवरात तिन्हीं पुत्र जिहँ, दैबषत्रहिं सुत नांम॥ ६ ॥
ताकैं सुत मधु नांम भौ, हुव सुत कुरुवस जास॥
जाकैं भौ अनु पुत्रहिं हुव, पुरुहौत पुत्र जु तास॥ ७ ॥
जास आयु सुत प्रगट भौ, तिहँ सुत सात्वत नांम॥
सात पुत्रनि प्रगटत भयै, सात्वत नृप कैं धांम॥ ८ ॥

अंधकु देवाब्रधि दिव्य, भजि ब्रष्णि रु भजमांन॥
महाभौज ऐं नांम है, सातुन कैं सुनिदांन॥ ९॥
किंकिण अरु निमिलोचि ध्रष्टि, तिहुँक तियनि गरभाय॥
पुत्र भयैहुँ भजमांन कैं, सुनौ परीषत राय॥ १०॥
अरु प्रगटै तिय दुतिय कैं, गरभ तीन सुत और॥
सताजित सहस्त्राजित अरु, अयुतजित नांम और॥ ११॥
देवब्रध कैं पुत्र भयौ, जाकौ जस अनपार॥
आछी बिधि गावत भयौ, है नृपति संसार॥ १२॥
सब मनषन मैं स्त्रेष्ठ भौ, बभ्रु नृपति अधिकाय॥
देवब्रध राजा भलैं, दैवनि समता पाय॥ १३॥
पैंसठि अवरू छह सहस, इतै मनषहिं सुभाय॥
मुक्ति भयै नृप बभ्रु तैं, पाय ग्यांन सुषदाय॥ १४॥
बडौ धर्मधारी भयौ, महाभौज सप्रसंस॥
भौज कहायै जे नृपति, प्रगटै बाकै बंस॥ १५॥
भयै सुमित्र अरु युधाजित, पुत्र ब्रष्णि कै जांनि॥
भयै युधाजित कैं सुवन, सिनि अनिमित्रहुँ निदांनि॥ १६॥
अरु भयौ पुत्र अनिमित्र कैं, निम्नहुँ जास जू नांम॥
सत्राजित रु प्रसैन सुतहिं, निम्न कैं हुवै धांम॥ १७॥
सिनि कैं सुत सत्यक भयौ, सत्यक कैं युयुधांन॥
अरु जय सुत युयुधान कैं, प्रगट भयौं बुधिवांन॥ १८॥
ताकैं प्रगटयौ पुत्र कुणि, पुत्र युंगधर जु जासु॥
चित्ररथ रु अफलक हुव यै, सुत बृष्णि नृपति वासु॥ १९॥
अफलक कैं तिय गांदिनी, जास गरभ अनुसार॥
अक्रूरहीं लौं आदि सुत, बारह हुव निरधार॥ २०॥
सारमैय आसंग गिरि, धर्मब्रध हूं लेषि॥
अरिमर्दन मृदुबिद अवर, षेत्रोपेषहिं पेषि॥ २१॥
मृदुर सुकर्मा अरु सत्रुघन, गंधमादन प्रति बाहु॥
सुफलक कैं अक्रूरहिं जुत, ऐं सुत सुनि नरनाहु॥ २२॥
अरु इक प्रगटी कन्यका, जासु सुचीरा नांम॥
दैववांन उपदैव द्वै, सुत अक्रूर हीं धांम॥ २३॥
प्रथु नांमा अरु बिदूरथ, दौई पुत्र लौं आदि॥
प्रगट भयै कितनैंक सुत, चित्ररथ जू कैं ज्यादि॥ २४॥
बर्हिषकंबल कुकुर सुचि, अरु पंचम भजमांन॥
अंधक कैं ऐं सुत भयै, सुनियै नृपति सुजांन॥ २५॥

बृष्णि पुत्र भयौ कुकुर कैं, पुत्रहिं बिलौमा जासु॥
तिहँ कपोतरोमा सुवन, सुत अनु प्रगट्यौ तासु॥ २६॥
तुम्बरु अरु गंधर्ब हुव, अनु कैं सषा सुभाय॥
अनु कैं अंधक पुत्र भयौ, तिहँ दुदुंभि सुत पाय॥ २७॥
अरिद्यौत ताकैं पुत्र भौ, सुवन पुनरवसु जास॥
रु बांकै आहुक पुत्र अरु, सुता आहुकी तास॥ २८॥
उग्रसैंन दैबक दुहुँ सुत, हुव आहुक कैं धांम॥
दैबक कैं हुव च्यार सुत, तिन्हकैं अब सुनि नांम॥ २९॥
दैववांन उपदैब पुनि, दैववर्धन रु सुदैव॥
अैं दैबक कैं च्यार सुत, बरनैं नांम सभैव॥ ३०॥
अरु हुव कन्या सात तिन, सुनियैं नांम प्रवीन॥
दैबरषिता रु दैबकी, ध्रतदैबा अैं तीन॥ ३१॥
श्रिदैबा सह दैबा उप, दैबा दैबा सांत॥
अैं सातौं बसुदैब कौं, ब्याही हीं सुभ भांत॥ ३२॥
कंस सृष्टि निग्रौध कंक, संकु सुहू तुष्टिमांन॥
राष्ट्रपाल अरु सुनांमा, सुत उग्रसैंन सथांन॥ ३३॥
कंसा कंसवती कंका, सुरभू संजुत च्यार॥
राष्ट्रपालिका पांचवीं, पुत्री इती जु सुढार॥ ३४॥
उग्रसैंन नृप कैं भईं, सुनौं परीषित राय॥
तैं ब्याहीं बसुदैब कैं, लघु भ्रातहिं सुभ भाय॥ ३५॥
अंधक कैं भजमांन सुत, ताकैं बंसहिं मध्य॥
सिनि हृदीक अरु बिदूरथ, प्रगटत भयै प्रसध्य॥ ३६॥
तांहीं कैं हुव तीन सुत, नांम सुनौं तिन राय॥
कृतबर्मा सुतधनु अवरु, दैबबाहु नांमाय॥ ३७॥
दैवमीढ कैं सुर सुत, जास मारिसा नारि॥
तासौं प्रगटैहिं पुत्र दस, सुनि तिन नांम प्रकारि॥ ३८॥
दैबभाग बसुदैब ब्रक, दैबस्त्रवक आनंक॥
बत्सक संजय समीक रु, सुनियैं स्यामक कंक॥ ३९॥
और यैक बसुदैब कौं, आनक दुंदुभि नांम॥
पांच बहनि बसुदैब कैं, भईं प्रगट अभिरांम॥ ४०॥
प्रिथा श्रुतश्रवा श्रुतिकीर्ति, श्रुतदैबा हुवि च्यार॥
रु राज्याधि दैबा सहित, पांचुंवि नांम सुढार॥ ४१॥
सूरसैंन नृप कौं सषा, हुतौ कुंति नृप जांनि॥
भईं नांहिं जिहँ नृपति कैं, प्रगटत कछू संतांनि॥ ४२॥

तासौं ताकौं निज सुता, सूरसैंन नृप दीन॥
प्रिथा नांम जिहँ सुता कौं, सुंदर रूप प्रवीन॥ ४३ ॥
तांहीं कौं फिरि नांम भौ, कुंती जो बिषयात॥
जिन्हकैं हिय श्रीकृस्न कौं, ध्यांन रह्यौ दिनरात॥ ४४ ॥
सुरन बुलांवन की बिद्या, दुरबासा रिषि पास॥
बालपनैं सीषी हुती, कुंती सहित हुलास॥ ४५ ॥
सौइ कुंती अैक समैं, सूर्जहिं बौलि सु लीन॥
अरु बिनती कीनी कि म्हैं, मंत्र परीछा कीन॥ ४६ ॥
छमा करहुँ अपराध मो, जाहुँ आप निज धांम॥
इह सुनि कुंती सौं बचन, रबि बोलै वहिं ठांम॥ ४७ ॥
मो दरसन ह्वै हैं सफल, निरफल नांहिंन जाय॥
पुत्रहिं हौहिं तेरैं यौनि, दूषित पैं न कहाय॥ ४८ ॥
पुत्र हौहिंगौं प्रगटहिं अरु, रहि हैं कन्या सुभाय॥
अब करहुँ अैसौं उपाय, म्हैं तैरै गरभाय॥ ४९ ॥
इहि कहिकैं निज लौक कौं, करत भयै रबि गौन॥
कुंती कौं उहिं बार सुत, प्रगट्यौ अैक सुठौन॥ ५० ॥
कुंती लैं वा पुत्रहिं कौं, जल मैं दियौ बहाय॥
बहुरि बिबाहीं पांडु कौं, कुंती तिय सुषदाय॥ ५१ ॥
बहनि हुती बसुदेव की, श्रुतदैबा नांमाय॥
ब्रधसर्मा जिन बरी सुत, दंतबक्र प्रगटाय॥ ५२ ॥
बहनि अैक बसुदैब की, श्रुतकीरति जिहँ नांम॥
सौ ब्याही ध्रष्टकैतु कौं, कैकय दैसहिं ठांम॥ ५३ ॥
संतर्दन लौं आदि सुत, पांच गरभ हुव जास॥
रु राजाधि दैबी बहनि, ही बसुदैब निवास॥ ५४ ॥
ताहिं अवंती कौं नृपति, ब्याहत भय जयसैंन॥
अधिक प्रीति राषत भयौ, जांनि तिया सुषदैंन॥ ५५ ॥
यैक बहनि बसुदेव कीं, सुतश्रवाजु नांमाय॥
सौ ब्याही दमघौष नृप, चंदेरी कैं राय॥ ५६ ॥
जास पुत्र सिसपाल हुवै, पापी हुवै कुपात॥
करत रह्यौ श्रीकृस्न की, बह निंदा दिनरात॥ ५७ ॥
भ्रात हुतौ बसुदैब कौं, दैवभाग जिहँ नांम॥
ताकैं हुति इक सुभग तिय, सुनियै कंसा नांम॥ ५८ ॥
चित्रकेतु अरु ब्रहदवल, जाकैं सुत प्रगटाय॥
दुतिय भ्रात बसुदैब कौं, दैवश्रवस नांमाय॥ ५९ ॥

तांकैं कंसवती रही, अस्त्री तिहूं गरभाय ॥
सुत इषुमान सुवीर दुहु, प्रगट भयै सुनि राय ॥ ६० ॥
भ्रात हुतौ बसुदैब कौं, आनक ताकै धांम ॥
कंका तियतैं सुत भयै, सत्यजित पुरजित नांम ॥ ६१ ॥
अरु राष्ट्रपाली हुती, संजयं कैं गृह नारि ॥
सुत दुर्मर्षण बृष भयै, जास गरभ अनुसारि ॥ ६२ ॥
स्यांमक कैं अस्त्री रही, सूरभूमि नामांय ॥
हरिकैस रू हिरनाछ सुत, भयै जास गरभाय ॥ ६३ ॥
नांम मिस्त्रकैसी हुती, बत्सक कैं गृह भांम ॥
पुत्र भयै ब्रक आदि लौं, ताकैं गरभहिं ठांम ॥ ६४ ॥
दुरवाषी ब्रक कैं तिय, तासौं सुत हुव तीन ॥
पुस्कर तछक साल्व अैं, नांम तिहुँनि कहि दीन ॥ ६५ ॥
अस्त्री हुती समीक कैं, सुदामिनी सुरसाल ॥
ताकैं प्रगटैं दौय सुत, सुमित्र रु अर्जुन पाल ॥ ६६ ॥
तिया कर्णिका कंक कैं, जिहँ सुत द्वै प्रगटाय ॥
रितिधाम अरु जय दुहूँनि, दीनै नांम जताय ॥ ६७ ॥
भद्रा पौरवी रौहिणी, मदिरा रोचनु नांम ॥
इला दैवकी आदि तिय, हुव बसुदैबहिं धांम ॥ ६८ ॥
गद सारण बलदैब कृत, दुर्मद बिपुल ध्रुवनांम ॥
प्रगट भयै अैं सात सुत, गरभ रोहिणी ठांम ॥ ६९ ॥
भूत भद्र द्रुमद सुभद्र, भद्रबाहु लौं जांनि ॥
पुत्रनि पौरवी कैं भयै, बारह प्रगट निदांनि ॥ ७० ॥
कृतक नंद उपनन्द सूर, हस्तक मागद नांम ॥
हौत भयै अैं सुत प्रगट, गरभ रोचनां ठांम ॥ ७१ ॥
आदि उरुबल्क इला कैं, प्रगट भयै सुत जांनि ॥
कैसी नांमां सुत भयौ, कौसल्या गरभ आंनि ॥ ७२ ॥
धृतदैबा कैं गरभ सुत, भयौ बिप्रष्ठ जु नांम ॥
श्रम प्रतिश्रुत आदि हुवै, सांति गरभ कैं ठांम ॥ ७३ ॥
कल्पबर्ष सुत आदि हुव, उपदैबा गरभाय ॥
हंस सुवंस वसु आदि छह, सुत श्री दैबा पाय ॥ ७४ ॥
पुत्र जनै गद आदि नौव, दैबरछिताहुँ भांम ॥
पुरविस्तुत लौं सुत आदिहुँ, सहदैबा कुषि ठांम ॥ ७५ ॥
कीरतिमांन सुमर्दन रिजु, बलदैब भद्रसैंन ॥
जुत भद्र सुषैंन सुत सात्त, गरभ दैबकी अैंन ॥ ७६ ॥
अरू सुत प्रगटै आठवैं, श्रीकृस्न कुंवर कर्तार ॥
सुता सुभद्रा नांम की, उपजी यैक सुढार ॥ ७७ ॥

हौत धरम की हांनि तब, पाप बृद्धि बढि जात॥
तब तबहीं अवतार प्रभु, धारत है बिषयात॥ ७८॥
अपनीं ईछा सौं धरत, जनम करम भगवांन॥
माया कैं प्रभु सबनि कै, द्रिष्टा आहि निदांन॥ ७९॥
अरु निरलैपहिं हैं सही, दैन मुकति सुषसार॥
दीनबन्धु असरन सरन, सबकैं प्रान अधार॥ ८०॥
असुर नृपन की सैंन कौं, दैषि प्रिथी पैं भार॥
दूरि करन भुव बौझ प्रभु, धर्यौ आपु अवतार॥ ८१॥
अग्रजु बलि जुत श्रीकृस्न जू, या प्रिथवी कैं मध्य॥
कीनैं अदभुत करम बहु, बिच संसार प्रसध्य॥ ८२॥
कलिजुग कैं प्राणीन कौं, मैटन सोक कलैस॥
प्रगट कियौ जग बीचि प्रभु, अपनौं अदभुत अैस॥ ८३॥
प्रभु जस तीरथ रूप हैं, लागत सुधा समांन॥
करम बासनां दूरि ह्वै, जाकैं सुनैं निदांन॥ ८४॥
भौज दसारह पांडु कुरु, संजय अंधक ब्रस्नि॥
सूरसैंन मधु अस्तुति जिन, करत रहै ह्वै प्रस्नि॥ ८५॥
अैसै पूर्न ब्रह्म श्रीकृस्न, धर्यौ पूर्न अवतार॥
जिन्ह चरितनि कैं सुननि तैं, जीव हौहिं भवपार॥ ८६॥
मंद हँसनि चितवनि मधुर, बचन लीला सुर रूप॥
इन बातन सौं जगत कौं, दिय आनंद अनूप॥ ८७॥
प्रसंन बदन भगवांन कौं, लषि प्रसंन्न सबै हौय॥
सहि न सकैं पल लगतहूं, अंतर कबहूं हौय॥ ८८॥
नंद महर घर ब्रज बसै, मारै सत्रुनि अनपार॥
बहु तियनि ब्याह रचि सहस्त्र, सुत किय प्रगट सुढार॥ ८९॥
जिग्य कीनैं प्रभु श्रुति धरम, सुभक्ति मृजादा ठांनिं॥
अगिनत कियैं पराक्रम जु, तिन कछु अंत न आंनिं॥ ९०॥
भूरिभार अर्जुनहिं दियै, टारि भीर भुव भौंन॥
उद्धव कौं उपदैस करि, किय बैकुंठहिं गौन॥ ९१॥

(इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते चतुर्विंसोऽध्यायः ॥ २४॥)

॥ इति नवम स्कन्ध संपूर्णम्॥

(॥ पोथी को संवत् १८३४ वि. श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री॥)

(कुल छन्द १३४३ - छंद योगक्रम १०,३४५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

***

॥ श्री सर्वेश्वरोजयति ॥

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

(कृष्णगढ़ महाराजाधिराज श्रीराजराजेश्वर राजा श्री राजसिंघ जी की महाराणी श्रीमती ब्रजकुँवरी जी बाकांवती 'श्रीब्रजदासी' जी कृत श्रीमद्भागवत भाषा दसम स्कन्ध (पूर्वार्द्ध) लिष्यते ॥)

॥ दसम स्कंध (पूर्वार्द्ध) ॥

॥ अथ प्रथमोऽध्यायः ॥

(भगवान के द्वारा पृथ्वी को आश्वासन, वसुदेव देवकी विवाह और कंस के द्वारा देवकी के छः पुत्रों की हत्या)

(मंगलाचरण)

छप्पय - जय जय श्री गोपाल, जयति वृषभांन दुलारी॥
जयति जयति मम जु गुरु, कृपाल सरन सुषकारी॥
जयति जयति हरि भक्त, सकल आनंद सरूपं॥
जयति जयति श्री व्यास, जयति सुकदेव अनूपं॥
इनहीं कृपा प्रभाय, सौं बृजदासी ह्वै मुदित मन॥
आरंभ जु दसम स्कंध, कौ कीनौं चाहत हौं सुदिन॥ १ ॥

॥ अथाख्यान ॥

॥ राजोवाच ॥

दोहा - श्री सुक सौं नृप परीछत, बोलै ऐसै बैंन॥
हे मुनि रवि ससि बंस दुहुँ, तुम्ह मुहि कहै सुबैंन॥ २ ॥
अरु दौनूं ही बंस मैं, जितनै भयै नृपाल॥
तिन्हहूं कैं बरनन करै, आछै चरित बिसाल॥ ३ ॥
राजा जदु धरमातमां, तिन चरितहूँ जु गाय॥
हे मुनि तुम्ह बरनन कियौ, आछी भांत सुनाय॥ ४ ॥
प्रगट भयै श्रीकृस्न जू, जदु राजा कैं बंस॥
जिन्हकैं कहौ चरितहुँ अब, जें बिच जक्त प्रसंस॥ ५ ॥
प्रगट हौय जदुकुल बिषै, कहा चरितहुँ सुकीन॥
तैं आछैं बिसतार सौं, बरनन करौं प्रवीन॥ ६ ॥
मुक्ति भयै है जन तैउ, गावत श्रीकृस्न चरित्र॥
बैहिं चरित गायै सुनैं, प्रानी हौत पबित्र॥ ७ ॥
है अति दीरघ रोग सम, निश्चै इह संसार॥
ताकौं औषदि जानियै, श्रीकृस्न चरित सुढार॥ ८ ॥
अरु काननहूं कौ लगत, आछै सुनती बार॥
तातैं प्रभू चरितनहिं जु, कौ न सुनैं निरधार॥ ९ ॥

अैक जीव घाती नृदय, चहै बुरौ जो आप॥
सौ न सुनैं या जगत बिच, श्रीकृस्न चरित सुजाप॥ १०॥
कौरव सैंन समुद्र मछ, भीषम सै जा मांहिं॥
ताहि मनष किहुँ भांति सौ, कौउ तरि सकै नांहिं॥ ११॥
ता समुद्र कौ तरि गयै, मो दादै सुषपाय॥
तहँ जिहाज भगवांन ही, उन्हकौं भयै सहाय॥ १२॥
उन्हहीं प्रभु की कृपा सौं, मो दादै लहिं चैंन॥
बछरा कैं षुर सम तिरै, बह समुद्र सी सैंन॥ १३॥
कुर पांडव संतान मैं, हौं इक बच्यौ निदांन॥
हुतौ मात कै गर्भ मैं, नहिं कछु समझि सयांन॥ १४॥
ताहँ मोहि जारत भयौ, अश्वथामा कौं बांन॥
चक्र सुदरसन सौ तांह, कियै रछा भगवांन॥ १५॥
वे प्रभु काल सरूप है, करत जे षन संघार॥
है बेइ दाता मुक्ति कैं, निज दासनि निरधार॥ १६॥
जिन्हकैं कहौ चरित्र जु मुनि, आछै करि बिसतार॥
मोहि सुनन ईछा बडी, बेइ चरित सुष सार॥ १७॥
अरु तुम्ह कह्यौ कि देबकी, रोहिनिही गरभाय॥
प्रगट भयै बलदेव जू, दुहुनि पुत्र सुषदाय॥ १८॥
सौ वे अैकहिं जनम मैं, हुव कइसै द्वै मांत॥
इही बात समझाय कैं, कहियै आछी भांत॥ १९॥
गेह पिता कैं तै गयै, क्यौं ब्रज मैं भगवांन॥
ज्याति सहित किहँ ठां बसै, सौ सब कहौ सुजांन॥ २०॥
बसि ब्रज मैं मधुपुरी मैं, कहा चरित प्रभु कीन॥
अरु भ्राता निज मात कौं, कंस हत्यौ किहुँ लीन॥ २१॥
हुतौ मारनौ जोग्य नहिं, क्यूं अजोग्य कृत कीन॥
अरु अस्त्री कितनी हुती, प्रभु कैं कहौ प्रवीन॥ २२॥
मनष देह धरि श्री कृस्न जु, जुक्त जादवनि आप॥
कितक दिननि द्वारावती, कीनौ बास सथाप॥ २३॥
भूष प्यास मो कौं बिथां, कबहुँ करि सकैं नांहिं॥
अमृत सम हरि की कथा, निकसत तुम्ह मुष मांहिं॥ २४॥
ताही कौं मैं करत हौं, श्रवणनि मग द्वै पांन॥
जांसौ मैं जीवत भलै, कबहुँ चाह नहिं आंन॥ २५॥

॥ सूत उवाच॥

सूत कहत है रिषिन सौं, अैं सुनि नृप कैं बैंन॥
करि सराह सुकदेव जू, कहै बचन सुषदैंन॥ २६॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

हे नृप आछी बुधि तोहि, धन्य धन्य अबनीस॥
बडी प्रीति हरि कथा मैं, तेरी बिसबाबीस॥ २७॥
दैंनहार आनंद अति, है प्रभु कथा चरित्र॥
कहै सुनै श्रद्धा सु तिहूँ, निश्चै हौय पबित्र॥ २८॥
ज्यौं पबित्र प्रांनिनहिं करत, गंगाजल निरधार॥
जइसैं हीं हरि की कथा, करत पवित्र सुढार॥ २९॥
अैंक समैं बहु असुर हुव, कैऊ सहस नृपाल॥
तासौं प्रिथवी कौ भयौ, अघ कौंभार बिसाल॥ ३०॥
तब प्रिथबी गौ रूप धरि, बिधि कैं सरनैं जाय॥
कहत भई दुष आपनौं, आछै करि समझाय॥ ३१॥
ब्रह्मा जू तब सुरनि जुत, लै प्रिथवी कौ लार॥
छीरसिंधु कैं तटि गयै, जांह पौढै करतार॥ ३२॥
सहस्त्र सीरषा मंत्र सौं, अस्तुति प्रभू की कीन॥
तबै हिदैही मैं बचन, बिधि सौं प्रभु कहि दीन॥ ३३॥
बिधि तब अमरनि सौं कह्यौ, सुनौ प्रभू कैं बैंन॥
जांनि गये हैं इह लही, भुव कौं प्रभू अचैंन॥ ३४॥
असुरनि मारन प्रथी मैं, प्रगटैगें भगवांन॥
तातें तुम्ह जदुकुल बिषै, प्रगटै पहल निदांन॥ ३५॥
ह्वै हैं ग्रह बसुदेव कैं, प्रगट प्रभू साछात॥
और भयै अवतार तैं, अंस मात्र गनि जात॥ ३६॥
प्रसंन करन भगवांन कौ, देवबधू हूँ जाय॥
प्रगट हौउ प्रथवी बिषैं, आछै औसर पाय॥ ३७॥
प्रभु सरूप फनमाल जू, प्रसंन करन भगवांन॥
पहलैं ही ह्वै हैं प्रगट, अग्रज भ्रात निदांन॥ ३८॥
प्रभु की माया जोरवर, जासौं मुहित संसार॥
सोहूँ प्रगटैंगी पहल, आग्यां भई सुढार॥ ३९॥
श्री सुक कहत कि सुरन सौं, अैसैं कहि मुष च्यार॥
समाधान करि प्रथी कौं, निश्चै भलैं प्रकार॥ ४०॥
गवन कियौ निज लौक कौं, ब्रह्मा ताही बार॥
श्रीकृस्न जनम कौं सुनौं, कहत प्रसंग सुढार॥ ४१॥
सूरसैंन नृप इक समैं, बसि मधुपुरी सुभाय॥
मथुरा अरु सुरसैंन दुहुँ, देसनि राज रचाय॥ ४२॥
रजधानी जादवन की, भई मधुपूरी ठौर॥
जा मथुरा मैं नित्यही, प्रभू बसत सुभ तौर॥ ४३॥

ता मथुरा मैं देवकी, सौं सुष ब्याह रचाय॥
रथ चढिकैं बसुदेव जू, निज ग्रह चलै सुभाय॥ ४४॥
उग्रसैंन कौं बडौ सुत, कंस कुँवर बहि वार॥
करन देवकी कौं प्रसंन, अति जताय निज प्यार॥ ४५॥
भयौ बहनि कौं सारथी, पहुचावनि चलि लार॥
ता पाछै रतननि जटित, सिंदन चलै अपार॥ ४६॥
सुकंचन साज लगै सुभग, गज मद मद सत च्यार॥
तीन जोट मंडित भलैं, अस्व दस पंच हजार॥ ४७॥
अष्टादस सतरथहिं सुभग, द्वै सत सषी सुढार॥
भूषन बस्त्र अनंत दिव्य, दिय दहेज अनपार॥ ४८॥
दियौ दैवकी कौ चलत, पितु देवक अवनीस॥
बजि दुदुंभि बाजित्र बहु, भली समैं वहि दीस॥ ४९॥
हौत भई अैसैं प्रगट, नभबांनी वहिं बार॥
रे रे कंस अग्यांन तुहि, नहिं कछु समझि बिचार॥ ५०॥
जाकौ तू हुव सारथी, पुत्रहुँ आठमौ जास॥
प्रगट हौय निश्चै अबै, तेरौ करिहै नास॥ ५१॥
इह सुनि पापी कंस जौ, मध्य भौज कुल नीच॥
मारन लाग्यौ बहन कौं, काढि षडग मग बीच॥ ५२॥
निर्लज निर्दय कंस कृत, करन बुरै अघभैव॥
समाधान ताकौं करत, बोलै श्री बसुदैव॥ ५३॥
अहो कंस तौ गुन बड्डे, कुल जस बढवन हार॥
सूरवीर तौ करत है, प्रगट सराह सुढार॥ ५४॥
ब्याह समैं निज बहनि कौं, क्यौ मारत बिनु काज॥
हौनहार सौं ह्वै रहै, ताकौ कबु न इलाज॥ ५५॥
या प्रांनी कैं देह संग, मृतु उपजत निरधार॥
आजि हौउ कैं सौ बरस, पाबै काहू बार॥ ५६॥
और देह मैं जीव इह, पैंठत जबै सरीन॥
तब इह लैही तजत है, इह तन कर्माधीन॥ ५७॥
ज्यौं नर पहलौं पांव निज, भुव पैं धरत उठाय॥
तबै पांछलैं पांब कौं, धरत फेरि ठहराय॥ ५८॥
धरि ज्यौं त्रनजल नांम कौं, कीरा पहल बिचारि॥
अगलौ त्रनमुष सौं पकरि, दैत पाछिलौ डारि॥ ५९॥
रु ज्यौं नृप कौउ नृप लषै, दिन मैं जागत वार॥
कैं इंद्रादिक सुरनि की, सुनै कथा बिसतार॥ ६०॥

तामैं चित लगि जाय तब, लषै सुषन कैं मांहिं॥
नृपति कहै म्हैं कब भयौ, इंद्र स्वर्ग कैं ठांहिं॥ ६१॥
पुनि जागै जब जानि ही, जइसौं आपु जु हौय॥
सुपनैं की संपति सबै, सांची लषै न कौय॥ ६२॥
यौं सुपनैहूं मैं धरत, इह प्रांनी तन और॥
धरै जागतैं ध्यांन जिहिं, ह्वै तिहँ रूप सुतौर॥ ६३॥
अरु मरनैं कैं समैं मैं, मनुष धरै जिहँ ध्यांन॥
ताही ठौर सुहौत है, याकौं जनम निदांन॥ ६४॥
रवि ससि कौ प्रतिबिंब ज्यौं, परत नीर मैं जाय॥
तब जल हलनैं मैं हलत, बहि प्रतिबिंब लषाय॥ ६५॥
तइसैं ही या देह कैं, सुष दुष सकल अपार॥
मांनि लैंत हैं आप मैं, इहै जीव निरधार॥ ६६॥
अरु इह जाही जोन मैं, उपजत बीच अग्यांन॥
ताही मैं सब भांति सौं, सुष जु लैंत हैं मांन॥ ६७॥
तातैं जौ अपनौं भलौ, चाहै भलैं प्रकार॥
सौ काहू कौं नहिं करैं, द्रोह किहूं अनुसार॥ ६८॥
द्रोह कियैं तैं इह मनुष, भयकौं प्रापति हौय॥
वृथा गमावैं जनम निज, काज न संवरै कौय॥ ६९॥
तातैं इह तेरी बहनि, बालक है सुकुमार॥
तू है दीन दयाल मति, याकौं करैं संघार॥ ७०॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि बसुदेव यौं, बऊत कियौ उपदेस॥
पै असुरननि कैं मित्र उर, हुव न दया कौ लेस॥ ७१॥
देषि कंस कौ हठ अधिक, किय बसुदेव बिचार॥
का करियै कइसैं बचै, इहि अस्त्री या बार॥ ७२॥
जो कौ प्रांनी कौ हतत, हौय किहूं अनुभाय॥
तौ बुधि जहँ लौं चलत तहँ, तांई लैनु बचाय॥ ७३॥
जो न बचै तो दोषहूं, वाकौ लागत नांहिं॥
अरु बिन बचवन मैं लगत, है दूषन अधिकांहिं॥ ७४॥
तातैं अपनैं पुत्रहिं म्हैं, कहिकैं कंसहिं दैंन॥
प्रांन देवकी कैं अबै, लैउ बचाय सुषैंन॥ ७५॥
मो सुत ह्वै हैं जांह लौं, जो नहिं मरि है कंस॥
तौ तब तइसौं हौयगौं, जइसौं करिहैं संस॥ ७६॥
अथवा म्हैरै जु पुत्रहीं, करिहैं कंस संहार॥
किहुँ कौं जांनि न परत है, ईस्वर गति निरधार॥ ७७॥

तातैं अब या देबकी, कौ न हौय संघार॥
अस इलाज करिकैं कछू, सही किहूं अनुसार॥ ७८ ॥
अगनि लगै ज्यौं नगर मैं, तब काहू अनुभाय॥
ग्रेह निकट कौ जात रहि, दूरि घर सुजरि जाय॥ ७९ ॥
अैसैं इह प्रांनी कबहुं, मृत्युहुं तैं बचि जाय॥
कबहूं करमाधीन ह्वै, मार्यौ जात कुदाय॥ ८० ॥
यौ बिचार बसुदेव जू, करि निज चित अधिकाय॥
बऊत अस्तुति करि कंस की, बौलत भयै सुभाय॥ ८१ ॥

॥ बसुदेव उवाच॥

अहो कंस नभ बांनि तौ, अैसौ कह्यौ सुनाय॥
पुत्र देबकी कौ जू तुहि, अष्टमहिं हतिहैं आय॥ ८२ ॥
तातैं जब या देवकी, कैं ह्वै हैं संतानि॥
तब म्हैं तौकौं दैहुगौं, लाय बचन मो मांनि॥ ८३ ॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि बसुदेव कौं, इहै बचन सुनि कंस॥
छोडि देवकी कौं दई, मारत रह्यौ नृसंस॥ ८४ ॥
तबै अस्तुति करि कंस की, घरि आयै बसुदेव॥
तिया बचाई आपणी, बडी बुधि कैं जुभेव॥ ८५ ॥
अंतर इक इक बरष कैं, आठौं पुत्र प्रगटाय॥
अरु प्रगटी इक कन्यका, दैबकीहिं गरभाय॥ ८६ ॥
पहलौ कीरति नांम सुत, हुव बसुदेव निवास॥
तब बांकौ बसुदेव लैं, आयै कंसहि पास॥ ८७ ॥
सत्य बचन अपनौं कियौ, धरमधार बसुदेव॥
कबहुँ कठिन है नांहिंनैं, साधु कौ किहुँ भेव॥ ८८ ॥
तातैं पुत्रहूँ दे चुकै, लालच कीनौं नांहिं॥
कबहुँ न ग्यांनी जनन कौं, चहियत या जग मांहिं॥ ८९ ॥
जिन्ह अपनौं मन बसि कियौ, निश्चै ग्यांन प्रभाय॥
तै सब वस्तुनि त्याग करि, सुष दुष दैत मिटाय॥ ९० ॥
सत्य दैषि बसुदैव कौं, कंस प्रसंन्न चित्त हौय॥
अैसी बिधि बौलत भयौ, दया हृदै निज गौय॥ ९१ ॥
इहि बालक लै जाहु घर, यांते मो डर नांहिं॥
अष्टम बालक कौ सही, भय म्हैरै मन मांहिं॥ ९२ ॥
लै आयै बसुदैव जू, पुत्रहिं जु अपनैं गेह॥
पैं इतबार न कंस कौं, मान्यौ न निह संदेह॥ ९३ ॥

जान्यौ कबहूँ फेरि जो, बालक इहै मंगाय ॥
मारै तौ बाकौ कछू, अचिरंज नांहिं लषाय ॥ ९४ ॥
नारद जू नैं वा समैं, अैसौ कियौ बिचार ॥
बऊत अघ करै कंस तौ, बेग मरै निरधार ॥ ९५ ॥
तातैं नारद कंस पै, जाय कहै यौं बैंन ॥
अहो कंस तू तौ कबहुँ, बात जु समझत हैंन ॥ ९६ ॥
नंद जसौदा दैवकी, गोप ग्वार बसुदैव ॥
बंधु जाति इनकैं सबै, कहियतु सबै सभैव ॥ ९७ ॥
अैं प्रगटै हैं देवतां, तुम्हकौं मारन काज ॥
मैंटन भुव कौं भार सब, हतिवै असुर समाज ॥ ९८ ॥
इहि कहि नारद जू गयै, कीनौं कंस बिचार ॥
अैं जादव सब दैवतां, उपजै हैं निरधार ॥ ९९ ॥
बिस्नु दैबकी गर्भ तैं, ह्वै हैं मारन मोहि ॥
ताकौ अब इलाज कहा, कीजै भेद अरोहि ॥ १०० ॥
इह बिचार करि आप मन, नीच कंस बहि बार ॥
बहन बहनौइ कैं पगनि, बेरी जरी कुढार ॥ १०१ ॥
सबहूं पुत्र बसुदेव कैं, हतै अैंक ही द्यौंस ॥
लोभी नीचन कैं कछू, नांहिं धरम कौ रौंस ॥ १०२ ॥
मात पिता भाई सषा, मित्र सुहृद हित धारि ॥
इन्हहूं कौं मारत कबहुँ, नीच न लायत बारि ॥ १०३ ॥
अरु अैसैं जानत रह्यौ, कंस आप चित्त ठांहिं ॥
कालनैम हौ असुर मैं, अगलै जनमहिं मांहिं ॥ १०४ ॥
मोहि हत्यौ है बिस्नु नैं, करि अमरनि की भीर ॥
तातैं सब जादवनि सौं, किय बिरोध बिन धीर ॥ १०५ ॥
हुतौ सकल जादवन कौं, उग्रसैंन सिरदार ॥
सौ अपनौं पितु कैदि किय, आप राज उहिं बार ॥ १०६ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते प्रथमोऽध्यायंः ॥ १ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ द्वितीयोऽध्याय: ॥

(भगवान का गर्भ-प्रवेश और देवताओं द्वारा गर्भ स्तुति)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - श्री सुक कहत कि प्रलंबक, त्रिणावर्त चाणूर॥
बृषभासुर मुष्टिक द्विविद, अघासुरहिं बलसूर॥ १॥
कैसी धैनुक पूतना, और असुर अवनीस॥
भौमासुर बानादि लौं, मिलै सुर बिस्बाबीस॥ २॥
सबहीं जदुबंसीन कौ, नास करत भौ कंस॥
भयै सहायक कंस कौ, जरासंधि सप्रसंस॥ ३॥
कुरु बिदेह कैकय विदर्भ, साल्व निषथ पांचाल॥
इन्ह दैसनि मैं भजि गयै, जादव डरि उहिं काल॥ ४॥
अरु कोउ जादव कंस कैं, चाकर रहै निदांन॥
कंस दैबकी कै हतै, छह बालक बिन ग्यांन॥ ५॥
गर्भ देवकी कैं बसै, सैस सातवीं बार॥
जे राषत है सीस पैं, सकल प्रिथी कौं भार॥ ६॥
तासौं हरषित दैवकी, हौत भई चित्त ठांहिं॥
अरु भय अति जू कंस कौ, हुव सौकहु अधिकांहिं॥ ७॥
किय बिचार भगवांन नैं, गर्भ देवकी मध्य॥
पुत्र सात मौ ताहि दुष, दैहैं कंस सप्रसध्य॥ ८॥
देवी कौं आग्यां दई, तू जा गौकुल मांहिं॥
मंडित गौ गौपीन सौ, बह गौकुल सुभ ठांहिं॥ ९॥
तहं अस्त्री इक बसुदैव कि, बसत रौहिनी नांम॥
पाय अधिक भय कंस कौ, रहत नंद कै धांम॥ १०॥
गर्भ दैवकी मध्य मो, तैज रूप फनमाल॥
जिह्वै रौहिनी गर्भ मैं, तू राषउ सुभकाल॥ ११॥
अबै देबकी गर्भ मैं, हौं अैहौ निरधार॥
नंद महर जू कैं प्रगट, तू ह्वै हैं या बार॥ १२॥
धूप दीप बलिदान करि, सबै पूजि है तोहि॥
तूं सबहिंन की कामना, करिहै पूर्न विमोहि॥ १३॥
तो मंदिर रचि हैं बऊत, मनष अनैंकनि ठौर॥
अरु ह्वै हैं तेरै इतै, नांम कहन कैं तौर॥ १४॥
दुर्गा विजया बैस्नवी, भद्रकाली अैं च्यार॥
कुमदा कृस्ना चंडिका, सतनांम अनुसार॥ १५॥
माया कन्यका माधवी, नारायनी इसांनि॥
और सारिदा अंबिका, इतै नांम सुप्रमांनि॥ १६॥

गर्भ दैवकी कैं जु तैं, बालक बहै निकारि ॥
गर्भ रौहिनी मध्य लैं, धरिहै ता अनुसारि ॥ १७ ॥
संकर्षन ह्वै है सही, वा बालक कौ नांम ॥
लोकन की करिहै रछा, तांतैं कहि है राम ॥ १८ ॥
ह्वै हैं अति बलवंत वै, तातै इक बलिनांम ॥
इहै भवानी कौ दई, आग्यां प्रभु जग स्वांम ॥ १९ ॥
बइसै ही कारिज सबै, माया आछै कीन ॥
गर्भ देवकी कौ उदर, रौहिनीहिं धरि दीन ॥ २० ॥
तब नगरवासी न रहै, जानी जु निश्चै बात ॥
गर्भ देवकी कैं हुतौ, हौयगयौ सौ पात ॥ २१ ॥
भक्तननि दाता अभय कै, वै पहलै भगवांन ॥
आयै श्री बसुदेव कैं, मन कैं बिषैं प्रमांन ॥ २२ ॥
तबैं तैज बसुदैव कौ, रवि सम भयौ सुढार ॥
काहू सौं जात न सह्यौ, देषै तै बहिं बार ॥ २३ ॥
ता पाछै बसुदैव जू, प्रभु कौ बहै सरूप ॥
गर्भ देवकी मध्य लैं, राषत भयै अनूप ॥ २४ ॥
गर्भ देवकी जू बहै, राष्यौ या अनुसार ॥
ज्यौं राषत है चंद कौ, प्राची दिसा सुढार ॥ २५ ॥
इहै सकल जग बसत है, जास प्रभू कैं मांहिं ॥
सोइ बसै प्रभु आयकैं, गर्भ दैवकी ठांहिं ॥ २६ ॥
सौभ दैवकी की किहूं, लषी वा समैं नांहिं ॥
हुती छिपी बैठी सही, दुष्ट कंस ग्रह ठांहिं ॥ २७ ॥
जइसै काहू सौं ढप्यौ, दीपक सिषा प्रकास ॥
छिपी देवकी ज्यौं हुती, तइसै कंस निवास ॥ २८ ॥
अरु ज्यौ किहुं मैं ह्वै बिद्या, नहिं सिषवै पुनि कांहिं ॥
तौ वह विद्या न कौ लषै, जाहिर हौत जु नांहिं ॥ २९ ॥
छिपी दैवकी जू भई, अैसै सौभामांन ॥
जोति देवकी सौ भई, अति प्रकास बिच थांन ॥ ३० ॥
कंस दैवकी कै सथल, आयौ ताही बार ॥
दैषि दैवकी की वहै, सौभा सुभग अपार ॥ ३१ ॥
अैसै कियौ बिचार चित, कंस अधिक भय पाय ॥
मो कौ मारनहार हरि, आयै या गरभाय ॥ ३२ ॥
तासौं याकी सोभ अब, अैसी बढी रसाल ॥
आगै अैसी सोभ नहिं, हुती प्रगट किहुँ काल ॥ ३३ ॥

प्रगट हौहिंगैं हरि जबै, सुरनि संवारनि काज॥
मोकौ निश्चै मारिहैं, करि कैं बऊत इलाज॥ ३४॥
अरु जौ अबही दैवकी, कौ म्हैं करौं संघार॥
तौ लछमी जस आयु मो, जात रहै निरधार॥ ३५॥
अरु है म्हैरी बहनि इहि, गर्भवति पुनि आंहिं॥
अबही याकौ मारिबौ, निश्चै जोग जु नांहिं॥ ३६॥
अति निर्दय कृत करै सौ, जियतहिं मरै समांन॥
गारी दै सब लोक मरि, पावै नरक सथांन॥ ३७॥
इहि बिचार करि देवकी, कौ न नास किय कंस॥
कब प्रगटै भगवांन इह, रह्यौ बिचारत संस॥ ३८॥
बैठत सौवत चलत मैं, रह्यौ प्रभू कौं ध्यांन॥
तासौं या सब जगत मैं, दीसि परै भगवांन॥ ३९॥
नारद मुनि अरु सुर सबै, लै बिधि सिव निज संग॥
ग्रेह देवकी कैं भलैं, आयै सहित उमंग॥ ४०॥
ब्रह्मादिक जू सुर सबै, अस्तुति करत भय आय॥
हे करता भगवांन तुम्ह, सत्य रूप सुषदाय॥ ४१॥
औरु बिचार्यौ रावरौ, सत्य हौत निरधार॥
प्रांनीहूं पावत तुम्है, सत्यभेद अनुसार॥ ४२॥
तीन काल कैं विषैहूं, सत्य आप भगवांन॥
पंचभूत कैं मध्यहूं, तुम्हहीं बसत निदांन॥ ४३॥
तुम्ह जु पंचमहाभूत कैं, कारन हौ बिष्यात॥
पंचभूत कौ प्रलय ह्वै, तब तुम्हहीं रहि जात॥ ४४॥
तुम्हहीं बेद रु सत्य कैं, हौ प्रभु चलवनहार॥
हम्ह जु सरन है रावरै, मन क्रम वचन प्रकार॥ ४५॥
बृछि इहै संसार है, प्रकृति थांवला जास॥
अरु माया कैं तीन गुण, या बृछि की जड़ भास॥ ४६॥
सुष दुष यामैं फल लगै, छाल धात है सात॥
धर्म काम मोछ अरु अरथ, जामैं रस बिष्यात॥ ४७॥
है प्रकार या ग्यांन कैं, इंद्री पांच सुढार॥
मन बुधि अहं पंचभूत मह, याकी आठ जु डार॥ ४८॥
रूप जु याकौ कोस छह, पात प्रगट दस प्रांन॥
अरु नवद्वार सुछिद्र हैं, रचनहार भगवांन॥ ४९॥
जीव आत्मा और परम, आतमा पंछी दौय॥
बैठे हैं याहि बृछ पर, अति नचींतता भौय॥ ५०॥

हे प्रभु तुम्हही रूप धरि, ब्रह्मा बिस्नु महेस॥
उतपति पालन प्रलय जग, करत आप विस्वेस॥ ५१॥
तुम्हही यै तिऊ देवता, मूरष भेद न पाय॥
तुम्ह धारत अवतार जग, करन कल्यान सभाय॥ ५२॥
आप सत्वगुन जुक्त हौ, साधन कौ सुषदाय॥
दुष्ट न मारन धरत हौ, तुम्ह अवतार सदाय॥ ५३॥
तुम्हहिं मैं लावत चित्त जे, तरत सिंधु संसार॥
चरन कमल ही रावरे, है जिहाज निरधार॥ ५४॥
दयावंत जे साध जन, तुम्ह पद आश्रय पाय॥
इहि सागर संसार तरि, गयै भलै अनुसाय॥ ५५॥
अरु औरन कै तरन कौं, तुम्ह पद भजन सुढार॥
गयै बताय जु क्रिपा करि, जीवन पर निरधार॥ ५६॥
भजन रावरौ नहिं करत, जे कौ जीव कुपात॥
तिन्हकी बुधि नहिं हौत है, निरमल काहू भात॥ ५७॥
आपहि मानत मुक्ति जे, करत जु बउत कलैस॥
अरु उपाय बहु करत तउ, तुम्हहिं न लहत बिस्वैस॥ ५८॥
भक्त तुम्हारन की करत, तुम्हहिं रछा भगवांन॥
बे बिघ्नन सिर पाव दै, तुम्ह कौ मिलत सुजांन॥ ५९॥
तुम्ह प्रांनिन कल्यांन कौ, धरत रूप भगवंत॥
बेद क्रिया तप जोग करि, वे तुम्ह पद पूजंत॥ ६०॥
हे प्रभु तुम्ह जो रूप नहिं, धारौ या जग माहिं॥
भक्ति रावरी तौ कौउ, जीव करि सकैं नांहिं॥ ६१॥
बिना भक्ति ब्रह्म रूप कौ, ग्यांनहुँ प्रगटै नांहिं॥
अरु अग्यांन मिटै नांहिं, प्रांनिन कौ जग ठांहिं॥ ६२॥
ब्रह्म रूप जू रावरौ, सबनि प्रकासक स्वामि॥
जनम करम करि गुन अनत, तुम्हरै रूप रु नांमि॥ ६३॥
तिनकौ मन बच करि कोउ, कहन समर्थ न पाय॥
भक्त तुम्हारै ही लहत, तुम्ह दरसन सुषदाय॥ ६४॥
नांम रूप जो रावरै, कहै सुनै धरि ध्यांन॥
अरु सुधि करै सौं नाहिंन, धरै जनम फिरि आंन॥ ६५॥
प्रगट भयै हौ आप अब, तासौ अब भुव भार॥
दूरि हौयगौं हे प्रभू, पूरन ब्रह्म करतार॥ ६६॥
चरन तुम्हारै सौ अबै, ह्वै है प्रिथी पबित्र॥
स्वर्ग लौकहूं की रछा, करिहौं दासनि मित्र॥ ६७॥

उतपति पालन प्रलै जग, तुम्ह आग्या अनुसार॥
प्रकृति रावरी करत है, हे स्वामी करतार॥ ६८॥
जग मैं लीला करन कौं, तुम्ह धार्यौ अवतार॥
सौ लीला लषि हौहिंगैं, दास निहाल अपार॥ ६९॥
मच्छ कच्छ हयग्रीव प्रिथु, रघुपति नरहर हंस॥
अैसै बहु अवतार तुम्ह, धरिकैं प्रभू प्रसंस॥ ७०॥
त्रिभुवन कौ पालन करत, हे करता भगवांन॥
बेदहुँ जिन्ह कौं करत है, नेति नेति बाष्यांन॥ ७१॥
अब तुम्ह टारन भार भुव, धार्यौ है अवतार॥
नमसकार तुम्ह कौं करत, प्रभू हम्ह बारंबार॥ ७२॥
अैसै प्रभु की अस्तुति करि, सुरन सहित मुष च्यार॥
फेरि दैवकी सौ कहै, अैसै बचन सुढार॥ ७३॥
हे माता तौ गरभ मैं, प्रगट भयै भगवांन॥
अबै कंस सुं मतै डरौ, धीरज धरौ निदांन॥ ७४॥
तेरौ सुत जादवन कौं, ह्वै हैं पालन हार॥
सुक कहत यौं भगवांन कि, अस्तुति करि मुष च्यार॥ ७५॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते द्वितीयोऽध्यायः ॥ २॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

(भगवान् श्रीकृष्ण का प्राकट्य)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि सब गुननि जुत, सुंदर समै पवित्र॥
ग्रहतारा महुरत सुभग, सुभ रौहिनी नछित्र॥ १॥
दिसा सबै निरमल भई, तारा निकसि अकास॥
ग्रह ग्रह मैं बिच प्रिथी कैं, मंगल भयौ प्रकास॥ २॥
निरमल जल हुव नदिन कैं, प्रफुलित कमल सुढार॥
तरुन लगैं फल फूल बहु, भ्रमर करत गुंजार॥ ३॥
साधन कैं मन प्रसंन हुव, मंद सुगंधित पौन॥
बुझै अगनि बरि बरि उठै, अगनि कुंड बिच हौन॥ ४॥
अमरनि कैं दुंदुभि बजै, हुवै आनंद अपार॥
मंद मंद गरजन लग्यौ, मेघ समुद्र सुढार॥ ५॥

किन्नर अरु गंधर्ब मिलि, कीनौं मंगल गांन॥
विद्याधरी अरु अपछरा, निरतत महा सुजांन॥ ६॥
सिद्ध चारन लागे करन, प्रभु की असतुति सुढार॥
मुनि अरु अमरनि फूल की, बरिषा किय बहिं बार॥ ७॥
अर्धरात्रि कैं समैं मैं, पूर्ब दिसा की और॥
प्रगट हौत भौ चंद्रमा, करि प्रकास सुभ तौर॥ ८॥
प्रभू देवकी गरभ तैं, प्रगटै बाही बार॥
उत ससि प्रगट्यौ बीच नभ, इत ब्रजचंद मुरार॥ ९॥
नैत्र कंवल दल सै सुभग, स्याम रंग भुज च्यारि॥
संष चक्र नीरज गदा, आयुध लियै सुढारि॥ १०॥
कौस्तुभ मनि श्री चिह्न उर, पीतांबर अभिरांम॥
जथा जोग्य भूषन बनै, अलक सचिक्कन स्यांम॥ ११॥
अदभुत मनि वैदूर्य अरु, कुंडल मुकट रसाल॥
भौ प्रकास प्रभु कांति कौ, सकल दिसांनि बिसाल॥ १२॥
अैसौ सुंदर रूप लषि, प्रभू कौ श्री बसुदेव॥
आनंदित अति ही भयै, मिट्यौ सकल दुषभेव॥ १३॥
श्रीकृस्नं कुँवर सै पुत्र लषि, प्रगटै अपनैं धाम॥
मुष प्रफुलित बसुदैव कौं, भौ ह्वै सुष अभिरांम॥ १४॥
भयौ जांनि निज गेह मैं, श्रीकृस्नं जू अवतार॥
करत भयै सु संकल्प गौ, देबैहुँ दस हजार॥ १५॥
उमड्यौ प्रैमानंद कौं, सुष समुद्र परिबाह॥
किय सनांन बसुदैव जू, तामैं सहित उमाह॥ १६॥
प्रभू जांनि बसुदैव जू, करि. प्रणम बारंबार॥
करत भयै आछै अस्तुति, महाप्रीत अनुसार॥ १७॥

॥ वसुदेव उवाच॥

हे प्रभु म्हैं जांनत तुम्हैं, परै प्रकृति तैं आप॥
केवल अनुभव रूप अरु, आनंद रूप सजाप॥ १८॥
सबहिंन की बुधि कैं सही, तुम्ह साछी भगवांन॥
निज माया सौं त्रिगुन करि, रच्यौ जु जुगत प्रमांन॥ १९॥
तामैं तुम्ह पैठै नांहिं, पैठै परत जु दीस॥
करत बिराटहिं प्रगटवै, जइसैं तत्व चौबीस॥ २०॥
वै तत्व रूप बिराट मैं, उपजै सै दरसांत॥
पैं वै रूप बिराट मैं, नहिं उपजै किहुँ भांत॥ २१॥
ज्यौंही तुम्ह या जगत मैं, पैठैं परत लषाय॥
अरु पैठैं हौ नांहिं तुम्ह, पहलै रहै सदाय॥ २२॥

अरु करता अषिलेस प्रभु, हौ तुम्ह सबहीं ठांम॥
पै पांचौ इंद्री करत, ग्रहन तुम्हारौ सांम॥ २३॥
जो कौउ देह प्रपंच कौ, तुम्ह तैं जुदौ निदांन॥
करि मांनत है सत्य तैं, मूरष है अग्यांन॥ २४॥
यांकौ तौ वदिहौ सही, झूठौ कहत जताय॥
तांकौ मांनत सत्य तै, अति अग्यांन अधिकाय॥ २५॥
उतपति पालन प्रलै या, जग कौ तुम्ह तैं हौत॥
फैल रह्यौ संसार मैं, तुम्हरी प्रकृति उदौत॥ २६॥
प्रभू तुमारै नांहिं कछु, ईछा गुन रु बिकार॥
तुम्ह आश्रय सौ प्रकृति गुन, सब कछु करत बिस्तार॥ २७॥
तुम्ह उतपति पालन प्रलै, करिबै प्रभू अनूप॥
सत रज तम गुन करि धरत, बिधि सिव बिस्नु सरूप॥ २८॥
अबैं तुम्ह जगरछा करन, प्रग़ट भयै मो गैह॥
असुर नृपन कौं सैंन जुत, भुव पर भार अछैह॥ २९॥
तिन्हकौं तुम्ह संघार करि, हरिहौं भुव कौं भार॥
अरु दैहौं आनंद अति, भक्तननि कौं निरधार॥ ३०॥
दुष्ट कंस सुनि रावरौ, म्हैरै ह्यॉं अवतार॥
छहौं तुम्हारै भ्रात बड, डारै मारि कुढार॥ ३१॥
सौ अब प्रगटै तुम्हहिं सुनि, कंस अधिक अकुलाय॥
सस्त्र उठायैं हीं इहां, आवैगौ दुषदाय॥ ३२॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि निज पुत्रहिं कौं, प्रभु सरूप पहिचांनि॥
अस्तुति करत भई देवकी, महाकंस भयमांनि॥ ३३॥
प्रभु तुम्हारौ रूप है, प्रगट आदि ब्रह्म जौति॥
निर्गुन सत्य समान हौ, तुम्हहिं न इछा उदौति॥ ३४॥
अैसौ रूप जु रावरौ, कहत बेद निरधार॥
सौ तुम्ह म्हैरै ह्यां प्रगट, भंयै बिस्नु करतार॥ ३५॥
आर्बल दौय परार्ध की, बिधि की हौत बितीत॥
तबै नष्ट ह्वै जात हैं, सकल लोकहूं बीत॥ ३६॥
अरु सब तत्व हूँ जात मिलि, माया मैं निरधार॥
जब तुम्हहीं रहि जात हौ, अैक प्रभू करतार॥ ३७॥
तुम्ह माया कैं बंधु हौ, असरन सरन क्रिपाल॥
वर्ष आदि पर्यंत पलहिं, तुम्ह हूँ लीला काल॥ ३८॥
कालसरूपी सर्प सौं, डरपि जीव अधिकांहिं॥
चवदह लौकनि मैं फिरत, पैं डर मि़टत जु नांहिं॥ ३९॥

जबै तुम्हारे चरन कैं, आवत सरन सुढार॥
तब सुष सौं सौवत मनुष, निश्चिंत ह्वै निरधार॥ ४०॥
तुम्ह चरनन तैं कालहूँ, डरपत सदा निदांन॥
म्हैं तुम्ह चरनन कैं सरन, आई हौं भगवांन॥ ४१॥
तुम्हहि भक्तन की त्रास कैं, हरता हौ करतार॥
दुष्ट कंस सौ अब रिछा, कीजै भलैं प्रकार॥ ४२॥
हम्ह जु चर्म दृष्ट मनुष हैं, जांनहुँ प्रभु चित मांहिं॥
ब्रह्म रूप इहे रावरौ, दिष वन जोग्य सुनांहिं॥ ४३॥
मोमैं तुम्ह प्रगटे इहे, कंस सुनै नहिं बात॥
म्हैं वासौं डरपत अधिक, पापी जांनि कुपात॥ ४४॥
संष चक्र नीरज गदा, जुक्त चतुर्भुज रूप॥
अपनौं इहै छिपाइयै, अबै सु परम अनूप॥ ४५॥
प्रलै समैं तुम्ह जक्त कौं, राषत उदरहिं मांहिं॥
सौ तुम्ह आयै हौ प्रभू, म्हैरै गर्भहिं ठांहिं॥ ४६॥
इह कहनैं की बात है, सत्य नांहिं निरधार॥
तुम्ह आवौ किहिं हिर्दै मैं, हे स्वामी करतार॥ ४७॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

इहि सुनि कैं भगवांन फिरि, बोलै बचन सुभाय॥
अहौ देबकी सुनहुँ जौ, भेद जु कहौं जताय॥ ४८॥
पूर्व जनम मैं तुम्ह हुती, प्रस्नि नांम की भांम॥
बसुदेव परजापति हौ, तौ पति सुतपा नांम॥ ४९॥
बिधि आग्यां सौं वा समैं, तुम्ह जु निमत सतांन॥
मन इंद्रिन कौं जीति कैं, तप किय हित भगवांन॥ ५०॥
सीत घाम बरिषां पबन, तुम्ह दुहुँ सहै अनंत॥
पवित्र राषि मन मैंल सब, दूरि करै बहि तंत॥ ५१॥
सूषै पात रु पवन ही, तुम्ह दुहुँ किय आहारु॥
चित्त जीत्यौ मो सैव किय, जुक्त कांमना चारु॥ ५२॥
दिव्य तपस्या तुम्ह करी, अैसैं बरष हजार॥
म्हैं तुम्हरे तप भक्ति सौं, प्रसनं हौय निरधार॥ ५३॥
इही रूप धरि प्रगट म्हैं, तुम्हकौं दरसन दीन॥
अरु कह्यौ कि बर मांगि हौ, जो तुम्ह चहौं प्रबीन॥ ५४॥
तब तुम्ह मांग्यौ बर इहै, मोपै चाह जताय॥
अदभुत सुत तुम्ह सारिषौ, प्रगटै हम्ह ग्रह आय॥ ५५॥
तुम्ह दुहूंन कीनै हुतै, बिषै भोग सुष नांहिं॥
गेह तुम्हारे ता लियै, संतान न प्रगटांहिं॥ ५६॥

तातैहुं मांग्यौ पुत्र ही, माया मौहित हौय॥
मांगी नांहिंन मुक्ति तुम्ह, अपनीं ईछा गौय॥ ५७॥
तुम्ह मनोर्थ पूरन भयौ, म्हैं हुव अंतरध्यांन॥
तुम्ह फिरि सुष संसार कौ, करत भयै जु निदांन॥ ५८॥
अपनैं सैं गुन और मैं, हम्ह जब देषैं नांहिं॥
तातैं म्हैं वा जनम मैं, पुत्र भयौ तुम्हहुँ ठांहिं॥ ५९॥
नांम जू प्रस्नि गर्भा भयौ, जब म्हैरौ निरधार॥
दुतिय जनम मैं तुम्ह भयै, कस्यप अदिति सुढार॥ ६०॥
तब म्हैं वामन रूप सुत, प्रगट भयौ तुम्ह धाम॥
बलि पैं लैंकैं इंद्र कौं, दियै स्वर्ग पुर ठांम॥ ६१॥
अबैं तीसरै जनम मैं, हुव तुम्ह सुत हौं फेरि॥
सत्य बचन अपनौं कियौ, भक्ति तुम्हारी हेरि॥ ६२॥
पूर्ब जनम सुधि द्यायबै, इह मो ईस्वर रूप॥
तुम्हैं दिषायौ या समैं, जांनहुँ भेद अनूप॥ ६३॥
जे म्हैं धरतौ पहलही, बालक मानुष रूप॥
तौ तुम्हकौं हौ तौ नांहिं, म्हैरौ ग्यांन अनूप॥ ६४॥
जो तुम्ह मुहि सुत जांनि अरु, ब्रह्म रूपहूं मांनि॥
भजि हौं तौ लहिहौं भलैं, उत्तम सुगति सुनिदांनि॥ ६५॥

॥ श्रीसुक उवाच॥

श्री सुक कहत कि यौं प्रभू, कहिकैं बचन रसाल॥
मातपिता कैं दैषितैं, रूप धरत भय बाल॥ ६६॥
अरु इहि कह्यौ कि जो अधिक, तुम्ह डरपत पितु माय॥
तौ मुहि गौकुल नंद कैं, राषहुं अब लैं जाय॥ ६७॥
प्रभु की आग्यां पायकैं, पुत्रहिं लैहिं बसुदैव॥
हुव तिय्यार गौकुल चलन, लषि घर मित्रहिं सभैव॥ ६८॥
जसुधा जू कैं ता समैं, प्रगटी माया जोग॥
द्वारपाल गय सौय सब, बहि मायाहिं प्रयोग॥ ६९॥
दरवाजै जहँ तहँ सबै, जरैं हुतै निरधार॥
आवत ही बसुदेव कैं, तैं षुलि गयै सुढार॥ ७०॥
ज्यौं सूरज कै उदै तैं, अंधकार मिटि जाय॥॥
तइसैं ही ता समैं मैं, षुलै किंमार सुभाय॥ ७१॥
बरसत मैघहिं जांनकैं, सैस नाग वां बार॥
हरि पैं अपनैं फनन सौं, किय छाया जलधार॥ ७२॥
घन बरसन तैं बढि गई, हुती जु जमुन तरंग॥
भंवर परन तैं भयानक, लागत हुती कुवंग॥ ७३॥

तौहू जमुना घटि गई, प्रभुकौं मारग दीन॥
ज्यौं समुद्र श्रीराम कौं, मग दिय ह्वै आधीन॥ ७४॥
गौकुल मैं बसुदेव लषि, सौवत गौपी ग्वाल॥
जसुमति पैं सुत राषि कैं, लै कन्या बहिंकाल॥ ७५॥
गैह आय धरि पलिंग पर, सुता दैवकी पास॥
बइसैं हीं बेरी पहरि, बैठत भयै उदास॥ ७६ ।
जसुधा जू जान्यौ वांह, म्हैरै कछु हुव बाल॥
पैं सुत भयौ कि कन्यका, इहि न लष्यौ बहिंकाल॥ ७७॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुर्थोध्यायः ॥

(कंस के हाथ से छूटकर योगमाया का आकाश में जाकर भविष्य
वाणी करना)

॥ श्री सुक उवाच ॥

चोपाई - सुक कहत कि माया आवतही। दरबजे हुवै बंध जू सबही ॥
सबद सुताकौं सुनि बहिं बारा। जगै कंस कैं सब रषबारा ॥ १ ॥
बै गयै दौरि कंस बैहालहिं। कह्यौ देबकी कैं हुव बालहिं ॥
गिरत परत तब कंस सिताबहिं। पुलै मूंड ह्वै कैं बिनु ताबहिं ॥ २ ॥
प्रबल काल डरसौं अकुलायौ। दौरि दैबकी कैं ग्रह आयौ ॥
दैषि कंस कौं करुना करिकैं। अैसैं कह्यौ दैबकी डरि कैं ॥ ३ ॥
भई भांनजी सु कन्या भाई। जो इहि बडी हौयगी बाई ॥
तौ म्हैं तौ सुतही कौं दैहौं। ह्वै हैं तैरी बधू सचै हौं ॥ ४ ॥
म्हैरै छह सुत अगनि समांना। तैं मारै प्रभु इछा प्रमांना ॥
अब इह सुता भई है यैकहिं। सौ मति मारै धारि बिवेकहिं ॥ ५ ॥
म्हैं हूं दीन बहनि लघु तैरी। कहूं बात सौ मांनहुँ म्हैरी ॥
म्हैरै पुत्र गयै मारैं सबैं। भई अंत मैं इहि कन्या अबै ॥ ६ ॥
सुक कहत कि यौं बचन उचारी। सुता गौद मैं लैं बहिं बारी ॥
कीनौं रुदन देबकी माता। बौली हा का करै बिधाता ॥ ७ ॥
दया कंस चित्त रंच न आई। लियै गौद तैं सुता छिनांई ॥
अपुन काल कौं भीत मिटाई। पकरि भानजी कैं दुहुँ पाई ॥ ८ ॥
पटकत भयौ सिला कैं ऊपरि। छूटि कन्या करतैं बहिं अवसरि ॥

जाय प्राप्त हुव बिच आकासा। कंस करि सक्यौ नांहिंनै नासा॥ ९॥
अष्ट भुजी आयुध करहिंधरै। कंस लषि प्रभू बहनि जू डरै॥
भूषन बस्त्र सुगंध रसाला। दिव्य फूल की पहरैं माला॥ १०॥
धनुष सूल सर फर तरवारा। संष चक्र अरु गदा सुढारा॥
इन्हीं सस्त्रन जुत सोभित भई। महा क्रांति जिहिं नभ बिची छई॥ ११॥
सिध चारन अपछर अरु गंधर्ब। किन्नर नाग जु अस्तुति किय सर्व॥
सुकन्या बह कंस सौं बौली। बात छिपी सुप्रगट करि षौली॥ १२॥
रे रे कंस दुष्ट हतियारै। काज कहा सरिहै मो मारै॥
तेरौ पहलैहुं सत्रु सजौरहिं। प्रगट्यौ है कहुँ या भुव ठौरहिं॥ १३॥
और गरीबन कौं बै काजा। क्यूं मारत सब ब्रिथा इलाजा॥
श्री सुक कहत कि अैसैं बैंना। कहि कंसहिं दैबी जु सुषैंना॥ १४॥
जहँ तहं भलैं मंदिरन मांही। बउत नांम धरि बसी सुठांही॥
कन्या कैं सुनि अैसैं बैनहिं। कंसहिं भौ अचिरज रु अचैनहिं॥ १५॥
दिय बसुदैव दैबकी छौरी। बोल्यौ करिकैं बचन निहौरी॥
सुनौ बहिनि अरु हे बसुदेव जु। म्हैं जु कहत हौं तुम्हकौ भेवजु॥ १६॥
पुत्र तुम्हारैंहु म्हैं बहु मारै। महादुष्ट क्रत किय निरधारै॥
निज पुत्रनि मारै ज्यौं राछिसहिं। त्यौं म्हैं कीनौं इही अपजसहिं॥ १७॥
जाति हितुन सुँ म्हैं किय कुभायहिं। किय गुलाम जोनहिं रिस छायहिं॥
हाय मोहि करुना नहिं आई। म्हैं जीवत ही मर्यौ लषाई॥ १८॥
म्हैं सम दुष्ट ब्रह्म हत्यारौ। जांनत जइहौं नरक मझारौ॥
झूठ मनुष हीं बौलत नांहीं। अमर बचन हीं झूठ लषांही॥ १९॥
भइ हुती यौं बानि आकासहिं। अष्टम सुत तौं करिहैं नासहिं॥
या धौषै मैं तुम्ह सुत मारै। सौ अपराध छमहुँ या बारै॥ २०॥
अब तुम्ह सौच करौ मत तिन्हकौं। अैसौं ही हौ करम जु उहिकौं॥
प्रांनी कौंउ सदा इक ठौरहुँ। रहि न सकत है काहू तौरहुँ॥ २१॥
जानहुँ सबै दइब आधीनां। मनुष सुतंत्र न लषौ प्रबीनां॥
तनहीं उपजत मरत निदांनां। आतमा सदा अैक उनमांना॥ २२॥
ज्यौं माटी कैं घट फुटि जाता। माटी नित अैकसी बिष्याता॥
जैं कौं अैसौं ग्यांन न जांनहिं। तैं तनहीं कौं आत्मा मांनहिं॥ २३॥
तिन्हकौं ही निज सुतादिकन कौं। प्रगट हौत है सौक मरन कौं॥
तातैं म्हैं जो तुम्ह सुत मारैं। तउ मति सौच करौ निरधारैं॥ २४॥
प्रांनी करम करत हैं जइसैं। पुनिफल भौगत आपु जु तइसैं॥
इह प्रांनी अग्यांन प्रतापहिं। जब लौं मांनत अैसौं आपुहिं॥ २५॥
इन मुहि मार्यौ है निरधारा। म्हैं हूं करौं याहिं संघारा॥
पाप रु पुन्य ताही कौं लगै। ग्यांनि कौं पाप पुन्य नहिं ढगै॥ २६॥

छमा दुष्टता मोहि तुम्ह करौ।तुम्ह हौ साधू ग्यांन चितधरौ॥
यौ कहि कंस नम्रता भायहिं।पर्यौ बहनि बहनौई पायहिं ॥ २७॥
वा कन्या कैं सुनिकैं बैंनहिं।कंसहिं भौ बिस्बास सुषैनहिं॥
बंदी षांनै तें तबै दौऊ।दीनै छौडि बहनि बहनौऊ॥ २८॥
अरु अपनौं हित अधिक जतायौ।निज अपराधसुं छिमा करायौ॥
कंसहिं दैषि जक्त दुष भेवहिं।तजी रीस बहनि रु बसुदैवहिं॥ २९॥
अरु बसुदेव कंस सौ बोलै।सुभग बचननि अमृत सम तोलै॥
अहौ कंस तू कहत जु बातहिं।अैसैं ही हैं सत्य बिष्यातहिं॥ ३०॥
अहंकार अग्यांन प्रभायहुँ ।प्रांनी मांनत अपुन परायहुँ॥
सौक हर्षभय द्वैष रु मोहा।मद मछरता लौभ जू छौहा॥ ३१॥
इन्ह जुत आपुहिं नर अग्यांना।सब बिधि करता लषत निदांना॥
सुक्र कहत कि सुनि अैसैं बैनां।आग्यां मांगि कंस गौ अैनां॥ ३२॥

॥ श्री सुक उवाच॥

दोहा - निस बीती जब आपनैं, मंत्री कंस बुलाय॥
कहै हुतै कन्या बचन, तैं सब दियै जताय॥ ३३॥
तबै अमरन कैं सत्रु बै, बोलै मूरष दैत॥
अहौ कंस तौ हतक जौ, उपज्यौ है किहुँ हैत॥ ३४॥
तौ हम्ह सबही प्रिथी कैं, दस दस दिन कैं बाल॥
निश्चै करि हति डारि हैं, मैंटन तेरौं काल॥ ३५॥
तौ धनुषहि टंकार सौं, सब डरपत है देव॥
कहा तुम्हारौ करि सकैं, समझहुँ धीरज भेव॥ ३६॥
सस्त्र चलावत हौ जबै, तुम्हसुं जुद्ध कैं मांहिं॥
तब सुर डरि भज जात है, ठहरि सकत वै नांहिं॥ ३७॥
कैउ जौरत हाथि कैउ, सस्त्र डार निज दैत॥
कैऊ षौलि कछा सिषा, डारत अति डर हैत॥ ३८॥
किहूं कैं तूटै सस्त्र अरु, किहूं सस्त्र दियै डारि॥
तातैं बै संग्रामहीं, कर न सकत निरधारि॥ ३९॥
तिन्हकौं तुम्ह मारत नांहिं, डरपैं जो भजि जांनि॥
निज घरहीं बैठे अमर, करत बडाय निदांनि॥ ४०॥
कछू पराक्रम नांहिंनै, हैं अमरन कैं मांहिं॥
अरु नारायन सुय रह्यौ, तौ डर सौं जल ठांहिं॥ ४१॥
सिव तौ बनबासी सही, है तपस्वी मुष च्यार॥
अरु कछु बल नहिं इंद्र मैं, समझहुँ इहै बिचार॥ ४२॥
सुर कौनहिं किहुँ काम कैं, अैंपरि सत्रुहिं कहाय॥
तातैं नांहिंन राषियै, इन्हकौं किहूं प्रभाय॥ ४३॥

रोग बउत बढ जाय तौ, फिरि न मिटै दुषदाय॥
अरु इंद्री चंचल भयै, बसि न हौय किहुँ भाय॥ ४४॥
तइसैं अरि बलवंत ह्वै, तब जीत्यौ नहिं जाय॥
तांतै निज सत्रुहीं निबल, नहिंन समझियैं राय॥ ४५॥
सब अमरन कैं मूल हैं, निश्चै बिस्नु सुजांनि॥
अरु धर्म बिप्र जिग्य तप गौ, बेद उह्नैं प्रिय मांनि॥ ४६॥
तातैं बक्ता जु बेद कैं, द्विज तपस्वी अरु गाय॥
इन्हकौं हम्ह हति डारि हैं, करिहैं नास कुदाय॥ ४७॥
द्विज गौ तप सम दम श्रद्धा, दया छमा सुर जिग्य॥
निश्चै हरि कैं अंग हैं, जानहुँ अैं सर बग्य॥ ४८॥
अमरन मैं हरि मुष्य हैं, सिव बिधि जिनि आधीन॥
बैहिं असुरन कैं सत्रु हैं, हतन असुर बहु कीन॥ ४९॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि सुनि कंस इह, मंत्रिन कौ जु बिचार॥
गौ बिप्रननि कौ मारिबौ, हित मान्यौ निरधार॥ ५०॥
गौ बिप्रननि कौ हतन की, दै आग्यां उहिं बार॥
आयौ अपनैं गेह कौं, दुष्ट कंस निसचार॥ ५१॥
रज गुनी रत तमोगुनी, मूरष असुर अग्यांन॥
दैंन लगै सुर जनन कौं, अति दुष दुष्ट अमांन॥ ५२॥
लछमी आर्बल धर्म जस, परलौक अरु कल्यांन॥
कियैं जु अवग्यां बडन की, जात जु रहत निदांन॥ ५३॥
कंस सहित संगीन की, आई मृत्यु नजीक॥
अधिक पाप लागै करन, नांहिं मरन की ठीक॥ ५४॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ पंचमोऽध्यायः ॥

(गौकुल में भगवान का जन्मोत्सव)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - श्री सुक कहत जु नंद जू, पुत्र जनम भयौ जांनि॥
पहरै बस्त्र रु आभरन, आनंदित अप्रमांनि॥ १॥
पितर देवतां पूजि कैं, जाति कर्म करवाय॥
रतन सुवर्न रु बस्त्र बहु, अरु द्वै लष दिय गाय॥ २॥

तिल कैं परबत सात पुनि, कियै दांन ब्रजराय॥
बिप्रननि कौ संतुष्ट किय, दियैं दारिद्र गमाय॥ ३॥
संस्कार करि समय करि, करि संतौष सनांन॥
तपस्या करि पुनि ग्यांन करि, दीजै बस्तु निदांन॥ ४॥
महा पबित्र सौ हौत है, जइसै ही अनुभाय॥
पुत्र जनम कौं जु समय करि, दान सुपवित्र कहाय॥ ५॥
बंदी मागद रु सूत द्विज, मंगल पढ़त सुढार॥
गावत गावन हार अरु, बजि बाजित्रहुँ अपार॥ ६॥
ब्रज की ऊजल गलिन मैं, हुव सुगंध छिरकाव॥
धुजा पताका फरहरत, अदभुत सौभ लषाव॥ ७॥
मुक्ता फूल दल की बंधी, घर घर बंदन माल॥
आंगन चौक बिराजहीं, मांडे महा रसाल॥ ८॥
हरद तैल बहुरंग सौं, मंडित बछरा गाय॥
कंचन सींग मंढे सुभग, मनि माला फहराय॥ ९॥
रु मौर पछिकी माल पुनि, कंचन माल सुचार॥
सौभित गायन कंठ अरु, पग नैंवर झनकार॥ १०॥
बहु मौलिक भूषन बसन, पहरैं गौप उदार॥
भैंटनि लै लै आवहीं, नंद जसौमति द्वार॥ ११॥
पुत्र जसौदाहुँ कैं भयौ, सुनि सब ब्रज की नारि॥
सजि सिंगार उत्साह सौं, मंगल गीत उचारि॥ १२॥
लै लै मंगल सौंज सब, आई जसुमति गैह॥
हँसि हँसि दैति मुबारषी, बढि आनंद अछैह॥ १३॥
बालक बदन निहारि कैं, दै असीस सुष पाय॥
इहि बालक चिरंजीव ब्रज, रछा करहूँ सुभाय॥ १४॥
जल हरदी अरु तैल सौं, षैलत तिया उमांहिं॥
लाड गीत श्रीकृस्न कैं, गावत करि अति चांहिं॥ १५॥
षैलत दधि धृत दूध सौं, गोप हिर्दै अहलादि॥
दधिकांदौ आंगन मच्यौ, सुष सौभा बढि ज्यादि॥ १६॥
बऊत द्रव्यनि भिछुकन कौं, दैत ललन पर वारि॥
घन ज्यौं बरषत गौपगन, मुदित हौत उहिं बारि॥ १७॥
करिबै हरि कौं प्रसंन अरु, पुत्र जु उदय कैं काज॥
पूर्न मनौरथ सबनि कैं, करत भयै ब्रजराज॥ १८॥
पहरि रौहनी जू भलै, भूषन बस्त्र अनूप॥
करत भई ग्रह कार्ज सब, अति सनैह संजूप॥ १९॥

ता दिन तैं प्रगटै प्रभू, जादिन तैं ब्रज मांहिं॥
बसी जु लछमी आयकैं, धरैं उमगि चित्त ठांहिं॥ २०॥
जगमगाय ब्रज मैं रह्यौ, उत्सव भलैं प्रकार॥
फूलै अंग न मांवहीं, ब्रजबासी निरधार॥ २१॥
कंसहिं कर दैबै चलै, तबहीं मथुरा नंद॥
गौप राषि रषबार ब्रज, जतन करन ब्रज चंद॥ २२॥
कंसहिं जब कर दै चुकै, तबै नंद जू पास॥
आय मिलै बसुदेव जू, हित जुत धरै हुलास॥ २३॥
तिह्नैं दैषि कैं नंद जू, हरषित ह्वै अधिकाय॥
मित्र रु मित्र मिली कैं दुहूं, मनौ प्रांन से पाय॥ २४॥
नंद महर जू की भलै, किय पूजा बसुदैव॥
अधिक सनेह जताय कैं, पूछी कुसल सभैव॥ २५॥
पुत्रननि मैं लगि रहे हौ, मन बसुदैव निदांन॥
तातैं ब्रजपति नंद सौं, बोलै या उनमांन॥ २६॥
भली भई अैं भ्रात या, बृधा अवसथा मांहिं॥
पुत्र जु तुम्हारै प्रगट भौ, हुती आस सुत नांहिं॥ २७॥
पायौ दरसन रावरौ, अति दुरलभ हम्ह आज॥
सौ ईस्वर कीनी क्रिपा, सफल भयै सुभ काज॥ २८॥
मित्रहिं इकठै न रहि सकै, जुदे बसत वसि कर्म॥
कबहुँक इकठै हौहिगैं, प्रगटै पूरब धर्म॥ २९॥
जइसै नीर प्रबाह मैं, द्वै त्रन इकठै आय॥
अरु न्यारै ह्वै जात हैं, कबहुंक औसर पाय॥ ३०॥
कहौ कुसल ब्रज मांहिं हैं, जांह बसत हौ आप॥
गौधन गौपी गौप है, जुत आनंद अमाप॥ ३१॥
पुत्रहिं हम्हारै जननि जुत, बसत तुम्हारै धांम॥
तुम्हहीं कौ पितु लषत सौ, नीकैं हैं बलिरांम॥ ३२॥
सुष दुष पुत्रादिकन कैहिं, तैं सुष दुष लैं मांनि॥
धर्म ग्रहस्थन कैं हैं अैंहिं, जांनहुँ सही निदांनि॥ ३३॥

॥ नंद उवाच ॥

इहि सुनि बोलै नंद जू, प्रीति सहित वा बार॥
तुम्ह सुत हे बसुदेव बहु, कंस हतै निरधार॥ ३४॥
बची रही इक कन्यका, सौ उडि गई अकास॥
का करियै कछु बस नांहिं, ईस्वर ईछा भास॥ ३५॥
प्रांनी कर्माधीनहिं हैं, ताही कैं अनुसार॥
सुष दुष प्रापति हौत है, जास कछु न उपचार॥ ३६॥

ऐसौं जांनै सौ नहिंन, कबहूं मोहित हौय॥
अग्यांनी या भेद कौं, नहिं पहचांनै कौय॥ ३७॥
फिरि बोलै बसुदेव जू, तुम्ह कंसहिं कर दीन॥
अरु हम्हीं तैं मिलि चुकै, ह्वै अति हित आधींन॥ ३८॥
बेगै घर कौं जाहुँ अब, तनक न लाहुँ उवांर॥
कछू उपद्रव हौहिंगौ, गौकुल बिच निरधार॥ ३९॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि इह बात सुनि, नंदादिक सब ग्वाल॥
स्वार हौय गौकुल चलै, ढील न करि बहि काल॥ ४०॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते पंचमोऽध्याय: ॥ ५ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ षष्ठोऽध्याय: ॥

(पूतना उद्धार)

॥ श्री सुक उवाच॥

दोहा - श्री सुक कहत कि नंद जू, ह्वै मथुरा तैं स्वार॥
चलै जात हैं बीच मग, ऐसौ करत बिचार॥ १॥
बोलैं नहिं बसुदैव जू, झूठ बचन निरधार॥
गौकुल मधि कछु उपद्रव, ह्वै हैं किहूं प्रकार॥ २॥
इह बिचार करि नंद जू, धरत भयै हरिध्यांन॥
सुष दुष सब जांनत भयै, प्रभु ईछा उनमांन॥ ३॥
बकी पठाई कंस की, सब पुर ग्रामनि ठांम॥
लरकनि कौं मारत फिरत, हुती रांड अघ धांम॥ ४॥
अरु जिहँ ठां भगवांन कौ, नांम कीरतन हौय॥
तहिं राछिस कछु पराक्रम, नांहिं करि सकै कौय॥ ५॥
ऐक दिनां वा पूतनां, धारि अस्त्री कौ रूप॥
गौकुल मधि आवत भई, बनिठनि महा अनूप॥ ६॥
सुमन गुथित बैंनी रही, छूटि नितंबनि ठांम॥
पंकज सौ मुष छीन कटि, षंजन नैन अभिरांम॥ ७॥
मंडित भूषन बस्त्र सौं, मुसकत करत अदाय॥
मोहित गोपी गोप सब, करत भइ या ठगाय॥ ८॥

गोपिन जान्यौ इह रमा, सोधत अपनौं कंत॥
नंद महर कैं घर गई, जसुमत पास असंत॥ ९॥
सैज्या पर पोढै लषै, कृस्न कुँवर करतार॥
अपनौं तैज छिपा रहै, दुष्टन मारनहार॥ १०॥
रहै राष मैं अग्नि छिपि, ज्यौं प्रभु तैज छिपाय॥
दैषि पूतना कौ लयै, मूंदि नैत्र सुषदाय॥ ११॥
महादुष्ट है पूतनां, ऊपर साध लषाय॥
जइसैं सुंदर म्यांन मैं, तीछन षडग कुदाय॥ १२॥
तैज पूतना कौं बडौ, देषि सुदिव्य बहि बार॥
जसुमति जी पुनि रोहनी, बरजि न सकी बिचार॥ १३॥
स्तननि मैं लाइ जहर भरि, प्रभु लीनैं निज गौद॥
रु स्तन पान करवायबै, लागी चित धरि मोद॥ १४॥
दुहूं हाथ सू स्तननि गहि, गाढै कृस्न कुमार॥
प्रांन सहित पीवत भयै, वाकौ पय निरधार॥ १५॥
तब बौली यौं पूतनां, दैहूं पुत्र मुहि छोरि॥
नैत्र फटन लागै महा, पीडत रोई घोरि॥ १६॥
पटकन लागी हाथ पग, सब्द पूतना कीन॥
तासौं भुव गिरि गेह जुत, कंपै लौक जु तीन॥ १७॥
पूरि रह्यौ सब दिसनि मैं, सब्द भयानक भाय॥
बज्रपात सौ सबनि कौं, निश्चै पर्यौ लषाय॥ १८॥
मानुष मूर्छित ह्वै गिरै, जहँ तहँ प्रिथवी ठांम॥
मुंहि पसारि अैसै बहै, मरी राछसी भांम॥ १९॥
हाथ रु पांव पसारिकैं, असल रूप प्रगटाय॥
मनौ ब्रतासुर बज्र कौं, मार्यौ पर्यौ कुदाय॥ २०॥
परी पसरि कैं पूतनां, तब वां तन अनुसार॥
तरु चूरन छह कौस लौं, हौत भयै निरधार॥ २१॥
दाढै हलकैं दंड सी, आनन अति भयकार॥
नासा मनौ नग कंदरा, नैत्र कूप उनिहार॥ २२॥
सतन बड्डै पाथरन सम, लाल बार बिषराय॥
बड्डै करारै सै जंघन, उदर सरौवर भाय॥ २३॥
जइसौ बांध्यौ सैत है, तइसै हात रु पाय॥
कारौ रंग कुवर्न अति, पसरी रांड कुभाय॥ २४॥
पहलैं पूतनां सब्द सौं, गौप हदै सिर कर्न॥
फूटि गयै वै फिरि डरै, लषि भयकारी वर्न॥ २५॥

ह्दै पूतनां पर लषै, गौपिन कृस्न कुँमार॥
लैत जु भइ उठाई कैं, परम प्रीति अनुसार॥ २६॥
सब गौपी जसु रौहिनी, मिलि आछै बहिं बार॥
करन लगी प्रभु की रछा, भय मैटत निरधार॥ २७॥
गौपद रज गौमूत्र पुनि, गौबर सौं जु न्हवाय॥
पूछ गाय की प्रभू पैं, फैरत भई सुभाय॥ २८॥
अति सनैह सौं प्रभू कैं, बारह अंगनि ठांम॥
मंत्र बीर्ज राषत भई, लै लै प्रभु कैं नांम॥ २९॥
चरननहिं की रछा करौ, अजनामां भगवांन॥
कौस्तुभ मनि धारी करौ, रिछया घुटन सथांन॥ ३०॥
जांघनन की रछा करौ, जिग्य रूप सुष सींव॥
कटि रछया अच्युत करौ, जठर रछा हयग्रींव॥ ३१॥
हिर्दै रछा कैसव करौ, ईस उदर रछिपाल॥
इनस्तु नांम प्रभु कंठ की, रछ्या करहुं सब काल॥ ३२॥
रछया करहुं भुजान की, बिस्नु नांम सुभ तौर॥
बांमन मुष रछया करौ, ईस्वर मसतक ठौर॥ ३३॥
गदा धरन पाछैं रछिक, चक्रधरन अगवार॥
ऊपर रछिक उपेन्द्र प्रभु, कौननि संषहिं धार॥ ३४॥
अरु रिछया निश्चैहिं करौ, वांम दाहिनैं ठांम॥
अजन षडग धर धनुष धर, मदसूदन अभिरांम॥ ३५॥
प्रिथवी मैं रिछया करौ, गरुड स्वार करतार॥
हलधर जू रछया करौ, सब्रहिं ठौर निरधार॥ ३६॥
इंद्रिन की रिछया करौ, रिषी कैस सुषदाय॥
प्रांनन की रिछया करौ, नारायन सब भाय॥ ३७॥
सवैत दीप पति चित्त की, मन रिछया जोगेस्व॥
अरु बुधि की रिछया करौ, प्रस्नि गर्भा सुदेस्व॥ ३८॥
अज रछिक अहंकार कैं, क्रीडत मैं गौबिंद॥
सौवत मैं माधव करौ, रिछया दै आनंद॥ ३९॥
रछा करहुँ बैकुंठ पति, चलत समैं निस द्यौंस॥
रछा करहुँ भौजन समैं, जोगेस्वर सुभरौंस॥ ४०॥
भूत डाकिनी राछसी, कुष्यमांड अपस्मार॥
राछस जछ अरु बिनायक, प्रैत पिसाच अपार॥ ४१॥
जेष्ठा कोटरा रेवति, ग्रह मातृका उन्मादि॥
जे दुषदाता दैह कैं, ब्रधबाल लौं आदि॥ ४२॥

पूतनां अरु दुसपन दुष, इतै सकल भयकार॥
बिस्नु नांम सौ डरपि कैं, दूर हौहुँ निरधार॥ ४३॥
अैसै अधिक सनेह सौं, गोपिन रिछया कीन॥
सतन पांन करवाय कैं, माता गौद सुलीन॥ ४४॥
मथुरा तैं ग्वालन सहित, आप नंद बहि बार॥
देह पूतनां की लषी, अचिरज भयौ अपार॥ ४५॥
कह्यौ नंद बसुदेव है, रिषि कैं कौ जोगैस॥
उन्ह जु कह्यौ सौई लष्यौ, ब्रज मैं बिघन बिसैस॥ ४६॥
ब्रजबासी फरसांन सौं, राछसिनी कौ अंग॥
टूक टूक करि काटिकैं, दियौ जराय उतंग॥ ४७॥
सतन पांन वाकौ कियौ, कृस्न कुँवर करतार॥
जात पूतनां कैं रहै, तातैं पाप बिकार॥ ४८॥
तातैं बह जब राछसी, जरी अग्नि कैं मांहिं॥
तब सुगंध निकसत भई, अगर समांन अथांहिं॥ ४९॥
बहै राछसी पूतनां, रुधिरहिं पीवन हार॥
हतनवार बालकन की, आई हतन कुढार॥ ५०॥
तौहु बहै भगवांन कौं, सतनपांन करवाय॥
उत्तम गति जु पावत भई, सबहीं पाप गमाय॥ ५१॥
महा पापिनी राछसी, ताहू कौ जु निदांन॥
माता की सी गति दई, कृस्न कुँवर भगवांन॥ ५२॥
जिन गौपिन श्रीकृस्न मैं, पुत्रहिं भावना कीन॥
महा मुक्ति दाता प्रभू, तिन्हकौं दूध सुपीन॥ ५३॥
जिन्ह गौपिन संसार मैं, फैरि धर्यौ तन नांहिं॥
महा मुक्ति पावत भई, लहि आनंद अथांहिं॥ ५४॥
जिन्ह जननी ह्वै मुक्ति सौं, का अचिरज दरसाय॥
असरन सरन कृपाल प्रभु, जाकैं पुत्र जु कहाय॥ ५५॥
भक्तननि कैं हिय बसत जैं, अमर करत परनांम॥
अैसैं प्रभु कैं पद कमल, परै जा सतन ठांम॥ ५६॥
अरु जाकौ पय पांन किय, कृस्न कुँवर करतार॥
क्यूं न हौय सौ पूतनां, मुक्ति भलैं अनुसार॥ ५७॥
मथुरा तैं आयै हुतै, नंदादिक जैं गुवाल॥
तिह्वै गौप गेह रछिकनि, कही बात उहिं काल॥ ५८॥
ज्यौं आई ही पूतनां, पुनि सुमृत्यु ज्यौं पाय॥
करत भयै बरनन सबै, पूरन भेद जताय॥ ५९॥

नंद महर जुत गौप सब, सुनि अचिरज कीन॥
जान्यौ बालक बच्यौ सौ, प्रभु क्रिपा करि दीन॥ ६० ॥
सिर सूंघ्यौ सुत गौद लै, लह्यौ नंद अति चैंन॥
सूंघन सीस सनैह की, रीत सुप्रगट सुषैंन॥ ६१ ॥
द्रव्य अनंत जु नंद जू, कृस्न कुँवर पर वारि॥
देत भये भिछुकानि कौं, छैम कुसल अनुसारि॥ ६२ ॥
अहै पूतनां बध कह्यौ, श्रीकृस्न चरित सुभाय॥
जो सरधा सौं सुनैं सौ, श्रीकृस्न भक्ति सुषपाय॥ ६३ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

(शकट - भंजन तथा तृणावर्त उद्धार)

॥ श्री राजोवाच ॥

दोहा - नृप पूछत अवतार धरि, जैं चरित प्रभू कीन॥
तैं सव्रननि आछे लगत, सुनतैं अहौ प्रवीन॥ १ ॥
जिन्ह चरितनि कै सुनै तैं, दुष तृस्ना ह्वै दूर॥
सुद्ध हौय चित्त प्रगट ह्वै, हरि की भक्ति सपूर॥ २ ॥
अरु प्रभु कैं बैस्नवन सौं, हौय प्रीति अधिकाय॥
अैसै प्रभु कैं चरित तुम्ह, आछै कहौ सुनाय॥ ३ ॥
मनुष रूप धरि प्रभु कियै, बाल बिनोद सुढार॥
तैं चरितहिं बरनन करौ, हे मुनि सुष कैं सार॥ ४ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

श्री सुक बोलै हे नृपति, अैक दिवस भगवांन॥
करवट लीनी आप तैं, पौढै पलन सथांन॥ ५ ॥
अरु नछत्रहिं हौ रौहिनी, वा दिन सुनियै राय॥
तातैं गीत बाजित्र जुत, बेदमंत्र पढवाय॥ ६ ॥
जसुदा जू श्रीकृस्न कौं, करवायौ जु सनांन॥
देत भयै तब नंद बहु, अंन बस्त्र गौदांन॥ ७ ॥
मंगल मंत्र पढै द्विजननि, आसिरबाद सुदीन॥
नंद जसौदा जू अधिक, बिप्रननि पूजा कीन॥ ८ ॥

मात सनांन करायकैं, ललन पलन दिय सुवाय॥
तब निंद्रा आवत भई, पौढै प्रभु सुषपाय॥ ९॥
गौपी गौप अनंत तांह, आयै हौ मिजमांन॥
जिन आदर लागी करन, जसुमति भलै निदांन॥ १०॥
प्रभू जागि रौवन लगै, चरन उछारि उछारि॥
सुन्यौ न प्रभु कौ रोवनौ, ब्रजरांनी वा बारि॥ ११॥
पलन ललन कौं सकट तर, बांध्यैं हौ जसुमाय॥
गौपिन कैं बालक तांह, षैलत रहै सुभाय॥ १२॥
प्रभु कैं कोमल चरन कौं, लागि धका उहिं बार॥
टूक टूक ह्वै कैं गिर्यौ, बहै सकट निरधार॥ १३॥
अरु वामैं दधि पात्रहूं, हुतै सुफुटि बिषराय॥
गौपी जसुमति नंद जुत, सब हिंन अचिरज आय॥ १४॥
सबनि कह्यौ कइसैं गिर्यौ, इहि सकटा या बार॥
बालक की रछया करी, नारायन करतार॥ १५॥
सकट पास षैलत हुतै, बालक गौप कुमार॥
कहत भयै तैं सबनिं सौं, बात सु या अनुसार॥ १६॥
अहौ तनक इन्ह कह्रिया, दीनौ चरन उछारि॥
जिन्ह प्रहार सौ सकट इह, गिरि भुव पर्यौ कुढारि॥ १७॥
इहि बात बालकनहिं की, काहू मांनी नांहिं॥
अरु प्रभुकौं बल किनहुं नहिं, जान्यौ निज चित मांहिं॥ १८॥
करवायौ सुत गौद लै, सतन पांन जसुमाय॥
गौपन वइसैं हीं धर्यौ, गाडा बहै उठाय॥ १९॥
दही अछत कुस नीर सौं, बिप्रनि पूजा जु कीन॥
हौम मंत्र जुत कर प्रभुहिं, आसिरवाद सुदीन॥ २०॥
हिंसा मानअरु ईरषा, झूंठ दंभ जिन मैंन॥
सत्य सुबक्ता बिद्यारथी, पाठी बेद सुषैंन॥ २१॥
अैसैं बिप्रननि कौं न ह्वै, निरफल आसिरवादि॥
तातैं बइसैंहिं जनि पढि, बेद मंत्र अहलादि॥ २२॥
मिलै औषधी नीर मैं, प्रभुहिं करायौ सनांनि॥
पट भूषन जुत गौ रु अंन, बउत नंद दिय दांनि॥ २३॥
पुत्र उदय कैं काज कियै, प्रसंन ब्राह्मननि नंद॥
आसिरबाद जु द्विजन पैं, लियौ नंद पद वंद॥ २४॥
इक दिन गौद लियै प्रभुहिं, षिलवत ही जसुमाय॥
सुत सनेह मैं मग्न ह्वै, अति आनंद सुपाय॥ २५॥

त्रिनावर्त कौं आवतैं, जान्यौ कृस्नं कुमार॥
तब कीनौं श्री अंग मैं, तीन लौक कौ भार॥ २६॥
प्रभु जान्यौ मुहि मात जुत, बहि लै जाय उडाय॥
तौ म्हैरी जननी इहै, पै हैं दुष अधिकाय॥ २७॥
तातैं निज अतिभार किय, मात सहि सकी नांहिं॥
अचिरज करिकैं धरि दियै, प्रभु कौं प्रिथवी ठांहिं॥ २८॥
जसुमति फिरि हरि ध्यांन करि, अचिरज दियौ मिटाय॥
करन लगी ग्रह काज कछु, जोग्य जरूर लषाय॥ २९॥
आयौ पठयौ कंस कौं, त्रिनावर्त वा बार॥
रूप बघूला कौं धरै, पापी महा कुचार॥ ३०॥
लै गौ प्रभुहिं उठाय कैं, पापी बिच आकास॥
प्रबल चलाई पवन रज, तै मिटि सूर्ज उजास॥ ३१॥
धूरि सबन कैं द्रिगनि परि, कछू न परत लषाय॥
सब गौकुल कैं मधि रह्यौ, अति अंधियारौ छाय॥ ३२॥
रु जसुमति जू निज पुत्र कौं, ढूंढत अति अकुलाय॥
ढूंढि रही माता बहुरि, पै निज सुत नहिं पाय॥ ३३॥
करुना करि रोवन लगी, गिरी भूमि अकुलाय॥
तरफरात अति दुषित ह्वै, ज्यौं बछरा बिन गाय॥ ३४॥
जसुमति कौ सुनिकैं रुदन, रौवत बृज की नारि॥
महा दुषित ह्वै सब कहत, हा का भौ करतारि॥ ३५॥
उड्यौ हुतौ ले प्रभू कौं, त्रिनावर्त नभ मांहिं॥
भार अमाप सु प्रभू कौं, असुर सहि सक्यौ नांहिं॥ ३६॥
तब प्रभु कौं डारन लग्यौ, अधिक जोर अनुसार॥
छोड्यौ वाकौं कंठ नहिं, दृढ पकर्यौ करतार॥ ३७॥
दुहु करसौं वाकौ गरौ, दाब्यौ कृस्न कुमार॥
बोल सक्यौं नहिं फटि गयै, असुर नैत्र बहिं बार॥ ३८॥
पर्यौ सिला पैं बीच ब्रज, नभ तैं असुर कुपात॥
चूर चूर सब अंग हुव, पहुँचि काल की घात॥ ३९॥
ज्यौं सिव बांन प्रहार सौं, त्रिपुर गिर्यौ भुव ठौरि॥
जइसै पर्यौ त्रिनावरत, दैषत गोपी दौरि॥ ४०॥
कृस्न देषि वा हिर्दै परि, गोपिन लयौ उठाय॥
पाय सबनि निज प्रांन सै, जसुमति कौं दिय जाय॥ ४१॥
गौपी गौप रु नंद जसु, सबनि पाय आनंद॥
कहत भयै अैसै सकल, प्रभु मैट्यौ दुषदंद॥ ४२॥

या बालक कौं लै गयौ, हुतौ असुर बलवांन॥
उहां तैं बचि आयौ है, अचिरज महानिदांन॥ ४३ ॥
मृत्यु कैं मुष तैं बचि इहै, बालक आयौ गैह॥
सौ कीनी हम्ह परि क्रिपा, ईस्वर प्रभू अछैह॥ ४४ ॥
पापी अपनैं पाप तैं, मार्यौ गयौ निदांन॥
टारत है भय साध कौ, रिछया करि भगवांन॥ ४५ ॥
जांनी नहिं हम्ह तप कहा, पूर्ब जनम मैं कीन॥
प्रभु पूजन किय जिग्य किय, दांन दया करि दीन॥ ४६ ॥
ताकै फल सौ पुत्र इहै, हम्हहिं मिल्यौ है आय॥
कै ईस्वर कीनी दया, बालक लयौ बचाय॥ ४७ ॥
अैसें उपद्रव नंद जू, जांनि महाबन मांहिं॥
बचन सत्य बसुदैव कौं, मान्यौ निज चित ठांहिं॥ ४८ ॥
जसुमति इक दिन प्रीत जुत, प्रभु कौ लै निज गोद॥
सतन पांन करवायवै, लागी चित धरि मोद॥ ४९ ॥
ललन पांन पय करि चुकै, तबै उबासी लीन॥
जब सब जग प्रभु उदर मैं, जसुमति लष्यौ सरीन॥ ५० ॥
भुव नभ जोतिष्चक्र रवि, ससि समुद्र नग वाय॥
नदी सथावर जंगम अरु, दीप अग्नि जुत माय॥ ५१ ॥
जसुमति लषि सुत मुषहि मधि, अचिरज करि थहराय॥
नैत्र मूंदि लीनै कह्यौ, इहि मुहि का दरसाय॥ ५२ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी कृते सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अष्टमोऽध्यायः ॥

(नामकरण - संस्कार और बाललीला)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि जादवन कैं, प्रौहित गर्ग जु नांम॥
दिय पठाय बसुदैव जू, सौ आयै नंद धांम॥ १ ॥
तिह्है दैषि कैं नंद जू, किय प्रनांम कर जौरि॥
उठि ठाढै है करत भय, पूजा प्रीति अकौरि॥ २ ॥
भौजन दै बैठारि कैं, बोलै बचन रसाल॥
तुम्ह पूरन हौ हम्ह कहा, आदर करै क्रिपाल॥ ३ ॥

आवन तुम्ह सै बडन कौं, करन ग्रिहस्थ कल्यांन ॥
तुम्ह त्रिकाल दरसी प्रगट, पंडित परम सुजांन ॥ ४ ॥
जांसौ जांनी जात सब, अगली पिछली बात ॥
अैसौ जोतिष सास्त्र तुम्ह, प्रगट कियौ बिषयात ॥ ५ ॥
तातैं दुहु मौ बालकन, कौं निश्चै या बार ॥
नामकरन संसकार तुम्ह, करौ भलैं अनुसार ॥ ६ ॥
हौ जु बड्डु बक्ता बेद कैं, अहौ गर्ग जू आप ॥
अरु ब्राह्मन गुरु सबन कैं, हौ बिच जक्त सदाप ॥ ७ ॥

॥ गर्ग उवाच ॥

इहि सुनि बोलै गर्ग म्हैं, हूं प्रसध्य सब ठौर ॥
आचारिज जादवन कौं, समझहुँ भेद सुतौर ॥ ८ ॥
तुम्ह पुत्रननि कौ म्हैं करौं, नाम करन संसकार ॥
तौ निश्चै करिकैं इहै, जांनै कंस कुचार ॥ ९ ॥
है बसुदैव रु देबकी, कैं वै पुत्र जू दौय ॥
इन्हैं हतै इहि जांनि तौ, बडौ अनर्थ सुहौय ॥ १० ॥
अरु जांनत है कंस इहै, नंद और बसुदैव ॥
दुहु आपस मैं सषा है, परम प्रीत कैं भैव ॥ ११ ॥
अष्टम गर्भ दैबकी कैं, चहियै सुता न हौंन ॥
अरु यौं कहि बैहि पुत्रिका, करत भई नभ गौंन ॥ १२ ॥
उपजियौ है हे कंस कहुँ, तेरौ मारनहार ॥
बडौ सोच या बात कौं, है कंसहिं निरधार ॥ १३ ॥
तातैं म्हैं जो करूंगौं, नामकरन सप्रसंस ॥
तौ इन्हकौ बसुदेव कैं, सुत जांनैगौ कंस ॥ १४ ॥

॥ नंद उवाच ॥

इहि सुनि बोलै नंद फिरि, सुनौ गर्ग जू बात ॥
लषै न जहँ कौ गौपहूं, अैसी ठौर अग्यात ॥ १५ ॥
स्वस्ति मंत्र पढि मंत्र पुनि, नामकरन पढि लैहुँ ॥
इन्ह लरकन परि करि क्रिपा, हे द्विज निस्संदैहु ॥ १६ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि सुनि गर्ग जू, नंद बचन या भाय ॥
नामकरन लरिकान कौं, लागै करन छिपाय ॥ १७ ॥

॥ गर्ग उवाच ॥

पुत्र रौहिनी कौं प्रसंन, करि हैं सुहृद सुढार ॥
तातैं कहिहैं नांम इन्ह, सबै राम अनुसार ॥ १८ ॥
अरु इन्हमैं बल अति अधिक, ह्वै हैं भलैं सुकांम ॥
तातैं इन्हकौं नांम बलि, ह्वै हैं सुनि बलिरांम ॥ १९ ॥

जदुबंसिन कौं बौलियैं, करिहैं सबनि इकत्र॥
तातैं ह्वै हैं नांम इन्हि, संकरषन जु पवित्र॥ २० ॥
अरु तुम्हरौ लघु पुत्र इही, जुगन जुगन कैं मध्य॥
लाल पीत सित बहु बरन, धरत रूप प्रसध्य॥ २१ ॥
अब या बैरां धर्यौ है, सुंदर स्याम सरूप॥
तातैं इन्हकौं नांम सब, कहि हैं कृस्न अनूप॥ २२ ॥
अरु इह काहू जनम मैं, उपज्यौ ग्रिह बसुदैव॥
तातैं इन्हकौं नांम सुभ, बासुदैव सुद्धभैव॥ २३ ॥
या तुम्ह सुत गुन कर्म सौं, रूप रु नांम अनंत॥
तिन्हकौं जांनत और नहिं, म्हैं जांनत सुभ मंत॥ २४ ॥
इह सब गौपन गौकुलहिं, दैहैं अति आनंद॥
करिहैं तुम्ह कल्यांन सब, मैटि महादुष दंद॥ २५ ॥
पहलैं कौ राजा न हौ, ता समयै बहु चोर॥
दैत रहै दुष बैस्नवन, ह्वै कैं अधिक सजोर॥ २६ ॥
तब इन्हही की क्रिपा सौं, साधुनि अतिबल पाय॥
चौरन कौं जीतत भयै, लहि आनंद सुभाय॥ २७ ॥
या बालक सौं जो कोउ, करि है प्रीत सथाप॥
तिन्हकौं सकि है जीति नहिं, कौउ असुर धरिधाप॥ २८ ॥
इन्हमैं कीर्ति प्रताप श्री, गुन है श्री भगवांन॥
तातैं तुम्ह या जु पुत्र की, रछया करौ सुजांन॥ २९ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

हुव हरषित अति नंद जू, सुनि सुभ गुन सुत मध्य॥
आपहि सबहीं भांत करि, जांन्यौ पूर्न प्रसध्य॥ ३० ॥
ता पाछै कछु दिननि मैं, घुटवनि चलै कुमार॥
घुटवनि चलतैं किंकनी, नूपुर बजत सुढार॥ ३१ ॥
घूंघरून कौं सब्द सुनि, आप सुहरषित हौत॥
किलकि किलकि दौरत बहुरि, मनहीं मोद उद्दौत॥ ३२ ॥
कबहुं किहूं कैं संग लगि, चलत मंद मुसकाय॥
बहुरि डरपि जननी निकट, आवत उलटि फिराय॥ ३३ ॥
लौटै ब्रज की पंक मैं, अरबी करै अनंत॥
सैंनन सौ बतरावही, कछु कछु बचन कहंत॥ ३४ ॥
दुहूं मात कैं नैह सौं, सतननि पय उमडाय॥
अंग पंक लपटैन कौं, छतियनि लैत लगाय॥ ३५ ॥
अर्द्ध दंत द्वै द्वै मुषहिं, हँस तैं परत लषाय॥
तिन्हकौं लषि माता दुहूँ, आनंदित अधिकाय॥ ३६ ॥

गहत पुच्छ बछरान की, बालक दुहू रसाल ॥
तब उन्हकौं षैचैं फिरै, बछरा दौरि सचाल ॥ ३७ ॥
अैसी सुंदर दैषि कैं, लीला ब्रज की नारि ॥
फिरत रहै गौहन लगी, सब ग्रिह काज बिसारि ॥ ३८ ॥
कबहूं अंगुरि गहाय कैं, चलन सिषावत नंद ॥
ठुमकि ठुमकि चालत ललन, उगमगाय गतिमंद ॥ ३९ ॥
सिर घुंघरारै स्याम कच, नथुनी नाक सुढार ॥
श्रवननि झूमत झूमका, सोभा लसत अपार ॥ ४० ॥
गरकंठुला कटि किंकनी, नूपुर पाय सुधंग ॥
बघनष मनु ससि दूज कौ, झुगली पीत सुरंग ॥ ४१ ॥
भय करता पंछीन सौं, रछा करत दुहु भाय ॥
पुत्रनि संग लागी फिरत, सब ग्रिह काज भुलाय ॥ ४२ ॥
फिरि थौरै ही दिनन मैं, दुहु बालक जुत चाय ॥
चलत फिरत आछैं लगै, गौकुल बीच सुभाय ॥ ४३ ॥
श्री कृस्न रु बलि दैव जू, लियैं सषन कौं संग ॥
क्रीडा करि गौपीन कौ, दैं आनंद उतंग ॥ ४४ ॥
दधि चोरी करतैं फिरैं, सब गौपिन कैं गैह ॥
गोपी देषि निहाल ह्वै, उर बढि अधिक सनैह ॥ ४५ ॥
अरु जब अपनैं हौहिं ग्रह, सुंदर कृस्नं कुमार ॥
तब अंतर नहिं सहि सकै, गौपी किहूं प्रकार ॥ ४६ ॥
मिसु उराहनै गौपि सब, आछैं जसुमति पास ॥
चोर चरित श्रीकृस्न कैं, कहहीं सहित हुलास ॥ ४७ ॥
हे जसुमति तौ पुत्र इहै, दै बछ असमैं छौरि ॥
सौर करै हम्ह तब हँसै, दै तारी करजौरि ॥ ४८ ॥
दूध दही हम्ह दैहिं तौ, लैत नांहिं किहुँ भाय ॥
चौरि चौरि दध षात अरु, बंदरनि दैत षवाय ॥ ४९ ॥
नाहिंन षात बंदर जबै, पात्रनि डारत फौरि ॥
पकरैं हम्ह जब ढीठ इहि, भाजि जात है दौरि ॥ ५० ॥
अरु किहूं घर कछु पावत न, तबै आप झुंझलाय ॥
सूतै सिसुहीं जगाय दैं, वै उठहीं चिरलाय ॥ ५१ ॥
दूध दही छीकांन परि, हम्ह जो धरै उठाय ॥
तौ ऊषल पीढान परि, धरि आपुन चढि जाय ॥ ५२ ॥
छटिका सौं बिच पात्र कैं, छिद्र करत तौ बाल ॥
दै दधि दूध बहाय सब, रचत अनौषै ष्याल ॥ ५३ ॥

अरु हम्ह लैं दधि दूध जो, धरै अंधेरै मांहिं॥
तौ इहि बालक जाय जहँ, ह्वै उजास अधिकांहिं॥ ५४॥
याहि कहै हम्ह चोर तौ, उलटि हम्हहिं कह चोर॥
हम्ह लागै ग्रह काज इहि, करै उपद्रवहिं जोर॥ ५५॥
पुत्र तुम्हारौ ढीठ इही, निश्चै चोर अगाध॥
पास तिहारै आय कैं, ह्वै बैठत है साध॥ ५६॥
अैसै गौपि उराहनै, दियै सु सुनि जसुमाय॥
जनम सफल करि आपनौं, मांनत भई सुभाय॥ ५७॥
प्रभू डरपि जांनत भयै, मोहि षिजैगी माय॥
पै माता कछु नहिं कह्यौ, रही चितै मुसक्याय॥ ५८॥
इक दिन जुत बलिदैव जू, सब गौपिन कैं बाल॥
जमुना तटि षैलत भयै, रचि अनैक बिधि ष्याल॥ ५९॥
तिन्ह सबहिंन अैसैं कह्यौ, जसुमति जू पै आय॥
हे माता तौ पुत्र इन्हनिं, लीनी माटी षाय॥ ६०॥
तब जसुमति श्रीकृस्न कैं, पकरि लियैं बिय हाथि॥
नैत्र सजल कीनै डरपि, तीन लौक कैं नाथि॥ ६१॥
जननी कह्यौ रिसाय कैं, क्यूं रे चंचल धीठि॥
तैंनैं माटी भछन करि, बचै सबन कौं दीठि॥ ६२॥
सब सषा रु बलदैव जू, मोहि कह्यौ है आय॥
बोलै नहिं बलदैव जू, कबहूं झूठ बनाय॥ ६३॥

॥ श्री कृष्ण उवाच॥

तब बोलै श्री कृस्न जू, भय भरि बचन अपूठ॥
म्हैं माटी नांहिंन भषी, अैं सब बौलत झूठ॥ ६४॥
अरु जो तुम्ह मांनौ न तौ, मुष मो लैहुँ निहारि॥

॥ यशोदा उवाच॥

तब माता अैसैं कह्यौ, दिषवहुँ मुषहिं पसारि॥ ६५॥
तबै डरपि श्रीकृस्न जू, मुष निज दियौ पसारि॥

॥ श्री सुक उवाच॥

जननि लष्यौ ब्रह्मांड सबै, पुत्र उदर जु मंझारि॥ ६६॥
स्थावर जंगम नद नदी, द्वीप अग्नि आकास॥
वायु तैज जल सूर्ज ससि, उडुगन प्रिथी निवास॥ ६७॥
जोति चक्र तिहुँ प्रकृति गुन, सब्द गंध रस रूप॥
काल करम स्वाभाव मनु, इंद्री जीव संजूप॥ ६८॥
अरु इंद्रिन कैं दैवता, सकल लौक निरधार॥
ब्रजमंडल जसु नंद सुत, कृस्न कुँवर करतार॥ ६९॥

अैं सब सुत मुष मैं लषै, माता जू वां बार ॥
तब अचिरज मय ह्वै अधिक, लागी करन बिचार ॥ ७० ॥
सुपन कि प्रभु माया इहे, कैं म्हैरो अग्यांन ॥
कैं परताप मो पुत्र कौ, म्हैं का लष्यौ निदांन ॥ ७१ ॥
जिन्ह आश्रय सब जक्त है, तर्क मैं न जो आय ॥
अैसै प्रभुहिं प्रनांम हैं, अधिक हैत अनुभाय ॥ ७२ ॥
इहि म्हैं इह मो पुत्र रु पति, अैं सब गौपी ग्वाल ॥
अै गौ इहि म्हैं घरनिहूं, ब्रजपति की या काल ॥ ७३ ॥
अैसी मो बुधि भई जिन, माया कैं अनुसार ॥
बै प्रभु मो गति है सही, दीनबन्धु करतार ॥ ७४ ॥
अैसौ ग्यांन भयौ जबै, जसुमति कौ अधिकाय ॥
तब माया बिसतार हँसि, प्रभु लपटै गर माय ॥ ७५ ॥
तब जसुमति सुत ही समझि, भूली बह सब बात ॥
सुत षिलवत भइ गौद लै, अति सनैह करि मात ॥ ७६ ॥
सांष्य उपनिषद बेद तिहुँ, गावत महिमा जास ॥
ताहि जसौदा पुत्रहिं करि, मांनै सहित हुलास ॥ ७७ ॥
नृप पूछत जसुनंद जू, काह पुन्न बड्डु कीन ॥
सतन पांन जसु कौं कियौ, जासौं तारन दीन ॥ ७८ ॥
जो चरित गावतहिं सबै, पापहिं मैंटन हार ॥
सो चरित बसुदेव नाहिं, लषत भयै निरधार ॥ ७९ ॥
अरु बहि बाल चरित सुषद, लष्यौ नंद बड्डुभाग ॥
तातैं इन्ह कीनौं कहा, अैसौ पुन्य अथाग ॥ ८० ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि बसु आठमैं, बसु इक द्रौण जु नांम ॥
पूर्ब जनम मैं नंद हौ, धरा नांम तिन भांम ॥ ८१ ॥
तिन बिधि पैं मांग्यौ रह्यौ, बर अैसै अनुसार ॥
जनम धरैं हम्ह तहँ करैं, हरि की भक्ति सुढार ॥ ८२ ॥
प्रांनी जा हरि भक्ति सौं, तरत सिंधु संसार ॥
तब बिधि कह्यौ कि हौहिगौ, अैसैं ही निरधार ॥ ८३ ॥
बै बिधि आग्यां पायकैं, प्रगट भयै भुव ठांम ॥
द्रौण नांम बसु नंद जू, धरा जसौदा भांम ॥ ८४ ॥
वां बर कैं अनुसार सौं, पुत्रहिं जांनि भगवांन ॥
भक्ति अधिक दोनौंन कैं, प्रगटी हिर्दै सथांन ॥ ८५ ॥
श्रीकृस्न अरु बलिदेव जू, सत्य करन बिधि बैंन ॥
नंद जसौमति कौं दिषवै, बाल चरित्रहिं सुषैंन ॥ ८६ ॥

भयै बढावत आप सौं, उन दुहुन उर प्रीति॥
सब ब्रज बासिनहूं दयौ, अति आनंद सुरीति॥ ८७॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ नवमोऽध्यायः ॥

(श्री कृष्ण का ऊषल से बांधा जाना)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - श्री सुक कहत कि अैक दिन, दासी सबै सुजांन॥
लाग रही ही और किहुँ, टहलन बीच निदांन॥ १॥
तातै दधि मथिबै लगी, ब्रजरांनी जू आप॥
सुभग चरितहिं श्रीकृस्न कैं, गावत जात सुजाप॥ २॥
पहरैं सुंदर बस्त्र अरु, मणिमय भूषन अंग॥
बैनी तैं झरि झरि परत, अदभुत सुमन सुरंग॥ ३॥
सम्रकन झलकत बदन परि, कुंडल स्त्रवन सुचाल॥
बाजूबंध भुजांनि कर, कंकन झमक रसाल॥ ४॥
अैसै दधि मथतै समैं, जसुमति लगत रसाल॥
सतन पांन करिबै तबै, आय जननि पै लाल॥ ५॥
गहि मथांनि बरजत भयै, मथवै कौं माताहिं॥
तब सुत कौं लै गौद पय, पावत भई उमांहिं॥ ६॥
दूध चढ्यौ है चूल्ह परि, सौं उफन्यौ बहिंबार॥
तांहि संभारन जसु गई, छौडिहिं पुत्र सुषसार॥ ७॥
रिस उपजी श्रीकृस्न कौं, रौवन लागै लाल॥
लौढा लै फौर्यौ प्रभू, दधि कौ पात्र बिसाल॥ ८॥
जाय ग्रेह भीतर लगै, लालन मांषन षांन॥
रु षवायौ बंदरान कौं, दिय बषैरि भुव थांन॥ ९॥
आई दूध संभारि दधि, पात्र फुटौ लषि माय॥
सुतहिं चरित जान्यौ हँसी, कृस्नं न उहां लषाय॥ १०॥
जाय गेह भीतर लष्यौ, चढ्यौ उलूषल लाल॥
मांषन सब बंदरान कौं, ष्वावत नैंन बिसाल॥ ११॥
तब रिस करि माता लई, छटिका अपनैं पांनि॥
छरी लियैं माताहिं लषि, डरिकैं स्यांम सुजांनि॥ १२॥

उतरि उलूषल तैं भजै, बाहरि निकसि सबाल ॥
पकराई दीनैं नांहिं, मातहिं चपल गुपाल ॥ १३ ॥
जिन्हें जोग तप बलहिं करि, गहि न सकत जोगैस ॥
ताकौ दौरी पकरिबै, मात रिसाय बिसैस ॥ १४ ॥
दौरन मैं उछलि सहरा, झरत कचन तैं फूल ॥
हार गई दौर न सकत, षुलि अंचर रह्यौ झूल ॥ १५ ॥
ऐसै दौरि कह्यौ कुँवर, रिसकै बस जसुमाय ॥
नैन मीड किय रुदन प्रभु, कजरा दियौ बहाय ॥ १६ ॥
डरपत लषिहिं निज पुत्र कौं, छटिका दीनी डारि ॥
षिजत भई प्यारै सुतहि, माता जू वा बारि ॥ १७ ॥
पुत्र पराक्रम जांनत नहिं, तातैं हठि निरधार ॥
कियौ मनोरथ बांधिबै, सुंदर कृस्न कुमार ॥ १८ ॥
आदि अंत जाकौ नांहिं, सब जग कौ आधार ॥
जोगैस्वरहू पावत न, जांहि जोग अनुसार ॥ १९ ॥
ताकौं निज सुत जांनिकैं, बांधत जसुमति माय ॥
बांधन मैं रसरी तबै, अंगुरी दौय घटाय ॥ २० ॥
और रसी बांधी तैउ, घटि गइ अंगुरी दोय ॥
बहुरि और लाई रसी, तउ पूरी नहिं होय ॥ २१ ॥
यौं सब ब्रज की जैंवरी, ल्याय दैत भइ और ॥
तउ पूरी है नांहिं द्वै, अंगुल घटही ठौर ॥ २२ ॥
बऊत परिस्त्रम दैषि प्रभु, माता कौ वां बार ॥
भयै बंधावत आप हरि, पूर्न ब्रह्म करतार ॥ २३ ॥
जा प्रभु कैं बसि जक्त सब, सौ भगतन बसि हौत ॥
भक्तननि बसि ह्वै वो जगहिं, दिषयौ बंधि या पौत ॥ २४ ॥
सुष सौं ग्यांनी जनन कौं, मिलत नांहिं भगवांन ॥
भक्तननि कौं मिलि जात है, सहजहिं बेगि निदांन ॥ २५ ॥
बंधै दैषि श्रीकृस्न कौं, हँसत सबै ब्रजनारि ॥
मोरि मोरि मुष लषत है, मुसकत दै करतारि ॥ २६ ॥
जसुमति ग्रेह कारिज लगि, सब तिय गैहनि आय ॥
श्रीकृस्नहिं निज द्वार पैं, द्वै बड़ तरु दरसाय ॥ २७ ॥
नल कूबर मनिग्रीव वै, सुत कुबैर कैं दौय ॥
तैं नारद कैं स्त्राप सौं, प्रगटै ब्रज तरु हौय ॥ २८ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ दसमोऽध्यायः ॥

(यमलार्जुन - उद्धार)

॥ राजोवाच ॥

दोहा - नृप पूछत ऐसौ कहा, बुरौ करम उन कीन॥
जासौं नारद जू उन्है, स्त्राप क्रौध करि दीन॥ १ ॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

श्री सुक कहत कुबैर सुत, सिव सेवक मद मत्त॥
घूमि रहै द्रिग मद छकै, सुधि न कछू सुभ तत्त॥ २ ॥
आसपास गावत हँसत, अस्त्री बऊत सुजांन॥
गंगा तट कैलास कैं, निकट सुभ गवन थांन॥ ३ ॥
करत रहै अस्त्रीन जुत, सुष बिहार मन मौज॥
प्रफुलित गंगा बिच रहै, अदभुत सुभग सरौज॥ ४ ॥
ज्यौं गज गजनी मत्त ह्वै, करि बिहार उमांहिं॥
जइसैं जुत अस्त्रीन रहै, बिच बिहार दुहुँ चांहिं॥ ५ ॥
तिहिं ठां बीनां कर लियै, नारद निकसै आय॥
जांनि गयै मद मत्त इन्हैं, इंद्री बस अधिकाय॥ ६ ॥
नारद जू कौं दैषिकैं, तियनि पहर पटलीन॥
अैं दुहुँ ठाढै रहि गयै, मत्त नगन बुधिहीन॥ ७ ॥
सुत कुबैर कैं सुरा मत्त, धन मद अंध सुपाय॥
लषि नारद जू क्रिपा करि, दैन चहत भय स्त्राप॥ ८ ॥

॥ नारद उवाच ॥

नारद बोलै रमा मद, करतहुँ बुधि कौ नास॥
जइसौ कुल मद रूप मद, बुधि नासिकनहिं भास॥ ९ ॥
तातैं धन मद बडौ है, सबही मद कैं मांहिं॥
तासौं अैं बौरैं भयै, इन्हैं कछू सुध नांहिं॥ १० ॥
धन मद जिनकौं प्राप्ति ह्वै, तैं निरदय ह्वै जात॥
करत पसुन कौं बधहिं मन, जीति न सकत कुपात॥ ११ ॥
अरु मांनत ऐसौं सही, हम्ह न हौहिंगैं बृद्ध॥
ऐसैंहीं रहिहैं सदा, मरिहैं नांहिं प्रसिद्ध॥ १२ ॥
नृपतिनहूं की दैह कौं, मरै न कौउ जराय॥
तौ कीरा परिजांहिं कैं, स्यार कुता भषि जाय॥ १३ ॥
तौ उन्हकैं बिच उदर कैं, बिष्टा ह्वै निरधार॥
अरु जो दीजै जारि तौ, हौय जात है छार॥ १४ ॥
ऐसैं तन कैं लियैं जो, करैं और जिव बध्य॥
तैं नर निश्चै परत हैं, जाय नरक कैं मध्य॥ १५ ॥

या प्रांनी की देह कैं, इतनैं दावा दार ॥
अंन दैय सौ कहै मो, चाकर है निरधार ॥ १६ ॥
अग्नि कहै म्हैरौ सही, पुत्रहिं कहै पितु माय ॥
कुता कहे नहिं जारि हैं, तौ मो भछिन सुभाय ॥ १७ ॥
उपजन मरन न ठीक जिहिं, अैसौ इहै सरीर ॥
ताकौ मांनत आपनौ, मूरष मनष अधीर ॥ १८ ॥
जो धन मद सौं अंध ह्वै, दारिद अंजन तांहिं ॥
अपनौं सौ दुष और कौं, निरधन नर लषि जांहिं ॥ १९ ॥
जइसैं कांटौ लग्यौ ह्वै, जाकै किहूं प्रभाय ॥
सौ कांटा कैं लगन कौं, परदुषहूं लषि जाय ॥ २० ॥
अरु जा मानुष कैं कबहुं, कांटौ लग्यौ न हौय ॥
सौ पर कांटा लगन कौं, दुष समझैं नहिं कौय ॥ २१ ॥
निरधन मांनुष कैं नांहिं, प्रगटै चित्तहिं गुमांन ॥
सहजहिं मैं भूषौं मरै, तपस्या सोइ निदांन ॥ २२ ॥
निरधन भूषौं लटि रहै, करैं अंन्न की चांहिं ॥
इंद्रीहूं जिहिं लटि रहै, सकै जीव हति नांहिं ॥ २३ ॥
साधू जन आवति उमंगि, निरधन मनुष निवास ॥
मिटि तृसनां चितहिं सुध ह्वै, साधु संग सौं जास ॥ २४ ॥
साधुनि चित्तहिं समांन है, चहै प्रभू पद सैव ॥
तैं निरधन जन सौं मिलत, करि निजि क्रिपा सुभैव ॥ २५ ॥
मिलत असज्जन जननहिं सौं, नर धनवंत अग्यांन ॥
तिन्ह पैं कबहूं आवत न, सज्जन साधू सुजांन ॥ २६ ॥
धन मदिरा तैं मत्त रहै, अैं दौउ तिय आधीन ॥
निज मन जीत्यौ नांहिं इनि, बिषै भोगही कीन ॥ २७ ॥
अैं कुबैर कैं पुत्रहिं दुहुँ, मद मत्त करी समांन ॥
ठाढै रहि गय नगन हीं, षबरि न कछू निदांन ॥ २८ ॥
तिन्हकौं मद अब दूरि म्हैं, क़रिहौं भलैं प्रकार ॥
तातैं इन्हकौं बृछी कौं, हौहुँ जनम निरधार ॥ २९ ॥
अरु फिरि अैसौं हौय नहिं, इन्ह अग्यांन रहि जाय ॥
तरु जनमहुँ मैं सुधि सबै, रहु मो क्रिपा प्रभाय ॥ ३० ॥
पाछैं दिवि सौ बरष कैं, कृस्न संबंध प्रकार ॥
सुत कुबैर कैं हौहिंगैं, बढिहिं हैं भक्ति सुढार ॥ ३१ ॥
सुक कहत कि जु नारद मुनि, यौं कहि कैं वां बार ॥
गवनैं बद्रीनाथहिं दिसि, गावत गुन करतार ॥ ३२ ॥

नल कूबर मनिग्रीव हूं, जमलार्जुन द्वै बृच्छ॥
नंद महर कैं द्वार बै, लषि श्रीकृस्न प्रतच्छ॥ ३३॥
सत्य करन नारद बचन, प्रभू बृछन पैं आय॥
बंधे उलूषत बृछिन बिच, निकसत भयै सुभाय॥ ३४॥
पाछै अटक्यौ बृछन सौं, ऊषल आडौ हौय॥
प्रभु षैंच्यौं तातैं उषरि, गिरत भये तरु दौय॥ ३५॥
तिन तैं पुत्रहिं कुबैर कैं, निकसैं दुहुँ वां बार॥
निज सोभा सौं दिसन मैं, करत बडौ उजियार॥ ३६॥
काष्ट बीच तैं भाय जिहिं, अग्नि ज्वाल प्रगटाय॥
अैसैं बैहिं निकसैं दुहुँ, गौ अभिमांन भजाय॥ ३७॥
हाथ जोरि श्रीकृस्न सौं, बोलैं करि परिनांम॥
आदि पुरुष हौ आपु श्री, कृस्न कुँवर अभिरांम॥ ३८॥
रूप रावरौ जग सबै, द्विज जांनत इहि भैव॥
बासुदैव भगवांन तुम्ह, करता प्रभू अजैब॥ ३९॥
अहं इंद्री तन प्रांन कैं, तुम्ह प्रेरक भगवांन॥
प्रकृति पुरुषहूं रूप तुम्ह, काल अरु बिस्नु निदांन॥ ४०॥
सत रज तम गुन प्रकृति कैं, तिह्नैं प्रकासत आप॥
रहै गुनन हीं तैं जु छिपि, पूरन ब्रह्म सजाप॥ ४१॥
तुम्ह द्रष्टा तनकैं तुम्हैं, इंद्री सकत न दैषि॥
जीव गुनन सौं लिप्त कौं, जांनैं तुम्है बिसैषि॥ ४२॥
मुक्ति दैन संसार कौं, तुम्ह प्रगटे भगवांन॥
तुम्ह ही मंगल रूप हौ, तुम्ह ही परम कल्यांन॥ ४३॥
तुम्ह जादव पति हौ प्रभू, तुम्ह कौ है परिनांम॥
चरन कंवल प्रभु रावरै, दैन मुक्ति अभिरांम॥ ४४॥
तुम्ह अैसैं कृत करत जें, नरन सौं न बनि आय॥
जांसौं जांनै जातहौ, तुम्ह अवतार सुभाय॥ ४५॥
नारद सैवक रावरै, तिन्ह सैवक हम्ह आंहिं॥
हम्ह नारद की क्रिपा तैं, किय तुम्ह दरसन चांहिं॥ ४६॥
गुन गावै प्रभु रावरै, हम्ह बांनी निरधार॥
कांन हम्हारै सुनहुँ नित, तुम्हहिं चरित सुषसार॥ ४७॥
सैव करौ तुम्ह हाथ हम्ह, लषौं तुम्हहिं हम्ह नैंन॥
मन बुधि तुम्ह पद म्हैं लगौं, बंदहूं सीस सुषैंन॥ ४८॥

॥ श्री सुक उवाच॥

श्री सुक कहत कि यौं अस्तुति, उन दुहुँन जब कीन॥
गौकुलैस बोल्यौ तबै, ऊषल बंध्यौ प्रवीन॥ ४९॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

म्हैं इह जांन्यौं पहल हीं, तुम्हरौ धन मद पाप॥
दूरि कियौ करिकैं क्रिपा, नारद जू दै स्त्राप॥५०॥
बै हैं साधू समांन चित, जिनकौं मन मौं मध्य॥
तिन्हकैं दरसन सौं नहिंन, बंधन हौत प्रसध्य॥५१॥
ज्यौं रवि दरसन सौं नहिंन, नैत्रन बंधन हौत॥
तइसैं ही मौ साध कैं, दरसनहिं कौं उदौत॥५२॥
अब तुम्ह निज घर जाहुँ हौ, निश्चै म्हैरै दास॥
महा मुक्ति सुष पाय हौं, दोनौं सहित हुलास॥५३॥

॥ श्री सुक उवाच॥

श्री सुक कहत कि प्रभू कैं, सुनि कैंअमृत बैंन॥
करि बंदन परिक्रमा दै, पाय महाचित चैंन॥५४॥
कटि ऊषल जांकैं बंध्यौ, जिन प्रभु आग्यां पाय॥
उत्तर दिसिहिं की वोर निज, ग्रह दुहुँ गयै सुभाय॥५५॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते दसमोऽध्यायः ॥ १०॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अैकादसोऽध्यायः ॥

(गौकुल से वृन्दावन जाना तथा वत्सासुर और बकासुर का उद्धार)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि दुहुँ बृच्छ तुटै, तिहिं सुनि सब्द बिसाल॥
नंद आदि सब गौप उहां, आयै दौरि सचाल॥१॥
जान्यौ बृजबासी सबनि, इहै भयौ बज्रपात॥
सकल दौरि आयै उहां, हिदैं सौक उफनात॥२॥
जो देषै तौ बृछ बड्डै, तूटि परै भुव ठांम॥
तिन्हकौं लषि अचिरज कियौ, सकल पुरुष अरु बांम॥३॥
प्रभु ऊषल सौं बंधे हैं, षैंचत रसी गुपाल॥
तौरन हारै बृछन कैं, उहिं ठाढै जसुलाल॥४॥
तिहैं किनहुँ जांनै नाहिं, इन तरु डारै तौर॥
डरै उपद्रव तैं सबैं, जकि थकि सौच अकौर॥५॥
बालक उन्ह बृछननि निकट, ठाढै हे उहिं बार॥
तै लागैं कहबै सबनि, भैद भलैं अनुसार॥६॥

ऊषल षैंचि रु कृस्न जू, अैं तरु तौरै दौय॥
तिनमैं तैं निकसत भयै, द्वै उत्तम नरहिं कौय॥ ७॥
इहै बात मांनी नांहिं, किहूं बै बालक जांनि॥
अरु कैतिक संदेह किय, अचिरज बात पिछांनि॥ ८॥
निज सुत ऊषल सौं बंध्यौ, दैषि नंद मुसकाय॥
बंधन षोलि रु कंठ निज, लीनौ पुत्रहिं लगाय॥ ९॥
बहु चरित लागै करनहिं, फिरि गौपिन बिच सांम॥
दैत सबनि आनंद प्रभु, डौलत धामहिं धांम॥ १०॥
गौपि बजावै ताल जब, निरत करै भगवांन॥
कबहुँ गावै कबहुँ टहल, करै कबहुँ बिन स्यांन॥ ११॥
कहूं कौउ गोपी कहै, पीढा ल्यावउ लाल॥
कौउ कहै मो पावरी, ल्यावउ नैंन बिसाल॥ १२॥
कौउ कहै पकराइयै, मोहि दौहनी ल्याय॥
कौउ कहै ल्याव सौंहनि, पुनि कौ पटा मंगाय॥ १३॥
गौपी कहै सोइ करै, सुंदर नंद कुमार॥
गौपी गन ह्वै कैं मुदित, जिय वारै निरधार॥ १४॥
कबहुँ मंगावै गौपि कौ, भारी बसतु बिसाल॥
सौ उठाय नहिं सकैं हरि, तिय हँसि करही ष्याल॥ १५॥
अैसी बिधि गौपीन कैं, बसि हुवै कृस्न कुमार॥
भक्तननि बसि है बौ सबनि, दिय दिषाय करतार॥ १६॥
सबकौ हरषित करत प्रभु, अैसै चरित दिषाय॥
बृज बासिन कैं बसि भयै, प्रभू चाव अनुभाय॥ १७॥
मालनि इक आई हुती, कौ बैचनि कौं बेर॥
प्रभु अंजलि भरि धान फल, लैन चलैं बिन झेर॥ १८॥
दैंन हार फल मुक्ति जैं, सकल बिस्व कैं नाथ॥
तैं मालन पैं लैंन फल, आअै अपनैं हाथ॥ १९॥
धांन अंजुली तैं वहै, बिषयौं मगहीं ठांहिं॥
जाय धरै षाली सुकर, मालनि डलिया मांहिं॥ २०॥
तब रतनन सौं भरि गई, बह मालन की डालि॥
पांच सात फल लै भयै, कृस्न कुमार षुस्यालि॥ २१॥
जमुना तटि षैलत रहै, इक दिन सुंदर स्याम॥
नंद रानी बुलवत भई, कहि भगनार्जुन नाम॥ २२॥
जमलार्जुन दौउ ब्रछ प्रभु, तौरै तिहँ अनुसार॥
भगनार्जुन हि नांव हुव, दैंन मुक्ति निरधार॥ २३॥

मात बुलायै यौं कह्यौ, सुनहुं पुत्र इतहिं आय॥
तेरौ जनम नछत्र है, आजु परम सुषदाय॥ २४॥
द्विजन देहुँ गौदान अरु, करौ सनान सिंगार॥
भौजन करि बहुयौं रचौ, बीच सषानि बिहार॥ २५॥
अैं देषै तुम्ह सषन कौं, कइसैं इन्हकीं माय॥
करवायै सिंगार अति, भूषन बसन बनाय॥ २६॥
षैल लगै आयै नांहिं, तबै रोहिनी माय॥
श्रीकृस्न अरु बलदेव जू, कौ बुलयै हित छाय॥ २७॥
तउ नहिं आयै तब बहुरि, गेह रोहिनी आय॥
जसुमति कौं दीनी पठैं, कह्यौ कि पुत्रननि ल्याय॥ २८॥
तब बृजरांनी जायकैं, पकरि दुहुँनि कैं पांनि॥
दुहु पुत्रननि ल्यावत भई, षिजि कैं गेह सथांनि॥ २९॥
गेह ल्याय दुहु सुतन कौं, करवत भई सिनांनि॥
अरु सिंगार कराई कैं, बउत दिवायौ दांनि॥ ३०॥
अैसी ही श्रीकृस्न जू, षैल लागि बहु बांरि॥
अपनैं घरि आवै नांहिं, अधकी होय अवांरि॥ ३१॥
तब ब्रजरानी जायकैं, अैसै कहत जु बैंन॥
अैं हो कृस्न कुमार सुत, सुभग कमल दल नैंन॥ ३२॥
भूषौ ह्वै हैं षैलतैं, हारि गयौ है लाल॥
सतन पांन करिहैं अबैं, जीवन प्रान गुपाल॥ ३३॥
भ्रात सहित आवौ कियौ, हुतौ जु भोजन प्रात॥
अबै फेरि भोजन करौ, सुंदर सांवल गात॥ ३४॥
तुम्ह बिन भोजन करत नहिं, महर तुम्हारौ तात॥
तुम्हकौं जांनत प्रांन सम, अति सनेह उफनात॥ ३५॥
सकल सषाहुं जाहु अबै, अपनैं अपनैं गैह॥
यौं कहि लावत सुत नियरि, उमडि सनेह अछैह॥ ३६॥
भौजन भलै कराय कैं, पाय अधिक चित चैन॥
माता मांनत मोद मन, दैषिहिं पुत्र सुष दैन॥ ३७॥

॥ श्री सुक उवाच॥

श्री सुक कहत कि गोप सब, नंदादिक जैं बृध्य॥
लागै करन बिचार लषि, उपद्रव महावन मध्य॥ ३८॥
बृध गौप उपनंद इक, तिनमैं ग्यांनि जु आंहिं॥
हितकारी श्रीकृस्न कौं, बोल्यौ बचन उमांहिं॥ ३९॥
और ठौर बसिहैं अबैं, या महबन तैं जाय॥
बड्डे उपद्रव हौत इहां, लरकन कौं दुषदाय॥ ४०॥

दुषद राछसी पूतनां, लरकनि मारनहार॥
तिन्हि छोड्यौ प्रभु कृपा तैं, ज्यौं त्यौं कृस्न कुमार॥ ४१ ॥
सकट गिर्यौ तातैं करी, बाल रछा करतार॥
गिरै बृछि तिन्हतैं बच्यौ, बालक पुन्य प्रकार॥ ४२ ॥
त्रिनावर्त लै गयौ हौ, नभ मैं सिसुहिं उडाय॥
गिर्यौ सिला परि तांह तैं, दैवनि लियौ बचाय॥ ४३ ॥
जब तांई उपद्रवन सौं, कछू अरिष्ट न हौय॥
तबलौ बसियै जाय कैं, और ठौर लषि कौय॥ ४४ ॥
बृंदाबन सुभ ठौर है, बसिबै कौ सुषदाय॥
गौवरधन नग तृन लता, जांह पवित्र दरसाय॥ ४५ ॥
गौपी गौप रु गाय कैं, बसिबैं लायक ठौर॥
तुम्ह सब राजी हौहुँ तौं, अबहीं चलौ सुतौर॥ ४६ ॥
इहि सुनि राजी हौय कैं, गौप सबै निरधार॥
करी तियारी चलन की, निश्चै ताही बार॥ ४७ ॥
बृध बालक तिय बस्त सब, सकटनि उपरि चढाय॥
गौधन आगैं करि लयौ, दुंदुभि श्रृंगहिं बजाय॥ ४८ ॥
धनुष बांन लैं हाथि मैं, गौप चलै सुष पाय॥
करि बृंदाबन बसन कौं, मनहिं मोद अधिकाय॥ ४९ ॥
बस्त्र आभरन गौपि सब, पहरैं भलैं बनाय॥
गावत श्रीकृस्न चरित सुभ, परम प्रीति अनुभाय॥ ५० ॥
ब्रजरांनी अरु रोहिनी, अैकं सकट दुहु स्वार॥
आगै बैठै भ्रात दुहु, बलि अरु कृस्न कुमार॥ ५१ ॥
सुषदाई बृंदाबिपुन, सकल रितुन कैं मांहिं॥
गौपी गौप उमांह सौं, सब पहुंचैं उहिं ठांहिं॥ ५२ ॥
अर्द्ध चंद्र आकार कैं, गाडा राषि सुढार॥
बसत भयै आनंद सौं, जांनि ठौरि सुषसार॥ ५३ ॥
गौबरधन बृंदाबिपुन, जमुना तट सुषदाय॥
दैषि प्रसंन दौनूं भयैं, स्यांम रांम अधिकाय॥ ५४ ॥
श्रीकृस्न अरु बलि दैव जू, लगै चरावन बच्छ॥
बृंदावन कै निकट जांह, जें जें ठौर सुअच्छ॥ ५५ ॥
रांम स्यांम क्रीडा करै, बिबिधि भांत बन मांहिं॥
कबहूं मल्ल बिद्या करैं, बंसी कबहुँ बजांहिं॥ ५६ ॥
किंकनि कबहूं बजाय कैं, निरत करै अभिरांम॥
कबहुँ बैल कौं स्वांग धरि, लरै सषा बलि स्यांम॥ ५७ ॥

कबहुँ बील कैं तोरि फल, चलवत आपस मांहिं॥
कबहूं नृप बनि जुध करै, चमू दौय ठहरांहिं॥५८॥
कबहुँ पंछिन कैं संग ह्वै, दौरत बिच हरियार॥
बौलत बौली पंछिन की, कबहूं बउत प्रकार॥५९॥
कबहूं मिलि चषमूंदनी, षैलत सुंदर स्यांम॥
भीरू भीरू ह्वै कबहुं, षैलत धरि बहु नांम॥६०॥
कबहूं बृछ चढि टेरही, छिपि गायन कैं मांहिं॥
कबहूं बांधत सेत मिलि, जल टापू की ठांहिं॥६१॥
बनचर सम कूदत कबहुँ, कबहुं करत नट ष्याल॥
कबहूं लपटि लतांन सौं, झूलत नैंन बिसाल॥६२॥
फूल तौरि भूषन कबहुं, पहरत सुभग बनाय॥
अंग बिचित्रहिं बनावहीं, कबहूं मिलि जुत चाय॥६३॥
कबहुं तिरत जल मांहिं मिलि, मछी कैहिं उनमांन॥
कबहूं लरै मृग स्वांग धरि, कबहूं करहीं गांन॥६४॥
कबहूं गाल बजावतहि, कबहुँ हँसै दै तारि॥
आपस मांहीं कंध चढि, दौरै कबहुं कुमारि॥६५॥
इक दिन जमुना तीर सब, ग्वाल साथ बलि रांम॥
बच्छ चरावत हे भलैं, जांनि मनोहर ठांम॥६६॥
तिनकौं दैत महाबली, आयौ छल बल ठांन॥
बछ रूप धरि बछननि मैं, मिल्यौ कृस्न लिय जांन॥६७॥
दिय अग्रजहिं बताय प्रभु, आप निकट बहि आय॥
वांकै पिछलै पाय अरु, पूछहि पकरि भ्रमाय॥६८॥
कैंथ बृच्छि कैं पैड सौं, दै मार्यौ करतार॥
दैत मर्यौ पसर्यौ प्रगट, महाकाय बिकरार॥६९॥
भयै सराहत ग्वाल सब, कृस्न पराक्रम दैषि॥
सुरनि पुहप बरिषा करी, लहि आनंद बिसैषि॥७०॥
सकल लोकपालन करन, अग्रज जुत श्रीकृस्नं॥
बछरनि पालन यौ करत, भयै बिहार सप्रस्नं॥७१॥
अैक समैं सब ग्वाल जुत, कृस्न कुंवर करतार॥
बछरनि जल प्यावत भयै, जल तट आय सुढार॥७२॥
तांह अैक पंछी लष्यौ, बैठ्यौ अति बिकराल॥
जुदौ कियौ मनु बज्र सौं, परबत सिषर बिसाल॥७३॥
बहै बकासुर दैत हौ, बगला कैं आकार॥
लियै चौंचि सौं ग्रस जु तिंह, श्रीकृस्नहिं वां बार॥७४॥

इह लीला बलिदैव जू, अरु सब ग्वाल निहारि॥
बिकल भयै ज्यौं प्रांन बिन, इंद्री बिकल कुढारि॥७५॥
प्रभू अगनि सम रूप किय, तातैं निगलत बार॥
जर्यौं असुर कौं तालवौ, दियैं उगलि करतार॥७६॥
उगलि चूंच मारन लग्यौ, प्रभू परि असुर कुपात॥
बहै सषा हौ कंस कौं, बली छली बिषयात॥७७॥
पकरि चूंच ताकी प्रभू, त्रिन ज्यौं डार्यौं फारि॥
गौप ग्वाल अरु दैवता, लषत रहै वां बारि॥७८॥
सुरनि सुमन बरषा करी, दुंदुभि उमगि बजाय॥
करत भयै प्रभु की अस्तुति, सुरगन भलैं बनाय॥७९॥
ग्वालन कौं अचिरज भयौ, ऐसौ चरित निहारि॥
दोय टूक ह्वै असुर तहँ, पर्यौ महाबिकरारि॥८०॥
प्रांनन सम श्री कृस्न जू, बक तैं छूटत जांनि॥
मिलत भयै बलदैव जू, ग्वालन जुत सुषमांनि॥८१॥
ब्रज मैं सब घरि आय इहि, चह्यौ चरित जु सुनाय॥
सुनिकैं गौपी गौपगन, अचिरज किय अधिकाय॥८२॥
नयौ जनम श्रीकृस्न कौं, गौपी ग्वालनि मांनि॥
दैषन लागैं प्रीत सौं, करि नौछावर प्रांनि॥८३॥
बोलै गौपी गौप सब, असुर अनैंक कुपात॥
या बालक कौं मारिबैं, आवत तिहिं मरिजात॥८४॥
असुर मारिबैं आवही, तैं ऐसै मरि जांहिं॥
ज्यौं पतंग जरिजात है, परि परि दीपक मांहिं॥८५॥
हम्हहीं गर्ग जु कहि गयै, तैं लषि परत चरित्र॥
जिन बचन न ह्वै झूठ जे, बक्ता बेद पवित्र॥८६॥
कहत चरित श्रीकृस्न कै, यौं नंदादिक ग्वार॥
सदा रहै आनंद सौं, लह्यौ दुष न संसार॥८७॥
करत चरित ऐसैं भयै, पांच बरस कैं सांम॥
पूर्न कुमार सिसु अवस्था, हौत भई अभिरांम॥८८॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते ऐकदसोऽध्यायः ॥ ११ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ द्वादसोऽध्यायः ॥

(अघासुर का उद्धार)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - श्री सुक कहत कि अैंक दिन, किय श्रीकृस्न बिचार॥
भोजन घरतैं जांहि लैं, बन मैं षांहिं सुढार॥ १॥
इहि बिचार करि कृस्न जू, सकल सषा निज गाय॥
बछरनि लैं वन कौं चलै, मुरली संष बजाय॥ २॥
गौप बालक हँस हँस मिलि, धरि भोजन छीकांनि॥
छडी श्रृंग मुरली करनि, लियैं संग बछरानि॥ ३॥
मिलिय कृस्न बछरान सौं, निज निज बछरा ग्वाल॥
बनकौं चालै भांति बहु, करतै लीला बाल॥ ४॥
मनि सुवर्न कैं आभरन, मातनि बहु पहराय॥
गेह तै पठयैं है तउ, लरकनि चित ललचाय॥ ५॥
काच गुंज फल दल पहुप, मौर पछ लैहिं आप॥
बउत भांत भूषन रचै, पहरै उमगि अमाप॥ ६॥
धातु गैरूं हरताल लैं, मंडित करि निज अंग॥
गौप बाल मुद मांनि मन, चलै सहित उछरंग॥ ७॥
छाक अैक की अैक कौ, लैहीं ग्वाल चुराय॥
फिरि हँसि कैं दै डारि हीं, पहलैं बांहिं षिजाय॥ ८॥
निकसि जात आगै प्रभू, जब दैषन बन सौभ॥
तब दौरत सब हौड बदि, ग्वाल लषनि हरि लौभ॥ ९॥
कहत कि देषैं पहल कौ, छुवै कृस्न कौं जाय॥
कौउ बजावत श्रृंग कौउ, बजवत मुरलि सुभाय॥ १०॥
कौ गावत है भैलि सुर, बीचि भ्रमरनि गुंजार॥
कौ कौकिल कौं सबद सुनि, बौलत वाहि प्रकार॥ ११॥
कौउ उडतै पंछीन की, छाया संग दौरंत॥
कौउ हंसन कैं संग लगि, तइसैंही चालंत॥ १२॥
कौउ जाय बगुलांन पैं, बैठत उन्हकी रीत॥
कौउ निर्तत कैंकीन ज्यौं, रचत भैद संगीत॥ १३॥
बृछि बैठै बानरन की, रहत पूछ लटकाय॥
ताहि पकरि कैं ग्वाल कौ, रूष उपरि चढि जाय॥ १४॥
वानर डर पावै ज्यौंहि, ग्वाल उहैं डरपांहिं॥
वानर ज्यौं तरु डार पै, कूदि ग्वालहूं जांहिं॥ १५॥
मैंडक कै संग कूदही, मैंडक ज्यौं कौ ग्वाल॥
कौउ दैषत प्रतिबिंब निज, बिच नदि झरना ताल॥ १६॥

झांई गर्जत हौय कहुँ, कुवां कंदरा मांहिं॥
ग्वाल जाय बौलत हँसत, फिरि फिरि कैं उन्ह ठांहिं॥ १७॥
सुषदाता ग्यांनीन कौं, पूर्न ब्रह्म करतार॥
भक्तजनन कैं जें प्रभू, निश्चै कृस्न कुमार॥ १८॥
तिन्हकौं माया मुहित नर, लषत मनुष कैं बाल॥
समझत ग्यांनी ग्यांन करि, तिन्हकैं लीला ष्याल॥ १९॥
अैसै श्रीकृस्नहीं सषा, जांनि सुगोप कुमार॥
करत भयै क्रीडा भलैं, हित जुत बउत प्रकार॥ २०॥
मन बस करि जोगेस बहु, जतननि जनम बितांहिं॥
तैं जिन्ह प्रभु की चरन रज, अजहूं पावत नांहिं॥ २१॥
अैसै प्रभु जिन्ह द्रिगन कैं, आगैं सदा रहंत॥
तिन्ह ब्रजबासिन भाग्य कौं, कहँ लौं बरनि सकंत॥ २२॥
जिन क्रिडा कौ अघासुर, लषिन सक्यौ सुरसाल॥
आयौ पठयौ कंस कौ, ल्यायौ वांकौ काल॥ २३॥
सुधापांन सू अमरसुर, तउ वासौं डरपंत॥
चाहत है वाकौं मर्यौ, जांनि दुष्ट बलवंत॥ २४॥
श्रीकृस्नहिं लषि अघासुर, अैसौ कियौ बिचार॥
वकी बहनि वक भ्रात मौं, तिन अैं मारनहार॥ २५॥
तातैं बलजुत कृस्न कौं, म्हैं मारौं या बार॥
तब ब्रजबासी सौक इन्ह, करि मरिहैं निरधार॥ २६॥
इहि बिचारि निज रूप करि, अहि अजिगिर आकार॥
सबनि ग्रसन मग बिच पर्यौ, मुष जु गुफा सम फार॥ २७॥
अैक हौठ प्रिथवी लग्यौ, अैक हौठ आकास॥
बादर सौ अरु गुफा सौ, जिह मुष परहीं भास॥ २८॥
तामैं दाढै सिषर सी, अरु अंधियारौ घोर॥
दुष्ट स्वास दावाग्नि सम, दीरघ जीभ कठोर॥ २९॥
वांकौ अैसौं रूप लषि, ग्वालन कियौ बिचार॥
बृंदावन की सौभ हुव, आजि सर्प आकार॥ ३०॥
आपस मैं बोलैं सबै, अैसो परत लषाय॥
मनौ हम्हारै ग्रसन कौं, अहि बैठौ मुषवाय॥ ३१॥
ऊपर बादल लाल सौ, उच्चा हौठ अहि भास॥
मैघ कांति सौ जमुन तट, लाल हौठ तर जास॥ ३२॥
परबत की दुहु गुफा तैं, अैसी परत लषाय॥
आसपास है ठौर अहि, मुष की मनौ कुभाय॥ ३३॥

अरु परबत की सिषर है, अहि दाढैं अनुभाय॥
प्रिथवी कौ मारग सुभग, सौ अहि जीभ जनाय॥ ३४॥
तम गुफान कौ है सोइ, अहि मुष तम दरसाय॥
सोई सर्प कै उदर कौ, तम सौ परत लषाय॥ ३५॥
कहूं लगी दावाग्नि तिहि, तैं चलि गरम समीर॥
सोई सर्प कौं स्वास मनु, समझि लीजियैं बीर॥ ३६॥
जंतु जरै दावाग्नि मैं, तिनकीं बासहिं आय॥
सोइ मनौं अहि उदर कौं, है दुर्गंध अधिकाय॥ ३७॥
सौभा बृंदाबिपुन की, इहि अैसी अनुसार॥
सर्प नांहिंनैं है सही, समझहुँ भलैं प्रकार॥ ३८॥
अरु जो है हि सर्प तौ, आपुन कछु डर नांहिं॥
हत्यौ बकासुर कृस्न जू, त्यौंहीं हति हैं यांहिं॥ ३९॥
अैसै कहिकै ग्वाल सब, हरि मुष सुभग निहारि॥
अहि मुष मैं सबहीं चलै, हँसत बजावत तारि॥ ४०॥
कीनौं प्रभू बिचार इह, अजिगिर राछिस आंहिं॥
ताकौं म्हैरै सषाअैं, पहचांनत है नांहिं॥ ४१॥
यौं बिचारि बरजै प्रभू, जब तांई सब ग्वाल॥
जाय सर्प कैं उदर मैं, बैठै वांही काल॥ ४२॥
पै उन्ह निगलै नांहिनैं, इहै मनौरथ कीन॥
आय चुकै श्री कृस्न जब, लैहुं निगल सबहीन॥ ४३॥
सबकौ दाता अभय कै, किय श्रीकृस्न बिचार॥
ग्वाल बछ मृत्यु मुष धसै, तिन्ह का जतन प्रकार॥ ४४॥
प्रभु नैं कियौ बिचार इहि, दुष्ट सुमार्यौं जाय॥
बचै ग्वाल बछ सौ जतन, करनौ किहूं प्रभाय॥ ४५॥
इहि बिचारि प्रभु आपहूं, धसैं सर्प मुष मांहिं॥
अपनौं दीर्घ सरूप किय, जाय कंठ की ठांहिं॥ ४६॥
मैघ वोट सुर लषत है, तिन्ह किय हाहाकार॥
बंधु अघासुर कै सबैं, प्रसंन भयै वा बार॥ ४७॥
कंठ मांहिं प्रभु बधन तैं, रुक्यौ असुर कौं स्वास॥
निकस्यौ दसमौ द्वार फुटि, पवन स्वास पुनि जास॥ ४८॥
ग्वालन बछ अघ उदर मैं, मरै हुतै सब जाय॥
तिन्हकौं क्रिपा कटाछि तैं, लीनैं प्रभू जिवाय॥ ४९॥
निकसैं सबहिंन संग लैं, जब बाहरि भगवांन॥
कूदत हँसते खैलते, बड़सैहीं उनमांन॥ ५०॥

जीव जोति वा असुर की, रही हुती नभ छाय॥
जिहँ उजास सब दिसनि मैं, रह्यौ प्रगट दरसाय॥ ५१॥
प्रभु बाहरि निकसै जबै, जोति मिलि उनमांहिं॥
सुरनि पुहप बरषा करी, आनंदित अधिकांहिं॥ ५२॥
गांन कियौ सब गंधर्ब मिलि, बहु बाजित्रहिं बजाय॥
अस्तुति करत रिषिगन भये, करि जैं सबद सुभाय॥ ५३॥
अस्तुति राग बाजित्रहिं जै, सबदहिं सुनि मुष च्यार॥
आये अपनैं लौक तैं, हरषित ह्वै वा बार॥ ५४॥
प्रभु की महिमां दैषिकैं, अचिरज बिधि चित आय॥
फिरि सब सुर निज निज घरहिं, जात भये सुषपाय॥ ५५॥
देह अघासुर असुर की, सुकि हुव गुफा समांन॥
सौ ग्वालन कै रमन की, ह्वै गइ ठौर निदांन॥ ५६॥
लग्यौ हुतौ ताही दिवस, प्रभु कौं पंचम बर्ष॥
असुर अघासुर कौं हत्यौ, वाही दिन जुत हर्ष॥ ५७॥
पंच बरष लौं अवसथा, कहियत है कौमार॥
तां आगैं फिरि अवसथा, ह्वै पौगंड सुढार॥ ५८॥
छठौ बरष लग्यौ ता दिन, ग्वाल बाल घरि आय॥
कह्यौ अघासुर कौ हत्यौ, आज कृस्न सुषदाय॥ ५९॥
रिछा हम्हारी असुर तैं, कीनी कांनन ठांहिं॥
अैंक बरष बितयैं सुनी, इहि लीला बृजमांहिं॥ ६०॥
प्रभु कैं सपरस सौं गये, अघ कै पाप पलाय॥
मुक्त भयौ ताकौ कहा, अचिरज है अधिकाय॥ ६१॥

॥ सूत उवाच॥

सूत कहत सुक कौ बचन, इह सुनि बोलै राय॥
हे सुक मुनि या बात कौ, मोकौ अचिरज आय॥ ६२॥

॥ राजोवाच॥

प्रभू अघासुर कौ हत्यौ, कुमार अवस्था मांहिं॥
बिच पौगंडहिअवसथा, सषनि कह्यौ ग्रह ठांहिं॥ ६३॥
आज अघासुर कौ हत्यौ, बन मधि कृस्न कुमार॥
और समैं की बात क्यूं, औरहिं समैं उद्धार॥ ६४॥
मो कौं अचिरज है इहै, कहौ भैद समझाय॥
सुनत हरिकथा तुम्ह मुषहिं, म्हैं हूं धन्य कहाय॥ ६५॥

॥ सूत उवाच ॥

सूत कहत अैसौं बचन, नृप कौं सुनि सुकदेव॥
मत्त ध्यांन हरि तैं सचित, ह्वै बोलै सुभभेव॥६६॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते द्वादसोऽध्यायः ॥ १२ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ त्रयोदसोऽध्यायः ॥

(ब्रह्मा जी का मोह और उसका भंग होना)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि हे नृपति तैं, आछी पूछी बात॥
धन्य धन्य तुह हरिकथा, फिरि फिरि पूछत जात॥ १ ॥
इही सुभाव सु हौत है, साधुन कौ निरधार॥
प्यारी लागत हरिकथा, सुनत लहै सुषसार॥ २ ॥
ज्यौं बिषई नर तिय कथा, सुनि कैं अति सुषपाय॥
त्यौं साधुन कौं हरिकथा, लागत है सुषदाय॥ ३ ॥
सावधान ह्वै सुनि नृपति तू, अबै चित लगाय॥
गौप्य बात म्हैं कहत हौं, आंछी भांत सुनाय॥ ४ ॥
असुर अघासुर मुषहि तैं, जब निकसै भगवांन॥
ग्वालन की बछरांन की, करिकैं रिछा निदांन॥ ५ ॥
कालिंदी तट आय कैं, बोलै सषनि सुनाय॥
अहो सषा इह जमुन तट, ह्वै सुंदर सुषदाय॥ ६ ॥
षैलन लायक ठौर है, उज्जल पुलिन सुढार॥
फूलि रहै हैं कमल बहु, भ्रमर करत गुंजार॥ ७ ॥
सघन बृछ फल फूल जुत, लपटी लता रसाल॥
सब मिलि इहिं भोजन करैं, लागी भूष बिसाल॥ ८ ॥
बउत चढयौ है दिवसहूँ, देहुँ छोडि बछरांन॥
नैरेंहीं तृन चरहिंगे, पीहैं जल मनमांन॥ ९ ॥
इहि सुनि ग्वालनि छोरि दिय, बछरन कौं तृन मांहिं॥
षौलि छाक निज निज लगै, भौजन करन सुठांहिं॥ १० ॥
आसपास श्रीकृस्न कैं, मंडल ग्वाल सुढार॥
ज्यौं उडुगन कैं मध्य ससि, सौभित भलैं प्रकार॥ ११ ॥

अरु ज्यौं कमलनि मध्य मैं, परत करनिका भास ॥
त्यौं ग्वालन बिच कृस्न जू, सौभित सहित हुलास ॥ १२ ॥
पुष्प दल रु पल्लव पुहप, अंकुर छीका बाल ॥
सिला जुक्त अैं पात्र किये, भौजन कैं जु रसाल ॥ १३ ॥
निज निज भौजन कौ सुभग, सबै बतावत स्वाद ॥
हँसत हँसावत मोद जुत, बढत प्रभुहिं अहलाद ॥ १४ ॥
पीतांबर कटिबंध तैं, षुरसै मुरली श्रृंग ॥
लकुट बगल दाबै प्रभू, जैंवत सहित उमंग ॥ १५ ॥
फल अचार आदिक बसतु, दाबै अंगुरनि मांहिं ॥
वाम हाथि भौजन करै, जैंवत प्रभु सुषपांहिं ॥ १६ ॥
सब सषांन कैं सांमुहे, बैठे कृस्नं कुमार ॥
पीठ किहूं की औरनहिं, चरन चहा सिसु ढार ॥ १७ ॥
चषत चषावत भौजनहिं, झपटि षात पुनि कौय ॥
कौ जैंवत मिलि प्रीत जुत, दै गरबहियाँ कौय ॥ १८ ॥
सुरगन दैषत जिग्य कैं, भुक्ता जेहिं भगवांन ॥
अैसैं भोजन करत है, उमंगै बीच सषांन ॥ १९ ॥
बछरा त्रिन कैं लोभ सौ, निकसि दूरि भय जात ॥
ग्वाल डरै जब यौं कह्यौ, प्रभू मंद मुसकात ॥ २० ॥
भइया तुम्ह भौजन करौं, सुष सूं आछी भांत ॥
म्हैं ढूंढन बछरांन कौं, देषहुं अबहीं जात ॥ २१ ॥
यौं कहि कर भौजन लियै, नग बन कुंजन मांहिं ॥
बछरा ढूंढन कौं चलै, चाल सचाल चलांहिं ॥ २२ ॥
प्रभु महिमां देष्यौ चहत, बिधि आयौ वा बार ॥
माया मौहित हौय कैं, भूलि ग्यांन मुष च्यार ॥ २३ ॥
ग्वाल बछरां चुराय कैं, और ठौर कहुँ राषि ॥
अंतर ध्यांन सु आप भौ, हिदैं अधिक अभिलाषि ॥ २४ ॥
मुक्ति अघासुर की निरषि, ब्रह्मा अचिरज मांनि ॥
रु प्रभू परिछा लैंन कौं, आवत भयौ निदांनि ॥ २५ ॥
बछरा न पायै कृस्न जु, इत ग्वालहुँ नहिं पाय ॥
ढूंढि थकै बन सब प्रभू, महा सोच चितछाय ॥ २६ ॥
जांनि गयै श्रीकृस्न जू, बिधि लैगौ बछ ग्वाल ॥
तब बछ ग्वाल सरूप प्रभु, आपुन भय बहिकाल ॥ २७ ॥
जइसैहिं पहिलै बछ हे, अरु जइसै हे ग्वाल ॥
तइसै हीं प्रभु रूप किय, अपनैं महारसाल ॥ २८ ॥

वैसैहीं स्वभाव गुन, भूषन बस्त्र रु नांम॥
मुरलि श्रृंग छीका लकुट, बइसै हीं अभिरांम॥ २९ ॥
जुक्त अवसथा भैद नहिं, अैसै प्रभु धरि रूप॥
बिहरत आयै मध्य ब्रज, श्री ब्रजचंद अनूप॥ ३० ॥
जा जाकैं बछरां रहै, बांधै जिह जिह गैह॥
मात रु गायन कै प्रगट, अधिकी भयौ सनैह॥ ३१ ॥
सब ग्वालन की जननि सुनि, मुरली सबद रसाल॥
आय आय सांमुह मिली, उमगि सकल ब्रजबाल॥ ३२ ॥
पुत्रहिं जांनि हित जुत भई, करवावत पयपांन॥
तेल लगाय रु उबटना, करि करवाय सनांन॥ ३३ ॥
पहरायै भूषन बसन, सुभग सुगंध लगाय॥
भोजन करवायौ भलैं, मनवंछित सुषपाय॥ ३४ ॥
प्रभु बैसैहीं रूप धरि, करि क्रीडा सुषकंद॥
लरकन की मातान कौं, दैत भयै आनंद॥ ३५ ॥
अप अपनैं बछरांन कौं, गायनहूँ जुत चांहिं॥
सतन पांन करवात भइ, चाटन लगी उमांहिं॥ ३६ ॥
सकल रूप प्रभु भयै तब, सब गौ गौपिन चित्त॥
निज निज पुत्रननि सौं अधिक, हुव सनैह की थित्त॥ ३७ ॥
जइसी ब्रजबासीन कैं, हुती कृस्नं सौं प्रीत॥
तइसी निज निज सुतन सौ, बढी प्रीत सुभ रीत॥ ३८ ॥
अैसै बछरा आपहीं, और आपहीं ग्वाल॥
बन जावै पुनि सांझ कौ, ब्रज आवै गौपाल॥ ३९ ॥
अैसैं बीत्यौ बरष इक, घटि दिन पांच कि च्यार॥
रहै चरावत अैक दिन, बन बछ कृस्न कुमार॥ ४० ॥
गौवरधन ऊपर चढी, चरत हुती सब गाय॥
संगहूँ लै बलदेव जू, गौ बछ लषै सुभाय॥ ४१ ॥
गायन कैं अति हित बढ्यौ, दौरी पूछ उठाय॥
ग्वालन तैं न रुकी रही, उमगि बछन पैं आय॥ ४२ ॥
लघु बछरा धर हेतऊ, सतऩ पांन इन्ह दीन॥
चाटन लागी हौय कैं, अधिक नैह आधीन॥ ४३ ॥
बृध ग्वाल करि क्रौध भजि, आयै पाछै लागि॥
तिन्ह निज सुत देषै जबै, उठ्यौ अधिक हित जागि॥ ४४ ॥
क्रौध छोडि कैं प्रेम सौं, लैं पुत्रननि कौ गोद॥
सीस सूंघि आनंद लहि, चित उपजत भौ मोद॥ ४५ ॥

बृध ग्वाल मिलि सुतन सौं, अरु लै अपनी गाय॥
पुत्रननि बिछुरन तैं दुषित, चलैं नैंन जल छाय॥४६॥
अैसौ प्रेम जु सुतन सौं, गौ गौपिन कैं दैषि॥
किय बिचार बलदेव जू, इहि का भैद बिसैषि॥४७॥
ब्रज बासिन कैं कृस्न सौं, जइसी प्रीति प्रकार॥
तइसै निज बालकन सौं, हुव कइसैं अनुसार॥४८॥
अरु म्हैरै हूं कृस्न सौं, जइसौ हुतौ सनैहु॥
तइसौ ग्वाल बछान सौं, क्यूं हुव नैहु अछैहु॥४९॥
इह माया सुर असुर किय, जांन परत है नांहिं॥
म्हैं मोहित हुव तां लियै, प्रभु माया दरसांहिं॥५०॥
इहि बिचार बलदैव जू, लष्यौ द्रिष्टि करि ग्यांन॥
ग्वाल बाल बछ है सबै, प्रभु कौं रूप निदांन॥५१॥
तब बोलै श्रीकृस्न सौं, अैसी बिधि बलदैव॥
पूरब जनम कैं बछ रिषि, ग्वाल अमर अनभैव॥५२॥
अैसै म्हैं जांनत रह्यौ, पहलैं ग्वाल बछांन॥
अब तौ जांनै परत है, तुम्हहीं रूप निदांन॥५३॥
इहि सुनि कैं श्रीकृस्न निज, दीनौं चरित जताय॥
जांनि गयै बलदैव जू, सकल भैद सुभ भाय॥५४॥
अैक बरष बीतत भयौ, तब अैसै अनुसार॥
छनहूं तै घटि जब भई, ब्रह्मा की बहिं बार॥५५॥
तब ब्रह्मा फिरि आयकैं, जो देषैं ब्रजमांहि॥
ग्वाल रु बछरा सहित प्रभु, बिहरत है बन ठांहिं॥५६॥
तब बिधि कियौ बिचार सब, बछरा अरु सब ग्वाल॥
म्हैं लेगौ हौ तै बंधै, मो माया कैं जाल॥५७॥
तै सौवत है अजहुं नहिं, जागै हैं निरधार॥
अैं आयैं इहां कां तैं, बइसै हीं आकार॥५८॥
बछ रु ग्वाल लै गयौ हौ, बै जो देषै जाय॥
तौ बेहू क्रीडा करत, प्रभु जुत आछै भाय॥५९॥
तबै सोच करतौ भयौ, अपनैं चित मुष च्यार॥
इन्हमैं झूठै कौनुँ अरु, कौनुँ सत्य निरधार॥६०॥
ब्रह्मा प्रभू कौ मोहिबै, आयौ हौ धरि मांन॥
सौ निज माया सौं भयौ, मौहित आप निदांन॥६१॥
ज्यौं जुगनूं दिन कैं समैं, कर नहिं सकै प्रकास॥
त्यौं छोटै की प्रकृति नहिं, करै बड्डन कौ त्रास॥६२॥

फिरि जो ब्रज मैं आयकैं, जो देषैं मुष च्यार॥
सबही निश्चै ग्वाल हैं, प्रभु सरूप आकार॥ ६३॥
पीतांबर धारन कियै, स्यांम अंग भुज च्यार॥
संष चक्र नीरज गदा, आयुध करनि सुढार॥ ६४॥
सीस मुकट कुंडल श्रवन, उर श्री चिह्न बनमाल॥
जथा जोग्य भूषन बनै, अंगनि परम रसाल॥ ६५॥
पहराई बैस्नवन सौ, पहरैं तुलसी माल॥
हाँसि चांदनी सी सुभग, उज्जल बिमल रसाल॥ ६६॥
लीनै लाली सैतता, है द्रिग पंकज ताछि॥
मनु सत रज गुन तैं करत, पालन जुक्त कटाछि॥ ६७॥
लघु गुर जीव सथावर रु, जंगम जुत मुष च्यार॥
अैक अैक की करत है, सैवा भलैं प्रकार॥ ६८॥
अष्ट सिधि चौबीस तत्व, सक्ति जु माया आदि॥
अैक अैक कैं पास अैं, ठाढे हैं अहलादि॥ ६९॥
काल कर्म रु स्वभाव गुन, काम और संस्कार॥
कर जोरै सैवा करत, इक इक ठौर सुढार॥ ७०॥
सत्य अनंद रु ग्यांन मय, भरी जु रस आनंद॥
सब बछ बालक दरसहीं, प्रभु मूरति सुषकंद॥ ७१॥
वेदनि बक्ताहूं नाहिंन, महिमा जांनत जास॥
जा प्रभु की सब जगत मैं, जोति सुरही प्रकास॥ ७२॥
अैसै अदभुत प्रभू कैं, रूप दैषि मुष च्यार॥
मन इंद्री थकी चुप भयौ, काष्ट पुतरि अनुसार॥ ७३॥
म्हैरी महिमा बड्डी है, प्रभु इहि कियौ बिचार॥
माया तै हैं जुदी जिहँ, बेदहुं लहत न पार॥ ७४॥
ता महिमा कौं दैषि कैं, मोहित हुव मुष च्यार॥
जक्यौ थक्यौ सौ रहि गयौ, भूल्यौ सकल सह्मार॥ ७५॥
तबै पसार्यौ फेरि प्रभु, निज माया बिसतार॥
सावधांन ह्वै कै लग्यौ, जब दैषन मुष च्यार॥ ७६॥
तब सुंदर बृंदाविपन, दीस पर्यौ ब्रह्मांहिं॥
फल दल फूलन जुत तांह, बृछ रु लता अथांहिं॥ ७७॥
बसत सिंघ नर बैर तजि, जिहँ बृंदावन मांहिं॥
तिन्हकैं प्रभु की क्रिपा सौ, लोभ क्रोध है नांहिं॥ ७८॥
ता बृंदाबन मैं प्रभू, ग्यांन रूप ब्रह्म रूप॥
गौप भेष धारन कियै, कृस्न कुमार अनूप॥ ७९॥

ग्वालन कौं बछरांन कौं, ढूंढत कुंजन मांहिं॥
डौलत है भौजन सुभग, धरै वाम कर ठांहिं॥ ८०॥
लषि ऐसौ प्रभु रूप बिधि, उतरि हंस तैं आप॥
कनक दंड ज्यौं प्रिथी परि, पर्यौ दीनता थाप॥ ८१॥
प्रभु चरनन सौ मुकट निज, छुवाय किय परिनांम॥
आंसुन सौं धौवत भयौ, कृस्न चरन अभिरांम॥ ८२॥
उठि उठि फिरि फिरि कैं परत, प्रभु चरनन कैं मांहिं॥
बार बार सुधि करत हैं, प्रभु महिमां चित ठांहिं॥ ८३॥
नैत्र पूछि लषि प्रभूकौ, निहुरि जोरि निज पांन॥
सावधान ह्वै कांपि कैं, बोल्यौ गदगद बांन॥ ८४॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते त्रयोदसोऽध्यायः ॥ १३॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुर्दसोऽध्यायः ॥

(ब्रह्माजी द्वारा भगवान की स्तुति)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - श्री सुक कहत कि बिधि करत, अैसै अस्तुति बनाय॥

॥ ब्रह्मोवाच॥

सुंदर स्याम अनूप छबि, कमल नैंन सुषदाय॥ १॥
मोर मुकट पीरे बसन, प्रसंन बदन अभिरांम॥
बन माला गुंजान कैं, हार सुभग हिय ठांम॥ २॥
श्रृंग छरी मुरली धरै, भौजन ग्रासहिं लैत॥
सुंदर कोमल चरन जिन, बेद कहत है नैत॥ ३॥
नंद महर कैं पुत्र प्रभू, तिन्हकौं है परिनांम॥
लाल गुपाल रसाल छबि, वारैं कौटिक कांम॥ ४॥
म्हैरै ऊपरि करि क्रिपा, निज ईछा अनुसार॥
इहि सरीर तुम्ह धर्यो है, नहिं माया आकार॥ ५॥
या तनकी महिमाहुँ कौ, म्हैं नहिं पावत पार॥
म्हैं दरसन किय भाग्य तैं, है अदभुत अवतार॥ ६॥
सुषमय आत्म सरूप तुम्ह, निरगुन तिहँ नहिं पार॥
तौ या सुंदर सगुन कौं, लहै न पार प्रकार॥ ७॥

जैं न परिस्त्रम करत हैं, ग्यांन मार्ग कैं मांहिं॥
मन बच क्रम बंदन करत, तुम्हहिं बैठि घर ठांहिं॥ ८॥
सुनत सजन जन मुषहिं जैं, कथा रावरी चांहिं॥
तै बैस्नव बसि करत हैं, तुम्हैं त्रिलौकी मांहिं॥ ९॥
भक्ति तुम्हारी है सही, करनहार कल्यांन॥
सौ तजि कष्ट करै बउत, काज सु आतम ग्यांन॥ १०॥
तिन्हकौं हौत सु कष्टहीं, उपजत ग्यांन सुनांहिं॥
ज्यौं तुस कूटै कष्ट ह्वै, कछू अंन नहिं पांहिं॥ ११॥
जोगैस्वरहुँ तुम्ह निमती, करम करत सुभ सक्ति॥
कथा रावरी सुनत जब, उपजत उन्हकौं भक्ति॥ १२॥
जबै उत्तम गति लहत है, छूटि जक्त दुषदाय॥
आगैंहूं जोगेस्वरनि, मुक्ति लही या भाय॥ १३॥
जिन्हकी इंद्री बसि रहे, द्रिढ ह्वै भलैं प्रकार॥
तिन्हमैं और बिषैन मैं, लागत नहिं निरधार॥ १४॥
आत्मरूप प्रभु रावरौ, जामैं रूप जु नांहिं॥
ताही मैं उनमन लगत, मय ह्वै रहत सदांहिं॥ १५॥
आत्मा कौं तिन्हकौं तबै, अनुभव हौत निदांन॥
अैसैं निरगुन रूप तुम्ह, ग्यांनी लहत सुजांन॥ १६॥
हे प्रभु तुम्हहीं जक्त कैं, धरि इह सगुन सरूप॥
प्रगट भयै हौ प्रिथी परि, कृस्न कुमार अनूप॥ १७॥
उडगन हिमकन प्रिथी रज, बहु कालनि गनि जात॥
पैं कहुँ जात न गनै सब, तुम्हरै गुन बिषयात॥ १८॥
तासौं निरगुन रूप तै, सगुन रूप कौं तत्व॥
प्रभू तुम्हारौ जांनिबौ, महा कठिन है नृत्त्व॥ १९॥
तातैं जैं तुम्ह क्रिपा कौं, चाहत रहै सुजांन॥
सुष दुष अपनैं करम कौं, भौगत समझि समांन॥ २०॥
मन बच तन करि करत है, प्रभु तुम्हकौं परिनांम॥
तैं पावत है सहज ही, मुक्ति महा अभिरांम॥ २१॥
म्हैरी दुर्जनता इहै, देषौ हे भगवांन॥
जइसै गरुडहीं मषिका, डर पावै अग्यांन॥ २२॥
तुम्ह अनंत परमातमां, सबकैं ईस्वर आदि॥
जिन्ह माया दीरघ अतुल, बढवन जगहिं प्रमादि॥ २३॥
तिन्ह परि म्हैं फैलाय कैं, निज माया बिसतारि॥
म्हैं दैष्यौ चाहत रह्यौ, निज ईस्वरता भारि॥ २४॥

हे प्रभु म्हैं कछु ही नांहिं, तुम्ह आगै करतार॥
जइसै आगै अगनि कैं, काह चिनगि अधिकार॥२५॥
हे प्रभु प्रगट्यौ रूप मो, रजौगुनहिं अनुसार॥
तुम्हकौं जांनत नांहिनैं, हे स्वामी सुषसार॥२६॥
जग करता प्रभु मोहि म्है, जांनत करि अभिमांन॥
हौय रह्यौ या गर्व तैं, अति आंधौ अग्यांन॥२७॥
पैं तुम्ह मो पर क्रिपा करि, करि जांनौ निज दासि॥
छमा करहुँ अपराध मो, दया पात्र मुहि भासि॥२८॥
वायु अगनि महतत प्रकृति, नभ जल भुव अहंकार॥
इन्ह सबसौ ब्रह्मांड अैं, बन्यौ बड्डे बिसतार॥२९॥
तामैं म्हैरौ रूप है, सात बिलस्त परमांन॥
सोइ रूप सौं म्हैं महा, मांनत हौं अभिमांन॥३०॥
अैसै केइ ब्रह्मांड तुम्ह, रोम कूप कैं मांहिं॥
उडै फिरत रजकनन सम, तिन्ह गनती कछु नांहिं॥३१॥
पुत्र माता कैं गर्भ मैं, चलवत लात अग्यांन॥
तासौं माता क्रौध करि, चूक न लषत निदांन॥३२॥
लघु दीरघ अैं जक्त कैं, सबै पदार्थ प्रकार॥
कूष रावरै मध्य है, निश्चै करि करतार॥३३॥
तातैं मो अपराध इहि, छमा करहुँ प्रभु आप॥
गुनहगार म्हैं रावरौ, कीनी चूक अमाप॥३४॥
जक्त प्रलै कैं समैं मैं, धरि नारायन रूप॥
आप बिराजत जल बिषै, करता पुरष अनूप॥३५॥
तिन्हकैं नाभी कंज तैं, म्हैं प्रगट्यौ निरधार॥
अंतरजामी आत्म तुम्ह, सबकैं दैषनहार॥३६॥
आप बसत हौ जल बिषैं, हे स्वामी बहुनांम॥
तातैं सब तुम्हकौं कहत, नारायन अभिरांम॥३७॥
अरु तुम्ह जल मैं बसत हौ, इही प्रकृति अनुसार॥
तुम्ह तौ सबही ठौर मैं, रहत सदा करतार॥३८॥
प्रभु तुव नांभी कंज तैं, म्हैं प्रगट्यौ जिहिं बार॥
कमलनाल मैं सत बरष, ढूंढै तुम्हहिं उदार॥३९॥
बाहरि भीतरि तुम्हहिं कहुँ, हौ पावत भौ नांहिं॥
फिरि आग्या लहि रावरी, म्हैं तप किय उहिं ठांहिं॥४०॥
तब तुम्हरौ दरसन भयौ, मोहि करन कल्यांन॥
तातैं तुम्ह सब ठौर हौ, जलही मैं न निदांन॥४१॥

मातहि सब जग उदर मैं, तुम्ह दिषयौ मुष वाय॥
तातैं माया रावरी, निश्चै जग दरसाय॥४२॥
अरु तुम्ह काटनहार हौ, माया कैं भगवांन॥
जग बाहरि पै लषि पर्यौ, तुम्ह भीतरि जग भांन॥४३॥
मुकर ठौर तौ हौत तुम्ह, पर तौ उलटि लषाय॥
सौ तौ सूधे ही पर्यौ, मातहि जग दरसाय॥४४॥
तातैं तुम्हरी प्रकृति सौं, जक्त परत है जांनि॥
मुहि हूं दिषई आज तुम्ह, तुमरी प्रकृति निदांनि॥४५॥
पहलै तौ तुम्ह अैंकहीं, मोहि परै प्रभु दीस॥
फिरि मोकौं बछ ग्वाल जुत, दरसे हे जगदीस॥४६॥
बहुर्यौ बछरा ग्वाल सब, लषै चतुर्भुज रूप॥
इक इक ब्रह्मा सबनि पैं, दरसै तत्वनि संजूप॥४७॥
उतनै ही ब्रह्मांड हूं, मोहि परै दरसाय॥
फिरि अब प्रभु तुम्ह अैंकहीं, दीसत हौ सुषदाय॥४८॥
उतपति पालन प्रलै कौं, रूप धरत हौ तीन॥
ब्रह्मा बिस्नु महैस अैं, नांम कहाय सरीन॥४९॥
जुदे जुदे दरसात हौ, अग्यांननि कौं आप॥
तुम्ह तौ नित प्रति अैंकहीं, हौ निरधार सदाप॥५०॥
साधुन की रछया करन, दुष्टन करन संघार॥
नर सुर पसु जल जंतु मैं, तुम्ह धारत अवतार॥५१॥
तुम्ह जोगिन कै ईस तुव, लीला जांनै कौनुँ॥
प्रभू रावरै है सही, चरित अपार सुठौनुँ॥५२॥
कौनुं समैं कितनी तरह, लीला किती करंत॥
तुम्ह बिसतारत हौ प्रकृति, सौ कौ लषिन सकंत॥५३॥
इह जग झूठौ सपन सम, महा दुष कौ सरूप॥
सांचौ सौ दरसात है, तुम्हहौ सत्य संजूप॥५४॥
प्रगट हौत जग तुम्हहिं तैं, तुम्हहीं मैं ह्वै लीन॥
तुम्हहीं आत्मा अरु तुम्हहिं, पुरष पुरान सरीन॥५५॥
स्वयं जोति सत्य नित्यहि अछर, पूरन आदि अनंत॥
सुष सरूप हौ प्रकृति तैं, न्यारै हे भगवंत॥५६॥
गुरुहीं रवि है तिनहिं सौं, पाय सुग्यांन अनूप॥
दैषत ताहीं द्रिष्टि सौं, जैं तुम्ह आत्म सरूप॥५७॥
जैं संसार समुद्र कौं, तरत भलैं अनुसार॥
तीन पाप कौं दुष सबै, छूटि जात निरधार॥५८॥

तुम्ह मैं जग दरसात है, अपनैं ग्यांन प्रभाय॥
ग्यांनहिं करिकैं जात है, तुम्हहीं मांहिं समाय॥ ५९॥
हौत दूरि तैं जेवरी, मधि ज्यौं अहि भ्रम आय॥
फिरि जांनैं तैं जेवरी, भ्रम वा मधिहि बिलाय॥ ६०॥
बंध मौष जग मैं मनुष, मांनत करि अग्यांन॥
आत्मा मधि है नांहिंनै, बंध रु मोछ निदांन॥ ६१॥
उदय अस्त ज्यौं सूर्ज कौं, झूठैहीं दरसाय॥
सूरज तौ निश्चै रहत, सदा अैकहीं भाय॥ ६२॥
आत्मा मानत देह कौं, आत्महिं मांनत दैह॥
फिरि अग्यांनी ढूंढहीं, बाहरि आत्म अछैह॥ ६३॥
जक्तहिं झूठौ जांनहीं, तब तुम्ह प्रापति पाय॥
ठीक कियै ज्यौं जेंवरी, अहि कौ भ्रम मिटि जाय॥ ६४॥
प्रभू रावरी क्रिपा तैं, तुम्ह तत्व जांन्यौ जाय॥
नहिं तौ ढूंढै बउत तहुं, क्यूंहुं न परत जनाय॥ ६५॥
प्रभु जन्म यामैं कि किहुं, और जनम कैं मांहिं॥
दास तुमारौ हौय तुम्ह, चरननि सैवूं चांहिं॥ ६६॥
ब्रज की गौपि गाय इहै, धनि धनि धन्य सरीन॥
गौप बाल बछ ह्वै जिन्हनि, सतन पांन जिन्ह कीन॥ ६७॥
जिग्यहुं तैं तुम्ह त्रिपति नहिं, हौत कबहुं करतार॥
जिन्ह गौ गौपिन कौ कियौ, सतन पांन सुभ ढार॥ ६८॥
बृजबासी नंद आदि कौं, बड्डौ भाग्य निरधार॥
पूर्न ब्रह्म आनंद मय, जिनकैं मित्रहि उदार॥ ६९॥
हम्ह इंद्रिन कैं देवता, भयै क्रितार्थ सुभाय॥
तामैं हम्हहुं क्रितार्थ हुव, हे स्वामी सुषदाय॥ ७०॥
इंद्री रूपहिंपात्र करि, करत रूप तुम्ह पांन॥
तातैं हौत निहाल हम्ह, पाय जु सुष अप्रमांन॥ ७१॥
ब्रछ लताहूं मध्य मो, जनम हौहुँ ब्रजमांहिं॥
इहि प्रार्थनां करतहूँ, धरि चित चांहिं अथांहिं॥ ७२॥
तुम्ह जिन जीवनि मूर हौ, अैसै ब्रज बासीन॥
चरन रैन मौ परि परै, रहिहौं अति सुषलीन॥ ७३॥
जिन पदरज कौं बेदहूं, पावत नांहिंन पार॥
नेति नेति भाषत सदा, निगम भलैं अनुसार॥ ७४॥
वकी मातकौं भेष धरि, आई हुती कुचार॥
माता की सी गति दई, ताकौ तुम्ह करतार॥ ७५॥

घर द्रव्य सुहृद रु पुत्र प्रियै, अंतहकरन रु प्रांन॥
जिन्हकैं तुम्हरें ही लियै, है सब भल उनमांन॥ ७६ ॥
तिह्नै कहा तुम्ह दैहुँगें, ऐसौ कछु तुम्ह पैंन॥
तातैं रहिहौं रिनीहीं, हे प्रभु आप सुचैंन॥ ७७ ॥
नैह और ठां करन सौं, है कृत चोर समांन॥
जिन्हकौं घर है भाकसी, बैडी मोह निदांन॥ ७८ ॥
तुम्ह दासन कौं तुम्हहिं सौं, मोह सनैह अपार॥
जिनकैं घर कौ बासही, करत क्रितार्थ सुढार॥ ७९ ॥
निज भक्तनि आनंद दियै, तुम्ह प्रगटै जग मांहिं॥
पति सुत जांनत तुम्हहिं जैं, हौत क्रितार्थ सदांहिं॥ ८० ॥
जैं जांनत है रूप तुम्ह, तैं जान्यौ निरधार॥
म्हैं तौ तुम्ह अइस्वर्ज नहिं, जांनत किहूँ प्रकार॥ ८१ ॥
तुम्ह जांनत श्रीकृस्न सब, आप जगत कैं नाथ॥
कियौ समर्पन अपनपौं, म्हैं तुम्ह मैं नय माथ॥ ८२ ॥
तुम्ह सूरज श्रीकृस्न प्रभू, पंकज जादव वंस॥
ताकौ प्रफुलित करत हौ, दै आनंद प्रसंस॥ ८३ ॥
प्रिथी दैवता गाय द्विज, सोई समुद्र सुढार॥
तिनकौ बढवनहार तुम्ह, हौ ससि हे करतार॥ ८४ ॥
तम राछिस पाषंड है, तिह तुम्ह मैंटन हार॥
ससि रविहूं मैं आपहौ, तुम्हहिं प्रनांम अपार॥ ८५ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

श्री सुक कहत कि यौं अस्तुति, करि बिधि तजि अभिमांन॥
बंदन करि परिकरमा दै, गवन्यौ अपन सथांन॥ ८६ ॥
प्रभु लै कैं बछरांन कौ, आये सषानि पास॥
सौभित चाल मराल ज्यौं, मंद मंद मुषहास॥ ८७ ॥
अैंक बरष या बात कौ, बीत्यौ तउ बै ग्वाल॥
जांनत भयै कि छनकहूं, भयौ नांहिं या काल॥ ८८ ॥
प्रभु की माया सौं भयै, मोहित गौप कुमार॥
तातैं अंतर बरष कौ, नहिं जान्यौ निरधार॥ ८९ ॥
प्रभु माया सौ जीव इहि, भूलैं न अैंकहुं बात॥
निज आत्माही कौं रह्यौ, सब जस भूलि बिष्यात॥ ९० ॥
ग्वाल सबै श्रीकृस्नं सौ, बोलै अैसै भाय॥
तुम्ह तौ आयै बेगही, हे भइया सुषदाय॥ ९१ ॥
भौजन कौ इक ग्रासहूं, हम्ह नहिं पायौ लैंन॥
इतनैं ही मैं बच्छ लै, आयै पंकज नैंन॥ ९२ ॥

आवौ तुम्ह भौजन करौ, अब आछै या ठौर ॥
देहुँ हम्हारै द्रिगन कौ, चैंन रसिक सिरमौर ॥ ९३ ॥
इह सुनि हँसि श्रीकृस्न जू, भौजन करि वां बार ॥
अद्य तन दिषवत सषन कौं, ब्रज आयै करतार ॥ ९४ ॥
फूल धात पछ मोर तैं, मंडित सुंदर गात ॥
सबद मुरलिका श्रृंग कौ, छाय रह्यौ सुषदात ॥ ९५ ॥
गावत है श्रीकृस्न की, कीर्त्ति सदा अहलादि ॥
लै लै बछरनि नांम कौ, बुलवत है अंनादि ॥ ९६ ॥
उत्सव अपनैं दरस सौं, गौपि द्रिगन कौ दैत ॥
अैसै ब्रज आयै प्रभू, ग्वालहिं बछानि समैत ॥ ९७ ॥
ग्वालन सब ब्रज मैं कह्यौ, आज जु कृस्न कुमार ॥
रछा हम्हारी कीन करि, बड्डु अजगिर संघार ॥ ९८ ॥

॥ परीछित उवाच ॥

नृप पूछत सुकदैव सौं, सकल गौप गौपीन ॥
क्यूं निज पुत्रननि तैं अधिक, प्रीत कृस्न सौं कीन ॥ ९९ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि निज आतमा, सबहिन प्रिय अधिकाय ॥
सुत धन प्यारे आत्म कैं, आछै लगत सुभाय ॥ १०० ॥
तातैं जइसौं आत्म प्रिय, तइसौ सुत धन नांहिं ॥
आत्मा ही प्रिय है भलैं, ग्यांनी जन चित ठांहिं ॥ १०१ ॥
अरु अग्यांनी दैहहीं, को आत्मा लिय मांनि ॥
तातैं उन्हकैं दैहहीं, सौं अति है पहिचांनि ॥ १०२ ॥
दैहि छुटन कैं समैंहूं, इहि चाहै अग्यांन ॥
दैहि छुटै इह नांहिं तौ, बात सु भली निदांन ॥ १०३ ॥
तातैं सबहिन आत्म कैं, पाछै प्रिय सब बात ॥
सुत पितु धन व्यौहार ग्रह, जितनौ कछु बिषयात ॥ १०४ ॥
सबकैं आत्मा कृस्न हैं, जगहित लियै अवतार ॥
तातैं पुत्रननि तैं अधिक, हरिसौं गौपिन प्यार ॥ १०५ ॥
सथावर जंगम जीव सब, है प्रभु ही कौ रूप ॥
बै सबकैं कारन सकल, बस्त जु उन्हहिं संजूप ॥ १०६ ॥
जसहिं पबित्र जा प्रभू कौं, अैसै कृस्न कुमार ॥
जिन्ह पद पंकज है सुभग, नउका बिच संसार ॥ १०७ ॥
जाकै आस्त्रय रहत जैं, बछरा षुरहिं समांन ॥
तरि सागर संसार कौ, पावत मुक्ति निदांन ॥ १०८ ॥

फेरि जनम पावत नांहिं, पुर बैकुंठहिं जात॥
धन्य धन्य जिन्हकौं कहत, सकल बिस्व बिषयात॥ १०९॥
नृप तुम्हहिं पूछयौ हौ कि, कुमार अवस्था मांहिं॥
प्रभू अघासुर कौं हत्यौ, वृंदावन की ठांहिं॥ ११०॥
अरु पौगंडहिं अवसथा, मधि सब ग्वाल समाज॥
बृज मैं कह्यौ अघासुरहिं, हत्यौ कृस्न जू आज॥ १११॥
ताकौ कारन है कहा, सौं हम्ह कह्यौ जताय॥
पभु कै अदभुत चरित है, अगनित गनै न जाय॥ ११२॥
अधासुरही कौ बध अरु, भौजन लीला ष्याल॥
हरन रूप बछ बालकन, चवमुष अस्तुति रसाल॥ ११३॥
इहै चरित भगवांन कैं, सुनै जु कौ चितलाय॥
ताकैं पूर्न मनोर्थ सब, हौहिं भलैं अनुभाय॥ ११४॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते चतुर्दसोऽध्यायः ॥ १४॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ पंचदसोऽध्यायः ॥

(धेनकासुर उद्धार और ग्वाल बालों को कालिय नाग के विष से बचाना)

॥ श्रीसुक उबाच ॥

दोहा - श्री सुक कहत छठौ बरष, प्रभुहिं लष्यौ जिहिं बार॥
हुव पौगंड जु अवसथा, कौ आरंभ सुढार॥ १॥
तब ग्वाल रु बलिदेव जू, जुत श्रीकृस्न सुभाय॥
बृंदावन मैं दूरि लौं, जात चरावत गाय॥ २॥
अैक दिनां श्रीकृस्न जू, बजवत बैंन रसाल॥
अग्रज जुत निज संग लै, गाय रु अपनैं ग्वाल॥ ३॥
सुंदर बन कै मधि गयै, आछै करन बिहार॥
फूलि रहै बहुफूल जहँ, भ्रमर करत गुंजार॥ ४॥
सबद करत पंछी सुभग, मनौ मैंन चटसाल॥
सजनन मन उजलहीं सम, सरवर नीर रसाल॥ ५॥
तिन्हमैं प्रफुलित कंवल बहु, जिन्ह सुगंध मय पौंन॥
सीतल मंद सुचलत है, लागत सुभग सुठौंन॥ ६॥
अैसैं बनकौं दैषि कैं, चित अति उपजि उमंग॥
प्रभु कौं मन क्रीडा करन, भयौ सहित उछरंग॥ ७॥

हरे डहडहै सुभग दल, सौभित पल्लव लाल॥
फूल फलन कैं भार सौं, पायन लौं झुकि डार॥ ८॥
अैसें सुंदर बृछन कौं, लषिकैं कृस्न कुमार॥
अग्रज सौं बौलत भयै, बचन भलैं अनुसार॥ ९॥
सुनियै हे बलिदेव जू, तुव पद कंवल रसाल॥
पूजि पूजि कैं दैवतां, निश्चै हौत निहाल॥ १०॥
तिहैं फूल फल भेंट लैं, बृछ करत परिनांम॥
जांनत है तुव चरन कौं, सुषदाता अभिरांम॥ ११॥
जास तमौगुन सौ लह्यौ, इन्ह इह तरु अवतार॥
दूरि करन ताकौ चहत, इहि मनोर्थ निरधार॥ १२॥
अतिहिं पबित्र तुम्ह सुजस कौं, भ्रमर करत हैं गांन॥
तिन्हकौ सबद सुमन हरत, लागत सुषद निदांन॥ १३॥
भक्त तुम्हारौ अै कौउ, मुनि सुपरत है जांनि॥
तातैं सैवन रावरौ, करत भलैं उनमांनि॥ १४॥
मौर निरत करि सुभग अरु, बौलि कौकिला बांनि॥
तुम्ह बन आयै तां लियै, आदर करत सुग्यांनि॥ १५॥
हिरनी गौपिन ज्यौं चितै, दैत परम आनंद॥
बृजबासी हैं धन्य अैं, साधु सहज सुषकंद॥ १६॥
धन्य वौषधी तृन लता, नग नद प्रिथवी ठांम॥
जिन्हकौं तुव पद कंवल कौं, ह्वै सपरस अभिरांम॥ १७॥

॥ श्री सुक उवास॥

श्री सुक कहत कि जमुन तट, नग सिषरन पर चांहिं॥
गाय चरावत फिरत हैं, कृस्न कुमार उमांहिं॥ १८॥
भंवरन संग गावत कबहुँ, प्रभु जस गावत ग्वाल॥
अग्रज जुत डौलत भलैं, धरै कंवल बनमाल॥ १९॥
कबहूं बौलत हंस ज्यौं, आपहुं बौलत बांन॥
निर्तत मौरन ज्यौं कबहुँ, आपहुँ जुक्त सषांन॥ २०॥
दूरि गई गउ लषि कबहुँ, टैरत लै लै नांम॥
ग्वालन की बांनी बहै, लागत अति अभिरांम॥ २१॥
चकवा मौर चकौर की, कबहूं बौलत बांनि॥
कबहूं ठाढे रहत है, कर सौं पकरि लतांनि॥ २२॥
कबहूं गैंद उछारि कैं, हौ हौ सबद करंत॥
आपस मैं बदि हौड बह, दौरि गैंद झैलंत॥ २३॥
कबहुं ब्याघ्र अरु सिंघ की, बौलत बांनि भयांनि॥
तासौं भाजत डरपि कैं, सकल जंतु भयमांनि॥ २४॥

तिन्ह संग आपहुँ भजत हैं, ग्वालनहूँ डरपाय॥
बहुरि हँसत है तारि दै, अग्रज गर लपटाय॥ २५॥
तकिया ठौर बनाय कैं, कौउ निज संगी ग्वार॥
बैठि जात बलिदैव जू, थकि कैं काहू बार॥ २६॥
तब दाबत उन्हकैं चरन, हित जुत कृस्न कुमार॥
कबहुँ भ्रात गरबांह दै, बैठिं दौउ कर प्यार॥ २७॥
नृतन करत कबहूं सषा, कबहुँ करत मिलि गांन॥
कबहुँ करत मिलि ग्वाल जुध, मल्लन कैं उनमांन॥ २८॥
तबै सराहत है उन्हें, मिलि कैं दौनूं भ्रात॥
लषि ग्वालन की वोर दुहु, मंद मंद मुसकात॥ २९॥
कबहुँ कृस्न जू सषन सौं, जुधहिं करत पुनि आपि॥
हारि जात तब बृछ तर, सज्या सुमन सथापि॥ ३०॥
अैक सषा की गौद मैं, सिरधरि सौवत सांम॥
कौउ सषा दाबत चरन, ह्वै हरषित हिय ठांम॥ ३१॥
भ्रमर उडावत कौ सषा, कोउ हँसावत ग्वाल॥
कौउ प्रीत सौं गावही, कृस्न चरित रसाल॥ ३२॥
यौं छिपि अपनीं प्रकृति करि, सकल बिस्व कैं नाथ॥
ग्वालन कइसैं करत हैं, चरित सषन कैं साथ॥ ३३॥
लछमी अरु जोगेस मुनि, सेबत जिन पद चांहिं॥
जैं बिहरत हैं बन बिषैं, ग्वालन संग उमांहिं॥ ३४॥
सुबल स्तोक अरु कृस्न श्री, दामा अैसैं नांम॥
अति प्यारै श्रीकृस्न कैं, सषा उमगि वा ठांम॥ ३५॥
बोलै हे बलिदैव जू, हे श्री कृस्न कुमार॥
दुष्ट आसुरन कौं भलैं, तुम्ह हौं मारनहार॥ ३६॥
इहिं तैं नेरौ तालबन, तांह बृच्छि अनपार॥
झूकि रहै फलभार तैं, परसत भुव कौ डार॥ ३७॥
तूटि तूटि फल भूमि पैं, गिरै रु गिरत अपार॥
तिन सुगंध कौ पवन इहां, आवत हम्हहिं सुढार॥ ३८॥
सौ समीर हम्ह मन हरत, चित दौरत फल षांन॥
बै फल मीठै तुम्ह हम्हैं, करवावौ अब पांन॥ ३९॥
धैनुक नामा दैत्य इक, दुष्ट रहत वां ठौर॥
षर सरूप कीनै बहै, अतुलित बली सजौर॥ ४०॥
वइसैं हीं षर रूप है, बा संगी बलवांन॥
मनुषन कौं भषि जात है, फल न दैत है षांन॥ ४१॥

उन्ह आगै पसु पंछिहूं, रहि न सकत है कौय॥
तांह जाय फल षांन कौ, मन सु हम्हारौ हौय॥ ४२॥
अहौ कृस्न बलिदैव जू, जो ह्वै तुम्ह चित चांहिं॥
तौ बा बन मैं चलौ फल, षैबै हम्हहिं उमांहिं॥ ४३॥
अैसौ बचन सषांन कौ, सुनि कैं हँसि वा बार॥
श्रीकृस्न रु बलिदेव जू, चलै संग लैं ग्वार॥ ४४॥
जाय तालबन कैं बिषैं, संकरषन हरषाय॥
बृछ हलाय कैं ताल कौं, बहु फल दियै गिराय॥ ४५॥
फल गिरतन कौं सबद सुनि, धैनुक दुष्ट रिसाय॥
दोर्यौ ताकैं बौझ सौं, भूमि परबत कंपाय॥ ४६॥
दुष्ट आय निज पाछलै, पायन कौं उहिं बार॥
करत भयौ बलदैव जू, कैं उर मध्य प्रहार॥ ४७॥
दोर्यौ च्यारौ वौर कौं, सबद भयांनक कीन॥
बड़सैहीं फिरि आय कैं, चौट चरन कौं दीन॥ ४८॥
तब बांकैं दौनूं चरन, गहि निसंक बलिरांम॥
च्यारौ और भ्रमाय दिय, पटकि ताल तरू ठांम॥ ४९॥
असुर मर्यौ तन धर गिर्यौ, पछर्यौ महा भयांन॥
अैक बृछ कैं धका सौं, बहु तरु गिरै निदांन॥ ५०॥
अैसौ श्री बलिदैव जू, बड्डौ पराक्रम कीन॥
ताकौं अचिरज है कहा, सुनियै नृपति प्रवीन॥ ५१॥
जें ईस्वर हैं जक्त कैं, सेषनाग अवतार॥
ज्यौं कपरा मैं सूत त्यौं, बै बिच सब संसार॥ ५२॥
धैनुक असुर मर्यौ जबै, बहै संगी रिस छाय॥
श्रीकृस्न रु बलिदेव जू, सौं जुध करिबै आय॥ ५३॥
श्रीकृस्न रु बलिदेव जू, गहि कैं तिन सबहीन॥
पटकि पटकि कैं तरुन सौं, मारत भयै प्रवीन॥ ५४॥
बली असुर अगनित मरै, गिरै बउत फल भूमि॥
तिन्हसौं भुव सौभा मनौ, घन आयै नभ झूमि॥ ५५॥
इही चरित इन्हकौं सुभग, दैषि अमर वां बार॥
बहु बाजित्रहिं बजाय कैं, बरषैं सुमन सुढार॥ ५६॥
असुर मर्यौ धैनुक जबै, नर सब वांही ठांम॥
षांन लगै फल त्रिन पसू, चरत भयै अभिरांम॥ ५७॥
जिन्ह जसकौं कीर्तन श्रवन, महा पबित्र रु रसाल॥
अरु जा प्रभु कैं कंवल सै, बांकै नैंन बिसाल॥ ५८॥

अैसें कृस्न कुमार प्रभु, सहित भ्रात बलिरांम॥
ग्वाल गाय निज संग लै, बृज आयै सुषधांम॥ ५९॥
गौ रज कैसन मैं लगी, सुमन आभरन अंग॥
मौर पच्छिकौ मुकट सिर, बजवत मुरली श्रृंग॥ ६०॥
गावत जस प्रभु कौ अमित, अस्तुति करत है ग्वाल॥
अदभुत चितवनि हासजुत, सौभित कुंवर गुपाल॥ ६१॥
अैसें कृस्न कुमार कौं, दैषन बृज की नारि॥
सांमुह आई दौरि कैं, प्रान कियैं नौछारि॥ ६२॥
प्रभु मुष सुंदर कंवल सौ, जास सौभ मकरंद॥
तिय द्रिग अलि जिहँ पांन करि, पावत अति आनंद॥ ६३॥
मंद हासि रु कटाछि करि, चितई ब्रज की नारि॥
सुइ प्रभु की पूजा करी, आयै गैह मुरारि॥ ६४॥
माता जसुमति रोहिनी, सुतन इछा करि पूरि॥
हित जुत आसिरबाद दैं, झारि पल्ला तैं धूरि॥ ६५॥
करि सुगंध मय उबटनां, पुनि करवाय सिनांनि॥
पहरायै भूषन बसन, बारि लौंन जुत प्रांनि॥ ६६॥
फिरि माता कैं हाथ कौ, करि भौजन सुषदैंन॥
कौमल सज्या परि कियौ, दुहु भ्रातनि मिलि सैंन॥ ६७॥
अैक दिनां लै सषन कौं, आप अकेलै सांम॥
भ्रात बिनांहीं जमुन तट, गवन कियौ बन ठांम॥ ६८॥
ग्रीषम रितु मैं ग्वाल गौ, सब अति प्यासै हौय॥
काली दह कौ जल पियौ, भैद न समझै कौय॥ ६९॥
बिष कौं जल पिय जमुन तट, मृतक परै बछ ग्वाल॥
जौगिन कैं ईस्वर प्रभू, तब श्रीकृस्नं क्रिपाल॥ ७०॥
क्रिपाद्रिष्टि निज सुधाकरि, बै सब लियै जिवाय॥
सावधान ह्वै बै उठै, अचिरज पर्यौ लषाय॥ ७१॥
जांनि गयै बै ग्वाल हम्ह, बिष कौं जल करि पांन॥
मृतक परै तिन्हकौं लियै, कृस्न जिवाय निदांन॥ ७२॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते पंचदसोऽध्यायः ॥ १५॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ षोडसोऽध्यायः ॥

(कालिय पर कृपा)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - सुक कहत कि श्रीकृस्नं जू, कीनौ इहै बिचार॥
दोष भयौ जल जमुन मैं, काली अहि अनुसार॥ १॥
सुध करनकुं बहि जमुन जल, काली दयौ निकारि॥
निज चरनन कैं चिह्न करि, निरभय किय निरधारि॥ २॥

॥ राजोवाच ॥

नृप पूछत भगवांन वा, जल अथाह कैं मांहिं॥
कइसैं काल जु अहि गह्यौ, समझि परै मुहि नांहिं॥ ३॥
अरु बह अहि बहु जुगन तैं, बसत रह्यौ वा ठौर॥
सौ कारन तुम्ह कहहुं सुक, अहौ मुनिन सिरमौर॥ ४॥
चरित कृस्न भगवांन कौ, अदभुत सुधा समांन॥
हौय त्रिपति जाकौ सुनत, ऐसौ कौ अग्यांन॥ ५॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

चौपई - सुक कहत कि जमुनां जल मांह। काली अहि कौ दह इक ठांह॥
तिहिं ठां बिष पावक अनुभाय। जल ऊकलतौ रहै सदाय॥ ६॥
तापर पंछी उडै जो कौय। बिष ज्वाला तैं मरहीं सौय॥
वां बिष जल कैं कन लैं बाय। चलही तो ताकैं अनुभाय॥ ७॥
मरहीं जीव जंतु अनपार। जैं कौ ह्वै वां नीर किनार॥
वांके बिष कौ बल अधिकाय। ऐसैं काली अहि दुषदाय॥ ८॥
तासौं लगि जल जमुनहिं दौष। चाह्यौ प्रभु तिहिं करनौ मौष॥
जैं प्रभु देबै दुष्टनि दंड। धर्यौ सुभग अवतार अषंड॥ ९॥
ऐसैं कृस्न सुभौंह मरौर। चढि कदंब ऊपर भुज ठौर॥
कटि पटपीत बांधि कैं सांम। कूदै झट तैं वा जल ठांम॥ १०॥
काली अहि कै दह कैं बासि। हुतै और अहि अति दुषरासि॥
तैं प्रभु कूदन तैं करि क्रौध। लागै लैंन सांस बिनु बौध॥ ११॥
तासौं प्रबल नीर कैं मांहिं। लहरि भयंकर उठी अथांहिं॥
अरु तहँ इक सौ धनुष प्रमांन। चहुँ दिस जल फैल्यौ उहिं थांन॥ १२॥
वां जल मैं श्रीकृस्न कुमार। लागै करन सुभलैं बिहार॥
जिन्हकैं भुजनि प्रहार प्रभाय। जल मैं सबद भयौ अधिकाय॥ १३॥
ताकौ सुनि बह काली नाग। दैषि अवग्यां अपनीं जाग॥
रिसकरि आयौ प्रभु कैं पास। चाहत भयौ दैंन बड त्रास॥ १४॥
प्रभु कौ अंग महा सुकुमार। सांम रंग सौभा कौं सार॥

मंद हँसनि जुत मुष अभिरांम। पीताबंर धारै छबिकांम॥ १५॥
चरन कंवल सै अति सुष दैंन। सहित कटाछि बंक बड्डु नैंन॥
निडर भयै तिहिं करत बिहार। तिनकौं लषि काली बिषधार॥ १६॥
रिस करि ठौर ठौर अहि काटि। लपटि गयौ प्रभु सौं गहि आंटि॥
प्रभु सौं लपटयौ सर्प निहारि। ग्वालहिं दुषित हुवै वां बारि॥ १७॥
आत्मा रु मित्र पुत्र तिय चित वित। जिन कीनैं प्रभु मांहिं समर्पित॥
ऐसैं ग्वाल जु सुधि बुधि बिसरि। भयै दुष सौक भरै गिरि परि॥ १८॥
गाय बैल बछ सबै पुकारि। रौवत प्रभु की वौर निहारि॥
ब्रज मैं असुगन तीन प्रकारि। हौत भयै ऐसैं वां बारि॥ १९॥
प्रिथवी कांपी तूटैं उडगन। फुरकै बाम अंग सब पुरषन॥
नंदादिक ब्रज मैं ब्रध ग्वाल। ऐसैं असुगन लषि बहिं काल॥ २०॥
डरपैं बउत रु कियौ बिचार। हा अब का ह्वै हैं करतार॥
आज अकेलै हीं बन ठांहिं। गयै कृस्न बड्डु भ्रात बिनांहिं॥ २१॥
इहै समझि चिंतामय भयहिं। महा सौक दुष सौं उरछयहिं॥
महिमा प्रभु की जैं नहिं जांनि। प्रांन समांन कृस्न कौं मांनि॥ २२॥
प्रभुही मैं जिनकौं मन रहहिं। उन्हहीं कौं लषिबौ चित चहहिं॥
बिकल भयै तैं सब ब्रजबासि। उ़न्ह चित कृस्न कुसल नहिं भासि॥ २३॥
अस्त्री पुरष सबै ब्रध बाल। गौकुल तैं निकसैं बैहालि॥
कृस्नहिं दैपन बन कौ चालि। महा सोच दुप मैं चित रालि॥ २४॥
सबकौ बिकल दैपि बलिरांम। हँसै कछु न बोलै वां ठांम॥
जांनत हैं लघुभ्रात प्रभाव। तातैं किय न सोच अधिकाव॥ २५॥
प्रभु पद चिह्न दैषि भुवठौर। सब बाही मग चालै दौर॥
पंकज धुजाबज्र अंकुस जव। ऐसैं चिह्न सुमैटन परिभव॥ २६॥
भुव मैं दैषत गौषुर मांहिं। पहुंचै सब जमुना तट ठांहि॥
सब नर नारि लषै बहिं जाय। प्रभु सौं लिपट्यौ अहि दुषदाय॥ २७॥
तासौं सावधांन हरि नांहिं। देषै काली की दह ठांहिं॥
अरु जमुना तट मूर्छित ग्वाल। परै सकल कछु नांहिंन हाल॥ २८॥
पसू पुकारत सबै दुषमयि। ऐसी दसा सबननि की ठयि॥
जिन्ह ब्रजबासिन कैं बड्डु प्रैम। कृस्नहिं दैषि लहत जें षैम॥ २९॥
हास सहित प्रभु मधु चितवन। अस मधुर बचनन कौं सुमरन॥
सर्प ग्रसै श्रीकृस्न निहारि। गौपी दुषित भई निरधारि॥ ३०॥
ब्रज जन बिकल हौय दुषसानि। तिहूं लौक सूनै सै जांनि॥
रौवत जसुमति पैं सब आय। पहलै चरित कृस्न कैं गाय॥ ३१॥
प्रभु कौं मुष लषि अति दुप मांनि। अब ऐं नहिं बचि हैं इह जांनि॥
जब नंदादिक सबहीं ग्वाल। परन लगै जल मैं बेहाल॥ ३२॥

तब बलि मनै सबन कौं कीन। बुधि बिबैक तैं धीरज दीन॥
बै जांनत हैं कृस्न प्रताप। कह्यौ सांमबल है अनमाप॥ ३३॥
अैसै सब गौकुल कैं बासि। लषै कृस्न जू दुषित उदासि॥
तबै घरी द्वै लीला करिहिं। अहि बंधन तैं प्रभु सम्हरेहिं॥ ३४॥
उठत भयै ऊपर कौं आय। ब्रज बासिन निज रूप दिषाय॥
मोटौ कियौ प्रभू निज अंग। अहि तन फटन लग्यौ तिहिं संग॥ ३५॥
प्रभु तजि दैषत ठाढौ बहि। निकसि विप गाढौ स्वांसनि अहि॥
तैं मुष निकसत पावक ज्वाल। द्रिष्ट अगन सम महा कराल॥ ३६॥
क्रीडा करिबै कौं वां पास। गयै कृस्न जू सहित हुलास॥
अहिहूं भ्रमण लग्यौ चहुँ ओर। जांनि आपकौ महा सजोर॥ ३७॥
तब चढि ऊँचै फन कैं ऊपरि। निर्त करन लागै हसि श्रीहरि॥
अहि फन मनि लाली अनुभाय। प्रभु पद लाल भयै अधिकाय॥ ३८॥
मोहन सकल कलानि प्रवीन। निर्त करत भयैं तारन दीन॥
नृत्यकरन प्रभू की ईछाहिं। दैषि अपछर गंधर्ब प्रतछिहिं॥ ३९॥
आदि मृदंग ल्याय बहु बाजि। ताल भेदि बहु भांतनि साजि॥
सिध चारन मुनि अस्तुति उचारि। सुर गन बरषै पुहुप अपारि॥ ४०॥
काली कैं इकसत फन रहहिं। तिनमैं जो ऊंचौ प्रभु चहहिं॥
ताहिं कृस्न जू लातनि मारि। दैत नवायुँ भलैं अनुसारि॥ ४१॥
सर्प फनन तैं लौहू झरहिं। बिकल भयौ अहि अति दुष भरहिं॥
जहर झरैं नैत्रन कैं मांहिं। रिस करि स्वांस लैंत अधिकांहि॥ ४२॥
जो फन काली ऊंच उठांहिं। ताहीं पर प्रभु मार लगांहिं॥
पद प्रहार सौं फन नय जात। काली मांनत अति उतपात॥ ४३॥
करतहिं बिचित्र नृत अनुसारहिं। अहि फन तूटि गय निरधारहिं॥
मुष तैं रुधिर झरन अति लागि। बिषरि अंग काली दुष पागि॥ ४४॥
रु काली जांन्यौ अैसैं करि। प्रभु सथावर जंगम कैं हरि॥
अैं नारायन पुरष पुरांन। म्हैं हूं इन्हकैं सरन अग्यांन॥ ४५॥
लगि प्रभु पद अैंडीनि प्रहार। अहि फन तुटि मनि बिषरि अपार॥
तब काली की तिय भय पाय। प्रभु पैं आई अति अकुलाय॥ ४६॥
भूषन बस्त्र कैंस रहैं छूटि। हार गलै कैं सब परि तूटि॥
करि बालक आगै अहि भांम। हाथ जौरि किय प्रभुहिं प्रनांम॥ ४७॥

॥ नागपत्नय ऊचुः॥

अपनैं भर्ता कौं दुष टारन। आइ प्रभु कैं सरन सकारन॥
बौली अहि पतनी यौ वांनि। अपराधी इहि अहि अग्यांनि॥ ४८॥
दुष्टनि दंड दैंन निरधार। प्रभु तुम्ह लीनौं है अवतार॥

सत्रु मित्र नहिं कौऊ तुम्हारहिं। ग्यांन दिष्ट सबसौं इक सारहिं॥ ४९॥
प्रभु तुम्ह याकौं दीनौं दंड। सौ किय जोगईस्वर ब्रह्मंड॥
दंड दियौ सु अनुग्रह कीन। अहि सिर चरन कंवल निज दीन॥ ५०॥
हे प्रभु जाहिं देत तुम्ह दंड। ताकैं पाप हौत है षंड॥
अनुग्रह सम है क्रौध तुमार। इहि अहि हुव कौ करि अघभार॥ ५१॥
पैं इन्ह कछू बड्डौ तपकीन। तातैं तुम्ह निज पद सिर दीन॥
श्री तप किय जिन चरननि काजि। जैं पद परैं सीस या आजि॥ ५२॥
जांनि अैंन किहि पुन्य अथागि। सफल भयै हैं याकैं भागि॥
राज स्वर्ग भू पद मुप च्यार। सुष पताल कौं मुक्ति सुढार॥ ५३॥
अैंहू सिध चाहत है नांहिं। जैं तुम्ह चरननि सरन रहांहिं॥
इन्ह तमौ गुनी अहि बिपधार। दुर्ल्लभ बस्त लही सुषसार॥ ५४॥
या संसार चक्र मैं प्रांनि। कबहू बस्तू लहत मनमांनि॥
इह कहनांवति सांची भयहिं। इन्ह अहि तुम्ह पद प्रापति पयहिं॥ ५५॥
परम पुरप तुम्ह हे भगवांन। हौ सबकै आधार निदांन॥
तिनि कैं कारन हौ जग स्वांम। परमातमा तुम्हहिं परिनांम॥ ५६॥
चैतन्य ग्यांन सक्ति कैं निधि हरि। ब्रह्म अनंत सक्ति जिन जग वरि॥
निरगुन बिन बिकार अभिरांम। जुदै प्रकृति तैं तुम्हहिं प्रनांम॥ ५७॥
काल सक्ति कैं तुम्ह आधार। कालरूप तुम्हहीं करतार॥
उतपति आदि समैं कैं साषि। जक्त रूप तुम्ह बेदनि भाषि॥ ५८॥
जग द्रिष्टा कारन करतार। बिरद दीन बंधु कैं धरतार॥
पंचभूत तनमात्रा प्रांन। इंद्री मन बुधि चितहिं निदांन॥ ५९॥
अैं हैं रूप तुम्हारौ स्वामि। तुम्ह बिन कछू नांहिं बहु नांमि॥
माया कैं तिहुँ गुन अनुसार। मोहित जीव सकल निरधार॥ ६०॥
तिन्हकौं दैंन मुक्ति सुषसार। तुम्हही हौ स्वामी करतार॥
तुम्ह अनंत सूछिम अविकार। हौ सरबग्य अनादि अपार॥ ६१॥
ज्यौं कौ कहै त्यौंहि हो आप। नांम रूप तुम्ह हौ जु सदाय॥
तुम्हकौं नमसकार भगवांन। हौ प्रमान कैं मूल निदांन॥ ६२॥
स्वांस तुम्हारै बेद अनूप। प्रवृति निवृति मग तुम्हरौ रूप॥
अरु तुम्हहीं कवि हौ जग स्वांम। हे प्रभु तुम्हकौं है परिनांम॥ ६३॥
रामकृस्न बसुदैव कुमार। तुम्हरौ इहै मुष्य अवतार॥
प्रदुमन अनिरुध तुम्ह जादु पति। तुम्हहीं प्रनांम दैंन सुभ गति॥ ६४॥
तुम्हहिं अंतहकरन प्रकासक। तुम्हहिं करता पुरष रु नासक॥
तुम्हहिं रूप अनैक धरतहहिं। चित वृत्ति सौं जांनि परतहहिं॥ ६५॥
जा वृत्ति कैं तुम्हही हौ साषि। कौ नहिं पावत सकत न भाषि॥
इंद्रिन कैं प्रभु आतमारांम। सबहि प्रकासक तुम्हहिं प्रनांम॥ ६६॥

छोटै बडुं पदार्थ जितैक। जिन्ह सबकैं ग्याता तुम्ह अैक॥
जागन सपन सैंन तैं न्यार। सबकैं साषी हौ निरधार॥ ६७॥
तुम्हहौ सबके द्रिष्टा कारन। तुम्हकौं बंदन है बिपटारन॥
उतपति पालन प्रलै करतहिं। तुम्ह हीं जक्त बीच बिहरतहिं॥ ६८॥
भलै बुरै प्रांनीनि सुभाय। तुम्हहीं दीनैं प्रभू बनाय॥
सत रज तमो गुनी सब जीव। रूप तुमारौ ही जग पीव॥ ६९॥
पैं सतगुनी तुम्हैं प्यारैहिं। प्रभू तुम्ह धरम रपवारैहिं॥
प्रजा करै अपराध जु कोइ। जोग्य नृपहिं सहि रहनौं सोइ॥ ७०॥
इह अहि मूढ तुम्हहिं नहिं जांनि। अपनौं बल बिधि कौ करिमांनि॥
छमा करौ अब या अपराधि। करौ अनुग्रह प्रभू अगाधि॥ ७१॥
इह अहि अबै तजत है प्रांन। हम्ह यांकी हैं तिया निदांन॥
अस्त्री कैं पतिहिं है धन प्रांन। याकौ हम्हहिं दैहुँ अब दांन॥ ७२॥
हम्ह परि क्रिपा करहुँ करतार। आपु कहैं सुकरैं निरधार॥
हम्हहिं आपुकी दासी मांनि। करौं क्रिपा हे क्रिपा निधांन॥ ७३॥

॥ श्री सुक उवाच॥

दोहा - **श्री सुक कहत कि यौं अस्तुति, अहि पतनिन जब कीन॥
तब प्रभु धरि निज चित दया, भयै क्रिपाल प्रवीन॥ ७४॥
अहि कैं फन सब फटि गयै, मूर्छित भयौ अचैत॥
ताकौं चरनन प्रहार करि, प्रभू भयै तजि दैत॥ ७५॥**

॥ कालिय उवाच॥

**दुष्ट सदा कैं हम्ह सही, तमौगुनी रिसधार॥
छुटत नांहिं प्रांनीन सौं, निज सुभाव अनुसार॥ ७६॥
तुम्हहीं इहै बिचित्रहिं जग, रच्यौ प्रभू करतार॥
पराक्रम रु स्वभावहू, रचै अनैक प्रकार॥ ७७॥
हम्ह अति क्रौधी सर्प हैं, नहिं समझति सुभ ग्यांन॥
प्रकृति तुम्हारी दूर करि, नांहिंन सकत निदांन॥ ७८॥
तुम्ह ईस्वर सरवग्य हौ, हम्हहुँ प्रगट तुम्हकीन॥
क्रिपा क्रौध चाहौ सोइ, कीजै तारन दीन॥ ७९॥**

॥ श्री सुक उवाच॥

**सुक कहत कि अैं बचन सुनि, काली कैं भगवांन॥
आग्यां करि कुटंब जुत तूं, मति रहै याहिथांन॥ ८०॥
तू बसि जायहिं समुद्र मैं, इहां फेरि मति आय॥
तब सुध ह्वै हैं जमुन जल, पियहैं मनुष रु गाय॥ ८१॥
तेरौ म्हेरौ चरित इह, कहिहैं सुनि है कौय॥
जाकौं काहू समै मैं, अहि कौ भय नहिं हौय॥ ८२॥**

अरु या, दह मैं जो कौऊ, करिहैं दांन सिनांन॥
ताकैं टरि जैहैं सबै, पाप भलैं उनमांन॥ ८३॥
छौड्यौ रमनक दीप तैं, भय जु गरुड कौ मांन॥
सौ अब मो पद चिह्न लषि, गरुड न षैहैं आंन॥ ८४॥

॥ श्री सुक उवाच॥

श्री सुक कहत कि प्रभू कै, सुनि अैं काली बैंन॥
प्रभु की पूजा करत भौ, अस्त्रीन जुत लहि चैंन॥ ८५॥
सुमन सुगंध रु आभरन, दिव्य बस्त्र मनिमाल॥
इन्हसौं पूजा करि कियैं, प्रसंन सु प्रभू रसाल॥ ८६॥
परक्रमा दै बहुरि लै, प्रभु आग्यां वां बार॥
जुत कुटंब काली गयौ, रमनक दीप मझार॥ ८७॥
तब जमुनां जल अमृत सौ, भयौ दूरि बिष हौय॥
लगै पियन प्रभु क्रिपा सौ, बहै नीर सब कौय॥ ८८॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते षोडसोऽध्यायः ॥ १६ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ सप्तदसोऽध्यायः ॥

(कालिय के कालिय दह में आने की कथा तथा भगवान का
ब्रजवासियों को दावानल से बचाना)

॥ राजोबाच॥

दोहा - नृप पूछत अहि बसत सब, रमनक दीपहिं मांहिं॥
काली क्यौं बहि ठौरि तजि, आयौ या दह ठांहिं॥ १॥
इन्ह इकलैंहीं गरुड कौं, का अपराध सुकीन॥
सौ मोकौं समझाय कैं, कहियैं भेद प्रवीन॥ २॥

॥ श्री सुक उबाच॥

सुक कहत कि वा दीप कैं, बासी मनुष जितैक॥
दैत रहै सब अहिन कौं, भौजन सहित विवैक॥ ३॥
भौजन सामग्री जु बहै, अपनीं रिछया काज॥
दैत रहै वैनतैंय कौं, सबहीं सर्प समाज॥ ४॥
काली कद्रू कौ तनयै, पराक्रमी अधिकाय॥
गरुड अवग्यां करि बहै, भाग गयौ सब षाय॥ ५॥
इहि सुनि क्रौध कियौ गरुड, काली पैं बहि बार॥
आवत भौ करिबै गरुड, काली कौ संघार॥ ६॥

गरुडहिं आवत दैषि कैं, काली फननि उठाय॥
सांस लैंत अति क्रोध सौं, दौर्यौ सामुंह आय॥७॥
निज दांतन सौं गरुड कौ, षायौ काटि रिसाय॥
मार दैत भौ फनन की, करिबै बल अधिकाय॥८॥
गरुड क्रौध करिपंष की, दीनी झपट कराल॥
तासौं काली बिकल ह्वै, भूल्यौ देह संभाल॥९॥
भाजि जमुन दह मधि बस्यौ, सकल कुटंब समैत॥
गरुड इहां आय न सक्यौ, श्राप लगन कैं हैत॥१०॥
अैक दिवस पहलै गरुड, आयैं जमुना तीर॥
षायौ मछ उठाय इक, छुधाबंत बिनु धीर॥११॥
सौभरि रिषतहं करत है, तपस्यां भलैं प्रकार॥
मनै कियौ उन तउ गरुड, मांन्यौ नहिं निरधार॥१२॥
मच्छ दुषित उहिं ठौर लषि, रिष करि दया सुभाय॥
स्त्राप दैत भौ गरुड कौ, अधिक अनष चितलाय॥१३॥
गरुड आज तैं मछन कौं, जौ षैहैं इहिं आय॥
तौ वांकै रहि है नांहिं, प्रांन किहूं अनभाय॥१४॥
काली जांनत हौं इहै, रिष जु दियौ हौं स्त्रापु॥
तातैं निरभय हौय कैं, बसत भयौ अहि आपु॥१५॥
काली जांनत हौ रु नहिं, जांनत है अहि और॥
तातैं काली हीं बस्यौ, आय भलैं या ठौर॥१६॥
ताकौं प्रभू निकासि दिय, सुध जमुन जल कीन॥
वाहू कौं निरभय कर्यौ, चरन चिह्न सिर दीन॥१७॥
सुंदर बस्त्र सुगंधमय, अरु फूलन की माल॥
मनि भूषन कंचन जटित, पहरैं दिव्य रसाल॥१८॥
काली दहतैं कृस्न जू, निकसैं स्यांम सुजांन॥
बृज बासिन आनंद हुव, मनु पायै निज प्रांन॥१९॥
नंद जसौंमति रोहिनी, अरु बनि गौपी ग्वाल॥
मिलत भयै श्रीकृस्न सौं, सबही हौय षुस्याल॥२०॥
हँसै मिलै बलदैव जू, लियै गौद बैठारि॥
सुंदर मुष श्रीकृस्न कौं, दैषत बारंबारि॥२१॥
बृछ गाय बछबैलहूं, लहत भयै आनंद॥
मिट्यौ महादुष सबन कौं, दैषत ही ब्रजचंद॥२२॥
दियौ नंद जू द्विजन कौं, गौ सुबर्न बहु दांन॥
बिप्रनि आसिरबाद दियै, उमगि भलै उनमांन॥२३॥

जसुमति सुत कौं नव जनम, जांनि गौद बैठाय॥
नैत्र सजल करि प्रेम सौं, लीनै कंठ लगाय॥ २४॥
बसै रात वा ठौरहीं, सब मिलि गौपी ग्वाल॥
अर्द्ध रात्रि कैं समैं उहां, लागी अगनि कराल॥ २५॥
जरन लगै बृज जन सबै, तबै महादुष्ष पाय॥
सरनैं कृस्नं कुमार कैं, आयै लषि सुषदाय॥ २६॥
बोलै सबहीं गौप यौं, अहौ कृस्नं बलि दैव॥
अगनि जरावत है हम्हैं, रछा करहुँ किहुं भैव॥ २७॥
काल रूप इहि अगनि कौ, प्रगट्यौ है या ठौर॥
मित्र तुम्हारे हम्हहिं सकल, राषि लैहुं करि गौर॥ २८॥
चरन कंवल अैं रावरै, छौडि सकत हम्ह नांहिं॥
तुम्ह पद दाता अभय कैं, हम्ह समझत मनमांहिं॥ २९॥
सुक कहत कि सब जक्त कैं, ईस्वर जैं भगवांन॥
दीरघ जिनकी सक्ति प्रभु, पूरन क्रिपां निधांन॥ ३०॥
दुषित दैषि निज जनन कौं, कियौ अगनि कौं पांन॥
राषि लियैं बृज जन सकल, सुंदर स्यांम सुजांन॥ ३१॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते सप्तदसोऽध्यायः ॥ १७॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अष्टादसोऽध्यायः ॥

(प्रलम्बासुर-उद्धार)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि श्रीकृस्न जू, अरु सब गौपी ग्वाल॥
ब्रज मैं अपनैं गैह कौं, आअैं प्रातहि काल॥ १॥
बसत भयै आनंद सौं, ब्रज मैं गौपी ग्वाल॥
श्रीकृस्न रु बलिदैव जू, क्रीडा करत रसाल॥ २॥
इतनैं हीं मैं प्राप्त हुव, ग्रीषम दिन रितु आय॥
जौ सबहीं प्रांनीन कौं, अति उदास दरसाय॥ ३॥
पै बृंदाबन मध्य बहि, ग्रीषम रितहुँ निदांन॥
रितु ब्रसंत सम लगत है, सुनियैं नृपति सुजांन॥ ४॥
जांह बिराजत भ्रात जुत, कृस्न कुंवर करतार॥
तांह सदाई रहत है, रित बसंत सुषसार॥ ५॥

झरनां झरत तांह सुभग, तिन्ह जल सरदी पाय॥
सदा हरै तरु रहत है, फल फूलन सौं छाय॥ ६ ॥
झरना नदी सरौवरन, मधि ह्वै सीतल पौंन॥
चलत सुलागत है भलौ, अति सुषदाय सुठौंन॥ ७ ॥
उत्पल औरु कह्लार इन्ह, जातिक कंज अपार॥
तिन्ह पराग बिच पवन कैं, आवत चल्यौ सुढार॥ ८ ॥
तासौं सूरज अग्नि कौं, किहुं न हौत संताप॥
जल न सुषत सरबरन कौं, रहत अथाह सदाप॥ ९ ॥
जल अगाध की तरंग सौं, गीली रहहीं भूमि॥
त्रिनहूं सदा हरै रहत, सरस सौभ की धूमि॥ १० ॥
अैसौ बृंदावन सुभग, सम बैकुंठ न जास॥
सबद करत पंछी बिबिधि, जिहिं ठां सहित हुलास॥ ११ ॥
श्रीकृस्न रु बलिदेव जू, गौप गाय लैं संग॥
बैनु बजावै ठौर जिहिं, गयै सहित उछरंग॥ १२ ॥
लगै बिबिधि क्रीडा करन, सांम रांम सब ग्वाल॥
कुंजनि कुंजनि रमत हैं, कंवल नैन गौपाल॥ १३ ॥
मौर पच्छ पल्लव सुमन, इनकैं छौगा माल॥
अदभुत भांति बनाय कैं, पहरत परम रसाल॥ १४ ॥
नग धातुन कैं अंग मैं, भूषनानी चित्र बनाय॥
आपस मांहिं सराहहीं, मुदित हौय मुसकाय॥ १५ ॥
नृत करैं श्रीकृस्न जब, ग्वाल करैं मिलि गांन॥
मुरली श्रृंग रु ताल कर, बजवत सषा सुजांन॥ १६ ॥
ग्वाल रूप धरि दैवतां, प्रभु की अस्तुति करंत॥
ज्यौं नटकी नट उमगि कैं, करत अस्तुति बुधवंत॥ १७ ॥
किहुँ कौं जांनै लांघि अरु, दैनौ किहूं बगाय॥
किहुँ कौं लैंनौ षैंचि कैं, डारन किहूं भ्रमाय॥ १८ ॥
मल्ल बिद्या कैं पैंच अैं, तिन्ह पैंचन अनुसार॥
मल्ल जुध करन उमांह जुत, ग्वाल रु कृस्न कुमार॥ १९ ॥
निर्त करत जब ग्वाल हरि, बलि गावत जुत चाह॥
मुरली श्रृंग रु ताल करि, बजवत करत सराह॥ २० ॥
कबहूं लुक लुक मींचनी, षैलत हँसि हँसि ष्याल॥
मृग पंछीन की सी कबहुं, लीला करत रसाल॥ २१ ॥
मैंडक ज्यौं कूदत कबहुँ, झूलै कबहुँ झूलंत॥
ग्वालन मैं नृप हौय कैं, बैठे कबहुँ अनंत॥ २२ ॥

कबहूँ कौउ कठौर फल, लैं निज मूंठी मांहिं॥
ग्वालन कौं पूछत काह, है हम्ह कर कैं ठांहिं॥ २३ ॥
कुंज सरोवर नग नदी, बन इन ठौरन मांहि॥
श्रीकृस्न रु बलिदैव जू, क्रीडत सुष सरसांहिं॥ २४ ॥
असुर प्रलंब तिहीं समैं, ग्वाल सरूपहिं धारि॥
आयौ प्रभु कौं पकरिबै, अपनौं सत्रुहिं बिचारि॥ २५ ॥
श्रीकृस्न अरु बलिदैव जू, गयै असुर कौं जांनि॥
पैं उन्हकौं निज सषा किय, भैद हितन कौं ठांनि॥ २६ ॥
बोलै सषन बांहि समै, कहत भयै यौं बैंन॥
अहौ मित्र क्रीडा करैं, अबु कछु और सुषैंन॥ २७ ॥
श्रीकृस्न रु बलि दैव जू, हौत भयै सिरदार॥
कितक ग्वाल बल वौर हुव, कितक वौर करतार॥ २८ ॥
ठहराई ता षैल मैं, संगी हारनवार॥
जीतन वारै कौं चढै, कांधै परि निरधार॥ २९ ॥
लै जाहीं तट जमुंन कैं, बिचहिं दैन ऊतारि॥
इहै हौड बदि कैं लगै, षैलन भलैं प्रकारि॥ ३० ॥
षैलत बट भांडीर ठां, प्राप्त हौत भय जाय॥
षैलत सहित उमंग सब, चित अति चाव बढाय॥ ३१ ॥
श्रीदामा लौं आदि जैं, ग्वाल बड्डै जितनैक॥
हौत भयै बलि और तैं, जीतै गहि निज टैक॥ ३२ ॥
तिनकौं कंध चढाय श्री, कृस्न वौर कैं ग्वाल॥
ठौर उतारन की बदी, तहँ लै गयै सचाल॥ ३३ ॥
श्रीदामा कौं कृस्न जू, अपनैं कंध चढाय॥
लै चालै उछरंग सौं, मंद मंद मुसकाय॥ ३४ ॥
हौ बहि असुर प्रलंबश्री, कृस्न वौर सौ हारि॥
श्री बलि देवहिं कंध निज, चढय चल्यौ वां बारि॥ ३५ ॥
जौरावर श्रीकृस्न कौं, बहै असुर पहिचांनि॥
इन्हकी द्रिष्टि बचाय कैं, बलि लैं चल्यौ अग्यांनि॥ ३६ ॥
ठौर उतारन की हुती, जांह उतारै नांहिं॥
ब्हां तैं आगै लै चल्यौ, कपट धरै मनमांहिं॥ ३७ ॥
नग सम श्री बलिदैव कौं, बौझ सहि सक्यौ नांहिं॥
तबैं दैत्यहिं क्रौध करी, भयौ रूप उहिं ठांहिं॥ ३८ ॥
कारौ असुर उतंग अति, कंचन भूषण अंग॥
तापरि श्री बलिदैव जू, गौरै स्वार सुधंग॥ ३९ ॥

तैं अैसैं सौभित भये, मनुष घन उपर चंद॥
बल करि मग आकास कैं, लै चाल्यौ मति मंद॥ ४० ॥
कछु इक डरि बलिदेव जू, सावधांन ह्वै फैरि॥
मूठी बज्र समान दियै, वाहि मस्तक बिनु झैरि॥ ४१ ॥
ज्यौं परबत ऊपरि कियौ, बासव बज्र प्रहार॥
तइसैं श्री बलिदैव दिय, असुरहिं मूठी मार॥ ४२ ॥
तासौं माथौ असुर कौं, फाटि गयौ बिकराल॥
मुष लौहू झरि गिरत भौ, करिकैं सबद बिसाल॥ ४३ ॥
जइसै मार्यौ बज्र कौं, बीषरि गिरै पहार॥
तइसै असुर गिर्यौ बहे, मरत भयौ निरधार॥ ४४ ॥
मर्यौ प्रलंबहिं दैषिकैं, प्रसंन भयै सब ग्वाल॥
कीनी श्रीबलदैव की, अति सराह उहिं काल॥ ४५ ॥
आसिरबाद सु दैंन सब, लागै बउत प्रकार॥
सुरगन हूं आनंद लहि, बरषै पहुप अपार॥ ४६ ॥
मिलत भयै बलि दैवजू, सौं हँसि हँसि सब ग्वाल॥
अग्रज सौं श्रीकृस्न हूं, मिलि कैं भयै षुष्याल॥ ४७ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते अष्टादसोऽध्यायः ॥ १८ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अैकोनविंसोऽध्यायः ॥

(गौओं और गौपों को दावानल से बचाना)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि क्रीडत रहै, ग्वाल सु आप समांहिं॥
दूरि निकस गायै गई, त्रिन चरती बन ठांहिं॥ १ ॥
बां बन तैं गायै निकसि, गई मुंजबन मांहिं॥
बिकल भई अति त्रिसा सौं, जल न लह्यौ उहिं ठांहिं॥ २ ॥
श्रीकृस्न रु बलिदैव जू, और ग्वाल लैं लार॥
गायन कौं ढूंढत फिरैं, पावै नहिं वां बार॥ ३ ॥
तब लषि गौषुर चिह्न अरु, चरै तुटै त्रिन दैषि॥
ता मारग की वौर ह्वैं, ढूंढन चलै बिसैषि॥ ४ ॥
मुंजा कैं बन मांहिं जब, गायै ग्वाल निहारि॥
भयै बुलावत प्रसंन ह्वै, लैं लैं नांम पुकारि॥ ५ ॥

प्रभु हुँ गौ बुलाई जबैं, गायैं सुनि हरि वांनि॥
दौरि पूछहिं उठाय कैं, आवत भई निदांनि॥ ६॥
बां बन ताहीं समैं, लागि दवाग्नि कराल॥
पबन जौर तैं बदि गई, प्रिथ्वी नभ लौं ज्वाल॥ ७॥
बां बनबासी जीव सब, जरन लगैं दुष पाय॥
गाय गौप डरपन लगै, दैषि अगनि अधिकाय॥ ८॥
श्रीकृस्नं अरु बलिदैव जू, की लिय सरन सुआय॥
मृत्यु कैं डरसौं ग्वाल सब, बोलै या अनुभाय॥ ९॥
अहौ कृस्न बलिदैव जू, पराक्रमी बड़ु आप॥
हम्हैं जरावत है अगनि, तुम्ह इह मैटो ताप॥ १०॥
आप हम्हारै नाथ हौ, हम्ह तुम्ह आश्रय आय॥
कछु भय मांनत हैं न हम्ह, दुष इह दैहुँ मिटाय॥ ११॥
सुक कहत कि यौं सषन कैं, दीन बचन सुनि स्यांम॥
करि अनुग्रह बौलत भयै, बचन महा अभिरांम॥ १२॥
अहौ ग्वाल भय मति करौ, मूंदि लैहुँ निज नैंन॥
इह सुनि ग्वालनि मूंद लिय, सबनि नैत्र सुष दैंन॥ १३॥
जोग सक्ति सौं तब प्रभू, कियौ अनल कौ पांन॥
अरु राषै गौ गौप सब, बन भांडीर सथांन॥ १४॥
तब ग्वालन द्रिग षौल किय, अचिरज चित अधिकांहिं॥
हम्ह आयैं कइसैं इहां, हुतै मुंज बन ठांहिं॥ १५॥
अपनीं माया जौग करि, प्रभु इहि कारज कीन॥
सकल ग्वाल निज चित विषै, भैद जांनि इह लीन॥ १६॥
जांनत भयै कि कृस्न जू, कौउ बड़ै हैं दैव॥
और किहूं सौं नहिं बनैं, ऐसी रछा सुभैव॥ १७॥
श्रीकृस्न रु बलिदैव जू, लैं गायन कौं सांझ॥
संग ग्वाल करहीं अस्तुति, आयै ब्रज कैं मांझ॥ १८॥
प्रभु कौं बिनु दैषैं छिनहुँ, जुग सम ह्वै गौपीन॥
तिन्हकौं हुव आनंद जब, प्रभु कौं दरसन कीन॥ १९॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी कृते
अैकोनविंसमोऽध्यायः ॥ १९ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ बिंसोऽध्यायः ॥

(वर्षा और शरद ऋतु का वर्णन)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - श्री सुक कहत कि गौप सब, अप अपनैं घरि आय॥
निज निज तिय सौं बात इहि, कहत भयै समझाय॥ १ ॥
आज हत्यौ बलदैव जू, असुर प्रलंब कराल॥
अरु कीनौ श्रीकृस्न जू, पांन दवाग्नि बिसाल॥ २ ॥
बृध गौप अरु गौपियन, इहि सुनि अचिरज मांनि॥
दैवता मैं श्रीकृस्न जू, उत्तम लियैहुं पिछांनि॥ ३ ॥
बरिषा रितु प्रापति भई, इतनैं ही. मैं आय॥
सब जीवन की हौत है, जामैं उपजि सुभाय॥ ४ ॥
ससि सूरज कैं चहुँ दिसी, भयौ जल हरी चक्र॥
उजियारौ ससि सूर्ज कौ, हौवै लाग्यौ मक्र॥ ५ ॥
उज्जलता आकास की, जात रही वां बार॥
उडुगन द्रिष्टि न आवहीं, भयौ घटा अंधियार॥ ६ ॥
घन बिजुरिन सौ छाय कैं, सौभित भौ निरधार॥
जइसैं ब्रह्मंड ढप्यौ रहत, प्रकृति गुनन अनुसार॥ ७ ॥
आठ महीनां सूर्जहीं, सौषत भुव कौं नीर॥
सौ रवि बरषा रितु बिषैं, बरषत जल की सीर॥ ८ ॥
सूरज ही की किरन तैं, प्रगट हौत है मैह॥
कंपायै घन पवन नै, बिजुरी सहित अछैह॥ ९ ॥
दुषित तपत प्रांनीनि लषि, बरसन लाग्यौ नीर॥
दयावंत ज्यौं दीन परि, बरषत धन मति धीर॥ १० ॥
ग्रीषम रितु की ताप तैं, सूषि रही ही भूमि॥
सौ अति प्रफुल्लित ह्वै गई, भयै मैह की धूमि॥ ११ ॥
जइसै कौं करि कामना, तपस्यां करै सुढार॥
तबै सूषि तन जात है, परिश्रम कैं अनुसार॥ १२ ॥
फिरि तपस्यां कौ पाय फल, पुष्ट हौत सुषमांनि॥
त्यौंही भुव प्रफुल्लित भई, बरषैं घन सुष दांनि॥ १३ ॥
जुगनौं चमकत राति कौं, तै ऐसैं दरसात॥
मनौं हवाई छुटत है, अगनि जंत्र बिषयात॥ १४ ॥
घन सौं ससि उडुगन छिपैं, नांहिं तनक दरसाय॥
ज्यौं कलि मैं पाषंड सौं, बेदमार्ग छिपि जाय॥ १५ ॥
मैंडक घन कौं सबद सुनि, बौलत करि अति सौर॥
जइसैं गुरु कौ बचन सुनि, बेद पठत द्विज भौर॥ १६ ॥

सूषि रही ही लघु नदी, तैं चहुँ दिसि उमडाय॥
ज्यौं बिषई इंद्रीन बसि, बढत अधिक धन पाय॥ १७॥
हरे हरे त्रिन परि लसत, बीरबहूंटी लाल॥
जहँ तहँ छत्र समांन हुवै, छतना लता रसाल॥ १८॥
राज्य लछमी भुव मनू, पावत भई सुढार॥
तातैं सोभावंत अति, दीसि परत निरधार॥ १९॥
घन सौं आछै हौत हैं, अंन षैत कैं मांहिं॥
तिन्हकौं लषि सुष पावहीं, करसा निज चित ठांहिं॥ २०॥
घन बरषै नांहिंन जबैं, सूषि जात है अंन॥
तबैं चितहिं करसांन कौं, क्यूंहुं न हौत प्रसंन॥ २१॥
जल थल बासी जीव सब, घन जल पांन प्रभाय॥
सुंदर रूप भयै धरत, अधिक मौद मन पाय॥ २२॥
जइसैं सेवा प्रभू की, करैं भलैं चित लाय॥
तब प्रांनी की जक्त मैं, अधिक सौभ सरसाय॥ २३॥
सरिता सबै समुद्र मैं, उमडि मिलत भइ जाय॥
तिन्हसौं हौय मनोज बसि, सिध अधिक अकुलाय॥ २४॥
भयौ बढावत जौर सौं, अपनीं बउत तरंग॥
भमरी परत रु गरजहीं, करिकैं सबद उतंग॥ २५॥
जइसैं आछै जोग कौं, साधि सकत जो नांहिं॥
जाकौं चित बिषईन लषि, है आसक्त लुभांहिं॥ २६॥
मग मैं त्रिन उपजैं बउत, जिन्हसौं छिपि गइ राह॥
ज्यौं द्विज भूलत बेद कौं, पढनौं बिनु अवगाह॥ २७॥
घन सुषदाई जक्त कैं, बिजुरी थिर तिनमैं न॥
जइसैं पति कैं कहै मैं, चंचल तिया रहै न॥ २८॥
परबत बिकल भयै नांहिं, परनैं मैंघ्रन धार॥
ज्यौं हरि भक्त नहिं बिकल है, जग कैं दुष अनुसार॥ २९॥
इंद्र धनुष सौभित महा, भयौ बीच आकास॥
जइसैं सृष्टि भयै प्रगट, सौभित आत्मा भास॥ ३०॥
ससि की किरनन तैं भयौ, घन सौभित अधिकाय॥
ससि सौभा घन छयैं तैं, नांहिंन परत लषाय॥ ३१॥
निज प्रकास सौ जीव ज्यौं, अहं प्रकास करंत॥
अहं जीव पैं छयै तैं, जीव सौभ न रहंत॥ ३२॥
उमड्यौ मैह निहारि कैं, मौरनि हरषित हौत॥
दुषी ग्रहस्त ज्यौं साध कौं, लषि कैं हरषित हौत॥ ३३॥

घन जल सपरस सौं भये, तरु डहडहै संतुष्ट॥
ज्यौं ब्रत करि चुकि मनुष बहु, भौजन करि ह्वै पुष्ट॥३४॥
सरोबरन कैं तटन मैं, हुव अति कंटक कीच॥
सारस चकवा हरषि कैं, बसत भयै वां बीच॥३५॥
जइसैं अग्यांनी बउत, दुष पावत घर मांहिं॥
तौहू घरहीं मैं रहत, छौडि सकत है नांहिं॥३६॥
घन कैं बरषन तैं फुटी, जहँ तहँ सरवर पाज॥
ज्यौं कलि मैं पाषंड सौं, मिटत बेद मग काज॥३७॥
मेघ जू प्रेरे पवन कैं, जगहिं भयै जल दैत॥
जइसैं आसिरबाद द्विज, दैत नृपति सुभ हैत॥३८॥
फल जामुन रु षजूर कैं, जिहँ बन पकै सुढार॥
जहिं गौ गौपिन सहित प्रभु, लागै करन बिहार॥३९॥
गाय मुटापैं तैं लगी, चलन मंद गति चाल॥
तउ बुलावै प्रभू जबै, आवै दौरि सचाल॥४०॥
बनबासी हरषित भये, मधुचुयै ब्रछन मांहिं॥
हौंन लग्यौ जलधार कौं, सबद पहारन ठांहिं॥४१॥
कबहूं तरुतर बैठि फल, भौजन करत मुरारि॥
बैठि सिला परि भात दधि, जैंवत कबहुँ सुढारि॥४२॥
आंष मूंदि कैं त्रिनन परि, बैठि उगारत गाय॥
बछरा कूदत फिरत है, निज निज पूछ उठाय॥४३॥
सबहीं जीवन कौं महा, बरषा रितु सुषदाय॥
ताकौ लगैं सराहिबै, रांम सांम जुत चाय॥४४॥
श्रीकृस्न रु बलदेव जू, अैसैं करत बिहार॥
बसत रहै ब्रज मैं भलैं, हैत सबनि सुषसार॥४५॥
फिरि आई रितु सरद जब, प्रफुल्लित भयै सरौज॥
मंद पवन चालन लग्यौ, बढि बिषयन की मौज॥४६॥
बीच नदिन कैं ह्वै गयै, उज्जल नीर सुढार॥
ज्यौं प्रांनिन कैं हौहिं चित, बिमल जोग अनुसार॥४७॥
नभ तैं घन भुव तैं किचर, कियैं सरद रितु दूर॥
मिटत मैल मन ज्यौं कियै, प्रभू भक्ति सुष मूर॥४८॥
मैघन कैं धन नीरहीं, हुतौ सु करि बगसीस॥
तासौं उज्जल हौय कैं, सौभै बिसबाबीस॥४९॥
ज्यौं तिय सुत धन छौडि कैं, बिरकत सौभा पाय॥
साधु सकल जगजांनि कैं, बंदन करत सुभाय॥५०॥
परबत किहुँ ठां दैत जल, अरु किहुं ठां नहिं दैत॥
ज्यौं ग्यांनी किहुँ ग्यांन दै, किहुं न दैत किहुँ हैत॥५१॥

सरौवरन अरु नदिन कौं, घटबै लाग्यौ नीर॥
सौ नांहिंन जांनत भयै, जल कैं जीव अधीर॥ ५२॥
जइसैं दिन दिन हौत है, नर की आर्बल छीन॥
सौ ग्रहस्त मूरष मनुष, नहिं जांनत मति हीन॥ ५३॥
रवि किरनन कैं तैज सौं, थौरै जल कैं मांहिं॥
हौत भयै जल जीव अति, ब्याकुल पंकहिं ठांहिं॥ ५४॥
जइसै ब्याकुल हौत है, धन बिनु मनुष ग्रहस्त॥
बिषै भौग नहिं करि सकैं, निरधन भलैं समस्त॥ ५५॥
अंन षैत मैं पकि गयै, रही कचाई नांहिं॥
जइसै ग्यांनी चितहिं तैं, अहंता ममता जांहिं॥ ५६॥
जल समुद्र कौं थिर भयौ, सरद समैं कैं मांहिं॥
ज्यौं आत्मा कैं ध्यांन तैं, मुनि चित थिर ठहरांहिं॥ ५७॥
पाल बांधि राषत भयै, जहं तहं करसा नीर॥
ज्यौं ग्यांनी करि मनहिं बसि, राषत ग्यांन सधीर॥ ५८॥
मैघ मिटै उज्जल महा, सौभित भौ आकास॥
ज्यौं सतगुन तैं बिमल ह्वै, सौभित चित सप्रकास॥ ५९॥
पूरन ससि उडुगननि जुत, सौभित भयौ सुढार॥
जुत सषांन ज्यौं कृस्न जू, सौभित भलैं प्रकार॥ ६०॥
नहिं सीतल अरु नहिं गरम, फुलबारिन की पौंन॥
तांसौं मिटि संताप दुष, सबहिन चैन सुठौंन॥ ६१॥
मृगी पंछिनी गाय तिय, गर्भित भई अपार॥
निज निज पति जुत सरद रितु, मंधि सुष लह्यौ सुढार॥ ६२॥
ज्यौं ईस्वर कैं निमत करि, क्रिया मनुष फल पाय॥
महा मौद मन मांनहीं, दुष सब दैत गमाय॥ ६३॥
हौंन सूर्ज कैं उदय मैं, पंकज भयै प्रफूल॥
ज्यौं राजा कौं दैषि कैं, प्रजा लहत सुष मूल॥ ६४॥
जांह जांह बिच नगर कैं, बासव निमत सुढार॥
लगी हौम बिधि हौंन सुभ, भांति भलैं अनुसार॥ ६५॥
बरिषां मैं मुनि बनिक नृप, रुकित हुते सब कौय॥
तैं अप अपनैं काज कौं, फिरत भयै सुष भौय॥ ६६॥
जइसैं उत्तम पायहिं तन, सिध जन लहि आनंद॥
भलै भलै कारिज करत, मैटि सकल दुष दंद॥ ६७॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते बिंसमोऽध्यायः॥ २०॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ ऐकविंसोऽध्यायः ॥

(वेणुगीत)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि रितु सरद सौं, है जहं निरमल नीर॥
कमल पराग सुगंध लै, चलत सुढार समीर॥ १॥
ऐसैं बन मैं प्राप्त हुव, प्रभु लै गायै ग्वाल॥
ब्रछ सरौवर नग नदी, जिहं ठां महा रसाल॥ २॥
जुत सषांन बलि दैव जू, जांह चरावत गाय॥
ऐसै बन मैं कृस्न जू, बजई बैंनु सुभाय॥ ३॥
जा मुरली कैं सुनन तैं, है उदीपन कांम॥
थिर चर मौहित हौत सब, रहत थकै इक ठांम॥ ४॥
सुन ऐसौं सुर बैंनु कौं, ग्रह बैठी ब्रजबाल॥
बरनन मुरली सबद कौं, लागी करन रसाल॥ ५॥
बरनन मुरली सबद कौं, करत हुती जिहं बार॥
आय गयै सुधि तियन कौं, श्रीकृस्न चरित सुढार॥ ६॥
तासौं बढ्यौ मनौज हुव, बौंरी सी ब्रजनारि॥
बरनन आछै बैंनु कौं, करि न सकी निरधारि॥ ७॥
कीनैं नटबर बैष हरि, मौर मुकट बनि सीस॥
कमल कर्निका करनि पैं, धरै महा छबि दीस॥ ८॥
पीतांबर धारन कियैं, पहरैं उर बन माल॥
सषा कीर्ति चहुं वौर कौं, गावत हौत निहाल॥ ९॥
मुरली कैं बैझनि उमगि, सांम बजावत बार॥
अधर सुधारस सौं करत, पूर्न भलैं अनुसार॥ १०॥
ऐसैं प्रभू बिराजहीं, बृंदावन कैं मांहिं॥
मत्त भई तिन्ह ध्यांन सौं, गौपी जन ग्रह ठांहिं॥ ११॥
बहुरि मन हरन बैंनु कौं, सुनिकैं सबद रसाल॥
हरि कौं बर्नन करत धरि, ध्यांन भई उरमाल॥ १२॥

॥ गोप्य ऊचुः ॥

कौउ तिया किहुँ सषी सौं, ऐसैं कहत सुनाय॥
जुत सषानि बन जात है, लियैं कृस्नं जू गाय॥ १३॥
द्रिग कटाछि जुत उन्ह बदन, जिन किहुँ लष्यौ रसाल॥
तिन्हहीं फल निज द्रिगन कौं, लीनौं सही बिसाल॥ १४॥
फिरि बौली तिय और यौं, सुनि हे सषी सुजांन॥
गावत है श्रीकृस्नं जू, बैठै मध्य सषांन॥ १५॥

तैं लागत आछै महा, सौभा बरनि न जाय ॥
रंगभूमि मैं गावतै, ज्यौं नट सौभा पाय ॥ १६ ॥
पंकज पल्लव आंब मिलि, मौर पच्छि की माल ॥
पहिरैं सौभित हैं सुभग, पीरै बस्त्र रसाल ॥ १७ ॥
फैरि और गौपी कौउ, बौली या अनुभाय ॥
अहे सषी मुरली काह, कियौ पुन्य अधिकाय ॥ १८ ॥
अधर सुधा श्रीकृस्न कौं, करत बैंनु इहि पांन ॥
वां रस कैं तौ जोग्य हम्ह, हैं त्रिय नवल सुजांन ॥ १९ ॥
जा सरिता कैं नीर सौं, सिंच्यौ बैंनु कौ बंस ॥
सौ सरिताहूं हौत हैं, हरषित महा प्रसंस ॥ २० ॥
बांमै प्रफुल्लित पंकजनि, मनु रुमांच आनंद ॥
अलि गुंजत है सौ मनौ, उच्छव गांन सुछंद ॥ २१ ॥
अरु मुरली जा बांस की, सौहूं हरर्षित बांसु ॥
तिन्हमैं तैं रस चुवत सौ, है आनंद कैं आंसु ॥ २२ ॥
जइसै गुरजन दैषि कैं, पुत्र सपूतहिं सुढार ॥
पावत है आनंद अति, उमडि प्रेम निरधार ॥ २३ ॥
तइसैं लषि कैं बैणु कौं, बांस लहत आनंद ॥
मुरली हूं गर्वित भई, लागि मुषै ब्रज चंद ॥ २४ ॥
कृस्न चरन कैं चिह्न सौं, सौभित ह्वै रहि भूमि ॥
अरु सुन गरजन बैंनु की, नृतत कैंकीन झूमि ॥ २५ ॥
परबत कैं बासी सबै, जंतु थकित वां बार ॥
इकटक चितवत रहत है, चलि न सकत निरधार ॥ २६ ॥
ऐसौ बृंदावन सुभग, महा सौभ कौ सार ॥
अधिक सुवर्ग तैं प्रिथी की, कीर्ति बढावनहार ॥ २७ ॥
और अैक बौलत भई, गौपी सहित हुलास ॥
हे सषि हिरनी धन्य है, मो हिय सुनि इहभास ॥ २८ ॥
जें मुरली कौं नाद सुनि, चितवत पतिन समैत ॥
सोइ पूजा श्रीकृस्न की, करत अधिक धरि हैत ॥ २९ ॥
गौपी बौली अैक यौं, हे सषि सुनि मौ बात ॥
अस्त्रीन कौ आनंद कैं, दाता कृस्न बिषयात ॥ ३० ॥
अैसैं कृस्नं कुमार की, मुरली कौं सुनि नाद ॥
पतिन सहित है अपछरा, तउ बढि कांम बिषाद ॥ ३१ ॥
कैंसन तैं गिरहीं सुमन, अरु नींवी षुलि जात ॥
चढी बिमांननि कैं उपरि, अति व्याकुल दरसात ॥ ३२ ॥

और अैक बौली तिया, सुनहुँ सषी मौ बैंन॥
बजावत है श्रीकृस्न जू, मुरली जबैं सुषैंन॥ ३३॥
उन्हकैं मुष तैं सुर बहै, निकस्यौ सुधा समांन॥
ताकौं श्रवननि पात्र करि, उंच करत गौपांन॥ ३४॥
वै गायें हैं धन्य लषि, कृस्नहिं थकित रहंत॥
बछराहूं पय पियत नहिं, स्यांम बदन चितवंत॥ ३५॥
गौपी बौली और इक, धन्य पंछी बन ठांम॥
निश्चै कर जांनै परत, है कौ मुनि अभिरांम॥ ३६॥
जैं मुरली श्रीकृस्न की, सुनि आनंद सुमांनि॥
आंषि मूद बौलत नांहिं, बैठै ब्रच्छ सथांनि॥ ३७॥
और अैक बौलत भई, गौपी अैसैं भाय॥
अहौ सषी श्रीकृस्न की, मुरली धुन सुषदाय॥ ३८॥
सुनि कैं सरिताहू थकी, परहीं भँवरी नांहिं॥
मनौ पंग गति ह्वै गई, थकित नीर दर सांहिं॥ ३९॥
भुजा तरंगन सौं कंवल, लै कैं ह्वै वसि कांम॥
पूजत है श्रीकृस्न कैं, चरन कंवल अभिरांम॥ ४०॥
गौपी इक बौलत भई, अैसै बचन रसाल॥
बैंन बजावत धांम मैं, गौचारन गौपाल॥ ४१॥
तबैहिं छत्र आकास घन, नभ बिच रहत जु छाय॥
मंद मंद बरषत फुही, मनौं सुमन बरषाय॥ ४२॥
और अैक बौलत भई, गौपी प्रेम प्रकार॥
कैसर लगवत तनन मैं, कृस्न प्रिया सुकुमार॥ ४३॥
सौ आलिंगन कैं समैं, सांम अंग लगि जात॥
फिरि वन मैं त्रिन पैं चतुर, पौढि जबै अलसात॥ ४४॥
तब बहि कैसरि तृनन सौं, लागि जाति निरधार॥
सौ बनबासी भीलनी, लगवत हिदैं सुढार॥ ४५॥
बहि कैसरि कैं लगन तैं, कांम बिथा मिटि जात॥
धन्य भीलनी नारिबै, जक्त बीच बिषयात॥ ४६॥
और अैक बौली तिया, सुनि सजनी मौ बैंन॥
गौवरधन नग धन्य इहि, कहियतु स्त्रैष्ट सुषैंन॥ ४७॥
कृस्न चरन कैं परस सौं, बढि आनंद अपार॥
त्रिनही या गिरिराज कैं, उठत रुमांच सुढार॥ ४८॥
कंद मूल त्रिन नीर अैं, लैं गिरिराज सुजांन॥
अग्रज जुत श्रीकृस्न कौं, करत भलैं सनमांन॥ ४९॥

बन मैं गाय चरावहीं, ग्वालन जुत घनस्यांम॥
गौप गव बंधन की रसी, लिय लपैटि सिर ठांम॥५०॥
जौरावर गौ पकरिबै, डारन सींगन मांहि॥
करि फांसी रसरीन की, धरै कंध निज ठांहिं॥५१॥
गौप भेष अैसैं धरैं, अग्रज जुत घनस्यांम॥
बिहरत हैं बन बन बिषैं, करि क्रीडा अभिरांम॥५२॥
जिन्ह मुरली कौं सबद सुनि, थिर चर थकित सुहौत॥
ब्रछन हूं कैं तन बिषैं, ह्वै रोमांच उदौत॥५३॥

॥ श्रीसुक उवाच॥

अैसैं गौपी ग्रेह मैं, गावत हरि लीलानि॥
मन लाये कृस्नहिं बिषै, रहत मोद चित मांनि॥५४॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते अैकबिंसोऽध्यायः ॥ २१ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ द्वाविंसोऽध्यायः ॥

(चीर हरण)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि रितु हैम मैं, अगहन मांसहि मांहिं॥
गौपी सौरह सहस मिलि, ब्रत आरंभ रचांहिं॥१॥
अैकासन भौजन करत, प्रातहिं करत सिनांन॥
दैवी कात्यायनी कौ, पूजत भलैं सुजांन॥२॥
अरुनोदय कैं समैं मैं, करि बिच जमुना स्नांनि॥
मूर्ति भवांनी रेत की, रचि पूजत हित ठांनि॥३॥
धूप दीप फल दल पुहप, चांवल मलय सुगंध॥
इन्ह करि पूजा करत इहि, मंत्र पढत सुष संध॥४॥
महा जोगिनी ईस्वरी, कात्यायनि महामाय॥
हौहुँ हम्हारै पति सुभग, नंदहिं पुत्र सुषदाय॥५॥
नमसकार करि मंत्र इहि, पढत भई सबनारि॥
अैक मास ब्रत कियौ चित, प्रभु मैं लाय सुढारि॥६॥
प्रात समैं इक दिवस उठि, गहि पांनिन सौं पांनि॥
गावत कृस्नहिं चरित कौं, करिबै चालि सिनांनि॥७॥
धरि धरि बस्त्र किनार जल, पैठि जु जमुनां मांहिं॥
कृस्नं कुंवर आवत भयै, बां बैरां उहिं ठांहिं॥८॥

बस्त्र सबन कैं लैं चढै, तरु कदंब परि स्यांम॥
अरु अैसैं बौलत भये, बांनी अति अभिरांम॥९॥
हे अस्त्री आवौ इहां, निज निज पट लै जाहुँ॥
म्हैं हांसी नांहिंन करत, सत्य कहतहूं आहुँ॥१०॥
तुम्ह साधत ब्रत ता लियै, म्हैं नहिं बौलत झूठ॥
अैक अैक कैं मिलि सबै, लीजै बस्त्र अपूठ॥११॥
इहै बचन श्रीकृस्न कौ, सुनि गौपी मुसकाय॥
प्रेम मगन लज्जित भई, आपस मांहिं चिताय॥१२॥
जल मैं तैं निकसी नांहिं, कांपत सीत प्रभाय॥
कंठहिं लौं जल मैं षरी, बौली बचन सुनाय॥१३॥
नंदराय कैं पुत्रहिं तुम्ह, करहुँ न इति अनीत॥
इहां आय कैं दैहुँ पट, हम्ह कांपत लगि सीत॥१४॥
अै हौ सुंदर स्यांम हम्ह, सबै तुम्हारी दासि॥
तुम्ह कहिहौ करि हैं सोइ, हे प्रीतम सुषरासि॥१५॥
दीजै हम्ह कौं बस्त्र अब, अरु जौ दे हौ नांहिं॥
तौ हम्ह बाबा नंद सौं, कहिहैं चलि ग्रिह ठांहिं॥१६॥
इहि सुनिकैं श्रीकृस्न जू, जौ तुम्ह सब मौ दासि॥
तौ म्हैं कहूं सु करौ पट, लैहुँ आय मौ पासि॥१७॥
तब सब कन्या सीत सौं, कंपित लाज मिटाय॥
निकसी बाहरि नीर तैं, कर सूं अंग दुराय॥१८॥
तबै प्रभु उन्ह चित सुध लषि, बौलै पट धरि कंध॥
तुम्ह नित नागी न्हात हौ, करिकैं ब्रत कौ बंध॥१९॥
तातैं जल कैं अमर की, भई अवग्यां जांनि॥
बांकौं करौ प्रनांम सब, जोरि जोरि बिय पांनि॥२०॥
बांसौ छमा करायकैं, निज अपराध सुभाय॥
अप अपनैं पट लीजियैं, निकट हम्हारै आय॥२१॥
इहि सुनि नगन सिनांन सौं, भंग भयौ ब्रत जांनि॥
किय प्रनांम श्रीकृस्न कौं, पापहरन प्रभु मांनि॥२२॥
उन्हकौं करत प्रनांम लषि, प्रसंन हौय भगवांन॥
दैत भयै पट सबन कौं, पूर्न प्रीति पहिचांन॥२३॥
बस्त्र छीनि किय हासि यौं, उन्ह लज्जा दियै टारि॥
तहुँ तियहुँ चैतन भइ सुष, मान्यौ प्रभुहिं निहारि॥२४॥
बस्त्र पहरि पिय मिलन सौं, चितवत भई लजाय॥
बसि ह्वै कैं ठाढी रही, मंद मंद मुसकाय॥२५॥

जांनि गये भगवांन इन्ह, म्हैरै मिलबै काज ॥
इहि ब्रत कीनौं उमगि कैं, पूरन भयौ सु आज ॥ २६ ॥
इहै जांनि बौलै बिहंसि, गौपिन सौ भगवांन ॥
तुम्ह ब्रत कियौ मनौर्थ करि, सौं म्हैं लष्यौ निदांन ॥ २७ ॥
तुम्ह म्हैरी पूजा करी, सौ निरफल ह्वै नांहिं ॥
पूर्न मनौर्थ तिहारौ, ह्वै हैं रासहिं मांहिं ॥ २८ ॥
मौ मैं जिन चित लग्यौ तिन, पूर्न कामनां हौय ॥
फैरि रहत है नांहिंनै, कबहुँ कामनां कौय ॥ २९ ॥
ज्यौं अंन भुंज्यौ रंधे तैं, नहिं उपजत भुव फैरि ॥
ज्यौंही मौ मैं चित लगै, मिटत कांमना घैरि ॥ ३० ॥
तातैं अब तुम्ह जाहुँ घरि, ब्रज कौं सहित हुलास ॥
निस कौं हम्ह तुम्ह बिहरि हैं, करिकैं लीला रास ॥ ३१ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि इह बचन सुनि, सब कन्या सुषमांनि ॥
जांन्यौ पूर्न मनोर्थ हम्ह, भयौ सुभलैं निदांनि ॥ ३२ ॥
ध्यांन करत श्रीकृस्न कौं, ब्रज आई ब्रजबाल ॥
बृंदावन तैं दूरि गौ, चारन गयै गुपाल ॥ ३३ ॥
ग्रीषम रितु मैं छत्रहिं सम, हौय रहै सब बृच्छ ॥
तिन्हकौं लषि श्रीकृस्न जू, बौलै बचन प्रतच्छ ॥ ३४ ॥
हे श्री दामा हे सुबल, हे अर्जुन रु बिसाल ॥
हे स्तोक हे श्रीकृस्न हे, रिषभ तेजस्वी ग्वाल ॥ ३५ ॥
अहो बरुथप हे अंस हे, देव प्रस्थ सुनि बात ॥
अर्थ परायै इन्ह बृछन, जींबौ है बिषयात ॥ ३६ ॥
सीत घांम बरषा पवन, सहत बृच्छि अैं आप ॥
हम्हकौं अति सुष दैत हैं, छाया भलै सथाप ॥ ३७ ॥
इन्हकौं जीबौ धन्य है, सब प्रांनिन सुष दैत ॥
अर्थी आवै सौ न रहै, षाली काहू हैत ॥ ३८ ॥
पत्र पुष्प रु फल काठ जड, छाया बलकल गंध ॥
गूंद भस्म इन्ह बस्त कौ, पूर्न मनोरथ संध ॥ ३९ ॥
जनम धरै की सफलता, इहीं सहीं ऊदौत ॥
बचननि प्रांन धन बुधि सौं, भलौं और कौं हौत ॥ ४० ॥
फल दल फूलनि भार सौ, तरु नमि रहै रसाल ॥
तिन्ह तर ह्वै प्रभु जमुन तट, गयै संग लै ग्वाल ॥ ४१ ॥
जहँ सीतल जल ग्वाल गौ, पियौ महा सुष पाय ॥
आसपास उपवन बिषैं, लगै चरावन गाय ॥ ४२ ॥

श्रीकृस्न रु बलिदैव जू, पैं तिहीं समैं आय॥
कहत भयै सब ग्वाल मिलि, अैसैं बचन सुनाय॥ ४३॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते द्वाविंसोऽध्यायः ॥ २२॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ त्रयोविंसोऽध्यायः ॥

(यज्ञपत्नियों पर कृपा)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - बोलै अैसैं ग्वाल हे, कृस्नं अहो बलिदैव॥
तुम्ह दुहून मैं है सही, बड़ौ पराक्रम भैव॥ १॥
हम्हैं छुधा दुष दैति सौ, तुम्ह मैटौ किहुँ भाय॥
इहि ग्वालन कौं बचन सुनि, बौलै प्रभु मुसकाय॥ २॥
अहौ सषा इहिं द्विज करत, जिग्य आंगिरस नांम॥
अग्रज जुत मौ नांम लैं, मांगि भात उहिं ठांम॥ ३॥
इहिं सुनि कैं सब सषां मिलि, गयै द्विजन कैं पास॥
करि प्रनांम मांगत भयै, भात सुसहित हुलास॥ ४॥
हे द्विज हौं श्रीकृस्न बलि, तुम्ह पैं हम्हहिं पठाय॥
भात मंगायौ पास तुम्ह, भूषै चारत गाय॥ ५॥
आयै बिनु भौजन कियै, आज चरावन गाय॥
बन मैं इहां तैं निकटहिं, बैठै हैं सुषदाय॥ ६॥
तुम्हहौ द्विज धरमातमा, जौ तुम्ह सरधा हौय॥
तौ उन्हकौं भौजन कछू, दीजै भलैं सुकौय॥ ७॥
जिग्य मैं पसु मारै बिनां, अंन लीजियै नांहिं॥
पसू मरि चुकैं नहिं कछू, दूषन वा अंन मांहिं॥ ८॥
तातैं उन्हकौं दैहुँ तुम्ह, भौजन जौ सुषदाय॥
द्विज तुम्हरौ कल्यांन अति, ह्वै हैं भलैं प्रभाय॥ ९॥
अैसैं गौपन कैं बचन, सुनैं अनसुनैं कीन॥
बौलै नहिं ब्राह्मन कछू, भौजनहूं नहिं दीन॥ १०॥
स्वर्ग आस करि करत है, ब्राह्मन जिग्य विधांनि॥
भक्ति सास्त्र तिह्वैं गुनै नहिं, हुतै महा अग्यांन॥ ११॥
दैस समैं जिग्य सामग्री, जिग्य करावन हार॥
मंत्र तंत्र सुर अग्नि जिग्य, करता धरम सुढार॥ १२॥

अैं सब प्रभु कैं रूप हैं, सौ दिय बेद बताय॥
ताहीं सौं सुभ काज इहि, पंडित कहत जताय॥ १३॥
सोइ वै पूरन ब्रह्म प्रभु, कृस्न कुंवर साष्यात॥
तिन्हकी कीनी अवग्यां, मानुष जांनिहुँ जात॥ १४॥
द्विजनि ज्वाब जब नहिं दियौ, ग्वालन कौं वां बार॥
तबैं निरास ह्वै प्रभू पैं, आये उलटै ग्वार॥ १५॥
अग्रज जुत श्रीकृस्न सौं, कही बात समझाय॥
तब फिरि बोलै कृस्न जू, ग्वालन सूं मुसकाय॥ १६॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

अहौ ग्वाल द्विज तियन पैं, जाय कहौ यौं बैंन॥
रांम कृस्नं भूषै दौउ, आयैं बनहिं सुषैंन॥ १७॥
उन्हकौं म्हैरी भक्ति है, अति मौ दरसन चाह॥
बै तुम्हकौं भौजन सुभग, दैहैं सहित उमाह॥ १८॥

॥ श्री सुक उवाच॥

इहि सुनि द्विज अस्त्रीन पैं, गयै सुग्वाल सचाल॥
बौलै द्विज पतनीन सौं, बंदन करि उहिं काल॥ १९॥
आयैं हम्ह श्रीकृस्न कैं, पठयै हैं द्विज नारि॥
रांम कृस्नं आवन कियौ, गौचारन या बारि॥ २०॥
भूषै हैं अैसौ कछू, भौजन दैहुँ सुढार॥
जुत सषांन भौजन करै, दुहूँ भ्रात या बार॥ २१॥
हुति द्विजन की अस्त्रीन कैं, प्रभु दरसन की चाह॥
लग्यौ रह्यौ चित कृस्न की, सुनि सुनि कथा अथाह॥ २२॥
फिरि सुनि प्रभु कौं आंवनौ, तियनि बढ्यौ आनंद॥
चाली चार प्रकार लैं, भौजन जैं सुषकंद॥ २३॥
प्रभू पास आवत भई, द्विज तिय सहित हुलास॥
जइसैं सरिता उमडि कैं, करत सिंधु बिच बास॥ २४॥
बंधु भ्रात सुत पति सबनि, बरजी भांति अनैक॥
पैं मान्यौं नहिं बरजिबौ, धरैं प्रेम की टैक॥ २५॥
बउत दिनन तैं प्रभू मैं, लग्यौ रह्यौ उन्ह चित्त॥
उमगि चली लैं कैं सुभग, भौजन स्वाद अमित्त॥ २६॥
ब्रछ असौक हौ जमुन तट, जुत नव पल्लव फूल॥
सहित भ्रात बिच सषन कैं, ठाढै प्रभु सुष मूल॥ २७॥
पीतांबर धारन कियैं, पहरैं उर बनमाल॥
सुंदर स्यांम अनूप छबि, बांकै नैंन बिसाल॥ २८॥

मौर पच्छि कौं मुकुट सिर, धरै करनिका कांन॥
चित्रहीं बिचित्र सुधातु कैं, मंडित अंग सुथांन॥ २९॥
अलकैं घुंघरारीन सौं, मंडित सुभग कपौल॥
करन फूल झूमक सहित, श्रवननि सौभ सतौल॥ ३०॥
प्रसंन बदन ऊंची भौहैं, नासा छबि कौं अैंन॥
मंद मंद मुसकात है, द्रिग चित बनि सुष दैंन॥ ३१॥
पीत काछ काछै सुभग, कटि किंकनि अभिरांम॥
जथा जोग भूषन बनैं, चरन कंवल सुषधांम॥ ३२॥
इक करसौं फैरत कंवल, इक कर सषाहिं कंध॥
नट कौ सौं कीनैं प्रभू, अदभुत भैष प्रबंध॥ ३३॥
अैसैं कृस्नं कुमार कौं, भई निहाल निहारि॥
कांनन सौं जिन्हकैं चरित, सुनत हुती द्विज नारि॥ ३४॥
दैषि दैषि फिरि हिर्दै मैं, राषि ध्यांन अनुसार॥
आलिंगन दैं दूरि कियैं, निज संताप प्रकार॥ ३५॥
ज्यौं साषी जु सुषौप्त की, जांनहुँ ब्रति अहंकार॥
आत्मा कौं लषि मैंटहीं, निज संताप अपार॥ ३६॥
म्हैरे दरसन काज कौं, आई तजि सब आस॥
इहै जांनि बौले प्रभु, यौं आनंद निवास॥ ३७॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

हे बड्डु भाग्य भलौ कियौ, तुम्ह आई द्विज भांम॥
बचन कहौ सौई करूं, बैठि जाहुँ या ठांम॥ ३८॥
म्हैरे दरसन काज कौं, तुम्ह आई या ठौर॥
सौ कीनौं है जौग्य हीं, नहिं अजौग्य किहुँ तौर॥ ३९॥
जन प्रवीन मौ भक्ति निति, करत रहत निहकांम॥
म्हैं प्रिय आत्मा सबन कौं, निश्चै जांनहुँ भांम॥ ४०॥
मन बुधि प्रांन सरीर अरु, अस्त्री सुतधन पुनि गैह॥
आत्मा कौं सुष देत हैं, तातैं इन्ह सौं नैह॥ ४१॥
आत्मा सब तैं अधिक सौ, आत्मा म्हैं निरधार॥
तातैं म्हैं हूं सबन तैं, प्यारौ भलैं प्रकार॥ ४२॥
हे द्विज पतनी जाहुँ अब, तुम्ह सब अनैन धांम॥
तुम्ह करि पूरन होयगौ, जिग्य भलैं बां ठांम॥ ४३॥
बैठै अस्त्रीन पास बिनु, जिग्य पूरन नहिं हौत॥
अरू पूरन जिग्य भयै बिनु, हौय न धरम उदौत॥ ४४॥

॥ ब्राह्मन पत्न्य ऊचुः॥

द्विज तिय बौली हे प्रभु, तुम्ह भक्तननि प्रतिपाल॥
कूर बचन इसैं न कहौ, हम्ह सौं नैंन बिसाल॥ ४५॥

भई तुम्हारी दासि हम्ह, तुम्ह पद आश्रय आय॥
घर सौं कछू न कांम है, हम्हकौं किहूं प्रभाय॥ ४६॥
अरु माता पिता पुत्र पति, सुहृद बंधु जन भ्रात॥
अब घर मैं नहिं राषि हैं, हम्हकौं कौ मिलि ग्यात॥ ४७॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

प्रभु बौलै कौउ इरषा, तुम्हरी करिहैं नांहिं॥
तुम्ह तैं ह्वै हैं कुटंब सब, अति प्रसंन चित्त मांहिं॥ ४८॥
मिलिबै ही मैं बढत नहिं, महा प्रीति अनुराग॥
मौ मैं मन दै प्राप्त मुहि, ह्वै हैं तुम्ह बड्ड भाग॥ ४९॥

॥ श्री सुक उवाच॥

श्री सुक कहत कि इहि बचन, प्रभु कैं सुनि द्विज नारि॥
आई अपनैं जिग्य मैं, कृस्न ध्यांन उर धारि॥ ५०॥
पति ईरषा नांहिं करी, जिग्य समापत कीन॥
लगै बिप्र पछितान अति, तिय लषि भक्ति अधीन॥ ५१॥
इक द्विजनी रौकी हुती, पति नैं चलती बार॥
सौ तन तजि मिलती भई, प्रभु मैं भलैं प्रकार॥ ५२॥
द्विज पतनी ल्याई हुती, जो भौजन धरि प्रीत॥
सौं सषांन जुत भ्रात दुहुं, भौजन कियौ सुरीत॥ ५३॥
बचन क्रिया निज रूपसौं, करत मनुष लीलांनि॥
गाय गौप गौपीन कौं, दै प्रभु सुष अप्रमांनि॥ ५४॥
नर की सी लीला धरै, जगत ईस श्रीकृस्नं॥
जिन मांग्यौं हौ भात सौ, हम्ह न दियौ ह्वै प्रसंन॥ ५५॥
जांनि इही अपराध निज, द्विज पाछै पछिताय॥
धिकधिक मांनैं आपकौं, हिर्दै अधिक दुषछाय॥ ५६॥
दैषि भक्ति तियाननि मैं, अरु आपन मैं नांहिं॥
तातैं निज निंदा करन, लगै बिप्र अधिकांहिं॥ ५७॥
चतुराई कुल जनम ब्रत, करनौं जिग्य बिधांन॥
सब हम्हरौ धिक्कार है, हम्ह हरि बिमुष निधांन॥ ५८॥
है माया भगवांन की, जौरावर अधिकाय॥
सौ मौहत जोगैस्वरन, हम्ह किहुँ गनति गनाय॥ ५९॥
औरन कौं उपदेस हम्ह, करत रहै बहुभाय॥
निज बैरां कौ भूलि हम्ह, दयौ सयांन गमाय॥ ६०॥
देषौ अचिरज तियन कैं, कृस्न भक्ति प्रगटाय॥
ग्रिहबंधन जिहँ भक्ति सौं, सकल भलैं छुटि जाय॥ ६१॥

तियन निकट गुरवास नहिं, नांहिं बेद संस्कार॥
नाहिं तप क्रिया पबित्रता, अरु नहिं आत्म बिचार॥ ६२॥
तौहू इन्हकैं प्रगट हुव, कृस्न भक्ति अभिरांम॥
हम्ह नहिं समझै निज भलौ, ह्वै बौरे बिच धांम॥ ६३॥
प्रभु ग्वालन कैं बचन सौं, हम्हैं दिबायौ चेत॥
तौहूं हम्ह समझैं नांहिं, जांनि न अपनौं हेत॥ ६४॥
पूर्न कांम प्रभु मुक्ति पति, क्यूं मांगै हम्ह पासि॥
पैं करबै हम्हरौ भलौं, चाह्यौ प्रभु सुषरासि॥ ६५॥
तजि चंचलता रमाहूं, जिन्ह पद सैवत चांहिं॥
तैं हम्ह पै भौजन जचै, बनै बात इहि नांहिं॥ ६६॥
उन्हकी लीला ही इहै, जांनि परत निरधार॥
जतवत है नरभाव प्रभु, पूर्न ब्रह्म करतार॥ ६७॥
देस समैं जिग्य सामग्री, जिग्य करावनहार॥
मंत्र तंत्र सुर अग्नि जिग्य, करता धरम प्रकार॥ ६८॥
ऐं सरूप जा प्रभू कौ, सोइ कृस्नं साष्यात॥
ईस्वर जोगैस्वरन कैं, मैटन बहु अघघात॥ ६९॥
जिन्हकौं हम्ह जांनत रहै, बै प्रभु जीवनि मूलि॥
प्रगटैंगें जदुकुल बिषैं, गयै सु अब हम्ह भूलि॥ ७०॥
ऐं हम्ह धन्य हैं जक्त मैं, भक्तिवंत जिन नारि॥
इन्हकौं लषि कैं हम्हहुँ कौ, प्रगटी भक्ति सुढारि॥ ७१॥
नमसकार श्रीकृस्न कौं, जिन्ह माया अनुसार॥
मौहित हम्ह मग कर्म मैं, लागि रहै निरधार॥ ७२॥
आदि पुरष भगवांन बै, सुंदर कृस्नं कुमार॥
उन्हकी माया सौं मुहित, हम्ह सब भूलि बिचार॥ ७३॥
प्रभु प्रभाव जांन्यौ नांहिं, हम्ह ह्वै अति अग्यांन॥
इह हम्हरौ अपराध बै, छमा करहुँ जग प्रांन॥ ७४॥
यौं अपनौं अपराध बै, बिप्र जांनिहुं उहिं बार॥
पछितावौ कीनौ अधिक, दियै आपहिं धिक्कार॥ ७५॥
मांनि कंस कौं डर अधिक, सब ब्राह्मन चित मांहिं॥
सुंदर दरसन प्रभू कौं, करिबैं आयै नांहिं॥ ७६॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी कृते त्रयोविंसोऽध्यायः ॥ २३॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुर्विंसोऽध्यायः ॥

(इन्द्र यज्ञ निवारण)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा – सुक कहत कि बलिदेव जू, जुत श्रीकृस्न कुमार॥
बसत रहै ब्रज मैं भलै. लीला करत सुढार॥ १॥
अैक दिवस दैष्यौ कि सब, मिलि कैं गौप समाज॥
करत भयै आरंभ जिग्य, उमगि इंद्र कैं काज॥ २॥
सब कुछ जांनत प्रभू पैं, ह्वै अजांन वां बार॥
ब्रध गौप नंदादिक सुँ, पूछत है करतार॥ ३॥
अहौ पिता है आज का, उत्सव अपनैं धांम॥
कइसैं कीजै हैत किहि, अरु का फल अभिरांम॥ ४॥
का बृतांत या जिग्य कौ, सुन्यौ चहत हम्ह तात॥
सब हम्हकौं समझाय कैं, कहौ जिग्य की बात॥ ५॥
सत्रु अरु मित्र जिनकैं नांहिं, भैद न अपुन पराय॥
अैसैं साध सुहृदन सौं, मिलिकैं भलैं प्रभाय॥ ६॥
भलै भलै कारज करत, छिपवत किहुँ सौ नांहिं॥
उदासीन सौ पूछत जु, ह्वै हैं निज मन मांहिं॥ ७॥
बिनु जांनैहीं कर्म कौउ, करन मनुषहिं निदांन॥
अरु वा जै जन समझि कैं, कर्म करत बुधिवांन॥ ८॥
समझवार सिधि कर्म की, पावत भलैं प्रकार॥
असमझ कौं सिधि कर्म की, हौत नांहिं निरधार॥ ९॥
जिग्य करत हौ तुम्ह इहै, सौ कइसैं अनुसार॥
लौक रीति सौं करत कै, बेद बिचार प्रकार॥ १०॥

॥ श्री नंद उवाच ॥

इहि सुनि बोलै नंद जू, इंद्र मैघ की मूर्ति॥
सौ प्रिथवी मैं बरषि जल, करत अंन की पूर्ति॥ ११॥
हम्ह ताहि उत्तम अंन सौं, इंद्रहीं पूजत चांहिं॥
बचै सुभौजन करत हैं, ग्रिह कै कार्ज निबांहिं॥ १२॥
धर्म अर्थ अरु कांम हम्ह, साधत भलैं प्रभाय॥
नर षैती उद्यम करत, फलदाता सुर राय॥ १३॥
इहै हम्हारै सदा तैं, चलि आयै हैं धर्म॥
सौ तुम्हहूं सुनि लैहुं सुत, बंस रीति कौं मर्म॥ १४॥
लौभ बैर सौं जौ कौउ, करै जिग्य इहि नांहिं॥
तौ ताकौ ह्वै नांहिंनैं, भलौ कबहुँ किहुँ ठांहिं॥ १५॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि नंदादि सब, गौपन कैं सुनि बैंन॥
इंद्रहीं रिस उपजायबै, बोलै प्रभू सुषैंन॥ १६ ॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

हे पितु उपजन मरन भय, सुष दुष अरु कल्यांन॥
प्रांनी अपनैं करम सौं, पावत सबैं निदांन॥ १७ ॥
प्रांनी करही करम फल, तइसौ दै भगवांन॥
तातैं भुक्ततहिं जीव फल, निज कर्मन उनमांन॥ १८ ॥
इंद्र सुभाव बिगार किहूँ, कछू करि सकैं नांहिं॥
प्रांनी निज सुभावहिं कैं, हैं आधीन सदांहिं॥ १९ ॥
सुर नर असुर सुभाव कैं, बसि हैं सब निरधार॥
भलैं बुरैं तन लहत हैं, करमहिं कैं अनुसार॥ २० ॥
है प्रांनी कैं करमहीं, सत्रु मित्र अरु गुरु ईस॥
सुष दुष करमाधीन ही, पावत बिसबाबीस॥ २१ ॥
तातैं करमहिं कौं मनुष, मानैं समझिं सुभैंव॥
जिन्हसौं अपनौं कार्ज ह्वै, करमहिं याकैं दैंव॥ २२ ॥
जो कौं जांसौ पाय कछु, छौडि दैय फिरि तांहिं॥
तौ कबहूं बाकौं भलौं, काहू बिधि ह्वै नांहिं॥ २३ ॥
जइसैं तिय बिभचारनी, तजि कैं निज भरतार॥
औरहिं मांनै तौ न ह्वै, जास भलौं निरधार॥ २४ ॥
बेद पढै ब्राह्मन सुभग, बैस्य करैं व्यापार॥
सूद्र करैं तिहुं बर्न की, सैवा भलैं प्रकार॥ २५ ॥
छत्री भुविं रछा करैं निज, भुजबलहीं अनुभाय॥
गाय बिप्र बैस्नवन कौं, पालन करैं सुभाय॥ २६ ॥
तातैं हम्ह पालत भलै, गायन कौं निरधार॥
अरु द्विज साधुनहूं पुजत, निज सरधा अनुसार॥ २७ ॥
सत रज तम अैं तीन गुन, माया तैं प्रगटाय॥
तिन्ह तैं जग उतपति प्रलैं, पालन हौत सदाय॥ २८ ॥
मैघ रजौगुन तैं उपजि, बरषत है जलधार॥
तासौं पावत है प्रजा, सब आनंद अपार॥ २९ ॥
इंद्र कछू नहिं करत है, घन बरषन मैं भैद॥
जिहँ पूजा फल की सही, जानहुँ झूठ उमैद॥ ३० ॥
नांहिं हम्हारै हैं कछू, दैस नगर अरु गैह॥
हम्ह तौं बन परबत बिषै, बसत बिनां संदैह॥ ३१ ॥

तातैं द्विज गिरिराज गौ, इन्हकैं निमत सुढार॥
इही सामग्री तैं करौं, जिग्य भलैं यां बार॥ ३२॥
भौजन बिबिध प्रकार कैं, करौं भलैं उनमांन॥
हौम करावौ द्विजन पैं, अंन गाय दैं दांन॥ ३३॥
चांडालनि लौं आदि ह्वै, भूषौ पतित जु कौय॥
दैहुं अंन ताकौं कछू, जितनीं सरधा हौय॥ ३४॥
गायन कौं त्रिन दीजियैं, परबत कौं बलि दैहुँ॥
गौबरधन नग पूजि कैं, फल अतुलित तुम्ह लैहुँ॥ ३५॥
सुभग बस्त्र भूषन पहरि, अंग सुगंध लगाय॥
बिप्र अगनि नग की करहुं, परदच्छिना सुभाय॥ ३६॥
मौ बिचार मैं जिग्य इहि, आयौ है निरधार॥
फिरि तुम्ह जांनौ सौं भलौं, करहुँ कार्ज या बार॥ ३७॥
द्विज परबत गायन रु मुहि, प्रिय इहि जिग्य निदांन॥
बहुयौं तुम्ह चित आय सौं, कीजैं बात प्रमांन॥ ३८॥

॥ श्री सुक उवाच॥

श्री सुक कहत कि अैं बचन, कहत भयै भगवांन॥
निश्चैं करिकैं टारिबैं, बासव कौं अभिमांन॥ ३९॥
नंदादिक सब गौप गन, मांनि बात इहि लीन॥
कह्यौ कृस्न जू नै सोइ, कारिज आछै कीन॥ ४०॥
मंत्र पढायै द्विजन पैं, पूजि बिप्र नग रु गाय॥
परबत की परदच्छिनां, करत भयैं जुत चाय॥ ४१॥
अैंक रूप धरि और प्रभु, परबत नांम कहाय॥
नग कौं बलि दीनी सुसब, भौजन करत सुभाय॥ ४२॥
वा अपनैं हीं रूप कौं, पूजि भलैं वां ठांम॥
गौपन जुत श्रीकृस्न जू, करत भयै परिनांम॥ ४३॥
अरु बौलै देषौ इहै, परबत धारि सरूप॥
भौजन करत सुकरी है, हम्ह परि क्रिपा अनूप॥ ४४॥
जैं याहि नग की अवग्यां, करत कौउ अग्यांन॥
जिन्हकौं इहि नग काटहीं, धरि अहि रूप निदांन॥ ४५॥
तातैं गौ कन्यानन हित, जुत सनैहहिं सुभाय॥
हम्ह या गिरि कौं मांनि हैं, करि हैं वंदन आय॥ ४६॥
नग द्विज गौ हित जिग्य यौं, करि प्रभु आग्यां पाय॥
गौपी गौप रु कृस्नं जू, आयै गैह सभाय॥ ४७॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसमस्कन्धे भाषा ब्रजदासी कृते चतुर्विंसोऽध्यायः॥ २४॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ पंचबिंसोऽध्यायः ॥

(गोवर्धन-धारण)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - श्री सुक कहत कि इंद्र निज, पूजा मैटी जांनिं॥
नंदादिक गौपनि उपरि, क्रौध कियौ अप्रमांनि॥ १॥
घनसांवर्तक नांमकौं, करता प्रलैं बिसाल॥
तिन्हसौं बौल्यौ इंद्र यौं, अति रिस धरि बहिं काल॥ २॥
अैं बनबासी ग्वाल हैं, धन मद मत्तहिं निदांन॥
काहूं कौं नांहिंन गिनत, धरै अधिक अभिमांन॥ ३॥
कृस्न नंद सुत कैं कहै, मिलि सब गौप अग्यांन॥
कीनी हैं मौ अवग्यां, मैट्यौ जिग्य बिधांन॥ ४॥
ज्यौं कौं तजि कैं ग्यांन मग, करम मारगहिं लागि॥
तिरन सिंधु संसार इहि, चाहै महा अथागि॥ ५॥
कृस्न सरन है कैं बचैं, चाहत मो तैं गौय॥
सौ अैं बचि हैं नांहिंनैं, मैटौं इन्हकी वौप॥ ६॥
है बालक बुधि कृस्न बहै, बउत करत बकबाद॥
किहुँ सौं नमत न आपकौ, पंडित मांनत ज्याद॥ ७॥
लछमी तैं अरु कृस्न कैं, आस्त्रय तैं निरधार॥
इन्ह गौपन कैं अधिक मद, बढत भयौ या बार॥ ८॥
तातैं तुम्हहीं मैघ हौं, अैसै बरषौ जाय॥
जासौं इन्हकैं पसुन कौं, नास हौय दुषदाय॥ ९॥
तुम्ह पाछैहीं आय हौं, म्हैं हूं ह्वै गज स्वार॥
नास नंद घर कौं करन, लैं सुर संग अपार॥ १०॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि यौं मैघ सब, बासव आग्यां पाय॥
ब्रज ऊपर बरषत भयै, जलधारा अधिकाय॥ ११॥
झमाझमी बिजुरीन की, गरजत सबद भयांन॥
मैघ पवन प्रेरक गड़ा, बरषत है अप्रमांन॥ १२॥
अरु बरषत अति जौर सौं, थूनी सम जलधार॥
तासौं भुव बूडत भई, उमडि नीर अनपार॥ १३॥
बउत पवन चलिकैं बउत, बरषन लाग्यौ नीर॥
तातैं लगि अति सीत हुव, गौपी गौप अधीर॥ १४॥
बिकल हौय प्रभु कैं सरन, आयै सब बां बार॥
थरथर कांपत सीत सौं, अरु भय कैं अनुसार॥ १५॥

अप अपनैं बछरांन कौं, पैट तरैं लै गाय॥
अति कांपति प्रभु कैं सरन, आई सब इक ठाय॥ १६॥
ब्रजबासी बौलै सबैं, हे श्रीकृस्नं कुमार॥
तुम्ह गौकुल कैं नाथ हौ, करहुँ रछा सुभढार॥ १७॥
बरषा दैषि सिलांन की, ब्रज जन बिकल निहारि॥
जांनि गयै भगवांन किय, इंद्र रीस अधिकारि॥ १८॥
किय बिचार श्रीकृस्न म्हैं, करिहौं अैक उपाय॥
बासब कैं धन मद बढ्यौ, सौ म्हैं दैहुँ मिटाय॥ १९॥
अमर भक्त म्हैरे तिह्नैं, मद भौ चहियैं नांहिं॥
उन्हकौं मद टारौं सु इह, मौ अनुग्रह अधिकांहिं॥ २०॥
इहि ब्रज म्हैरो धांम है, म्हैरे आस्त्रय आंहिं॥
या ब्रज की रछया भलै, करिहौं अबैं उमांहिं॥ २१॥
इहि बिचारि गिरिराज प्रभु, धरत भयै निजपांन॥
ज्यौं बालक छतना उचकि, कर मैं लैत निदांन॥ २२॥
प्रभु बौलै हे गौप गन, हे मो माता तात॥
गायन जुत या नग तरै, बैठहुँ आय अग्यात॥ २३॥
मौ करतैं गिरि गिरन इह, भय न करहुँ किहुँ भाय॥
बरषा भय मैंटन लयौ, म्हैं गिर करहिं उठाय॥ २४॥
इहि सुनि गौपी गौप सब, लै बछरन जुत गाय॥
परबत तर आवत भयै, सकल महा सुष पाय॥ २५॥
मिलि न सकतहीं गौपिका, तैं लहि अति आनंद॥
सात दिवस निस दिन मिली, निरषत मुष ब्रजचंद॥ २६॥
सबकैं दैषत सात दिन, गिरवर धरि निज हाथ॥
ब्रज बासिन आनंद दिय, श्री गौवरधन नाथ॥ २७॥
प्रबल पवन घन कौं कछू, किहुँ दुष जांन्यौं नांहिं॥
हरषित भयै आनंद सौं, लषि प्रभु मुष वां ठांहिं॥ २८॥
इहि परताप श्रीकृस्न कौं, सुनि बासव भय पाय॥
जात रह्यौ सब गर्ब इन्ह, बरजै घननि सुभाय॥ २९॥
जात रहै बरषा पवन, उदय हौत भौ मांन॥
भुव तैं जल उमडन मिटी, ठहरी सरित निवांन॥ ३०॥
तब बोलै श्रीकृस्नं जू, हे सब गौपी ग्वार॥
इहां तैं निकसौं ग्रिह बसौ, निरभय ह्वै निरधार॥ ३१॥
निज निज गौ घर बार लैं, सबहीं गौपी ग्वाल॥
नग तरतैं निकसत भयै, बाहरि हौय षुष्याल॥ ३२॥

ब्रजजन कौं दुष दूरि करि, मैटि सक्र कौं मांन॥
निज करतैं भगवांन तब, गिरवर धर्यौ ठिकांन॥ ३३॥
ब्रजबासी अति प्रेम करि, प्रभु सौं मिलै सुभाय॥
दही अछित लै कृस्न की, पूजा किय सुष पाय॥ ३४॥
देत भयै भगवांन कौं, सब मिलि आसिरबाद॥
मुष लषि लषि कैं कृस्न कौं, पावत अति अहिलाद॥ ३५॥
नंद जसौदा रौहिनी, अरु अग्रज बलिदैव॥
देत भयै मिलि नेह सौं, आसिरबाद अभैव॥ ३६॥
सिध चारन गंधर्व सुर, करिकैं अस्तुति सुढार॥
बहु बाजित्रहिं बजाय कैं, बरषै पुहप अपार॥ ३७॥
तुंबर आदि गंधर्ब मिलि, कीनौं मंगलगांन॥
जय जय सबद उचारि किय, मिलि रिषिगन बुधिवांन॥ ३८॥
अग्रज माता अरु पिता, गौपन जुत भगवांन॥
आयै ब्रज निज धांम किय, गौपिन मंगलगांन॥ ३९॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते पंचबिंसोऽध्यायः॥ २५॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ षडबिंसोऽध्यायः ॥

(नंदबाबा से गोपों की श्रीकृष्ण के अलौकिक प्रभाव के विषय में
बातचीत)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि अैसें चरित, प्रभु कैं लषि सब ग्वाल॥
नंद महर जू सौं कहत, भयै जु बचन रसाल॥ १॥
अहौ नंद सुत रावरौ, अदभुत करत चरित्र॥
काह जांनियैं कौंनुं इहि, प्रगट्यौ पुरुष पवित्र॥ २॥
सात बरष कैं इन्हु धर्यौ, गौवरधन निजपांन॥
ज्यौं पंकज गज सुंडि सौं, लैं उठाय बलबांन॥ ३॥
प्रांन पूतनां कैं पियै, छठै दिवस पय लार॥
ज्यौं प्रांनिन की आयुर्बल, पियत काल निरधार॥ ४॥
सकट गिरायौ लात सौं, सात मास कैं लाल॥
जसुमति कौं दिषवत भयै, मुष मैं बिस्व बिसाल॥ ५॥

त्रिनावर्त इक बरष कैं, कौं लैं गयौ उडाय॥
ताहिं हत्यौ गर दाबि कैं, सिल पैं दयौ गिराय॥ ६॥
दधि चोरी कीनी तबै, बांधै माय रिसाय॥
जब जमलार्जुन बृच्छ द्वै, तोरै उषल अडाय॥ ७॥
बच्छ चरावत भ्रात जुत, बन मैं कृस्न कुमार॥
बक आसुर की चौंच कौं, फारि कियौ संघार॥ ८॥
अरु बछासुर बछांन मैं, आयौ हुतौ कुपात॥
ताहिं कुं कैंथर पैड सौं, पटकि हत्यौ बिषयात॥ ९॥
धैनुक कैं संगी हतै, अभय तालवन कीन॥
धैनुक कौं बलिदैव जू, पै मरवाय सुदीन॥ १०॥
गौपन की रछया करी, करि दावांनल पांन॥
काली अहि कौं काढि किय, सुधहिं जमुन जल थांन॥ ११॥
अहौ नंद जु तुम्ह पुत्र सौं, सबकौं अति अनुराग॥
मुष लषि लषि मांनत सकल, बृजबासी निज भाग॥ १२॥
अैं चरित्रहिं लषि हौत हैं, हम्हकौं बड्डौ संदेह॥
काह जांनियैं कौनुं इह, प्रगट्यौ पुरष अछैह॥ १३॥

॥ नंद उवाच॥

इहि सुनि बोलै नंद जू, गौपन सौं यौं बैंन॥
या बालक कैं चरित कौं, कछुन संदेह सुषैंन॥ १४॥
मोहि कहि गयै गर्ग जू, या बालक की बात॥
सौं म्हैं तुम्ह सौं कहत हौं, सुनियैं भेद अग्यात॥ १५॥
गर्ग कह्यौ हे नंद या, बालक कैं त्रय रूप॥
अरु अनंद गुन है प्रगट, बरनि न जात अनूप॥ १६॥
सत जुग कैं मधि सेत अरु, त्रैता जुग मैं लाल॥
गोरै द्वापुर कैं बिषैं, अब हुव स्यांम रसाल॥ १७॥
किहूं समैं बसुदैव कैं, सुत प्रगटै सुषदाय॥
बासुदैव इन्हकौं सबैं, कहि हैं या अनुभाय॥ १८॥
नंद जु तुम्हारै पुत्र कैं, नांम रूप अनपार॥
सौ म्हैं जांनत हौं भलैं, निश्चै करि सुषसार॥ १९॥
गौपन कौं आनंद दै, करिहैं तुम्ह कल्यांन॥
संकट इन्ह परताप सौं, मिटि हैं सकल निदांन॥ २०॥
देत रहै दुष प्रिथी कौं, पहलैं चोर अनैंक॥
तब इन्हहिं कीनी रछया, सबकी सहित बिबैंक॥ २१॥
प्रीति लगावै जो कौउ, इन्हमैं किहूं प्रकार॥
ताकौं नांहिंन दैं सकैं, दुष मिल सत्रु जु अपार॥ २२॥

लछमी कीर्ति प्रताप बल, अरु सुभ गुन अधिकांहिं॥
नारायन सम है सही, पुत्र तुम्हारैहिं मांहिं॥ २३॥
तातैं इन्हकैं चरित कौं, अचिरज करहुँ न कौय॥
यौं कहि मो सौं गर्ग जु, ग्रिह गवनैं सुष भौंय॥ २४॥
ता दिन तैं म्हैं पुत्रहुं कौं, गनत अंस भगवांन॥
अरु अचिरज इन चरित कौं, नांहिंन करत निदांन॥ २५॥
गर्ग बचन यौं नंद मुष, सुनिकैं सबहीं ग्वाल॥
अरु लषि गुन श्रीकृस्न कैं, अदभुत महारसाल॥ २६॥
नंद सहित श्रीकृस्न की, सबहिन पूजा कीन॥
गौप बंस निज धन्य धन्य, मांनत भयै सरीन॥ २७॥
जिग्य मैटनैं मैं बउत, रिस करिकैं सुर राय॥
बरषा किय औलांन की, बउत समीर चलाय॥ २८॥
तासौं गौपी गौप गौ, दुषी दैषि भगवांन॥
करुनां करि धारत भयै, गिरवर अपनैं पांन॥ २९॥
सब ब्रज की रछया करी, कृस्न कुंवर अभिरांम॥
तब गायन कैं इंद्र प्रभु, भयै कहावत स्यांम॥ ३०॥
दूरि कर्यौ मद इंद्र कौ, प्रभू क्रिपा अनुसार॥
बै हम्ह परि निति प्रसंन हौं, दीन बंधु करतार॥ ३१॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते षडबिंसोऽध्यायः॥ २६॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ सप्तबिंसोऽध्यायः॥

(श्री कृष्ण का अभिषेक)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - श्री सुक कहत कि प्रभु धर्यौ, गिरि गौवरधन हाथ॥
सब ब्रज की रछया करी, श्री गौवरधन नाथ॥ १॥
ताहिं समैं गौलौक तैं, कांमधैनु ब्रज आय॥
अरु आयै निज लौक तैं, प्रभु पैं इंद्र सुभाय॥ २॥
हरि कैं किय अपराध बहु, तातैं इंद्र लजाय॥
आय समैं अैकांत मैं, किय प्रनांम सिर नाय॥ ३॥
सुन्यौ र देष्यौ इंद्र नैं, प्रभु कौं बड़ौ प्रभाव॥
हाथ जोरि बोल्यौ धरै, दासातन अधिकाय॥ ४॥

॥ इंद्र उवाच ॥

सुधहिं सत्व गुन हे प्रभू, तुम्ह मैं है करतार॥
लैस रजौगुन तमौगुन, कौं नांहिंन निरधार॥ ५॥
ग्यांन रूप हौ आप हरि, हे स्वामी भगवांन॥
अग्यांन अरु संसार नहिं, तुम्हकौं लग्यौ निदांन॥ ६॥
लोभ क्रौध नहिं रावरै, अग्यांनी कौं हौत॥
दुष्टनहिं द्यौ हौ दंड, सौं करन धर्म उदौत॥ ७॥
ईस पिता गुर जगत कैं, काल रूपहूं आप॥
दीनबंधु असरनसरन, हौ सुष सिंधु अमाप॥ ८॥
तुम्ह जग मैं अवतार धरि, नंद सुवन भगवांन॥
हम्हसैं अभिमांनीन दे, दंड हरत अभिमांन॥ ९॥
हम्हसैं मूरष आपहीं, कौं मांनत हैं ईस॥
तिह्नैं दंड दे मैटि मद, सुधहिं करत जगदीस॥ १०॥
म्हैं ईस्वरता कौं गरब, राषत रह्यौ अमाप॥
किय तुम्हरौ अपराध म्हैं, समझयौ नहिं परताप॥ ११॥
म्हैं मूरष अपराध मो, छिमा करहुँ करतार॥
ऐसी बुधि नहिं हौय फिरि, क्रिपा करहुँ या ढार॥ १२॥
बड्डै दुष्ट नृप करि रहै, जैं प्रिथवी परिभार॥
तिह्नैं हतनि सुष सैवकनि, दैंन आप अवतार॥ १३॥
महापुरष परमातमा , बासुदेव श्रीकृस्नं॥
तुम्ह कौं है परनांम प्रभु, मौ परि हूजै प्रस्नं॥ १४॥
कारन आत्मा सबन कैं, ग्यांन रूप सुषसार॥
तुम्ह निज ईछा सौं धर्यौ, इह सुंदर अवतार॥ १५॥
तुम्ह मौ जिग्य मनैं कियौ, तातैं म्हैं रिस आनि॥
बरषा किय ब्रजनास हित, गर्वित ह्वै बिनु ग्यांनि॥ १६॥
दूरि कियौ तुम्ह गर्ब मो, सौ अति अनुग्रह कीन॥
हौ ईस्वर गुर आतमा, म्हैं तुम्ह सरन प्रवीन॥ १७॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

श्री सुक कहत कि अस्तुति यौं, जबैं इंद्रनैं कीन॥
तब वांनी गंभीर प्रभु, बोलै तारन दीन॥ १८॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

अहौ इंद्र इहि जिग्य तौ, म्हैं कीनौं है भंग॥
सौ तेरौ मद टारिबै, कीनी क्रिपा उतंग॥ १९॥
इंद्र लौक की लछमी, पाय भूलिगौ मौहि॥
तातैं म्हैं करि क्रिपा मो, सुधि जू दिबाइ तौहि॥ २०॥

ईस्वरता अरु रमा मद, लहि प्रांनी है अंध॥
दूरि करौ तिहिं संपदा, सौ मौ अनुग्रह संध॥ २१॥
जाहुँ इंद्र निज लौक अब, रहुँ मो आग्यां मांहिं॥
राज करहुँ तू आपनौं, गर्ब धरहुँ पुनि नांहिं॥ २२॥
कामधैनु ताही समैं, आय सहित संतान॥
करि प्रनांम बौली बचन, प्रभु सौं या अनुमान॥ २३॥

॥ सुरभिरुवाच॥

तुम्ह आतमा सबहिं कैं, हे श्रीकृस्न क्रिपाल॥
उपजावत हौ जक्त सब, करि बिसतार विसाल॥ २४॥
सब लौकन कैं नाथ अरु, नाथ हम्हारे स्यांम॥
देहमाहिं हम्हरे दैव, तुम्हकौं है परिनांम॥ २५॥
गाय बिप्र सुरसाध की, रछया करन सुढार॥
हौहुँ हम्हारे इंद्र तुम्ह, हे स्वामी करतार॥ २६॥
हम्ह पठयै मुष च्यार कैं, आयैं हैं करतार॥
गायन कैं करिहैं तुम्हैं, इंद्र प्रभू या बार॥ २७॥
तुम्हैं सनांन कराय हैं, हे श्रीकृस्नं कुमार॥
प्रगट भयै हौ तुम्ह प्रभू, दूर करन भुवभार॥ २८॥

॥ श्री सुक उबाच॥

सुक कहत कि अैं बचन कहि, कामधैनु वां बार॥
किय प्रनांम श्रीकृस्न कौं, मुदित हौय निरधार॥ २९॥
अैरावत नभ गंगजल, ल्यावत भयौ सुढार॥
कामधैनु कौं सुध पयहिं, लैकैं वांही बार॥ ३०॥
कामधैनु अरु इंद्र मिलि, रिषिन सहित वा ठांम॥
प्रभूहिं करायौ स्नांन पुनि, गौबिंद धर्यौ सुनांम॥ ३१॥
तुम्बर नारद रु बिद्याधर, सिध चारन गंधर्ब॥
प्रभु कौं जस गावत भयै, उमगि उमगि कैं सर्ब॥ ३२॥
नृत करत भई अपछरा, अस्तुति अमरगन कीन॥
फूलन की बरिषा भई, मुदित लौक हुव तीन॥ ३३॥
गऊ सतनन तैं पय बह्यौ, तासौं भुव गइ भीजि॥
उदय महा मंगल भयौ, गयौ अमंगल छीजि॥ ३४॥
दूध दही बहि नदिन मैं, सहत धार तरु ठांम॥
प्रगट भयै परबतन मैं, उत्तम तरुहिं अभिरांम॥ ३५॥
बिन बाह्यौ ही प्रिथी मैं, उपज्यौ अंन अप्रमांन॥
दुष्ट जीवहूं साधु हुव, प्रभु जब कियौ सिनांन॥ ३६॥

यौं सिनांन करबाय कैं, प्रभु की आग्यां पाय॥
सुरनि सहित निज लौक गौ, इंद्र अधिक सुष छाय॥ ३७॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी कृते सप्तबिंसोऽध्यायः ॥ २७॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अष्टाबिंसोऽध्यायः ॥

(वरुण लोक से नंद बाबा को छुड़ाकर लाना)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि इक दिवस किय, ब्रत ऐकादसि नंद॥
वेद रीति अनुसार सौं, पूजै प्रभु सुष कंद॥ १॥
दुतिय दिवस थौरी रही, सुनी द्वादसी राय॥
तातैं पिछली रात ही, उठिकैं नंद सुभाय॥ २॥
चलै अकेलै ही चपल, करिबै जमुन सिनांन॥
हुतौ न समैं सिनांन कौं, निसही बउत निदांन॥ ३॥
बहि असुरन कौं समैं हौ, सुनि हौ नृपति उदार॥
तातैं किंकर बरुन कैं, फिरत हुतै वां बार॥ ४॥
पकरि नंद कौं लै गयै, बै जु बरुन कैं पास॥
सुनि कैं ब्रज मैं बात इहि, सबहीं भयै उदास॥ ५॥
भक्तननि दाता अभय कैं, कृस्न कुंवर बां बार॥
गयै बरुन कैं पास प्रभु, पितु ल्यावन अनुसार॥ ६॥
दैषि बरुन भगवांन कौं, प्रसंन हौय अधिकाय॥
करत भयौ अति प्रीत सौं, पूजा भलै बनाय॥ ७॥

॥ वरुण उवाच॥

बोल्यौ बरुन कि सफल मो, जनम भयौ है आज॥
तुम्ह पद पंकज कौ कियौ, दरसन हे माराज॥ ८॥
सब कुछ या संसार मैं, म्हैं पायौ निरधार॥
भयौ कृतारथ सहज हीं, हे स्वांमी करतार॥ ९॥
तुम्ह जु ब्रह्म परमातमा, जुदे प्रकृति तैं स्यांम॥
अति सनेह संजुक्त है, तुम्हकौं मो परिनांम॥ १०॥
मो सेवक बिनु जांनि तुम्ह, पितु कौं गहि लै आय॥
छमा करहुँ अपराध इह, म्हैं बंदत तुव पाय॥ ११॥

पिता तुम्हारैं कौ प्रभू, लै जाव निजधांम॥
नंद नंद गौबिन्द ब्रज, चंद परम अभिरांम॥ १२॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि प्रभु पिता कौं, लै आयै निज गेह॥
हौत भयौ बंधून कैं, उर आनंद अछेह॥ १३॥
बरुन लौक की बात सब, गौपन सौं कहि नंद॥
अरु आदर श्रीकृस्न कौ, बरुन कियौ पगबंद॥ १४॥
इहि सुनि जांन गयै सकल, ईस्वर है श्रीकृस्नं॥
कबहुँ हम्हहुँ निज लौकहूँ, दिषवैगें ह्वै प्रस्नं॥ १५॥
गौपन कौ जु मनोर्थ लषि, ऐसै कृस्न क्रिपाल॥
ऐसौ कियौ बिचार चित, निज भक्तननि प्रति पाल॥ १६॥
रूप आपनैं कौं इहै, प्रांनी जांनत नांहिं॥
बहु तन धरि अग्यांन सौं, बिच संसार भ्रमांहिं॥ १७॥
इहि बिचार बैकुंठ सब, गौपन दिषयौ स्यांम॥
सत्य रु ग्यांन अनंत मय, जोति रूप जिहिं ठांम॥ १८॥
जोगैस्वर जिहँ लषत हैं, ऐसौ ब्रह्म सरूप॥
पहलैं गौपन कौं प्रभू, दिषयौ महा अनूप॥ १९॥
पाछैं जांह अक्रूर कौं, जमुना जल कैं मांहिं॥
ब्रह्म सरूप दिषाय हैं, करिकैं क्रिपा अथांहिं॥ २०॥
गौपनहूं तिहिं ठौरहीं, दिषयौ पुर बैकुंठ॥
फिरि गौपनि बाहरि लियैं, जलतैं प्रभू अपूठ॥ २१॥
नंदादिक सब गौप गन, लष्यौ लौक बैकुंठ॥
अस्तुति करत श्रीकृस्न की, तहिं लषि वेद अतुंठ॥ २२॥
सबहिंन हुव आनंद अति, लषि निज प्रिय परताप॥
अरु उहां तैं मांनत भय, ब्रज मैं सुष अनमाप॥ २३॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते अष्टाबिंसोऽध्यायः ॥ २८॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ ऐकोनत्रिंसोऽध्यायः ॥

(रासलीला का आरंभ)

॥ श्री सुक उबाच॥

चोपई - श्री सुक कहत सरद रित मांहिं॥ फूलि मल्लिका रही सुहांहिं॥
निसा चांदनी लसत सुढार॥ ताकौं लषि श्रीकृस्न कुमार॥ १॥

करिबै लीला रास रसाल॥ कियै मनोरथ चित उहिं काल॥
अपनीं माया जोग सुबैंन ॥ कर लैं धारी अधर सुषैंन॥ २॥
ताही सौं सब लीला हौत॥ कियै ताकैं सुरकौं उदौत॥
भौ ससि उदित पूर्न तां बार॥ नहिं कलंक जामैं निरधार॥ ३॥
ससि ऊगत निति जासौ न्यार॥ प्रभु मन रूपी महा सुढार॥
पूर्ब दिसा मनु ससि की नारि॥ तिह निज लाज किरन अनुसार॥ ४॥
मुप मंडित कर सौभ बढाइ॥ सौ सबहिंन कौं लगत सुहाइ॥
चंद उदै तैं बढि सुषधाप॥ मिट्यौ सकल जीवनि संताप॥ ५॥
कुंकुम मंडित ज्यौं श्री आनन॥ अैसौ उदित भय ससि कानन॥
ताकी किरननि कैं अनुभाय॥ वृंदावन मंडित दरसाय॥ ६॥
दैपि उमगि ब्रजराज कुमार॥ चाह्यौ करन सुरंग बिहार॥
हर्यौ जिहिं गौपिन मन जा करि॥ अैसौ बैंनु सब्द कीनौं हरि॥ ७॥
सौ मुरली कौं सब्द सुढार॥ सुनत भई गौपी वां बार॥
सब्द सुन्यौ बहि ग्वालन नाहिं॥ सुनै न रहते बै ग्रिह ठांहिं॥ ८॥
चलै आवतें प्रभु कै पास॥ तौ मिटि जातौ रंग बिलास॥
जाकैं सुनै बढै अति कांम॥ अैसौं बैंनु सब्द अभिरांम॥ ९॥
सुन मोहित ह्वै नव ब्रजबाल॥ छिप छिप इक इक चली सचाल॥
दौरत उछरत अंचर हार॥ किंकनि नूपर बजत सुढार॥ १०॥
श्रवननि कुंडल डुलन सुहाइ॥ अलक कपौलन पैं छबि छाइ॥
जिन्ह मन कृस्न कुंवर हर लीन॥ गौपिन हिर्दै ध्यांन निज दीन॥ ११॥
जक्त कार्ज मैं जैं जन रहैहिं॥ तैं प्रभु प्रापति नांहिं लहैहिं॥
तातैं गौपी तजि ग्रिह काज॥ प्रभु पैं चली पटकि कुल लाज॥ १२॥
कौं तिय गाय दुहावत बार॥ सुनि धुनि बैंनु चली बस मार॥
किहूं तजै पय चुह्लि चढायहिं॥ कौं निजपति कौं बिनु जिमायहिं॥ १३॥
कौं अंजन मंजन बिनु कीन॥ कौं दूधहिं जांवन अनदीन॥
कौं लरिकन कौं बिनु पय पाय॥ कौं पतिकौं बिनु सेज सुवाय॥ १४॥
करत कुटंबहिं कौ पुरसार॥ कौं जैंवत ही तजि पनवार॥
कौं निज ग्रिह व्यौहार अधीनि॥ उठि दौरी हरि हित रस भीनि॥ १५॥
कौं उठि दौरी करत रसौइ॥ तजि पति सैव चली पुनि कोइ॥
तजि नित्यादि सकल ग्रह कारिज॥ चलि मिलन प्रभुं सौं द्रिगवारिज॥ १६॥
गौपी जैं प्रभु प्रिया निदान॥ तिन्हकैं तौ न भयौ संतान॥
पैं बै जब प्रभु निकटहिं आवत॥ करत रास रस जो मन भावत॥ १७॥
तब इक इक निज छाया रूप॥ ग्रेह राषि आवत सु अनूप॥
तिह्वैं गौप निज निज तिय मांनि॥ छाया रूप भैद नहिं जांनि॥ १८॥
तिन्हकैं हौत प्रगट संतान॥ तैं सुत वै तिय गनत प्रमांन॥

गौपी सबैं प्रेम तैं जु चलि॥ दैषन कृस्न उमंग रसहिं रलि॥ १९॥
ज्यौं सावन सरिता उमडांहिं॥ किहुँ सूं रोकी रहत सुनांहिं॥
कहुंके कहुं आभरन जु पहरि॥ तिनकी सुधि न कछू चित धरहिं॥ २०॥
पउंची प्रभु कैं निकटहिं जाय॥ गौपी महामोद मन छाय॥
तब जोग माया सब भूषन॥ जथा जोगू कियै सुतन मन॥ २१॥
पति पितु बंधु भ्रात मिलि रौकि॥ तउ न रुकी वै हरि हित वौकि॥
जिन मन लग्यौ कृस्न कैं मांहिं॥ तिनकौं रोकि सकत कौ नांहिं॥ २२॥
जें गौपी न रूकी निज ग्रेह॥ माया मयन हुती तिन देह॥
हौ आनंद रूप सुषदाय॥ तातैं मिली प्रभू सौं जाय॥ २३॥
कितिक गौपि गुनवत तन लांहिं॥ सौ प्रभु मिलन जोग्य न रहांहिं॥
जें चाली ग्रिह तैं जिहिं बार॥ रोकि रषी गौपन निरधार॥ २४॥
निकसन लगी मूंद तब नैन॥ किय उर हरि कौं ध्यांन सुषैंन॥
या प्रांनी कौं तन निरधार॥ बन्यौ सुपाप पुन्य अनुसार॥ २५॥
ताकौं भोग करि चुकैं जबहिं॥ छूटि जात है इह तन तबहिं॥
सौं उन्ह गौपिन इक छिन मांहिं॥ पापपुन्य भुक्तयौ ग्रिह ठांहिं॥ २६॥
प्रभु कौं बिरह भयौ अनपार॥ सौ भुक्तयौ फल पाप प्रकार॥
प्रभु सौं मिलत भई धरि ध्यांन॥ सोई पुन्यफल कौ उनमांन॥ २७॥
तातैं बहि तन छुटि वां बार॥ प्रभु सौं मिलि पायौ सुषसार॥

॥ राजोवाच ॥

इहि सुनि नृप परिछित बोलैहुँ॥ उर संदेह हुतौ जु षोलैहुँ॥ २८॥
हे मुनि बै सबहीं बृज बाल॥ लषि श्रीकृस्न सुरूप रसाल॥
मोहित ह्वै कैं निज प्रिय जांनि॥ ब्रह्म रूप नांहिन पहिचांनि॥ २९॥
ब्रह्म ग्यांन बिनु मुक्ति न पांहिं॥ उन्ह क्यूं मुक्ति लही अधिकांहिं॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक बोलै हे नृप इहि बात॥ हम्ह पहलैं ही कहीं बिष्यात॥ ३०॥
प्रभु सौं बैर कियौ सिसुपाल॥ तिनहू पाई मुक्ति बिसाल॥
गौपी तो हरि प्रियां कहांहिं॥ तैं ह्वै मुक्त सुअचिरज नांहिं॥ ३१॥
अविनासी व्यापक सबठांम॥ ऐसैं प्रभू कृस्न अभिरांम॥
मुक्ति जक्त की हौंन सुठौंन॥ प्रगट भयै हैं या भुव भौंन॥ ३२॥
कांम क्रौध भय नैहसमंध॥ इन्हमैं न काहू भैद प्रबंध॥
मन लावै जौ हरि कैं मध्य॥ सौ हरिहीं मैं मिलैं प्रसध्य॥ ३३॥
जोगिन कैं ईस्वर भगवांन॥ सबकौं दैंन मुक्ति सुभथांन॥
ऐसै कृस्न कुमार उदार॥ लीला करत इछा अनुसार॥ ३४॥
ताकौं अचिरज काहू भाय॥ ऐसै मति मानौं है राय॥
आई निकट जबै बजनारि॥ तिन्ह नुपूर धुनि सुनी मुरारि॥ ३५॥

तब हरि मन चित श्रवननि आय॥ दैषन काज नैंन अकुलाय॥
इतनैं हीं मैं द्रिष्ट परी जब॥ मुदित कृस्न कैं नैंन भय तब॥ ३६॥
कुंजन तैं निकसत यौं लसहिं॥ तम टारत बहु ससि चहुँ दिसहिं॥
गौपी आई निकट निहारि॥ बोलै बांके बचन मुरारि॥ ३७॥
जांसौ मोंहित ह्वै ब्रजभांम॥ बचन बिलास कियौ अस स्यांम॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

कह्यौ कृस्न जू हे बृजबाल॥ तुम्ह बड्ड भागनि परम रसाल॥ ३८॥
तुम्ह इहां आइ भलौ सुकीन॥ का चाहत तुम्ह कहौ प्रवीन॥
तुम्ह इहां आइ दौरि सचाल॥ हैं कुसलात जु ब्रज या काल॥ ३९॥
तुम्ह इहां आइ कौनैं काज॥ सौ कहियै म्हैं करौं इलाज॥
निसा भयंकर हे ब्रजभांम॥ जंतु भयंकर या बन ठांम॥ ४०॥
तातैं तुम्ह न रहौ या ठौर॥ उलटी ब्रजहीं जाहुँ सुतौर॥
पिता पुत्र पति माता रु भ्रात॥ ढूंढत ह्वै हैं लहि उतपात॥ ४१॥
तातै तुम्हघरि बेगैं जाहुँ॥ निज कुटंब कौ सोच मिटाहुँ॥
अरु जो बन सौभा कुं दैषन॥ तुम्ह इहां आइ धरि चाव मन॥ ४२॥
तौ अब देष्यौ बिपन रसाल॥ जाहुँ बेगि ग्रिह हे ब्रजबाल॥
अरु जो तुम्ह सनैह अनुसार॥ म्हेरैं बसि ह्वै कैं निरधार॥ ४३॥
मुहि दैपन आई या ठांम॥ तौ मो दरसन किय हे भांम॥
अबतुम्ह जावौ अपनैं गैह॥ पूर्न मनौरथ किय जुत नैह॥ ४४॥
जाय पतिनं की सेवा करहुँ॥ ग्रिह व्यौहार भलैं अनुसरहुँ॥
तिया करै भरता की सैव॥ परम धरम है सोई सुभैव॥ ४५॥
अरु पूजै पति कैं बंधूजन॥ रु पालैं ग्रिह कैं सेवक गन॥
इहि तिय धर्म सु बेद बताइ॥ सौ करिकैं तिय सुभ पद पाइ॥ ४६॥
भाग्यहीन जड बुरै सुभाय॥ ब्रध निर्धन पुनि अति दुषदाय॥
अैसौ हुँ जो ह्वै निज भरतांहिं॥ तउ तजै न तिय बुधि धरतांहिं॥ ४७॥
अस्त्री अपनौं पति परहरहिं॥ और पुरष सौं प्रीति जु करहिं॥
ताहि न स्वर्ग सुजस सुष हौत॥ ह्वै जगत मैं निंदा उदौत॥ ४८॥
कीनैं म्हैरो दरसन ध्यांन॥ अरु मो चरित सुनैं सप्रमांन॥
म्हैरो नांम कीरतन कियहिं॥ जइसी भक्ति सु प्रगटत हियहिं॥ ४९॥
तइसी म्हैरै निकटहूं रहहिं॥ प्रांनी भक्ति नांहिंनै लहहिं॥
तातैं निज घर हीं तुम्ह जाय॥ मोहि मैं अपनौं चित लगाय॥ ५०॥

॥ श्रीसुक उवाच॥

दोहा – **सुक कहत कि श्री कृस्न कैं, अैसै रूषै बैंन॥**
सुनि गौपी अति दुषित ह्वै, कीनै नीचै नैंन॥ ५१॥
गयैहुँ मनोरथ चित्त कैं, चिंता उपजि अपार॥
सूषै अधर जु सोच सौं, उर धरकत वां बार॥ ५२॥

पद नष सौं प्रिथवी लिषन, लागी सीस नवाय॥
चुप ह्वै ठाढी ह्वै रही, थर थर तन कंपाय॥ ५३॥
अंजन जुत उर पर परत, नैंनन तैं जलधार॥
बौलि सकत नांहिंन कछू, पर्यौ महा दुषभार॥ ५४॥
गौपिन कौं श्रीकृस्न जू, प्यारै प्रांन समांन॥
तिन मुष तैं रूषै बचन, सुनि दुष भौ अप्रमांन॥ ५५॥
तजि सब ग्रिह सुष गौपिका, आई प्रभु कैं पास॥
हरि मुष रूषै बचन सुनि, कछुक क्रौध उरभास॥ ५६॥

॥ गोप्य ऊचुः ॥

गद गद सुर बौलत भई, गौपी प्रीति प्रभाय॥
कूर बचन ऐसै कहत, हम्ह सौं क्यूं सुषदाय॥ ५७॥
हम्हतौ सबहीं छौडि कैं, ग्रिह कैं सुष व्यौहार॥
आई तुव चरननि सरन, हे ब्रजराज कुमार॥ ५८॥
त्याग हम्हारौ मति करौ, सुंदर स्यांम सुजांन॥
देहुँ छौडि निज हठ अबै, हे प्रांनन कैं प्रांन॥ ५९॥
नारायन कैं सरन जैं, जात मुक्ति कौं चांहिं॥
नारायन हूं करत जिन्ह, अंगीकार उमांहिं॥ ६०॥
त्यौंहीं हम्हारौहुँ करौ, तुम्ह अब अंगीकार॥
चरन हम्हारै परत नहिं, ग्रिह मग कौं निरधार॥ ६१॥
धर्म तियन कैं हम्हहिं तुम्ह, कहत सु सत्य निदांन॥
बड्डै धर्मधर तुम्ह सु हम्ह, जांनि भलैं उनमांन॥ ६२॥
तुम्हहिं आतमा बंधु प्रिय, सही हम्हारै स्यांम॥
सैव तुम्हारी ही उमगि, हम्ह करिहैं सुषधांम॥ ६३॥
प्रीति लगावति तुम्हहिं तैं, जन प्रवीन जग मांहिं॥
तुम्ह सबकैं नित्य प्रिय प्रगट, सुषदायक अधिकांहिं॥ ६४॥
और पुत्र पति बंधु सबै, है निश्चै दुषदाय॥
तातैं हे पंकज नयन, हम्ह तुम्ह पद सरनाय॥ ६५॥
हम्ह परि हौहुँ प्रसंन तुम्ह, अपनीं दासी ज़ांनि॥
आस हम्हारी करहुँ प्रिय, सफल भलैं उनमांनि॥ ६६॥
हँसि चितायबौ रावरौ, अरु बजायबौ बैंन॥
महा मोहनी मंत्र सम, मोही हम्हहिं सुषैंन॥ ६७॥
कटुक बचन तुम्ह कहत हौ, हम्हकौं हे प्रिय प्रांन॥
तातैं बिरह दवाग्नि हम्ह, हदै बढी अप्रमांन॥ ६८॥
ताहि बुझावौ तुम्ह अमृत, अधर पांन करवाय॥
नहिं तौ हम्ह जरि जांहिंगी, बिरह अग्नि अनुभाय॥ ६९॥

अरु धरि ध्यांनहिं रावरौ, हम्ह तजिकैं निज देह॥
निकट तुम्हारे हीं सदा, रहि हैं सहित सनेह॥ ७० ॥
हे अंबुज दल नैंन तुव, चरन कंवल सुषदाय॥
श्रीहूं कौ दुर्ल्लभ महा, कहत बेद इहि गाय॥ ७१ ॥
बन मैं तुव पद परस हम्ह, कीनौं हैं श्रीकृस्नं॥
अरु हम्ह परि कीनी क्रिपा, तुम्ह ह्वै कैं अति प्रस्नं॥ ७२ ॥
ता दिन तैं किहुँ पास हम्ह, ठाढीहूं न रहंत॥
अपनैं पति जु सुहात नहिं, सुनहुँ राधिका कंत॥ ७३ ॥
लछमी चितवै वौर हम्ह, इहै सुरनहूं चांहिं॥
सौ लछमी नित प्रत बसत, हृदै तुम्हारे मांहिं॥ ७४ ॥
उन्ह भक्तन की भीरहूं, मधि लछमी जुत प्रीत॥
तुम्ह पद पंकज की करत, सेवा आछी रीत॥ ७५ ॥
अैसै हैं प्रिय रावरै, पद पंकज अभिरांम॥
तिन्हकैं हम्ह आई सरन, तजि तजि अपनैं धांम॥ ७६ ॥
तुम्ह हौ हरता पाप कैं, तुम्ह पद सैवन काज॥
हम्ह आई हैं छौडि कैं, जुत कुटंब कुललाज॥ ७७ ॥
तुम्हरौ हँसनौ चितवनौ, है मन·मोहन हार॥
जासौ हम्ह उर हनत है, पंच बांन कसि मार॥ ७८ ॥
तातैं अपनीं कीजियै, दासी हम्हकौं स्यांम॥
तुम्ह सब पुरषन मध्यहौ, परम पुरुष अभिरांम॥ ७९ ॥
सुंदर आनन रावरौ, सौभित चंद समांन॥
तातैं अमृत अधर रस, कियौ चहत हम्ह पांन॥ ८० ॥
अंग अंग तुम्ह माधुरी, लषि हम्ह मोहित हौय॥
भई रावरी दासिका, अति सनेह चित्त गौय॥ ८१ ॥
बैंन सबद सुनि रावरौ, मोहित ह्वै तजि धांम॥
तुम्ह सौं नहिंन मिलै सु कौ, अैसी है ब्रजभांम॥ ८२ ॥
रूप तुम्हारौ सुभग लषि, कौनुँ न मोहित हौत॥
लषि गौ मृग तरु पंछिनहूं, कैं रोमांच उदौत॥ ८३ ॥
ब्रजबासिन कौं हरन दुष, प्रगट भयै तुम्ह स्यांम॥
ज्यौं नारायन रछिक ह्वै, प्रगटत स्वर्गहिं ठांम॥ ८४ ॥
दीन सहायक नाथ तुम्ह, असरन सरन क्रिपाल॥
करि सपरस श्री अंग कौ, कीजै हम्हहिं निहाल॥ ८५ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि गौपीन कैं, दीन बचन सुनि कृस्नं॥
जोगिन कैं ईस्वर प्रभू, हँसि करि दया सप्रस्नं॥ ८६ ॥

आप आतमा राम जैं, जिन्ह मैं कछु न बिकार॥
तऊ रमन गौपीन सौं, करत भयैं करतार॥ ८७॥
अदभुत जिन कैं चरित अति, सुंदर रूप उदार॥
ऐसै कृस्न कुमार की, चितवनि कैं अनुसार॥ ८८॥
प्रफुल्लित हुव गौपीन कैं, पंकज बदन रसाल॥
प्रेम सहित श्रीकृस्न सौं, मिलि कैं भई निहाल॥ ८९॥
गौपिन सौं मिलि कृस्न जू, सौभे या अनुभाय॥
ज्यौं तारन कैं मध्य ससि, लहत सौभ अधिकाय॥ ९०॥
कृस्न चरित गावत सुभग, गौपि समूह सुजांन॥
तिन्ह मधि मिलि श्रीकृस्न जू, करत आपहूं गांन॥ ९१॥
मौर मुकट सीसहिं सुभग, उर बैजंती माल॥
सुंदर रूप अनूप छबि, बांके नैंन बिसाल॥ ९२॥
पीत बसन भूषन रतन, मुक्ताहलहिं संजूप॥
बिहरत है बन कैं बिषैं, बजवत बैनु अनूप॥ ९३॥
कौमल पुलिन रू जमुन तटि, त्रिबिधि समीर सुढार॥
गंध कमौदनि कौं रह्यौ, फैलि भलै अनुसार॥ ९४॥
कपूर जिमि उज्जल सिकता, जमुन तरंग प्रभाय॥
सीतल सुगंध परिमल सुँ, परसत अतिसय भाय॥ ९५॥
ऐसी सुंदर ठौर हरि, लागै करन बिलास॥
दैं गरबांही तियन सौं, रचत विविध बिधि हास॥ ९६॥
कर कुच नीवी परसि कैं, चितवत प्रीति प्रभाय॥
उपजावत हरि तियन कैं, कांम मंद मुसकाय॥ ९७॥
गौपिन कैं अनुराग बसि, ह्वै श्रीकृस्नं कुमार॥
करत भयै गौपीन सौं, रमन अनैक प्रकार॥ ९८॥
बढि सुहाग मद तियन कैं, गर्वित हुव वां बार॥
जान्यौ हम्ह सी और कौं, तियन बीच संसार॥ ९९॥
निजहिं श्रेष्ठ मांनत भई, गौपी सब जगमांहिं॥
ऐसौहि गर्व बढ्यौ अधिक, बरनि सकतहूं नांहिं॥ १००॥
तब मैंटन बहिं गर्व अरु, प्रीत बढावन काज॥
अंतरध्यांन भयै जू हरि, तजिकैं गौप समाज॥ १०१॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते ऐकोनत्रिंसोऽध्यायः॥ २९॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ त्रिंसोऽध्यायः ॥

(श्रीकृष्ण के विरह में गोपियों की दशा)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - सुक कहत कि श्रीकृस्न जू, जब हुव अंतरध्यांन॥
तब गौपी व्याकुल भई, बढ्यौ बिरह अप्रमांन॥ १ ॥
प्रभु कौं चलनौं चितवनौं, हँसनौं सुंदर बैंन॥
रंग बिहार बिलास अरु, राग महा सुष दैंन॥ २ ॥
अैं बातैं सुधि करि भई, ब्याकुल सब ब्रजबाल॥
ध्यांन धारि श्रीकृस्न कौं, तनमय हुवि वां काल॥ ३ ॥
हम्हहीं हैं श्रीकृस्न इहि, जांनत भई निदांन॥
उन्हकीं लीला सुभग षुद, करन लगी हित वांन॥ ४ ॥
गाय गाय श्रीकृस्न कैं, चरित महा सुषदाय॥
उन्हहीं कौं ढूंढत फिरत, बन मैं प्रीति प्रभाय॥ ५ ॥
जें सब मांहिं बिराजहीं, नभ समांन करतार॥
तिन्हकौं ढूंढन ब्रछन कौं, पूछत तिय सुकुमार॥ ६ ॥
बड्डे ब्रछन पूछत पहल, प्रेम मई ब्रजबाल॥
हे पीपर बट पलछ तुम्ह, लषै कहूं गौपाल॥ ७ ॥
सुंदर चितवनि हास सौ, हम्ह मन लियौ चुराय॥
तुम्ह कहुँ दैषे हौंहि तौ, दीजै बेग बताय॥ ८ ॥
हे कुरबक रु असौक हे, चंपा नाग रु पुनांग॥
तुम्ह कहुँ दैषे हैं कि नहिं, नंद जु पुत्र बडुभाग॥ ९ ॥
जिनकौ हँसनौ तियनकौ, दूरि करत है मांन॥
द्रिग चितवनि बांकी सुभग, मनु मनोज कैं बांन॥ १० ॥
अैसै श्री बलिदेव कैं, भ्रात सांम सुषदाय॥
तुम्ह तर हौय चलै गयै, ह्वै तौ दैहुं बताय॥ ११ ॥
हे तुलसी तौ कौं महा, प्रिय हरि चरन रसाल॥
तेरौ धारन करत है, बै हरि नैंन बिसाल॥ १२ ॥
तिन्हकौं दैषे हौंहि तैं, तौ देहुँ मो बताय॥
हम्ह उन्ह बिनु व्याकुल महा, बढ्यौ बिरह दुषदाय॥ १३ ॥
हे जाती हे जूथिका, हे मल्लिका चंबैलि॥
सांम आपनैं हाथ पैं, डार तुम्हारी झैलि॥ १४ ॥
तुम्हहिं परसि अति प्रसंन करि, हौय तुम्हारै पास॥
चलै गयै ह्वै स्यांम तौ, बतवहुँ सहित हुलास॥ १५ ॥
हे प्रियाल हे अंब असनि, पनस हे कौबिदार॥
हे जांबुन हे बिल्ब हे, बकुल कदमहिं अपार॥ १६ ॥

जनम तुम्हारौ पर अरथ, तटि कालिंदी वास॥
बतबहुँ मग श्रीकृस्न कौं, हम्हहिं बिरह की त्रास॥ १७ ॥
बै तरु जड़ बोलै नांहिं, तब सब तिय अनषाय॥
आपस मैं लागी कहन, बचन सु या अनुभाय॥ १८ ॥
हे सषि मति पूछौ इह्नैं, कछु बौलत है नांहिं॥
तीरथ बासी बृच्छ अैं, अति कठोर दरसांहिं॥ १९ ॥
हे सषि अब या अवनिकौं, पूछहुँ करि मनुहारि॥
इहि जांनत ह्वै हैं सही, ह्वै हैं जांह मुरारि॥ २० ॥
यौं कहिकैं पूछत भई, प्रिथवी कौं वां बार॥
हे भुव तुव बड्डु भागनी, किय बड्डु तप निरधार॥ २१ ॥
चरन कंवल श्रीकृस्न कैं, कौं तुहि सपरस हौत॥
तातैं अैं त्रिनहीं प्रगट, तौ रौमांच उदौत॥ २२ ॥
तिन्ह करि तू सौभित भई, लागत महा रसाल॥
तू जांनत ह्वै हैं सही, सुंदर स्यांम गुपाल॥ २३ ॥
पहलै बांबन पद परस, तौहि भयौ सुषसार॥
लियै रहत पुनि दाढ पैं, तुहि बराह करतार॥ २४ ॥
तेरैं भयै रूमांच सौ, किह सपरस अनुभाय॥
सौ हम्ह सौं कहि देहुं तू, आछै भेद जताय॥ २५ ॥
दिष्ट परी हिरनी जबै, पूछत है ब्रजनारि॥
हे हिरनी तेरै नयन, है डहडहै सुढारि॥ २६ ॥
तातैं जानी परत तुम्ह, नैननि दै आनंद॥
इत ह्वै निकसैं हौंहिगै, नंद सुवन ब्रजचंद॥ २७ ॥
आपस मैं लागी कहन, फिरि यौं सब ब्रजबाल॥
हे सषि जान्यौ परत है, अैसौ भेद रसाल॥ २८ ॥
मिलि कैं अपनीं प्रिया सौं, दिय आलिंगन सांम॥
तातैं कुच कुंकुम लगी, कुंदमाल कै ठांम॥ २९ ॥
तिहँ सुगंध आवत हम्हैं, इहि ठां पवन प्रभाय॥
तातैं जांनि परि आली, प्रिया कौं संग लगाय॥ ३० ॥
फैरि बउत फल फूल जुत, तरु नय रहै निहारि॥
पूछन लागी मिलि सबै, प्रेम मत्त ब्रजनारि॥ ३१ ॥
हे तरु काहू नारि कैं, कंध धरैं निज पांनि॥
दुतिय पांनि फैरत कंवल, सुंदर स्यांम सुजांन॥ ३२ ॥
अरु पहरै जुत तुलसि दल, फूलनि माल रसाल॥
तिहँ सुगंध सौं अलि घिरत, तातैं चलत सचाल॥ ३३ ॥

तुम्ह अैसै श्रीकृस्न कौ, दैषि कियौ परिनांम॥
चितै प्रीति सौं रावरौ, समाधांन किय सांम॥ ३४॥
तातैं बंदनहीं करत, तुम्ह नय रहै सुढार॥
दीजै हम्हहिं बताय बै, सुंदर कृस्नं कुमार॥ ३५॥
कौं तिय बौली तरुन सौं, लता रही लपटाय॥
फूलि रहै हैं फूलि सौं, इन्ह रुमांच दरसाय॥ ३६॥
तातैं जांनी परत इन्ह, फूल तोरि श्रीकृस्नं॥
इन्ह लतांन कौं मनु कियौ, सपरस ह्वै अति प्रस्नं॥ ३७॥
तातैं इन्हकौं पूछियै, अैं जु बतै है स्यांम॥
छिपि निकसै किहुँ वौर ह्वै, मोहित करि ब्रज भांम॥ ३८॥
बौरें कैं से बचन यौं, कहत बिकल ब्रज भांम॥
तनमय ह्वै ढूंढत भई, बन घन मैं घनस्यांम॥ ३९॥
बहुरि कृस्न की सी करत, लीला अति उनमत्त॥
गौपि भई सब हरि मई, प्रेम प्रभाय सचित्त॥ ४०॥
कौं गौपी भइ पूतनां, कौं भइ हरिकौ रूप॥
लीला बकि संघार की, लागी करन अनूप॥ ४१॥
लीला सकट जु गिरन की, करत भई कौं नारि॥
त्रिनावर्त की सी कौउ, लीला करत सुढारि॥ ४२॥
धरत भई व्है गौपिका, रांम सांम कौं रूप॥
ग्वाल रूप कौ गौपिका, धारत भई अनूप॥ ४३॥
हुव बत्सासुर रूप कौउ, रूप बकासुर कौय॥
झूठे हीं तिनकौं कौउ, हतत भई हरि हौय॥ ४४॥
कृस्न रूप ह्वै गौपि कौउ, बुलवत लै गौ नांम॥
ज्यौं टेरत हे कृस्न जू, गायन कौं बन ठांम॥ ४५॥
कृस्न रूप ह्वै गौपि कौउ, लगी बजावन बैंन॥
ताकी करत सराह सब, गौपी और सुबैंन॥ ४६॥
कौं गौपी हरि रूपह्वै, धरि किहुँ कांधै पांनि॥
बौली म्है हूं कृस्न मौ, लषौं चाल सुष दांनि॥ ४७॥
कौं गौपी हरि रूप ह्वै, अैसै कह्यौ सुनाय॥
तुम्ह कौं बरिषा पवनतैं, मति डरपौं किहुँ भाय॥ ४८॥
करौं तुम्हारी म्हैं रछा, गिरि गौवरधन धारि॥
यौं कहि लै इक बस्त्र कौ, ऊंचौ कीनौ नारि॥ ४९॥
यौं गौवरधन धरन की, लीला करी सुढार॥
महामत्त गौपी सबै, पूरन प्रेम प्रकार॥ ५०॥

कौ गौपी बौलत भई, किहुँ सिर पर धरि पांव॥
निकसि जाहुँ तू दुष्ट अहि, इहां न तौ ठहरांव॥ ५१ ॥
म्हैं हूं दुष्टनि दंड कौ, दाता निति निरधार॥
इहे ठौर मो रमन की, तू क्यूं रहत कुचार॥ ५२ ॥
कौं गौपी बौली सबै, मूंदि लैहुँ तुम्ह नैंन॥
रछा तुम्हारी अग्नि तैं, म्हैं करिहौं दे चैंन॥ ५३ ॥
ऊंषल बंधन की कौउ, लीला करत सुढार॥
कौउ गौपी ऊंषल भइ, कौं भइ कृस्न कुमार॥ ५४ ॥
सुभग कृस्नं लीला सबै, गौपी करि वा बैंरि॥
बृन्दावन कैं तरुननि सौं, फिरि पूछत है टैंरि॥ ५५ ॥
कृस्न चरनन कैं चिह्न लषि, आगै भुव परनारि॥
आपस मैं बौली बिहसि, परम प्रेम अनुसारि॥ ५६ ॥
बज्र कंवल अंकुस धुजा, जव जुत चिह्न संजुक्त॥
पद पंकज अैं कृस्न कैं, दैन जक्तहिं कौं मुक्त॥ ५७ ॥
आगैं ढूंढत जात जांह, लषत भई सब वांम॥
चरन चिह्न किहूँ पिया कैं, जगमगात अभिरांम॥ ५८ ॥
चरन चिह्न बै लषि सबै, तिय बौली अनषाय॥
चरन चिह्न अैं कौनुं कैं, इहां परत दरसाय॥ ५९ ॥
कृस्न कंध परि कर धरै, जात कौउ इहि संग॥
ज्यौं गजनी गज संग ह्वै, चलत सहित उछरंग॥ ६० ॥
आराधै इन्हहीं तिया, हरि ईस्वर भगवंत॥
स्यांम हम्हहिं तजि प्रसंन ह्वै, लै गय याहि इकंत॥ ६१ ॥
कौउ गौपी बौलि कि है, सुषद कृस्न पद रैंन॥
जा रज कौ बिधि सिव रमा, धारत सीस सुषैंन॥ ६२ ॥
संग गई तिहं तिया कैं, चरन चिह्न कौ दैषि॥
हिर्दै हम्हारै अनष बढि, उपजत क्रौध अलैषि॥ ६३ ॥
कृस्नं हम्हारै धन महा, लै गइ ताहि छिनाय॥
भोग अकैली ही करत, नित ईछा अनुभाय॥ ६४ ॥
आगै चलि गौपी कौउ, कहत भई यौं बात॥
इहां न वा तिय कैं चरन, उघरै भुव दरसात॥ ६५ ॥
तातै जांनि परत इहां, त्रिन अंकुर अधिकाय॥
तिय कैं कौमल चरन मैं, गडत भयै दुषदाय॥ ६६ ॥
जांसौ अपनैं कंध हरि, लीनी प्रिया उठाय॥
चरन चिह्न वां तिया कैं, इहां नांहिं दरसाय॥ ६७ ॥

आगैं चलि बौली कौउ, प्रिया काज प्रिय प्रांन ॥
तोरे हैं या ठौर मैं, सुमन सुरंग सुजांन ॥ ६८ ॥
तातैं हरि पद अग्र कैं, चिह्न इहां दरसात ॥
पूरन पग कैं चिह्न नाहिं, दीसि परत बिषयात ॥ ६९ ॥
आगै चलि बौली कौउ, अहै सषी या ठांम ॥
बैंनी मैं निज पिया कैं, पुहप गुथै हैं स्यांम ॥ ७० ॥
तातैं पिय पद चिह्न बीचि, तिया पद चिह्न रसाल ॥
पिय घूटननि बीचि इहां, बैठी सुंदर बाल ॥ ७१ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि या रीत सौं, कृस्न आतमा रांम ॥
तिय जित कांमी पुरष की, दसा दिषाई स्यांम ॥ ७२ ॥
ऐसै गौपी बिकल ह्वै, डौलत सब बन मांहिं ॥
चरन चिह्न दैषत फिरत, जांह तांह भुव ठांहिं ॥ ७३ ॥
संग हुती श्रीकृस्नं कैं, धारी प्रांन समांन ॥
जिन्हकौं अति परिस्त्रम भयौ, फिरत फिरत बन थांन ॥ ७४ ॥
तब बहि बौली अहौ पिय, मो सौं चल्यौ न जाय ॥
तुम्ह मन ह्वै जहिंलै चलौ, आप उछंग उठाय ॥ ७५ ॥
तबै बैठि पिय यौं कह्यौ, चढि मौ कंध सथांन ॥
चढन लगी प्यारी जबै, हरि हुव अंतरध्यांन ॥ ७६ ॥
निज मन जांन्यौ कृस्न जू, इहै प्रिया मो प्रांन ॥
इन्हकौं दूसन दैहिंगी, गौपी सबै निदांन ॥ ७७ ॥
तातैं ऐसौ कीजियै, प्रिया दोस न लषाय ॥
इहि बिचार तजि प्रिया हुव, अंतरध्यांन सुभाय ॥ ७८ ॥
पिय तैं बिछुरि प्रिया भई, बिरह बिकल अधिकाय ॥
पियहिं पुकारत करत है, रुदन महा बिल लाय ॥ ७९ ॥
हे पिय प्यारे हे रमन, हे प्रांनन कैं नाथ ॥
तुम्ह कां हौ क्यूं तजि गयै, गहरै बन मो साथ ॥ ८० ॥
बिनु देषै पिय रावरौ, बदन चंद सुष दैंन ॥
लष्यौ चहत बेहाल है, ह्वै चकोर मो नैंन ॥ ८१ ॥
सुनि सुनि धुनि अति बिरह की, रोवत षग मृग बृच्छ ॥
दीसि परत मनु ब्रछ तैं, बिछुरी लता प्रतच्छ ॥ ८२ ॥
सब गौपी ढूंढत चली, आई बांही ठांम ॥
मूर्छित पिय कै बिरह सौं, लषी प्रिया अभिरांम ॥ ८३ ॥
त्रास मांन गौपी सबनि, लीनी कंठ लगाय ॥
बूझन लागी तुम्हहिं क्यूं, तजि गयै छंद बनाय ॥ ८४ ॥

तब उन्ह परमप्रिया कही, सबनिज बात सुनाय॥
अचिरज सब गौपीन चित, हौत भयै अधिकाय॥ ८५ ॥
सब गौपी वां प्रिया कौ, लै निज संग लगाय॥
सौध करत श्रीकृस्नं कौं, आगै चली सुभाय॥ ८६ ॥
रही चांदनी जांह लौं, चली गई सब नारि॥
फिरि आगै अति सघन बन, बीच लष्यौ अंधियारि॥ ८७ ॥
जिहिं मग हरि पद चिह्न सबै, गौपिन लषै सुढारि॥
पैं न गई पाछी फिरी, डरि पिय लषि अंधियारि॥ ८८ ॥
जांह पहलै पिय सौं मिलि, तांह आय सब भांम॥
बैठि जमुन तटि करत भइ, कृस्न ध्यांन अभिरांम॥ ८९ ॥
मन लाग्यौ श्रीकृस्नं मैं, गौपिन कौं निरधार॥
उन्हहीं कौं गुनगान सब, करत भई वां बार॥ ९० ॥
हरि की सी लीला करत, तनमय ह्वै गई वांम॥
बिरह बिकल अति ही भई, सुधि न कियौ निज धांम॥ ९१ ॥
करि मनोर्थ पिय मिलन कौं, ह्वै इकठी सब नारि॥
करन लगी श्रीकृस्नं की, चरचा चाह प्रकारि॥ ९२ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते त्रिंसोऽध्यायः ॥ ३० ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अैकत्रिंसोऽध्यायः ॥

(गोपिका गीत)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - करत भई श्रीकृस्नं की, गौपी अस्तुति सुढार॥
तनमय ह्वै हरि ध्यांन मैं, परम प्रेम अनुसार॥ १ ॥

॥ गोप्य ऊचुः ॥

हे हरि जा दिन तैं प्रगट, भयै आय्र ब्रजमांहिं॥
ता दिन तैं बृज की भई, सौभा अति अधिकांहिं॥ २ ॥
तातैं निज दरसन हम्हहिं, दैहूं मित्र सुषदाय॥
तुम्हहिं लषन लगि आस हम्ह, प्रांन रहै ठहराय॥ ३ ॥
पंकज॰ द्रिग तैं रावरै, लगि कटाछि हिय मांहिं॥
बिकल भई ढूंढत फिरत, महा सघन बन ठांहिं॥ ४ ॥
हे बर दाता सस्त्रहीं, सौं न जीव बध हौय॥
द्रिग प्रहार सौं जीव बध, हौत सु जांनत कौय॥ ५ ॥

हम्ह दासी बिन मोल की, निज दरसन द्यौं स्यांम॥
तरफत बिनु जल मीन ज्यौं, बिकल भई ब्रजभांम॥ ६॥
काली दर कौं नीर बिष, व्यौम ब्रषभ दावागि॥
अति रिस करि बरिषा करी, बासव महा अथागि॥ ७॥
इन्ह बिघनन तैं तुम्ह करी, रछा हम्हारी नाथ॥
अबै बिना कारन हम्हहिं, क्यूं मारत निज हाथ॥ ८॥
अंतरजामी तुम्ह सही, नहिं जसुमति सुत आप॥
बिधि बिनती सौं प्रगट हुव, जदुकुल बिषै सजाप॥ ९॥
जें तजि भय संसार कौ, झूठी प्रकृति पिछांनि॥
तुम्ह पद पंकज कैं सरन, आवत भल उनमांनि॥ १०॥
तिनकौं दाता अभय कैं, सुभग रावरै पांनि॥
जिनसौं हम्ह सपरस करौं, हे पिय स्यांम सुजांनि॥ ११॥
तुम्ह सब ब्रजवासीन कैं, दुष कैं टारनहार॥
गर्ब जगत कौं हरत हौ, निज मुसक्यांन प्रकार॥ १२॥
हम्ह दासी हैं रावरी, दीजै दरसन सांम॥
तुम्ह बिनु बिरह कलैस अति, है हम्हकौं या ठांम॥ १३॥
तुम्ह चरनन कौं करत है, जें प्रांनी परिनांम॥
तिन्हकैं अघ मिट जात सब, सुष पावत अभिरांम॥ १४॥
अैसै तुव पद कंवल कौं, दरसन हम्हकौं दैहुँ॥
टारि हम्हारौ बिरह दुष, द्यो आनंद अछैहुँ॥ १५॥
मधुरी बौलनि रावरी, मोहि प्रवीननि लैत॥
तासौ हम्ह मौहित भई, धारि हिदैं अति हैत॥ १६॥
जिन्हैं अधर रस रावरौ, पिय करवइयै पांन॥
हाहा अबै जिबाइयै, हम्हकौं सांम सुजांन॥ १७॥
हासि चितवनौ प्रेम जुत, अदभुत बिबिधि बिहार॥
रहसि बात अैकांत की, दैंनहार सुषसार॥ १८॥
अैं ब्रातैं पिय रावरी, हे कपटी सुधि आय॥
अति ब्याकुल हम्हकौं करति, सौं कछु कही न जाय॥ १९॥
गौचारन कैं काज जब, ब्रज तैं तुम्ह बन जात॥
तबै सोच हम्हकौं उपजि, हिय अति दुष सरसात॥ २०॥
कोमल तुम्ह पद कंवल मैं, त्रिन कांकरी गडंत॥
सौ दुष अति बाढत हम्हहिं, क्यूंहूं सहि न सकंत॥ २१॥
घूंघरवारी अलक जुत, पंकज बदन रसाल॥
गौरज सूं मंडित सुभग, अरु द्रिग बंक बिसाल॥ २२॥

ऐंसौ तुम्ह निज मुष हम्हहिं, सांझ समैं दरसाय॥
उपजावत हौ कांम उर, ब्रज आवत सुषदाय॥ २३॥
तुम्ह पद पंकज कौं करत, ज़ें कौं जन परनांम॥
तिन्हकैं सब बिधि हौत है, निश्चै पूरन कांम॥ २४॥
जिन्ह चरनन की करत हैं, पूजा रमा उमांहिं॥
जें करता कल्यांन कैं, भुव कैं मंडन आंहिं॥ २५॥
तैं पद पंकज रावरै, धरहुँ हिर्दै हम्ह ठौर॥
दासि तुम्हारि गौपि सब, अब कीजै पिय गौर॥ २६॥
बढवन हारौ सुरति कौ, करन सौक कौं नास॥
जांकौ चुंबन करत है, बंसी सहित हुलास॥ २७॥
ऐसौ अधरा अमृत रस, हम्हकौं दीजै सांम॥
तुम्ह बिनु ब्याकुल हैं सबै, बिरहाबसि ब्रज भांम॥ २८॥
बृंदावन बिच दिन समैं, फिरत आप पिय प्रांन॥
तब तुम्हकौं बिनहीं लषै, छिन भौ कलप समांन॥ २९॥
घूंघरवारी अलक जुत, तुम्ह मुष कंवल रसाल॥
हम्ह दैषत जब कहत हैं, बिधिकौं ऐसौ साल॥ ३०॥
ब्रह्मा अति मूरष पलक, लगई आंषन ठांम॥
कोटि कलप बीतत हम्हहिं, छिन बिन देषैं स्यांम॥ ३१॥
पति सुत भाई बंधु तजि, हम्ह आई तुव पास॥
मुहित भई सुनि बैंन धुन, प्रगट्यौ प्रेम प्रकास॥ ३२॥
ऐसी निस मैं तुम्ह बिनां, हम्हकौं छौडे कौंनुं॥
हे प्रिय कपटी आप अति, हौ निश्चै ब्रिज भौंनुँ॥ ३३॥
दुष हरता मंगलकरन, जनम तुम्हारौ स्यांम॥
दुष हरियै अपनैंन कौं, हे प्रीतम अभिरांम॥ ३४॥
कुच कठौर हम्ह जांनि कैं, तिन्ह परि हे पिय प्रांन॥
चरन कमल मृदु रावरै, धरतै डरत सुजांन॥ ३५॥
अरु या कानन कैं बिषै, फिरत फिरत घनस्यांम॥
कांटै कंकर चरन मैं, गडि है प्रिथवी ठांम॥ ३६॥
बुधि हम्हारी भ्रमत है, इही सौच कैं मांहिं॥
अरु हम्ह जीवनहूं सही, तुम्ह आधीन सदांहिं॥ ३७॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते ऐकत्रिंसोऽध्यायः॥ ३१॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ द्वात्रिंसोऽध्यायः ॥

(भगवान का प्रकट होकर गोपियों को सान्त्वना देना)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि गौपी सबै, यौं करि हरि गुनगांन॥
अभिलाषा पिय मिलन की, करत भलैं उनमांन॥ १ ॥
बिरह बिकल ह्वै तिय सबै, रौवन लागि पुकारि॥
तब प्रगटै श्रीकृस्नं जू, परम प्रीति उर धारि॥ २ ॥
पीताबंर धारन कियैं, पहरैं उर बनमाल॥
सीस मुकट अदभुत लसत, बांके नैंन बिसाल॥ ३ ॥
सुंदर स्यांम अनूप छबि, मदनहिं मोहनहार॥
गौपी मंडल बीच हरि, प्रगट भयैं वां बार॥ ४ ॥
अपनैं पिय श्रीकृस्नं जू, आयै लषि सुष दैंन॥
हौत भयै गौपीन कैं, प्रफुल्लित तन मन नैंन॥ ५ ॥
गौपी उठि ठाढी भई, सकल अैकहीं बार॥
इंद्री चैतन्य हौत हैं, ज्यौं प्रांननि अनुसार॥ ६ ॥
कौं गौपी कर गहि रही, धरै भुजा कौं कंध॥
लपटि गई पिय सौं कौउ, कियैं प्रेम की संध॥ ७ ॥
कौ गौपी पिय पद कमल, छतियां रही लगाय॥
कौ गौपी हरि देत है, बीरी सुभग बनाय॥ ८ ॥
प्रेम सहित गौपी कौउ, करि निज भ्रकुटि बंक॥
द्रिग कटाछि कौ करत है, पियहिं प्रहार निसंक॥ ९ ॥
पलक लगायै बिन कौउ, पिय मुष रही निहारि॥
दैंषि दैषि सुंदर बदन, तन मन डारति बारि॥ १० ॥
पिय मुष पंकज दैषि द्रिग, त्रिपत हौत है नांहिं॥
हरि सेवा सौं साधु ज्यौं, नांहिंन त्रिपती पांहिं॥ ११ ॥
कौ गौपी हरि रूप कौ, ध्यांन हिर्दै मैं राषि॥
नैंन मूंद दैती भई, आलिंगन अभिलाषि॥ १२ ॥
आलिंगन दैं मगन ह्वै, लहत भई आनंद॥
ज्यौं जोगैस्वर ध्यांन धरि, मैट देत दुषदंद॥ १३ ॥
सकल तियन आनंद भौ, सांम मिलन अनुभाय॥
बिरह ताप सबहीन कौं, मिट्यौ महा दुषदाय॥ १४ ॥
जइसै प्रगटत मनुष कैं, उर जब पूरन ग्यांन॥
तीन ताप संताप तब, पावत नास निदांन॥ १५ ॥
गौपिन बिच सौभित भयै, अैसै कृस्नं कुमार॥
ज्यौं परमातम सौभहीं, अपनीं सक्ति प्रकार॥ १६ ॥

गौपिन कौं लै आय हरि, बैठे जमुना कूल ॥
तांह कुंज मंदार तरु, झूमि रहै जुत फूल ॥ १७ ॥
तिन्हकौं गंध लियै चलत, सीतल त्रिबिधि समीर ॥
करत सुभग गुंजार तहँ, बहु भ्रमरन की भीर ॥ १८ ॥
रजनीपति रितु सरद कौं, ताकी किरन प्रभाय ॥
अंधकार सब मिटि गयौ, अधिक उजारौ छाय ॥ १९ ॥
है कर जमुन तरंगहीं, तिन्ह सौं तांह सुढार ॥
राषी पुलनि संवारि कैं, बिहरन कृस्नं कुमार ॥ २० ॥
जिन्हमैं कुच कुंकुम लगी, ऐसै बस्त्र सुरंग ॥
वौढैहीं सुबिछाय दिय, बैठन पियहिं सुधंग ॥ २१ ॥
हरि गौपिन की सभा मैं, लही सौभ अधिकाय ॥
जइसी कबहूं सुर सभा, मधिन सौभ सरसाय ॥ २२ ॥
बसत रमा त्रिय लौक की, जिहँ प्रभु अंग सथांन ॥
अरु हिय जोगैस्वरन कैं, बसहीं बै भगवांन ॥ २३ ॥
जें प्रभु मधि गौपीन कैं, बैठे ह्वै आधीन ॥
करत अनैक बिहार सुष, सुंदर स्यांम प्रबीन ॥ २४ ॥
हसनौ भौंह नचायबो, बंक कटाछि रसाल ॥
इन्ह बांतन सौं स्यांम कौ, करि आदर ब्रजबाल ॥ २५ ॥
कछु रिस धरि बौली बिहसि, गौपी हरि सौं बैंन ॥

॥ गोप्य ऊचुः ॥

हे पिय हम्ह पूछत तुम्हहिं, सु कहौ भेद सुषैंन ॥ २६ ॥
ऐसे हैं केतिक मनुष, बीच सु या संसार ॥
प्रीतबंत सौं करत है, प्रीति भलैं अनुसार ॥ २७ ॥
अरु कौं ऐसौ है मनुष, सुनियै हे प्रिय प्रांन ॥
बिना प्रीति वारैंन तैं, राषत प्रीति पिछांन ॥ २८ ॥
अरु कौं ऐसै है मनुष, जिनकी प्रीति सुठौंन ॥
प्रीतिवंतहूं हौंन बिनु, प्रीतिबंतहू सौंन ॥ २९ ॥
जिन्हमैं उत्तम मनुष कौ, कहियत है जग मध्य ॥
सौ हम्हकौं समझाय पिय, कहियै भेद प्रसध्य ॥ ३० ॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

तब प्रभु बोलै करत जें, प्रीतिबंत सौं प्रीति ॥
सौ न सुहृदता धरम नहिं, नांहिं प्रीति की रीति ॥ ३१ ॥
केवल स्वारथ जांनियै, और भेद कछु नांहिं ॥
जइसैं गौ पय देत तब, बांटा धनी षवांहिं ॥ ३२ ॥

बिना प्रीति वारैंन सौं, प्रीति करत जें कौय ॥
तैं मानुष संसार बिच, कहियै भांति सुदौय ॥ ३३ ॥
दयाबंत इक तौ मनुष, जांनि धरम सुषदैंन ॥
प्रीति करैं सबहींन सौं, रु सत्रु किहूं समझैंन ॥ ३४ ॥
अरु पितु माता दूसरै, महामौह अनुसार ॥
पुत्र करै नहिं प्रीति तऊ, राषत प्रीति प्रकार ॥ ३५ ॥
बिनु हित वारैं सौं रु हित, वारैं सौं जो कौय ॥
प्रीति करै नहिं तैं मनुष, च्यार भांत कैं हौय ॥ ३६ ॥
यक तौ ग्यांनी दूसरै, जें पूरन सब भाय ॥
तीजैं मूरष चतुर्थ पुनि, नर कृतघ्नी कहाय ॥ ३७ ॥
म्हैं इन्ह च्यारौहींन तैं, न्यारौहूं निरधार ॥
मोकौं इन्ह च्यारौं न मधि, मति जानौं ब्रजनार ॥ ३८ ॥
प्रीति करैं मोकौं कौउ, परम मित्र जु निज जांनि ॥
तिन्हकी प्रीत बढायबै, बिछ़रत म्हैं सुनिदांनि ॥ ३९ ॥
ज्यौं निरधन धन पावहीं, फैरि रहै बह जाति ॥
तब निरधन कौं मन रहैं, बंधन मैं दिन राति ॥ ४० ॥
ज्यौंही न्यारौ हौत म्हैं, निज दरसन दरसाय ॥
तब म्हैरे हितवंत कौ, मोमैं मन रह छाय ॥ ४१ ॥
लौक बेद मगकुल कुटुंब, सकल ग्रिह बिबहार ॥
तुम्ह तजि दीनैं मो निमत, प्रीति बढाय अपार ॥ ४२ ॥
तातैं हे गौपांगना, तुम्हरी बढवन प्रीति ॥
म्हैं हुव अंतरध्यांन मो, दोस सुनहिं लषि मीत ॥ ४३ ॥
दैं न सकौ तुम्ह प्रीत कौं, पलटौ म्हैं किहुँ भाय ॥
रिनी तुम्हारौ हौं सही, हे ब्रजतिय सुषदाय ॥ ४४ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते द्वात्रिंसोऽध्यायः ॥ ३२ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

।। अथ त्रयस्त्रिंसोऽध्याय: ।।

(महारास)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि भगवान कैं, अैसै सुंदर बैंन॥
सुनि गौपिन कौं बिरह दुष, मिट्यौ लहत भइ चैंन॥ १॥
पिय कैं दरसन सौं भयै, सकल मनोरथ पूर॥
महा मुदित भइ गौपिका, लहि हरि जीवन मूर॥ २॥
गौपिन जुत श्रीकृस्न तहिं, कियौ रास आरंभ॥
जुरै कंवल कर तियन कैं, हुव रस रंग असंभ॥ ३॥
गौपी मंडल मध्य तांह, सौभित कृस्नं कुमार॥
द्वै द्वै गौपिन मधि भयै, इक इक रूप मुरार॥ ४॥
लसत कंठ गौपीन कैं, कृस्नं भुजा अभिरांम॥
मनु लपट्यौ बिजुरीन सौं, सुभग सघन घनस्यांम॥ ५॥
गौपी सब जांनत भई, निज निज बसि पिय प्रांन॥
महा मोद मांनत भई, अपनैं हृदै सथांन॥ ६॥
जान्यौ इक इक गौपिका, पिय म्हैंरैहीं पास॥
मुहि आलिंगन दैत हैं, प्रीतम सहित हुलास॥ ७॥
जोग सक्ति अैसी प्रभू, करत भयै वां बार॥
सुर बिमांन अपछरनि जुत, छायौ नभहिं मझार॥ ८॥
सुरननि बजायै दुंदुभि, पहुपनि बरषा कीन॥
गावत है गंधर्ब तिय, जुत प्रभु सुजस नवीन॥ ९॥
द्वै द्वै गौपिन बिच सुभग, इक इक कृस्न सरूप॥
सौ अदभुत सौभा सरस, दरसत परम अनूप॥ १०॥
नीलमनी मुक्तांननि की, माला महा रसाल॥
बृंदाबन कौं रीझि मनौं, पहराई गौपाल॥ ११॥

(छंद बिराज)

प्रभू रूप रासी। बड़ै ही बिलासी ॥
घनस्यांम रंगं। प्रभा अंग अंगं ॥ १२॥
प्रसंनं वदंनं। सुसौभा सदंनं ॥
लसै मुक्टं सीसं। महासौभ दीसं ॥ १३॥
लटै घुंघरारी। कपौलं विहारी ॥
छुटै बार स्यांमं। जघंलौं सुठामं ॥ १४॥
ललाटं उदारं सुनासा सुढारं ॥
बड़ै नैंन बांकै। मदं मैंन छाकैं ॥ १५॥

कटाछै अपारं। मनौं बांन मारं॥
श्रुतं कर्णफूलं। झुमंकं सझूलं॥१६॥
फबी मोर वारी। सुबेसं सुढारी॥
चढी उच्च भौंहैं। कटाछैंन मौंहैं॥१७॥
मुखं मंद हासं। सुधा रूप भासं॥
हृदै ठां विसालं। बनी मुक्त मालं॥१८॥
लरी दौय मुक्तं। बंधी ग्रीव जुक्तं॥
वनं माल सोभै। चषं चाह लोभै॥१९॥
भुजाबंध हीरं। फुंदी झूम सीरं॥
करं कंज पंत्रं। तिहूं लौक छंत्रं॥२०॥
पहूची पहुंची। लरी मुक्त षंची॥
अंगूठी नमंतं। झमाझंम कंतं॥२१॥
मणिं लाल मांनौं। नषं वौप जांनौं॥
कटिं ठौर छीनं। अलंकार लीनं॥२२॥
पदं मुक्त दैनं। अभै सुष्य अैनं॥
पटं रंग पीतं। तडितं जु जीतं॥२३॥
मनं मोहि लैंहीं। द्रिगं चैंन दैंहीं॥
लषैं नंद क्वारं। मनोजं नछारं॥२४॥
लियै संग गौपी। बडी सौभ वौपी॥
रच्यौ सांम रासं। अनूपं विलासं॥२५॥
नचै कृस्न क्वारं। चहूं वोर नारं॥
थट्यौ है संगीतं। रंगीनं जु रीतं॥२६॥
तथुं थुंग थुंग्गं। धुमाकं धलुंग्गं॥
झिनं किंट झंझं। तुधिं दां मधं धं॥२७॥
तत्त ता त रंग्गं। थरी त्रक थंग्गं॥
बुलै सब्द अैसै। दृढं ताल वैसै॥२८॥
गतिं लै सुधंगं। बढावै उमंगं॥
करै गांन तानं। अनैकं विनानं॥२९॥
बजावै बजिंत्रं। सुरं मेलि सिंत्रं॥
दियै ग्रीव बाहं। अदाहैं अथाहं॥३०॥
कटिं ग्रीव मोरै। करं कंज जोरै॥
कटाछै नवीनं। सचै हैं प्रवीनं॥३१॥
कसै भौह बंकं। भरै रीझ अंकं॥
गतिं लैंत झूमैं। पल्लां छूट लूमैं॥३२॥
करं कंज फेरैं। तिरंछाय हेरैं॥

भलैं हाव भावं। करैं जुक्त चावं ॥ ३३ ॥
पटं पीत छौरं। गहै ती सुतौरं ॥
लचंकंत लंकं। नचै ह्वै निसंकं ॥ ३४ ॥
डुलै पीठ बैंनी। द्रिगं चैंन दैंनी ॥
बजै नूपुरंगं। पदं तार संगं ॥ ३५ ॥
चरंनं धरंनं। फिरंनं करंनं ॥
गतिं भैद वाढै। चितं चौप चाढै ॥ ३६ ॥
छकै वाह बोलै। हसै ओक लोलै ॥
भ्रमं जौरि हाथं। प्रिया पीव साथं ॥ ३७ ॥
घनं बीज जौरी। छबिं स्यांम गौरी ॥
भ्रमंतं जुतंतं। दुहूं ह्वै श्रमंतं ॥ ३८ ॥
थकैं बैठ जांही। पिया कंठ लांही ॥
लता प्रेम प्यारी। सुभं सौभ धारी ॥ ३९ ॥
प्रतीतं सुमूलं। लगै चौप फूलं ॥
मनोर्थ फलैंहैं। फलं सौभ लैहैं ॥ ४० ॥
बढं बार वेलं। रसं नीर मेलं ॥
रिझं पत्र गोभं। नवं नित्त सौभं ॥ ४१ ॥
लपंटिं रसालं। सुस्यांम तमालं ॥
श्रमंतं पियारी। लषै श्री बिहारी ॥ ४२ ॥
जबै आप पानं। पटं लैं सुजांनं ॥
पुंछै बूंद स्वैदं। चितं चाह भेदं ॥ ४३ ॥
निहारं बिहारं। थकै चंद तारं ॥
थकै पांन पांनी। निसाहुं लुभांनी ॥ ४४ ॥
थिरं ह्वै चलांनं। चरं थाकिं थानं ॥
सुरं कैं विमानं। छयै आसमानं ॥ ४५ ॥
धनुं बैंनु गानं। सुनिं थांन थानं ॥
मुनिं जोग ध्यानं। दृढं सो छुटानं ॥ ४६ ॥
बढ्यौ रंग भारी। बृजंदासि वारी ॥
लष्यौ माह रासं। हृदै गौपि भावं ॥ ४७ ॥

दोहा - आनंदित पिय मिलन सौं, बेद रिचा ब्रजभांम॥
गांन करत ऊंचै स्वरन, तान फिरन अभिरांम॥ ४८ ॥
पूरन ह्वै रह्यौ जक्त सब, गौपी गांन प्रभाय॥
बिच बिच बंसी मोहनी, बाजत रंग रचाय॥ ४९ ॥
कौ गौपी ध्रुव ताल सौं, हरि कैं संग सुढारि॥
जाति स्वरन की लैत भइ, जुदी जुदी बिसतारि॥ ५० ॥

करत भयै श्रीकृस्नं जू, ताकी बउत सराह॥
रीझि भीजि मुसकाय कैं, चितवत भइ जुत चाह॥ ५१ ॥
नृत्य करत कौउ गौपिका, श्रमित हौय गइ हारि॥
कृस्न कंध परि निज भुजा, धरत भई सुकुमारि॥ ५२ ॥
कौउ गौपी श्रीकृस्नं की, भुजा धरै निज कंध॥
चुंबन करत सु सूंघहीं, अदभुत बाहु सुगंध॥ ५३ ॥
कौ गौपी पिय बदन सौं, रही बदन निज लाय॥
ताकौ पांन उगार पिय, दैत मंद मुसकाय॥ ५४ ॥
किहुं गौपी कैं कंध धरि, निज भुज कृस्न कुमार॥
गान करत है मन हरन, बिहरत रंग बिहार॥ ५५ ॥
कमल कर्निका कर्न परि, धरै बजावत बैंन॥
सुमन माल पर करत है, अलि गुंजार सुषैंन॥ ५६ ॥
आलिंगन तन कौं परस, चितवनि प्रीत प्रकार॥
गौपिन जुत या रीत सौं, बिहरत बिबिधि बिहार॥ ५७ ॥
भई कृस्न कैं मिलन सौं, मौहित सब ब्रजबाल॥
कच कंचुकि तन वस्त्र की, भूली सकल संभाल॥ ५८ ॥
तूटि तूटि भूषन गिरै, तिन संभार कछु नांहिं॥
महा मत्त पिय प्रेम मैं, बिहरत सहित उमांहिं॥ ५९ ॥
लषि लीला श्रीकृस्न की, मुहित अपछरा वांम॥
गिरत विमांनन तैं मुरछि, कैं अति ब्याकुल कांम॥ ६० ॥
जिती हुती ब्रजगौपिका, तितैं रूप हरि धारि॥
गौपिन सौं बिहरत भयै, परम सनैह प्रकारि॥ ६१ ॥
आत्माराम रहै तऊ, हौय प्रीति बस स्वांम॥
अैसी मनकी मोहनी, किय लीला अभिरांम॥ ६२ ॥
हासि सुधा सम सहित करि, गोपी बंक कटाछि॥
करत भई श्रीकृस्न कौं, आदर अति हित साछि॥ ६३ ॥
गौपी सब गावत भई, श्रीकृस्न चरित सुढार॥
आनंदित पिय परस सौं, बिलसत अति सुषसार॥ ६४ ॥
दूरि करन श्रम नृत्य कौं, जल बिहार कैं चाय॥
गौपिन जुत श्रीकृस्न जू, धसै जमुन जल जाय॥ ६५ ॥
ज्यौं गज गजनी जूथ मैं, करहीं नीर बिहार॥
त्यौं गौपिन बिच नीर मैं, बिहरत कृस्न कुमार॥ ६६ ॥
गौपी हँसि श्रीकृस्न पैं, छींटत जल लैं पांनि॥
मनु बरषा मुक्तांननि की, बहु ससि करत सुजांनि॥ ६७ ॥

गौपिन मुष परि जल परत, सौ दरसत या ढारि॥
डार दई जल की लहरि, मनु पंकज पर मारि॥ ६८॥
पिय परसत तन तीय कौं, जल मधि हाथ छिपाय॥
तब चमकति हसि गौपिका, झमकत द्रिग तिरछाय॥ ६९॥
जल भीजैं पट लपटि तन, बिथुरे बार बिसाल॥
दमकत तन भूषन सुभग, सौभित सौभ रसाल॥ ७०॥
रमण करत भय तीय सौं, कृस्न आतमा रांम॥
सुर बरषत है पहुप रिप, अस्तुति करत सुषधांम॥ ७१॥
जल बिहार करि कृस्न जू, संग लियै बृज नारि॥
बहुयौं अदभुत बन बिषै, लागै करन बिहारि॥ ७२॥
तांह बहु सुमन सुगंधमय, सीतल चलत समीर॥
विविध भांत गुलजार है, झूम बृछन की भीर॥ ७३॥
ठौर ठौर मंदिर पहुप, रचना भई सुढारि॥
सामग्री सुष भोगहुं की, धरी संवारि संवारि॥ ७४॥
अैसै अदभुत बाग मैं, बिहरत स्यांम सुजांन॥
फिरत भयै गौपीन जुत, मुदित भलैं उनमान॥ ७५॥
निसां चांदनि चमकत व्हां, झमकत फिरत जु नारि॥
दमकत आनन अंग छबि, नैह महा सुष सारि॥ ७६॥
तमकि तमकि तिरछाय द्रिग, रमकि गहत पिय पांन॥
ठमकि ठमकि पग धरत है, नुपूर झमकि विनांन॥ ७७॥
बरनन है रितु सरद मैं, कविता कथा सुढार॥
अैसी बातैं सुभग हरि, करत भयै अनपार॥ ७८॥
इह लीला इक दिवस की, बरनी तुम्हहिं सुनाय॥
दौय महीनां नित निसां, बिहरै हरि या भाय॥ ७९॥
दौय महीनां की भई, बहि इक निसां सुढार॥
ताकौ बरनन करि सकै, कवि कौ बिच संसार॥ ८०॥

॥ राजोबाच ॥

पूछत श्री सुकदेव सौं, राजा करि संदेह॥
धर्म थपन अधरम हरन, प्रगटै प्रभू अछेह॥ ८१॥
सुवक्ता करता अरु रछिक, सदा धरम कैं स्यांम॥
तिन बिहार पर तियन सौं, क्यूं किय है बस कांम॥ ८२॥
इहि तौ रीति सुधरम तैं, उलटी है निरधार॥
पूर्न कांम प्रभु निंद कृत, कीनौं कहा बिचार॥ ८३॥
इहि म्हैरो संदेह तुम्ह, दूरि करहुँ रिषिराय॥
अैसै नृप कैं बचन सुनि, सुक बौलै मुसकाय॥ ८४॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

बड्डे करत साहस बड्डौ, लांघतहूं हैं धर्म॥
ज्यौं गौतम तिय सौं मुदित, इंद्र भयौ तजि सर्म॥ ८५ ॥
अरु बृहस्पति की नारि सौं, ससि हुव मुदित निदांन॥
पैं वांकौ दोष न लग्यौ, बात प्रसिध जिहांन॥ ८६ ॥
भली बुरी सब बस्त कौं, अगनि जु करत अहार॥
वांकौ लागत दोष नहिं, कबहूं किहूं प्रकार॥ ८७ ॥
जो समर्थ नहिं हौय सौ, ऐसै करै चरित्र॥
ता वांकौ ह्वै नास सब, जगत कहै अपवित्र॥ ८८ ॥
ज्यौं सिव कीनौं पांन बिष, तउ कछु बिगर्यौ नांहिं॥
और पांन जो कौं करै, तरफराय मरि जांहिं॥ ८९ ॥
बचन मांनियै बडन कौं, बचननि जुक्त चरित्र॥
उन्ह कीनौं सौं नांहिंनै, कीजै आप अनित्र॥ ९० ॥
पाप पुन्य कौं मांनत न, बड्डै कछू अहंकार॥
पुन्य सौं न कछु काज उन्ह, अघ सौं कछु न बिगार॥ ९१ ॥
लगत न इंद्रादिकन कौं, पाप पुन्य अनुसार॥
तौ नर सुरपति ईस हरि, तिनकौं काह लगार॥ ९२ ॥
हरि पद पंकज रैंनु सौं, त्रिपत भयै जें साध॥
जिन्हनि जोग अभ्यास सौं, करम बंधन किय बाध॥ ९३ ॥
ऐसै भक्त जू करत है, जो निज ईछा हौत॥
तिन्हकौं कबहूं लागत न, बंधन करम उदौत॥ ९४ ॥
तौ प्रभु कौं कां तैं लगै, कर्म बंधन कौ भार॥
जो निति प्रति निर्लैप हैं, सकल भांति निरधार॥ ९५ ॥
कहियत परतिय और कौं, प्रभु कैं परतिय नांहिं॥
अंतर जामी रूप प्रभु, बसत सबन कैं मांहिं॥ ९६ ॥
लीला रस सिंगार मय, करन भलैं अनुसार॥
इहि अदभुत अवतार प्रभु, धार्यौ कृस्न कुमार॥ ९७ ॥
लीला रस सिंगार की, ऐसी किय करतार॥
जिहँ सुनि बै हरि बहिरमुष, हुव मन चलि ह्वै पार॥ ९८ ॥
गौपन इहि जान्यौ नांहिं, गई हम्हारी नारि॥
जांनत भयै कि ग्रिह ही, बैठी हैं निरधारि॥ ९९ ॥
दौय धरी रजनी रही, तबै सकल ब्रज भांम॥
आग्यां लहि श्रीकृस्न की, जात भई निज धांम॥ १०० ॥
लीला इहि रस सार कर, जीत्यौ प्रभू मनौज॥
गर्ब दूरि किय कांम कौं, रचि अदभुत सुषमौज॥ १०१ ॥

इहै रासलीला कौउ, कहै सुनै चित्त लाय॥
प्रेमभक्ति तिहिं प्राप्त है, करम बासना जाय॥ १०२॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी कृते
पंचाऽध्याइ वर्ननो नांम त्रयत्रिंसमोऽध्यायः॥ ३३॥
इति पंचाध्यायी संपूर्नम्॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुस्त्रिंसोऽध्यायः ॥

(सुदर्शन और शंखचूड़ का उद्धार)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - श्री सुक कहत कि इक समैं, देव जातरा राज॥
गयै अंबिका बन बिषैं, गौपन जुत बृजराज॥ १॥
तांह सरस्वती नदी मैं, करि सिनांन सुष पाय॥
पूजा किय सिव सिवा की, हर्षित ह्वै जुत चाय॥ २॥
अंन बस्त्र कंचन गऊ, दिय बिप्रन कौं दांन॥
ब्रत करिकैं वा राति कौं, बसत भयै बहि थांन॥ ३॥
अैक सर्प भूषौ तांह, ग्रस्यौ नंद कौं आय॥
तबै पुकारै नंद जू, कृस्न कृस्न अकुलाय॥ ४॥
हे म्हैरे सुत कृस्नं मुहि, अहि तैं लैहुँ छुडाय॥
म्हैरी रिछया कीजियै, सब बृज कैं सुषदाय॥ ५॥
ब्रजपति कै अैं बचन सुनि, जगै नींद तैं ग्वाल॥
अहि कौं लै मारत भयै, लकरी जरी बिसाल॥ ६॥
मार षात भौ सर्प पैं, छौडे नंदहिं नांहिं॥
तब निज चरन प्रहार प्रभु, कीनौं अहि तन ठांहिं॥ ७॥
प्रभु पद पंकज परस सौं, मिटै सर्प कैं पाप॥
अहि तन छूटि पावन भयौ, सुद्ध जनम बहि आप॥ ८॥
बहि अहि पूरब जनम मैं, हौ विद्याधरहिं दैव॥
सोइ रूप पावत भयौ, प्रभु पद परसन भैव॥ ९॥
उन्ह कीनौं श्रीकृस्न कौं, सीस नाय परिनांम॥
ठाढौ सामुह जोर कर, निरंषत प्रभु अभिरांम॥ १०॥
पहरैं भूषन कनक कैं, जिहँ अति जोति प्रकास॥
तासौं बोलै कृस्न जू, प्रभु आनंद निवास॥ ११॥
तौ सौभा है परम तैं, क्यूं धारी अहि दैह॥
तबै बिद्याधर जोरि कर, बोल्यौ सहित सनैह॥ १२॥

नांम सुदरसन म्हैं हुतौ, बिद्याधरहिं हे स्यांम ॥
लछमी कौ अरु रूप कौ, रह्यौ गर्ब दुषधांम ॥ १३ ॥
फिरत भयौ आनंद सौं, जहँ तहँ चढ्यौ बिमांन ॥
रूप अंगिरा सुवन कौं, लषि म्हैं हस्यौ अग्यांन ॥ १४ ॥
उन्ह मुहि दीनौं श्राप म्हैं, लही तबै अहि देह ॥
साधुन कैं अपराध तैं, पायौ दुषहिं अछैह ॥ १५ ॥
दयावंत बै रिषि हुतै, उन्हनिं स्राप अनुसार ॥
भलौ भयौ म्हैरो अबै, किय दरसन करतार ॥ १६ ॥
जगतनाथ कैं चरन कौं, सपरस हुव सुषदाय ॥
जनम जनम कैं पाप सब, तातैं गयै पलाय ॥ १७ ॥
जें जन डरि संसार तैं, सरन गहत भगवंत ॥
तिन्हकैं भय टारन चरन, म्हैं परसै या तंत ॥ १८ ॥
तातैं म्हैरो स्राप मिटि, म्हैं पायौ आनंद ॥
जाहुँ लौक निजहूं अबै, ह्वै आग्यां ब्रजचंद ॥ १९ ॥
साधुन कैं पति बिस्वपति, महा पुरष सुभगाथ ॥
ब्रह्म स्राप तैं हौं छुट्यौ, तुव दरसन करि नाथ ॥ २० ॥
स्रोता रु बक्ता कौं करैं, अतिहि पबित्र जिन नांम ॥
ऐसें तुम्ह तिन्हकैं चरन, म्हैं परसै अभिरांम ॥ २१ ॥
करि प्रनांम दै परिक्रमा, प्रभु की आग्यां पाय ॥
नांम सुदरसन विद्याधर, स्वर्ग गयौ सुषछाय ॥ २२ ॥
नंद महर कौं क्लैस तैं, दिय श्रीकृस्न छुडाय ॥
लषि बिक्रम श्रीकृस्न कौं, ब्रजजन अचिरज पाय ॥ २३ ॥
करि पूजन ब्रत आपनौं, कहत कृस्न की गाथ ॥
ब्रज कौं सब आवत भयौ, बृजबासिन कौं साथ ॥ २४ ॥
ऐंक समैं बलिदैव जू, अरू श्रीकृस्न कुमार ॥
करत हुतै निसि समैं वन, जुत गौपीन बिहार ॥ २५ ॥
इन्हहीं कैं गुन गावहीं, गौपी सहित सनेह ॥
अदभुत भूषन बसन बिच, दमकत सुंदर देह ॥ २६ ॥
चंदन चित्रहिं सुअंग मैं, उर सौभित बनमाल ॥
पहरैं उज्जल बसन अंग, भाई दोउ रसाल ॥ २७ ॥
ससि नछित्रहिं कौं उदै भौ, प्रफुलित कुमदनि फूल ॥
तिन सुगंध मय चलत है, पवन जांह सुष मूल ॥ २८ ॥
मल्लिका कैं सउगंध तैं, मत्त ह्वैहिं रहैं भौंर ॥
असौ लषि निस समैं दौउ, भ्रात रसिक सिरमौर ॥ २९ ॥

भयै सराहत रीझ सौं, समैं महा सुषसार॥
अति आनंद उमंग सौं, बिहरत रंग बिहार॥ ३० ॥
स्वर मंडलजुत मूर्छना, काननि लगत सुदेस॥
ऐसौ गांन भयै करत, कृस्न रु अग्रज सेस॥ ३१ ॥
गांन बहै सुनि गौपिका, परी सकल या भाय॥
तन भूषन कच बस्त्र की, दीनी सुधि बिसराय॥ ३२ ॥
गावत क्रीडा करत है, यौं दुहु सौंदर भ्रात॥
मत्त महा रस रंग सौं, गउर स्यांम सुभ गात॥ ३३ ॥
सेवक जछिहिं कुबैर कौं, संषचूडि जिहि नांम॥
सौ आयो ता समैं मैं, हरन सकल ब्रजवांम॥ ३४ ॥
दुहु भायन कैं दैषतैं, उतर दिसकी वोर॥
लै चाल्यौ गौपीन कौं, ज्यौं गायन कौं चोर॥ ३५ ॥
गौपी लगी पुकारबै, कृस्नं कृस्नं हे रांम॥
भीर हम्हारी कीजियै, अहौ सकल सुषधांम॥ ३६ ॥
इहि लषि दौरे भ्रात दुहुँ, कहत डरहुँ जिन नारि॥
करहिं तरु लीनैं जछि पैं, पहूंचैं दुहुँ कुमारि॥ ३७ ॥
काल मृत्यु सम भ्रात दुहु, दैषि दुष्ट निसचार॥
भजत भयौ गौपीन तजि, प्रांन छिपै वां बार॥ ३८ ॥
संकरषन गौपीन पैं, रहे रछा कैं काज॥
दौरे वां पाछै जु हरि, ज्यौं तीतर पर बाज॥ ३९ ॥
संषचूड कै सीस परि, हौ इक मनि जिहँ जुक्त॥
कर सौं सीस मरौड लिय, [illegible]हार प्रभु मुक्त॥ ४० ॥
मनि लिय प्रभु वां सीस तैं, संषचूड कौ मारि॥
गौपिन कैं दैषत दई, अग्रज कौं वां बारि॥ ४१ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते चतुस्त्रिंसोऽध्यायः ॥ ३४॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ पंचत्रिंसोऽध्यायः ॥

(युगल गीत)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा- सुक कहत [illegible] बन जांहि जब, सुंदर कृस्न कुमार॥
तब गौपिन कौं चित रहैं, उन्हहीं मैं निरधार॥ १ ॥

लीला गावत कृस्न की, दुष सौं बितवें द्यौस॥
ह्वै मिलाप संझया समैं, तब सुष लहै सुरौस॥ २॥

॥ गोप्य ऊचुः ॥

किहुँ गौपी सौं कहत है, कौं गौपी यौं बैंन॥
कमल वांम कर सौं लियै, कृस्न कमल दल नैंन॥ ३॥
कर परि धरें कपोल निज, नचवत भौंहैं बंक॥
बैठे हैं तरु कें तरें, मनु वन उदित मयंक॥ ४॥
धरें अधर पर मुरलिका, चितवत तिरछि चितौंन॥
मुरली सुर कें छिद्र पैं, अंगुरी राषि सुठौंन॥ ५॥
अैसें जब श्रीकृस्नं जू, बजबत बैंन रसाल॥
तबै सिधन जुत सिधन की, अस्त्री सुनि उहिंकाल॥ ६॥
अचिरज सौं लज्जा सहित, ह्वै कै मोहित कांम॥
मूर्छा पावत धरत नहिं, कछु तन सुधि बै भांम॥ ७॥
और अैक गौपी कोउ, बौली या अनुभाय॥
हे सषि अचिरज और इक, सुनियैं कहूं जताय॥ ८॥
नंदहिं पुत्र श्रीकृस्नं जू, दीनन कैं सुषदाय॥
बैंन बजावत है जबै, मंद मंद मुसकाय॥ ९॥
तब मृग पसु पंछी सबै, सुनि सुनि अद्भुत बैंन॥
त्रिन मुंहि में रहि जात है, मुहित हौत लहि चैंन॥ १०॥
घूमत स्त्रवन ऊंचै किय, तन की सुध बिसराय॥
चित्रहिं लिषे सें जात रहि, हरि कैं हाथ बिकाय॥ ११॥
और अैक गौपी कौउ, कहत भई यौं बात॥
हे सषि सुनि म्हैं कहत हौं, जो मो चित सरसात॥ १२॥
मोर पच्छ नग धात नव, पल्लव सुमन प्रकार॥
मल्लन कौ सौं भेष जें, अदभुत ढरैं सुढार॥ १३॥
बैंन बजावत जा समैं, लै गौ नांम बुलाय॥
तब नदीन की गति थकित, हौत रहत ठहराय॥ १४॥
कृस्न चरन रज पवन सौं, उडि आवै हम्ह पास॥
तौ हम्हहिं परसि पबित्र ह्वै, नदी धरत इहि आस॥ १५॥
उठत तरंग सुनदिन की, कंपित है मनु बाहु॥
जल निहचल ह्वै जात सौ, थकित दसा अवगाहु॥ १६॥
ज्यौं नहिं अैसे पुन्य हम्ह, मिलैं कृस्न सौं जाय॥
त्यौं ही पुन्य नहिं नदिन कैं, परसन रज हरि पाय॥ १७॥
तातैं हम्ह सबहीं नदी, बिरह बिकल अधिकाय॥
तरसत हरि कैं परस कौं, परम प्रीति अनुभाय॥ १८॥

गावत जिन श्रीकृस्न कौं, महा पराक्रम ग्वाल॥
नारायनहूं तैं अधिक, तिन्ह की सौभ बिसाल॥ १९॥
बन बन बिहरत फिरत हैं, सुंदर कृस्न कुमार॥
जब लैं नांम गऊन कैं , बजवत बैंन सुढार॥ २०॥
ताहि समैं बन तरु लता, ह्वै फल फूलनि पूर॥
झूमि झूमि नय रहत है, छुवत डार ब्रछ मूर॥ २१॥
तिन्हकैं फूलै फूल सौं, तन रुमांच दरसाय॥
सहत धार मनु प्रेम कैं, अश्रुपात सरसाय॥ २२॥
अैसैं अपनीं दसा तरु, जतवत है निरधार॥
बसत हम्हारे हदै मैं, सुंदर कृस्नं कुमार॥ २३॥
तातैं हुव हम्ह दसा इहि, बिहबल प्रेम प्रकार॥
यौं जडहूं सुनि बैंनु धुन, रीझि हौत रिझवार॥ २४॥
और अैक गौपी कौउ, बौली या अनुसार॥
बनमाला दल तुलसी जुत, पहरै कृस्नं कुमार॥ २५॥
तिहँ सुगंध सौं मत्त ह्वै, भ्रमर करत गुंजार॥
ताहि सुनत है स्त्रवन दै, स्यांम रीझि अनुसार॥ २६॥
बै हरि जब निज अधर पैं, धरि बजवत है बैंन॥
तब पंछी जल तीर कैं, सुनि रीझत लहिं चैंन॥ २७॥
सारस हंस पंछीन चित, मुरली हरत सुठौंन॥
तातैं अति आनंद सौं, नैंन मूंद गहि मौंन॥ २८॥
आय आय बैठत सकल, पंछी हरि कैं पास॥
बैंन गांन धुनि सुनि महा, प्रगटत हदै हुलास॥ २९॥
सौभित मुक्त लरीन कौं, सीस मुकट अभिरांम॥
अग्रज जुत नग सिषर पैं, प्रसंन बिराजत स्यांम॥ ३०॥
सबनि हरष उपजाय बै, जबै बजावत बैंन॥
पूरि रहत जिहँ नाद सौं, सबहीं जगत सुषैंन॥ ३१॥
सुनि मुरली धुन गरजहीं, मंद मंद घन छाय॥
नांह्नीं बूंद सुहावनी, बरषत आछे भाय॥ ३२॥
रसिक सिरोमनि अति चतुर, गोपन क्रीडा मांहिं॥
बैनु बजै सुर लैंन मैं, उन्ह सम और जु नांहिं॥ ३३॥
अैसैं अदभुत कृस्नं जू, तुम्ह सुत हे जसुमाय॥
जब गावत है बैंन मैं, राग भेद सुषदाय॥ ३४॥
तब सिव बिधि बासव रहत, लज्जित सीस नवाय॥
अति मोहित ह्वै जात है, राग भेद नहिं पाय॥ ३५॥

और अैक गौपी कौउ, बौली अैसैं बैंन ॥
चारि बीस चिह्ननि सहित, चरन कंवल सुषदेंन ॥ ३६ ॥
तैं प्रिथवी परि धरत है, दै प्रिथवी आनंद ॥
चलत मत्त गज चाल गति, बैंन बजय ब्रजचंद ॥ ३७ ॥
दृग बिलास चितवनिन तैं, हम्ह उर प्रगटत मार ॥
तबै हम्हारी जड दसा, हौय जात निरधार ॥ ३८ ॥
कच भूषन तन बस्त्र की, कछू रहत सुधि नांहिं ॥
चल न सकत जकि थकि रहै, नेह छाकछकि जांहिं ॥ ३९ ॥
गौपी बौली और यौं, गायन गनिबै काज ॥
मनिमाला कर लियैं हरि, बीच सषानि समाज ॥ ४० ॥
माला तुलसी दलन की, पहिरैं सहित सुगंध ॥
गांन करत है भुजा धरि, किहूं सषा कैं कंध ॥ ४१ ॥
सुनत गांन धुनि तिहिं समैं, हिरनी मोहित हौय ॥
तरह हम्हारी बैठहीं, हरि पैं अति हित भौय ॥ ४२ ॥
गौपी बौली और इक, हे जसुमति तौ पूत ॥
कुंद कुसम तैं है कियै, भैषहिं बिचित्र अभूत ॥ ४३ ॥
जमुना जल मैं करत है, कबहूं नीर बिहार ॥
कमलन सौं षैलत उमगि, ग्वाल रु कृस्न कुमार ॥ ४४ ॥
सांझ समैं श्रीकृस्नं कौं, आवत कौउ निहारि ॥
कहत भई अैसै बचन, परम प्रीत अनुसारि ॥ ४५ ॥
आनंद दाता सबन कैं, जुत सषानि घनस्यांम ॥
सांझ समैं गायन लियैं, आवत हैं घनस्यांम ॥ ४६ ॥
गावत है गंधर्ब गन, बहु बाजित्रहिं बजाय ॥
सुर बरषत है पुहप बिधि, अस्तुति करत सुषदाय ॥ ४७ ॥
गायन कौं करि अैकठी, बज़वत बैंन रसाल ॥
सषा कीरति श्रीकृस्न की, गावत भयै षुस्याल ॥ ४८ ॥
बूंद पसीना की रहीं, श्रम सौं मुष परि छाय ॥
बढ़ि सौभा आनंद हम्ह, दृगनि दैत अधिकाय ॥ ४९ ॥
गौरज आनन अंग पैं, लपटानी छबि छाय ॥
बृज आवत है हितुन कैं, करन मनोरथ भाय ॥ ५० ॥
कृस्नं हम्हारै हैं सही, प्यारै प्रांन समांन ॥
धरनहार गिरिराज कैं, सुंदर स्यांम सुजांन ॥ ५१ ॥
प्रगट दैवकी गरभ तैं, भयै लसत ससि सौभ ॥
जिनकौ लषि छकि जात हम्ह, बढि उर हित की गौभ ॥ ५२ ॥

जौवन मद सौं द्रिग छकै, घूमत बंक बिसाल ॥
करता हितु सनमांन कैं, पहरैं उर बनमाल ॥ ५३ ॥
स्त्रवननि कुंडल रतन मय, झमकत मनु फरमार ॥
मंडित ताकी झलक सौं, गौल कपोल सुढार ॥ ५४ ॥
रतन कुंडलनि झलक सौं, गउर लसत मुष स्यांम ॥
मत्तगयंद ज्यौं चलत है, चाल महा अभिरांम ॥ ५५ ॥
ससि सम जिनकौं प्रसंन मुष, दैंन परम आनंद ॥
टारत है ब्रजतियन कौं, सांझ समैं दुषदंद ॥ ५६ ॥
हे सपि आवत है निकट, दैपहुँ कृस्नं कुमार ॥
तपति बुझावहुँ द्रिगन की, लपि रीझौ रिझवार ॥ ५७ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि गौपी कई, सहस अैकठी हौत ॥
सौ इक जूथ कहावहीं, जिन उर प्रेम उदौत ॥ ५८ ॥
अैसै बारह जूथ मिलि, तिय धरि प्रेम प्रतीत ॥
गात गुन श्रीकृस्नं कैं, वासर करैं बितीत ॥ ५९ ॥
सांझ समैं श्रीकृस्नं कौं, दरसन ह्वै सुषदाय ॥
तब हौति है गौपिका, सकल प्रसंन अधिकाय ॥ ६० ॥
हे नृप या अध्याय कौं, जुगल गीत है नांम ॥
कहतैं सुनतैं रसिक जन, लहत सुप्प अभिरांम ॥ ६१ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते पंचत्रिंसोऽध्यायः ॥ ३५ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ षटत्रिंसोऽध्यायः ॥

(अरिष्टासुर का उद्धार और कंस का श्री अक्रूर जी को ब्रज में भेजना)

॥ श्रीसुक उवाच ॥

दोहा - सुक कहत कि श्रीकृस्न जब, बन तैं संझ्या बार॥
बृज आयै गौधन लियै, संग सषा अनपार॥ १ ॥
असुर अरिष्ट सुं ता समैं, धरैं बृषभ कौं रूप॥
बृज आयौ भुव षुरन सौं, षौदत रीस संजूप॥ २ ॥
दीरघ जाकौं कुकुद है, गरजत पूछ उठाय॥
सींगन सौं तट जमुन कैं, ढाहत अति बल काय॥ ३ ॥

करत जात मल मूत्र अरु, दैषत है द्रिग फारि॥
गाय गरभ तिहिं नाद सौं, गिरत भयै उहिं बारि॥ ४॥
परबत सम तिहिं कुकुद लषि, बैठत है घन आय॥
ऐसें असुरहिं लषि डरें, नरनारी थहराय॥ ५॥
गौपी ग्वाल रु बैल गौ, जाकैं डर चित धारि॥
भागि गयै ब्रज छौंडि सब, गही सरन करतारि॥ ६॥
उन्हकौं डरपें दैषि कैं, समाधान प्रभु कीन॥
पुनि बोले वां असुर सौं, रिस करि तारन दीन॥ ७॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

गौ गौपन कौं भय दियै, का ह्वै हैं हे दुष्ट॥
हतनहार तुम्हसें असुर, म्हें हूं बली सपुष्ट॥ ८॥
ऐसें कहि श्रीकृस्नं जू, अपनैं जंघ बजाय॥
सषा कंध परि कर धरें, ठाढे समुषनि आय॥ ९॥
जास फिरावन पूंछ तें, मैघ महा डरपंत॥
ऐसौ बृषभासुर असुर, करिकैं क्रौध अनंत॥ १०॥
दौरत भौ श्रीकृस्नं कैं, सांमुह महा कुचार॥
अरु कीनैं प्रभु कैं समुष, अपनैं सींग कुठार॥ ११॥
रिस तें जाकैं अरुन द्रिग, दौर्यौ तिरछि चिताय॥
मनौं चलायौ इंद्र कौं, आयौ बज्र कुदाय॥ १२॥
वाकै दोनौ सींग गहि, प्रभू रीस अनुभाय॥
पैंड अठारह लौं दियौ, पाछौ पलहिं धकाय॥ १३॥
पैंड अठारह तें बृषभ, दौर्यौ प्रभु पैं फेरि॥
चुवंत पसीनां स्वांस बढि, बिकल क्रौध कैं घेरि॥ १४॥
तब बांकें दुहुँ सींग गहि, दाबि चरन सौं पांव॥
प्रिथवी पर दीनौं पटकि, भलौ कियौ प्रभु दांव॥ १५॥
बांकौ अंग मरौरि प्रभु, डारत भयै रिसाय॥
जल सौं भीजें बस्त्र लौं, किय निचौरि उहिं भाय॥ १६॥
बहुर्यौ सींग उषारि बहि, वां तन कियौ प्रहार॥
बृषभासुर पापी बली, गिर्यौ सु षाय पछार॥ १७॥
निकसि चल्यौ मुष तें रुधिर, पटकन लाग्यौ पांव॥
कर दीनौं मलमूत्र द्रिग, फटि गय मर्यौ कुदांव॥ १८॥
सुर बरिषा किय पुहप की, आछैं अस्तुति उचारि॥
महा मौद मांनत भयै, सब ब्रज कैं नरनारि॥ १९॥
बृषभासुर कौं मारिकैं, हरि आयै निज गैह॥
भयै सराहत गौप गन, लहि आनंद अछैह॥ २०॥

॥ श्री नारद उबाच ॥

बृषभासुर कौं हत्यौ सुनि, नारद जू वां बार॥
जाय कहत भयै कंस सौं, बात जु यां अनुसार॥ २१ ॥
अहौ कंस पुत्री ना भइ, हुती जसौमति धांम॥
पुत्रहिं दैवकी कैं भयै, कृस्न देव अभिरांम॥ २२ ॥
अरु संकरषन रौहिनी, कैं सुत है बिषयात॥
तुम्ह डरतैं बसुदैव बृज, राषैं हैं दुहुँ भ्रात॥ २३ ॥
श्रीकृस्न रु बलिदैव जू, दुहुँ भ्रातनि ब्रजमांहिं॥
हतै तुम्हारै असुर बहु, तुम्ह कछु सुनि कि नांहिं॥ २४ ॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

इहि सुनि प्रगट्यौ कंस उर, क्रौध महा बिकरार॥
श्री बसुदेवहिं मारिबै, कर लीनी तरवार॥ २५ ॥
तब नारद जू कंस कौं, मनै कियौ गहि पांन॥
कह्यौ कि इहि कृत मति करौ, नहिं तुम्ह जोग्य निदांन॥ २६ ॥
तब बसुदेव रु दैवकी, कैं बैरी जरि पांय॥
बंदी षांनै मैं रषै, कंस महा दुष दांय॥ २७ ॥
नारद जू उठि गयै जब, कैसी कंस बुलाय॥
कह्यौ कृस्न बलिदैव कौं, मारहुँ तुम्ह ब्रज जाय॥ २८ ॥
ता पाछैं चाणूर मुष्टि, सल तौसल मल्ल बौलि॥
अरु मंत्री गजवांन कौं, लियैं बुलाय हित षौलि॥ २९ ॥

॥ कंस उबाच ॥

हे चाणूर हे मुष्टिका, सुनियै म्हैरे बैंन॥
दोय पुत्र जु बसुदैव कैं, रहत नंद कैं अैंन॥ ३० ॥
बलिदैव रु श्रीकृस्नं अैं, हैं दुहून कैं नांम॥
म्हैरी मृत्यु उन्ह हाथ है, बै आवत या ठांम॥ ३१ ॥
तिन्हसौं करि मल्ल जुध तुम्ह, हतियौ हौय निसंक॥
अपनौं बल बिसतारियौ, बडै दांव करिबंक॥ ३२ ॥
फेरि कंस मंत्रीन सौं, बोल्यौ या अनुसार॥
मल जुध काज संवारियै, भूमि सुभलैं प्रकार॥ ३३ ॥
बांधौ मांच बड्डे बड्डे, तिन्ह पर पुरजन बैठि॥
मल्ल जुध कौतक दैषि हैं, अधिक हौंस बिच पैठि॥ ३४ ॥
धनुरजग्य आरंभ है, चउदसि कौं निरधार॥
महादैव कौं देहुँ बलि, बउत पसुन कौं मार॥ ३५ ॥
फेरि महावत सौं कह्यौ, बचन कंस या भाय॥
पीड कुवलया गजहि तू, दरवाजै लैं जाय॥ ३६ ॥

श्रीकृस्न अरु बलि सत्रु मो, बै अैहें दुहुँ भ्रात॥
तू गज सौं मरवाइयौ, करि उन्ह पैं बड घात॥ ३७॥
यौं आग्या उन्ह सबन कौं, दै अक्रूरहिं बुलाय॥
कर सौं कर गहि कैं कह्यौ, अैसै बचन सुनाय॥ ३८॥
करहू आप अक्रूर जू, अैक हम्हारौ काज॥
मो चाहक जादवन मैं, नहिं तुम्ह बिनु कौं आज॥ ३९॥
तुम्ह साधहुँ इह कार्ज मो, आछै हित चित लाय॥
जइसैं साधत इंद्र कौं, कारज बिस्नु सुभाय॥ ४०॥
दोहू पुत्र बसुदैव कैं, श्रीकृस्नं रु बलिरांम॥
बैहुं बृजमांहिं बसत हैं, नंद महर कैं धांम॥ ४१॥
तिन्हकौं तुम्ह ब्रज जाय लैं, आउ मधुपुरी धांम॥
दैवतांन मो सौं कह्यौ, तौ मृत्यु उन्ह कर ठांम॥ ४२॥
नंद आदि गौपन सहित, श्रीकृस्न रु बलि दैव॥
बेगि इहां लैं आइयै, करिकैं कछु मिस भेंव॥ ४३॥
म्हैं उन्हकौं मरवाहुँगौ, महा मत्त गज पास॥
गज सौं बचि है जो उन्हैं, हति हैं मल्ल मो दास॥ ४४॥
उन्हैं मारिकैं जादवनि, मारूं जुत बसुदैव॥
तुम्हहिं मित्रहिं निज जांनि कैं, कहतहुँ चित्त कौ भैव॥ ४५॥
उग्रसैंन म्हेरौ पिता, बृधहिं भयौ लटि दैह॥
तऊ राज की चाह है, वांकै चितहिं अछैह॥ ४६॥
बाहि मारि कैं मारिहूं, वांकौ दैवक भ्रात॥
तब निहकंटक हौयगी, मो प्रिथवी बिषयात॥ ४७॥
जरासंध मो ससुर है, मित्रहिं बड्डे बलवांन॥
संवर नरकासुर द्विविद, भुज हजार जुतवांन॥ ४८॥
तिन्ह सौं मिलि सुर पषिन कौं, करिकैं नास निदांन॥
निचिंत ह्वै कैं राज्य सुष, करिहौं भलैं बिधांन॥ ४९॥
इहै भेद तुम्ह समझि कैं, धनुरजिग्य मिस ठांनि॥
अरु सौभा मधुपुरी की, दैषन मिस उनमांनि॥ ५०॥
रामकृस्न दोउ भ्रात कौं, तुम्ह रथ पैं बैठाय॥
लैं आवौ मधुपुरी मधि, वातैं कपट बनाय॥ ५१॥

॥ अक्रूर उवाच॥

इह सुनि कैं अकरूर जू, बोलै या अनुसार॥
हे राजा कीनौं भलौ, तुम्ह बिचार निरधार॥ ५२॥
मृत्यु तुम्हारी या तरंह, बचिहैं आछै भाय॥
नर उदमहुं की सिधि असिधि, ईस्वर हाथ कहाय॥ ५३॥

मनुष मनोरथ करत जिहं, सिध भय हर्ष जु हौत ॥
असिध भयै तैं हौय उर, महा सोक ऊदौत ॥ ५४ ॥
तुम्ह देहौं आग्यां सोइ, म्हैं करिहौं हे राय ॥
सिधि रु असिधि मनोरथ की, प्रभु इछा अनुभाय ॥ ५५ ॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

सुक जु कहत कि अक्रूर जुत, मंत्रिन रुकसद देय ॥
कंस गयौ निज सदन उठि, उर हरि डर संभेय ॥ ५६ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते षटत्रिंसोऽध्यायः ॥ ३६ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ सप्तत्रिंसोऽध्यायः ॥

(केशी और व्यौमासुर का उद्धार तथा नारद जी द्वारा भगवान की स्तुति)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा – श्री सुक कहत कि कंस कौ, पठयौ कैसी नांम ॥
अस्व रूप आयौ असुर, रीस धरै बृजठांम ॥ १ ॥
पुहमी षौदत षुरन तैं, सबद करत भयकार ॥
दैव बिमांनन टारहीं, कंध केस अनुसार ॥ २ ॥
दीरघ द्रिग मुष क्रूर अति, नील मैघ समरंग ॥
मुषहिं पसारै दुष्ट अति, गरदन जास उतंग ॥ ३ ॥
हितकारी है कंस कौ, बृज कौं दैत जु त्रास ॥
मैघन कौं निज पूछ सौं, दुष्ट करत है नास ॥ ४ ॥
श्रीकृस्नहिं निज सांमुहै, बुलवत जुध कैं काज ॥
प्रभु वांकै सांमुह गयै, दैषत गौप समाज ॥ ५ ॥
नाहर सम गरजत भयै, बोलै बांहिं बकारि ॥
दौर्यौ कैसी दुष्ट तब, प्रभु सामुह मुष फारि ॥ ६ ॥
दुष्ट बली बह करत भौ, प्रभु पैं दुलति प्रहार ॥
सौ प्रहार बचवत भयै, तिरछै ह्वै मगधार ॥ ७ ॥
दुहूं पांव वां दुष्ट कैं, गहि कैं प्रभू भ्रमाय ॥
फैंकि दयौ सत धनुष पैं, अहि षगपति अनुभाय ॥ ८ ॥
सावधान ह्वै दुष्ट फिरि, उठि दौर्यौ मुष फारि ॥
निज भुज तब वांकै मुषहिं, मैलत भयै मुरारि ॥ ९ ॥
वहै भुजा निज दांत सौं, कैसी लग्यौ चबांन ॥
भुजा बज्र सम ह्वै गई, रद तूटै तजि थांन ॥ १० ॥

वांकै मुष में बढि गई, प्रभु की भुजा बिसाल॥
ज्यौं काहू कैं करम बस, बढत रोग किहुँ काल॥ ११॥
भुजा बढन सौं रुकि गयौ, दुष्ट कंठ वां बार॥
सीस रु पग पटकन लग्यौ, फटि गय नैत्र सुढार॥ १२॥
करि दीनौं मलमूत्र अरु, पछर पर्यौ भुव ठांम॥
कैसी पायौ पंच तत्व, मंगल हुव ब्रज धांम॥ १३॥
मर्यौ दुष्ट कैसी तबै, ह्वै कै अति बेहाल॥
जब वांकै मुष तैं लई, निज भुज काढि गुपाल॥ १४॥
कैसी कौ तन फटि गयौ, ककडी कैं अनुसार॥
बिनु परिश्रम यौं प्रभु कियौ, कैंसी कौ संघार॥ १५॥
सुरनि पुहप बरिषा करी, दुंदुभि भलैं बजाय॥
परम भक्त नारद मुनी, बोलै प्रभु पैं आय॥ १६॥

॥ श्री नारद उबाच॥

हे श्रीकृस्न कुमार तुम्ह, हौ व्यापक सब ठांम॥
बड्डौ प्रताप सु रावरौ, जगत ईस अभिरांम॥ १७॥
बासुदेव हो तुम्ह प्रभू, श्रेष्ठ जादवनि मांहिं॥
छिपै सबन सौं बसत हौ, सबहिन कैं हियठांहिं॥ १८॥
तुम्हहीं साछी हौ सदा, महापुरष करतार॥
बसत अग्नि ज्यौं काष्ट मैं, त्यौं तुम्ह आत्म सुढार॥ १९॥
जग उतपति पालन प्रलै, प्रकृति गुननि अनुसार॥
हे प्रभु तुम्हहीं करत हौ, नित प्रति अपरमपार॥ २०॥
राछिस दैत्य धरै जितै, प्रिथवी परि नृप रूप॥
तैं हति रषन म्रजाद जग, प्रगटै आप अनूप॥ २१॥
अस्व रूप इह असुर हौ, ताहि हत्यौ तुम्ह स्यांम॥
वांकै डर सौं भाजितै, सुर तजि स्वर्ग सुठांम॥ २२॥
चाणूर मुष्टिक आदि मल्ल, हाथी अरु नृपकंस॥
दिवस आजु तैं तीसरैं, हति हौं आप प्रसंस॥ २३॥
संषासुर नरकासुरहिं, कालजवन मुरि दैत॥
इतनैं असुर संघारिहौ, प्रभू आप लहि जैत॥ २४॥
पारजात तरु ल्याय हौं, इंद्रहिं जुद्ध हराय॥
नृप कन्या सोरै सहस, ब्याहौंगै जुत चाय॥ २५॥
नृग नृपकौं बिच द्वारिका, करी हौं तुम्ह उद्धार॥
मरे पुत्रहिं लै आय हौ, ब्राह्मन कैं करतार॥ २६॥
जांबवांन सौ जुद्ध करि, पाय जैंत तुम्ह स्यांम॥
जांबबंती जुत सिमंतक, मणि लै अैहौं धांम॥ २७॥

बासुदेव मिथ्याहिं हति, करि कासी पुर दाह॥
दंत वक्र सिसुपाल कौं, हति हौं तुम्ह जग नाह॥ २८॥
लीला इती अरु औरहुँ, लीला किती अथाह॥
तुम्ह करिहौं बिच द्वारिका, म्हैं लषिहौं जुत चाह॥ २९॥
फिरि अर्जुन कै सारथी, हौय आप करतार॥
बउत अष्यौहिनी सैंन हति, टारौगैं भुवभार॥ ३०॥
पूरन हौ सब भांत करि, ग्यांन रूप भगवांन॥
जुदै प्रकृति तैं हौ सदा, तुम्ह सरनैं जग भांन॥ ३१॥
तुम्ह ईस्वर निज प्रकृति तैं, रच्यौ सकल संसार॥
लीला करिबै कौ इहै, तुम्हधार्यौ अवतार॥ ३२॥
तुम्हकौं मो परिनांम है, बारंबार करतार॥
पदपंकज प्रभु रावरै, दैन महा सुष सार॥ ३३॥

॥ श्री सुक उबाच॥

सुक कहत कि श्रीकृस्न कौं, नारद करि परिनांम॥
श्री प्रभु आग्यां पाय कैं, जात रहै निजधांम॥ ३४॥
प्रभु कैंसी कौ मारिकैं, दिय ब्रज कौं आनंद॥
रिछया गौ गौपीन की, करत भयै ब्रज चंद॥ ३५॥
अैक समैं परबत निकट, ग्वालन जुत भगवांन॥
पसू चरावत करत तहिं, क्रीडा या उनमांन॥ ३६॥
केउ ग्वाल मैंढा भयै, केउ ग्वाल भय चौर॥
केउ भयै मैंढांन कैं, रषवारै भुज ठौर॥ ३७॥
तिन्हमैं सुत मय दैत्य कौं, व्यौमासुर जिहं नांम॥
ग्वाल रूप ह्वै कैं मिल्यौ, ग्वालन मैं दुषधांम॥ ३८॥
भयै ग्वाल मैंढा तिहैं, लिय चुराय ह्वै चोर॥
मूंदि गुफा नग कै विषै, लै लै जात सुओर॥ ३९॥
सिला गुफा कै द्वार दै, राषै चोर छिपाय॥
मैंढा रूपी ग्वाल बहु, लैगौ षल दुषदाय॥ ४०॥
च्यार पांचिहीं रहि गयै, मैंढा रूपी ग्वाल॥
बहुरि अैक गहि लैं चल्यौ, आसुर दुष्ट कराल॥ ४१॥
तब वांकौ पहचानि कैं, पकरि लैत भय स्यांम॥
जब व्यौमासुर रूप निज, किय नग सम वां ठांम॥ ४२॥
निजहिं छुडावन कौं जतन, बउत कियौ षल दुष्ट॥
पैं छौडयौ नहिं कृस्न जू, गाढै गह्यौ सुपुष्ट॥ ४३॥
पटकि प्रिथवी पैं असुर बहि, प्रभु मार्यौ गर दाबि॥
बंक भौंह चढि रीस सौं, रह्यौ बीर रस फाबि॥ ४४॥

षौलि गुफा काढै प्रभू, अपनैं संगी ग्वाल॥
तिन्हकौं लै आवत भयै, निज घर कुंवर गुपाल॥ ४५॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते सप्तत्रिंसोऽध्यायः ॥ ३७॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अष्टत्रिंसोऽध्यायः ॥

(श्री अक्रूर जी की ब्रजयात्रा)

॥ श्रीसुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि अक्रूरहिंकौं, पहलैं हीं नृप कंस॥
आग्यां उन्ह दीनी हुती, बृज कौं जाहु नृसंस॥ १॥
तब वां निस तौ बसि रहैं, मथुरा पुरी जु मांहिं॥
प्रात भयै रथ स्वारह्वै, बृज चालै जुत चांहिं॥ २॥
सु परम भक्त अक्रूर जू, चलै जात बिच राह॥
अैसौ करत बिचार चित, लषिबै प्रभू उमाह॥ ३॥
कियै कहा सुभ कर्म म्हैं, क़ौनुं तपस्या कीन॥
पूर्ब जनम मधि दान बड्डु, अैसौ का हम्ह दीन॥ ४॥
जांकौ फल इह म्हैं लह्यौ, लषिहौं कृस्न कुमार॥
जिन्ह दरसन दुर्ल्लभ महा, जौगिन कौं निरधार॥ ५॥
मौ कौं दुर्ल्लभ है महा, प्रभु दरसन अभिरांम॥
जइसैं दुर्ल्लभ सूद्र कौं, बेद पढन कौ कांम॥ ६॥
म्हैं अति पापी पैं करहुं, हरि दरसन या भाय॥
ज्यौं कौं गहरी नदी बिच, परि रु पार ह्वै जाय॥ ७॥
म्हैरे पाप मिटै सबै, जनम सफल मो आजि॥
लषिहौं श्रीब्रजचंद कौ, जुत सब गौप समाजि॥ ८॥
जिहं प्रभु पद पंकजन कौं, धरत ध्यांन जोगेस॥
जिन चरनन कौं करहुंगौ, म्हैं परनांम सुदेस॥ ९॥
बड्डौ अनुग्रह कंस किय, बृज कौ मोहि पठाय॥
महा सत्रु पैं मित्रहीं सम, काज कियौ सुषदाय॥ १०॥
जिन्ह पद नष की सौभ कौ, धरि धरि ध्यांन सुढार॥
बऊत भक्ति जन तरि गयै, इहि सागर संसार॥ ११॥
जिन्ह चरनन कौं दैषि हौं, आज भाग अनुसार॥
उदै भयै किहुँ जनम कैं, दीरघ पुन्य प्रकार॥ १२॥

सिव लिछमी बिधि आदि सुर, मुनि जन ग्यांन निधान॥
जिन्ह चरनन की करत है, पूजा भलैं बिधांन॥ १३॥
जिन्ह चरनन सौं बन फिरत, गौचारन गौपाल॥
कुच कुंकुम गौपीन की, तिन्ह पद लगी रसाल॥ १४॥
ऐसै प्रभु कैं पद कमल, म्हैं देषौंगौ आज॥
जिन्ह पद पंकज दरस तैं, सबहीं संवरत काज॥ १५॥
बंक भौंह नासा सुभग, कमल नैंन घनस्यांम॥
मंद हसनि चितवनि कहर, अलक ऐंठि अभिरांम॥ १६॥
ऐसौ मुष श्रीकृस्न कौं, लषि हौ आज रसाल॥
मोहि हौत है सगुन सुभ, दिस दांहिन मृगमाल॥ १७॥
भार प्रिथी कौं टारिबैं, प्रभु धार्यौ नर रूप॥
सौ सरूप लषि नैंन मो, लहै लाभ अनूप॥ १८॥
सबकैं दैषनहार जें, बिनु भ्रम भैद अग्यांन॥
ऐसैं प्रभु गौपीन ग्रह, बसत प्रीत उनमांन॥ १९॥
टारनहारै पाप कैं, मंगल रूप सुढार॥
है प्रभु कैं गुन कर्म अरु, जितै हौत अवतार॥ २०॥
तिनकौं गावत जें करत, अतिहि पवित्र सबहींन॥
बिमुष प्रभू की कथा तैं, जियतहिं मरैं समांन॥ २१॥
दैन सुरनि आनंद प्रभु, प्रगटै जदुकुल मांहिं॥
बृज बासिन की प्रीत वसि, बसत सु ब्रजपुर ठांहिं॥ २२॥
जिनकौ जस गावत अमर, पावत नांहिंन पार॥
गति दायक सबहीन कैं, हैं श्रीकृस्नं कुमार॥ २३॥
अति सुंदर त्रय लौक मधि, दैंन द्रिगनि आनंद॥
जिन्हकौं चाहत है रमा, तैं लषिहौं ब्रजचंद॥ २४॥
जोगैस्वर जिनि चरनकौं, धरत ध्यांन अभिरांम॥
ऐसैं श्री बलिदेव अरु, कृस्नं कुंवर घनस्यांम॥ २५॥
हरि पद पंकज बंदि हौ, रथ तैं हौंहिं उतारि॥
अरु प्रनांम सब सषन कौं, करिहौं हित अनुसारि॥ २६॥
हरि कैं चरनन पैं जबै, म्हैं धरिहौं निज सीस॥
तब बै मो सिर कर कमल, धरिहैं हसि जगदीस॥ २७॥
काल सर्प सौं डरपि जिन, गही सरन भगवांन॥
तिह्नैं प्रभु कौं कर कमल, दाता अभय निदांन॥ २८॥
दान समैं संकल्प कौं, जल राष्यौ जिन हाथि॥
तिहं प्रताप बलि नृपत की, जुग जुग हुव जस गाथि॥ २९॥

जिन सुंदर कर कमल सौं, रास समैं कैं मांहिं॥
टार्यौ श्रम गौपीन कौं, दीनौं सुषहिं अथांहिं॥ ३०॥
सौ सुगंधमय कर कमल, प्रभु धरिहै मो सीस॥
हौं पवित्र ह्वै हौ जु महा, दैषि जगत कौं ईस॥ ३१॥
अंतरजामी बै प्रभू, सब कछु जांनन हार॥
दूत कंस कौ जानि मुहि, धरिहैं न सत्रु बिचार॥ ३२॥
ठाढौ ह्वै हौं सांमुहै, हाथ जौरि ह्वै दीन॥
तब हंसि मो दिस दैषि हैं, कंवल नैंन परबीन॥ ३३॥
जनम जनम कैं पाप मो, जब मिटि हैं निरधार॥
बढि हैं अति आनंद मुहि, तिहं कछु वार न पार॥ ३४॥
बंधु सुहृद मुहि जांनि फिरि, मो सौ मिलि हैं स्यांम॥
तब म्हैं बंधन करम तैं, छुटि हौं लहि सुषधांम॥ ३५॥
हे अक्रूर हे पिता यौं, कहि बतरैं हैं बैंन॥
सफल जनम म्हेरौ जबै, ह्वै हैं बढि चित चैंन॥ ३६॥
जापरि प्रभू प्रसंन नाहिं, जास जनमहिं धिकार॥
अरु प्रसंन जापैं प्रभू, सौ धन बिच संसार॥ ३७॥
प्रभू कै सत्रु न मित्र कौउ, समदरसी निरधार॥
भगत मनोरथ पूरवै, कलप बृछ करतार॥ ३८॥
श्रीकृस्न रु बलिदेव जू, मो सौं मिलि जुत नेह॥
हसि कैं म्हैरौ हाथ गहि, लैं जैहैं बिच गेह॥ ३९॥
पूछैंगै मुहि कंस की, बातैं मिलि दुहुँ भ्रात॥
म्हेरौ मुष रहिहैं चितै, मंद मंद मुसकात॥ ४०॥
यौं सुबिचार अक्रूर जू, करत करत मग मांहिं॥
सांझ समैं पउंचत भयै, हरषत गौकुल ठांहिं॥ ४१॥
लौकपाल इंद्रादि सुर, जिन प्रभु पदकी रैंन॥
राषत अपनैं सीस पैं, पाय अधिक हिय चैंन॥ ४२॥
जा प्रभु कैं चरनन बिषै, अंकुस पंकज आदि॥
चिह्न बीसचव लसत है, सौभित सौभ अनादि॥ ४३॥
जिनि चरननहिं कैं चिह्न सौं, मंडित ब्रज की भूमि॥
सौ लषि कैं अक्रूरहिं उर, बढि आनंद की धूमि॥ ४४॥
अंसु चलै द्रिग प्रेम कै, हुव रोमांच सुअंग॥
रथ तजि प्रभु पद रैंन मैं, लुटत अक्रूर सुबंग॥ ४५॥
जो कौ तरह अक्रूर की, चित लावै प्रभु मध्य॥
अति उत्तम नर जांनियै, सौ बिच जगत प्रसध्य॥ ४६॥

सु सांझ समैं अक्रूर जू, ब्रज आयै ग्रिह नंद ॥
सांम रांम दुहुँ भ्रात गौ, दुहत लषै सुष कंद ॥ ४७ ॥
नील पीत धारै बसन, कंवल पत्र सैं नैंन ॥
वय किसौर सांवल गउर, कृस्न वदन सुष दैंन ॥ ४८ ॥
जिन्हकी क्रीडा सुभग अति, उर पहरैं बनमाल ॥
सहजहिं अंग सुगंध फिरि, तन लगि सुगंध रसाल ॥ ४९ ॥
परम पुरष जें जगतपति, जग कारन करतार ॥
प्रगट भयै ईछा अपुन, दूरि करन भुवभार ॥ ५० ॥
मैटत है निज तैज सौं, सकल दिसन अंधियार ॥
नील मनी अरु रजत कैं, मनु दुहुँ भ्रात पहार ॥ ५१ ॥
दरसन दोनूं भ्रात कौं, ऐसौं करि अकरूर ॥
अति बिहबल हुव प्रेम सौं, गन्यौ भाग निज भूर ॥ ५२ ॥
दुहु भायन कैं चरन मैं, गिरि अक्रूर जु उमांहिं ॥
सजल नैंन रोमांच हुव, बौलि सकत कछु नांहिं ॥ ५३ ॥
प्रभू हाथ सौं हाथ गहि, मिलै अक्रूरहिं धाय ॥
मिलि संकर्षन गेह निज, लै आयै हित छाय ॥ ५४ ॥
आसन परि बैठाय कैं, पूछत भय कुसलात ॥
चरन धौय पूजन करैं, चंदन चरच्यौ गात ॥ ५५ ॥
आगै धर्यौं अक्रूर कैं, मांषन सहत मिलाय ॥
अरु दीनौं इक बृषभ फिरि, भौजन भलैं जिमाय ॥ ५६ ॥
भौजन करि चुकैं जबैं, दिय तंबोल सुगंध ॥
पुहप माल बलिदैव जू, ल्यायै प्रीति समंध ॥ ५७ ॥
ऐसी भांत अक्रूर सौं, पूछन लागै नंद ॥
है निरदय पापी महा, कंस नृपति मतिमंद ॥ ५८ ॥

॥ नंदराय उबाच ॥

ता पापी कैं राज मैं, तुम्ह सुबसत किंह भाय ॥
सौहि कहियै अक्रूर जू, हंम्हकौं बात सुनाय ॥ ५९ ॥
पसुघाती ज्यौं पसुन कौं, राषै है बेपीर ॥
जइसै अपनीं प्रजा कौं, राषत कंस अधीर ॥ ६० ॥
दुष्ट कंस निज बहन कैं, पुत्रननि की किय घात ॥
तास नगर तुम्ह बसत जिन्ह, का पूछै कुसलात ॥ ६१ ॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

आदर कैं अैसें बचन, कहै नंद वां बार॥
सौ सुनिकैं अक्रूर दियै, मग कौं परिस्त्रम टार॥ ६२॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अष्टत्रिंसोऽध्यायः ॥ ३८॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अैकोनचत्वारिंसोऽध्यायः ॥

(श्रीकृष्ण और बलराम का मथुरागमन)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - श्री सुक कहत कि अक्रूर कुं, सज्या परिहुँ बैठाय॥
रांम सांम दुहुँ भ्रात मिलि, आदर किय अधिकाय॥ १॥
कीनैं हुतैं अक्रूर जू, जैं मनोर्थ मग मांहिं॥
तैं सबहीं पूरन भयै, उपज्यौ सुष अथांहिं॥ २॥
जांपरि प्रभू प्रसंन ह्वै, तिहँ कछु दुर्लभ नांहिं॥
पैं राषत हरि भक्तनहिं, किहूं बस्तू की चांहिं॥ ३॥
भोजन करि संझ्या समैं, रांम सांम दुहुँ भ्रात॥
पूछन लगें अक्रूर कौं, कंस चरित अग्यात॥ ४॥

॥ श्रीभगवानुवाच ॥

कहौ कंस नृप तुम्हहिं क्यूं, पठयै हौ हम्ह पास॥
भलौ कियौ आयौ जु तुम्ह, हम्ह उर बढ्यौ हुलास॥ ५॥
जाति बंधु हम्हरै सबै, बसत मधुपुरी मांहिं॥
तिन्हकी का पूछै कुसल, सुनी जात कछु नांहिं॥ ६॥
बड्डौ रोग है कंस नृप, जदुबंसनि दुषदाय॥
सौ सबकौ दुष दैत है, दया न जिहँ चित आय॥ ७॥
श्री बसुदैव रु देवकी, माता पिता दुहूंन॥
हम्ह तैं पायौ बउत दुष, सौ छूट्यौ अजहूंन॥ ८॥
पुत्रहिं हतै पितु माता कौं, बंदी षांनै दीन॥
उन्हसौं म्हेरै वासतै, कंस सत्रुताइ कीन॥ ९॥
तुम्हरौ दरसन भाग्य सौं, हम्ह कीनौं है आज॥
तुम्ह जु हम्हारै हौ बड्डै, कहौ आयै किहिं काज॥ १०॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

सुक कहत कि अक्रूर सबै, कही कंस की बात ॥
बैर करत जादवन सौं, चाहत कीनौं घात ॥ ११ ॥
अरु मार्यौ बसुदेव कौं, चाहत कंस कुपात ॥
ऐसै सबै अक्रूर जू, कही कंस की बात ॥ १२ ॥
कह्यौ बुलावत है तुम्हहिं, धनुरजिग्य मिसु ठांनि ॥
मारन कौं चित चहत है, पापी कंस अग्यांनि ॥ १३ ॥
अरु नारद यौं कंस सौ, कही बात समझाय ॥
कृस्नहिं पुत्र बसुदेव कैं, राषै ब्रजहिं छिपाय ॥ १४ ॥
जु रांम सांम अक्रूर कैं, सुनिकैं ऐसै बैंन ॥
कहत भयै यौ नंद सौं, कृस्न कंलवदल नैंन ॥ १५ ॥
धनुरजिग्य कौतिक लषन, हम्हैं बुलायै कंस ॥
जु आयै हैं अक्रूर जू, लैं जावै बिनु संस ॥ १६ ॥
इहि सुनि गौपननि नंद जू, दिय आग्या या भाय ॥
भैंट रु गौरस लै चलौ, निज निज सकट सजाय ॥ १७ ॥
मथुरा चलि हैं काल्हि हम्ह, गौप हौहुँ सब त्यार ॥
गौरस दैं हैं कंस कौ, लषिहैं जिग्य सुढार ॥ १८ ॥
देस देस कैं नारि नर, बउत औरहूं जात ॥
तातैं हम्हहूं जाहिंगैं, निस बीतै भय प्रात ॥ १९ ॥
गौपन कैं घर घर षबरि, करवाई यौं नंद ॥
सबही बृज मैं चलन की, धूम परी दुष दंद ॥ २० ॥
सांम रांम कौ लैं चलै, आयै हैं अक्रूर ॥
गौपीगन इहि बात सुनि, लहत भई दुष पूर ॥ २१ ॥
कृस्नं चलन सुनि गौपिका; पाय बिरह संताप ॥
लैंन लगी पछिताय कैं, स्वास दुषित ह्वै आप ॥ २२ ॥
मुष की सौभा मलिन हुव, लटि गइ बिरह प्रभाय ॥
सुधि न आभरन बस्त्र की, बौंरी सी दरसाय ॥ २३ ॥
किती गौपि श्रीकृस्न कौं, धरत भई उर ध्यांन ॥
भूलि गई सब और सुधि, मनौं भई मुक्ति सुजांन ॥ २४ ॥
किती गौपि अनुराग सौं, पहलौ सुषद बिहार ॥
सुधि करि करि मूरछित भइ, भूली सबै संभार ॥ २५ ॥
हरि की गति लीला हसनि, चितवनि रस की बात ॥
अदभुत सुषद चरित सबै, सुध करि तिय सुभ गात ॥ २६ ॥
महाविरह सौं डरपि कैं, सब इकठी ह्वै नारि ॥
सजल नैत्र करि वचन मुष, कहत भई या ढारि ॥ २७ ॥

॥ गोप्य ऊचुः ॥

अहे बिधाता दया कौं, तैंरे नांहिंन लैस॥
मित्र मित्रहीं कौं मैलि कैं, बढवत प्रीति बिसैस॥ २८॥
जिन मनोर्थ नहिं पूर्न ह्वै, बिचहिं बिछौह करंत॥
काज करत बिनु समझ तूं, बालक की सी भांत॥ २९॥
घुंघरारी अलकैं लसत, सुंदर चितवनि हास॥
अैसौ मुष श्रीकृस्नं कौं, अति सुंदर सुषरासि॥ ३०॥
सौ मुष हम्हहिं दिषाय कैं, अब तू करत बिछौह॥
इहि आछौ नहिं काज तौ, हम्हसौं तुहि का द्रौह॥ ३१॥
तुहि न बिधाता है दया, तुहि न हौहिं अक्रूर॥
आयौ है लै जांन कौं, बृज की जीवनि मूर॥ ३२॥
अंग अंग श्रीकृस्नं कैं, अति सुंदरता सौभ॥
तैं राषी सब जगत की, हम्हैं बढावन लौभ॥ ३३॥
इहि तैरी चतुराइ हम्ह, दैषत रही सुढार॥
अबैं हम्हारै नैत्र तूं, क्यूहुँ हरि लैत ग्वार॥ ३४॥
हे सषि अै श्रीकृस्नं जू, नंदहिं पुत्र है नांहिं॥
हम्ह सौं छिन मैं तौरि हित, बैठे चलन उमांहि॥ ३५॥
हम्ह मोहित इन्ह चरित सौं, अैं न लषत हम्ह वोर॥
हा! बिधनां क्यूं इन्हहिं किय, अैसै महा कठोर॥ ३६॥
हम्ह इन्हकी दासी भई, छौडि सजन गन गेह॥
हम्हहिं छौडि अैं जात धरि, हुंतैं तियन सौं नेह॥ ३७॥
मथुरा की सब तियन कैं, चाह मनोरथ आज॥
पूरन ह्वै है सकल बिधि, दैषि कुंवर बृजराज॥ ३८॥
चितवनि हासि कटाछि सोइ, आसव सुषद सुढारि॥
पांन करैंगी प्रीति सौं, मथुरा की सब नारि॥ ३९॥
मथुरा की अस्त्रीन कैं, अदभुत बचन रसाल॥
लाज सहित हसि चितवनौ, लषि सुनि कुंवर गुपाल॥ ४०॥
मौहित ह्वै हैं जब नाहिं, फिरि अैहैं हम्ह पास॥
रहनहार हम्ह गांवही, नहिं प्रवीनता भास॥ ४१॥

(कवित्त)

का अब कीजै हे अलि क्यौंहूं कल परै नांहिं,
हाय हाय आव वन्यौ समैं दुषदाई है॥
कइसैं बितैहैं दिन रैंन बिन प्रांन प्यारैं,
छुटत न देहकाहू पाप कीनि काई है॥
कछुन सुहाइ कहै कौंनुंकौं सुनाय दई,

बस नहिं चलाय भई बात अनभाई है॥
जांन कैं चढाई उतै सांम सुषदाइ जू की,
हम्ह पैं बिरह इतै करत चढाई है॥४२॥
अली सुन बात इहै निपट अनैसी भांति,
सही नांहिं जाय हियै लाय सी दहत है॥
अैसी समैं आई हम्हैं दुष की अवाइ हौत,
बिरह उदौत भयौ निश्चैहिं चहत है॥
ठगहैं बिहारी निधि ठगीहैं हम्हरी अब,
कीजियै कहा री मन धीर न लहत है॥
अरी इहां न्याव नांहिं बड्डौ ही अनयाव,
कौं जात चितचोरै ताहि कौं न गहत है॥४३॥
हाय हाय बड्डौही अन्याव है या गांव मांहिं,
कौंनुं सौं कही जैं पीर कौउ न लहत है॥
बावरी सी दसा भई कछू सुधि नांहिं दई,
अैतैं पैं बिरह ओ मनौज ह्वै दहत है॥
कीजियै न संक अबै हौहिं कैं निसंक हेली,
दीजियै दुहाइ ढीठ चल्यौहीं चहत है॥
बांकैं ठग सांम डारि गरै हम्ह नेह दांम,
जात चितचोर याहि कौऊ न गहत है॥४४॥

दोहा - भोज दसारह ब्रह्स्न रु, अंधक जादव जाति॥
लषि गुन निधि श्रीकृस्न कौ, सुष पैं हैं बहु भांति॥४५॥
पुनि बड्डु उत्सव हौहिंगौ, उन्ह नैंननि निरधार॥
मग मैं हूं लषिहैं तिह्नैं, ह्वै हैं सुष अनपार॥४६॥
कहीयत है अक्रूर तौ, दयावंत कौं नांम॥
इह तौ निरदय है महा, हम्हकौं अति दुषधांम॥४७॥
कृस्नं हम्हारै प्रांन सम, तिह्नैं दूरि लै जात॥
तातैं नांम अक्रूर या, झूठौही दरसात॥४८॥
अैं श्रीकृस्न कठोर चित, चलन मधुपुरी धांम॥
चढि बैठे हैं रथ उपरि, रहत नांहिं या ठांम॥४९॥
करत सिताबी चलन की, औरहुँ संगी ग्वाल॥
गुरजनहूं इन्हकौं नहिंन, मनै करत या काल॥५०॥
अबै अैक है जतन जो, करैं कृपा करतार॥
काहू गुरजन गौप पैं, परै तडित या बार॥५१॥
कैं अनर्थ उपजैं कौउ, अबहीं या बृजमांहिं॥
तौ हरि कौ चलनौ रहै, बृज तैं मथुरा ठांहिं॥५२॥

सौ न उपद्रवहूं कछू, हौत नांहिं या बार॥
तातैं हम्हहीं मिलि सबै, रोकैं कृस्नं कुमार॥ ५३॥
जांन देहिं नहिं स्यांम कौ, है प्रांनन कैं प्रांन॥
कहा करैंगें बृद्ध जन, तजियै लाज निदांन॥ ५४॥
बिरह कृस्न कौं पलकहूं, सह्यौ जात है नांहिं॥
कौनुं सुनैं कासौं कहैं, जो दुष बढ्यौ अथांहिं॥ ५५॥
दइव आज राजी नाहिं, दया न लावत मूर॥
हाय हाय कीजै कहा, जात प्रांनपति दूर॥ ५६॥
बातैं हासि कटाछि अरु, आलिंगन जुत प्रीति॥
हम्हकौं अति मोहित करी, लीनी प्रीतम जीति॥ ५७॥
हम्ह सबहिन अनभव कियौ, लीला रास मंझार॥
ताकौं कहा बर्नन करैं, सबै सुषन कौं सार॥ ५८॥
रास समैं की रात्रि बह, छिन सम भई बितीत॥
जांनि परी नहिं रंग मैं, बढी प्रेम परतीत॥ ५९॥
तातैं अब श्रीकृस्नं बिनु, महाबिरह कौं घेर॥
कइसी बिधि सहिहै सषी, हाय सुनैं कौ टेर॥ ६०॥
गौरज सौं मंडित अलक, बजवत बैंन रसाल॥
हसि कटाछि सौं सांझ कौं, हम्ह चित हरत गुपाल॥ ६१॥
जिन्ह बिनु जीहैं कौंनुं बिधि, सौं समझी नहिं जाय॥
हा अनीत बिधनां करी, पिय बिछौह ठहराय॥ ६२॥

॥ श्री सुक उबाच॥

सुक कहत कि अैसैं कहत, बिरह बिकल ब्रजभांम॥
लागि रह्यौ श्रीकृस्न मैं, जिनकौं चित अभिरांम॥ ६३॥
कृस्न कृस्न हे स्यांम घन, अैसैं लै लै नांम॥
लाज छौरि रोवत तिया, बंधी प्रेम की दांम॥ ६४॥
रुदन करत यौं गौपिका, उदित भयौ ग्रह राज॥
सु रथ हांक्यौ अक्रूर नैं, करिकैं नित कृत काज॥ ६५॥
गौरस घट सकटन धरैं, नंद आदि सब ग्वाल॥
लैं कैं भेट भयै चलत, संग अक्रूर सचाल॥ ६६॥
गौपी ठाढी ह्वै रही, इहि बिचार चित लाय॥
चलतैं आवन की कछू, कहि है बात जताय॥ ६७॥
बिरह बिकल लषि गौपिका, प्रभु अति करि सनमांन॥
किहूं सषा कैं हाथ यौं, कहाइ स्यांम सुजांन॥ ६८॥
हम्ह बेगै हीं आइहैं, मारि कंस दुषदाय॥
तुम्ह धीरज राषौ मनहिं, बचन प्रतंग्या भाय॥ ६९॥

जबलौं प्रभु रथ की धुजा, अरु मग उडती धूरि॥
बै दैषी तबलौं चित्रसी, रही गौपि हित पूरि॥ ७०॥
मन तौ सब गौपीन कौं, चल्यौ गयौ हरि संग॥
तन तरफत बृज मैं पर्यौ, बाढ्यौ बिरह उतंग॥ ७१॥
पाछैं हौहिं निरास सब, ग्रिह आइ ब्रज नारि॥
गाय चरित श्रीकृस्न कैं, देत दिवस निस टारि॥ ७२॥
रांम सांम अक्रूरहिं जुत, पवन सम जु रथ स्वार॥
पहुँचत भयै सिताब हीं, जमुना तट बहिं बार॥ ७३॥
तहँ करिकैं जलपांन इक, बृछ तरैं रथ राषि॥
दोऊ भ्रात बिराजहीं, भक्त बछल जिन साषि॥ ७४॥
इन्हकौं रथ बैठाय कैं, इन्ह दुहु आग्या पाय॥
जातहुँ भयै अक्रूर जू, करन सिनांन सुभाय॥ ७५॥
जब सिनांन करतै समैं, जमुना जल कैं मध्य॥
श्रीकृस्नं रु बलिदैव जू, दोऊ लषै प्रसध्य॥ ७६॥
तिहूं बेरां अक्रूर कैं, चित संदेह सु आय॥
रथ मैं बैठे हैं दोउ, जल मैं क्यूं दरसाय॥ ७७॥
इहि बिचार अक्रूर तबै, लषत भयै रथ वौर॥
दोउ भ्रात बैठे लषै, वां रथहूं की ठौर॥ ७८॥
तबै सौचे अक्रूर मुहि, दरसन हुव जलमांहिं॥
भेद सत्य कैं झूठि सौ, जांनि परत है नांहिं॥ ७९॥
फिरि देषैं जलमांहिं तौ, दरसन हुव फनगेस॥
सिध चारन गंधर्ब सुर, करहीं अस्तुति सुदेस॥ ८०॥
सहस मुकट फरसहस पैं, गौर बरन पट नील॥
आसव सौं जिनकैं नयन, सौभित हैं उनमील॥ ८१॥
स्यांम बरन सौभित प्रभू, जिन्हकी गोदी मांहिं॥
पीत बस्त्र पंकज नयन, च्यारि भुजा दरसांहिं॥ ८२॥
प्रसंन बदन हांसी सुभग, चितबनि बंक अनूप॥
नासा श्रवन कपौल अरु, अधर महा सुष रूप॥ ८३॥
अति उदार है हिर्दै जिहिं, बसत रमा जिहिं ठौर॥
भुज आजांन रु संष सम, सौभित कंठ सुतौर॥ ८४॥
गहरी नांभी त्रिबलि जुत, सुभग लंक कटि छीन॥
उदर जू कौमल पत्र सम, हौत जगत जहँ लीन॥ ८५॥
जंघ नितंब घूटां पिंडुरि, सौभित महा रसाल॥
झमकत क्रांति सुनषननि की, मनु दमकति मनि माल॥ ८६॥

जुत अंगुष्ट अंगुरीन पद, पंकज अति अभिरांम॥
जिन्हकौं राषै ध्यांन सौं, लहै मुक्ति सुभ ठांम॥ ८७ ॥
कंकन बाजुबंध मुकट, कुंडल नूपुर हार॥
छुद्र घंटिका जुत लसत, मनि अमौल अनुसार॥ ८८ ॥
संष चक्र नीरज गदा, चहुँ आयुध चहुं पांनि॥
कौस्तुभ मणि श्रीचिह्न अरु, बनमाला सुकंठांनि॥ ८९ ॥
पार्षद नंद सुनंद अरु, सनकादिक बुधिवांन॥
मरीचादि नव रिषि रु बिधि, सिव बासव जुत ग्यांन॥ ९० ॥
मुनि नारद प्रहलाद वसु, अैसै भक्तहिं बिचित्र॥
प्रभु आगै ठाढै करत, अस्तुति सुपरम पवित्र॥ ९१ ॥
पुष्टि तुष्टि श्री कीर्ति पुनि, उर्जा माया क्रांत॥
गिरा अविद्या रु बिद्या सुभ, इला आदि बहु भांत॥ ९२ ॥
सेवा प्रभु की करत है, द्वादस जु भक्ति सुढार॥
कर जोरै ठाढी रहै, बसि आग्यां करतार॥ ९३ ॥
अैसौ दरसन प्रभू कौं, करि जल मैंहिं अक्रूर॥
किय प्रनांम कर जोरि कै, हिय भरि प्रेम सपूर॥ ९४ ॥
गदगद कंठ रुमांच तन, बहत द्रिगनि जलधार॥
करत भयै या दसा सौं, प्रभु की अस्तुति सुढार॥ ९५ ॥
रह्यौ हुतौ अकरूर कैं, इहि संदेह मनमांहिं॥
कइसैं कंसहिं जीति हैं, कृस्न सुबाल लषांहिं॥ ९६ ॥
तातैं प्रभू अक्रूर कौं, दिषयौ ईस्वर रूप॥
तब बिसबास अक्रूर चित, आवत भयौ अनूप॥ ९७ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अैकोनचत्वारिंसोऽध्यायः ॥ ३९ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चत्वारिंसोऽध्यायः ॥

(अक्रूर जी द्वारा भगवान श्रीकृष्ण की स्तुति)

॥ श्री अक्रूर उवाच ॥

दोहा - करत भयै अक्रूर जु यौं, प्रभू की अस्तुति बनाय॥
तुम्ह कौं है परिनांम हरि, हे स्वांमी सुषदाय॥ १ ॥

चौपई - तुम्ह सबकैं कारन करतार। आदि पुरुष सुंदर सुषतार॥
बिधि तुम्ह नाभि कंवल तैं भयहुं। जिनि बनाय इह सब जग दियहुँ॥ २ ॥

प्रिथवी वायु अग्नि अंहकार। मंहतत जल नभ प्रकति प्रकार॥
मन इंद्री इंद्रिन कैं देव। सबै तुम्हारै संग अजेव॥ ३॥
माया आदि तत्व चौबीस। सकल महा जड परत जु दीस॥
परै प्रकति तैं रूप तुम्हार। जांनत तिह नहिं तत्व निरधार॥ ४॥
अरु निज रूपहुँ बे नहिं जांनि। तिन मूरषता बेद बषांनि॥
बिधिहूं नहिं जांनत तुम्ह रूप। परम पुरष हौ ईस अनूप॥ ५॥
सर्व रूप तुम्हकौं पहचांनि। करत भजन जोगेस निदांनि॥
बेदमार्ग सौं बिप्र कितैक। पूजत अमरनि सहित बिबैक॥ ६॥
बे हैं अमरहुँ रूप तुम्हार। तुम्हहीं तैं जग बीच उजार॥
तजि कैं सबहीं कर्म प्रकार। ग्यांनी ग्यांन मार्ग अनुसार॥ ७॥
भजन तुम्हारौ करत सुजांन। सहित सनेह भलैं उनमांन॥
मूर्ति रावरी बउत सुढार। तिह्वै भजत वैस्नव निरधार॥ ८॥
कौ सिव मग तैं सिवकौं सेव। सौं सिवहूं तुम्ह रूप अभैव॥
सब सुरगन हूं रूप तुम्हार। ज़गत बिदित इहि भेद प्रकार॥ ९॥
कौ काहू की पूजा करहिं। सौं सब तुम्हहीं कौं अनुसरहिं॥
ज्यौं सरिता बरिषा रितु मांहिं। जाय मिलत सब सागर ठांहिं॥ १०॥
जइसैं हीं हैं मार्ग जितैक। तुम्ह मैं मिलहीं भांति अनैक॥
तुम्ह माया कैं गुन हैं तीन। तामैं हैं ब्रह्मादिक लीन॥ ११॥
तैं सब रूप तुम्हारौ कहहिं। तुम्ह बिनु कौ नांहिंन लहहिं॥
तुम्ह आसक्त कहूं हौ नांहि। सबकैं सापी आत्म सदांहिं॥ १२॥
सुर नर सब तुम्ह माया मोहि। मुष जु तुम्हारौ पावक सोहि॥
भुव तुव चरन नैत्र ग्रह राज। भुजा रावरी देव समाज॥ १३॥
नभ नांभी रु दिसा हैं कांन। मसतग स्वर्ग पवन है प्रांन॥
कुष समुद्र रोम ब्रछवेस। पर्बत अस्ति मैघ हैं केस॥ १४॥
निसदिन पलक बीर्ज जल जांनि। माया हांसी भेद प्रमांनि॥
है तुम्ह मैं ब्रह्मांड अनंत। जिनमैं जीव अनैक बसंत॥ १५॥
जइसैं जल कैं जीव अपार। जलही मांहिं बसत निरधार॥
अरु ज्यौं गूलर कै फल मध्य। बंसत अनंत जीव स प्रसध्य॥ १६॥
तुम्ह अपनीं क्रीडा कैं कार। धरत अनैक रूप नग धार॥
तिन्हकौं जस नित बैस्नव गाव। कहत सुनत कबहूंन अघाव॥ १७॥
मच्छ रूप धरि तुम्ह करतार। प्रलै समैं किया नीर बिहार॥
धरि हयग्रीव सरूप मुरारि। मधु कैटभ द्वै दैत्य संघारि॥ १८॥
करुना निधि स्वामी अभिरांम। तुम्हकौं है म्हेरौ परिनांम॥
कच्छप रूप हौय करतार। मंदरगिर धरि पीठ सुढार॥ १९॥
सागर मंथन कियौ भगवांन। भयै मोहनी रूप सुजांन॥

ह्वै बराह करि दयत संघार। प्रिथवी कौं कीनौं उद्धार॥ २०॥
ह्वै नरसिंघ दास भय टारिहुँ। बड़ौ बली हरनाछि मारिहुँ॥
बावन ह्वै त्रय पद अनुसार। मापि लौक तिहुँ लिय करतार॥ २१॥
मो प्रनांम है तुम्हकौं स्वामि। बारंबार अहौ बहु नांमि॥
परसरांम ह्वै सहित हुलास। करत भयै जु छत्रिन कौं नास॥ २२॥
ह्वै श्रीरांम रूप सुषसार। कीनौं रावन कौं संघार॥
बासुदेव संकर्षन अनिरुध। प्रदुमन आदि मुर्त च्यारौं सुध॥ २३॥
रूप तुम्हारौ ही है नाथ। तुम्हकौं नमसकार सुभ गाथ॥
मोहित असुर कियै बुध रूप। मारे जबन सु कलकि अनूप॥ २४॥
तुम्ह कौ नमस्कार नारायन। रहै मो चित नित तुम्ह पायन॥
इहि जीव तुम्ह माया मोहित। आत्म तत्व कौ नांहिं जोहित॥ २५॥
अहंता ममता लगी रहहिं। कर्मन मांहिं भ्रमत दुष लहहिं॥
धन सुत अस्त्री बंधु रु भाइ। इनकैं सुष मैं रहत लुभाइ॥ २६॥
दुप दाइन कौं अति सुषदाय। हौ मांनत है तुम्है भुलाय॥
मृगतृस्ना मृग दौरत जैंसहि। तुम्हहिं छौडि म्हैं भ्रमत तैंसहि॥ २७॥
इंद्री मो मन चंचल करहिं। रौकि सकत म्हैं इंद्रिन नहिंहिं॥
चरन सरन हौं म्हैं जु तुम्हार। तुम्ह पद तीन ताप भय टार॥ २८॥
दुष्टनि दुर्लभ चरन तुम्हार। साधुन सुलभहिं भांत निहार॥
क्रिपा तुम्हारि तैं जब मुक्तहिं। हौनहार हौंहि बिच जक्तहिं॥ २९॥
तबै साध की संगति पाय। भक्ति रावरी उर प्रगटाय॥
तुम्हहिं ग्यांन ग्यांन कारन करतार। तुम्हहिं ग्यांन रूप जग भरतार॥ ३०॥
सबकैं तुम्हहिं जु पालनहार। करता भरता सकल संसार॥
पल मैं सृजन पल मैं संघार। है सब तुम्हारि माया सार॥ ३१॥
सबकैं गुरु तुम्ह ब्रह्म सरूप। वासुदेव श्रीकृस्नं अनूप॥
म्हैं आयौ तुम्ह सरन क्रिपाल। रछा करहुँ हे दीनदयाल॥ ३२॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते चत्वारिंसोऽध्यायः ॥ ४० ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ ऐकचत्वरिंसोऽध्यायः ॥

(श्रीकृष्ण का मथुरापुरी में प्रवेश)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - **सुक जु कहत कि अक्रूर यौं, कीनी अस्तुति सुजान॥**
दरसन दैं प्रभु ह्वै गयै, जलतैं अंतरध्यांन॥ १॥

जइसैं नट बहु स्वांग धरि, बहुयौं लैत छिपाय॥
ज्यौं प्रभु दरसन दै भयै, अंतरध्यांन सुभाय॥ २॥
अंतरध्यांन भयै प्रभू, लषि अक्रूर वां बार॥
नितकृत करिकैं प्रभू पैं, बैठे जाय सुढार॥ ३॥
तबहिं बोलै अक्रूर सौं, ऐसैं कृस्नं कुमार॥
जल मैं करत सिनांन क्यूं, अैंती लाई बार॥ ४॥
जल प्रिथवी आकास कैं, मधि कछु अदभुत रूप॥
तुम्ह का देष्यौ सौ कहहुं, हम्हसौं प्रीति संजूप॥ ५॥
तुम्ह तौ अति अचिरज भरे, हम्हहिं परत हौ दीस॥
तातैं पूछत हैं तुम्हहिं, कहिहैं बिसबाबीस॥ ६॥

॥ अक्रूर उबाच॥

इहि सुनि कैं अक्रूर जू, बोलै या अनुसार॥
अचिरज नभ जल प्रिथी मैं, सौ तुम्हहीं करतार॥ ७॥
अैसैं कहि हांकत भयै, रथ अकरूर सचाल॥
सांझ समैं मथुरा निकट, पहुँचै बलि गौपाल॥ ८॥
मग मैं वासी ग्राम कैं, रांम सांम दुहु दैषि॥
त्रिपति हौत भय नांहिंनैं, दैषन चाह अलैषि॥ ९॥
नंद महर सब गौप जुत, प्रथमहिं मथुरा पास॥
अैक बाग मैं जाइकैं, बैठे सहित हुलास॥ १०॥
तिन सौं तहँ श्रीकृस्न जू, मिलै जाय वां ठौर॥
गहि अक्रूर कौ हाथ हरि, कहत भयै या तौर॥ ११॥
हे अक्रूर लै जाहुं रथ, मथुरा मधि निज गेह॥
हम्ह बिस्राम करि दैषि हैं, पुर सौभा जुत नेह॥ १२॥
कहि अक्रूर म्हैं तुम्ह बिनां, जाहुँ न मथुरा मांहिं॥
म्हैं हूं भगत सु रावरौ, तिहँ तुम्ह त्यागहुँ नांहिं॥ १३॥
भ्रात सहित गौपन सहित, चरन धरहुँ मो धांम॥
कीजै मोहि सनाथ अब, है प्रभु सुंदर स्यांम॥ १४॥
तुम्ह पद रज सौं गेह मौ, पावन करौ क्रिपाल॥
क्रिया रावरी जास परि, है सौ हौत निहाल॥ १५॥
चरन तुम्हारै कौ जांह, परै नीर सुष सार॥
तांह पितर सुर अग्नि सब, हौत तृपति निरधार॥ १६॥
तुम्ह पद धोयै बलि नृपति, तिहं जस लिय अधिकाय॥
उत्तम गति पावत जु भयै, जग बिच धन्य कहाय॥ १७॥
गंगा जू तुम्ह चरन तैं, प्रगट हौहिं जगमांहिं॥
करत पबित्र जू सबन कौं, दीरघ पाप मिटांहिं॥ १८॥

गंगधरी सिव सीस पैं, सगर सुतनि गति पाय॥
चरनौदक प्रभु रावरौ, सदा सबनि सुषदाय॥ १९॥
देव देव हे जगतपति, श्री गौवरधन नाथ॥
जदुकुल मैं उत्तम जू हौ, अतिहिं पवित्र तुम्ह गाथ॥ २०॥
अतिहिं उत्तम जस रावरौ, है स्वांमी सुषधांम॥
बार बार तुम्ह चरन कौं, है म्हेरौ परिनांम॥ २१॥

॥ श्रीभगवानुवाच॥

प्रभु बोलै नृपकंस कौं, मारिहुँ जुध जय पाय॥
धांम तुम्हारै आइहैं, हम्ह दुहु भ्रात सुभाय॥ २२॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुनि अक्रूर ऐसैं बचन, भयै प्रसंन चित नांहिं॥
बात सबै कहि कंस सौं, जात भयै निज ठांहि॥ २३॥
रह्यौ घरी द्वै दिवस जब, गौपन जुत दुहु भ्रात॥
मथुरापुर दैषन चलै, करि उमांह जग तात॥ २४॥
लषी सौभ मथुरापुरी , ऐसी कृस्नं कुमार॥
सौ काहूं सौं जात नहिं, बरनी किहूं प्रकार॥ २५॥
दरबाजै मणि फटिक कैं, कंचन कलस किंवार॥
मनिन जटित तौरन बंधै, चंदवा चारु सुढार॥ २६॥
गढ गाढौ षाई बडी, सुभग बाग फुलवारि॥
सुबरन कै बाजार ग्रिह, सौभित भलैं प्रकारि॥ २७॥
नीलमनी बैडूर्य्य मनि, हीरा पन्ना जटिंत॥
बिबिधि भांत बंगला बनै, सरस सौभ लपटिंत॥ २८॥
मोतिन की जाली सुभग, झुकी झरौषनि पंत॥
रतन जटित आंगन उपरि, पंछी सबद करंत॥ २९॥
चौहटा गलि बजार बिच, है सुगंध छिरकाय॥
फैलि रहै अंकुर पुहप, जहं तहं मंगल भाव॥ ३०॥
मंडित चंदन दही सौं, पूरन कलस सुढार॥
दीप पुहप पल्लव सहित, ठां ठां लसत अपार॥ ३१॥
द्वारनि कदली षंभ गडि, फरहरि धुजा रसाल॥
पुहप पत्र रु मोतीन की, ग्रिह मुष बंदन माल॥ ३२॥
रचना मथुरा नगर की, ऐसी महा सुढार॥
रांम सांम ग्वालन सहित, दैषत बीच बजार॥ ३३॥
कौउ तिया श्रीकृस्न कौ, दैषन आई द्वार॥
चढि चढि केउ अटान लषि, प्रांन करत नौछार॥ ३४॥
तजि भोजन दैषन चालि, जुत सनेह तिय कौय॥
पट भूषन पहरैं उलटि, किहूं प्रेम मत्त हौय॥ ३५॥

द्वै भूषन मैं अैकही, पहर्यौ काहू नारि॥
किहूं अैंकहीं नैंन मैं, काजर दियौ संवारि॥ ३६॥
जइसै तइसै उठि चली, तिय हरिदरसन काज॥
सब सुध बिसरी नेह बस, पटकि लोक की लाज॥ ३७॥
कौंउ उबटनां करतही, सौ बिनु कियैं सिनांन॥
उठ दौरी अति उमग सौं, दैषन स्यांम सुजांन॥ ३८॥
सैंन समैं कौ सौर सुनि, उठि दौरी मृग नैंन॥
लषि सुंदर श्रीकृस्न कौं, निज नैंननि फल लैंन॥ ३९॥
चढी झरौषन झांषही, बाढत प्रीति विनांन॥
गौकुल चंदहिं दैषिबै, मनु ससि चढै बिमांन॥ ४०॥
छलाहार किंहुक पुहप, बरषत हरि परनार॥
सदन सीस पैं तिय चढी, छकहीं छैल निहार॥ ४१॥
मन मोहन सौंहन सुषद, अपनौं रूप दिषाय॥
दैत भयै आनंद अति, सबकैं द्रिगनि सुभाय॥ ४२॥
चितवनि हासि कटाछि सौं, सबकौं मन हर लीन॥
मंद मंद मुसक्याय कैं, महा मोहनी कीन॥ ४३॥
सुनि सुनि तिय श्रीकृस्न की, पहलैं रूप सरांह॥
लागि रह्यौ हौ चित चिहुंटि, देषन काज उमांह॥ ४४॥
सौ दरसन करि तिय सबै, लहत भई आनंद॥
नौछाहर किय प्रांन निज, लषि लषि श्रीब्रजचंद॥ ४५॥
दैंन द्रिगनि आनंद अति, प्रभु की मूरति दैषि॥
दै आलिंगन ध्यांन सौं, टार्यौ बिरह अलैषि॥ ४६॥
दही अछत जलपात्र अरु, गंध सुमन अभिरांम॥
अैसीहि सामग्री सुभग, लै ब्राह्मन गुन धांम॥ ४७॥
रांम सांम दुहु भ्रात की, किय पूजा हित छाय॥
दरसन करि निज जनम कौं, फल मान्यौ सुषदाय॥ ४८॥
पुरबासी बोलै बड्डी, तपस्या किय गौपीन॥
जैं इन्हकौं दैषत सदा, परम प्रेम आधीन॥ ४९॥
अैं सबकौं आनंद कै, दाता है भगवांन॥
इन्हकौं भजत सुधन्य है, बैस्नव बड्डे सुजांन॥ ५०॥
धोबी इक नृप कंस कौ, लष्यौ धरैं अभिमांन॥
रंगरैज कौ कांम बह, करत रह्यौ अग्यांन॥ ५१॥
ताहीपैं उत्तम बस्त्र लषि, मांगै सांम सुजांन॥
कह्यौ हम्हहिं तूं दै दुपट, ह्वै है तो कल्यांन॥ ५२॥

इहि सुनि बोल्यौ रजक बह, अधिक क्रौध अनुसार॥
तुम्ह बासी बन नगन कैं, गाय चरावन हार॥५३॥
तुम्ह इन बस्त्रन जोग्य नहिं, हौ मदमत्त अग्यांन॥
मांगत हौ राजान की, बस्त काह चित आंन॥५४॥
तुम्ह चाहत हौ जो जिवौ, भाजहुं जीव बचाय॥
मांगहुँ अैसी बस्तू मति, कबहूं मन ललचाय॥५५॥
राजा कै सेवक कौउ, जो सुनि हैं किहुँ बार॥
तौ मारैंगे बांधि कैं, तिहँ न कछू उपचार॥५६॥
बचन रजक अग्यांन कैं, अैसैं सुनि जगदीस॥
तौरि मौरि डारत भयै, कर सौं वाकौ सीस॥५७॥
धोबी कैं सेवक भजै, डारि डारि पट पोट॥
मनमांनै प्रभु बस्त्र लिय, वांनिक हेरि सजोट॥५८॥
पहरैं भाई दुहुनि मिलि, अरु ग्वालन कौं दीन॥
बचै सु उहिं ठां डार दिय, कछु परवाह न कीन॥५९॥
वे पट दरजी ब्यौंत सौ, दिय पहराय संवारि॥
किय नौछाहर प्रांन निज, सौभा सरस निहारि॥६०॥
वां दरजी कौ मुक्ति प्रभु, दैत भयै सारूप॥
दिय लछमी या लौक मैं, बल अैस्वर्ज संजूप॥६१॥
अग्रज अरु ग्वालन सहित, हरि आयै तिहिं गैह॥
माली नांम सुदांम कैं, बाढ्यौ हरष अछैह॥६२॥
माली प्रभुहिं प्रनांम करि, आसन दियौ बिछाय॥
फूल पांन सौ गंध सौं, पूजै सबनि सुभाय॥६३॥
माली बोल्यौ जनम मो, सफल भयौ है आज॥
म्हेरौ बंसहि पबित्र भौ, सबही संवरै काज॥६४॥
तुम्ह आवन तै रिष पितर, सुर मो परि हुव प्रस्नं॥
हे प्रभु कारन जगत कैं, सदा आप श्रीकृस्नं॥६५॥
पालन करिबै जगत कौं, प्रगट भयै हौ आप॥
सुहृद आतमां सबन कै, तुम्हहीं प्रभू सजाप॥६६॥
बिषम द्रिष्टि नहिं रावरै, हौ सब ठौर समांन॥
तुम्हहिं भजत तिन परि करत, क्रिपा आप भगवांन॥६७॥
तातैं आग्या देहुँ मुहि, कहा करौं म्हैं काज॥
तुम्ह करवायौ टहल कछु, सौ अनुग्रह सुषसाज॥६८॥
यौं कहि सुमन सुगंधमय, लैं कै माल बनाय॥
रांम सांम दुहु भ्रात कौं, पहराई सुषदाय॥६९॥

रांम सांम दुहु भ्रात तब, कह्यौ प्रस्नं चित हौय॥
हे माली वर मांगि तू, तौ ईछा जो कौय॥ ७०॥
माली बर मांगत भयौ, निज ईछा अनुसार॥
पावत भौ आनंद अति, दैषि कृस्नं करतार॥ ७१॥
अचल भगति तुम्ह मैं सदा, अरु साधन सौं प्रीति॥
दया रहै प्रांनीन पैं, इह बर द्यौ सिष मीति॥ ७२॥
बर मांग्यौ माली सोइ, बर दीनौं करतार॥
अरु दिय अपनीं इछासौं, इती बस्तू बहिं बार॥ ७३॥
बल लछमी आर्बल बड्डी, जस कीरति संतान॥
माली कौं दै कैं चलै, भ्राता जुत भगवांन॥ ७४॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अैकचत्वारिसोऽध्यायः ॥ ४१ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ द्विचत्वारिंसोऽध्यायः ॥

(कुब्जा पर कृपा, धनुष-भंग तथा कंस की घबराहट)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि बलीदेव जू, अरु श्रीकृस्न कुमार॥
चलै जात है सषन जुत, मुसकत बीच बजार॥ १॥
मारगहिं मैं कुबजा मिलि, चंदन पात्र सुहाथ॥
तासौं हसि बौलत भयै, अैसैं श्री बृजनाथ॥ २॥
तो कौ किंहकीं तीय किह, कौं लैं चंदन जात॥
इहि चंदन दै हमहिं तौ, ह्वैहिं भलौं बिषयात॥ ३॥
कुबजा बौली हे परम, सुंदर म्हैं हूं दासि॥
कुबज्या म्हेरौ नांम है, सुनौ सांम सुषरासि॥ ४॥
कंस काज लै जात हौ, निति अरगजा बनाय॥
या चंदन कैं जोग्य हौ, आजि आप सुष दाय॥ ५॥
प्रभु सरूप सुकुमारता, हसनि कटाछि रु बैंन॥
लषि कुबजा मोहित भई, हिय अति उपज्यौ चैंन॥ ६॥
दुहु भ्रातन कैं अंग मैं, चंदन दियौ लगाय॥
भूलि गई सुधि कंस की, मदन बिबस अधिकाय॥ ७॥
चंदन जइसै रंग कौ, सोहै प्रभु कैं अंग॥
तइसौ ही चंदन लग्यौ, सौभा बढी उतंग॥ ८॥

कुबज्या कौ सूधी करन, किय मनोर्थ भगवांन॥
तनक टहल सौं प्रस्नं हुव, श्री हरि क्रिपा निधांन॥ ९ ॥
कुबज्या कैं दुहु पांव परि, राषि चरन निज स्यांम॥
अंगुरी सौं ठोडी पकरि, किय सूधी वा वांम॥ १० ॥
तबही सूधी ह्वै गई, कुबज्या सुंदर रूप॥
प्रभु कैं सपरस सौं भई, उत्तम महा रु अनूप॥ ११ ॥
रूपवंत ह्वै कूबरी, गहि प्रभु कौं पटपीत॥
कामातुर बौलत भई, बचन सु ऐसी रीत॥ १२ ॥
चलियै मो घर मैं भई, मोहित तुम्हहिं निहारि॥
म्हें तुम्हकौं छौडि न सकत, हूजै प्रस्नं मुरारि॥ १३ ॥
कुबज्या जाचन्याइ करी, हरि सौं या अनुसार॥
हलधर जू कैं देषतैं, दीनी लाज बिडार॥ १४ ॥
तब हसि वोर सषांन प्रभु, बोलै ऐसे बैंन॥
हे कुबज्या या नगर मैं, सुषदाई तौ अैंन॥ १५ ॥
हम्ह तौ परदेसी मनुष, आयै औसर पाय॥
राषत है तो गेह कौं, आस्त्रम हम्ह जुत चाय॥ १६ ॥
पैं इहां कछु कार्ज हम्हहिं, सौ सब काज संवारि॥
अै हैं तेरै धांम हम्ह, धरि धीरज हे नारि॥ १७ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

श्री सुक कहत कि यौं प्रभू, कुबज्या सौं कहि बैंन॥
आगैं चलै बजार मैं, मुसकत पंकज नैंन॥ १८ ॥
सुगंध भेंट बीरा पुहप, बाजारु जन ल्याय॥
किय पूजा श्रीकृस्न की, अग्रज जुत सुषपाय॥ १९ ॥
प्रभु कौं रूप निहारि तिय, मोहित भई अपार॥
पट भूषन तन सुधि बिसरि, रही चित्रहिं अनुसार॥ २० ॥
पूछि नगरवासीन सौं, रांम सांम दुहु भ्रात॥
धनुष धर्यौ है कंस कौ, जांह गयै मुसक्यात॥ २१ ॥
मनुं इंद्र कौहि धनुष है, ऐसो परत लषाय॥
बउत पुरष जाकी करत, रषवारी चितलाय॥ २२ ॥
कितनैंहुं वाहि धनुष की, पूजा करत बनाय॥
सबनि मनै कीनै तऊ, प्रभु लिय धनुष उठाय॥ २३ ॥
वांम हाथ मैं धनुष लैं, सबकैं लषत चढाय॥
डार्यौ तौरि सुबीच तैं, तांनि कांन लौं ल्याय॥ २४ ॥
ज्यौं गज सांठा तौरहीं, त्यौं धनु तौर्यौ सांम॥
स्वर्ग प्रिथी लौं सबद हुव, तुटत धनुष वा ठांम॥ २५ ॥

ताकौं सुनिकैं कंस चित, अति उपजत भौ त्रास॥
लरिबैं कौं पठई बउत, चमू प्रभू कैं पास॥ २६ ॥
दौरे रष्यक धनुष कैं, लै लै सस्त्र अपार॥
अरु बोलै दुहु भ्रात कौं, गहि बांधहुँ या बार॥ २७ ॥
इक इक टूक सुधनुष कौं, रांम सांम लै हाथ॥
मार मार चकचूर किय, सब दुष्टन को साथ॥ २८ ॥
अैसौ अदभुत कर्म अरु, तेज रूप अधिकाय॥
दुहुँ भ्रातन कौं दैषि कैं, पुरवासी भय पाय॥ २९ ॥
दुहूं भ्रात जांनत भयै, उत्तम अमरननि मांहिं॥
आअैं हरि बलि सांझ कौं, उतरै हे जैंहिं ठांहिं॥ ३० ॥
बृज तैं मथुरा कौ जबै, चलन लगै दुहुँ भ्रात॥
कही हुती गौपीन तब, मुष तैं अैसी बात॥ ३१ ॥
मथुरा की तिय आज इह, लषिहै सुंदर रूप॥
तासौं उन्हकैं द्रिग सफल, ह्वै हैं सांत अनूप॥ ३२ ॥
कीनी सांची बात सौ, कृस्न कुंवर बृजचंद॥
मथुरा की नारीन कैं, द्रिगनि दियौ आनंद॥ ३३ ॥
धोय चरन कर नीर सौं, कृस्न कमल दल नैंन॥
पय सांमग्री जीमी कैं, करत़ भयै निस सैंन॥ ३४ ॥
सुनी कंस नृप बात इहि, रांम सांम दुहुँ भ्रात॥
तौरि धनुष रषवार सब, मार गयै बिषयात॥ ३५ ॥
जागत सोवत कंस कौं, असुगन हौत अपार॥
जिन असुगन सौं हौहिं मृत्यु, बचै नांहीं निरधार॥ ३६ ॥
नीर मुकर मैं जब लषै, निज प्रतिबिंब सुकंस॥
तब सिर दीसै नांहिं धड, दीसै बिनु जिय अंस॥ ३७ ॥
इक ससि कै द्वै ससि लषै, तरु कंचनमय दीस॥
निज छाया मैं छिद्र बहु, लषत कंस अवनीस॥ ३८ ॥
प्रिथवी मैं निज चरन कैं, चिह्न न परत लषाय॥
बांनी बौलत है बुरी, पंछी सांमुह आय॥ ३९ ॥
सबद हिर्दै कौ सुनत है, जब मूदत नर कांन॥
सबद सुनत नहिं कंस सौ, चित चिंता अप्रमांन॥ ४० ॥
कंस लष्यौ अैसौ सुपन, प्रैत मिलत गर लागि॥
षरारूढ बिष षातहूं, लग्यौ तेल तन जागि॥ ४१ ॥
माला गुडहर फूल की, पहरै नगन जु देह॥
अैसै असुगन लषि करत, चिंता कंस अछेह॥ ४२ ॥

चिंता सौं नृप कंस निस, तनक नींद नहिं लीन॥
प्रात भयै मल्ल जुध की, बड्डी तयारी कीन॥ ४३॥
बाजनि लगै बाजित्र बहु मल, जुधहीं करबै ठौर॥
बंधै मंच बड्डु तीन उपरि, तौरन धुजा सुतौर॥ ४४॥
जहँ तहँ कैं बैठैं नृपति, तिन मंचन पैं आय॥
पुरवासी छत्री अस द्विज, बैठे सब जुत चाय॥ ४५॥
महादुषित इक मंच परि, कंसहिं बैठौ आनि॥
सब तय्यार ह्वै मल्लहूं, आयै अति बलवांनि॥ ४६॥
चाणूर मुष्टिक कूट सलि, तौसल मल्ल इन नांम॥
जुध काजै आयै उमगि, रंगभूमि कैं ठांम॥ ४७॥
नंद महरलौं आदि जें, सबही गौप समाज॥
बौलि पठायै कंस नृप, मल्ल जुध दैषन काज॥ ४८॥
घर तैं ल्यायि कंसहिं भेंट, दै गौप सुबुधि धार॥
बैठे अैकहीं मंच पैं, सौभित भलैं प्रकार॥ ४९॥
पुरवासीन कैं हिदैं, दैषहिं चाह उमंग॥
हर्ष विषाद दुहुन मिली, सोचत निज निज ढंग॥ ५०॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते द्विचत्वारिसोऽध्यायः ॥ ४२ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ त्रिचत्वारिंसोऽध्यायः ॥

(कुवलयापीड़ का उद्धार और अखाड़े में प्रवेश)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - सुक कहत कि बलिदैव जू, अरु श्रीकृस्न कुमार॥
सबद नगारै मल्लन कैं, सुनि दौऊ वां बार॥ १॥
मल्ल जुध दैषन कौं चलै, अति निसंक सुकुमार॥
लष्यौ कुवलयापीड गज, रंग भूमि कैं द्वार॥ २॥
गजहिं दैषि श्रीकृस्नं जू, जुध कौं भेष बनाय॥
अलक सीस पैं बांधि द्रिढ, बोलै यौं रिस छाय॥ ३॥
अरे महाबत देहुँ मग, इहँ तैं जाहुँ पलाय॥
नहिं तौ दैहूं गज सहित, तुहि जमपुरि पहुँचाय॥ ४॥

कह्यौ महावत सौं प्रभू, ऐसौ बचन रिसाय॥
तब माहुत प्रभु सांमुहै, प्रेर्यौ गज रिस छाय॥ ५॥
मनु मृत्यु है कैं काल है, कै जम है निरधार॥
गज सरूप ऐसौ लष्यौ, सकल लोक वां बार॥ ६॥
पकरि लैत भौ सूंड सौं, प्रभु कौं गज बलवांन॥
माहुत मान्यौ मोद मन, तनक बैरि अग्यांन॥ ७॥
प्रभू सूंड तैं निकसि किय, गज कैं मुष्टि प्रहार॥
चहु पायन बिच छिपि गयै, कृस्न कुंवर करतार॥ ८॥
पकरत भौ निज सूंड सौं, प्रभु कौं फेरि गयंद॥
निकसि तबै गज सूंड सौं, निज बल तैं गोविंद॥ ९॥
षैच्यौं धनुष पचीस लौं, गहि गज पूछ गुपाल॥
ज्यौं षैंचै अहि कौं गरुड, धरि चित क्रोध बिसाल॥ १०॥
गज भ्रमायौ पूछ गहि, बांई दहनी वौर॥
दीनौ निज दिस फिरन नहिं, मेट्यौ अतिबल तौर॥ ११॥
भ्रमत भयै श्रीकृस्नं जू, आपहुं गज कैं संग॥
ज्यौं बालक गौ पूछ गहि, भ्रमत सहित उछरंग॥ १२॥
फिर हाथी कैं सांमुहे, आप आय भगवांन॥
करि प्रहार निज हाथ कौं, गज कुंभ स्थल थांन॥ १३॥
प्रभु आगै दौरत भयै, गज किय पाछै दौर॥
दौरत ह्वै हाथी बिकल, गिरत भयौ भुव ठौर॥ १४॥
उठि दोर्यौ हाथी बहुरि, गिरै प्रभू कौं जांनि॥
दंतनि सौं प्रिथवी उपरि, कियौ प्रहार निदांनि॥ १५॥
फेरि महावत प्रभू पैं, प्रैरत भयौ गयंद॥
पास आय गज सूंड गहि, पटक्यौ भुंवि गौविंद॥ १६॥
गज कौं प्रभु निज चरन सौं, दाबि रु दांत उषारि॥
दांतहिं सौं गजवांन गज, हरि डारत भय मारि॥ १७॥
जात भयै रंगभूमि मैं, गजहिं मारि भगवांन॥
धरै कंध गज दंत इक, लसत सौभ अप्रमांन॥ १८॥
हाथी कै मद की रही, लागि छींट श्री अंग॥
श्रमकन झलकत वदन पर, सौभा लसत उतंग॥ १९॥
धरै कंध गजदंत इक, गउर बरन बलि रांम॥
सषा सबै डरि भजि गयै, कितक रहै संग सांम॥ २०॥
दुहुँ भ्रात रंगभूमि मैं, ऐसै पहुँचै जाय॥
देषै जिन जिन भाव सौं, तैसेई दरसाय॥ २१॥

रांम सांम दोउ बज्र सम, मल्लन कौं दरसांहिं॥
दीसै पुरवासीन कौं, उत्तम मनुषनि जु मांहिं॥ २२॥
कामरूप अस्त्रीन लषै, सषनि सषा दरसाय॥
दुष्ट नृपन कौं दंड कैं, दाता परै लषाय॥ २३॥
लषै नंद बसुदेव जू, बालक महा रसाल॥
कंस दुष्ट दैषत भयौ, निश्चै रूप जु काल॥ २४॥
दरसै अग्यांनीन कौं, सौभहीन भगवांन॥
दीसि परै जोगैस्वरनि, परमतत्व सप्रमांन॥ २५॥
इष्ट देव जादवनि कौं, दीसि परै करतार॥
यौं वां समैं रूप दर्सनि, दरसैं भलैं प्रकार॥ २६॥
लषै भ्रात दुहुँ जोरवर, सुन्यौ मर्यौ गज कंस॥
मनमैं अति ब्याकुल भयौ, बढि चित अतुलित संस॥ २७॥
जिन प्रभु कैं आजानभुज, कीनैं भेष बिचित्र॥
अरु बिचित्र पहरैं तनहीं, माला भूषन बस्त्र॥ २८॥
है दुहुँ उत्तम नटहिं मनौं, अदभुत सुंदर रूप॥
जें देषै तिन मन हरत, सौभित सौभ अनूप॥ २९॥
रंगभूमि मैं भ्रात दुहुँ, सोभै रूप रसाल॥
पुरवासी उत्तम जु पुरुष, निरष भयै जु निहाल॥ ३०॥
प्रसंन भयैहुँ नृप तिनहिं, लषि लषि प्रभु मुष चंद॥
नैंत्रन सूं हरि रूप कौं, पांन करत सुष कंद॥ ३१॥
नासा सौ श्री अंग कौ, सूंघत है सौ गंध॥
भेट्यौ चहत भुजांन सौं, परम प्रीत की संध॥ ३२॥
अैसी पुरवासीन की, दसा भई वां बार॥
दैषि दैषि भगवांन कौं, सुंदर रूप उदार॥ ३३॥
रूप रु गुन माधुर्य्य लषि, प्रभु कौं पुरब सव्रांन॥
आपस मैं बौलत भयै, बचन सु या अनुमांन॥ ३४॥
नारायन कौं रूप है, अैं दौनूंहीं भ्रात॥
प्रगट भयै बसुदेव ग्रिह, प्रिथवी परि बिषयात॥ ३५॥
प्रगटै अैहीं कृस्नं जू, गरभ देवकी मध्य॥
धरि आयै बसुदैव जू, नंद गेह सप्रसध्य॥ ३६॥
बडे भयै घर नंद कैं, कंसहिं मारनहार॥
करत भयै छह दिवस कैं, अैहीं बकी संघार॥ ३७॥
त्रिनावर्त संषचूड अरु, कैंसी धैनुक नांम॥
मारै हैं अैसै असुर, इन्हहीं सुंदर सांम॥ ३८॥

जमलार्जुन दुहु बृछन कौं, इन्हहीं कियौ उद्धार॥
गौपी गौप दवाग्नि तैं, लिय बचाय निरधार॥ ३९॥
इन्हहीं काली नाग कौं, नाथ्यौ दियौ निकारि॥
बलि दिवाय गिरिराज कौं, दियौ इंद्र मद टारि॥ ४०॥
गौवरधन दिन सात लौं, राष्यौ अपनैं पांन॥
बरिषा बिजुरी पवन तैं, किय बृज रछा निदांन॥ ४१॥
इन्ह मुष हासि कटाछि जुत, प्रफुल्लित पंकज भाय॥
लषि गौपी टारत भई, त्रिबिधि ताप दुषदाय॥ ४२॥
अैं ही रिछा जदुबंस की, करिहै भलैं प्रभाय॥
इनतैं जदुकुल पाय है, जस लछमी रु बडाय॥ ४३॥
है अैहीं बलदेव जू, इन्ह प्रभु कैं बड भ्रात॥
धैनुक अउर प्रलंब दुहु, इन्हहीं हतै बिष्यात॥ ४४॥
सुक कहत कि अैसे करत, मिलि मिलि पुरजन बात॥
लषि लषि हौत निहाल सब, हिर्दैं प्रेम उफनात॥ ४५॥
रांम सांम सौ कहत भौ, अैसे मल्ल चाणूर॥
अहौ नंद कैं पुत्र जु तुम्ह, हौ अति बली सपूर॥ ४६॥
तुम्ह जांनत मल्ल जुध करि, तातैं कंस नृपाल॥
तुम्हैं बुलायै है इहां, कउतक लषन बिसाल॥ ४७॥
प्रजा करै नृप कौ कह्यौ, मन बच कर्म प्रभाय॥
त्यौं परजा कौ हौय सुष, नहिं तौ अति दुषपाय॥ ४८॥
ग्वालन कौ जु सुभाव है, पसुचारन बन जाय॥
जिहि ठां मल्ल जुध करत है, निज ईंछा अनुभाय॥ ४९॥
तातैं हम्ह तुम्ह जुधहिं करि, प्रसंन करै नृपकंस॥
बसत नृपति कैं अंग मैं, सबही देव प्रसंस॥ ५०॥
प्रसंन नृपति कैं कियै तैं, सबही हौत जु प्रस्नं॥
तातैं नृपकौं करहुँ तुम्ह, प्रसंन अहो बलि कृस्नं॥ ५१॥
इहि सुनि कैं बोलै बचन, जथा जोग्य करतार॥
मल जुध करन मनोर्थचित, है प्रभु कौ निरधार॥ ५२॥
अहो मल्ल हम्ह तुम्ह सबै, प्रजा कंस की आंहिं॥
करिहैं नृप कौ प्रस्नं अति, आछी भांति उमांहिं॥ ५३॥
पै हम्ह तौ बालक दुहूं, सम जु तिहारै नांहिं॥
निज बल सम बालकन सौं, जुध करनौ ठहरांहिं॥ ५४॥
जुध करिहौं सम सिसुन सौं, तुम्ह सै मल्ल बलवांन॥
तौ दैषन वारैन कौं, लगि हैं पाप निदांन॥ ५५॥

॥ चाणूर उवाच॥

इह सुनि कैं चाणूर मल्ल, कहत भयौ इह बात॥
नहिं बालक रु किसोर नहिं, हौ तुम्ह दोनूं भ्रात॥ ५६॥
गज हजार कौ बल हुतौ, पीड कुवलया मांहिं॥
तां हाथी कौं तुम्ह हत्यौ, तनकहुँ डरपैं नांहिं॥ ५७॥
तुम्ह दोउ अति बलवंत हौ, तुम्ह सम कौं जग मांहिं॥
तुम्हहिं सौं करनौ जुध सौ, कछु अनीति है नांहिं॥ ५८॥
तुम्ह मो सौं जुध करहुँ अब, निश्चै हौय निसंक॥
मुष्टिक सौं बलिदेव जू, करिहैं मल्ल जुध बंक॥ ५९॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते त्रिचत्वारिंसोऽध्यायः ॥ ४३॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुश्चत्वारिंसोऽध्यायः ॥

(चाणुर मुष्टिकादिक मल्लों तथा कंस का उद्धार)

॥ श्री सुक उवाच॥

दोहा - सुक कहत कि चाणूर कैं, सुनि मन मानै बैंन॥
जुद्ध करन कौं भ्रात दोउ, भयै तय्यार सुषैंन॥ १॥
चाणूर सूं श्रीकृस्न अरु, मुष्टिक सौं बलरांम॥
जाय प्राप्त हुव जुध करन, मल्लन सो वां ठांम॥ २॥
कर सौं कर अरु पांव सौं, पांव जोरि कर जोरि॥
आपस मैं षैंचत भयै, उमगि उमगि दुहु ओरि॥ ३॥
अरु आपस मैं करत हैं, द्रिढ मुष्टीन प्रहार॥
सबद धमाधमि सुनि परत, हौत दांव अनपार॥ ४॥
सिरसौं सिर उर सो जु उर, घुटन घुटन सौं लाय॥
दुहू ओर तैं परसपर, करत प्रहार रिसाय॥ ५॥
हाथ हाथ सौं पकरि कैं, चहुँ दिस दैत भ्रमाय॥
पाछौ दैत हटाय पुनि, भुव परि दैत गिराय॥ ६॥
बाहुन सौं मिलि जोर करि, मर्दन करकैं अंग॥
आगै चलनौं छौडि कैं, हटनौं पाछै बंग॥ ७॥
पकरि पाय घौंटा गिरिय, लैनौं उचकि उठाय॥
आंनि लग्यौ बह कंठ सौं, दैनौं ताहि छुडाय॥ ८॥

जमलार्जुन दुहु बृछन कौं, इन्हहीं कियौ उद्धार॥
गौपी गौप दवाग्नि तैं, लिय बचाय निरधार॥ ३९॥
इन्हहीं काली नाग कौं, नाथ्यौ दियौ निकारि॥
बलि दिवाय गिरिराज कौं, दियौ इंद्र मद टारि॥ ४०॥
गौवरधन दिन सात लौं, राष्यौ अपनैं पांन॥
बरिषा बिजुरी पवन तैं, किय बृज रछा निदांन॥ ४१॥
इन्ह मुष हासि कटाछि जुत, प्रफुल्लित पंकज भाय॥
लषि गौपी टारत भई, त्रिबिधि ताप दुषदाय॥ ४२॥
अैं ही रिछा जदुबंस की, करिहै भलैं प्रभाय॥
इनतैं जदुकुल पाय है, जस लछमी रु बडाय॥ ४३॥
है अैहीं बलदेव जू, इन्ह प्रभु कैं बड भ्रात॥
धैनुक अउर प्रलंब दुहु, इन्हहीं हतै बिष्यात॥ ४४॥
सुक कहत कि अैसे करत, मिलि मिलि पुरजन बात॥
लषि लषि हौत निहाल सब, हिर्दै प्रेम उफनात॥ ४५॥
रांम सांम सौ कहत भौ, अैसे मल्ल चाणूर॥
अहौ नंद कैं पुत्र जु तुम्ह, हौ अति बली सपूर॥ ४६॥
तुम्ह जांनत मल्ल जुध करि, तातैं कंस नृपाल॥
तुम्हैं बुलायै है इहां, कउतक लषन बिसाल॥ ४७॥
प्रजा करै नृप कौ कह्यौ, मन बच कर्म प्रभाय॥
त्यौं परजा कौ हौय सुष, नहिं तौ अति दुषपाय॥ ४८॥
ग्वालन कौ जु सुभाव है, पसुचारन बन जाय॥
जिहि ठां मल्ल जुध करत है, निज ईछा अनुभाय॥ ४९॥
तातैं हम्ह तुम्ह जुधहिं करि, प्रसंन करै नृपकंस॥
बसत नृपति कैं अंग मैं, सबही देव प्रसंस॥ ५०॥
प्रसंन नृपति कैं कियै तैं, सबही हौत जु प्रस्नं॥
तातैं नृपकौं करहुँ तुम्ह, प्रसंन अहो बलि कृस्नं॥ ५१॥
इहि सुनि कैं बोलै बचन, जथा जोग्य करतार॥
मल जुध करन मनोर्थचित, है प्रभु कौ निरधार॥ ५२॥
अहो मल्ल हम्ह तुम्ह सबै, प्रजा कंस की आंहिं॥
करिहैं नृप कौ प्रस्नं अति, आछी भांति उमांहिं॥ ५३॥
पै हम्ह तौ बालक दुहूं, सम जु तिहारै नांहिं॥
निज बल सम बालकन सौं, जुध करनौ ठहरांहिं॥ ५४॥
जुध करिहौं सम सिसुन सौं, तुम्ह सै मल्ल बलवांन॥
तौ दैषन वारैन कौं, लगि हैं पाप निदांन॥ ५५॥

॥ चाणूर उवाच॥

इह सुनि कैं चाणूर मल्ल, कहत भयौ इह बात॥
नहिं बालक रु किसोर नहिं, हौ तुम्ह दोनूं भ्रात॥५६॥
गज हजार कौ बल हुतौ, पीड कुवलया मांहिं॥
तां हाथी कौं तुम्ह हत्यौ, तनकहुँ डरपैं नांहिं॥५७॥
तुम्ह दोउ अति बलवंत हौ, तुम्ह सम कौं जग मांहिं॥
तुम्हहिं सौं करनौ जुध सौ, कछु अनीति है नांहिं॥५८॥
तुम्ह मो सौं जुध करहुँ अब, निश्चै हौय निसंक॥
मुष्टिक सौं बलिदेव जू, करिहैं मल्ल जुध बंक॥५९॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते त्रिचत्वारिंसोऽध्यायः ॥ ४३ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुश्चत्वारिंसोऽध्यायः ॥

(चाणुर मुष्टिकादिक मल्लों तथा कंस का उद्धार)

॥ श्री सुक उवाच॥

दोहा - सुक कहत कि चाणूर कैं, सुनि मन मानै बैंन॥
जुद्ध करन कौं भ्रात दोउ, भयै तय्यार सुबैंन॥१॥
चाणूर सूं श्रीकृस्न अरु, मुष्टिक सौं बलरांम॥
जाय प्राप्त हुव जुध करन, मल्लन सो वां ठांम॥२॥
कर सौं कर अरु पांव सौं, पांव जोरि कर जोरि॥
आपस मैं षैंचत भयै, उमगि उमगि दुहु ओरि॥३॥
अरु आपस मैं करत हैं, द्रिढ मुष्टीन प्रहार॥
सबद धमाधमि सुनि परत, हौत दांव अनपार॥४॥
सिरसौं सिर उर सो जु उर, घुटन घुटन सौं लाय॥
दुहू ओर तैं परसपर, करत प्रहार रिसाय॥५॥
हाथ हाथ सौं पकरि कैं, चहुँ दिस दैत भ्रमाय॥
पाछौ दैत हटाय पुनि, भुव परि दैत गिराय॥६॥
बाहुन सौं मिलि जोर करि, मर्दन करकैं अंग॥
आगै चलनौं छौडि कैं, हटनौं पाछै बंग॥७॥
पकरि पाय घौंटा गिरिय, लैनौं उचकि उठाय॥
आंनि लग्यौ बह कंठ सौं, दैनौं ताहि छुडाय॥८॥

जमलार्जुन दुहु बृछन कौं, इन्हहीं कियौ उद्धार॥
गौपी गौप दवाग्नि तैं, लिय बचाय निरधार॥ ३९ ॥
इन्हहीं काली नाग कौं, नाथ्यौ दियौ निकारि॥
बलि दिवाय गिरिराज कौं, दियौ इंद्र मद टारि॥ ४० ॥
गौवरधन दिन सात लौं, राष्यौ अपनैं पांन॥
बरिषा बिजुरी पवन तैं, किय बृज रछा निदांन॥ ४१ ॥
इन्ह मुष हासि कटाछि जुत, प्रफुल्लित पंकज भाय॥
लषि गौपी टारत भई, त्रिबिधि ताप दुषदाय॥ ४२ ॥
अैं ही रिछा जदुबंस की, करिहै भलैं प्रभाय॥
इनतैं जदुकुल पाय है, जस लछमी रु बडाय॥ ४३ ॥
है अैहीं बलदेव जू, इन्ह प्रभु कैं बड भ्रात॥
धैनुक अउर प्रलंब दुहु, इन्हहीं हतै बिष्यात॥ ४४ ॥
सुक कहत कि अैसे करत, मिलि मिलि पुरजन बात॥
लषि लषि हौत निहाल सब, हिर्दै प्रेम उफनात॥ ४५ ॥
रांम सांम सौ कहत भौ, अैसे मल्ल चाणूर॥
अहो नंद कैं पुत्र जु तुम्ह, हौ अति बली सपूर॥ ४६ ॥
तुम्ह जांनत मल्ल जुध करि, तातैं कंस नृपाल॥
तुम्हैं बुलायै है इहां, कउतक लषन बिसाल॥ ४७ ॥
प्रजा करै नृप कौ कह्यौ, मन बच कर्म प्रभाय॥
त्यौं परजा कौ हौय सुष, नहिं तौ अति दुषपाय॥ ४८ ॥
ग्वालन कौ जु सुभाव है, पसुचारन बन जाय॥
जिहि ठां मल्ल जुध करत है, निज ईछा अनुभाय॥ ४९ ॥
तातैं हम्ह तुम्ह जुधहिं करि, प्रसंन करै नृपकंस॥
बसत नृपति कैं अंग मैं, सबही देव प्रसंस॥ ५० ॥
प्रसंन नृपति कैं कियै तैं, सबही हौत जु प्रस्नं॥
तातैं नृपकौं करहुँ तुम्ह, प्रसंन अहो बलि कृस्नं॥ ५१ ॥
इहि सुनि कैं बोलै बचन, जथा जोग्य करतार॥
मल जुध करन मनोर्थचित, है प्रभु कौ निरधार॥ ५२ ॥
अहो मल्ल हम्ह तुम्ह सबै, प्रजा कंस की आंहिं॥
करिहैं नृप कौ प्रस्नं अति, आछी भांति उमांहिं॥ ५३ ॥
पै हम्ह तौ बालक दुहूं, सम जु तिहारै नांहिं॥
निज बल सम बालकन सौं, जुध करनौ ठहरांहिं॥ ५४ ॥
जुध करिहौं सम सिसुन सौं, तुम्ह सै मल्ल बलवांन॥
तौ दैषन वारैन कौं, लगि हैं पाप निदांन॥ ५५ ॥

॥ चाणूर उवाच ॥

इह सुनि कैं चाणूर मल्ल, कहत भयौ इह बात॥
नहिं बालक रु किसोर नहिं, हौ तुम्ह दोनूं भ्रात॥ ५६ ॥
गज हजार कौ बल हुतौ, पीड कुवलया मांहिं॥
तां हाथी कौं तुम्ह हत्यौ, तनकहुँ डरपैं नांहिं॥ ५७ ॥
तुम्ह दोउ अति बलवंत हौ, तुम्ह सम कौं जग मांहिं॥
तुम्हहिं सौं करनौ जुध सौ, कछु अनीति है नांहिं॥ ५८ ॥
तुम्ह मो सौं जुध करहुँ अब, निश्चै हौय निसंक॥
मुष्टिक सौं बलिदेव जू, करिहैं मल्ल जुध बंक॥ ५९ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते त्रिचत्वारिंसोऽध्यायः ॥ ४३ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुश्चत्वारिंसोऽध्यायः ॥

(चाणुर मुष्टिकादिक मल्लों तथा कंस का उद्धार)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - सुक कहत कि चाणूर कैं, सुनि मन मानै बैंन॥
जुद्ध करन कौं भ्रात दोउ, भयै तय्यार सुषैंन॥ १ ॥
चाणूर सूं श्रीकृस्न अरु, मुष्टिक सौं बलरांम॥
जाय प्राप्त हुव जुध करन, मल्लन सो वां ठांम॥ २ ॥
कर सौं कर अरु पांव सौं, पांव जोरि कर जोरि॥
आपस मैं षैंचत भयै, उमगि उमगि दुहु ओरि॥ ३ ॥
अरु आपस मैं करत हैं, द्रिढ मुष्टीन प्रहार॥
सबद धमाधमि सुनि परत, हौत दांव अनपार॥ ४ ॥
सिरसौं सिर उर सो जु उर, घुटन घुटन सौं लाय॥
दुहू ओर तैं परसपर, करत प्रहार रिसाय॥ ५ ॥
हाथ हाथ सौं पकरि कैं, चहुँ दिस दैत भ्रमाय॥
पाछौ दैत हटाय पुनि, भुव परि दैत गिराय॥ ६ ॥
बाहुन सौं मिलि जोर करि, मर्दन करकैं अंग॥
आगै चलनौं छौडि कैं, हटनौं पाछै बंग॥ ७ ॥
पकरि पाय घौंटा गिरिय, लैनौं उचकि उठाय॥
आंनि लग्यौ बह कंठ सौं, दैनौं ताहि छुडाय॥ ८ ॥

हाथ पांव करडारनै, इकठै मोरि मरोरि ॥
कियौ परसपर जुधहिं यौं, अप अपनैं भुज ठौरि ॥ ९ ॥
मल्ल बलबंतन सौं लरत, बालक अति सुकुमार ॥
लषि सब बोलै दयाकरि, आपस मैं या ढार ॥ १० ॥
सभा सदन कौं लगत है, इहि जुद्ध देषैं पाप ॥
दुरबल लरकन सौं लरत, मल्ल बलवंत अमाप ॥ ११ ॥
परबत सम है मल्ल जिन, अंग सुबज्रहिं समांन ॥
दीसि परत भयकार अति, निरदय महा अग्यांन ॥ १२ ॥
अरु अैं बालक है दोउ, बय किसोर सुकुमार ॥
जौबनहू इन्हिं अंग परि, नहिं झलक्यौ निरधार ॥ १३ ॥
इन्ह मल्लन सौं बाल अैं, लरत सु बड्डी अनीत ॥
रहनौं इहां न जोग्य या, सभा मांहिं अघरीत ॥ १४ ॥
है अधरम जा सभा मैं, जिहँ ठां जइअैं नांहिं ॥
बैठनहारै मंनुष कौ, लगि पाप अधिकांहिं ॥ १५ ॥
अधमनिन की सभा मैं, बैठि करै जो बात ॥
ताकौ लागै पाप अति , बढै अधिक उतपात ॥ १६ ॥
अरु जो बोलै सांच नहिं, बैठि रहै चुप साधि ॥
तऊ पाप लागै महा, हौय धरम की बाधि ॥ १७ ॥
संग अधरमिन कौ कियै, पाप लगै सब भांति ॥
तातै नांहिंन बैठियै, दुष्ट जनन की पांति ॥ १८ ॥
कौं तिय किहुँ तिय सौं कहत, लषौ जुद्ध श्रम पाय ॥
बूंद पसीनां की रही, हरि कैं मुष परि आय ॥ १९ ॥
ज्यौं पंकज परि औस की, बूंद रहत ठहराय ॥
त्यौं श्रमकन की कृस्न कैं, मुषहिं सौभ सरसाय ॥ २० ॥

(कवित्त)

मल्ल बलीन सौं पंकज नैंन भुजा सौं भुजा,
पकरिहैं निज ठौर रच्यौ जुद्ध पूरति ॥
दावहिं अनैक प्रकारन बंक करै बल,
रु छल सौं मरौरि अरि अंगनि चूरति ॥
अति सौभित बीरताइ आनन पैं सबकौं,
मन मोहति है जु मन मोहनी सूरति ॥
भौंह चढाय करै ललकार हुंकार भरैं,
रिसहुँ मैं हरि हैं सुंदर रस मूरति ॥ २१ ॥

दोहा - कौउ कहत बलदेव कौं, मुष देषैं सब भांम ॥
मुष्टिक परि रिस करत हसि, अरुन नैंन अभिरांम ॥ २२ ॥

बृज की भूमि पबित्र जांह, अग्रज जुत श्रीकृस्नं॥
बैंनहिं बजावै फिरत गौ, रछया करत सप्रस्नं॥ २३ ॥
धरै मनुष कौं रूप प्रभु, उरहिं बिचित्र बनमाल॥
जिन्ह पद पूजत सिव रमा, बंदत हौत निहाल॥ २४ ॥
जिन्ह हरि कौं बृज बिहारहिं, हम्ह दरसन किय नांहिं॥
तातें हम्ह भाग न भलैं, लरत लषें या ठांहिं॥ २५ ॥
दीरघ तप गौपीन कियौ, उन्ह सम और न नारि॥
जिन्ह निज नैंनन सौं लष्यौ, इन्ह जु रूप सुषसारि॥ २६ ॥
बड्डी लुनाई जास मधि, नित नवीन जो रूप॥
ईस्वरता दरसत अधिक, अैसौं रूप अनूप॥ २७ ॥
सब ग्रिह कारज करन मैं, निसदिन बै ब्रजभांम॥
गावति है अति प्रेम सौं, हरि कैं गुन अभिरांम॥ २८ ॥
जिन्हकैं प्रेम प्रभाव सौं, चलत द्रिगनि जलधार॥
मनौं ससि पंकज पत्र भरि, डारत मुक्तनि सुढार॥ २९ ॥
धन्य धन्य या जगत बिच, प्रेम धुजा बृज भांम॥
जिनकैं इन्ह श्रीकृस्न सौं, परम प्रेम हिय ठांम॥ ३० ॥
बृज तैं वन कौं जात जें, गौचारन कौ प्रात॥
सांझ समैं आवत बहुरि, मुरली मधुर बजात॥ ३१ ॥
तब गौपी ग्रिहतैं निकसि, मारग कैं बिच आय॥
हासि कटाछिन सहित इन्ह, मुष दैषत सुषदाय॥ ३२ ॥
उन्ह गौपिन बड्डु तप कियौ, पूर्ब जनम कैं मांहिं॥
धन्य धन्य बै गौपिका, उन्ह समांन कौं नांहिं॥ ३३ ॥
अैसैं आपस मैं करत, सब अस्त्री मिलि बात॥
सत्रुन मारन ताहि समैं, कीनौं मन जग तात॥ ३४ ॥
अस्त्रीन कैं अैसैं बचन, सुनि बसुदेव रु नंद॥
अति सनेह सौं बिकल हुव, बल न जांनि बृजचंद॥ ३५ ॥
चाणूर सौं श्रीकृस्न अरु, मुष्टिक सौं बलरांम॥
करत भये बहुभांति सौं, जुद्ध भलौं वां ठांम॥ ३६ ॥
प्रभु कै अंगन कै रु कर, मुष्टिन कै जु प्रहार॥
लागै बज्र समांन तन, चाणूर कै वां बार॥ ३७ ॥
तिन सौं अति ब्याकुल भयौ, भूल्यौ देह संभार॥
बहुरि चेत लहि रीस करि, चाणुर उठ्यौ कुचार॥ ३८ ॥
मुष्टि बांधि दुहु हाथ की, महाक्रौध अनुसार॥
करत भयौ पापी उछलि, प्रभु कै हिर्दै प्रहार॥ ३९ ॥

पुहप माल सम चोट सौ, मांनत भय भगवांन॥
जान्यौ अधिक प्रहार नहिं, करता पुरस निदांन॥ ४०॥
चाणूर की दुहूं भुजा, गहि श्रीकृस्नं भ्रमाय॥
प्रिथवी पर दीनौं पटकि, उहिं गय प्रांन पलाय॥ ४१॥
बिषरि बार भूषन तुटै, पछरि पर्यौ बिकरार॥
प्रिथवी परि परबत मनौं, बिषरि पर्यौ निरधार॥ ४२॥
तइसै हीं मुष्टिक दुहू, मुष्टि बांधि रीसाय॥
हलधर जू कै हिदैं मैं, किय प्रहार दुषदाय॥ ४३॥
तब वांकै आनन उपरि, दई थाप बलिरांम॥
भूल्यौ देह संभार बह, मुष्टिक मल्ल बहिं ठांम॥ ४४॥
गिरत भयौ मुष तैं रुधिर, अंग अंग कंपाय॥
प्रांन निकसि भुव परि गिर्यौ, ज्यौं तरु पवन भ्रमाय॥ ४५॥
कूटनांम मल्ल जुद्ध करन, आवत भौ वां बार॥
हतत भयै बलिदेव तिहँ, करिकैं मुष्टि प्रहार॥ ४६॥
सल्ल नांम मल्ल जुद्ध करन, आयौ हौ ह्वै प्रस्नं॥
पद प्रहार तिहं सीस करि, हतत भयै श्रीकृस्नं॥ ४७॥
तौसल मल्ल आयौ लरन, तिहँ प्रभु डार्यौ चीर॥
यौं पांचौहिं मल्लन मरै, और भजे तजि धीर॥ ४८॥
निज सषांन कौं संग लैं, नाचन लागै सांम॥
बाजन लागै घूंघरू, चरनन मधि अभिरांम॥ ४९॥
बड्डे बड्डे सब साधजन, हरषित हुव हिय ठांम॥
कंस दुष्ट अति दुषित भौ, जान्यौ बिगर्यौ कांम॥ ५०॥
मरै भजैं निज मल्ल लषि, बोल्यौ कंस लबार॥
अबै बाजित्र बजाहुँ मति, मोहि न लगत सुढार॥ ५१॥
पुत्र दुष्ट बसुदैवहिं कैं, रांम सांम दुहुँ भ्रात॥
इन्हैं निकासहुँ नगर तैं, प्रगट रूप उतपात॥ ५२॥
गौपन कौं धन लूटि ल्यौ, पकरि नंद कौं लैहुँ॥
राषहुं कारागेह मधि, छूटि जांन मति दैहुँ॥ ५३॥
उग्रसैन इन्ह पषहिं हैं, महादुष्ट बसुदैव॥
तातैं मारहुँ इन्ह दुहुँनि, मति पूछहुँ कछु भैव॥ ५४॥
बकत दैषि यौं कंस कौ, उछलि कृस्न करतार॥
चढै जाय जिहिं मंच तांह, बैठ्यौ कंस लबार॥ ५५॥
इन्हकौं आवत दैषि कैं, कंस मृत्यु निज जांनि॥
उठ्यौ ढाल तरवार गहि, अधिक क्रौध चित आंनि॥ ५६॥

बाईं दहनी वोर कौं, फिरन लग्यौ करि दांव॥
बाज पंछी नभ बीच ज्यौं, करत दांव सरसांव॥ ५७ ॥
गहत गरुड ज्यौं सांप कौं, वांहि पकरि लिय सांम॥
मुकट डारि कच ठाहि दियौ, पटकि रंग भुव ठांम॥ ५८ ॥
सकल बिस्व कौ बौझ दै, कुदै कंस परि आप॥
प्रिथवी परि षैंचत भये, पकरि केस धरि धाप॥ ५९ ॥
हाथी कौं जइसै भभक, षैंचत सिंघ रिसाय॥
ज्यौं कंसहिं षैंचत भयै, अधिक छौह उफनाय॥ ६० ॥
षात पियत जागत सुवत, फिरत सत्रु निज जांनि॥
ध्यान रह्यौ श्रीकृस्न कौं, भुल्यौ न कबहुं निदांनि॥ ६१ ॥
लहत भयौ तातें प्रगट, प्रभुहीं कौ सौ रूप॥
मिटै पाप हरि ध्यांन तैं, पाई मुक्ति अनूप॥ ६२ ॥
कंक निग्रौधहिं आदि वै, आठ कंस कैं भ्रात॥
भ्रात बैर लैबै लरन, आवत भयै कुपात॥ ६३ ॥
तिन्हकौं आवत दैषि कैं, आगल लै निज पांनि॥
हतत भयै बलिदैव जू, उन्हकौं अति रिस ठांनि॥ ६४ ॥
सुरनि बजावै दुंदुभि अरु, सिव बिधि बरषै फूल॥
नृत्य करत भइ अपछरा, पाय महा सुषमूल॥ ६५ ॥
कंस की रु सब भ्रात की, अस्त्री सब बिललाय॥
माथौ पीटत रौवती, रंगभूमि ठां आय॥ ६६ ॥
निज निज पति मूवैन सौं, मिलि रोवत जु पुकारि॥
लागी करन बिलाप यौं, अति दुष कैं अनुसारि॥ ६७ ॥
हे प्यारे हे नाथ हे, पिय हम्हकौं सुषदैंन॥
तौ मरने मैं हम्हहुँ सब, जियत मरी बिन चैंन॥ ६८ ॥
तौं बिनु इहि मथुरापुरी, सौभा पावत नांहिं॥
तइसै हीं सौभा कछू, रही न हम्हहूं मांहिं॥ ६९ ॥
उत्सव मंगल नगर तैं, जात रहै या बार॥
तौ बिनु हम्हकौं लषि परत, सुन्य सकल संसार॥ ७० ॥
निज अपराधी जियन कौं, रह्यौ दुष्य तू देत॥
तातै इहि तेरी दसा, भई पाप कृत हेत॥ ७१ ॥
प्रांनिन कौं दुष देय तिय, कबहुँ सुष नाहिं हौय॥
जुग जुग मैं बिष्यात इहि, बात कहत सब कौय॥ ७२ ॥
उतपति पालन प्रलैं कै, करता अैं श्रीकृस्नं॥
करैं अवग्या तिहँ सोई, सुष न लहै मिटि तृस्नं॥ ७३ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि करि तियन कौं, समाधांन भगवांन॥
मामा मृतकन की क्रिया, करी भलैं उनमांन॥ ७४॥
बंधन तात रु मात कैं, काटि सांम बलिरांम॥
चरन छूय सिरनाय कैं, करत भयै परिनांम॥ ७५॥
देवकी रु बसुदेव निज, पुत्रननि ईस्वर जांनिं॥
डरपि मिलत भय नांहिंनैं, स्वांमि भाव उर आंनिं॥ ७६॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते चतुश्चत्वारिंसोऽध्यायः ॥ ४४॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ पंचचत्वारिंसोऽध्यायः ॥

(श्रीकृष्ण - बलराम का यज्ञोपवीत तथा गुरुकुल प्रवेश)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि जांनत भयै, बात इहै भगवांन॥
मात पिता कैं चित भयौ, म्हेरौ ईस्वर ग्यांन॥ १॥
तातैं मोकौ पुत्र करहिं, अैं जांनैंगे नांहिं॥
तौ सुष उपजैगौ नाहिं, रस बत्सलता मांहिं॥ २॥
इहि बिचार करि चितहिं मैं, निज माया भगवांन॥
बिसतारी पित मात पैं, भुलवन ईस्वर ग्यांन॥ ३॥
माता पिता दौऊन सौ, अति आदर अनुसार॥
बउत नम्र है भ्रात जुत, बोलै कृस्नं कुमार॥ ४॥
बाल किसौर पौगंड हम्ह, वय कैं चरित सुढार॥
देषै तुम्ह कछु नांहिनैं, ईछा दइव प्रकार॥ ५॥
सौ हम्ह बसि प्रारब्ध कैं, रहे नांहिं तुम्ह पास॥
मात पिता कैं लाड कौं, सुषन पर्यौ कछु भास॥ ६॥
सिध कारज सब हौत है, निज सरीर अनुसार॥
मात पिता तिहँ देह कैं, है उपजांवन हार॥ ७॥
जु पुत्र करै सत बरष जो, मात पिता की सेव॥
तौहू ऊरन हौत नाहिं, बेद बिदित इहि भेव॥ ८॥
दैंन भलैं पितुमात कौं, भोजन सुत धनवांन॥
वांकौं पल ष्यावत बही, मधि परलोक निदांन॥ ९॥

बृद्ध मातपितु बिप्र गुर, तिय पतिब्रता रु बाल॥
सरनागत जन दीन पुनि, असामर्थ बेहाल॥ १० ॥
करैं न सैव इतैंन की, जो समरथता पाय॥
सौ मनुष याहि जगत बिच, जिअतहिं मर्यौ लषाय॥ ११ ॥
दुष्ट कंस सौं डरपि हम्है, करि न सकै तुव सैव॥
कितक हम्हारे दिन बृथा, गयै इछाबस दैव॥ १२ ॥
हे पितु माता कंस कैं, डर सौं पर आधीन॥
हम्ह रहि तुम्ह सेवा न किय, छमहुँ सचूक प्रवीन॥ १३ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि पितु मात सुनि, सुत कैं अैसै बैंन॥
गौदी लै आनंद कौं, प्रापति भयै सुषैंन॥ १४ ॥
मातु पिता कैं नेह सौं, चलै द्रगनि जलधार॥
भरि आयौ गर बौल कछु, सकै नांहिं वां बार॥ १५ ॥
अैसै तात रु मातु कौं, समाधांन करि सांम॥
उग्रसैंन कौं राज दिय, बजि निसांन पुर ठांम॥ १६ ॥
प्रभु नाना सौं कह्यौ हम्ह, प्रजा तुम्हारी आंहिं॥
जदुराजा कैं स्राप सौं, राज़ जोग्य है नांहिं॥ १७ ॥
हम्ह सेवक है रावरै, हे नाना उग्रसैंन॥
सब तुम्ह आग्यां मांनि हैं, नृपति अमर लहि चैंन॥ १८ ॥
भजे हुतै जादव कितै, दुष्ट कंस भय पाय॥
तिनकौं धन दै बउत प्रभु, राषत भयै बुलाय॥ १९ ॥
रिछया नगरी की प्रभू, करत भयै बहु भाय॥
तासौं मिटि संताप सब, पुरवासी सुषछाय॥ २० ॥
दया सहित प्रफुलित वदन, प्रभु कौं दैषि रसाल॥
भयै बृद्ध तैं तरुन सब, पुरजन हौय षुस्याल॥ २१ ॥
रांम सांम फिरि नंद सौं, मिलि बोलै यौं बैंन॥
तुम्ह हम्हकौं पालत भयै, भली भांत दै चैंन॥ २२ ॥
मातपिता तैं अधिक प्रिय, हम्हहिं लगत हौ आप॥
करै पालनां तैं सही, माता पिता सदाप॥ २३ ॥
हम्हैरं तो माता पिता, हुतै कलैसहिं मांहिं॥
तातैं मातपिता कछू, हम्ह पालन किय नांहिं॥ २४ ॥
तुम्ह हम्हकौं पालै भलै, करि सनैह अनपार॥
तुम्ह तैं ऊरन हम्ह कबहुँ, नहिं ह्वै हैं निरधार॥ २५ ॥
ब्रज कौं आपु पधारियै, सकल गौप लैं लार॥
हम्ह पाछै हीं आय हैं, जातहिं दै सुष सार॥ २६ ॥

समाधांन यौं बउत करि, दै धन पट आभर्न॥
बिदा नंद जू कौं कियै, बंदि प्रभू पितु चर्न॥ २७॥
दैहि परिकरमा पुत्र की, रुदिन करत गर लागि॥
बृजपति बृज कौ गवन किय, गौपन जुत दुष पागि॥ २८॥
दुहु पुत्रननि बसुदैव जू, अपनैं प्रौहित पास॥
भौ धरावत जग्यौ पवित, बिधवत सहित हुलास॥ २९॥
मनसौं सुत कै जनम दिन, संकलपी ही गाय॥
तैं दिय बछरनि जुत तरुन, समैं जनेऊ पाय॥ ३०॥
पढि गायत्री मंत्र दुहूं भ्रात गर्ग जू पास॥
बहुधन दै द्विज गर्ग कौं, पूरन कीनी आस॥ ३१॥
आप बिद्या जांनत सकल, है ईस्वर भगवांन॥
तऊ नर भाव जतावही, भेद छिपाय निदांन॥ ३२॥
बसत पुरी उज्जैन मैं, द्विज सांदीपन नांम॥
तापैं बिद्या पढनहिं कौं, गयै सांम बलिरांम॥ ३३॥
गुर की अति सेवा करत, सीषत बिद्या अपार॥
गुरु जु प्रसंन ह्वै सेव तैं, सिषयै बेद सुढार॥ ३४॥
धनुवैद जुत रहसि धरम, सास्त्र सस्त्र पुनि नीति॥
अैंक बेर कैं कहन मैं, गयै सीषि सुभ रीति॥ ३५॥
सीषै प्रभु चौसठि कला, चौसठ दिन कैं मांहिं॥
गुरु सौं कह्यौ कि लैहुँ गुर, दछिना जो चित्त चांहिं॥ ३६॥
इन्हकी महिमा बुधि जु लषि, इंन्ह कौं ईस्वर जांनि॥
मृतक पुत्रहिं मांगत भयौ, तिय सौं पूछि निदांनि॥ ३७॥
जात्रा तीर्थ प्रवाह मैं, बूडि मर्यौ मो पूत॥
सौ मुहि दीजै ल्याय कैं, दछिनां इहिं अदभूत॥ ३८॥
रांम स्याम रथ स्वार ह्वै, गयै समुद्र किनार॥
कियै समुद्र इन्ह दुहुन की, पूजा भलैं प्रकार॥ ३९॥
प्रभू बोलै सामुद्र सूं, तो तरंग अनुभाय॥
बूड्यौ हम्हारौ गुरु तनय, सौ अब दीजै ल्याय॥ ४०॥

॥ समुद्र उवाच॥

प्रभू सौं कह्यौ समुद्र म्हैं, कियौ न वां संघार॥
संष रूप मोमैं असुर, है बहि मारनहार॥ ४१॥

॥ श्री सुक उवाच॥

तब प्रभु जल मैं पैठि कैं, किय बहि असुर संघार॥
बालक वांकै उदर मैं, नहिं पायौ निरधार॥ ४२॥

तब सिंदन चढि भ्रात दुहु, बेग जमपुरी जांहिं॥
संष नाद करतै भयै, कृस्नं कुंवर सुषदांहिं॥ ४३॥
संष सबद सुनि कैं दुहूं, भ्रातनि निकट सु आय॥
करत भयौ पूजा भलैं, दरसन लहिं सुष पाय॥ ४४॥

॥ यम उवाच॥

यम बोल्यौ तुम्ह भ्रात दुहु, हौ ईस्वर भगवांन॥
मांनुष लीला करत हौ, निज ईछा उनमांन॥ ४५॥
तुम्ह जो आग्यां देहू सौ, म्हैं करिहूं निरधार॥
कौंनुँ काज कौं आप इहिं, आयै हौ करतार॥ ४६॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

मो गुर सुत कर्मन बंध्यौ, तुम्ह ल्यायै जमराय॥
सौ मुहि दीजै ल्याय अब, मो आग्यां अनुभाय॥ ४७॥

॥ श्री सुक उवाच॥

बैंहुं तत्व अैंकत्र करि, बही रूप सरसाय॥
जम दीनौं गुरु पुत्रहिं जब, गुरहिं दियौ प्रभु जाय॥ ४८॥
और मुक्ति कीरती दइ, रह्यौ जगत जस छाय॥
हरि जु बोल्यै गुरु दछिनां, औरहुँ लैहु सुभाय॥ ४९॥

॥ गुरु उवाच॥

गुरु बोल्यौ दछिनां भली, तुम्ह दिय दुष किय दूर॥
जापैं आप पढौ प्रभू, तिहिं मनोर्थ है पूर॥ ५०॥

॥ श्री सुक उवाच॥

अब दुहु भ्रात पधारियै, मातु पिता ग्रिह ठांहिं॥
ह्वै हैं तुव कीरति बड्डी, बेद भूलिहौं नांहिं॥ ५१॥
गुरु की आग्यां पाय दुहु, भ्रात हौय रथ स्वार॥
आयै मथुरा नगर मैं, मंगल बढ्यौ अपार॥ ५२॥
बउत दिनन मैं भ्रात दुहु, आयै प्रजा निहारि॥
प्रफुलित ह्वै आनंद अति, पायौ भलैं प्रकारि॥ ५३॥
जइसैं धन षोयौ गयौ, मिलैं रंक कौं आय॥
तब वांकौं आनंद ह्वै, ज्यौं परजा सुष पाय॥ ५४॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते पंचचत्वारिंसोऽध्यायः ॥ ४५ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ षट्चत्वारिंसोऽध्यायः ॥

(उद्धव जी की ब्रज यात्रा)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि जदुकुल विषै, मंत्री श्रैष्ठ सुजांन॥
सिष्य बृहस्पति कौ जु बह, प्रभू सषा बुधिवांन॥ १ ॥
ऐसै उद्धव जु भक्त कौं, हाथ पकरि मुसकाय॥
सरनागति कै दुष हरन, बोलै कृस्नं सुभाय॥ २ ॥
हे उद्धव ब्रज जाहु मम, करहुँ प्रसंन पितुमात॥
टारहुँ गौपिन बिरह कहि, मो संदेस की बात॥ ३ ॥
मोही मैं नित प्रति रहत, गौपिन कौ मन प्रांन॥
तजि बैठी हैं मो लियै, सब सुष साज निदांन॥ ४ ॥
तिन्हकी रछया करहुँ म्हैं, निसदिन जुत चित चाह॥
उन्हकैं प्रांनन तैं अधिक, मो सौ प्रीति अथाही॥ ५ ॥
मो सुमरन बै निसदिवस, करत प्रीति अनुसार॥
बिरह बिकल ह्वै हौत है, मूर्छित भूमि सम्हार॥ ६ ॥
दूरि रहत उन्हतैं अबैं, म्हैं मधुपुरी सथांन॥
तातैं अति ही कठिन सौं, राषत है निज प्रांन॥ ७ ॥
चलतैं मैं उन्हसौं कह्यौ, हम्ह आवैंगे बेगि॥
या आसा सौं जियत बै, सहि सब बिरह उदेगि॥ ८ ॥
ऐसी आग्यां प्रभू की, पाय हौय रथ स्वांर॥
उद्धव गौकुल कौं चलै, नैंकु न करी अवांर॥ ९ ॥
नंद गांव पहुँचत भयै, सांझ समैं कौं जाय॥
गौरज सौं ता बार रथ, इन्हकौ गयौ जु छाय॥ १० ॥
मत्त बृषभ जुध करत है, गौ काजै बृज मांहिं॥
नाद करत कैतिक बृषभ, ज्यौं नभ घन गरजांहिं॥ ११ ॥
कूदत है बछरा बछी, बौलत गौप अपार॥
अरु गौदोहन कौ सबद, हौय रह्यौ सुभढार॥ १२ ॥
चरित रांम अरु सांम कैं, गावत प्रीति प्रभाय॥
सुंदर गौपी गौप तैं, मंडित बृज दरसाय॥ १३ ॥
सूरज आतिथ अग्नि द्विज, पितर देवता गाय॥
इन्हकी पूजा हौत है, जहँ तहँ भलैं प्रभाय॥ १४ ॥
धूप दीप सौभित भलैं, गौपन गेह सुढार॥
फूल रहै बागन पुहप, भ्रमर करत गुंजार॥ १५ ॥
प्रफुलित कमल सरौवरनि, बौलत पंछी बंस॥
अति सौभा सरसात है, जिहिं ठां बै हंस॥ १६ ॥

ऐसै श्री ब्रज सुभग मैं, आवत भयै सुजांन॥
प्रिय सैवक श्रीकृस्नं कैं, उद्धव मूरति ग्यांन॥ १७॥
जिन्हकौं आयै दैषि कै, मिलैं नंद जू धाय॥
करत भयै श्रीकृस्नं सम, पूजा भलैं बनाय॥ १८॥
बैठारे पलिंका उपरि, भोजन सुभग जिमाय॥
पांव चांप बौलत भयै, महर नंद या भाय॥ १९॥
हे उद्धव सुत मित्र जुत, नीकैं हैं बसुदैव॥
उन्हकैं म्हेरै है सही, परम मित्रताहिं भैव॥ २०॥
भली भई निज पाप सौं, काल प्राप्त भौ कंस॥
सत्रु जादवननि कौं सदा, दुष दैतो अघ अंस॥ २१॥
हम्हकौं अरु निज मातु कौं, करत कबहुं सुधि सांम॥
अरु कबहूं सुधि करत गौ, गौपन जुत ब्रज ठांम॥ २२॥
दैषन जन अपनैंन कौं, कबहुं रांम अरु सांम॥
इहिं अैहैं जब दैषिहैं, उन्हकौं मुष अभिरांम॥ २३॥
बरषां पवन दवाग्नि अहि, असुर अरिष्ट सुनांम॥
ऐसी ऐसी मृत्युन तैं, हम्ह रछया किय सांम॥ २४॥
चितवनि बौलनि हसनि जुत, कृस्न चरित अभिरांम॥
सुधि आंवति हैं हम्हहिं जब, भूलि जात सब कांम॥ २५॥
बन नग नदी सथांन बिच, हरि पद चिह्न जु निहारि॥
भूलि जात हैं सुधि सबै, तनकी नांहिं संभारि॥ २६॥
गर्ग मोहि कहि गयै है, रांम सांम दुहुँ भ्रात॥
है उत्तम सबै सुरनि मैं, हम्ह जांनत इह बात॥ २७॥
अमरनि कैं कारज करन, प्रगट भयै भुव ठांम॥
दुष्ट नृपन कौं मारिहैं, बड्डै करहिं संग्राम॥ २८॥
सत्य बात उन्हकी कही, हम्ह जांनी निरधार॥
किय अदभुत कारिज बउत, सुंदर कृस्न कुमार॥ २९॥
बल हजार दस गजहिं कौं, जिनमैं हुतौ निदांन॥
ऐसै मल्ल गज कंस कौं, मारै सांम सुजांन॥ ३०॥
धनुष कंस कौ प्रबल अति, तौरत लगी न बार॥
ज्यौं हाथी तरु तार कौं, तौरै तृन अनुसार॥ ३१॥
सात बरष कै सात दिन, गिरिधार्यौ निज पांन॥
सब ब्रज की रछया करी, हर्यौ इंद्र कौ मांन॥ ३२॥
बक प्रलंब धेनुक सकल, त्रिनावर्त लौं आदि॥
ऐसै ऐसै दयत ज़िन, मारै उर अहलादि॥ ३३॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

सुक कहत कि श्रीकृस्न की, सुधि करि चरित सुढार॥
उन्हहीं मैं बुधि लगि रही, अैसे नंद उदार॥ ३४ ॥
प्रेम सिंधु मैं मगन ह्वै, हौहिं रहै चुप आप॥
ध्यांन पुत्र कौ हिर्दै धारि, करन चरितनि जाप॥ ३५ ॥
सुत चरितहिं जसुमति सुनत, बहत द्रिगनि जलधार॥
पुत्र नेह सौं सतनन तैं, उमड्यौ पय अनपार॥ ३६ ॥
नंद जसौमति की अधिक, दैषि कृस्न सौं प्रीति॥
बहुरि नंद जू सूं वचन, उद्धव कहै सुरीति॥ ३७ ॥

॥ उद्धव उवाच ॥

अहो जसौमति नंद जू, तुम्ह दोउ अस्त्री नाह॥
मनुष देह धारीन मैं, लायक करन सराह॥ ३८ ॥
जिनकी बुधि भगवांन मैं, अैसी लगी सुढार॥
इक छिनहूं भूलत नांहिं, प्रभु कौं काहू बार॥ ३९ ॥
रांम सांम संसार कैं, कारन हैं दुहुँ भ्रात॥
बैंही प्रकृति बैहिं पुरष, प्रेरक जियहिं बिष्यात॥ ४० ॥
मरन समैं जिय मैं लगै, किहुं कौं चित निरधार॥
सौ पावत है परम गति, छूटि बिपति संसार॥ ४१ ॥
जग कैं कारन मनुष तन, धरै कृस्नं बलिदैव॥
तिन्हसौं तुम्हरौ जोग्य है, अैसौ नेह सुभैव॥ ४२ ॥
अब तुम्हकौं करतव्य कछु, और रह्यौ है नांहिं॥
भयै कृतारथ सहजहीं, तुम्ह सम कौ जग मांहिं॥ ४३ ॥
अब थोरैहीं दिनन मैं, ब्रज अैहैं श्रीकृस्नं॥
सैव तुम्हारी करि भलैं, करिहैं तुम्हहिं सप्रस्नं॥ ४४ ॥
दुष्ट कंस कौं मारिकैं, कृस्नं कुंवर सुषधांम॥
बिदा करत तुम्ह सौं कह्यौ, हुतौ मधुपुरी ठांम॥ ४५ ॥
हम्ह आवैंगै बेगहीं, कछु इक काज संवारि॥
सत्य बचन सौं करन कौं, अैहैं बेगि मुरारि॥ ४६ ॥
षेद करौ मति तुम्ह अबैं, दुहूँ तिय पति मा भागि॥
श्रीकृस्नहिं निज निकटहीं, लषिहौं अति हित पागि॥ ४७ ॥
जें प्रभु सबकैं हिर्दै मधि, बसत कृस्न करतार॥
जइसैं रहत जु काठ मैं, अग्नि भलैं अनुसार॥ ४८ ॥

प्रिय रु अप्रिय श्रीकृस्न कैं, कौइ न या जग मांहिं॥
बै सब ठौर समांन हैं, उन्ह सम है कौं नांहिं॥ ४९॥
सुत अस्त्री माता पिता, भ्रात कौउ उन्हकैं न॥
जनम मरन पर अपुनहू, कछू प्रभू कै हैं न॥ ५०॥
कर्महुं उन्हकैं नांहिनैं, कबहूं किहूं प्रकार॥
साधुन की रछया निमत, धरत जनम करतार॥ ५१॥
सत रज तम तिहुं प्रकृति कैं, गुन धरि कैं भगवांन॥
उतपति पालन अरु प्रलैं, जग कौं करत निदांन॥ ५२॥
ज्यौं भौरेंटी लैत सिसु, तब भुव फिरत लषाय॥
तइसैहीं या जगत बिच, माया भ्रम दरसाय॥ ५३॥
जीव करत अहंकार सौं, करम अनैक प्रकार॥
मांनि लैत हैं आपकौं, आत्मा सबही भार॥ ५४॥
अैसै सब कारिज करत, माया गुन निरधार॥
नांम हौत भगवांन कौं, बीच सकल संसार॥ ५५॥
पुत्र तुम्हारै ही नांहिंन, बै श्रीकृस्नं कुमार॥
सबकैं माता अरु पिता, सुष आत्मा सुष सार॥ ५६॥
दिषियत सुनियत ह्वै चुक्यौ, पुनि ह्वै हैं निरधार॥
थावर जंगम दीरघ लघु, सब हरि रूप प्रकार॥ ५७॥

॥ श्री सुक उवाच॥

अैसैं बातैं करत निस, बितई उद्धव नंद॥ ५८॥
उठि सबैर दधि मथत भइ, ग्रिह ग्रिह गौपी वृंद॥
झमकत भूषन कैं रतन, दीपक तैं अधिकाय॥ ५९॥
हौत जु कंकन बलय कौं, सबद श्रवन सुषदाय॥
हार स्तन कुंडल नितंब, हलत सौभ सरसाय॥ ६०॥
डुलत पीठ बैंनी सुभग, अंग मुरनि छबि छाय॥
हरि गुन ऊंचै सुरन सौं, गावत भलैं प्रकार॥ ६१॥
हौत सबद दधि मथन कौं, घन गरजनि अनुसार॥
मिटत अमंगलि दिसन कौं, जास सबद अनुभाय॥ ६२॥
श्रवनन सुनि नरनारि चित, हौत मोद अधिकाय॥
उदय भयौ सूरज जबै, सब बृज कैं नरनारि॥ ६३॥
रथ लषकै कंचन कलित, नंद महर कैं द्वारि॥
कहत भयै अकरूर इहिं, क्यूं आअैं हैं फेरि॥ ६४॥
कंस नृपति अब हैं मर्यौ, ताहिं दैंन पिंड दांनि॥
मांस हम्हारौ लैन का, आयौ है बृज थांनि॥ ६५॥

ऐसै गौपी कहत भइ, मिलि सब आपस मांहिं॥
करि सिनांन आवत भयै, उद्धव ताहीं ठांहिं॥ ६६ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते षट्चत्वारिंसोऽध्यायः ॥ ४६ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ सप्तचत्वारिंसोऽध्यायः ॥

(उद्धव तथा गोपियों की बातचीत और भ्रमरगीत)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - सुक कहत कि श्रीकृस्नं कैं, सषा बाहु आजांन॥
सुंदर मुष द्रिग कमल सै, कमल माल हिय थांन॥ १ ॥
पीत बस्त्र पहरै सुभग, उद्धव अैसैं रूप॥
लषि गौपी बौलत भई, वांकै बचन अनूप॥ २ ॥
पटभूषन श्रीकृस्नं सम, पहरै हैं इहि कौंनुँ॥
जांनि परत नहिं कौनुँ है, कौं आयौ बृज भौंनुँ॥ ३ ॥
हसिकैं तिरछै दैषि कैं, बौल बचन सुषदाय॥
हरि कैं पठयै जांनि कैं, करि आदर अधिकाय॥ ४ ॥
उद्धव कौं अैकांत लै, बैठि कहत भय बात॥
हम्ह जांनत श्रीकृस्नं कैं, तुम्ह सैवक बिषयात॥ ५ ॥
मातपिता की लैंन सुधि, पठयैं तुम्हकौं सांम॥
और किहूं की लैहिं सुधि, सौं न कौउ बृजधांम॥ ६ ॥
छूटत मुनिनहूं तैं नांहिं, निज बंधुन सौं नेह॥
संसारन की का चली, जिन्हकैं भेद अछेह॥ ७ ॥
अरु लावत नारीन सौं, पुरष प्रीत या भाय॥
जइसै अलिकौं फूल सौं, नैह अलप दरसाय॥ ८ ॥
निरधन पुरषहिं ज्यौं तजत, बैस्यां बेपरवाह॥
अरु राजा असमरथ कौं, तजंत प्रजा बिनु चाह॥ ९ ॥
ज्यौं सिषहिं बिद्या पढि चुकै, तब गुरु कौ तजि दैत॥
दछिना लहि जजमांन कौं, द्विज छौडत बिनु हैत॥ १० ॥
फल न हौहिं जबै बृछ कौं, पंछी छौडि सुजात॥
भोजन करिकैं ग्रिहस्थ ग्रिह, अतिथि तजत अग्यात॥ ११ ॥

अगनि लगै बनमांहिं जब, मृग बन तजत निदांनि॥
जइसै हम्हकौं तजि गयै, कृस्न कपट की षांनि॥ १२॥
अैसै गौपिन कौं सदा, मन रहि हरि मैं लीन॥
छौडि दियै ग्रिह काज सब, लषि हरि दूत नवीन॥ १३॥
बालक बय जु किसौर बय, तिनमैं कियै जु कर्म॥
तिन्हकौं सुधि करिकरि सदा, गावत गौपी मर्म॥ १४॥
किहूँ तिय लष्यौ कि करत है, सांमुहे अलि गुंजार॥
जांनि दूत श्रीकृस्नं कौं, बौली रिस अनुसार॥ १५॥

॥ गोप्युवाच॥

फिरि किहुँ पायन परि भ्रमर, गुंजत जु सहज सुभाय॥
ताहि दैषि बौलत भई, कौ गौपी अनषाय॥ १६॥
हे कपटी कैं बंधु अलि, लागि हम्हारे पाय॥
हम्हकौं अबै मनांय मति, करै कुटिल दुषदाय॥ १७॥
मथुरा की मांनिनि तियनि, बेगि मनावहुं जाय॥
राज सभा मधि उन्हहिं की, ह्वै हांसी अधिकाय॥ १८॥
मुष पियरौ लषि भ्रमर कौं, कौ बौली यौं बैंन॥
तू आयौ दिषवन हम्हहिं, जांनी हम्ह सु सुषैंन॥ १९॥
मथुरा की नारीन की, कुच कुंकुम सुषदाय॥
मिल तैं हरि बनमाल मैं, लागी रही सुभाय॥ २०॥
बैठ्यौ जिहँ बनमाल पैं, तू सुगंध बस हौय॥
तातैं तौ मुष जरद है, भैदि लष्यौ हम्ह सौय॥ २१॥
अधर सुधा निज कृस्न जू, प्याय परम सुषदाय॥
छौडि गयै अब हम्हहिं ज्यौं, तू फूलनि तजि जाय॥ २२॥
झूठी मीठी कृस्न की, सुनि सुनि बात सुढार॥
भौंरी लछमी उन्ह चरन, सेवत है निरधार॥ २३॥
हम्ह लछमी सी नांहिंनैं, हैं बृज भांम सुजांन॥
ठग बिद्या जु श्रीकृस्न की, लीनी हैं पहचांन॥ २४॥
अलि गुंजत है सहज मैं, तिय जांनी इह दूत॥
गावत तू परसन करन, कृस्नं चरित अदभूत॥ २५॥
ताहिं कहति हरि कैं चरित, क्यूं गावत हम्ह पास॥
हम्ह तौ जांनत हैं सबै, जो उन्ह कियै बिलास॥ २६॥
भई नई प्यारी अबैं, हरि की मथुरा मांहिं॥
तिन्हकौं जाय सुनाइयैं, कृस्न चरित जु अथांहिं॥ २७॥
तौ मनोर्थ बै करहिंगी, पूरन भलैं प्रकार॥
हम्ह तौ अपनैं गैह तजि, बैठी हैं निरधार॥ २८॥

जिनकौं सुंदर हास अरु, भौंह बिलास सुठौंनु॥
ऐसै कृस्नहिं जगत बिच, दुर्लभ अस्त्री कौंनु॥ २९॥
लछमीहूं जिन कैं चरन, सैवत हैं चितलाय॥
जिन्हैं हम्हारि गिनती का, प्रतछि परत दरसाय॥ ३०॥
अैं दीनन परि करत जो, क्रिपा भाव अनुसार॥
उत्तम श्लोक कहावही, जास नांम निरधार॥ ३१॥
सोइ नांम श्रीकृस्नं कौ, सुनियत हैं बिषयात॥
तातैं कबहुँ दया करैं, तो कहियौ यौं बात॥ ३२॥
भौरां नारी पगन परि, जब बैठत भौ जाय॥
तिहँ लषि बौली हे कुटिल, तू मति छुय हम्ह पाय॥ ३३॥
हम्ह जांनत हैं तू चतुर, है मनायवै मांहिं॥
हम्ह तैं तेरी बात कछु, कबहुँ छिपी है नांहिं॥ ३४॥
इहै लौक परलौक सुत, पति पितु माता भ्रात॥
तजै कृस्न जू कैं लियै, बृज बिष्यात या बात॥ ३५॥
अरु बै हम्हकौं तजि गयै, झूठी बात बनाय॥
तातैं तौ जुत कृस्न कौं, हम्हहिं बिस्वास न आय॥ ३६॥
धर्यौ हुतौ श्रीकृस्नं जू, पहल रांम अवतार॥
तहि समैं की बात सुनि, हम्ह डरपत निरधार॥ ३७॥
बली कपि अपराध बिनु, मार्यौ रांम रिसाय॥
अरु सिय कौं बिनु चूकहीं, बनकौं दई पठाय॥ ३८॥
सूर्पनषा आई हुती, करिबै प्रीति उमांहिं॥
काटि नाक अरु कान दुहु, उलटि पठाई तांहिं॥ ३९॥
अरु वांवन अवतार धरि, छलि लिय बलि कौ राज॥
फिरि वां बपुरै बलि नृपहिं, बांध्यौ बिनहीं काज॥ ४०॥
ज्यौं बालक कर तैं लड्डू, कउवा लैत छिनाय॥
पुनि वां सिर मैं चूंच सौं, टौंच चौट दै जाय॥ ४१॥
चरित जास भगवांन कैं, सु निश्चै सुधा समांन॥
कनका मात्रहुँ सुनत जिहँ, सुष दुष नांहिं निदांन॥ ४२॥
करत कुटंब बिलाप तउ, बै छौडत उन्ह साथ॥
भीष मांगि कैं षात पैं, रहत न बिनु हरि गाथ॥ ४३॥
तातैं हम्हहूं सौं कथा, छुटत कृस्न की नांहिं॥
तजि कैं ग्रिह ब्यौहार मन, राषत उन्हहीं मांहिं॥ ४४॥
जइसै हिरनी मुहित ह्वै, सुनत बधिक कौ राग॥
पाछै बहि पछता रही, सौ दुष सहत अथाग॥ ४५॥

ऐसै हम्हहुँ मुहित भई, सुनि सुनि हरि कैं बैंन॥
झूठ बौलि बैं कपट सूं, गयै कंवल दल नैंन॥ ४६ ॥
बिरह बिथा सौं अति बिकल, हम्ह तरफत या ठौर॥
तातैं उन्हकी बात मति, कहौ कहौ कछु और॥ ४७ ॥
दूरि जाय अलि फिरि निकट, आयौ लषि बृज भांम॥
कहत भई हे सांम कैं, सषा बुद्धि अभिरांम॥ ४८ ॥
प्रिय कौं पठ्यौ फैरि तू, आयौ है हम्ह पास॥
जो मांगै सौं दैहिं अब, निश्चै सहित हुलास॥ ४९ ॥
तू हम्हकौं लै जायगौ, पिय पैं कौंनुँ प्रकार॥
बै तो बहु नायक प्रगट, राषत किहुँ न सम्हार॥ ५० ॥
गुरुकुल तैं पढिकैं बिद्या, आयै मथुरा मांहिं॥
मात पिता रु सषांन की, सुधि किहुँ करत कि नांहिं॥ ५१ ॥
बात चलावत है कि नहिं, कबहुँ हम्हारी कृस्नं॥
कंध हम्हारै परि भुजा, कब धरिहैं ह्वै प्रस्नं॥ ५२ ॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि श्रीकृस्न कैं, दरसन की दिन रैंन॥
लागि रही है लालसा, जिन्हकैं सदा सुषैंन॥ ५३ ॥
ऐसी गौपिन दैषि कैं, पिय संदेस अनुभाय॥
समाधांन करि यौं कहै, उद्धव बचन सुनाय॥ ५४ ॥

॥ उद्धव उवाच॥

धन्य धन्य हे गौपिका, तुम्हहिं पुज्य बिनु झैर॥
हौहिं कृतारथ लौक सब, तामैं हैर न फैर॥ ५५ ॥
बासुदैव भगवांन प्रभु, सुंदर कृस्नं कुमार॥
जिन्हमैं ऐसौ है लग्यौ, तुम्हरौ मन निरधार॥ ५६ ॥
दांन बरत तप हौम जप, संजम पढनौ बेद॥
इन्ह बातन जुत पुन्य बहु, करियै सहि अति षेद॥ ५७ ॥
तब उपजत श्रीकृस्नं सौं, पूरन भगति सुढार॥
नहिं तौ दुर्ल्लभ बस्तू इहि, क़ौ पावत निरधार॥ ५८ ॥
उत्तम भगति सौ कृस्न सौं, तुम्ह तिय करत सुजांन॥
मुनिनहूं कौं दुर्ल्लभ महा, ऐसी भगति निदांन॥ ५९ ॥
सुत पितु ग्रिह निज अपनपौं, परहरि भलैं प्रकार॥
तुम्ह कीनौं श्रीकृस्न सौं, आस्त्रय अति सुषसार॥ ६० ॥
बड्डे तुम्हारै भाग्य हैं, बेद रिच्या ब्रजभांम॥
हरि सौं भक्ति सदा रहत, तुम्ह हिय मैं अभिरांम॥ ६१ ॥

जामैं तुम्हकौं हौहिं सुष, अैसौ पिय संदेस॥
म्हैं ल्यायौहूं सौ सुनौ, दैहुँ बिरह दुष षेस॥ ६२॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

कह्यौ कृस्न जू तुम्हहिं यौं, म्हैं व्यापक सब ठौर॥
मो बियोग लहिहौ नांहिं, तातैं तुम्ह किहुँ तौर॥ ६३॥
बसत पंच महाभूत ज्यौं, प्रांनिन कैं तन मध्य॥
तौ मन इंद्री प्रांन बुद्धि, गुन बिच मैं जु प्रसध्य॥ ६४॥
म्हैं निज माया करि बउत, धरत आपहीं रूप॥
उतपति पालन प्रलैं करि, न्यारौ रहत अनूप॥ ६५॥
आत्म रूप मैं ग्यांनमय, सुद्ध सदा अविकार॥
सब तैं न्यारौ रहत अरु, सबही मधि निरधार॥ ६६॥
सैंन जागनौ स्वप्न अैं, प्रगट अवसथा तीन॥
माया करिकैं हौत तिहँ, साछी आत्म सरीन॥ ६७॥
बिस्व प्राग तैजस तिहूं, अैं आत्मा कैं नांम॥
हौत अवसथा तीन मधि, आदि अंत लौं ठांम॥ ६८॥
झूठे इंद्रिन कैं विषै, मनु जु धरत हैं ध्यांन॥
तातैं रोकै मनहिं तब, लैं आत्महिं पहिचांन॥ ६९॥
इहि ग्यांन कैं काज जन, ग्यांनी सब कछु त्यागि॥
आछी बिधि साधत तपहिं, बै कानन मैं जागि॥ ७०॥
दूरि बसतहूँ तुम्हहिं तैं, बढवन म्हेरौ ध्यांन॥
बिरह भयै लागत बउत, मन प्रिय मध्य निदांन॥ ७१॥
बिछुरै तैं तिय मन लगै, जइसै निज पिय मांहिं॥
तइसै इकठै रहन मैं, नहिंन बढत हैं चांहिं॥ ७२॥
म्हेरौ सुमरन करहुँगी, मोमैं निज मन लाय॥
तौ थोरैहीं दिनन मैं, मुहि मिलि हौं सुषपाय॥ ७३॥
रास समैं जें गोपिका, राषी ही पति रौकि॥
तैं पहिलैं हरि मैं मिली, धारि ध्यांन अवलौकि॥ ७४॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि श्रीकृस्न कैं, सुनि संदेस या भाय॥
बौली उद्धव सौं तिया, सावधांनता पाय॥ ७५॥

॥ गोप्य ऊचुः॥

दैत रह्यौ दुष जादवनि, जो मार्यौ नृप कंस॥
हरि कीनौं कारिज भलौ, बंधुन मिलै प्रसंस॥ ७६॥
पूर्न मनोरथ सबन कैं, कीनैं भलैं प्रकार॥
अब बै हैं कुसलात सौं, जु सुंदर कृस्नं कुमार॥ ७७॥

मथुरा की नारीन कैं, लषि बिलास अनपार॥
मोहित भयै कि नांहिं वै, कंवल नैंन करतार॥ ७८॥
मृदु मुसकानि कटाछि सौं, वै श्रीकृस्न उमांहिं॥
मथुरा की नारीन कौं, प्रसंन करत कैं नांहिं॥ ७९॥
अरु मथुरा की तियन मैं, बैठि सांम जुत चांहिं॥
बातैं करत अनैक बिधि, जें उपजत मन मांहिं॥ ८०॥
तब गवारननिन की कबहुँ, बातैं करती बार॥
बात हम्हारी करत हैं, कैं कछु नांहिं बिचार॥ ८१॥
कुमुद कुंद रहै फूल जहँ, ससि कौ बिमल प्रकास॥
अैसौ बृंदाबन सुभग, बैकुंठ न सम जास॥ ८२॥
अदभुत लीला रास सुष, करत रहै ता मांहिं॥
बै निस कबहूं कृस्न जू, सुरति करत कैं नांहिं॥ ८३॥
उन्हकैं बिरह संताप सौं, हम्ह दुष सहित अथांहि॥
बै दरसन देहैं कि नहिं, कबहुँ आइ या ठांहिं॥ ८४॥
ज्यौं बन कौं सीतल करत, बरषि मैघ जलधार॥
त्यौं सीतल करिहैं कि नहिं, हम्हकौं कृस्न कुमार॥ ८५॥
अब काहै कौं आय हैं, बृज मैं सुंदर सांम॥
राज लह्यौ कंसहिं हत्यौ, पायौ सुष वां ठांम॥ ८६॥
सुता बड्डे राजांन की, अब ब्याहैंगै कृस्नं॥
चहिहै काहै कौं हम्हैं, उन्हसौं रहिहैं प्रस्नं॥ ८७॥
यौं कह्यौ बैस्यां पिंगला, रषियै आसा नांहिं॥
प्रगट हौत है सुष बड्डौ, अन आसाहीं मांहिं॥ ८८॥
तऊ हम्हारैहिं चित्त की, नहिं छूटत है आस॥
लागि रही है निस दिवस, हरि दरसन की प्यास॥ ८९॥
बात कृस्न की करन कौं, किहुँ कौं मन नहिं हौत॥
रमा बसत जिन अंग मैं, उन्हहिंन चाह उदौत॥ ९०॥
जमुना गिर बन ठौर गौ, चारत बजवत बैंन॥
अग्रज जुत लीला सुषद, कीनी पंकज नैंन॥ ९१॥
बृज मैं हरिकैं चरन कै, चिह्न निहारि निहारि॥
उन्हकी सुधि भूलत नाहिं, हम्ह कबहूं निरधारि॥ ९२॥
हरि की हासि कटाछि गति, चितवनि मीठै बैंन॥
इन्हसौं हम्ह मौहित भई, बिसरै तिहैं बनैंन॥ ९३॥
अहौ नाथ जदुनाथ तुम्ह, दुष कैं टारनहार॥
बृज बूड्यौ दुष सिंधु मैं, जासू करौ उद्धार॥ ९४॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि श्रीकृस्न कैं, सुनि संदेस ब्रजनारि॥
कृस्नहिं आत्मा जांनिकैं, दियै संताप सुटारि॥ ९५॥
उद्धव की पूजा करी, मिलि सबही गौपीन॥
कितिक महीना बृज बसै, उद्धव परम प्रवीन॥ ९६॥
गाय कृस्न लीला ललित, टारि महा दुष दंद।।
दैत भयै गौपीन कौ, उद्धव अति आनंद॥ ९७॥
जितैक दिन बृज मैं बसे, उद्धव पूरन संत॥
छिन सम बीते बै दिवस, कृस्न चरित जु कहंत॥ ९८॥
गिरि कानन तरु जमुन तटि, दैषि ठौर सुष दैंन॥
उद्धव गावत हरि चरित, बृजबासिन दिय चैंन॥ ९९॥
बिरह बिकल गौपीन लषि, बोलै उद्धव बैंन॥
सफल जनम गौपीन सम, और किहू कौं हैंन॥ १००॥
ऐसौ है श्रीकृस्नं सौं, जिन्हकैं पूरन प्रेम॥
ता परि नौछावर कियै, कौटि कौटि जनमेम॥ १०१॥
हम्ह अरु रिषिगनहूं चहत, ऐसौ प्रेम सुढार॥
पै पावत है नांहिनैं, बिन प्रभु क्रिपा प्रकार॥ १०२॥
जिन्हकैं हैं श्रीकृस्नं सौं, सदा प्रेम निरधार॥
तिन्हहीं कौ उत्तम जु जनम, कहियत बिच संसार॥ १०३॥
ऐं गौपी बनबासनी, कहियतु तिया गवार॥
तिन्हकौं कहँ श्रीकृस्नं कौं, ऐसौ प्रेम अपार॥ १०४॥
पै कछु उच्च अरु नीच कौ, भेद ना हरि चित मांहिं॥
जौ कौ पावै सरन तिहँ, है कल्यांन सदांहिं॥ १०५॥
जइसै अमृत कौ कौऊ, पीवै किहूं प्रकार॥
छूटि काल भय अमर ह्वै, सुष पावै निरधार॥ १०६॥
जइसी लछमी परि क्रिपा, करी न कृस्न क्रिपाल॥
तइसी इन्ह गौपीन परि, कीनी क्रिपा रसाल॥ १०७॥
गुल्म औषधी तरु लता, या बृंदावन मांहिं॥
जौ म्हैं कबहूं हौहुं निज, पुन्य प्रगटि अधिकांहिं॥ १०८॥
तब म्हैरै ऊपरि परै, गौपिन की पद रैंन॥
धन्य भाग मानौं जबैं, पाय मुक्ति सुष दैंन॥ १०९॥
जें कुटंब कुल मार्ग तजि, गौपी परम पुनीत॥
सैवत है श्रीकृस्नं कौं, धरै अधिक उर प्रीत॥ ११०॥
पूजत है श्रीकृस्नं कैं, चरन रमा जोगैस॥
जिन्ह चरनन कौं निज हिर्दै, राषत गौपि सुदेस॥ १११॥

गौपिन की पद रैंन कौ, हौं जु करत परनांम॥
तिहुँ पुरहिं करत पवित्र जे, गाय गाय गुन स्यांम॥ ११२॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि बृजराय बृज, रानी गौपी ग्वार॥
इन्ह आग्या लहि चलन कौं, उद्धव हुव रथ स्वार॥ ११३॥
सब गौपन जुत नंद जू, बिबिधि भैंट लै आय॥
उद्धव सौं बिछरत भयै, नैंन सजल हित छाय॥ ११४॥
आदि नंद जू गौप सब, कह्यौ हम्हारौ चित्त॥
रहौ कृस्न पद कमल मैं, थिर जु हौंहिं कैं नित्त॥ ११५॥
बांनी गावौ उन्हहिं गुन, करौ सीस परिनांम॥
ध्यांन बैंहि श्रीकृस्न कौं, बसौ हिर्दै अभिरांम॥ ११६॥
किहूं जनम मैं पुन्य हम्ह, कियौ हौहिं सुभ रीति॥
ताकौ फल इहि चहत हैं, रहौ कृस्न सौं प्रीति॥ ११७॥
यौं आदर सौं किय बिदा, उद्धव कौ सब गौप॥
उद्धव पहुँचै मधुपुरी, हद गौकुल की लौप॥ ११८॥
दरसन करि श्रीकृस्न कौ, करत भयै परिनांम॥
बृजबासिन कैं प्रेम कौं, बरनन किय अभिरांम॥ ११९॥
उग्रसैंन बसुदैव बलि, दैव तिहुँन ब्रजराय॥
भैंट दईही सौ कछू, दिय उद्धव जू ल्याय॥ १२०॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते सप्तचत्वारिंसोऽध्यायः ॥ ४७॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अष्टचत्वारिंसोऽध्यायः ॥

(भगवान श्रीकृष्ण का कुब्जा और अक्रूरजी के घर जाना)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि हरि सबन की, ईछा जांननहार॥
कांम बिकल अति कूबरी, उहि घर गयै मुरार॥ १॥
बिबिधि भांत रचना जांह, आसन सैज सुढार॥
मौतिन की झालरि सहित, चंदवा तनि रहि द्वार॥ २॥
ह्वैहिं उद्दीपन कांम कौ, जिनी चित्रनि कौं दैषि॥
अैंसै चित्र जू हास्य कैं, जिहिं ठां लषै अलैषि॥ ३॥

उठि ठाढी भइ कूबरी, आवत लषि श्रीकृस्नं॥
पाय परम आनंद चित्त, हौत भई अति प्रस्नं॥४॥
करत भई आदर बउत, आसन दियौ बिछाय॥
संगहिं उद्धव तिनहुँ कौं, किय आदर अधिकाय॥५॥
पलिंका परि बैठै प्रभू, दिषवत लौकिक रीति॥
सांमुह बैठै भूमि पैं, उद्धव परम पुनीति॥६॥
करि सिनांन भूषन बसन, पहरि सुगंध लगाय॥
सुमन माल उर धारिकैं, चाबत पान सुभाय॥७॥
आसव पिय लज्जा सहित, करत कटाछि अपार॥
आवत भइ श्रीकृस्नं पैं, लांगि बान उर मार॥८॥
जिहँ कर गहि श्रीकृस्न जू, पलिंका परि बैठाय॥
करत भयै संभोग सुष, निज ईछा अनुभाय॥९॥
चंदन सुभग सुगंधमय, लायौ प्रभु कैं अंग॥
फल पायौ वा पुन्य कौं, कुबजा इछा उमंग॥१०॥
कामातुर तिय कृस्न कैं, चरन हिर्दै निज लाय॥
अपनौं दुष संताप सब, कुबजा दियौ मिटाय॥११॥
दाता दुर्लभ मुक्ति कैं, श्री ब्रजराज कुमार॥
जिन्हकौं दरसन पाइ हैं, बड्डे पुन्य अनुसार॥१२॥
तिन्ह पैं मूरष कूबरी, भाग्यहीन करी ध्यांन॥
अैसौ बर मांगत भई, बसि मनोज तजि ग्यांन॥१३॥
करि मनोर्थ पूरन सबै, कुबज्या कैं श्रीकृस्नं॥
उद्धव जुत आवत भयै, अपनैं धांम सप्रस्नं॥१४॥
दाता सब बर सुषद कैं, पूरन ब्रह्म अगाधि॥
बिषै भोग मांगत भई, जिनप्रभु कौ आराधि॥१५॥
अैसी अति मति हीन ही, कुबज्या मूरष नारि॥
मांग्यौ नहिं हरि भगति सुष, ताहि कौटि धिक्कारि॥१६॥
करन अक्रूरहि प्रसंन फिरि, औरहुँ कारिज हेत॥
प्रभू गवनै अक्रूर ग्रिह, उद्धव अग्रज समेत॥१७॥
इन्हकौं आवत दैषिकैं, प्रसंन हौंहिं अक्रूर॥
उठि ठाढै ह्वै सांमुहै, आय मिलै हित पूर॥१८॥
आसन दै परिनांम करि, किय पूजा अधिकाय॥
वंदन किय इन्ह तिहुँनहू, अक्रूर हीं हित छाय॥१९॥
रांम सांम की चरन रज, धरि अक्रूर निज सीस॥
बड्डै भाग मांनत भयै, अपनैं बिसबाबीस॥२०॥

चरन कमल श्रीकृस्न कैं, धरि निज गौद अक्रूर॥
बोलै भ्रात दुहूंन सौं, बचन प्रेम परिपूर॥ २१॥
दुष्ट कंस कौं मारि तुम्ह, हे श्रीकृस्नं कुमार॥
महा कष्ट तैं किय भलैं, निज कुलहिं कौं उद्धार॥ २२॥
प्रकृति पुरुष कैं रूप दुहु, तुम्हहीं हौ करतार॥
तुम्हहीं कारन जगत कै, तुम्ह बिनु कछु न प्रकार॥ २३॥
तुम्हही जगत श्रिज्यौ सकल, माया गुन अनुभाय॥
तुम्हही तामैं पैठि बहु, रूप परत दरसाय॥ २४॥
पंचभूत बहु रूप ज्यौं, दीसि परत सब ठांम॥
त्यौंही दिषाइ दैत बहु, तुम्हरै रूप रु नांम॥ २५॥
उपज प्रलै पालन करत, तुम्ह तिहुँ गुननि प्रकार॥
ग्यांन आतमा आप हौ, तुम्हहिं न बंधन भार॥ २६॥
देहादिक झूठै लगै, जीवहि बंधन नांहिं॥
तौ कांह बंधन तुम्हहिं पैं, मांनत मूर्ष सदांहिं॥ २७॥
प्रगट कियौ तुम्ह बेद मग, पाषंडी जन तांहिं॥
मैटत है जब धरत हौ, तुम्ह अवतार सचांहिं॥ २८॥
प्रगटै अब बसुदैव ग्रिह, दूरि करन भुवभार॥
असुर नृपति की सैंन हति, करिहौ जस बिसतार॥ २९॥
पितर देवता अंग हैं, जिन प्रभु कै निरधार॥
तिन्ह पद रज सब जक्त कौ, करत पवित्र सुढार॥ ३०॥
सौ तुम्ह आयै धांम मो, हे स्वामी सुषदाय॥
आजि हम्हारै गेह कै, बड्डे भाग्य दरसाय॥ ३१॥
तुम्ह भक्तन कैं प्रिय सुहृद, हौ कृतग्य सत्य वाक्य॥
तुम्ह कौं तजि पंडित कहूं, जाय न सरनहि ताक्य॥ ३२॥
सकल कांमना कैं प्रगट, तुम्ह दाता भगवांन॥
सदा अैक सै रहत हौ, आप भलैं उनमांन॥ ३३॥
इंद्रादिक जोगैस्वरहूं, तुम्ह गति जांनत नांहिं॥
जिन्ह दरसन हम्ह भाग्य तैं, करि निज हिदौं सिरांहिं॥ ३४॥
तिय सुत धन ग्रिह बंधुतन, मधि हम्ह बंधि रहि कूर॥
सौ इहि माया काटियै, अबैं क्रिपा करि पूर॥ ३५॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि अक्रूर जबै, असतुति करि या भाय॥
तब हसि मौहित करन प्रभु, बोलै बचन सुनाय॥ ३६॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

तुम्ह काका गुरुबंधु मम, हम्ह तुम्ह पुत्रहि समांन॥
पात्र तुम्हारी दया कै, पालन जोग्य निदांन॥ ३७॥

पूज्य सबन कैं हौ सही, तुम्हसै साधु सुजांन॥
सुर स्वारथ के हैं सगै, साधु सुकरन कल्यांन॥ ३८॥
जल सरूप तीरथ नाहिं, सिला रूप सुर नांहिं॥
तीरथ रूप सुर रूपहिं, साधु प्रगट जग मांहिं॥ ३९॥
तीर्थ देवता करत दिन, बउतकि मांहिं पवित्र॥
करत पवित्र सुदेत ही जु, दरसन बैस्नव मित्र॥ ४०॥
तातैं तुम्ह पांडवन की, सुधि लैबै कैं काज॥
जाहुँ हस्तनापुर अबै, दैषहुँ कौरव राज॥ ४१॥
पाछै राजा पंडु कैं, कुंती सुतनि समैत॥
लै आयौ पुर हस्तना, धृतराष्ट्र बिनु हैत॥ ४२॥
दुर्जोधन जु कैं नेह बसि, धृतराष्ट्र नृप अंध॥
ह्वै है नहिं राषत भलै, उन्हकौं किहूं प्रबंध॥ ४३॥
तातैं तुम्ह पांडवन कैं, समाचार लैं आहुँ॥
पाछै ह्वै पांडवनि सुष, करिहौं सोइ निबाहुँ॥ ४४॥
यौं आग्यां श्रीकृस्नं जू, दै कैं सुंदर सांम॥
अग्रज अरु उद्धव सहित, आयै अपनैं धांम॥ ४५॥

(इति श्री भागवते महापुरांणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अष्टचत्वारिंसोऽध्यायः ॥ ४८ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ ऐकोनपंचासत्तमोऽध्यायः ॥

(श्री अक्रूर जी का हस्तिनापुर गमन)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा – सुक जु कहत कि अक्रूर जू, पुर हस्तना मैं जाय॥
धृतराष्ट्र भीषम बिदुर, इन्हकौं लषै सुभाय॥ १॥
द्रौण कृपाचारिज करन, दुरजोधन मति हीन॥
अस्वत्थामा सोमदत्त, अरु बाह्लीक प्रवीन॥ २॥
ऐहुँ लषै अक्रूर सबै, पुर हस्तना सु ठांहिं॥
कुसल प्रसंन परनांम हुव, मिलिं मिलि आपस मांहिं॥ ३॥
दुरजोधन जिहिं पुत्रहिं है, दुष्टन संगी जु ष्वार॥
ऐसै नृप धृतराष्ट्र कैं, दैषन चरित बिचार॥ ४॥

कितिक मास पुर हस्तना, बसत भयै जु अक्रूर ॥
मिलै पांडवन सौ तांह, दुहु दिसि प्रीति सपूर ॥ ५ ॥
सस्त्र बिद्या मैं श्रेष्ठता, पराक्रम रु परताप ॥
लषि न सकैं पांडवन कौं, कौरव सत्रु निरुपाय ॥ ६ ॥
सकल प्रजा पांडवन कौ, चाहत प्रीति प्रभाय ॥
तातैं दीनौ भीम कौं, बिष कौरवनि अन्याय ॥ ७ ॥
कुंती जू अरु बिदुर जू, पहली ऐसी बात ॥
कहत जु भयै अक्रूर सौं, सहै जितै उतपात ॥ ८ ॥
कुंती भ्रात अक्रूर सौं, मिलि रोवत कहि बैंन ॥
मात पिता भ्राता कबहुँ, मो सुधि करतकि हैंन ॥ ९ ॥
सरनागति पालन समर्थ, भगत बछल सुष सार ॥
ऐसै सुत मो भ्रात कैं, बलि अरु कृस्न उदार ॥ १० ॥
बै दुहुं सुधि पांडवन की, कबहुँ करत कैं नांहिं ॥
सषी रु अस्त्री जात की, राषत है कछु चांहिं ॥ ११ ॥
म्हैं सत्रुन कैं बीचि परी, सहत दुष्ष अनपार ॥
ज्यौं हिरनी ल्यालीन मैं, कंपित बिना करार ॥ १२ ॥
निराधार मो पुत्रहिं अैं, पांचौ पिता बिहीन ॥
समाधान तिनकौं कबैं, करिहैं कृस्नं प्रवीन ॥ १३ ॥
कृस्न कृस्न हे कृस्न महा, जोगी परम पुनीत ॥
आत्मा पालक जगत कैं, दीन धरम कैं मीत ॥ १४ ॥
बउत दुषी म्हैं सुतनि जुत, सरनागत हौं दीन ॥
रिछया करहुं क्रिपाल मो, मैं तुम्ह आस्त्रय लीन ॥ १५ ॥
जै डरपत संसार तैं, जिन्हैं मुक्ति सुष दैंन ॥
चरन कमल हैं रावरै, कृस्नं कमलदल नैंन ॥ १६ ॥
सुद्ध ब्रह्म परमातमा, जोग रूप जोगैस ॥
म्हैं आई हौं तुव सरन, करन प्रनांम ब्रजैस ॥ १७ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि श्रीकृस्न की, सुधि करि करि या भाय ॥
कुंती जू रौवत भई, महा दुषित बिललाय ॥ १८ ॥
कुंती करत बिलाप लषि, महादया अनुसार ॥
बिदुर अक्रूरहुं कौं भयौ, महा दुष्ष वां बार ॥ १९ ॥
कुंती सौं कहते भयै, तौ सुत देवनि अंस ॥
मारैंगै कौरवन कौं, करिकैं जुद्ध प्रसंस ॥ २० ॥
जिन सुत कैं आधीन जो, धृतराष्ट्र अवनेस ॥
चलत समैं अक्रूरहिं तिहँ, प्रभु कैं कहै संदेस ॥ २१ ॥

॥ अक्रूर उवाच ॥

हे धृतराष्ट्र जु तुम्ह बड्डे, नृपति बीचि संसार॥
आछै या कुरुवंस की, कीर्त बढावन हार॥ २२॥
करि प्रिथवी की पालनां, महाधरम अनुसार॥
सकल प्रजा कौं राषिकैं, राजी भलैं प्रकार॥ २३॥
सकल ठौर बुधि अैकसी, जो राषौगे आप॥
तौ कीरति कल्यांन सुष, पैहौं प्रगट अमाप॥ २४॥
नहिंतौ जैंहौ नरक तुम्ह, तामैं हेर न फेर॥
प्रांनी धरम बिचार बिनु, सुष न लहै किहुँ बेर॥ २५॥
तातैं तुम्ह पांडवन अरु, निज पुत्रनिनि इकसार॥
गनिहौं तौ ह्वै हैं भलौ, जग मैं जस बिसतार॥ २६॥
हे नृप सदा सरीर इहि, रहत नांहिं ठहराय॥
तौ तिय सुत कां तैं रहै, सदा अैकसै भाय॥ २७॥
इहे आप उपजत मरत, इकलौं हीं बहु बार॥
पुन्य पाप कौं करत है, भोग अनैक प्रकार॥ २८॥
अति अधरम करिकैं इहै, जौरत द्रब्य अपार॥
षाय जात है कुटंब कैं, याकैं मुष दै छार॥ २९॥
करि बहु भांत अधरमहूं, इहै जीव अग्यांन॥
पालन सुतधन प्रांन कौं, करत भलैं उनमांन॥ ३०॥
पुनि इहि ह्वै असमरथ जब, छौडि दैत सब याहि॥
याकौं बोल्यौ बचनहूं, नहिंन सुहावत काहि॥ ३१॥
बिमुष आपनैं धरम तैं, अरु छौड्यौ सबहीन॥
प्राप्त हौत है नरक कौं, अैसौ इहि जिव दीन॥ ३२॥
तातैं स्वप्न समांन अरु, प्रकृति मनोर्थ समांन॥
झूठौ है इह जगत सब, निश्चै मांनि निदांन॥ ३३॥
इहै समझि कैं सबन मैं, राषहुँ बुद्धि समांन॥
तो परलौक रु लौक या, मधि ह्वै हैं कल्यांन॥ ३४॥

॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥

धृतराष्ट्र बौलत भयौ, सुनिअैहौ जु अक्रूर॥
बचन तुम्हारै सुधा सम, म्हैं न नृपतिहूं पूर॥ ३५॥
तौहूं चंचल मो हिर्दौ, लगि पुत्रननि सौं नेह॥
तातैं बढि अग्यांन मुहि, नहिंन ग्यांन अवरेह॥ ३६॥

बचन तुम्हारै मो हिर्दै, सथिर हौत है नांहिं॥
ज्यौं बिजुरी नहिं हौत है, सथिर कबहुँ किहुँ ठांहिं॥ ३७॥
जो ईछा ईस्वर चहै, मैटि सकैं तिहुँ कौनुँ॥
दूरि करन भुवभार अब, प्रगटै कृस्न सुठौनुँ॥ ३८॥
उन्हहीं की दीनी भई, प्रगट अहै बुधि मोहि॥
म्हैरौ बस कछु नांहिंनैं, इछा ईस्वर अरोहि॥ ३९॥
जाकी गति जांनि न परत, ऐसी प्रकृति सजौर॥
सौ जीवनि मोहित करत, दीरघ सक्ति अकौर॥ ४०॥
न्यारै बिहरत आप प्रभु, है बैहिं गति संसार॥
ऐसै प्रभुहि प्रनांम है, मन बच बारंबार॥ ४१॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि धृतराष्ट्र कैं, ऐसैं सुनि कैं बैंन॥
मथुरा पुरहिं अक्रूर जू, आवत भयै सुषैंन॥ ४२॥
जाहिं काजै अक्रूर कौ, पठ्यौ हौ भगवांन॥
तैं चरित्र धृतराष्ट्र कैं, कियै अक्रूर बषांन॥ ४३॥
रांम सांम भ्राता दुहुँनि, सुनैं भलैं अनुसार॥
दया धरी पांडवन की, प्रभु निज चित निरधार॥ ४४॥
जिन्हकैं चिंतन मैं बसै, सकल सृष्टि संचार॥
बैहिं जांनत भूत भविष, श्रीकृस्नं जु करतार॥ ४५॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते ऐकोनपंचासत्तमोऽध्यायः ॥ ४९॥)

॥ इति दसम स्कंध - पूर्वार्द्ध संपूर्णम्॥

(पोथी को संवत् १८३४ वि. श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री)

(कुल छन्द ३०२२ - छंद योगक्रम - १३,३६७)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

***

॥ श्रीसर्वेश्वरोजयति ॥

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः॥

॥ दसम स्कंध - उत्तरार्द्ध ॥

॥ अथ पंचासत्तमोऽध्यायः ॥

(जरासंध से युद्ध तथा द्वारिका निर्माण)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - श्री सुक कहत कि कंस की, अस्तिः प्राप्ति द्वै भांम॥
कंस मरन सौं दुषि अति, हौय गई पितुधांम॥ १ ॥
जरासंधि की ही सुता, बै दोनौं बिषयात॥
जाय पिता सौं उन्ह कही, कंस मरन की बात॥ २ ॥
मरन कंस कौ सुनि बउत, दुषित भयौ मगधेस॥
बांधत भयौ श्रीकृस्न सौं, निज मन बैर बिसेस॥ ३ ॥
प्रतंग्या अैसी करत भौ, अधिक रौस उफनाय॥
करौं प्रिथी निरजादवी, निजभुज बल अनुभाय॥ ४ ॥
सैनां तैइस अषौहिनि, जरासंधि लै आय॥
घैरत भौ मथुरापुरी, गहर निसांन बजाय॥ ५ ॥
लषत भयै श्रीकृस्नं जू, जरासंधि की सैंन॥
मनौं समुद्र आयौ उलटि, बारपार तिहँ हैंन॥ ६ ॥
मथुरा कैं बासीन कौं, अति दुष हुव वां बार॥
कहत भयै हा कृस्न हा, कृस्न कृस्न करतार॥ ७ ॥
नरलीला दिषवति सबनि, कृस्न कुँवर करतार॥
समझि समैं अनुसार प्रभु, लागै करन बिचार॥ ८ ॥
जरासंध सैंना बउत, ल्यायौ धरि अभिमांन॥
दुष्टन कौं संघट इहै, बड भुव भारि निदांन॥ ९ ॥
तातैं इह सैनां सकल, चूर करूँ संघारि॥
अरु बेगहि मगधेस कौ, नांहिंन डारौं मारि॥ १० ॥
बेर बेर सैनां इहै, लावैंगौ जुध काज॥
तब उतरैंगो भार भुव, मरिहैं दुष्ट समाज॥ ११ ॥
साधुन की रछया करन, करन दुष्ट संघार॥
धार्यौ है या जगत बिच, हम्ह मानुष अवतार॥ १२ ॥
पुनि औरहुँ अवतार हम्ह, धारत बारंबार॥
करिबैं रछया धरम की, मैंटन पाप प्रकार॥ १३ ॥
अैसै करत बिचार प्रभु, नभ तैं ताहीं बार॥
द्वै सिंदन उतरत भयै, रवि सम तेज सुढार॥ १४ ॥

चक्र सुदरसन आदि सबै, आयुध सस्त्र संजूप॥
चतुर सारथीहूं सहित, सिंदन दुहू अनूप॥ १५॥
तिन्हकौं लषि श्रीकृस्न यौं, कहि अग्रज सूं बात॥
देषौ हे बलिदैव जू, बढ्यौ महा उतपात॥ १६॥
बडौ कष्ट या नगर पैं, आनि पर्यौ इहिं बार॥
तातैं रथ सस्त्रनि सहित, नभ तैं उतरि सुढार॥ १७॥
तिन्ह पैं चढि या सैंन कौं, अब कीजै संघार॥
अति दुष अपनैं जनन कौं, मैटहुँ भलैं प्रकार॥ १८॥
धार्यौ है याही लिअैं, प्रिथवी परि अवतार॥
तैइस अष्यौनि सैंन इहि, करि रहि भुव परिभार॥ १९॥
यौं बिचारि सु सन्नाह सझि, लै निज सस्त्र सुपांनि॥
रांम सांम उन्ह रथन पैं, ह्वै कैं स्वार सुजांनि॥ २०॥
मथुरा तैं बाहरि कढै, सैंन अलप लै संग॥
मनु निकसै कैहरि भभकि, बिचरन भूमि अभंग॥ २१॥
भुजा ठौंकि करते भयै, संषनाद श्रीकृस्नं॥
ताकौ सुनि कंपित भयै, सत्रुनि हिर्दै जु अप्रस्नं॥ २२॥
जरासंधि श्रीकृस्न सौं, कहत भयौ उहिं ठांहिं॥
तुम्ह बालक हौ कृस्न म्हैं, तुम्ह सौं लरिहौं नांहिं॥ २३॥
समता बिनु तुम्ह सौं लरत, मुहि आवत है लाजि॥
अपनौं जीव बचाइ कैं, जात रहौ कहुँ भाजि॥ २४॥
जरासंधि बलिदैव सूं, बोल्यौ अैसै बैंन॥
अहो रांम सरधा कछू, है जो तुम्हहिं सुषैंन॥ २५॥
तौ धीरज धरि रौपि पग, रचियै जुद्ध सछौह॥
कै म्हैं तुम्हकौं मारिहौं, कै तुम्ह हतिहौं मौह॥ २६॥
इहि सुनिकैं मगधेस सौं, बोलै कृस्नं कुमार॥
सूरबीर बकत न बउत, रे मतिमंद कुचार॥ २७॥
तैरी मृत्यु नजीक अब, आई है निरधार॥
तातैं तेरौ बचन हम्ह, नहिं मांनत या बार॥ २८॥
जरासंधि चतुरंगिनी, लै निज सैंन अथांहिं॥
रांम सांम दुहु भ्रातकौं, घैरत भौ रन ठांहिं॥ २९॥
ज्यौं बादर सौं पवन अरु, रज सौं रवि ढापि जात॥
त्यौंहिं चमू घिरि दीसत न, रांम सांम दुहुँ भ्रात॥ ३०॥
मथुरा की तिय घरन पैं, चढि दैषत संग्राम॥
मुषतैं सब यौं कहत जय, पावहूँ रांम रु सांम॥ ३१॥

जा ऊपरि सौभित ध्वुजा, अदभुत गरुडाकार॥
अैसौ रथ श्रीकृस्न कौं, अस्वन सहित सुढार॥३२॥
ताल बृच्छ चित्रति ध्वुजा, जिहिं ऊपरि फहरात॥
अैसौ श्री बलिदैव कौं, रथ सौभा उफनात॥३३॥
दुहु भ्रातन कैं रथ दुहूं, दीसि परै जब नांहिं॥
तब मथुरा पुर की तिया, बिकल भई मन मांहिं॥३४॥
बड़ी सैंन मगधेस की, गहरै मैघ समांनि॥
भुजा ठौर जादवनि पैं, बरषै अगनित बांनि॥३५॥
तातै अपनीं फौज कौं, ब्याकुल लषि करतार॥
अपनैं सारंग धनुष कौं, करत भये टंकार॥३६॥
तबै जदुसैंन प्रसंन ह्वै, उमगि करत भइ जुद्ध॥
सत्रु सैंन संघार कियै, धरि निज चित अति क्रुद्ध॥३७॥

(छंद त्रिभंगी)

मच्यौ जुद्ध पूरं, दुहूं दिसि सूरं,
बोलि करूरं, वक्कारं।
चमकै तर्वारं, बहै रक्त धारं,
पैठ हिंतारं, कट्टारं।
लग्गै भट्ट क्रुरं, महा अति सूरं,
वीर गरूरं, ल्लकारं।
भल्लै जुचिलकं, झिलमझलकं,
जोग्गिनि किलकं, दै तारं ॥ ३८ ॥
छूटै रन तीरं, पावै प्रण पीरं,
जे धरि धीरं, जुझारं।
गिर पहुमि पट्टं, गहि गहि चट्टं,
ह्वै लटं पट्टं, भट्टारं।
धरि धरि मुछं, ह्वै ह्वै गुछं,
कौपित तुछं, रत्तारं।
मथे रन मत्थं, भच भच सथं,
कर गहि रथं, फुट्टारं ॥ ३९ ॥
लट पकरं पछारं, अरि सिरझारं
सरं प्रहारं, बकि मारं।
तुट्टे गज दंतं, मनु बग पंतं,
छुट्टै रक्तं, अतिभारं।
चढै भट्टकछी, बाहै भल्ल बछी,

चलै जु अछी, घमकारं।
चलै रक्त भारं, मनु घन धारं,
तडत तर्वारं, अनंपारं ॥ ४० ॥
रूलै रूंड मूंडम, षंड तुंड सूंडम,
अगनित वितुडं, भुवि भारं।
सब भट करषै, सुर गन हरषै,
पोहपनि बरषै, अतिभारं।
जित बहि क्रिपांनं, वीर भीर वीरांनं,
अपछर रिझानं, लषि मारूं।
चलै तीछं तीरम, बनै बीर बीरम,
रनचंडी चीरम, अति चारूं ॥ ४१ ॥

(छंद बिराज)

धरै वीर धीरं। निज स्वामि भीरं।
हकारै वकारै। भलै सार झारै ॥ ४२ ॥
मुषं जैत बोलै। करं सस्त्र तोलै।
चलै तीर तीषै। अनैकं सरीषै ॥ ४३ ॥
चितं छौह छायै। सुभट्टं सुहायै।
लगै जुद्ध नेहं। सुधं भूलि देहं ॥ ४४ ॥
सरीरं सुसस्त्रं। लगै भेदि अस्त्रं।
झमा झंम षांगै। बहै हैं अथांगै ॥ ४५ ॥
लहै छाक छांकै। बड्डै सूर बांकै।
हसै ओक लोलै। अरी मांन तोलै ॥ ४६ ॥
सबै जादु बंसी। लियै सौभ हंसी।
हनैं सत्रु सैनं। जुद्धं जैत लैनं ॥ ४७ ॥
गिरै षेति सूरं। वरै रीझि हूरं।
गजं अस्व प्यादै। परै झूझि ज्यादै ॥ ४८ ॥
रथी भूमि लोटै। लगी सस्त्र चोटै।
भभं क्कंत घावं। घटं नीर भावं ॥ ४९ ॥
कटै भूमि सीसं। वकै मारि रीसं।
धडं षांग लीनैं। जुटै रौस भीनैं ॥ ५० ॥
बहै रक्त नारै। सरित्तं प्रकारै।
लुथं थट्ट भारै। मनू हैं करारै ॥ ५१ ॥
कटी बीर बाहैं। अही तैं अथाहैं।
करं रक्त मांही। मछं सौं लषांही ॥ ५२ ॥

कबंधं सुग्राहं।फरंकं छुवाहं।
कटै बड्डु सीसं।सही भौर दीसं॥५३॥
बहै सीस बालं।बही है सिवालं।
तिरै हैं धनूषं।तरंगं जु रूषं॥५४॥
त्रणं रूप सस्त्रं।लसै फैन बस्त्रं।
जलं जंतु तौरं।ग्रधं जास ठौरं॥५५॥
मनिं हार ठामं।जुगंनि सुभावं।
जरासंध सैनं।लुटी भूमि ऐनं॥५६॥
जयं रांम कृस्नं।बुलै जादु प्रस्नं।
भलौ सार वाज्यौ।जरासंध लाज्यौ॥५७॥
बलिं कृस्न भाई।जुधं जैत पाई।
बजै हैं निसांनं।जदू सैंन थानं॥५८॥
बलिं दैव क्कारं।मुसंलं प्रहारं।
अरी सैंन मारी।भली सौभ धारी॥५९॥
नदी रक्त भीनी।बहाई नवीनी।
चमू मध्य भूपं।बनी सिंघ रूपं॥६०॥
नहिं पार जांकौ।बड्डौ झुंड वांकौ।
प्रबू जक्त ईसं।बलिं कृस्नं रीसं॥६१॥
कर्यौ जुद्ध ऐसौ।कहै कौनुँ तैसो।
अरी सैंन जांसौ।कियौं स्वर्ग बासौ॥६२॥

दोहा – जें प्रभु जग पालन प्रलै, उतपति करत सुजांन॥
जा हरि की कितनीक इह, दीरघ बात निदांन॥६३॥
जरासंध की सैंन सब, मरी बीचि संग्राम॥
आपु बच्यौ ह्वै कैं विरथ, प्रांन मात्र वां ठांम॥६४॥
गहि लीनौं बलि दैवजू, जरासंध मद अंध॥
गजहिं गहत मृगराज ज्यौं, धरि निज सक्ति प्रबंध॥६५॥
वरुनपास नरपास सौं, बांधि बाहि बलिदेव॥
मारन लागै जब कह्यौ, कृस्न कुँवर इहि भेव॥६६॥
सैनां लै लै आयहैं, लरन इहै मगधेस॥
तिह्नैं मारि हम्ह टारिहैं, भुव कौ भार बिसेस॥६७॥
याकौं अबै न मारिहैं, छौडि देहुँ कर दीन॥
दुहुँ भ्रातनि इहि समझि कैं, जरासंध तजि दीन॥६८॥
चल्यौ तपस्या करन कौं, लज्जित ह्वै मगधेस॥
दै धीरज कीनौं मनै, बीचहिं और नरेस॥६९॥
नीति सास्त्र कैं धरम कैं, बचन अनैक सुनाय॥
और नृपति मगधेस कौं, धीरज दिय अधिकाय॥७०॥

जरासंधि अति दुषित ह्वै, गौ इकलौ निजधांम॥
हरि सैनां मैं किहुँन कैं, हुवि पीड़ा बिच संग्राम॥ ७१ ॥
अरि कैं सैंन समुद्र सी, जीतै कृस्न कुँवार॥
बरषि सुमन सुर ता समैं, कीनी अस्तुति सुढार॥ ७२ ॥
मथुरा कै वासीन कौं, मिट्यौ महा दुष दंद॥
मागध बंदीजन अस्तुति, लागै करन सुछंद॥ ७३ ॥
पुर प्रवैस करतैं समैं, परी निसांनन ठौर॥
ग्रह ग्रह मंगल जगमग्यौ, चढि आनंद सजौर॥ ७४ ॥
ग्रह ग्रह पैं तौरन ध्वुजा,सौभित भलै प्रभाव॥
ह्वै मथुरा की गलिन मैं, बंहु सुगंध छिरकाव॥ ७५ ॥
आंगन चौक बिराजहीं, ग्रह मुष बंदन माल॥
बिप्र बेद धुनि करत है, ठौरहिं ठौर रसाल॥ ७६ ॥
अंकुर अछित फूल रू दधि, लैं लैं सब पुर नारि॥
करि प्रभु की पूजा भलैं, लषत प्रीति अनुसारि॥ ७७ ॥
ठौर ठौर सब नगर मैं, सुनियत मंगलगांन॥
पुरबासी प्रफुलित महा, बजि दुंदुभि अप्रमांन॥ ७८ ॥
धन भूषन बहु जुद्ध मैं, जो कछु लागौ हाथ॥
तें राजा उग्रसैंन कौं, दीनैं जदुकुल नाथ॥ ७९ ॥
अैसै सतरह बेर बहि, सजि अष्यौनि तैंईस॥
ल्याय प्रभू सौं लरि भज्यौ, जरासंधि अवनीस॥ ८० ॥
सैंन जादवनि सबहती, वांकी सतरह बार॥
इकलौ ही भजि भजि गयौ, अपनैं देस कुचार॥ ८१ ॥
बउत सैंन सझि क्रौध करि, करन जुद्ध अधिकार॥
आवन कौं मगधैस भौ, फिरि अठारहीं बार॥ ८२ ॥
नारद कौं पठयौ तबै, काल जवन उहिं देस॥
आयौ दिन दौइक पहल, धरै जुद्ध कौं भेस॥ ८३ ॥
संग मलैछ त्रयकोटि लैं, घैरी मथुरा आय॥
रांम सांम ता समैं मिलि, कियौ बिचार सुभाय॥ ८४॥
आंनि लग्यौ जादवन कौं, दौय तरंह संतापु॥
कालजमन मथुरापुरी, घैरीहैं धरि धापु॥ ८५ ॥
अरु अैहै मगधेसहूं, दिवस अैक द्वै मांहिं॥
आठ पहर मैं अैक छिन, वाहि परत कल नांहिं॥ ८६ ॥
काल जमन सौं लरन हम्ह, जो निकसै वां बार॥
तौ पाछै तैं आयकैं, जरासंध निरधार॥ ८७॥

बंधु हम्हारे कौं पकरि, अपनैं घर लैं जाय॥
कैं मारे दुष अधिक दै, कछु न संक चितलाय॥ ८८॥
तातैं हम्ह इक कौट द्रिढ, बीची समुद्र बनाय॥
निज बंधुन कौ राषि हैं, अति नचिंतता भाय॥ ८९॥
काल जमन कौ मारिहैं, फिरि किहुँ औरहिं हाथ॥
इहि बिचार निजू चित्त मैं, करिकैं गौकुल नाथ॥ ९०॥
बारा जौजन द्वारिका, रची समुद्रहिं मांहिं॥
बिबिधि सुभग रचना रची, बिस्बकरमा वां ठांहिं॥ ९१॥
मनिन जटित कंचन कलित, सुंदर ऊंचै धांम॥
चौहट्टै गली बजार जुत, सौभित अति अभिरांम॥ ९२॥
कल्पबृच्छ हीं कै जांह, बन उपबन सुषदाय॥
अदभुत फुलवारी सुभग, फूल रही बहुभाय॥ ९३॥
रतनन कैं सौभित कलस, तौरन ध्वुजा रसाल॥
सुर मंदिर ठां ठां लसत, सिषर बंध सुबिसाल॥ ९४॥
पारजात बहु बृच्छ अरु, सभा सुधरमा नांम॥
प्रभु कौं पठई इंद्र नै, जानि बस्त अभिरांम॥ ९५॥
जास सुधरमा सभा मैं, जें जन बैठै कौय॥
तिन्हकौ कबहूं भूष अरु, नींद प्यास नहिं हौय॥ ९६॥
जाकौं कारौं कांन इक, स्वैत अंग अस्ब और॥
अैसै घौरां बरुन नैं, पठअैं प्रभुहिं सजौर॥ ९७॥
बरुन पठाअै द्रिव्य बहु, पूरन आठ प्रकार॥
भली बस्त औरहुँ सुरनि, पठई प्रभुहिं सुढार॥ ९८॥
अैसी द्वारावति पुरी, मधि निज बंधुनि सांम॥
जोग सक्ति करि आपनीं, लै राषै जुत बांम॥ ९९॥
फिरि अग्रज सौं यौं कह्यौ, तुम्ह रहि मथुरा मांहिं॥
इन्ह मलैछ कैं दैष तैं, हम्ह भाजत या ठांहिं॥ १००॥
आयुध अपनैं छौडि कैं, इकलैं कृस्नं कुमार॥
निकसैं बाहरि नगर कैं, दैषत जवन कुचार॥ १०१॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते पंचासत्तमोऽध्यायः ॥५०॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अैक पंचासत्तमोऽध्यायः ॥

(काल जवन का भस्म होना तथा मुचुकुन्द की कथा)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - श्री सुक कहत कि नगर तैं, बाहरि निकसैं सांम॥
चल्यौ जात है ससि मनौं, तम मैंटन अभिरांम॥ १ ॥
कौस्तुभ मनि श्रीचिह्न उर, कंवल नैंन भुज च्यार॥
पीत बस्त्र धारन किये, सुंदर सांम उदार॥ २ ॥
प्रसंन बदन हांसी सुभग, कुंडल मकराकार॥
बनमाला पहिरै हियै, सीस चंद्रका चारु॥ ३ ॥
अैसौ लषि श्रीकृस्न कौ, सुंदर अदभुत रूप॥
अरि समझ्यौ बसुदेव कैं, अैंहीं पुत्र जु अनूप॥ ४ ॥
च्यारि भुजा बनमाल गर, सांम रूप सुषदाय॥
अैंहीं इन्हहिं लछिन दियै, नारद हम्हहिं बताय॥ ५ ॥
पायन भाजै जात है, सौ अैं कृस्नं कुमार॥
म्हैं हूं इन्ह सौं करहुं जुद्ध, इकलौं हौहिं उतार॥ ६ ॥
पाछै दौरत हीं भयौ, यौं बिचारि जवनेस॥
जोगिन दुरलभ सौं कांह, इहि पावै बिसबेस॥ ७ ॥
अैक हाथ कैं आंतरैं, काल जमन अरु सांम॥
चलै गयै दौरे दौउ, नग की कंदरा ठांम॥ ८ ॥
तुम्हहिं भाजनौ जोग्य नहिं, उपजै जदुकुल मध्य॥
पाछै लगि यौं बकत गौ, काल जमन बुधि बध्य॥ ९ ॥
प्रभु परबत की कंदरा, मध्य छिपत भयै जाय॥
अैक पुरष सौयो बांह, दिय पटपीत उढाय॥ १० ॥
कालजमनहूं जाय कैं, प्राप्त भयौ वां ठौर॥
सुतौ लषि बांह पुरष कौं, बोल्यौ अैसे तौर॥ ११ ॥
इती दूरि मुहि ल्याय तुम्ह, सौय रहै या ठौर॥
यौं कहि किय वा पुरष कैं, पद प्रहार जुत जौर॥ १२ ॥
बहै पुरष उठि षोलि द्रिग, लष्यौ क्रौध अनुसार॥
काल जमन तासौ तांह, भस्म भयौ वां बार॥ १३ ॥

॥ राजोवाच ॥

इहे सुनि नृप पूछत भयौ, हे मुनि बह हौ कौंनुं॥
भस्म भयौ तिहिं तेज सौं, काल जमन अघ भौंनुं॥ १४ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि उपज्यौ वहै, बंस इष्वाकहिं मध्य॥
मानधाता कौ पुत्र हौ, मुचकंद नांम प्रसध्य॥ १५ ॥

असुरन सौं इंद्रादि सुर, डरपि कह्यौ इक बार॥
हे राजा मुचकंद सुर, रछा करहुं निरधार॥ १६॥
अमरन की रछया करी, तब मुचकंद नृपाल॥
असुर सैंन संघार करि, जीत्यौ जुधहिं बिसाल॥ १७॥
फिरि रछया किय सुरन की, सिवसुत सकंध कुमार॥
नृपति कह्यौ तब सुरनि मिलि, जाहुँ गेह निरधार॥ १८॥
मनुष लौक कौं राज्य सुष, छौडि अहौ नृप आपु॥
रछा हम्हारी बउत किय, मारै असुर सपापु॥ १९॥
पैं मंत्री सुत ग्याति तिय, तुम्हरी प्रजा अपार॥
तुम्ह आयै हे छौडि तैं, मरै काल अनुसार॥ २०॥
काल सुईस्वर रूप है, सब जग तिहँ आधीन॥
जइसी बिधि पसु रहत है, ग्वालाधीन सरीन॥ २१॥
मुक्ति बिना कछु और वर, जो मांगैगै चांहिं॥
सौ वर देहैं तुम्हहिं हम्ह, कछुन झूंठ या मांहिं॥ २२॥
अरु है दाता मुक्ति कैं, जगत ईस भगवांन॥
राजा तुम्ह चित मांहिं ही, लीजै समझि सुजांन॥ २३॥
उन्ह पैं नृप मुचकंद जब, निंद्राही वर मांगि॥
सौय रहत भय आयकैं, या परबत की जागि॥ २४॥
बर दीनौं हौ दैवतनि, तौहि जगावै कौय॥
सौही जन तौ देषतैं, निश्चै भसम सु हौय॥ २५॥
तातैं नृप मुचकंद की, दिष्टि परन अनुसार॥
काल जमन होतौ भयौ, तुरत भसम वां बार॥ २६॥
ता पाछै मुचकंद कौ, प्रभु निज दरसन दीन॥
सुंदर सांम अनूप छबि, चितवनि तारनदीन॥ २७॥
कौस्तभ मनि श्रीचिह्न उर, अरु सौभित बनमाल॥
पीत बस्त्र धारन किये, जांकै नैंन बिसाल॥ २८॥
मकराकृत कुंडल श्रवन, प्रसनं बदन अभिरांम॥
मंद हसनि मनमोहनी, नौछाहरि किय कांम॥ २९॥
मुक्ति दैंन निज पद कंवल, अभय दैंन भुज च्यार॥
पराक्रमी रु किसौर बय, प्रगट मैघ अनुसार॥ ३०॥
लषी अैसै श्रीकृस्न कौं, इन्हकैं तैज प्रभाय॥
नृपति डरपि बौलत भयौ, हौरैं बचन सुनाय॥ ३१॥

॥ मुचुकुन्द उवाच॥

इहां नगर मैं बन बिषै, तुम्ह आयै हौ कौंनुँ॥
फिरत कंटकन मध्य क्यूं, कौमल चरन सुठौंनुँ॥ ३२॥

तुम्ह हौ अग्नि कि सूर्ज ससि, कैं कौ लौक जु पाल॥
कैं बिधि बिस्नु महैस तिहुँ, मधिहौ कौनुँ बिसाल॥ ३३॥
तुम्ह टारत निज तैज सौं, इहां गुहा अंधियार॥
तुम्ह सम कौ जांनि न परत, बीचि सकल संसार॥ ३४॥
तातैं कहौ निज जन्म अरु, कर्म गौत्र समझाय॥
ईछा मोकौ सुनन की, प्रगट भई अधिकाय॥ ३५॥
हम्ह तौ बंस इष्वाकु मैं, छत्री जु हैं निहकांम॥
मानधाता कौ पुत्र हौं, मो मुचकंद सुनांम॥ ३६॥
म्हैं जग्यौ बहु दिनन मैं, सौवत हौ या ठांम॥
मुहि जगाय दीनौं किहूं, तिहिं जांनत नहिं नांम॥ ३७॥
सौ अपनैं ही पाप सौं, भसम भयौ अघ रूप॥
ता पाछै मुहि रावरौ, दरसन भयौ अनूप॥ ३८॥
तैज तुम्हारे सौं डरपि, पूछतहुँ बारंबार॥
तुम्ह सबहिंन कैं पूज्य हौ, दैंन मुक्ति सुषसार॥ ३९॥

॥ श्री सुक उवाच॥

अैसै राजा कैं बचन, सुनि श्रीकृस्न कृपाल॥
मंद मंद मुसक्याय कैं, बोलै बचन रसाल॥ ४०॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

अगनित है म्हैरे प्रगट, रूप कर्म गुन नांम॥
तैं म्हैंहूं गनि सकत नहिं, चकित हौत हिय ठांम॥ ४१॥
भुव रजकनि गिनि सकत है, बउत जनम कैं मांहिं॥
जनम करम गुन नांम मो, किहुँ सु गनैन न जांहिं॥ ४२॥
जनम रु करम त्रिकाल मो, गावत रिषि बहु वैंत॥
तऊ पार पावत नांहिं, कहत निगमहूं नैंत॥ ४३॥
पै अबकैं मो करम अरु, जनम सुनै निरधार॥
धर्म रछा कैं काज किय, प्रारथना मुष च्यार॥ ४४॥
अरु टारन भुवभार पुनि, मारन असुर नृपाल॥
प्रारथना हम्हसौं करी, ब्रह्मा बुधि जू बिसाल॥ ४५॥
तातैं अबहूं प्रगट हुव, नृप बसुदैवहिं धांम॥
नंद महर पालन कियौ, वासुदैव मो नांम॥ ४६॥
काल जमन अवतार हौ, पापी कंस नृपाल॥
जास आदि बहु असुर हम्ह, संघारै सु रसाल॥ ४७॥
दिष्टि तुम्हारी सौं अबै, काल जमन किय छार॥
क्रिपा करन तुम्ह पैं इहां, हौं आयौ निरधार॥ ४८॥

मो दरसन की प्रार्थना, तुम्ह किय पहली बार॥
तातैं अब बर मांगियै, निज ईछा अनुसार॥ ४९॥
जो आवै मो सरन तिहँ, सोच रहै कछु नांहिं॥
जें मन ईछा हौंहिं तैं, पावै प्रगट सदांहिं॥ ५०॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि यौं कही ही, गर्ग जु पहली बार॥
द्वापुर कैं मधि हौंहिगौं, श्रीकृस्नां अवतार॥ ५१॥
तातैं नारायन समझि, बोल्यौ नृप मुचकंद॥

॥ मुचुकन्द उवाच॥

तुम्हकौं है परनांम मो, हे सुंदर बृजचंद॥ ५२॥
मोहित तुम्हारि प्रकृति सौं, जीव इहै अग्यांन॥
तुम्हकौं नांहिंन भजत है, काहू बार निदांन॥ ५३॥
परि दुष रूपी गेह मैं, सुष चाहत नर नारि॥
ठग लीनैं माया सबनि, त्रस्नां फांसी डारि॥ ५४॥
मनुष जनम जें पाइकैं, तुम्ह पद सैवत नांहिं॥
पसु समांन जें परैहैं, अंध कूप ग्रह ठांहिं॥ ५५॥
कितक दिवस मुहि राज मद, बढ्यौ हुतौ अधिकाय॥
बृथा गयै मो दिवस बै, बिना ग्यांन सुषदाय॥ ५६॥
ममता करी सरीर मैं, छौडि प्रभू की भक्ति॥
सुत अस्त्री भंडार की, चिंता मधि आसक्ति॥ ५७॥
मृतिका घट सम देह इहि, ताकौं धरि अभिमांन॥
जांनत भौ म्हैं नृपति हौं, मो समांन नहिं आंन॥ ५८॥
सैंन लियै चतुरंगनी, फिरत रह्यौ भव ठांम॥
तुम्हहिं न पहचांनत कबहुँ, अहौ प्रभु अभिरांम॥ ५९॥
बौरौ ह्वै रह्यौ जीवहिं, जग कैं काजन मांहिं॥
है लौभी बिषई महा, तत्वभेदि सुधि नांहिं॥ ६०॥
ताकौं तुम्ह ग्रसि लैत हौ, काल रूप करतार॥
जइसै अहि ग्रसि लैत है, मूसै कौ निरधार॥ ६१॥
पहलै नृपति कहाय कैं, भौगत भौग अपार॥
सौ ही तन ह्वै जात है, मरी विष्टा क्रमि छार॥ ६२॥
बैठत सिंघासन उपरि, जीतत सकल दिसांनि॥
और नृपति बहु करत है, बंदन आय सथांनिं॥ ६३॥
अैसै हूं नृपग्रेह मैं, अस्त्री बसि ह्वै जात॥
क्रीडा मृग जइसैं चलत, जितकौं मनुष चलात॥ ६४॥

भोग करि चुकैं फेरि जब, करि तपस्या बन जाय॥
प्रभु कौं जचैं बहुरि म्हैं, नृप भौ बहीं प्रभाय॥६५॥
या प्रांनी की मिटत नहिं, त्रस्नां किहूं प्रकार॥
ज्यौ न जवासौ तृपति ह्वै, बरषै बहु जलधार॥६६॥
हौनहार ह्वै मुक्ति या, प्रांनी की जिहँ बार॥
साधु संग लहि प्रगट ह्वै, तुम्हरी भक्ति सुढार॥६७॥
जात रह्यौ हौ पहलहीं, म्हैरौ राज्य बिसाल॥
सौ मो पै अनुग्रह बडौ, कीनौं आप क्रिपाल॥६८॥
राजा चाहत है बउत, राज छौडि बन जांहिं॥
पै काहू सौं बात इहि, बनि आवत है नांहिं॥६९॥
बड्डे बड्डे जन चहत है, तुम्ह पद पंकज सैव॥
बर म्हैं मांगत हौ सुही, हे देवनि मनि दैव॥७०॥
जांसौ बंधन जगत कैं, प्रांनी कौं दुषदाय॥
अैसौ मांगै कौंनुं बर, मुक्ति दैंन प्रभु पाय॥७१॥
प्रकृति त्रिगुन मय बर कछू, म्हैं चाहत हौं नांहिं॥
तुम्हसौं बाढै प्रीत मो, इहि ईछा मन मांहिं॥७२॥
निरगुन अवयव निरंजन, स्रेष्ठ जु ग्यांन सरूप॥
अैसै तुम्ह तिन्ह सरन म्हैं, आयौ प्रीति संजूप॥७३॥
म्हैं निज कर्महिं फलन सौं, महा दुषित निरधार॥
लगै त्रिबिधि संताप मुहि, बड्डे रोग अनुसार॥७४॥
छह इंद्री जु मो कौ गहै, बैहिं है सत्रु सजौर॥
तातैं हौत न सांतता, कबहूं मो हिय ठौर॥७५॥
सरन रावरै हे प्रभू, म्हैं आयौ हूं दीन॥
ताकी तुम्ह रिछया करौ, असरन सरन प्रवीन॥७६॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

प्रभु बोलै उज्जल महा, तैं बुधिवंत नृपाल॥
म्हैं वर दैनैं कहत पै, तू न भयौ चल चाल॥७७॥
कबहूं कछु बर चहत नहिं, म्हैरे भक्त उदार॥
रहत मुदित मो सैव मैं, चाहत भगति सुढार॥७८॥
जिन्हकी मिटी न बासनां, अरु मो सौ न सनैह॥
मन अति चंचल ह्वै रह्यौ, चाहत बिषै अछैह॥७९॥
तातैं जोगहुँ साधि कैं, बै बर मांगत चांहिं॥
तत्वभैदि समझत नांहिं, परै प्रकृति बस मांहिं॥८०॥
हे राजा तेरै हिदैं, है मो भक्ति सुभाय॥
तातैं हौय मनोर्थ तौ, जांह रहहुँ सुषपाय॥८१॥

छत्री धरम आषैट मैं, तैं मारै बहु जंत॥
तातैं तप करि दोष निज, टारि देहुं बुधिवंत॥ ८२॥
पूर्ब जनम मैं हौहि तू, ब्राह्मन परम पुनीति॥
मो कौ प्रापति हौहिगौं, प्रकृति गुनन कौं जीति॥ ८३॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अैक पंचासत्तमोऽध्यायः ॥ ५१॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ द्वि पंचासत्तमोऽध्यायः ॥

(द्वारिका गमन, बलराम-विवाह तथा श्रीकृष्ण जी के पास रुक्मिणी
जी का संदेशा लेकर ब्राह्मण का आना)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि अैसी क्रिपा, किय जब प्रभू क्रिपाल॥
तब प्रभुकी दै परक्रमा, बाहरि कढ्यौ नृपाल॥ १॥
मनुष बृछन कौ दैषि लघु, कलिजुग आयौ जांनि॥
जात भयौ मुचकंद नृप, उत्तर दिसा सथांनि॥ २॥
नर नारायन कैं निकट, बद्री आस्त्रम जाय॥
सुष दुष सहित पकरि प्रभुहिं, आराधै मन लाय॥ ३॥
करत भयौ तपस्या उहां, छौडि सकल संदेह॥
गिरि गंध मादन मधि बस्यौ, लाय कृस्न सौं नेह॥ ४॥
फिरि प्रभु मथुरा आय त्रय, कौटि मलैछनि मारि॥
उन्हकौं धन लै द्वारिका, चलै भलै अनुसारि॥ ५॥
तैइस अष्यौनि सैंन लैं, जरासंधि वां बार॥
आनि पहुंच्यौ बल धरै, पापी महा कुचार॥ ६॥
जरासंधि कौ दैषि कैं, नर लीला करि सांम॥
भाजि चलै अग्रज सहित, प्रभू द्वारिका धांम॥ ७॥
बै प्रभु डरपैं कौनुं सौं, जें सब जग कै स्वांमि॥
पै डरपै सै ह्वै भजै, धन तजि वाही ठांमि॥ ८॥
पायनहीं जौजन कितक, चलै गयै दुहु भ्रात॥
इन्हकौं भाजत लषि हस्यौ, तब मगधेस कुपात॥ ९॥
सैंनां लै पाछै लग्यौ, प्रभु महिमां न जनाय॥
मुदित भयौ अति गर्व धरि, मूरष बांह चढाय॥ १०॥

गिरि जु प्रवर्षन नांम इक, तहं बरषत नित मैह॥
रांम सांम जहँ जाय हुव, प्रापति भ्रात सनैह॥ ११॥
जरासंधि जान्यौ छिपै, अै दुहु परवत मांहिं॥
इहै समझि लाई अगनि, चहूं ओर जग ठांहिं॥ १२॥
ग्यारह जौजन उच्च है, परबत जास प्रमांन॥
तापरि चढि प्रिथवी उपरि, कूद परे भगवांन॥ १३॥
नग तैं कूदे भ्रात दुहु, सौ किहुँ जान्यौ नांहिं॥
प्राप्त हौत भय भ्रात दुहु, पुरी द्वारिका मांहिं॥ १४॥
परबत मैं दुहु भ्रात कौ, भसम भये मन जांनि॥
गयौ आपनैं गेह कौ, जरासंधि अग्यांनि॥ १५॥
नृपति देस आनर्त कौ, जाकौ रैवत नांम॥
जाकी सुकन्या रेवती, ब्याही श्री बलिरांम॥ १६॥
रुकमनि भीषम नृपति की, सुता रमा अवतार॥
सौ ब्याही श्रीकृस्न जू, करि बहु सैंन संघार॥ १७॥
जें पाछैं सिसुपाल कै, साल्व आदि नृप जीत॥
सबकैं दैषत जु रूकमनि, हरि ल्याये मष मीत॥ १८॥
हरि ल्यायो हौ अमृत कौ, बैनतेय जिहँ भाय॥
प्रभु लै आये रुकमनी, सत्रुनि मांन जु गमाय॥ १९॥

॥ राजोवाच ॥

नृप पूछति हे मुनि प्रभू, राष्यस रीति प्रभाय॥
ल्याये ब्याहिं जु रुकमनी, निज भुज बल सरसाय॥ २०॥
सुन्यौ चहत हम्ह इह चरित, कइसै कृस्न क्रिपाल॥
हरि लै आये रुकमनी, जीति साल्व सिसुपाल॥ २१॥
टारन हारी पाप की, प्रभु की कथा सुढार॥
सौ सुनि कैं कौ त्रिपति है, अैसौ कौंनुं गवार॥ २२॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

जू कह्यौ देस बिदर्भ कौ, राजा भीषम नांम॥
पंच पुत्र अरु इक पुत्रिका, रुकमनि जाकै धांम॥ २३॥
रुकमी बहुर्यौ रुकम रथ, रुकम बाहु रुकमेस॥
रुकममाली अरु पुत्रिका, रुकमनि नांम सुदेस॥ २४॥
सुपुत्री सौ श्रीअंस पढि, बेद पुरांन अनूप॥
तिन्हमैं सुनि भगवांन कै, बीर्ज कर्म गुन रूप॥ २५॥
अपनैं पति रूकमनि मनहिं, मानै कृस्न कुमार॥
पूजत गौरि महैस निति, हरि ब्याहन अनुसार॥ २६॥

गुन बुधि लछिन उदारता, सील रूप अधिकार॥
रुकमनि जू कौ सुनि चहत, ब्याह्यौ कृस्न कुमार॥ २७॥
भीषम नृप बिच सभा कैं, पहलै कियौ बिचार॥
बासुदेव कौ दीजियै, सुता रमा अवतार॥ २८॥
बोल्यौ रूकमी दुष्ट फिरि, मैटि पिता की कांनि॥
हम्ह सिसुपालहिं दैहिंगै, अपनीं बहनि निदांनि॥ २९॥
इहि सुनि कै रुकमनि महा, दुषित भई मनमांहिं॥
पठ्यौ द्विज श्रीकृस्न पैं, दैहिं पत्री कर ठांहिं॥ ३०॥
द्विज पहुँचति भौ द्वारिका, गयौ ठौर दरबार॥
कर गहि भीतरि लै गयौ, पकरि हाथि प्रतिहार॥ ३१॥
कंचन सिंघासनि उपरि, बैठे कृस्न क्रिपाल॥
तिन्हकौं दरसन करि भयौ, ब्राह्मन बहे निहाल॥ ३२॥
ब्राह्मन दैव प्रभू द्विजहिं, निज आसन बैठाय॥
करत भयै पूजा भलै, अमृत बचन सुनाय॥ ३३॥
अतिहि पवित्र भोजन दियै, बिप्र जू कियौ बिश्राम॥
तब ब्राह्मन कै दाबि पग, पूछन लागै सांम॥ ३४॥
हे द्विज करत कि नांहिंनै, ब्रध तौ धर्म सराह॥
चहियै तेरै मन बिषै, ह्वै संतोष निबाह॥ ३५॥
जो द्विज रहै संतोष मैं, साधै अपनौं धर्म॥
सौ सबकैं पूरन करैं, सकल मनोर्थ मर्म॥ ३६॥
जिहँ ब्राह्मन कैं चित्त बिषै, ह्वै संतोष जु नांहिं॥
सौ ब्राह्मन मांनै न सुष, इंद्र लौकहूं मांहिं॥ ३७॥
निरधन हूं संतोष सौं, सोवै चित्त सुष मांनि॥
बड्डी बस्त या जगत मैं, है संतोष निदांनि॥ ३८॥
दयावंत संतोष जुत, साधु बिना अहंकार॥
सांत सदा अैसै द्विजहिं, मो परिनांम सुढार॥ ३९॥
सुष सौं रहै जू बिप्र जिहँ, नृप कै राज्यहिं मांहिं॥
सौ नृप मोकौ प्रिय महा, तिहँ दुर्ल्लभ कछु नांहिं॥ ४०॥
हे द्विज तैंरै कुसल है, तू आयौ जिहँ काज॥
सौ मुहि दैहुँ जताय म्हैं, करिहौं भलैं इलाज॥ ४१॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि अैसै जबै, पूछ्यौ कृस्न कुमार॥
कहत भयौ ब्राह्मन तबै, समाचार सुषसार॥ ४२॥
रुकमनि जू कौ पत्र दियै, बिप्र प्रभू कै हाथ॥
प्रभू उलटौ दै बिप्र कर, कह्यौ बांचि इहि गाथ॥ ४३॥

(अथ पाती कै समाचार वर्ननं)

(छंद गीतिका)

॥ रुक्मिण्युवाच॥

अहौ परम सुंदर तुम्हारै, गुन श्रवन मग अनुसार॥
पैठि मैटत त्रिविधि तापहिं, उर करैं मुदित सुढार॥
सुनि तिह्वै अरु सुनि तिहारौ, रूप द्रिगनि कौ सुषदाय॥
तुम्ह मांहि म्हेरौ चित्त लग्यौ, हे प्राननाथ लुभाय॥ ४४॥
आवत न मुहि लाज म्हैं हूं, उन्हहिं लायक नाहिनै॥
सुन्यौ है तुम्ह दीन तारन, सरन राषै जन घनै॥
गुन सील वय द्रव्य रुप विद्या, तैज सहित सुहावनै॥
सब भांति पुर्न प्रांन प्यारै, तुम्हहिं सुनि मन भावनै॥ ४५॥
कुलवंत कन्या कौनुँ ऐसी, धीरधर तुम्हहि न चहै॥
वर चुकी म्हैं तुम्हहिं मन तैं, भ्रात रुकमी हिय दहै॥
तुम्हकौं समर्पित अपनपौं, म्हैं कियौ है द्रिग पंकजं॥
भइ दासि हौं तातैं तुम्हरि, पत्र पठयै निसंकजं॥ ४६॥
मुहि वरै सिसुपाल पापी, काज ऐसो न किजियौ॥
भष सिंघ कौ जु दीन तारन, सियार कौ मति दिजियौ॥
करि धर्म ब्रत जग्य दांन पुनि, सुर विप्र गुर किय प्रस्नं जू॥
फल इहै ताकौ चहत हौं, गहि हाथ ब्याहुँ कृस्नं जू॥ ४७॥
पहलै दिनां तुम्ह ब्याह कै, आय सैनां संग लियै॥
करि ब्याह राछिस रीत मुहि, दाह द्यौ रुकमी हियै॥
कहि हौं कदाचित तुम्ह इहै, तू रहत अंतहपुर विषै॥
तौ बंधु मारै बिनु कइसैं, ल्याउ हरि तुहि हित पषै॥ ४८॥
जिहँ उपाय बताहुँ तुम्हकौं, भेद सौ निज मन धरौ॥
म्हैं तिया जन्म जन्मनि तुम्हरि, पति जु तुम्ह सौही करौ॥
दिन ब्याह कैं पहलै इहां, निरधारि करि रीति सौं॥
गरि बाहरि कन्यका पूजै, भंवांनी जू प्रीति सौं॥ ४९॥
जिहिं अंबिका कै देहरै, आय मुहि हरि लीजियै॥
मलि मांन दुष्टन कैं भलै, अब दांन पिय दीजियै॥
सिव आदि साधु सुजांन सब, चरन रज कौ चहत हैं॥
धरिध्यांन निज हिय रावरौ, अनंद अघटित उर लहैं॥ ५०॥
नहिं करहुंगे क्रिपा मो पर, दया करि अपनाय कैं॥
निज प्रांन त्यागन करौंगी, हिरदै दुष बढाय कैं॥
फिरि जनम सौं रीत ऐसी, करि महा उछरंग सौं॥
मिलि है तुम्ह सौ हौ पतनी, भोग करहुँ सुढंग सौं॥ ५१॥

॥ ब्राह्मण उवाच ॥

दोहा - द्विज बोल्यौ संदेस म्हैं, तुम्ह कौ कहै सुनाय॥
अब बिचार कै करहुँ जो, जोग्य हौय जदुराय॥५२॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते द्विपंचासत्तमोऽध्यायः ॥५२॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ त्रिपंचासत्तमोऽध्यायः ॥

(रुक्मिनी हरण)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि रुकमनी कैं, सुनि संदेस सुढार॥
कर सौं कर गहि कैं कह्यौ, द्विज सौं कृस्न कुमार॥१॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

म्हैरो हूं चित्त रहत है, वा रुकमनिहीं मांहिं॥
रात दिवस मो कौ कबहुँ, निंद्रा आवत नांहिं॥२॥
म्हैं जांनत हौं रुकम नै, षंडित किय मो ब्याह॥
सिसुपालहिं अपनीं बहन, दीनी सहित उमाह॥३॥
जीति सकल राजान कौ, दैहुँ दुष्टन उर दाह॥
अगनि सिषा सी रुकमनी, लै आऊ करि ब्याह॥४॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

रुकमनी जु कै ब्याह कौं, समैं नछत्रहिं बिचारि॥
द्वारुक सौं प्रभु यौं कह्यौ, रथ जोतौ या बारि॥५॥
सैंव्य बलाहक मैघ पुनि, जुत सुग्रीव बहु नांम॥
अस्व जोति कैं सारथी, ल्यायौ रथ अभिरांम॥६॥
तापरि द्विजहिं चढाई कैं, आपु भयै प्रभु स्वार॥
सीघ्र जाय पहुँचत भयै, कुंदिनपुर करतार॥७॥
पति वां कुंदिन नगर कौं, राजा भिषमक नांम॥
सुता ब्याह आरंभ कै, काज करत निजधांम॥८॥
गली चौहट्टा मार्ग किय, उज्जल छिरकि सुगंध॥
बिबिधि बरन तौरन ध्वुजा, ठां ठां भलै प्रबंध॥९॥
पट्ट भूषन पहिरैं बिमल, अंग सुगंध लगाय॥
पुरबासी अस्त्री पुरष, फिरत मोद मन छाय॥१०॥

पूजि पितर द्विज दैवतां, भोजन द्विजनि जिमाय॥
स्वस्थिवाचन करवत भयै, भीष्मक नृपति सुभाय॥ ११॥
करि सनांन रुकमनि कुंवरि, पट भूषन तन धारि॥
कर कंकन बांधत भई, निजपति कृस्न बिचारि॥ १२॥
बेद मंत्र पढि ब्राह्मननि, रष्याहुँ करि सुषदाय॥
प्रौहित पढि तहँ बेद सौं, किय ग्रह सांति सुभाय॥ १३॥
सोनौ रूपौ बस्त्र मनि, तिल गुड गाय अनंत॥
बिप्रन कौं भीषमक नृपति, दैत भयौ वां तंत॥ १४॥
अैसै ही दमघोष नृप, चंदेरी कौ राय॥
करावत भौ बेद बिधि, निज सुत पैं जुत चाय॥ १५॥
सजि सैनां चतुरंगिनी, भली बरात बनाय॥
आयौ सुत सिसुपाल जुत, पुर कुंदिन सुषछाय॥ १६॥
जाय समुष भीषमक नृप, करि आदर अनपार॥
सुंदर मंदिर मधि दियै, रहिबै ठौर बतार॥ १७॥
बासुदेवमिथ्या बहुरि, विदुरथ मघ पति साल॥
दंतवक्र लौ आदि बहु, आयै जांन नृपाल॥ १८॥
तैं सब बैरी कृस्नं कैं, आयै इहै बिचार॥
जो कदाचि जदुसैंन सजि, आवै कृस्नं कुमार॥ १९॥
करै जु कन्या हरन तौ, हम्ह करिहैं संग्राम॥
ह्वै इकठै इह समझि कै, सब आयैं अघधांम॥ २०॥
सुनत भयै बलिदैव इहि, देस विदर्भहिं ठांम॥
हुव इकठै बहु नृपति जहं, गयै अकेलै सांम॥ २१॥
चलै भ्रात कैं नेह सौ, बड्डी सैंन लै संग॥
बेगहिं कुंदिन पुर विषै, पहुँचै सहित उमंग॥ २२॥
द्विज आवत मैं ढील लषि, रुकमनि जू वां बार॥
करत भई चिंता बउत, बहत द्रिगन जलधार॥ २३॥
आजि संवारै ब्याह मो, क्यूं आयै नहिं सांम॥
अरु म्हेरौ बह बिप्रहूं, नहिं आयौ या ठांम॥ २४॥
आवन हुतौ बिचार फिरि, कछु मो दोष निहारि॥
आयै नहिं श्रीकृस्न जू, तातैं भई अवांरि॥ २५॥
भाग्य हीन हौं म्हैं महा, हा का करौं इलाज॥
जांनत हौ मो पैं न है; प्रसनं सिवा सिव आज॥ २६॥
सुक कहत कि रुकमनी कौ, भौ चित या अनुभाय॥
लागि रह्यौ श्रीकृस्न मैं, बढि सनैह अधिकाय॥ २७॥

यौं विचार करतै समैं, फुरकि नैंन भुज वांम॥
रुकमनि जू कौ भांति सब, सगुन भयै अभिरांम॥ २८॥
पठयौ हौ ब्राह्मन सौइ, आयौ वाहीं बार॥
ब्राह्मन कौं मुष प्रस्नं लषि, समझयौ सुभ विवहार॥ २९॥
जांनि गई श्रीकृस्नं जू, आयै हैं निरधार॥
तौ हूं हसि पूछत भई, समाचार सुषसार॥ ३०॥
द्विज बोल्यौ ब्याहन तुम्हैं, बांधि प्रतंग्या पूर॥
आयै कुंदिन नगर मधि, कृस्नं संजीवन मूर॥ ३१॥
बात इहै सुनि रुकमनी, विप्रहिं वंदन कीन॥
हरि आवन की और कछु, नहिंन बधाई दीन॥ ३२॥
भैद इहै या बात कौ, म्हैं लछमी अवतार॥
मो परनांम सौं बिप्र कैं, ह्वै हैं धन अनपार॥ ३३॥
सुन्यौ इहै भीषम नृपति, दैषन ब्याह उछाह॥
आयै हैं श्रीकृस्नं जू, अग्रज जुत धरि चाह॥ ३४॥
समुष जाय भीषम नृपति, पूजा आदर कीन॥
सुभग सदन बिच राषि मधु, पर्क सुभोजन दीन॥ ३५॥
अरु उत्तम सामग्री बउत, भेंट करी नृप ल्याय॥
प्रभु कौं सब सैनां सहित, किय आदर अधिकाय॥ ३६॥
वासी नगर विदर्भ कै, लषि लषि कृस्न कुमार॥
रूप माधुरी कौं करत, पांन भलैं अनुसार॥ ३७॥
अरु आपस मैं सब कहत, इन्ह सम नहिं कौ आंन॥
अैं रुकमनि कैं जोग्य पति, सुंदर स्यांम सुजांन॥ ३८॥
हम्ह कीनैं हैं पुन्य कछु, हौहु इहै फल जास॥
रुकमनि कौं श्रीकृस्न जू, ब्याहैं सहित हुलास॥ ३९॥
अैसै पुरवासी सबै, कहत प्रीत अनुभाय॥
कमल नैंन श्रीकृस्नं कौं, लषि चित बाढत चाय॥ ४०॥
रुकमनि जू ताही समैं, देवी पूजन काज॥
अंतहपुर तैं कढि चली, जुत सब सषी समाज॥ ४१॥
हरि पद पंकज कौ करत, अपनैं मन मैं ध्यांन॥
मौन धरै रुकमनि चली, दिस अंबिका सथांन॥ ४२॥
सस्त्र लियै पहरै कवच, बहु जोधा बलवांन॥
चहूं वोर रछया करत, नृप आग्या उनमांन॥ ४३॥
बाजत बिबिधि वाजत्र अरु, गावत गुनी सुढार॥
नृत्य करन वैस्या भलै, कीनैं सुभग सिंगार॥ ४४॥

लैं पूजा की सौंज सब, चली ब्राह्मनी संग॥
मागध बंदीजन करत, अस्तुति सहित उछरंग॥ ४५॥
धौय चरन कर आचमन, लैकैं सहित हुलास॥
मंदिर मैं रुकमनि तबै, गई भवानी पास॥ ४६॥
बिप्र नारि सौभाग्यवति, विधि की जांनन हार॥
पूजा सिव अरु सिवा की, करवाई सुभ ढार॥ ४७॥
कहत भई रुकमनि इहै, अहै भवांनी माय॥
मन वच करि तुम्ह कौ करत, हौं परनांम सुभाय॥ ४८॥
निश्चै म्हेरै हौंहिं पति, सुंदर कृस्नं कुमार॥
अैसौ वर मुहि दीजियै, अधिक क्रिपा अनुसार॥ ४९॥
पटभूषन अछितहिं पहुप, धूप दीप सउगंध॥
रु सामग्री जल सहित लै, पूजी सिवा सुधंध॥ ५०॥
पुनि द्विज पतिनिन की करी, पूजा भलै प्रकार॥
द्विज पतिनिन आसीस दिय, रुकमनि को वां बार॥ ५१॥
देवी कौ द्विज तियनि कौं, करि रुकमनि परनांम॥
मौन छौडि बाहर कढी, तजि देवालय धांम॥ ५२॥
कर सौं कर गहि सषी कौ, चितवत च्यारौं वौर॥
आस स्यांम घन की धरै, मुदित कुँवरि मन मौर॥ ५३॥
रूप रासि रुकमनि महा, मनु प्रभु माया दीस॥
सबकौ मौहित करत है, संजुत लछन बत्तीस॥ ५४॥
चंद वदन पंकज नयन, बिथुरै बार बिसाल॥
कनकलता सी गात छबि, अदभुत सौभ रसाल॥ ५५॥
मृदु मुसकनि चितवनि तिरझि, चलन हंस गति मंद॥
पायन मैं घुंघरून कौ, बाजत सबद सुछंद॥ ५६॥
जथा जोग्य भूषन बनै, अंग अंग अभिरांम॥
पट तारं जीजर कसी, पहरै सुंदर वांम॥ ५७॥
अैसी सौभा लषि गिरै, ज़ौधा मौहित हौय॥
सबकै चितहिं हरै गयै, रहै संभार न कौय॥ ५८॥
तजि वाहन जौधा गिरै, सस्त्र कर न ठहराय॥
अैसी सौभा प्रगट किय, रूकमनि जू अधिकाय॥ ५९॥
मंद मंद ही चलत हैं, रुकमनि जू वां बार॥
जांनत है अैहैं कबै, अब श्रीकृस्नं कुमार॥ ६०॥
हरि कौ आवन जांनि कर, लज्या कैस संवार॥
चितवत च्यारौं वोर कौं, दैषन काज मुरार॥ ६१॥

स्वार हौन कैं समैं तहँ, आय कमल दल नैंन॥
कर गहि रुकमन कौं करी, निज रथ स्वार सुषैंन॥ ६२॥
सब नृप कौं त्रसकार करि, सबकैं दैषत आय॥
रुकमनि जू कौ हरि लई, निज भुजबल अनुभाय॥ ६३॥
ज्यौं स्यारन कैं मध्य तैं, लैत सिंघ निज भाग॥
त्यौं रुकमनि हरि लै चलै, संजुत अति अनुराग॥ ६४॥
जरासंधि लौं आदि सब, नृप निज जस षय जांनि॥
बोलै हम्हरौ जस लियै, जात जु ग्वाल निदांनि॥ ६५॥
जइसै जस मृगराज कौं, मृग लै जात छिनाय॥
हम्हकौं है धिक्कार अब, ग्वाल करी अधिकाय॥ ६६॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते त्रिपंचासत्तमोऽध्यायः ॥ ५३॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुः पंचासत्तमोऽध्यायः ॥

(सिसुपाल के साथी राजाओं की और रुक्मी की हार तथा श्रीकृष्ण
रुक्मिनी विवाह)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि अैसै सबै, करि करि क्रौध अपार॥
कवच पहरि कर धनुष लै, हौय हौय सब स्वार॥ १॥
निज निज सैनां संग लै, जुध काजै भुज ठौर॥
पाछै लगि श्रीकृस्न कै, चलै सकल मिलि दौर॥ २॥
उन्हकौ आवत दैषि कैं, जदुबंसी सिरदार॥
समुष फिरै उन्हकैं उमगि, करि करि धनुष टंकार॥ ३॥
करत भयै जादवन पैं, अरिगन वरिषा वांन॥
जइसै घन परबतनि पैं, बरषत है अप्रमांन॥ ४॥
सर बरषा लषि पाय भय, रुकमनि जू वां बार॥
निजपति दिस दैषत भई, हसि लज्जा अनुसार॥ ५॥
तब हसि बोलै कृस्न जू, रुकमनि भय मति मांनि॥
अपनैं जोधा अरिन अब, लैहैं मारि निदांनि॥ ६॥
सत्रु सैंनां की प्रबलता, जादव सहत भयैंन॥
अपनैं सस्त्र प्रहार सौं, दीनौं अरिनि अचैंन॥ ७॥

(छंद त्रिभंगी)

कोपै जदु बंसी, आभा हंसी, जक्त प्रसंसी, जस लैनं ॥
कसि कसि धनु बानं, किय घमसानं, सत्रु जुटानं, बिनु चैनं ॥
बोलै मुपभारं, वाहित्रवारं, उमगि अपारं, जुझारं ॥
जय कृस्न कुमारं, कहत सुढारं, अरि संघारं, बजि सारं ॥ ८ ॥
गहि सत्रुनि चुट्टं, रिस धरि जुट्टं, चरनउ पट्टं, धर झारै ॥
गर संध मरोरै, राषत ठोरै, अरि मुह मोरै, मद झारै ॥
परि परि गल वत्थं, ह्वै लथ पत्थं, दुर्जन मत्थं, बहु काटै ॥
सबजादव सत्थं, सुभट्ट समत्थं, कथ अकत्थं, जस लाटै ॥ ९ ॥
लपि लपि सिव नारद, जुद्ध बिसारद, हर्ष उभारद, रीझि रहिं ॥
जुग्गनि किलकत्तं, उरह हस्सत्तं, पीवत रक्तं, मोद लहिं ॥
रचही सिव मालं, नवल सुढालं, दै करतालं, हरषानं ॥
निर्तत तहं काली, कर पुस्याली, दैपि कराली, घमसानं ॥ १० ॥
बांके भट्ट सूरं, प्राक्रम पूरं, बौलि गरूरं, ललकारं ॥
मुप जैत उचारं, इष्ट संभारं, जदुकुल क्कारं, षलमारं ॥
हौरी बिनु चाहं, बीचि विवाहं, इहि दरसाहं, मधि सैनं ॥
बहि रक्तं सुधारं, रंग प्रकारं, है मनुहारं, रिस बैनं ॥ ११ ॥
लगि सस्त्र कठौरं, रक्त सजोरं, रंग बिछौरं, सत्रु हियं ॥
सौ लाल गुलालं, बिषरि रसालं, मचि रह्यौ ष्यालं, दाव लियं ॥
बहै सस्त्र अपारं, तै पिचकारं, रंग बिथारं, तन लागै ॥
अैसी पिचकारिं, जदुकुल वारिं, छुटि अरिमारिं, अन थागै ॥ १२ ॥
तजि रन वट जागै, कायर भागै, तेइस वागै, दीस परै ॥
बड भट किलकावै, भुजा बजावै, पहपट भावै, धूम करै ॥
परी ठौर निसानं, सीधू गानं, गीत बिनानं, समझानौं ॥
मुप बचन अभायं, अरिन सुनायं, गारि कहायं, जो मानौं ॥ १३ ॥
सब बिध सरसाई, चाचरि छाई, कुंवर कन्हाई, मन भायं ॥
दै फगवा दानं, अपनौ मानं, सगा सुजांनं, भजि जायं ॥
चलि तीर पिचकारि, रक्त की फुहारि, मचि मारि मारि, हाय हायं ॥
जलि चहुँ दिसि हौरि, चमकि तरवारि, धमकी धमारि, मन भायं ॥ १४ ॥

(छंद उद्धौर)

जू लरै दुहूं दिसि धीर, छुटै अनैकनि जू तीर ॥
जो गिरै महारन सूर, तिनकौ सुवरहीं जु हूर ॥ १५ ॥
कैउ लटी पकरि पछारि, कैउ चढि हिय ललकारि ॥
लपि ठौर जांह गज दंत, मनौ घनहि मधि वग पंत ॥ १६ ॥
चपलाहि चमकि क्रपांनं, सुरपति चाप जू कमांनं ॥

तांह बहै रक्त अपार, मनौ इहै मेघहिं धार ॥ १७॥
बाजे अनैक जू बज्र, मनौ महावन से गज्र ॥
जित बहै बहु क्रिरपानं, तितहिं चलै हू रवि मांन ॥ १८॥
धर पर्यौ सीस वकार, मुषवक्कत मारहिं मार ॥
इक बिनहीं सीस सु अंग, अति जूटत ठाढै जंग ॥ १९॥
कर सीस लैहिं ललकार, यौं जूटत वीर अपार ॥
किलकारहिं दै करतार, कहिं मार मार ऊच्चार ॥ २०॥
जु अचिरज पातहिं सुरेस, तहिं नाचत लषि भूतेस ॥
गावत गंधर्ब अपछरा, पावत स्वर्ग जु सूरवरा ॥ २१॥

दोहा - सत्रुननि की सैनां सबै, करी जादवनि चूर ॥
जरासंधि लौं आदि नृप, भज़ै लाज धरि दूर ॥ २२॥
मिट्यौ ब्याह उत्साह जिहिं, बुधिहूं ह्वै गइ मंद ॥
दुषधारी सिसुपाल पैं, सबही जाय नरिंद ॥ २३॥
कहत भयै सब नृपति यौं, सिंघ पुरष सिसुपाल ॥
तू कछु दुष मति करै निज, चित धरि समैं संभाल ॥ २४॥
प्रांनिन मैं दुष सुष सदा, रहत नांहिं इकसार ॥
जइसै रितु आवति पलटि, अपनीं अपनीं बार ॥ २५॥
सुष दुष पावत जीव इहि, ईस्वर कैं आधीन ॥
ज्यौं बस नचवनहार कैं, पुतरी काठ सरीन ॥ २६॥
जरासंधि बोल्यौ कि म्हैं, हरि सौं सत्ररां बार ॥
तैइस अष्यौनि सैंन जुत, हारि भज्यौ निरधार ॥ २७॥
म्हैं फिरि बेर अठारहीं, कृस्नहिं दयौ हराय ॥
फतै पाय हौं मोद लहि, पहुँच्यौ निज पुर जाय ॥ २८॥
तौहूं सौक न हरष मुहि, उपजत है किहुँ बैंरि ॥
जक्त काल आधीन सब, निश्चै निज चित हैंरि ॥ २९॥
अब या समैं बड्डै बड्डै, जोधा हम्ह बलवांन ॥
तिह्नैं हराय भजाय दिय, जदुबंसीन निदांन ॥ ३०॥
इह अैसौ ही समैं है, भई अरिन की जीति ॥
भलौ समैं लहि जीति हैं, हम्हहुँ कबहूं सरीति ॥ ३१॥
अैसै दिय सिसुपाल कौं, सब मंत्रिन उपदेस ॥
तबैं आपनैं नगर कौं, गौ सिसुपाल नरेस ॥ ३२॥
अपनैं अपनैं ग्रिह गयै, औरहुँ सबै नृपाल ॥
रुकमी उर प्रजरत भयौ, बढि चित्त क्रौध बिसाल ॥ ३३॥

करी प्रतग्यां रुकम इहि, सबकैं सुनत बजाय॥
कृस्नहिं हति रुकमनिय कौं, ल्याऊ जो न पछाय॥३४॥
तौ या कुंदिनपुर विषै, आऊ हौं न बहौरि॥
यौं कहि कर धनु बांन लै, पहरि कवच भुज ठौरि॥३५॥
इक अष्यौनि संग सैंन लै, ह्वै कै सिंदन स्वार॥
जुध करिबै श्रीकृस्न सौं, आयौ रुकम कुचार॥३६॥
कह्यौ सारथी सौं चहहुँ, बेगि कृस्न कैं पास॥
म्हैं उन्हसौं लरि बहन मो, लै कै जांउ निवास॥३७॥
कृस्न ग्वाल म्हैरी बहन, जस जुत लीनै जात॥
मो बांनन सौं गर्ब उन्ह, मैटि करौं फिरि घात॥३८॥
ईस्वर की महिमां कछू, नहिं जांनत अग्यांन॥
तातैं बौलत है बचन, पापी या उनमांन॥३९॥
फिरि अैसै श्रीकृस्न सौं, बोल्यौ सिंदन स्वार॥
ठाढै रहुँ कित जात हौ, भलौ बजैंगौ सार॥४०॥
धनुष षैचि श्रीकृस्नं पैं, तीन चलायै बांन॥
अरु बोल्यौ तुम्ह हौ अधम, हे श्रीकृस्न निदांन॥४१॥
उत्तम अंन हविष्य कौं, ज्यौं कउवा लै जाय॥
जइसै लीनैं जात तुम्ह, म्हैरी बहन चुराय॥४२॥
जुद्ध करि करि तुम्ह कपट कौ, जीतत हौ धरि धाप॥
अबै तुम्हारौ गरब हौं, मैटौ सजि सर चाप॥४३॥
लैहूं म्हैरी बहनि म्हैं, तुम्हैं सरन सौं मारि॥
तातैं पहलहिं रुकमनी, दीजै सुलह बिचारि॥४४॥
तब हंसिकैं श्रीकृस्न जू, धनुष रुकम कौ काटि॥
भयै प्रहारत बांन छह, जुद्ध रुकम सौं ठाटि॥४५॥
मारै रथ कैं अस्व चहुँ, आठ बाहिं प्रभु बांन॥
दौय बांन लगि सारथी, मर्यौ बीच घमसांन॥४६॥
तोरी रुकमी की ध्वुजा, प्रभु बाहिं सर तीन॥
तबै रुकम अति क्रौध करि, और धनुष कर लीन॥४७॥
पांच बांन श्रीकृस्नं परि, बाहत भयौ रिसाय॥
बहू धनुष प्रभु रुकम कौ, दीनौं काटि गिराय॥४८॥
तोमर पट्टिस परघ फर, सूल सैल तरवारि॥
जें जें आयुध रुकम नै, लियै संभारि संभारि॥४९॥
तैं प्रभु डारै काटि सब, अपनैं बांन चलाय॥
निज आयुध रुकमी सबै, निरफल भयै लषाय॥५०॥

रुकमी रथ तैं कूदि तब, लै निज कर तरवार ॥
प्रभु पर दौर्यौ ज्यौं पतंग, परत दीप मंझार ॥ ५१ ॥
चूर चूर तब रुकम कै, करि आयुध जदुनाथ ॥
वाकौं मारन हीं लगै, षडग आपनैं हाथ ॥ ५२ ॥
भ्रातहिं मारत लषि डरपि, रूकमनि जू वां बार ॥
पायन परि श्रीकृस्नं कैं, बौली बचन सुढार ॥ ५३ ॥
हे जोगैसर जगतपति, मति मारहुँ मो भ्रात ॥
इहि तुम्हकौं जांनत नांहिं, अग्यांनी बिषयात ॥ ५४ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

श्री सुक कहत कि त्रास सौं, कंपित रुकमनि अंग ॥
रुक्यौ कंठ सूकै अधर, प्रभु पद गहे अभंग ॥ ५५ ॥
रुकमनि जू की इहि दसा, लषि कैं कृस्न कुमार ॥
निज चित मैं प्रभु करि दया, किय न रुकम संघार ॥ ५६ ॥
मूंछ रु दाढी रुकम की, मूंडि बस्त्र सौं बांधि ॥
रथ पाछै लटकाय लिय, सारै सौं रस सांधि ॥ ५७ ॥
रुकम सैंन संघारि सब, जादव जुत बलिरांम ॥
आयै कृस्नं कुमार पैं, जीति भलैं संग्राम ॥ ५८ ॥
रुकमी की अैसी दसा, लषि बोलै बलिदैव ॥
अहौ कृस्न इहि करम तुम्ह, कीनौं नांहिं सुभैव ॥ ५९ ॥
मूंछ रु दाढी मूंडनौ, है मारन सम बात ॥
यौं कहि दियौ छुडाय बहि, रुकमी महा कुपात ॥ ६० ॥
फिरि बोलै बलिदेव जू, रुकमनि जू सौं बैंन ॥
बधू तुम्हारै भ्रात कौ, हम्ह दिय दंड अचैंन ॥ ६१ ॥
ताकौं तुम्ह जु बुरौ मती, मांनौ निज मन मांहिं ॥
प्रांनी अपनैं करम सौं, सुषदुष लहत सदांहिं ॥ ६२ ॥
फिरि बोलै श्रीकृस्नं सौं, अग्रज अैसै भाय ॥
अहौ कृस्न मरजाद सब, तुम्ह जांनत अधिकाय ॥ ६३ ॥
मारन लाइक दोषहूं, जो करहीं निज बंधु ॥
तौहू कबहुं न मारियै, वांकौ काहू संधु ॥ ६४ ॥
बहुरि बधू सौं अैं बचन, कहत भयै बलिदैव ॥
अहो बधू म्हैं कहत सौ, सुनियैं बात सभैव ॥ ६५ ॥
जु छत्रि धरम अैसौ इहै, बिधनां दयौ बताय ॥
भ्रात भ्रात कौं मारतै, कछु न दया चित्त लाय ॥ ६६ ॥
बहुरि कहत भय भ्रात सौं, अैसै अग्रज बात ॥
धरम धार निज धरम कौं, द्रिढ़ राषत बिषयात ॥ ६७ ॥

राज्य भूमि धन मांन तिय, इन्ह बस्तन कैं काज॥
करत बैर अपनैंन सौं, मूरष मनष निलाज॥ ६८॥
रुकमनि जू सौं फेरि यौं, बोलै श्री बलिदेव॥
अहौबधू राषहुँ भलैं, पतिब्रत धरम सुसैव॥ ६९॥
दुष्ट भ्रात कौं तुम्ह भलौ, चाहत हौ मनमांहिं॥
इहै तुम्हारी बुधि कछू, आछी लागत नांहिं॥ ७०॥
उदासीन अरि मित्र जनां, बिच संसार निदांन॥
माया मौहित जीव इहि, मांनि लैत अग्यांन॥ ७१॥
अैंक आत्म कौं लषत है, है ग्यांनी बहु रूप॥
दीसत जल मैं बऊत ज्यौं, रवि प्रतिबिंब अनूप॥ ७२॥
त्रिगुन पंच महाभूत पुनि, पंच प्रांन अनुसार॥
बन्यौ सरीर मनुष कौं, सौ अनित्य निरधार॥ ७३॥
बन्यौ अबिद्या करि इहै, सब प्रांनीन सरीर॥
उपजावत संसार सौं, जीवहिं सदा अधीर॥ ७४॥
आत्मा सौं किहुँ सौं कबहुँ, नहिं संजोग बिजोग॥
सबनि प्रकासक आत्म है, सूर्ज समांन प्रजोग॥ ७५॥
जन्मादिक है देह कौ, है आत्मा कौं नांहिं॥
घटत बढत ज्यौं ससिकला, ससि इकसार सदांहिं॥ ७६॥
दिवस अमावस ससिहिं ज्यौं, दुषदाई निरधार॥
त्यौं ही जीवन कौ लगी, मृत्यु महा दुषसार॥ ७७॥
अनुभव झूठी बस्तु कौ, ज्यौं सुपनैं मैं हौत॥
तइसै ही झूठै सही, जनम मरन उदौत॥ ७८॥
तातैं टारि अग्यांन कौं, करि तत्व ग्यांन बिचार॥
सावधांन हौ बधू तुम्ह, पतिब्रत धरम मझार॥ ७९॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि बलिदेव जू, कैं सुनि अैसैं बैंन॥
समाधांन मनकौं कियौ, रुकमनि जू लहि चैंन॥ ८०॥
प्रांन मात्र रुकमी बच्यौ, तैज रह्यौ सब जात॥
मिटी प्रतंग्या लाज गमि, भयौ कुरूप कुपात॥ ८१॥
नगर भोजकटि नांम रचि, वास कियौ ता मांहिं॥
मिटी प्रतंग्या ता लियै, गौ कुंदिन पुर नांहिं॥ ८२॥
बउत नृपन कौं जीति प्रभु, लीनैं रुकमनि संग॥
द्वारावति आवत भयै, प्रफुलित जुत उछरंग॥ ८३॥
भलै बेद बिधि रीति सौं, कीनौं ब्याह उछाह॥
घर घर द्वारावती मही, उत्सव भयौ अथाह॥ ८४॥

पुरी द्वारिका मधि भयै, प्रसनं सकल नरनारि॥
पटभूषन बहुँ भांति कै, ल्यायै भैंट अपारि॥ ८५॥
कुरु सृंजय कैकैय जदु, कुंति बिदर्भ जु देस॥
इन्हकैं नृप आयै हुतै, दैषन ब्याह सुदेस॥ ८६॥
प्राप्त भयै आनंद कौं, बै लषि ब्याह उत्साह॥
सुनि रुकमनि जू कौ हरन, अचिरज सबनि अथाह॥ ८७॥
दैषि दैषि सुंदर सुषद, दुलहनि जुत ब्रजचंद॥
द्वारावति वासीन कैं, भयौ परम आनंद॥ ८८॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे भाषा ब्रजदासी
कृते चतुः पंचासत्तमोऽध्यायः ॥ ५४॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ पंच पंचासत्तमोऽध्यायः ॥

(प्रद्युम्न का जन्म और शम्बरासुर का वध)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - श्री सुक कहत कि कांम हौ, वासुदैव कौ अंस॥
भस्म भयौ सिव क्रौध सौं, बात सुजक्त प्रसंस॥ १॥
सौ फिरि धारन देह निज, प्रभु कैं सरनै आय॥
कृस्नं बीर्ज तैं रुकमनी, कैं गरभहिं प्रगटाय॥ २॥
जास नांम प्रद्युमन्य हुव, प्रगट्यौ पिता समांन॥
सुंदरता सुभ करम गुन, जिहं सुत मधि अप्रमांन॥ ३॥
संबर बैरी काम कौं, सौ दस दिवसहिं मांहिं॥
प्रद्युमन कौं बिच सिंधु कैं, डार दियौ निज ठांहिं॥ ४॥
निगलि जात भौ मच्छ कौउ, प्रदुमन कौं वां बार॥
सौ मच्छ पकर्यौ बधिक किहुँ, डारि जाल बिसतार॥ ५॥
बह मछ संबर दैत्य कैं, भैंट कियौ लै जाय॥
ताकौ चीरत प्रद्युमन, बालक कढ्यौ सुभाय॥ ६॥
तिन्हकौं मायावती पैं, सौंप सु संबर दीन॥
कह्यौ कि पालौ या सिसुहिं, ह्वै सनैह आधीन॥ ७॥
तिया कांम की रति अपुन, धरि मायावति नांम॥
छिपि कैं करत भई टहल, संबर असुरहिं धांम॥ ८॥
नारद जू तहँ आय कैं, मायावति कैं पास॥
कहत गयै समझाय कैं, ऐसै सहित हुलास॥ ९॥

इहि तेरौ पति कांम है, संबर दैत्य सु याहि॥
बिच समुद्र डार्यौ हुतौ, सत्रु भावना सुचाहि॥ १०॥
पहलै सिव जार्यौ हुतौ, कांमहिं रिस सरसाय॥
तिहँ उतपति तू चहत ही, मिल्यौ सु आपहिं आय॥ ११॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि प्रदुमनहिं तब, रति अपनौं पति जांन॥
अति सनैह करती भई, नारद आग्यां मांन॥ १२॥
फिरि थोरैही दिनन मैं, प्रदुमन भयै किसौर॥
इन्हहिं लषै सौ हौत तिय, मोहित प्रीति अकौर॥ १३॥
बडे नैंन बांकि भौंहे, स्यांम रंग सुभ सौभ॥
अैसौ निजपति जांनि धरि, मायावति सुष लौभ॥ १४॥
सुमंद हासि लज्जा सहित, लागी करनि कटाछि॥
बाल भाव मिटि प्रगट हुव, कंत भाव सुभ ताछि॥ १५॥
प्रदुमन बोलै आज तौ, बुधि कइसी है माय॥
माता कौं सौभाव तजि, नारी भाव लषाय॥ १६॥

॥ रतिरुवाच॥

रति बोली श्रीकृस्न कैं, तुम्हहिं हौं पुत्र सुजांन॥
सत्रुहिं तुम्हारौ इहि बडौ, संबर दैत्य निदांन॥ १७॥
बिच समुद्र तुम्ह कौं इहै, आयौ हुतौ जु डारि॥
तांह निगलिगौ तुम्हहिं मछ, गह्यौ बधिक बिच जारि॥ १८॥
तब तुम्ह मछ कै उदर तैं, कढि आयौ मो पासि॥
म्हैं रति अस्त्री हूं रावरि, तुम्ह मनौज सुषरासि॥ १९॥
अब या संबर असुर कौं, मारहू सत्रु पिछांनि॥
जांनत है माया बउत, इहै दुष्ट अघ षांनि॥ २०॥
ह्वै हैं तुम्ह जननी बिकल, पुत्र नैह जु अनुभाय॥
कुररि पछिनि कुररात ज्यौं, अरु बछरा बिनु गाय॥ २१॥
यौं कहि मायावति कियौ, इक माया उपदेस॥
जासौं माया मिटत सब, रहन न पावत लैस॥ २२॥

॥ श्री सुक उवाच॥

प्रदुमन कहि दुर्बचन तब, रिस संबरहिं बढाय॥
भयै बुलावत जुध निमत, निज भुज ताल बजाय॥ २३॥
ज्यौं अहि दाब्यौ पांव सौं, दौरै समुष रिसाय॥
त्यौं संबर कर लै गदा, जुद्ध करन कौं आय॥ २४॥
प्रदुमन कौ निज गदा कौ, करिकैं दुष्ट प्रहार॥
नाद करत भौ बज्र सम, संबर करि ललकार॥ २५॥

प्रदुमन अपनीं गदा सौं, गदा असुर की रौकि॥
किय प्रहार निज गदा कौ, संबर तन सिर वौकि॥ २६॥
तब संबर मय दैत्य की, माया प्रगट सु कीन॥
तासौं बरिषां पाथरनि, लागी हौन सरीन॥ २७॥
जांसौं प्रदुमन बिकल ह्वै, करि मन मांहिं बिचार॥
अपनीं माया सतगुनी, कीनी प्रगट सुढार॥ २८॥
जासौं माया और सब, हौय जात है दूर॥
अैसी माया प्रगट किय, प्रदुमन जु विद्या पूर॥ २९॥
अहि गंधर्ब पिसाच अरु, राछि सुगुह्यक मेलि॥
माया संबर प्रगट किय, सौ दिय प्रदुमन ठेलि॥ ३०॥
फिरि कुंडलन किरीट जुत, वां संबर कौ सीस॥
प्रदुमन काट्यौ षडग सौं, धरि निज चित अति रीस॥ ३१॥
सुरनि सुमन वारिष करी, अरु की अस्तुति बनाय॥
स्वर्ग लौक आनंद हुव, बजि दुंदुभि सुषदाय॥ ३२॥
रति प्रदुमन कौं लैं तबै, ह्वै कै मग आकास॥
द्वारावति आवत भई, निज चित धरै हुलास॥ ३३॥
पाय अधिक आनंद दुहुँ, रति तिय प्रदुमन नाह॥
प्रभु कैं अंतहपुर बिषै, आयै सहित उमाह॥ ३४॥
जइसैं घन बिजुरी सहित, सौभित महा रसाल॥
ज्यौं प्रदुमन अस्त्री सहित, पावत सौभ बिसाल॥ ३५॥
मंद हसनि पंकज नयन, स्यांम रंग अभिरांम॥
पीत बसन आजांनभुज, मुष सौभा कौ धांम॥ ३६॥
अैसै प्रदुमन कुंवर कौ, रूप अनूप निहार॥
कृस्न जांनि कैं छिपि गई, लज्या करि सब नारि॥ ३७॥
फिरि सब तिय रनवास की, निश्चै हरिहीं मांनि॥
हसत हसत प्रदुमन निकट, सब ठाढी भइ आंनि॥ ३८॥
ताहि समैं रुकमनिय जू, प्रदुमन जू कौं दैषि॥
निज सुत की सुध करत भइ, अति सनैह अवरैषि॥ ३९॥
सुत सनैह सौं सतन तैं, निकस चली पय धार॥
कहत भई इह नरन मैं, कौ है रतन सुढार॥ ४०॥
पुत्र कौंनुं कौं इहि अरु किहि, राष्यौ उदरहिं मांहिं॥
कौ तिय यांकै संग है, जांनि परत सौं नांहिं॥ ४१॥
म्हैरे सुत कौं लै गयौ, हुतौ कौउ अघधांम॥
जास पुत्र कौ रूपहिं हौ, अैसौ ही अभिरांम॥ ४२॥

जो बह जीवत हौयगौ, मो सुत किहुँ कैं पास॥
तौ ह्वै हैं इतनौ बडौ, ससि सम जास प्रकास॥ ४३॥
आकृति चितवनि अंग गति, स्वर हांसी मुष बैंन॥
यामैं सबही कृस्नं सम, दीसत प्रगट सुषैंन॥ ४४॥
ह्वै न कबहुँ मो पुत्र इहै, मोहि परत है जांनि॥
बाढत है यामै अधिक, म्हैरी प्रीति निदांनि॥ ४५॥
बांयैं म्हैरे अंगहूं, सब फुरकत है आज॥
तातैं जांनत सुभ सगुन, है सुत मिलबै काज॥ ४६॥
निज चित मैं रुकमनिय जू, ऐसै करत बिचार॥
तबही सासू ससुर अरु, आयै कंत कुमार॥ ४७॥
जांनत है श्रीकृस्नं जू, पै कछु बोलै नांहिं॥
मनुष भाव दिषवत भये, सबहिंन कौ वां ठांहिं॥ ४८॥
प्रदुमन कौं कारन सबै, नारद जू वां बार॥
कहत भयै श्रीकृस्नं सौं, आछै करि निरधार॥ ४९॥
नारद जू कै बचन सुनि, सबनि भयौ आनंद॥
मनु प्रदुमन नउतन जनम, धरि आयौ सुषकंद॥ ५०॥
श्री बसुदैव रु देवकी, पुनि रुकमनि श्रीकृस्नं॥
प्रदुमन सौं मिलि मोद लहि, भयै अधिक चित प्रस्नं॥ ५१॥
द्वारावति वासीन कै, अचिरज भयौ अपार॥
नष्ट भयौ है सौक बहुरि, आयौ जियत कुमार॥ ५२॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते पंच पंचासत्तमोऽध्यायः ॥ ५५॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ षट्पंचासत्तमोऽध्यायः ॥

(स्यमंतक मणि, जाम्बवती और सत्यभामा के साथ श्रीकृष्ण
का विवाह)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि प्रभु कौ कियौ, सत्राजित जु अपराध॥
चूक छमा कै काज तब, कर्यौ बिचार अगाध॥ १॥
सतिभामा अपनीं सुता, दिय श्रीकृस्नहिं ब्यांहिं॥
मनि स्यमंतक दहैज मैं, दीनी सहित सचांहिं॥ २॥

॥ राजोवाच ॥

इहि सुनि राजा परीछित, पूछत भयौ निदांन॥
सत्राजित प्रभु कौ कहा, किय अपराध अजांन॥ ३॥
रु कां तैं मनि स्यमंतक, वाहि प्राप्त हुव आय॥
सौ कहियै सुकदेव जू, सकल भेद समझाय॥ ४॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि हौ सूर्ज कौ, नृप जु सत्राजित भक्त॥
रवि हुव वांकौ सषा ह्वै, अति प्रसंन रु अनुरक्त॥ ५॥
रु दीनी मनि स्यमंतक, मित्रहिं मित्रता भाय॥
सत्राजित सौ कंठहिं निज, पहरि मनहिं उमगाय॥ ६॥
आयौ पुर बिच द्वारिका, समुष कृस्नं दरबार॥
मनि पहरन परताप सौं, बढ्यौ तैज अनपार॥ ७॥
वांकौ लषि संदेह भौ, सबहिन कैं मनमांहिं॥
जांनत भयै कि सूर्ज इहि, आवत है या ठांहिं॥ ८॥
प्रभु चौपर षैलत रहै, आप सभा कैं मध्य॥
तिह्नैं जाय सैवक नयौ, कह्यौ भैदि सप्रसध्य॥ ९॥
हे नारायन संष पद्म, चक्र गदा कर धार॥
नमस्कार तुम्ह कौं प्रभू, परम प्रेम अनुसार॥ १०॥
दामौदर जदुनाथ हे, कमल नैंन गौविंद॥
जगकैं कारन जगतपति, दीनबंधु बृजचंद॥ ११॥
करिबै दरसन रावरौ, आवत है ग्रिह राज॥
निज किरनन सौं नरन की, दिष्ट दबावत आज॥ १२॥
तुम्हकौं ढूंढत फिरत है, सुरगन हूं सब ठांम॥
तुम्ह छिपिकैं जदुकुल बिषैं, प्रगट भयै हौ स्यांम॥ १३॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि सब जनन कैं, बचन सुसुनि भगवांन॥
है सत्राजित जु मनि धरैं, नांहिंन सूर्ज निदांन॥ १४॥
सत्राजित जु घर जाय निज, पढै ब्राह्मननि पास॥
बह मनि धरबावत भयौ, लै बिच सूर्ज निवास॥ १५॥
आठ भार कंचन प्रगट, निति वां मनि तैं हौत॥
अरु पहरै कौं मनुष तौ, बाढै क्रांति उदौत॥ १६॥
मन जु अढाई अैंक कौ, कहियत इक भार॥
आठ भार अस प्रगट ह्वै, निति वां मनि अनुसार॥ १७॥
ब्याधि असुभ चिंतामनी, अहि मायावी काल॥
रहत न पावै ह्वै जांह, बह मनि परम रसाल॥ १८॥

अैंक दिनां श्रीकृस्न जू, सत्राजित कैं जु पास॥
उग्रसैंन नृप काज मनि, मांगी सहित हुलास॥ १९॥
सत्राजित तबै लौभ करि, बह मनि दीनी नांहिं॥
बचन भंग प्रभू कौं कियौ, धरि अग्यांन मनमांहिं॥ २०॥
फिरि प्रसैंन किहुँ इक दिवस, सत्राजित कौ जु भ्रात॥
पहरि कंठ निज मनि बहै, गौ आषैट बिष्यात॥ २१॥
तांह प्रसैंन कौं सिंघ हति, बहि मनि लई छिनाय॥
जांबवांन फिरि रींछ बह, मार्यौ सिंघ रिसाय॥ २२॥
मनि लै अपनीं गुफा मैं, बैठ्यौ जाय निचिंत॥
निज पुत्री कै जु पालनै, बांधी मनि जु सिमंत॥ २३॥
सत्राजित कैं चित बढ्यौ, अधिक सोच वां बार॥
सौचि सौचि कैं कहत भौ, बचन सु या अनुसार॥ २४॥
म्हैरौ भाई मनि पहरि, षैलन गयौ सिकार॥
ताकौ कहुँधा कृस्नं जू, मार्यौ है निरधार॥ २५॥
कहत भयै अैं बात सुनि, पुरजन आपस मांहिं॥
बहुर्यौ सुनि श्रीकृस्न जू, सोच कियौ चित ठांहिं॥ २६॥
मो कौ लग्यौ कलंक इहि, झूठौ प्रगट निदांन॥
तिहि बिचार कीजै कहा, अब या बैंर प्रमांन॥ २७॥
यौं बिचार कर कृस्न जू, लै पुरजन निज संग॥
ढूंढन चलै प्रसैंन कौं, कहवत मिटै कुढंग॥ २८॥
देषैं आगै जाय तौ, घौरां सहित प्रसैंन॥
मूवौ पर्यौ है सिंघ नैं, मार्यौ बह मनि लैंन॥ २९॥
आगै फिरि दैषत भयै, सिघहुँ कौं वन ठांम॥
हत्यौ रींछ बलबांन किहुँ, छीन सुमनि अभिरांम॥ ३०॥
चरन चिह्न वांकै बहुरि, आगै लषि भगवांन॥
निश्चै करि जान्यौ कि है, जांबवांन बलवांन॥ ३१॥
जांबुवांन कौ गुफा ग्रिह, जामैं अति अंधियार॥
गयै अकेलैहीं जांह, सुंदर कृस्नं कुमार॥ ३२॥
और सकल संगीन कौं, राषि गुफा कैं द्वार॥
प्रभू अकेलैहीं धंसै, कठिन ठौर वां बार॥ ३३॥
देषैं जो बहिं जायतौ, मनि सिमंत अभिरांम॥
बंधी षैलबै काजि कौं, पुत्री जु पलनां ठांम॥ ३४॥
लषि अपूर्व श्रीकृस्न कौ, वा कन्या की जु धाय॥
भई पुकारत सौर करि, निज चित अति भय षाय॥ ३५॥

सुनि कैं बांकौं सौर तब, जांबुबांन बलवांन॥
बिनु जांनै श्रीकृस्न सौं, लग्यौ करन घमसांन॥ ३६॥
आयुध पाथर ब्रछ भुजा, इन्हसौं आपस मांहिं॥
द्वंद्व जुद्ध हौ तौ भयौ, हारि लहत कौं नांहिं॥ ३७॥
राति दिवस मुष्टीन सौं, बज्र समांन प्रहार॥
भयौ अठाइस दिनन लौं, बढि रिस दुहुँनि अपार॥ ३८॥
प्रभु कर मुष्टि प्रहार सौं, जांबुवांन कै अंग॥
सिथल भयै स्त्रमकन उमडि, अचिरज करि तजि जंग॥ ३९॥
जांबुवांन बोल्यौ बिहँसि, हे स्वामी करतार॥
प्रांन देह इंद्रीन कैं, बल तुम्हहीं निरधार॥ ४०॥
तुम्ह हौ पुरष पुरान हरि, बिस्नु सबन कैं ईस॥
म्हैं निश्चै जांनै अबैं, निज चित बिसवाबीस॥ ४१॥
जगतहिं सिरजनहार है, जिन्ह तुम्ह सिरजनहार॥
कालरूप परमातमा, कारन सबनि अपार॥ ४२॥
तनकहि क्रौध कटाछि जिन्ह, प्रभु कैं करनैं मांहिं॥
मारग दिय सागर डरपि, बांधि सैत उहिं ठांहिं॥ ४३॥
लंका कौं जीतत भयै, करि गाढौ घमसांन॥
दसौ सीस लंकैस कैं, तुटै लागि जिन बांन॥ ४४॥
ऐसै तुम्ह म्हैरे प्रभू, श्री रघुनाथ उदार॥
म्हैं अब पहचांनै भलैं, हौ श्रीकृस्नं कुमार॥ ४५॥
ऐसै जब कीनी अस्तुति, जांबुवांन हरि भक्त॥
तब वांसौ बौलत भयै, प्रभू हौय अनुरक्त॥ ४६॥
हम्ह इहि मनि लैबै इहां, आयै लषि पद अंक॥
या मनि चोरी कौं लग्यौ, हम्हकौं झूठ कलंक॥ ४७॥
तब प्रभु अपनैं हाथ सौं, जांबुवांन कैं अंग॥
छुअत भयै तासौं सबै, पीडा ह्वै गइ भंग॥ ४८॥
जांबुवान प्रभु कौ तबै, मनि जुत कन्या दीन॥
जांबुवती जिहँ नांम अति, सुंदर परम प्रवीन॥ ४९॥
राषै हे संगीन प्रभु, गुफा द्वार वा ठांम॥
तैं द्वादस दिन दैषि मग, गयै दुषि ह्वै धांम॥ ५०॥
मात पिता अरु रुकमनी, सुहृद मित्र सबहिं जात॥
बिलषत हैं अति दुषित ह्वै, मांनत दैवनि जात॥ ५१॥
गारी दै सत्राजितहीं, सबै कहत धिक्कार॥
मनवत दैबी कौं सकल, प्रभु आवन अनुसार॥ ५२॥

दैवी बर दिय आज, श्रीकृस्न मिलैंगै आय॥
तादिन आयै द्वारिका, तिय जुत प्रभु सुषदाय॥ ५३॥
मनि पहिरैं अस्त्री सहित, सब श्रीकृस्नहिं दैषि॥
प्रसंन्न भयै उत्सव भयौ, द्वारावती बिसैषि॥ ५४॥
उग्रसैंन नृप पास प्रभु, सत्राजितहीं बुलाय॥
मनि दिय अरु मनि की सबै, बात कही समझाय॥ ५५॥
रु सत्राजित लज्जित भयौ, रह्यौ जु सीस झुकाय॥
मनि लैं कैं अति दुषित ह्वै, गौ निज गैहि पलाय॥ ५६॥
सत्राजित अतिहिं डरपि कैं, कियै निज चित बिचार॥
कह्यौ बड्डुन सौं बैर सौ, मिटै सु कौंनुँ प्रकार॥ ५७॥
प्रसनं हौंहिं श्रीकृस्न जू, मो सौ किहि अनुभाय॥
अब ह्वै कइसै मो भलौ, लौक न कहै बुराय॥ ५८॥
समझि कियौ नहिं काम म्हैं, मनि कौ लोभ सुकीन॥
तातैं मनि जुत मो सुता, दैहुँ हौय हित लीन॥ ५९॥
याही सौं मिट जायगौ, सकल बैर अपराध॥
सत्राजितहिं अैसौ कियौ, हिर्दै बिचार अगाध॥ ६०॥
यौं बिचारि मनि जुत सुता, निज सति भांमा नांम॥
दिय बिबाहि श्रीकृस्न कौं, मैटि बैर दुषधांम॥ ६१॥
कहत भयै सत्राजितहीं, अैसै कृस्नं कुमार॥
तुम्ह सूरज कैं भगत हौ, रविमनि दई सुढार॥ ६२॥
सतिभांमा बिनु और कछु, नहिं तुम्हरै संतान॥
तातैं तुम्ह पाछै जु मनि, अैहैं हम्हहिं सथांन॥ ६३॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते षट्-पंचासत्तमोऽध्यायः ॥ ५६॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ सप्त-पंचासत्तमोऽध्यायः ॥

(स्यमंतक हरण, शतधन्वा का उद्धार तथा अक्रूरजी को पुनः
द्वारका बुलाना)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा- सुक कहत कि ग्रिह लाष कैं, रचि कौंरव दुषदाय॥
राषि पांडवन कौं जांह, दीनी आगि लगाय॥ १॥

गयैहुं पांडव निकसि पैं, प्रगटि भई इहि बात॥
कुंती जुत पांडव भयै, भसम सुजरि बरि गात॥ २॥
तातैं लोकाचार बिधि, करिबै कौ भगवांन॥
भयै पधारत भ्रात जुत, पुर हस्तनां सथांन॥ ३॥
कृपाचार्ज भीषम बिदुर, गांधारी पुनि द्रौन॥
इन्हसौं मिलि पांडवन कौ, दुष किय प्रभु गहि मौन॥ ४॥
समैं पाय ऐसौ दुहूं, कृतवरमा अक्रूर॥
सतधन्वा सौं बचन यौं, कह्यौ प्रीति कर पूर॥ ५॥
श्रीकृस्न रु बलिदेव जू, है न द्वारिका ठांम॥
तातैं सत्राजितहीं हति, मनि लीजै अभिरांम॥ ६॥
सतिभामां कन्या पहलि, हम्हहिं कही हैं दैंन॥
फिरि दीनी श्रीकृस्न कौं, बह निज सुता सुषैंन॥ ७॥
तातैं मारन जोग्य है, सत्राजित जु निरधार॥
याकैं मारैं मैं कछू, नांहिंन पाप प्रकार॥ ८॥
इहि सुनि द्वारावती कौं, सतधन्वा कुट चाल॥
निसीकौं सत्राजितहिं हति, मनि लै गयौ षुष्याल॥ ९॥
सत्राजित की तिया बउत, कीनौ रोय बिलाप॥
तऊ दया ल्यायौ न चित, जात रह्यौ करि पाप॥ १०॥
सतिभामां रौवत भई, मर्यौ पिता निज दैषि॥
कीनैं बउत बिलाप धरि, चित चिंता अनलैषि॥ ११॥
दैह पिता की राषि कैं, पात्र तेल कैं मांहिं॥
आप गई श्रीकृस्न पैं, नगर हस्तनां ठांहिं॥ १२॥
निज पितु मरनै की सबैं, बात कही समझाय॥
रांम सांम सुनि कैं करी, चित चिंता अधिकाय॥ १३॥
सतिभामां निज संग लै, जुत अग्रज भगवांन॥
रथ चढि कैं आवत भयै, द्वारावती सथांन॥ १४॥
सतधन्वा कैं हतन कौं, लागै करन बिचार॥
सतधन्वा इह बात सुनि, डरपि अधिक निरधार॥ १५॥
कृतवरमा अक्रूर कैं, पास सतधन्वा जाय॥
कह्यौ मारिहैं कृस्न मुहि, अब तुम्ह करौ सहाय॥ १६॥
कृतवरमा अक्रूर अबैं, ऐसै कह्यौ सुनाय॥
रांम सांम सौं बैर हम्ह, करि न सकैं किहुँ भाय॥ १७॥
है ईस्वर भगवांन वै, रांम सांम दुहुँ भ्रात॥
उन्हसौं कियै बिरोध है, भलौ नांहीं बिषयात॥ १८॥

जिन्ह प्रभु कैं अपराध सौं, मर्यौ कंस दुषपाय॥
जिन्हसौं सत्रांह बार लरि, मागध गयौ पलाय॥ १९॥
सतधन्वा सौ कहे जब, कृतवरमा इहि बैंन॥
फिरि बोलै अकरूर जू, ऐसै बचन सुबैंन॥ २०॥
हम्हहुँ बिरोध न करि सकैं, प्रभु सौं किहूं प्रकार॥
सकल बिस्व कैं नाथ हैं, वै श्रीकृस्नं कुमार॥ २१॥
उतपति पालन प्रलै जग, करता जें करतार॥
ब्रह्मादिकहूं लहत नहिं, जिन्ह लीला कौ पार॥ २२॥
सात बरष कैं जिन प्रभू, गिरवर लयौ उठाय॥
जइसै छतनां कौं पकरि, बालक लैं उचकाय॥ २३॥
जिन्हकैं अदभुत कर्म हैं, लहि न सकत कौं पार॥
आत्म अनूप अनंत हरि, तिह्नैं प्रनांम सुढार॥ २४॥
ऐसै नटै अकरूर जब, सतधन्वा भय पाय॥
मनि अकरूरहिं सूंपि कैं, फिरि अपनैं घर जाय॥ २५॥
इत सत जौजन लौं चलैं, ऐसैं अस्व ह्वै स्वार॥
छौडि द्वारका कौं भज्यौ, प्रभु कैं डर अनुसार॥ २६॥
रांम सांम इहि बात सुनि, ह्वै सिंदन परि स्वार॥
वा सतधन्वा कैं लगै, पाछै रिस अनुसार॥ २७॥
मिथिला पुर लौं पहुंचि जब, सतधन्वा कौ किंकान॥
गिर्यौ तबै पायन भज्यौ, सतधन्वा सुनिदांन॥ २८॥
तब रथ तैं श्रीकृस्न हूं, उतरि भजै बहिं लार॥
पहुँचि सीस सतधन्वा कैं, कीनौं षडग प्रहार॥ २९॥
सतधन्वां कौं काटि सिर, कृस्न कुंवर वां बार॥
वाके बस्त्रननि मधि मनि, ढूंढी भलैं प्रकार॥ ३०॥
वह मनि नहिं पाई जबै, प्रभु अग्रज पै आय॥
कह्यौ ब्रथा मार्यौ इहै, मनि पायै नहिं पाय॥ ३१॥
तब बोलै बलिदेव जू, पुरी द्वारिका मांहिं॥
सतधन्वा ह्वै हैं दई, बह मनि किहुँ कर ठांहिं॥ ३२॥
ठीक करौ तुम्ह जाय कैं, नगर द्वारका मांहिं॥
हम्ह मिलिबै नृप जनक सौं, जात मिथलपुर ठांहिं॥ ३३॥
ऐसै कहि बलदैव जू, गयै जनक नृप पास॥
उठि आदर अति जनक नृप, कीनौं सहित हुलास॥ ३४॥
कीनी श्री बलिदैव की, पूजा बिधिबत भाय॥
किते महिनां रांम उहां, बसत भयै सुषपाय॥ ३५॥

आय द्वारका कृस्नं जू, सतिभामां पैं जाय॥
कह्यौ कि सतधन्वा हत्यौ, वां पैं मनि नहिं पाय॥ ३६ ॥
यौं कहि बाहरि आय प्रभु, द्विज प्रौहितन बुलाय॥
मृतक ससुर कैं क्रियाकृत, करवायै सब भाय॥ ३७ ॥
सतधन्वा कौं मर्यौ सुनि, कृतवरमा अकरूर॥
अधिक डरपि श्रीकृस्न सौं, भाजि गयै कहुँ दूर॥ ३८ ॥
मनि लैं भलैं अकरूर जु, छौडि द्वारका ठांहिं॥
तबतैं चिंता रोग अरु, असुगन बढै अथांहिं॥ ३९ ॥
इहै बात बिच द्वारका, कहत भयै अग्यांन॥
जांह हौंहि श्रीकृस्न तांह, मनि कौ कहा प्रमांन॥ ४० ॥
मूरति परमानंद की, कृस्नं कुंवर जिहँ ठौर॥
तांह कबहुँ हौंहीं नांहिं, रोग कलैस सजौर॥ ४१ ॥
हुतौ अैक गुन इहि अधिक, पितु अक्रूर कैं मांहिं॥
बसै जिहां काल न परै, वरषै मैह अथाहिं॥ ४२ ॥
तातैं पिता अक्रूर कैं, सफल्क कौं कासी राय॥
बौलि सुता निज गादिनी, दीनी प्रीति जताय॥ ४३ ॥
उहां काल दुष दूरि भौ, बरषै मैह सुढार॥
कासी कौ राजा भयौ, अधिक प्रसंन वां बार॥ ४४ ॥
मनि बहि रहे अक्रूर पैं, तिहँ प्रताप अनुभाय॥
काल उपद्रव मरी दुष, ह्वै न बसै जहँ जाय॥ ४५ ॥
तातैं सब जांनत भयै, पिता समांन प्रताप॥
निश्चै भयौ अक्रूर कौ, जग जस भयौ अमाप॥ ४६ ॥
सुनि गाथा अकरूर की, कृस्नं कुँवर करतार॥
दूरि देस तैं बौलि लिय, अकरूरहिं निरधार॥ ४७ ॥
अति आदर अकरूर कौं, करि कहि बात अनैंक॥
ता पाछैं श्रीकृस्नं जू, बोलै सहित बिवैक॥ ४८ ॥
हे अक्रूर सतधन्वा दिय, तुम्हकौं मनि निरधार॥
पहलैं ही जांनत रहै, हम्ह निज बुधि अनुसार॥ ४९ ॥
सत्राजित कैं पुत्र जु नाहिं, तातैं घर धन वात॥
निश्चै दुहिता लैंहिं इहि, बेद बिदित है बात॥ ५० ॥
करम करै दुहित्रहिं सबै, नाना कैं निरधारि॥
करज हौय सौ दैय धन, हौय सु लैंहिं संभारि॥ ५१ ॥
वां मनि सूं म्हैरै कछू, चित मैं नांहिं सनेह॥
सतिभामां बलिदैव जू, कैं मन इहि संदेह॥ ५२ ॥

बहि मनि है श्रीकृस्न पैं, तातैं अब या बार॥
तुम्ह मनि सबनि दिषाहु मो, बचन मांनि निरधार॥५३॥
मनि प्रतापही सौं भलै, तुम्ह किय जिग्य अपार॥
तातैं मनि तुम्ह पैं सही, नहिं नटियै या बार॥५४॥
बचन कहे अकरूर सौं, जब अैसै श्रीकृस्नं॥
तब पट तैं मनि षौलि कैं, दिय अक्रूर तजि तृस्नं॥५५॥
बह मनि सबनि दिषाय प्रभु, दियै अक्रूरहिं फैरि॥
निज कलंक टार्यौ प्रभू, अैसौ न्याव नवैरि॥५६॥
सरधा सौं प्रभु चरित इहि, कहै सुनै जो कौय॥
ताकैं सकल कलंक मिटि, प्राप्त महासुष हौय॥५७॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते सप्त पंचासत्तमोऽध्यायः ॥५७॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अष्ट पंचासत्तमोऽध्यायः ॥

(भगवान श्रीकृष्ण के अन्यान्य विवाहों की कथा)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - श्री सुक कहत कि इक समैं, इंद्रप्रस्थ मधि आय॥
पांडव पांचौं प्रगट हुव, जिन्हकैं कृस्नं सहाय॥१॥
जिन्हसौं मिलिबै कृस्न जू, करि उमंग अधिकाय॥
सात्यकि जादौं संग लै, पुर हस्तनां सौं आय॥२॥
पांडव पांचौ मुदित हुव, लषि आवत ब्रज चंद॥
उठि आदर कीनौं बउत, पाय परम आनंद॥३॥
जइसै आयै प्रांन कैं, इंद्री हौत सचैत॥
त्यौं प्रभु सौं मिलि प्रसंन हुव, पांडव पंच विजैत॥४॥
मिलतै ही श्रीकृस्नं सौं, मिटै सकल संताप॥
सुषदाता प्रभु कौं बदन, लषि सुष भयौ अमाप॥५॥
भीम जुधिष्ठर दुहुँनि कैं, छुयै कृस्नं जू पाय॥
अर्जुन सौं मिलतै भयै, प्रभु उर सौं उर लाय॥६॥
नमसकार श्रीकृस्नं कौं, कियौ नकुल सहदैव॥
सिंघासन पैं कृस्नं जू, बैठत भयै अजैव॥७॥

नई बिबाही द्रौपदी, सहित लाज उहिं आय॥
बंदन किय श्रीकृस्न सौं, करि सनैह अधिकाय॥ ८॥
सात्यकि कौं कीनौं सबनि, अति आदर वां बार॥
औरहुँ प्रभु संगीन कौं, आदर कियौ अपार॥ ९॥
कुंती जू सौं कृस्नं जू, करत भयौ परनांम॥
कुसल प्रसनं पूछै बिहँसि, कमल नैंन सुषधांम॥ १०॥
कुंती जू हूंस प्रीत सौं, सबै बंधु कुसलात॥
पूछत भई उमंग करि, प्रफुलित मन द्रिगपात॥ ११॥
कुंती जू कैं नैंन भरि, आयै प्रेम प्रकार॥
अपनैं पिछलै दुष सबै, सुधि कीनैं वां बार॥ १२॥
भयै हम्हारै कुसल दिन, ताही पंकज नैंन॥
तुम्ह पठयौ हौ क्रिपा करि, अक्रूरहीं सुधि लैंन॥ १३॥
तुम्हहीं या सब जगत कैं, हौ आतम करतार॥
अपुन परायौ भैद कछु, नहिं तुम्हरै निरधार॥ १४॥
पै जे निसदिन रावरौ, ध्यांन धरत है साध॥
तिन्हकौ दुष सुविसैष करि, सदा करत हौ बाध॥ १५॥

॥ युधिष्ठिर उवाच॥

कहत भयै नृप जुधिष्ठिर, जांनि परत है नांहिं॥
हम्ह कीनौं है पुन्य कौं, पूर्ब जनम कैं मांहिं॥ १६॥
दुर्ल्लभ है जोगैस्वरनि, इहि दरसन अभिरांम॥
सौ दरसन हम्ह करत हैं, अहौ कृस्न सुषधांम॥ १७॥
नृपति जुधिष्ठिर की अधिक, सुनि बिनती भगवांन॥
बसै बउत दिन क्रिपा निज, करि पांडवन सथांन॥ १८॥

॥ श्री सुक उवाच॥

धनुष बांन सब सस्त्र कौं, लै अर्जुन निज साथ॥
रथ चढि कैं बन बिहरिबैं, गयौ सहित जदुनाथ॥ १९॥
बसत रहै वां बन बिषैं, जीव जन्तु अनपार॥
तांह जाय प्रापत भयै, अर्जुन कृस्नं कुमार॥ २०॥
सिंघ सूर चीता सरभ, रौझ सुसा मृग सैह॥
गैंडा जुत अैसै जांह, जंतु बसत अनछैह॥ २१॥
अैसै जंतु संघारि बहु, दै सस्त्रन की मार॥
जिग्य काज पठवत भयै, नृपति निकट निरधार॥ २२॥
त्रिषावंत अरजुन भयौ, दौरत अति श्रमपाय॥
तब अरजुन अरु कृस्न जू, जमुना निकट सुआय॥ २३॥

उहां दुहुनि जल पांन करि, परिश्रम कीनौं दूर॥
अति सुंदर इक कन्यका, लषी तांह गुन पूर॥ २४॥
वा कन्या कैं पास प्रभु, दिय अर्जुनहिं पठाय॥
कन्या सौं पूछत भयौ, अर्जुन बचन सुनाय॥ २५॥
तू कौ है किहँ की सुता, कांह तै आवन कीन॥
कहा चहत है सौ सकल, कहियै भेद प्रवीन॥ २६॥
हम्हतौ तौकौं दैषि कैं, इहि जांनी मनमांहिं॥
पति वांछा है कन्यका, है तेरै चित ठांहिं॥ २७॥

॥ कालिन्दी उवाच॥

जमुना जू बोली कि म्हैं, सुता सूर्ज की आंहिं॥
निश्चै म्हैरै चितहिं बसै, है पतिही की आंहिं॥ २८॥
वर कैं दाता बिस्नु हौं, म्हैरै पति निरधार॥
तिहिं निमित तपस्या करत, म्हैं या ठौर सुढार॥ २९॥
बिनां बिस्नु कौ और पति, म्हैं चाहत हौं नांहिं॥
मो परि हौहुँ प्रसंन अबैं, जें सबकैं हिय ठांहिं॥ ३०॥
या जल कैं मधि बसत हौं, कालिंदी मो नांम॥
मिलैं बिस्नु मैं जबहिं लौं, बसिहौं याही ठांम॥ ३१॥
मोहि दई हैं ठौर इहि, दिनमनि म्हैरै तात॥
कही जाय श्रीकृस्न सौं, सुनि अर्जुन इहि बात॥ ३२॥
कालिंदी कौं प्रभु तबै, निज रथ लई चढाय॥
लै आयै निज गेह कौं, अति प्रसंन्नता भाय॥ ३३॥

॥ श्री सुक उवाच॥

बिस्वकरमा सौं कृस्नं जू, आग्या दैं वां बार॥
नृपति जुधिष्ठिर कौं नगर, दिय बनवाय सुढार॥ ३४॥
सुष दैषन पांडवन कौं, बसै उहां श्रीकृस्नं॥
मिलि मिलि निज बंधून सौं, अधिक भयै चित प्रस्नं॥ ३५॥
अुर्जन कैं ह्वै सारथी, सुंदर कृस्नं कुमार॥
अगनिहि करवायौ भछिन, षांडव वन सुभ ढार॥ ३६॥
अगनि हौय संतुष्ट फिरि, प्रस्नं पारथ कौ कीन॥
धनुष बांन अस्व रथ कवच, तरकस अषय सुदीन॥ ३७॥
पुनि मय दैत्यहिं अगनि तैं, लिय वां समैं बचाय॥
तिन्ह इक अरजुन कौं दई, अदभुत सभा बनाय॥ ३८॥
तामैं दुर्जौधनहिं हुवै, थल ठां जल भ्रम आय॥
हांस्यी भई सब सभा मैं, या भ्रम तैं अधिकाय॥ ३९॥

फिरि पांचौ पांडवन की, लै आग्यां श्रीकृस्नं॥
सहित जादवनि द्वारिका, आवत भयै सप्रस्नं॥ ४० ॥
दै आनंद निज जनन कौं, भलौ मूहरत दैषि॥
कालिंदी ब्याही प्रभू, कियौ भगत अवैरषि॥ ४१ ॥
राजा पुर ऊजैन कैं, नांम विंदु अनुबिंद॥
दुरजोधन कैं वसि परै, किहूं करम कैं फंद॥ ४२ ॥
उन्ह दुहूंन निज बहन कौं, कीयौ स्वयंबर चांहिं॥
उन्हकी बहनि बरै प्रभुहिं, लषि सब दिस वां ठांहिं॥ ४३ ॥
मनै करी भाईनि तउ, कन्या जु मांन्यौ नांहिं॥
सुंदर रूप अनूप छबि, लषी रीझि मन मांहिं॥ ४४ ॥
प्रभु की भुवा हुती घरनि, नृप अधिदैवी धांम॥
ताकी बह कन्या सुता, मित्र वृंदा जिहिं नांम॥ ४५ ॥
ताकौ हरि जौरांवरी, ल्यायै कृस्नं कुमार॥
बउत नृपन कैं मांन हति, कीनैं सभा मंझार॥ ४६ ॥
राजा कौसलदेस कौं, नगनजीति जिहिं नांम॥
सौं समझत आछी तरहिं, धरम रीति अभिरांम॥ ४७ ॥
जाकैं इक कन्या रहै, सत्या नांम जु सुढार॥
ताहि विवाहन कौं कर्यौं, अैसौ पन या बार॥ ४८ ॥
सात सांड बलवंत अति, जो नाथै इक संग॥
ताकौं इहि म्हैरी सुता, देहुँ सहित उछरंग॥ ४९ ॥
तिन सांडन कौं नृप कौउ, सकै बांधिहूं नांहिं॥
भयै पधारत कृस्नं जू, सैनां जुत वां ठांहिं॥ ५० ॥
उठि ठाढो ह्वै नगनजित, करि प्रभु कौं परिनांम॥
विधिवत बिधि पूजा करी, दिय आसन अभिरांम॥ ५१ ॥
वां राजा की सुता लषि, छबि पति बृज कौ छैल॥
रीझ भीज जांनत भई, ब्याहि लग्यौ इन्ह गैल॥ ५२ ॥
कहत भई जो प्रसंन ह्वै, मौ ऊपर भगवांन॥
तौ म्हैरै पति जू हुवै, कृस्न कुमार निदांन॥ ५३ ॥
कहत भयौ श्रीकृस्न सौं, नृपति जोरि बिबि पांन॥
तुम्हकौं है परिनांम हे, नारायन भगवांन॥ ५४ ॥
तुम्ह पूरन सब बात करि, राषत कछू न चाह॥
कहा तुम्हारी टहल हम्ह, करैं अहौ जगनाह॥ ५५ ॥
लौकपाल सिव विधि रमा, सबकौं अपनैं सीस॥
राषत है तुव चरन रज, हे स्वांमी जगदीस॥ ५६ ॥

सौ तुम्ह जग रछया करन, प्रगट भयै भगवांन॥
तुम्हकौ हौं कइसैं करौं, प्रसंन्न भलै उनमांन॥५७॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि बोलै प्रभू, अमृत सुबचन रसाल॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

हे राजा तौ सुता हम्ह, मांगत हौय षुस्याल॥५८॥

॥ राजा नग्नजित उवाच॥

नृप बोल्यौ तुम्ह तैं अधिक, कन्या कौं बर कौंनुँ॥
लछमी तिन्हकैं अंग मैं, नित प्रति बसत सुठौनुँ॥५९॥
पै इक पन म्हैं कर्यौ बर, बीरज परषन काज॥
सात सांडहिं नाथै सौ, कन्यां ब्याहै आज॥६०॥
देह सींग दीरघ महा, सात सांड बलवांन॥
है म्हैरै जिनि बउत नृप, डारै मारि निदांन॥६१॥
जौ तुम्ह इन्ह सातौंन कौं, नाथि लैहुँ इक साथ॥
तौ निसंक इहि मो सुता, ब्याहौ प्रभु जदुनाथ॥६२॥

॥ श्री सुक उवाच॥

ऐसौ नृपकौं बचन सुनि, सात रूप प्रभु धारि॥
उन्ह सातौं सांडनि भलैं, षैंचै बांधि मुरारि॥६३॥
जूं अलप बस्तू जो षैलत, षैंचै सिसु चहुँ वौर॥
तइसै प्रभु षैंचत भयै, सातौं सांड सजौर॥६४॥
प्रसंन हौय श्रीकृस्न कौं, नृपहिं निज कन्या दीन॥
राजा की अस्त्री मुदित, ह्वै अति उत्सव कीन॥६५॥
बाजन लगै बाजित्र बहु, गुनी करत भय गान॥
बिप्रनिनि आसिरवाद दिय, बढि मंगल अप्रमांन॥६६॥
प्रभु कौं इतनौं डायजौ, नृपति नगनजित दीन॥
गज नव सहस रु दस सहस, दासी सुभग नवीन॥६७॥
दस हजार गायै दई, बछरन जुत पय वांनि॥
तिन्हतैं रथी दिय सौ गुनै, रथ तैं अधिक किंकांनि॥६८॥
इन्हतैं किंकर सौ गुनै, संग दियै बुधिवांन॥
अरु मनुहार करी बउत, जौरि दुहूं नृप पांन॥६९॥
दूलह दुलहनि दुहुँन कौं, इक रथ पै करि स्वार॥
संग सैंन दै बिदा किय, नृपति बउत करि प्यार॥७०॥
पहलैं जे जुध मध्य तैं, हारै रहैं नृपाल॥
तैं मग माहीं जुध करन, आयै प्रेरे काल॥७१॥

तैं सब दयै भजाय अरि, अरजुन सर बरषाय॥
ज्यौं मृगपति भभकारि कैं, मृगगन दैत भगाय॥७२॥
लै दायुज तिय द्वारका, आयै कृस्नं कुमार॥
अति उत्सव आनंद हुव, बजि बाजित्रहिं अपार॥७३॥
फूपी इक भगवांन की, श्रुति कीरति जिहिं नांम॥
ताकैं इक बैटी रहै, भद्रा अतिहि अभिरांम॥७४॥
संतरदन लौं आदि जिहिं, भाई हुतै कितैक॥
तिन्ह ब्याही अपनीं बहनि, प्रभु कौं सहित विवैक॥७५॥
मद्रदैस कैं नृपति की, सुता लछमनी नांम॥
हरि ल्यायै श्रीकृस्नं जू, बाहि स्वयंबर ठांम॥७६॥
भौमासुर पापी महा, ताकौ करि संघार॥
नृप कन्या सौरह सहस, ब्याही कृस्नं कुमार॥७७॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अष्ट पंचासत्तमोऽध्यायः ॥५८॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अैकोंनषष्टितमोऽध्यायः ॥

(भौमासुर का उद्धार और सोलह हजार एक सौ राजकन्याओं के साथ
भगवान श्रीकृष्ण का विवाह)

॥ राजोवाच ॥

दोहा - नृप पूछत कइसै हत्यौ, भौमासुरहिं मुरारि॥
अरु उन्ह क्यौं रोकी हुती, इतनी नृपति कुमारि॥१॥
इहै पराक्रम प्रभूकौं, कहियै मोहि सुनाय॥
बोलै श्रीसुक देव जू, बचन सुधा अनुभाय॥२॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

अदभुत कुंडल अदिति कौं, और इंद्र कौ छत्र॥
गिर सुमैर सुर वास लिय, भौमासुर सरबत्र॥३॥
इक दुष अपनौं इन्द्रनैं, प्रभु कौं कह्यौ सुनाय॥
इह सुनिकैं श्रीकृस्न कैं, करिबै इंद्र सहाय॥४॥
सतिभामा कौं संग लै, हौय गरुड परि स्वार॥
प्रागज्यौतिष नांम बहि, नगर गयै वां बार॥५॥
दुरगम गढ गिरवरन कौं, वां पुर कैं चहुँ वोर॥
फिरि सस्त्रन कौं कोट है, वांके चहुँ दिस वोर॥६॥

बहुर्यो है मुरिदैत फंद, अगनि नीर पुनि वाय॥
जिन करिकैं वां नगर की, दुरगमता अधिकाय॥७॥
तांह गदा सौं कृस्न जू, फोर्यो गिर कौं कोट॥
सस्त्र कोट तौरत भयै, दे बांनन की चोट॥८॥
चक्र सुदरसन सौं करै, अगनि वायु जल दूरि॥
अरु कीनें मरु दैत्य कैं, पास षडग सूं चूरि॥९॥
संषनाद सौं फटि गयै, अगनि जंत्र तिहँ बार॥
और कोटि सब गदा सौं, डारै फोरि मुरार॥१०॥
सबद पांचजन संष कौं, कीनौं प्रभू बिसाल॥
प्रलैं काल कै बज्र सम, जान्यौ अरिनि कराल॥११॥
सौवत रह्यौ निसंक ह्वै, मुरि दानव जल मांहिं॥
सौ सुनि सबद सुसंष कौं, उठ्यौ लरन चित चांहिं॥१२॥
जाकै मसतक पांच है, महा बली बडकाय॥
प्रलै काल कैं अगनि रवि, सम जिहँ तैज लषाय॥१३॥
लै त्रिसूल तीछन महा, आनन पांच उठाय॥
दौर्यो प्रभु कैं समुष ज्यौं, गरुड समुष अहि आय॥१४॥
कर लै तोलि त्रिसूल मुष, पांचन सूं किय नाद॥
तासौं सब ब्रह्मांड हुव, पूरित कंपि सुज्याद॥१५॥
बह त्रिसूल लषि गरुड पै, आवत कृस्न कुमार॥
द्वै सर सौं त्रिसूल कियै, तीन टूक वां बार॥१६॥
अरु प्रभु वा मुरदैत्य कैं, पांचौ आनन मांहिं॥
मारै बांन रिसाय धनु, तांनि आनि श्रुतु ठांहिं॥१७॥
भयौ चलावत तब गदा, बह मुरदैत रिसाय॥
सहस टूक वां गदा कैं, किय प्रभु गदा चलाय॥१८॥
दोर्यो बह मुर दैत तब, अपनीं भुजा उठाय॥
चक्र सुदरसन सौं प्रभू, तिहिं सिर काटै धाय॥१९॥
गिरत भयौ बह नीर मैं, मुर दानव मृत्यु पाय॥
बासव जिहिं तन कैं कियै, टूक सिषर अनुभाय॥२०॥
सात पुत्र मुरदैत्य कै, मुवौ पिता कौं जांनि॥
उमगै निज भुज ठौकि कै, करिबै कौं घमसांनि॥२१॥
ताम्र अंतरिछ विभावसु, श्रवन अरुन नभस्वांन॥
अैं सांतू मुरि दैंत कैं, पुत्र जु बड्डै बलवांन॥२२॥
पीठ नांम सैनांपति, आगै कियै निसंक॥
आयै प्रभु सौं जुध करन, भुजा ठौकि भट बंक॥२३॥

प्रभु निज बांनन सौं तबै, उन्ह सबहिन कैं सीस॥
काटि मारि डारत भयै, धरि निज चित अतिरीस॥ २४॥
मरै दैषि अपनैंन कौं, भौमासुर रिस छाय॥
मद मत्त गज बहु संग लै, जुध करिबै कौ आय॥ २५॥
अस्त्री जुत श्रीकृस्न जू, तांह गरुड परि स्वार॥
मानहुँ घन बिजुरी सहित, सौभित भलै प्रकार॥ २६॥
जिन्हकौं लषि चलवत भयौ, भौमासुर निज सैल॥
औरहुँ जोधा सस्त्र बहु, भयै चलावत ठैल॥ २७॥
कमल नैंन श्रीकृस्न तब, तीछन बांन चलाय॥
भौमासुर की सैंन सब, मारत भयै रिसाय॥ २८॥
सस्त्र चलायै भटन जे, प्रभु सब डारै काटि॥
पंषन सूं हाथी बउत, हतै गरुड रिस थाटि॥ २९॥
गरुड पंषीन की मार, सौं हाथी ब्याकुल हौय॥
भाजि गयै सब नगर कौं, रहै ठौर नहिं कौय॥ ३०॥
भौमासुर की सैंन सब, दीनी गरुड भजाय॥
तब भौमासुर गरुड पैं, चलयौ सैल रिसाय॥ ३१॥
वां बरछी कैं लगन मैं, गरुड कछुन भय पाय॥
जइसैं गज कै फूल की, चोट न लगत लषाय॥ ३२॥
प्रभु पर चलवन काज लिय, भौमासुर तब सूल॥
तब सतभामा यौं कह्यौ, लगि प्रभु श्रवननि मूल॥ ३३॥
देव देव हे जगतपति, जदुनंदन जदुनाथ॥
ढील न करनी जोग्य अब, काटि अरिन कौ माथ॥ ३४॥
सतिभामां कैं अैं बचन, सुनि श्रीकृस्न कुमार॥
भौमासुर कौं चक्र सौं, काट्यौ सिर वां बार॥ ३५॥
कुंडल क्रीटन जुत गिर्यौ, भुव वां षल कौ सीस॥
असुरनि हा हा कार किय, रु षलहिं बिसबाबीस॥ ३६॥
अस्तुति करी प्रभु की सुरनि, पुहपनि बरषा कीन॥
प्रिथवी कुंडल अदिति कैं, ल्याय प्रभू कौं दीन॥ ३७॥
बनमाला अरु इंद्र कौं, छत्रहिं सुपरम रसाल॥
भौमासुर ल्यायौ हुतौ, सौ दिय भुव वां काल॥ ३८॥
प्रेम सहित भुज जोरि कर, प्रभु कौ करि परिनांम॥
लगी करन श्रीकृस्न की, अस्तुति परम अभिरांम॥ ३९॥

॥ भूमिरुवाच॥

देव देव पंकज नयन, गिरवर धारनहार॥
भगत रछ्या कैं काज इहि, रूप धर्यौ सुषसार॥ ४०॥

पूर्न पुरष परमातमा, तुम्हकौ है परिनांम॥
सगुन रूप इहि रावरौ, सुषदाता अभिरांम॥४१॥
कमल भयौ जिन्ह नांभ तैं, हिर्दै कमल की माल॥
पंकज सै तुम्हरै नयन, तुम्हहिं प्रनांम कृपाल॥४२॥
बासुदेव भगवांन प्रभु, बिस्नु जु पुरष पुरान॥
आदि बीज बंदन तुम्हहिं, जिन्हकौं पूरन ग्यांन॥४३॥
देत जनम तुम्ह सबन कौ, जनम तुम्हारै नांहिं॥
पूरन ब्रह्म अनादि जिन, सक्ति अनंत अथांहिं॥४४॥
लघु दीरघ प्रांनीन मैं, परमातम हौ आप॥
उतपति पालन प्रलै जग, करत हौ त्रिगुन स्थाप॥४५॥
काल पुरष अस्त्री प्रकृति, पंचभूत अहंकार॥
तनमात्रा महतत्व मन, इंद्री तन निरधार॥४६॥
सकल तुम्हारौ रूप है, भ्रम सौं दीसत और॥
न्यारै कर दैषत तुम्हहिं, साधु ग्यांन कैं जौर॥४७॥
भौमासुरहिं कौ पुत्र है, सरन तिहारै नाथ॥
अब याकै सिर राषियै, दीनबंधु निज हाथ॥४८॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि ऐसौ बचन, भुवकौ सुनि करतार॥
भौमासुर कैंहिं पुत्रकौं, करि निरभय वां बार॥४९॥
भौमासुर कैं गेह फिरि, भयै पधारत स्यांम॥
नृप कन्या सौरै सहसि, तांह लषि जु अभिरांम॥५०॥
बे नृप कन्या मुहित हुव, लषि श्रीकृस्न कुमार॥
पतिकरिकैं मांनत भई, निजमन सौं निरधार॥५१॥
अदभुत भूषन बसन उन्ह, सबहिन कौं पहिराय॥
भयै पठावत द्वारका, सिवका स्वार कराय॥५२॥
और षजानै अस्व गज, दिय द्वारका पठाय॥
जदुबंसी प्रफुलित भयै, फतै निसांन बजाय॥५३॥
गज ऐरावत बंस कैं, चवदंती रंग स्वैत॥
चौसठि गनि पुर द्वारका, दिय पउंचाय बिजैत॥५४॥
भयै पधारत कृस्न जू, बहुरि इंद्र पुर ठांम॥
दीनैं कुंडल अदिति कैं, प्रसंन हौय बहुनांम॥५५॥
इंद्र रु इंद्रानी हुलसि, विधिवत पूजा कीन॥
करि प्रनांम मनुहारि बहु, करी हौय आधीन॥५६॥
सतिभामां कैं कहै तैं, फेरि कृस्न मषमीत॥
पारिजात तरु सुवर्ग तैं, ल्यायै अमरनि जीत॥५७॥

सति भामां कै बाग मैं, रोप्यौ भलैं प्रकार॥
अलि वां तरु संग सुवर्ग तैं, आय करत गुंजार॥ ५८॥
पारजात तरु कारनैं, जुधहूं कियै अग्यांन॥
प्रारथनाहूं करत हैं, प्रभु सौं अमर निदांन॥ ५९॥
रूप धारि सौरह सहस, अैक महूरत मांहिं॥
ब्याही नृप कन्या सबै, जुदै जुदै ग्रिह ठांहिं॥ ६०॥
मंदिर सब अस्त्रीन कैं, प्रभु निति करत बिहार॥
ब्रह्मादिकहूं लहत नहिं, जिन्हकी गति कौं पार॥ ६१॥
अैसै प्रभु पति पायकैं, प्रसंन हौय सब नारि॥
चितवनि बौलनि हासि करि, बिहरत भई सुढारि॥ ६२॥
कितक टहल भगवांन की, आप करै सब नारि॥
दासी सबकैं बउत पैं, तिन्हि न कहै निरधारि॥ ६३॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अैकोंनषष्टितमोऽध्यायः॥ ५९॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ षष्टितमोऽध्यायः॥

(श्रीकृष्ण रुक्मिणी संवाद)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - श्री सुक कहत कि इक समैं, कृस्न कुँवर सुषदाय॥
रुकमनि जू कैं पलिंग परि, बैठे हुतै सुभाय॥ १॥
करत हुती बिजनां प्रभुहिं, रुकमनि जू जुत नैह॥
कर जोरै ठाढी निकट, तांह सुजांन अछैह॥ २॥
आनी लीला करि भलैं, जें स्वांमी करतार॥
उतपति पालन प्रलै या, जग कौ करत सुढार॥ ३॥
धरम सथापन कैं लियैं, जें प्रभु जदुकुल मध्य॥
प्रगट भयै श्रीकृस्न जू, सगुन सरूप प्रसध्य॥ ४॥
मौतिन की झालरि सहित, चंदवा बंध्यौ बिसाल॥
दीपक झमकत मनिन कैं, नग मय महल रसाल॥ ५॥
पारजात तरु कौ सुगंध, फैलि रह्यौ सुषदाय॥
निकसत जालिन मध्य ह्वै, अगर धुवां महकाय॥ ६॥
सुमन सैज कौमल बिमल, बिछी परम अभिरांम॥
तां ऊपर प्रभु जगत कैं, बैठे सुंदर स्यांम॥ ७॥

सुमन सुगंधित माल परि, भ्रमर करत गुंजार॥
मानहुँ जस श्रीकृस्न कौं, गावत भलैं प्रकार॥ ८॥
रूप अनूपम रूकमनी, कीनैं सुभग सिंगार॥
प्रभु की सेवा करत है, प्रगट रमा अवतार॥ ९॥
अैसी तिय सौं कृस्नं जू, यौं बोलै मुसकाय॥

॥ श्रीभगवानुवाच॥

सुनहुँ रुकमनी जू तुम्हहिं, म्हैं कहत जो जताय॥ १०॥
जिन्हकैं इंद्रादिकन की, सी संपति अधिकाय॥
बड्डौ प्रताप रु पराक्रम, रूप गुनन जुत राय॥ ११॥
चहत रहै ब्याह्यौ तुम्हहिं, करि चित बउत उमांहिं॥
भ्रात पिता तुम्हरै तुम्हहिं, दिय सिसुपालहिं चांहिं॥ १२॥
ताकौं तजि कैं हम्हहिं तुम्ह, क्यूं ब्याहे करि प्रीति॥
हम्ह न तुम्हारे बराबरि, क्यूं कीनी अनरीति॥ १३॥
हम्ह तौ डरि सब नृपन सौं, बसत सिंधु सरनाय॥
बलवंतन सौं बैर पुनि, हम्ह न कहूं कैं राय॥ १४॥
म्हैरी न्यारी रीति है, म्हैं न तियन आधीन॥
अैसे मो कौ तिय चहै, सौ ह्वै कबहुँ सुषीन॥ १५॥
म्हैरै धन नांही रु है, निरधन म्हैरै मित्र॥
रु मुहि धनवंत भजत है, रहत मत्त उरहिं अत्र॥ १६॥
द्रव्य रूप कुल वोर दुहु, हौय समान सुढार॥
तिन्ह सौं ब्याह अरु मित्रता, निबहै भलैं प्रकार॥ १७॥
हे रुकमनि जू बिन समझि, तुम्ह किय मो सौ ब्याहि॥
मो मैं गुन कछु नांहिंनैं, अरु नित रहत अचाहि॥ १८॥
करत भिषारि जगत बिच, म्हैरी झूठि बडाहि॥
सौ सुनि तुम्ह ब्याहे हम्हहिं, कछु न समझि चित ल्याहि॥ १९॥
तातैं अबहूं नृपति जो, जोग्य तुम्हारै कौय॥
ताकैं जाहुँ निसंक जांह, पूर्न मनोरथ हौय॥ २०॥
दंत वक्र सिसुपाल पुनि, साल्व मगधपुर ईस॥
भ्रात तुम्हारौ रुकम अैं, बड्डै बली अवनीस॥ २१॥
मो सौं अरिता धरत है, तिन मद करिबै दूरि॥
तुम्हकौं हम्ह ल्यावत भये, बउत सैंन कूं चूरि॥ २२॥
उदासीन हैं जगत तैं, धन सुतियन न चहंत॥
ब्रह्म ग्यांनी हैं सही, सबतैं जुदै रहंत॥ २३॥
घर सरीर इन्ह दुहुँन मैं, म्हैरै ममता नांहिं॥
जोग्य काज करि रहत हौं, मगन रूप निजमांहिं॥ २४॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

जांनत ही रुकमनी जू, म्हैं प्रिय प्रभूहिं निदांन॥
तिन्ह सौं यौं कहि टारि मद, रहै सचुप भगवांन॥ २५ ॥
बिस्वनाथ निजपति जिननि, मुष अति रुषै बैंन॥
आगैं कबहुं सुनै न तैं, सुनै अधिक दुष दैंन॥ २६ ॥
डरपि रुकमनी जू बउत, चिंता निज चित कीन॥
हिर्दै कंपि द्रिग सजल हुव, भई सोच आधीन॥ २७ ॥
भुव षौदत पदनषन सौं, रहि गइ सीस नवाय॥
कछू बचन बौल न सकी, बिकल भई दुषपाय॥ २८ ॥
हौत भई बुधि नष्ट सब, दुष भय सोक प्रभाय॥
कंकन कर तैं छुटि परै, छीन देह सरसाय॥ २९ ॥
मूर्छित ह्वै भुव पैं गिरी, बिषरै बाल बिसाल॥
पंषा छूटि कर तैं गिर्यौ, तरफरात बेहाल॥ ३० ॥
जइसै पवन सजौर वस, लता बृच्छि तैं छूटि॥
लुटत प्रिथी ऊपर परी, सतवित सबहीं तूटि॥ ३१ ॥
रुकमनि जू कैं प्रीत अति, हांसी समझी नांहिं॥
इहै जांनि आई दया, कृस्न कुँवर उर ठांहिं॥ ३२ ॥
उतरि पलिंग तैं कृस्न जू, सुभग च्यार भुज धारि॥
रुकमनि जू कौं गौद मैं, लैं कच भलैं संवारि॥ ३३ ॥
अंसुधार द्रिग हिर्दै तैं, पौंछि सांम निज पांन॥
आलिंगन अति प्रीत सौं, करत भयै भगवांन॥ ३४ ॥
रुकमनि जू अति बिकल हुव, समझि न प्रभु की हासि॥
तिन्हकौं समझावन लगै, कृस्न कुँवर सुष रासि॥ ३५ ॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

प्रभु बोलै हे रुकमनी, मो सौं तौ चित ठांम॥
अधिक प्रीति है भैदि इहि, हम्ह जांनत अभिरांम॥ ३६ ॥
तौ मुष तैं रिस कैं बचन, सुनिबैं कौं यां बार॥
हम्ह हांसी कीनी सु तुम्ह, नहिं समझी निरधार॥ ३७ ॥
अधर कंप रिस प्रेम सौं, चढि कटाछि जुत भौंह॥
अैसौ तौ मुष दैषिबै, किय हांसी है सौंह॥ ३८ ॥
इही लाभ कहियतु बड्डौ, ग्रस्तन कौं जगमांहिं॥
हांसी बात निजप्रिया सौं, करहीं भांति अथांहिं॥ ३९ ॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

सुक कहत कि अैसै बचन, प्रभु कैं सुनि लषि हासि॥
भय निज प्रिय कैं त्याग कौं, तजि रुकमनी हुलासि॥ ४० ॥

लज्या हांसी कटाछि करि, प्रभु कौ वदन निहारि॥
कहत भई अमृत सुबचन, परम प्रीति अनुसारि॥ ४१॥

॥ रुक्मिण्युवाच॥

अहो कंबल दल नैंन तुम्ह, बचन कह्यौ या रीति॥
हम्ह तुम्ह सम है नांहिं तौ, क्यूं ब्याहे करि प्रीति॥ ४२॥
सौ इह सांची बात है, म्हैं प्रभु तुम्ह सम नांहिं॥
तुम्ह प्रभु ब्रह्मादिकन कैं, दाता मुक्ति सदांहिं॥ ४३॥
म्हैं हूं माया त्रिगुनमय, तुम्हहीं प्रगट सुकीन॥
मूरष सैवत मो चरन, तुम्हकौं भजत प्रवीन॥ ४४॥
तुम्ह कह्यौ कि डरि नृपन सौ, हम्ह तजि मथुरा देस॥
सिंधु सरन गहि बसत है, कहुँ कैं नांहि नरेस॥ ४५॥
सौउ सत्य है विषयहीं, जग मैं बड़ै नृपाल॥
तिन्ह तैं डरि तजि कैं उह्नैं, हे भगतन प्रतिपाल॥ ४६॥
भगतन कैं निरमल हिर्दै, सुषद समुद्र समांन॥
तांह प्रकासित हौत हौ, हे जदुनाथ सुजांन॥ ४७॥
अरु तुम्ह कह्यौ बलीन सौं, म्हैरे दुसमनताय॥
सौउ बात है सत्य हौं, कहूं भैदि समुझाय॥ ४८॥
इंद्री दुष्ट बलीन सौं, धरत सत्रुताइ आप॥
बे पहिचांनत तुम्हहिं नहिं, है अग्यांन अमाप॥ ४९॥
नृप जें सेवग रावरै, तै कछु चाहत नांहिं॥
तौ प्रभु कां तैं रावरै, हौय कछू चित चांहिं॥ ५०॥
अरु तुम्ह कह्यौ कि सबन सौं, म्हैरी न्यारी रीति॥
सौउ सत्य है बेदहूं, नेति नेति कहि गीति॥ ५१॥
तुम्ह पदसैवत तिनहुँ गति, सबतैं न्यारी हौत॥
मूरष जन समझत नांहिं, भगतन कौ जु उदौत॥ ५२॥
तुम्ह तौ ईस्वर जगत कैं, रीति तुम्हारी सांम॥
सब तैं न्यारी हौय सौ, का अचिरज बहु नांम॥ ५३॥
अरु तुम्ह अैसै कह्यौ प्रभु, हम्ह निरधन निरधार॥
पुनि धनवंतन भजत है, मो कौ काहू बार॥ ५४॥
सौउ बात है सत्य प्रभु, झूठ कही तुम्ह नांहिं॥
भेद तुम्हारी बात कौ, हौं समझी मनमांहिं॥ ५५॥
पूजत ब्रह्मादिकन कौं, कौं जन आछी रीति॥
तै ब्रह्मादिकहूं तुम्हहिं, पूजत है करि प्रीति॥ ५६॥
तुम्ह प्रिय ब्रह्मादिकन कैं, हे पूरन सुषसिंध॥
तुम्ह कौं नांहिंन भजत है, मूरष धनमद अंध॥ ५७॥

अरु तुम्ह कह्यौ कि हौत है, निज सम ठौर बिबाह॥
उत्तम मध्यम मध्य नहिं, जोग्य बिबाह सलाह॥ ५८॥
सौउ बात है सत्य तुम्ह, उत्तम आनंद रूप॥
म्हैं माया तिहुँगुन मई, नहिं तुम्हरै संजूप॥ ५९॥
नर बुधिवंत सु तुम्ह लियै, छौडत है संसार॥
उन्हकौं जौ सुष हौत सौ, नहिं औरनि निरधार॥ ६०॥
तातै तुम्ह कौं म्हैं वरै, जांनि महा सुष रासि॥
तुम्ह सम नहिं कौ और पति, मोहि परी इह भासि॥ ६१॥
अरु तुम्ह कह्यौ कि मोहि तुम्ह, ब्याहत भये अजांनि॥
सौ इहि बात असत्य है, म्हैं ब्याहे पहिचांनि॥ ६२॥
बड्डै बड्डै मुनि रावरी, करही अस्तुति बनाय॥
नेति नेति भाषति निगम, पार न तुम्हरौ पाय॥ ६३॥
ब्रह्मादिक हूं काल भय, राषत निज चित मांहिं॥
तिह्नैं छौडि म्हैं तुम्ह बरै, कहँ सिसुपाल गनांहिं॥ ६४॥
अरु तुम्ह कह्यौ कि नृपनि सौं, हम्ह डरपति निरधार॥
सौ इही झूठी बात तुम्ह, कहत सांम सुकुमार॥ ६५॥
निज बांनन सौं तुम्ह दई, बहु नृप सैंन भजाय॥
जइसैं मृगपति मृगन कौं, दैत भजाय डराय॥ ६६॥
अरु ज्यौं मृगपति मृगन पैं, निजबल लैत छिनाय॥
जइसैं ल्यायै मोहि हरि, भुज बल अति सरसाय॥ ६७॥
अरु तुम्ह कह्यौ कि सरन मौ, आवै अस्त्री कौय॥
ताकौं हौत कलैस अति, सुष प्रापति नहिं हौय॥ ६८॥
सौ इहि बात असत्य है, सांच कही तुम्ह नांहिं॥
बड्डै बड्डै जन रहत है, आस्त्रै तुम्ह पद ठांहिं॥ ६९॥
गय जजाति प्रथु भरथ पुनि, अंग नृपति लौं आदि॥
बड्डै नृपति तजि राज तुम्ह, सरन गहत अहलादि॥ ७०॥
तिन्हकौं तुम्ह प्रापति भयै, किहुँ दुष पायौ नांहिं॥
तीन ताप संताप छुटि, मगन भयै मनमांहिं॥ ७१॥
अरु तुम्ह कह्यौ कि अबहुँ कौ, ब्याहौ क्यूंन नृपाल॥
ताकौ उत्तर दैत हौं, सुनियैं नैंन बिसाल॥ ७२॥
जिन्हकी नित प्रति करत है, सजन परम बडाय॥
जिन्ह पद लछमी कौं अयन, दैंन मुक्ति सुषदाय॥ ७३॥
ऐसी तुम्ह पद कंवल की, सुनि महिमा अधिकाय॥
जें तजि मृत्यु भयवंत नर, कौ ब्याहै दुषदाय॥ ७४॥

प्रभु तुम्ह ईस्वर जगत कैं, तुम्ह समांन कौं नांहिं॥
दाता पूर्न मनोर्थ कैं, दुहुँ लौकनि कैं मांहिं॥७५॥
अैसै तुम्ह जिन चरन कौं, भजन कियौ म्हैं जांनि॥
नेत नेत तिन्हकी कहत, महिमां बेद बषांनि॥७६॥
अरु तुम्ह कह्यौ कि और नृप, अधिक रूप गुन जुक्त॥
इहै बात नहिं सत्य है, दरसत झूठी उक्त॥७७॥
और पुरष संसार कै, सम षर स्वांन बिलाव॥
महादीन आधीन तिय, परि बिच काल कुदाव॥७८॥
रु कथा चरित सु रावरै, हे प्रभु अति सुषसार॥
सिव ब्रह्मा की सभा मैं, गावत हैं करि प्यार॥७९॥
सुभग तुम्हारी कथा जें, जिन तिय सुनी न हौय॥
सौ अैसै पुरष न वरै, भलौं सयांनप षौय॥८०॥
हाड मांस बिष्टा रुधिर, कीड़ा कफ पित वाय॥
भीतर भरै रु उपर तैं, कच नष तुचा मढाय॥८१॥
जीवत ही सौ मृतक सम, अैसौ धरै सरीर॥
और पुरष संसार कैं, तिन सौं लषि सुष सीर॥८२॥
सुंदर निज पति मांनि जें, सैवत तिय अग्यांन॥
जिन तिय श्रवन सुनै न ह्वै, तुम्ह गुन चरित निदांन॥८३॥
अरु तुम्ह कह्यौ कि हम्ह सदा, उदासीन निरधार॥
तौहू तुम्ह पद कमल सौं, मो उर प्रीति सुढार॥८४॥
तनकहुं तुम्ह करिकैं क्रिपा, दैषत म्हैरी वौर॥
सौही बात बड़ी महा, हौं समझत हिय ठौर॥८५॥
पर पुरषन मैं प्रीत जिन, अैसी तिया अनैक॥
कासिराज की सुता ज्यौं, दीनौं छौडि बिवैक॥८६॥
कासिराज की सुता ज्यौं, ब्याहन निज भाईन॥
रची स्वयंबर जुध करी, भीषम हरी प्रवीन॥८७॥
मुहित रही नृप साल्व सौं, बहि कन्या जुत चांहिं॥
तातैं पठइ भीषम जू, साल्व नृपति पैं चांहिं॥८८॥
ताकौं साल्व नृपालहूं, नहिं राषी निज गैह॥
वांकौं सौ स्वाभाव मो, नांहिंन प्रभु अछैह॥८९॥
ब्याहीहूं तिय कौं चलत, और पुरष पर चित्त॥
ताकौं राषै पुरष कौं, निज ग्रिह चाह निमित्त॥९०॥
ता पुरषहुँ कैं लौक दुहुँ, बिगरै भलौ न हौय॥
इहि सुनि कैं श्रीकृस्न जू, बोलै अति हित गौय॥९१॥

॥ श्रीभगवानुवाच ॥

हे नृप पुत्री सकल तुम्हहिं, सांच कही है बात॥
ऐसी ही बातैं सुनन, हम्ह किय हास्य अग्यात॥ ९२॥
पूरन भक्त जु इकांत मो, तुम्ह रुकमनि निरधार॥
नित प्रति पूरन हो सदा, तुम्ह मनोर्थ सुषसार॥ ९३॥
बुधि तुम्हारी मैं बऊत, बहकाई या बार॥
पैं नांहिंन बहकी तनक, धन्य तुव बुधि उदार॥ ९४॥
तामैं पतिब्रत प्रेम तौ, प्रगट्यौ अति अधिकाय॥
कहँ लौं हौं बरनन करौं, तुम्ह बडाय सरसाय॥ ९५॥
जें तिय आछौ और पति, हौन काज चित चांहिं॥
कन्यापन मैं भजन मो, करत जु भलैं उमांहिं॥ ९६॥
तैं तिय म्हैरी प्रकृति सौं, मोहित है अग्यांन॥
तत्व भैदि समझत नांहिं, जो बिच बेद प्रमांन॥ ९७॥
म्हैं हूं दाता मुक्ति कौं, तापैं वांछा और॥
मांगत है करि भजन तैं, भागहीन जगठौर॥ ९८॥
कूकर सूकर जोनिहूं, मधि सुष विषै जु हौय॥
दुर्ल्लभ म्हैरी भक्ति है, सौ समझत जन कौय॥ ९९॥
हे मो घर की ईस्वरी, जासौं बिच संसार॥
मुक्ति हौय ऐसी भगति, तुम्ह कीनी निरधार॥ १००॥
दुष्ट तियनि कौं भक्ति मो, दुर्ल्लभ बिच संसार॥
तुम्ह सी अस्त्री और कौं, म्हैरे नांहिं सुढार॥ १०१॥
तुम्ह बिबाह कैं पहलहीं, द्विज पठयौ हम्ह पास॥
म्हैं जांनत तुम्ह उर अधिक, मो सौं प्रीति प्रकास॥ १०२।
जुध मांहिं तुम्ह भ्रातहिं कौं, हम्ह कीनौं अपमांन॥
रूप कुरूप कियौ महा, मूंड सुमूंछि निदांन॥ १०३॥
अरु अनिरुध कैं ब्याह मैं, रुकम तुम्हारौ भ्रात॥
मार्यौ श्री बलदेव जू, अति रिस करि बिषयात॥ १०४॥
तुम्ह तउ कछू कह्यौ नांहिं, सहजैहूं मुष आंनि॥
मो सौं महा सनैह है, तुम्ह उर सुभग सथांनि॥ १०५॥
अरु तुम्ह द्विज कर पत्र मुहि, पठयौ हुतौ सुढार॥
तामैं ऐसै लिष्यौ हौ, बचन सुप्रीति प्रकार॥ १०६॥
हे प्रभु समैं बिबाह कैं, तुम्ह जो आयै नांहिं॥
तौ म्हैं अपनी देह कौं, करहुँ त्याग ग्रिह ठांहिं॥ १०७॥
ऐसी तुम्हरी प्रीत कौं, म्हैं का पलटौ दैहुँ॥
अस्तुति तुम्हारी करत हौं, ऊरनता फल लैहुँ॥ १०८॥

॥ सुक उबाच॥

सुक कहत कि अैसै करी, प्रभु रुकमन सौं हासि॥
ज्यौं ही सब अस्त्रीन सौं, हसत रहै सुष रासि॥१०९॥
ग्रिहस्थ जनन कौं धरम है, अैसौ ही जगमांहिं॥
तिय पिय वांकै वचन कहि, हसत परसपर चांहिं॥११०॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अैकषष्टितमोऽध्यायः ॥

(भगवान् की संतति का वर्णन तथा अनिरुद्ध के विवाह में रुक्मी वध)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि भगवांन कैं, इक इक तिय गरभाय॥
दस दसहुँ सुत इक इक कैं, सुभग रूप प्रगटाय॥ १ ॥
तैं सबहीं प्रगटत भयै, प्रभु समान निरधार॥
हेर फेर गुन रूप मैं, दीसत किहुँ न प्रकार॥ २ ॥
जुदै जुदै धरि रूप निज, सुंदर कृस्न कुमार॥
करत भयै सब तियन ग्रिह, नित प्रति बिबिध बिहार॥ ३ ॥
तातैं सब अस्त्रीन अति, प्यारै प्रभु कौं मांनि॥
अधिक प्रीति राषत भई, अपनैं हिर्दै सथांनि॥ ४ ॥
पंकज सौं जिन्हकौं वदन, सुंदर नैन बिसाल॥
प्रेम हासि मधुरै बचन, सहित कटाछि रसाल॥ ५ ॥
अैसी अस्त्री हूं प्रभुहिं, सकी मुहित कर नांहिं॥
प्रभु कैं रूप बिलास सौं, मोही निज चित मांहिं॥ ६ ॥
ब्रह्मादिकहूं लहत नहिं, जिन पदवी कौ भार॥
अैसै कृस्न कुमार तिन्ह, लीला कौ नहिं पार॥ ७ ॥
लछमी कैं पति जगत पति, अैसै प्रभु पति पाय॥
नवसंगम हित हासि करि, सैवत भई सुभाय॥ ८ ॥
भांति भांति पति की टहल, निज हाथनि सब नारि॥
करत भई आनंद सौं, परम प्रीति अनुसारि॥ ९ ॥
दासी रही अनैंक पैं, प्रभु सेवा उन्ह पांन॥
कबहूं करवाई नांहि, अस्त्री किहूं निदांन॥ १० ॥

अब पटरानी आठ कैं, कहतहूं पुत्र गनाय॥
सौ सुनियै मन श्रवन दै, प्रभु सुत नांम सुनाय॥ ११॥

चौपई - बड्डे पुत्र प्रद्युमन जू भय। चारु देस्न भद्रचारु जु ठय॥
रु सुदेस्न चारुतन गुप्त चारु। बीर सुचारु बिचारु सुढार॥ १२॥
चारु चंद्र अरु चारु निदांनि। अैं दस सुत रुकमनि कैं जांनि॥
भानु सुभानु स्वर्भानु प्रमांन। भांनमांन चंद्र भान सुजांन॥ १३॥
ब्रहदभानु रतिभानु श्रीभांनु। सत्यभानु अैं दसौं प्रमांनु॥
सतिभामां जू कैं गरभाय। प्रगटै सौभ धरै अधिकाय॥ १४॥
सांब सुमित्र पुरजित चित्रकेत। सतजित सहस्रजित अरु विजेत॥
क्रतु वसुमांन द्रविड इन नांम। जांबुवती सुत दस अभिरांम॥ १५॥
वीर चंद्र चित्रगु अस्वसेन। बेगवांन बसु जग जस लैंन॥
संकु आमब्रष कुंति जु नांम। हुवै नगनजित गरभहिं ठांम॥ १६॥
सुरत सुबाहु भद्र ब्रषबीर। सांति दरस सोमक मति धीर॥
पूर्न मास कवि अैं दस पूत। कालिंदी कैं हुव अदभूत॥ १७॥
गात्रवंत सिंह प्रबल प्रघोष। बल उर्द्धग महासक्ति अदोप॥
अपराजित सह औज उदार। सुपुत्र लछमनां कैं निरधार॥ १८॥
अनल हर्ष वक्र ग्रध अन्नादि। वह्नि महास पावन षुदि आदि॥
अैं दस पुत्र जु सहित गुन रूप। मित्र बृंदा जु कैं भयै अनूप॥ १९॥
ब्रहतसैंन अरि जित जय वांम। प्रहरण आयु सुभद्र जु नांम॥
अरु सत्यक संग्राम जित सूर। दस सुत भद्रा कैं गुन पूर॥ २०॥
सौरह सहस तियन कैं मध्य। मुष्य रोहनी नांम प्रसध्य॥
दीप्तमान तांकैं सुत भयौ। दूजौ ताम्र तप्त तिन जयौ॥ २१॥

दोहा - अैसै सब अस्त्रीन कैं, पुत्र जु भयै सप्रमांन॥
रूप नांम गुन सुभग जुत, लैहुँ भलैं पहचांन॥ २२॥
प्रद्युमन कैं अस्त्री रही, रुकमवती जिहं नांम॥
तांकैं सुत अनिरुद्ध जू, प्रगट भयै अभिरांम॥ २३॥
रुकमी की बेटी रही, रुकमवती नामाय॥
ताकैं पुत्र पउत्र कैई, क्रौरिनहीं प्रगटाय॥ २४॥
नृपति पूछत प्रदुमनहिं क्यूं, रुकमी कन्या दीन॥
राषत हौ श्रीकृस्न सौं, बह तौ बैर नवीन॥ २५॥
सत्रुननि मैं कइसै भयौ, आपस मांहिं बिबाह॥
आछी भांत सुनाइयै, है सुनन मोहि चाह॥ २६॥
भूत भविष्यति भेद सबै, जांनत है जोगैस॥
तातैं इहि संदेह मो, टारहुँ भांति सुदैस॥ २७॥

सुक कहत कि निज सुता कौ, रुकम स्वयंबर कीन॥
तिहँ वोरै आयै हुतै, प्रदुमन कुँवर प्रवीन॥ २८॥
इन्हकौ लषि बहि कन्यका, रीझ अधिक चित्त चांहिं॥
बरमाला डारत भई, प्रदुमन कंठ उमांहिं॥ २९॥
प्रदुमन लैं बह कन्यका, सकल नृपन कौं जीति॥
द्वारावति आवत भयै, जगत बीच करि कीर्ति॥ ३०॥
राषत हौ श्रीकृस्न सौं, रुकमी बैर अथांहिं॥
पै मुलाहिजै बहन कौं, कछू कहत भौ नांहिं॥ ३१॥
वैदरभी जू की सुता, चारुमती जिहँ नांम॥
कृतवर्मा कौं ब्याहि दियै, करि उत्सव अभिरांम॥ ३२॥
रुकमी निज पौती बहुरि, अनिरुद्ध जू कौ दीन॥
भलौ मनांवत बहनि कौं, काज अजोग्य सुकीन॥ ३३॥
कन्या दियै अनिरुध कौं, जास रोचना नांम॥
सुंदरता अरु भलै गुन, संजुत अदभुत वांम॥ ३४॥
तब अनुरुध कौ व्याहिबै, नगर भौजकट मांहिं॥
प्रभू पधारै अग्रज रु, रुकमनि जुत चित चांहिं॥ ३५॥
हौय बिबाह चुक्यौ जबै, कलिंग देस कौ राय॥
अरु औरहुँ सब दुष्ट नृप, रुकमहि कह्यौ सुनाय॥ ३६॥
तुम्ह हलधर जू सौं जुवा, षैलहुँ भलैं प्रकार॥
बै जांनत हैं षैल नहिं, हारैंगे निरधार॥ ३७॥
इहि सुनि श्रीबलदैव सौं, रुकमी ताहीं बार॥
मिलि षैलन लाग्यौ जुवा, धरि अभिमांन अपार॥ ३८॥
दस सहस्त्र धन दांव परि, धरत भयै बलिरांम॥
सौ सब धन जीतत भयौ, रुकमी जू बहिं ठांम॥ ३९॥
कलिंग दैस कौं नृप तबै, हसत भयौ हहराय॥
वाकौं युं हसनौं चित मैं, कछु बलदैव न ल्याय॥ ४०॥
तब रुकमी इक लाष द्रव्य, धर्यौ दांव पै चांहिं॥
बही दांव बलदेव जू, जीत्यौ जोग्य सरांहिं॥ ४१॥
कह्यौ रुकम तब कपट करि, तैं जीत्यौ इहि दांव॥
इहि सुनि कैं बलिदैव जू, अधिक क्रौध अनुभाव॥ ४२॥
द्रव्य कोटि दस दांव परि, धरत भयै उहिं बार॥
बहू दांव बलदैव जू, जीत्यौ सत्य प्रकार॥ ४३॥
रुकम कह्यौ फिरि कपट सौं, है म्हैरीहीं जीति॥
आकासी बांनी तबै, हौत भई या रीति॥ ४४॥

जीतै हैं बलदेव जू, सत्य भाय निरधार॥
झूठ बचन बौलत इहै, रुकमी महा लबार॥ ४५॥
दुष्ट नृपन कैं कहै तैं, तब रुकमी अनषाय॥
कहत भयौ अैसै बचन, हँसि हँसि भौंह चढाय॥ ४६॥
जुवां षैलि जांनौ कहा, तुम्ह हौ ग्वाल निदांन॥
जुद्ध जुवां राजान कौं, कहियत धरम प्रमांन॥ ४७॥
करी अवग्या रुकम यौं, महादुष्ट अवनीस॥
तब आगल लै हाथ मैं, करि हलधर जू रीस॥ ४८॥
रुकमी कौं मारत भयै, सकल सभा कै मांहिं॥
पंचतत्व पावत भयौ, रुकम दुष्ट बहिं ठांहिं॥ ४९॥
दांत काटि कै हसत हौ, कलिंग दैस कौं राय॥
ताकैं श्री बलिदैव जू, तोरै दांत रिसाय॥ ५०॥
और कितक राजान कैं, हाथ पांव पुनि सीस॥
तोरै श्री बलिदैव जू, भजै डरपि अवनीस॥ ५१॥
प्रभु सुनि रुकमी कौं मर्यौ, बौलि सकैं कछु नांहिं॥
अग्रज अरु रुकमनी कौं, प्रेम समझि उर ठांहिं॥ ५२॥
अनिरुध कौं दुलहनि सहित, करि सिंदन परि स्वार॥
लै आयै द्वारावती, उत्सव कियौ अपार॥ ५३॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अैंकषष्टितमोऽध्याय: ॥ ६१ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ द्विषष्टितमोऽध्याय: ॥

(उषा - अनिरुद्ध मिलन)

॥ श्री राजोवाच॥

दोहा - राजा पूछत बांन की, पुत्री ऊषा नांम॥
अनिरुध जू ब्याहे तांह, भयौ महा संग्राम॥ १॥
तब सिव अरु श्रीकृस्न कैं, हौत भयौ घमसांन॥
सौ चरित जु हम्ह सौं कहौ, आछै करि बाष्यांन॥ २॥

॥ श्री सुक उबाच॥

सुक कहत कि बलि नृपति जिन, प्रभु कौं दिय भुवदांन॥
सौ पुत्रननि मैं स्त्रेष्ठ जिहिं, पुत्रहिं कहावत बांन॥ ३॥

बहि बानांसुर सिंभु कौं, भगत रह्यौ निरधार॥
सत्यवादी धनवंत पुनि, दाता सूर उदार॥४॥
श्रौणित पुर जाकौं नगर, बिलसत भोग अपार॥
सैव करत जिहिं सुर बउत, सिव अनुग्रह अनुसार॥५॥
भगतबछल सरनागतहिं, पालक सिव भगवांन॥
वांसौ बोलै मांगि बर, तौ ईछा उनमांन॥६॥
बांनासुर बोल्यौ कि तुम्ह, बसौ नगर मो मांहिं॥
दियौ करौं चौकी भलैं, रछा काज सदांहिं॥७॥
फिरि किहुँ दिन सिव चरन सौं, बांन मुकट निज छ्वाय॥
बौलत भौ अति गरब सौं, अैसै बचन सुनाय॥८॥
हे सिव लौकन कैं प्रगट, तुम्ह गुर ईस उदार॥
पूर्न मनौरथ सबन कैं, आप करत निरधार॥९॥
तुम्हकौं करत प्रनांम हौं, जोर दुहूँ निज पांन॥
मो बिनती सुनि लीजियै, करि निज अनुग्रह दांन॥१०॥
मुहि दिय भुजा हजार तुम्ह, सौ दीनौं बडभार॥
जुद्ध न कौं मो सौं करत, बृथा भुजा निरधार॥११॥
लागी भुजा षुजान मो, तब हौं नग करि चूर॥
दिगजन सौं जुध करन गौ, धरै भुजा बल पूर॥१२॥
भाजि गयै दिग्गज सबै, म्हेरै डर अनुभाय॥
धीरज धरिकैं तनकहूं, नहिं ठहरानै पाय॥१३॥
तब बोलै सिव क्रोध करि, लषि बहि अति अभिमांन॥
ता दिन तेरै द्वार की, तुटिहै धजा निदांन॥१४॥
बडौ जुद्ध करि टारि है, तेरौ मद अग्यांन॥
बांनासुर इह सुनि मुदित, ह्वै गौ आय सथांन॥१५॥
ता दिन मोहूं तैं बडौ, पुरष कौउ बलवांन॥
लरनहार तौ सौ भलैं, ह्वै हैं प्रगट निदांन॥१६॥
रह्यौ बिचार इही करत, निस बासुर मन मांहिं॥
लरनहार मो कौं कबै, प्रगटैगौ भुव ठांहिं॥१७॥
जिहिं बानांसुर की सुता, ऊषा नांम सुढार॥
सुपनैं मैं दैषत भई, अनिरुद्ध कुँवर उदार॥१८॥
पहिलै कहुं अनिरुद्ध कौं, लषै सुनैं उन्ह नांहिं॥
मिलन हौत भौ प्रथम ही, सौवत सुपनैं मांहिं॥१९॥
तुम्ह कांह हौ हे मित्र यौं, ऊषा बांनी बौलि॥
सषीनि बीच सोइ तांह, जागि उठी द्रिग षौलि॥२०॥

मंत्री हौ ग्रिह बांन कैं, जिहं कुंभांड सु नांम॥
सुता चित्रलैषा सुजिहीं, ऊषा संगनि भांम॥ २१॥
सौ बौली हे नृप सुता, तू चाहित है काहि॥
तेरौ अबही नहिं भयौ, काहू सौं जु बिवाहि॥ २२॥

॥ ऊषोवाच॥

ऊषा बौली हे सषी, सुंदरस्यांम सरूप॥
पंकज दल सै बंक द्रिग, सौभा परम अनूप॥ २३॥
पीत बस्त्र धारन कियै, तिय मनहरन नवीन॥
अैसौ म्हैं इक सुपन मैं, देष्यौ पुरष प्रवीन॥ २४॥
सौ मुहि अधरा अमृत रस, भलै पांन करवाय॥
दुष समुद्र मैं छौरि कैं, जात रह्यौ री हाय॥ २५॥
म्हैं चाहत हूं तांहिं अब, बा बिनु कल नहिं मोहि॥
कितै गयौ जांनत न म्हैं, कांह तैं दिषहुं तोहि॥ २६॥

॥ चित्रलेखोवाच॥

तबै चित्रलैषा जु कह्यौ, तौ दुष दैहूं टारि॥
ह्वै है बह जु त्रिलौक मैं, तौ ल्याऊ निरधारि॥ २७॥

॥ श्री सुक उवाच॥

इतनौं कहि कैं दैवतां, सिध चारन गंधर्ब॥
बिद्याधर अहि दैत्य जछि, मनुषन संजुत सर्ब॥ २८॥
मनुषन मैं जादव लिषै, सूरसैंन बसुदैव॥
रांम स्यांम प्रदुमन्य कौ, अनिरुध आदि सभैव॥ २९॥
चित्र दैषिहिं प्रदुमन्य कौ, ऊषा लज्या जु कीन॥
ससुर जांनिकैं नय रही, बौली कछु न प्रवीन॥ ३०॥
फिरि अनुरद्ध कौ चित्रलषि, नीची नार नवाय॥
कह्यौ कि देषै सुपन मैं, सौ अैई सुषदाय॥ ३१॥
अनिरुध प्रभु कौं पौत्र अैं, चित्रलैषा मन जांनि॥
द्वारावति आवत भई, जोग सक्ति निज ठांनि॥ ३२॥
अनिरुध जू निसकौं करत, रहै पलिंग परि सैंन॥
तिह्नैं पलिंग जुत और नभ, ल्याई ऊषा अैंन॥ ३३॥
इन्हकौं सुंदर रूप लषि, ऊषा हौय परसन्य॥
राषत भई छिपाय कैं, मांनि भाग निज धन्य॥ ३४॥
करत भई संभोग सुष, आछै समैं इकंत॥
अनिरुध ऊषा दुहु मुदित, बिबिधि भोग बिलसंत॥ ३५॥
भलैं बसन भूषन सुमन, माला पांन सुगंध॥
भौजन आसन सैंन सुष, मीठै बचन प्रबंध॥ ३६॥

इन्ह भांतिन सेवा करी, ऊषा संजुत प्रीति॥
प्रसंन करै अनिरुध कुँवर, बांधि सुप्रेम प्रतीत॥ ३७॥
अनिरुधही ऊषा रषै, किहुँ ठां गौपि छिपाय॥
भोग करत कइ दिन वितै, सौ नहिं परै जनाय॥ ३८॥
ऊषा कौ अति प्रस्नं लषि, कंचुकि तिया समाज॥
सबही कछुकछु लषि गयै, गौपि भैद कैं साज॥ ३९॥
चौकीदारन बांन सौं, बात कही यौ जाय॥
दूषन कछु तौ सुता मैं, हम्हकौं परत जनाय॥ ४०॥
द्वारै हम्ह रछया करत, भीतर सकत न जाय॥
तातैं कछु ठीक न परत, कहै सु तुम्हहिं सुनाय॥ ४१॥
इहि सुनि बांनासुर भयौ, दुषित महाचित मांहिं॥
गयौ दौरि कन्या अयन, अनिरुध लषै सुठांहिं॥ ४२॥
सुंदर सांम अनूप छबि, प्रदुमन पुत्र जु रसाल॥
पीतांबर धारन कियै, पंकज नैन बिसाल॥ ४३॥
ऊषा सौं अनिरुध कुँवर, षैलत चौपरि ष्याल॥
कुच कुंकुम उर लगि रही, पहरै सुमननि माल॥ ४४॥
लषि ऐसै अनिरुध जु कौ, बानांसुर उहिं बार॥
अति अचिरज मांनत भयौ, बाढ्यौ क्रौध अपार॥ ४५॥
संग बउत जोधा लियै, बानांसुर बलबांन॥
अनिरुध जू आवत लष्यौ, करन काज घमसांन॥ ४६॥
आगल लै निज हाथ मैं, ठाढौ समुष कुमार॥
ज्यौं जम ठाढौ हौत है, कर लै दंड कुठार॥ ४७॥
जइसै सूर कुतांन कौ, दैत जु मारि भजाय॥
त्यौंही सब जौधान मुष, अनिरुध दियौ फिराय॥ ४८॥
घायल ह्वै जौधा सबै, आयै भाजि सुद्वार॥
तब बानांसुर सोच करि, कीनौ और बिचार॥ ४९॥
नागफास सौं अनिरुधहिं, लीनौं बांधि रिसाय॥
तबै ऊषा कैं चित कौ, बाढ्यौ दुष्ष अधिकाय॥ ५०॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते द्विषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६२॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ त्रिषष्टितमोऽध्यायः ॥

(भगवान श्रीकृष्ण के साथ बाणासुर का युद्ध)

॥ श्रीसुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि अनिरुद्ध कैं, बंधु द्वारिका मांहिं॥
सोच करत बरिषावती, षौज लह्यौ कहुं नांहिं॥ १॥
फिरि नारद जू कै मुषैं, सुनत भयै इहि बात॥
बानांसुर कैं ह्यां बंधे, हैं अनिरुद्ध अग्यात॥ २॥
इहि सुनि जादव जुध करन, भुजा ठौकि ह्वै स्वांर॥
श्रौणितपुर पउँचत भयै, तनक न करी अवांर॥ ३॥
प्रदुमन सात्यक सांबु गद, भद्रनंद उपनंद॥
सारण आदि जु मिलि सबै, जादव जूथ सुछंद॥ ४॥
प्रभु कै पाछै लगि चलै, जोधा बुधि जु बिसाल॥
अनिरुध जू कौ ल्यायै बै, करिकैं रनवट ष्याल॥ ५॥
बारह आष्यौनि सैंन लैं, संग राम अरु सांम॥
श्रौणितपुर घैरत भयै, बानांसुर कौ ठांम॥ ६॥
गढ दरबाजै बन नगर, तौरत बांन निहार॥
बारह अष्यौनि सैंन लै, आयै जुध अनुसार॥ ७॥
पुत्रगननि संजुत जू सिव, ह्वै नंदी परि स्वार॥
करन सहाय सु बांन की, आयै ताही वार॥ ८॥
लरत भयै श्रीकृस्न सिव, प्रदुमन स्कंद कुमार॥
कूपकर्न कुंभांड सौं, लरत रांम हलधार॥ ९॥
बानांसुर कैं पुत्रहिं सौं, सांब कियौ घमसांन॥
सात्यक बानांसुरहिं बिच, भयौ जुद्ध अप्रमांन॥ १०॥
मुनि ब्रह्मादिक देवतां, सिध चारन गंधर्ब॥
चढि चढि चलै बिमांन परि, जुध दैषन कौ सर्ब॥ ११॥
भूत बिनायक डाकनी, जातुधान बैताल॥
प्रमथ गुह्यिक कूष्मांड ब्रह्म, राछिस प्रेत कराल॥ १२॥
मात्रि पिसाचनि आदि सब, सिवगन सैंन भयांन॥
सारंग धनुकैं सरन सौं, दिय भजाय भगवांन॥ १३॥
महादैव चलवत भयै, जइसैं जइसैं वांन॥
तइसैंही श्रीकृस्न जू, चलयौ बांन विनांन॥ १४॥
ब्रह्म अस्त्र परब्रह्मासर, कृस्नं चलावन कीन॥
नग अस्त्र वायु अस्त्र उपरि, चलयौ सांम प्रवीन॥ १५॥
आगनैय अस्त्रहिं ऊपरि, चलयौ पर्जन्य अस्त्र॥
चलयौ पासपतास्त्र परि, प्रभु नारायन अस्त्र॥ १६॥

प्रभु जृंभाणजु अस्त्र सौं, सिव कौं व्याकुल कीन॥
अरु बानांसुर की बउत, सैंन मारि जस लीन॥ १७॥
पीडत सकंद कुमारहूं, प्रदुमन वांन प्रसंग॥
चढै मोर परि भजि गयै, तन रत झरत कुढंग॥ १८॥
हलधर जू कै हाथ तैं, लागि मूसल प्रहार॥
कूपकर्न कुंभांड हुव, मूर्छित भूलि संह्वार॥ १९॥
भजत दैषि निज सैंन कौं, बानांसुर करि क्रौध॥
सात्यक कौ तजि प्रभू सौं, आयौ लरन अबौध॥ २०॥
भुज हजार सौ पांचसै, धनुष षैंचि वां बार॥
द्वै द्वै सर चलवत भयौ, इक इक धनु अनुसार॥ २१॥
तब प्रभु वांकै धनुष अस्व, जुत सारथीन संघारि॥
संषनाद करतै भयै, जीति सबद ऊचारि॥ २२॥
मात कौटरा बांन की, सुत रछया कैं काज॥
नगन हौत आवत भई, बिच सब सैंन समाज॥ २३॥
नगन दैषि वांकौ प्रभू, निज मुष लीनौं फेरि॥
बानांसुर अवकास लहि, भाजि गयौ तिहँ बेरि॥ २४॥
तीन चरन सिर तीन जिहिं, जारत दिसनि कुभाय॥
ऐसौ सिव कौ तप्त ज्वर, आयौ प्रभु समुहाय॥ २५॥
वां ज्वर कौ लषि कृस्न जू, पठयौ निज ज्वर सीत॥
दौनूं ज्वर संग्राम किय, लही सीत ज्वर जीत॥ २६॥
तबै बह सिव कौं तप्त ज्वर, प्रभु कैं सरनै आय॥
करत भयौ आछै अस्तुति, अपनौं सीस नवाय॥ २७॥

॥ ज्वर उवाच॥

जिन्हकी सक्ति अनंत है, सबकैं आत्मा ईस॥
उतपति पालन जगत कैं, करता तुम्ह जगदीस॥ २८॥
ब्रह्मबेद सू लषि परत, तुम्ह प्रभु ग्यांन सरूप॥
नमसकार म्हैं करत हौं, पूरन ब्रह्म अनूप॥ २९॥
काल करम दईव जीन, षैत्र प्राण स्वाभाय॥
सकल तुम्हारी प्रकृति है, तुम्हहिं प्रनांम सदाय॥ ३०॥
तुम्ह अनैक अवतार धरि, करि लीला अनपार॥
दुष्टन कौं हति धरम की, रिछया करत सुढार॥ ३१॥
धर्यौ आपु अवतार इहि, दूरि करन भुवभार॥
सौ सरूप लषि रावरौ, मिटत हिदै अंधियार॥ ३२॥
इहै रावरौ ज्वर करत, मोहि दुषित अधिकाय॥
हौं आयौ अब तुम्ह सरन, म्हैरी करौ सहाय॥ ३३॥

अरु जबहीं लौं दैत हैं, दुष तौ प्रांनन ताप॥
तब तांई तुम्ह पद सरन, उमगि न आवत आप॥ ३४ ॥
इहि सुनि कैं बोलै बचन, दीन बंधु श्रीकृस्नं॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

हे ज्वर म्हैं तौपरि भयौ, करि अनुग्रह अति प्रस्नं॥ ३५ ॥
म्हैरी ज्वर सौं तुहि कबहुँ, भय उपजै गौ नांहिं॥
बचन प्रतंग्या मांनि मो, तू अपनैं चित ठांहिं॥ ३६ ॥

॥ श्री सुक उवाच॥

जात रह्यौ ज्वर सुनि इहै, करि प्रभु कौं परिनांम॥
बानांसुर रथ चढि बहुरि, आयौ करन संग्राम॥ ३७ ॥
चलयै भुजा हजार सौं, बानांसुर बहुवांन॥
बड्डौ पराक्रम करत भौ, उमगि बीच घमसांन॥ ३८ ॥
जांकै आयुध जुत भुजा, ब्रछि कैं डाल समांन॥
तिह्हैं कृस्न जू चक्र सौं, काटत भयै निदांन॥ ३९ ॥
भुजा आपनैं दास की, कटत दैषि त्रय नैंन॥
करि अनुग्रह निज भगत पैं, प्रभु सौं बोलै बैंन॥ ४० ॥

॥ श्री रुद्र उवाच॥

परम जोति परब्रह्म तुम्ह, छिपै बेद कैं मांहिं॥
जिन्ह उर निरमल तैं लषत, नभ सम तुम्ह सब ठांहिं॥ ४१ ॥
तुम्ह नाभी नभ अगनि मुष, नीर बीर्ज रवि नैंन॥
दिसां कांन प्रिथवी चरन, मसतक सुरग सुषैंन॥ ४२ ॥
ससि मन बिधि बुधि धरम उर, ब्रछहिं रौम घन कैस॥
म्हैं अहंकार रु प्रजापति, इंद्री सकल सुदैस॥ ४३ ॥
अैसै तुम्ह भगवांन हौ, रिछा धरम भुवकाज॥
लीनौं है अवतार भुव, पालक लौक समाज॥ ४४ ॥
प्रभू हम्हारै हौं सही, तुम्ह पालक निरधार॥
हम्ह लौकनि पालन करत, तुम्ह आग्यां अनुसार॥ ४५ ॥
आदि पुरष अद्वैत तुम्हीं, सबकैं हौ तुम्ह ईस॥
हेत तुम्हारै नांहिं कौं, हे स्वामी जगदीस॥ ४६ ॥
तुम्हहीं जीव सरूप हौ, पूरन ब्रह्म करतार॥
आप प्रकासक ह्वै रहै, बीच सकल संसार॥ ४७ ॥
जइसै मैंघन सौं छिप्यौ, रवि मैंघन की बौत॥
सबै बस्तन कौं करत है, भलैं प्रकास उदौत॥ ४८ ॥
जइसै जीव रु जगत कौं, छिपि माया मैं आपु॥
भलैं प्रकासक करत हौ, हे भगवांन सजापु॥ ४९ ॥

जिन्हकी माया सौं मुहित, तिय ग्रिह पुत्रननि ठांहिं॥
दुष कलैस मैं बूडत रु, उलझत जीव अथांहिं॥५०॥
मनुष देह धरि भाग सौं, तुम्ह पद सेवै नांहिं॥
सौ ही नर अग्यांन बस, ठग्यौ गयौ जग मांहिं॥५१॥
जो तुम्हकौं तजि और कछु, चाहै कौं अग्यांन॥
सौ अमृत तजि षात है, बिष कौं मूर्ष निदांन॥५२॥
म्हैं बिधि सुर मुनि तुम्ह सरन, तुम्ह ईस्वर करतार॥
उतपति पालन अरु प्रलैं, करत सकल संसार॥५३॥
सांत सुहृद सबकैं सदा, पूर्न मनोरथ दैंन॥
भजन तुम्हारौ हम्ह करत, पावन मुक्ति सुचैंन॥५४॥
मो प्रिय भक्त सु बांन इहि, अभय दयौ म्हैं यांहिं॥
ता ऊपर पर प्रहलाद सम, कृपा करौ चित चांहिं॥५५॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

प्रभु बोलै सिव कहत तुम्ह, करिहौं सोइ प्रमांन॥
तुम्ह बर दयौ सु हम्ह दयौ, तामैं कछु न बिनांन॥५६॥
बलि राजा कौं पुत्र इहै, मारन जोग्यहुं नांहिं॥
पुनि प्रहलादिहिं कह्यौ म्हैं, हतहुँ बंस तौ नांहिं॥५७॥
गरब दूरि याकौं करन, भुज काटै या बार॥
अरु सब सैंना मारिकैं, टार्यौ भुव कौं भार॥५८॥
अब निरभय रहिहैं इहै, भुजा रहैंगी च्यार॥
मुष्य पारषद रावरौ, ह्वै हैं भलैं प्रकार॥५९॥

॥ श्री सुक उवाच॥

प्रभु कौं अैसौ बचन सुनि, नमसकार करि बांन॥
ऊषा अनिरुध स्वार रथ, लै आयै रन थांन॥६०॥
ऊषा अनिरुध संग लैं, लियै अष्यौनी सैंन॥
भयै पधारत द्वारका, कृस्न कंवल दल नैंन॥६१॥
हुव उच्छव द्वारावती, बजि बाजित्र जु अपार॥
निजपुर अैसी रीति सौं, पहुँचै कृस्न कुमार॥६२॥
इहै जुध श्रीकृस्नहिं कौं, सुमरन करै जु कौय॥
ताकी काहू ठौरि मैं, हारि कबहुँ नहिं हौय॥६३॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते त्रिषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६३॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुःषष्टितमोऽध्यायः ॥

(नृग राजा की कथा)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - श्री सुक कहत कि इक दिनां, जादव बंसी बाल॥
काहू उपवन ठौर मैं, गयै षैलिबै ष्याल॥ १॥
चारु दैस्न प्रदुमन गद, सांबु आदि जित नैक॥
प्यास लगी सबहीन कौं, क्रीडा करत अनैक॥ २॥
निकट जाय कि कूप कैं, देषैं तौ वा मांहिं॥
नग समांन किरकट पर्यौ, दीसि परत जल नांहिं॥ ३॥
बहि काढिबै कौं जतन, करत भयै सब बाल॥
रस्सा चाम कैं ल्याय बहु, करि इकठै उहिं काल॥ ४॥
वांकौ लागै काढिबै, दीरघ रसा उरासि॥
बह निकस्यौ नहिं जब कह्यौ, भैद जाइ प्रभु पासि॥ ५॥
कूप पास प्रभु जाय कैं, किरकट बड़ौ निहारि॥
वांकौ निज कर वांम सौं, लैत जु भयै निकारि॥ ६॥
छुटि किरकट की देह बहि, प्रभु कर परसहिं पाय॥
भौ सुंदर सुरूप उर, बनमाला छबि छाय॥ ७॥
सबकै सुनिबै बहिं चरित, वांसौ पूछौ सांम॥
उत्तम जु रूप सु सुरन मैं, तुम्हकौं हौ अभिरांम॥ ८॥
अधम जनम पुनि तुम्ह इहै, धर्यौ कौनुँ अघभाय॥
सकल भेद अपनौं कहौ, हम्हकौं भलैं सुनाय॥ ९॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि अैसै बचन, प्रभु कैं सुनि सुषदाय॥
करि प्रनांम नृग नृप तबै, बोल्यौ बचन सुनाय॥ १०॥

॥ नृग उवाच ॥

नृप इष्वाकु कौं पुत्र हौं, नृग राजा मो नांम॥
नांम सु बिच दानीन मो, सुन्यौ हौयगौ सांम॥ ११॥
अंतरजामी आप हौ, कछू छिपी तुम्ह तैंन॥
तउ तुम्ह आग्यां सू कहत, म्हैं निज बात सुषैंन॥ १२॥
नभ नछित्रहिं भुव रैंनु कन, घन बूंदनि उनमांन॥
दीनी म्हैं द्विज बरन कौं, गौ सुषदायक दांन॥ १३॥
साधवंत कपला तरुन, रूपवंत पयवांन॥
सींग जिन्हनि कंचन कलित, आई नीति प्रमांन॥ १४॥
बछरा जुत षुर रजत कैं, पहरैं भूषन माल॥
अैसी गायैं द्विजन कौं, म्हैं बहु दई रसाल॥ १५॥

अरु जिन्ह मैं गुन सील बहु, वकता सत्य सुढार॥
तपस्या सास्त्रन मध्य जें, सावधांन निरधार॥ १६॥
पुनि कुटंब भूषौ जिन्हनि, अैसै बिप्रहिं पिछांनि॥
गायैं महा अनूप कइ, म्हैं दिय दांन निदांनि॥ १७॥
सैज भूमि घर कनक गज, दासी कन्या गाय॥
तिल वासन रूपा रतन, म्हैं दिय दांन सुभाय॥ १८॥
कियै जिग्यहूं बउत म्हैं, अरु बन बाग तलाव॥
कीनै अैसै कार्ज म्हैं, समझि धरम कौ भाव॥ १९॥
अैंक दिवस किहुँ बिप्र जु की, गौ मो गायन मांहिं॥
आई मिलि तिहिं गाय कौं, म्हैं पहचानि जु नांहिं॥ २०॥
और बिप्रहिं कौ गाय बहिं, म्हैं दीनी करि दांन॥
पहलौं ब्राह्मन ताहि लषि, बौल्यौ बचन निदांन॥ २१॥
इही गाय म्हैरी सही, तू क्यूं लीनै जात॥
तब बौल्यौ द्विज दूसरौ, मुहि दिय नृप बिषयात॥ २२॥
दुहु ब्राह्मन बोलै बचन, अैसै मो पैं आय॥
नृप तू गायै दैत पुनि, बहुर्यौ लैत छिनाय॥ २३॥
जिहि ब्राह्मन की गाय ही, ताहि कहै म्हैं बैंन॥
बदलै तू या गाय कैं, लै गउ लाष सुषैंन॥ २४॥
झगरा याकौ मति करौ, म्हैं जु तुम्हारौ दास॥
मो पैं तुम्ह अनुग्रह करौ, मोहि बड्डी है त्रास॥ २५॥
जिहिं ब्राह्मन की गाय ही, सौ बोल्यौ या भाय॥
या गौ कैं बदलैं नांहिं, लैहुँ नृपति की गाय॥ २६॥
अरु बोल्यौ द्विज दूसरौ, म्हैं ल्यौं इहिहीं गाय॥
यौं हठ करिकैं द्विज दोउ, जात रहै दुष पाय॥ २७॥
पुनि म्हैरौ ताही समैं, काल प्राप्त भौ आय॥
लै गयै जम कैं दूत मुहि, जम पैं नीत प्रभाय॥ २८॥
जम बोल्यौ तौ दांन कौं, आदि अंत है नांहिं॥
पाप पुन्य मैं पहल किंहीं, भुकतोगै चित चांहिं॥ २९॥
तब म्हैं कह्यौ कि पाप कौ, पहलैं करिहौं भोग॥
इह किरकट कौं जनम म्हैं, पायौ जास प्रयोग॥ ३०॥
दास तुम्हारौ म्हैं प्रभू, पूर्ब जनम सुधि ताहि॥
भुली न काहू भांत करि, बढि तुव दरसन चाहि॥ ३१॥
बड्डे जोगैसरनि कौं, तुम्ह दरसन नहिं हौत॥
अैसौ दुरलभ रावरौ, है सुदरसन उदौत॥ ३२॥

हौय रही मो अंध बुधि, महा दुषन अनुसार॥
ताकौ तुम्ह दरसन भयौ, पाई मुक्ति सुढार॥ ३३॥
देव देव जगनाथ प्रभु, पुरषौतम गोविंद॥
नारायन अच्युत अव्यय, रिषीकैस ब्रजचंद॥ ३४॥
हे हरि पुन्यश्लोक अबै, जइबैं सुवर्ग सुठांम॥
म्हैं मांगत हौं रावरी, आग्या अति अभिरांम॥ ३५॥
अरु म्हैं जांह रहौं तांह, रहौं सरन तुम्ह चांहिं॥
औरहिं भैद चित मो, कबहूं लागै नांहिं॥ ३६॥
वासुदेव श्रीकृस्नं ब्रह्म, पूरन सक्ति अनंत॥
पति हौ जोगैसरन कैं, तुम्हहिं प्रनांम सुतंत॥ ३७॥
अैसै कहि प्रभु कैं चरन, छुय नृप हौय निहाल॥
चढि विमांन पैं सुवर्ग कौं, जात भयौ उहिं काल॥ ३८॥
सिष्या करिबै नृपन कौ, ब्रह्मन दैव श्रीकृस्न॥
कहत भयै जादवनि सौं, अैसै बचन सप्रस्न॥ ३९॥
बिप्रन कौं द्रव्य तनकहूं, अगनि न सकत पचाय॥
तौ बहि द्रव्य कइसैं नृपति, सकै पचाय सुभाय॥ ४०॥
बिष षैवै कौ जतन है, द्विज द्रव्यन कौं इलाज॥
मरकैं नरकहिं जात नर, संवरै कछुं न काज॥ ४१॥
विष तौ षावनहार कौं, मारत है निरधार॥
अगनि लगै सौ बुझत है, पांनी मैल प्रकार॥ ४२॥
ब्राह्मन कौ द्रव्य है सही, अैसी अगनि निदांन॥
जासौं सबही बंस कौ, हौत नास सप्रमांन॥ ४३॥
बिनु आग्यां द्विज की कौउ, द्रव्य बिप्रन कौ पाय॥
तौ सुत नाती सहित नर, नरक प्राप्त ह्वै जाय॥ ४४॥
अरु द्विज द्रव्य जोरावरी, जो कौं लैत छिनाय॥
तिहं दस पुरषा और दस, पिछलै नरकहिं जाय॥ ४५॥
अरु जो द्विज कैं द्रव्य कौं, चाहत है जु नृपाल॥
तैं मनु वांछा नरक की, करत रहत तिहुँ काल॥ ४६॥
दाता जो द्विज वरन की, प्रिथवी जो हरि लैह॥
उहिं द्विज आंसुन सौ भिजत, भुव रज कन अनछैह॥ ४७॥
भुव रजकन भीजै जितैं, बरषन लौं दुषपाय॥
कुंभी पाक कुनरक मैं, नृपति परत है जाय॥ ४८॥
अपनीं दई रु और की, दिय द्विज ब्रति लै कौय॥
साठि हजारन बरष लौं, बिष्टा कीट सुहौय॥ ४९॥

षाय बिप्रन कौ द्रव्य जिहिं, आर्बल थोरी हौय॥
सुष संपति सब औरहूं, रहत न पावत कौय॥५०॥
जो द्विज कौ द्रव्य लैत है, तैं जन मूर्ष अग्यांन॥
राज छौडि कैं सर्प तन, पावत प्रगट निदांन॥५१॥
मारै गारी दैय द्विज, तउ तुम्ह करौं प्रनांम॥
ज्यौं निति विप्रननि हौं करत, नमसकार निस जांम॥५२॥
अरु जो तुम्ह करिहौं नांहिं, विप्रननि कौ परनांम॥
तौ म्हैं तुम्हकौं दैहुँगौ, दंड महा दुषधांम॥५३॥

॥ श्री सुक उवाच॥

द्विज द्रव्य लै जिहिं नास है, जामैं नांहिं संदैह॥
अैंक गाय कैं काज नृप, नृग दुष सह्यौ अछैह॥५४॥
द्वारावति वासीन कौं, अैसै बचन सुनाय॥
भयै पधारत कृस्न जू, निज मंदिर सुषपाय॥५५॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते चतुः षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६४॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ पंचषष्टितमोऽध्यायः ॥

(श्री बलराम जी का ब्रजगमन)

॥ श्री सुक उवाच॥

दोहा - सुक कहत कि बलिदैव जू, ह्वै सिंदन परि स्वार॥
निज मित्रननिकै मिलन कौं, बृज आयै सुषसार॥१॥
मिलत भयै आदरि सहित, सबहीं गौपी ग्वाल॥
ब्रजबासी मांनत भयै, महामोद उहिं काल॥२॥
नंद जसौमति कौं कियौं, नमसकार बलिरांम॥
दीनौ आसिरबाद उन्ह, उमगि प्रेम उर ठांम॥३॥
रिछा हम्हारी करहुँ तुम्ह, जगदीस्वर बलिरांम॥
यौंकहि जसुमतिनंद जू, लिय निज गौदहि ठांम॥४॥
अति सनैह संजुक्त निज, गौदी मैं बैठारि॥
सजल नैत्र किय नंद जसु, परम प्रेम अनुसारि॥५॥
करत भयै बलिदैव जू, बृध गौपनि परनांम॥
लघु गौपनि इन्हकौं कियौ, नमसकार सुषधांम॥६॥
जिन्हि अवसथा मित्रननि की, बंधुताहिं सौं सुढार॥
तइसै श्रीबलिदैव सौं, मिलैं सकल करि प्यार॥७॥

गौपनि कर गहि गहि भलैं, हसत भयै बलदैव॥
सुष सौं बैठै बलि तबै, बोलै गौप सुभैव॥ ८॥
कुसल प्रसंन पूछत भयै, ह्वै कैं गदगद बांनि॥
सबकौं मन श्रीकृस्न मैं, लागि रह्यौ सुनिदांनि॥ ९॥
कहियै हे बलिदैव जू, जदुबंसिन कुसलात॥
महा कुसल सौं सकल जन, है आछै बिषयात॥ १०॥
भयै तुम्हारै पुत्रहिं तिय, मंड्यौ ग्रिह व्यौहार॥
कबहुँ हम्हारी सुधिहुँ तुम्ह, करतै किहूं प्रकार॥ ११॥
कंस मर्यो सु भली भई, छुटि बंधन पितु मात॥
सत्रुननि मार बसै भलै, द्वारावति बिषयात॥ १२॥
पूछत श्रीबलिदैव सौं, गौपी या अनुसार॥
कृस्न कुँवर है कुसल सौं, चहत नगर की नार॥ १३॥
हम्हकौं अरु पितु मातु कौं, सुधिहुँ करत है सांम॥
इहां कबहुँ अैहैं कि नहिं, महा कपट कैं धांम॥ १४॥
हम्ह सैवा उन्हकी करी, सौ सुधि करत कि नांहिं॥
उन्हकौं अपनैं प्रांन सम, हम्ह जांनै चित्त मांहिं॥ १५॥
मात पिता सुत भ्रात पति, सुहृद सजन धन गैह॥
तजै निमित श्रीकृस्न कैं, हम्ह किय प्रीत अछैह॥ १६॥
वै हरि हम्हकौं छौडि कैं, प्रीति तोरि रहि जात॥
चलतैं कहि मीठे बचन, दियौ दगा बिषयात॥ १७॥
उन्हकौं मन चंचल महा, है कृतघ्नी सुभाय॥
तिया नगर की बात उन्ह, मांनत है किंहिं दाय॥ १८॥
पैं उन्ह मुसकनि मंद सौं, मोहित ह्वै सब नारि॥
मिष्ट बचन उन्हकैं कहै, मांनत है निरधारि॥ १९॥
तब बोलै बलदैव जू, हे गौपी तिय भौर॥
काहै की उन्हकी कथा, कहौ कथा कछु और॥ २०॥

(कवि वचन)

हास बौलनौ चितवनौ, आलिंगन अरु चाल॥
सुधि करि प्रभु की बात अैं, मोहि गौपी रसाल॥ २१॥
भैदि मनावन मध्य अति, श्री बलिदैव प्रवीन॥
कहि संदेस श्रीकृस्न कैं, समाधांन करि दीन॥ २२॥
दौय मास बलिदैव जू, बसै चैत बैसाष॥
नव गौपिन आनंद दिय, निसा चांदनी पाष॥ २३॥
पूरन ससि की चांदनी, महा बिमल सुषदाय॥
तामैं कुसम सुगंध जुत, चलत समीर सुभाय॥ २४॥

ऐसैं जमुना तटि विषै, लियै संग नव नारि॥
करत भयै बलदेव जू, रमण भलैं अनुसारि॥ २५॥
बरुन पठाई वारुनी, मदिरा परम सुढार॥
लागी छूवन ब्रछि तैं, हुव सुगंध बिसतार॥ २६॥
गावत श्रीबलदेव कैं, चरित नवल बृज बाल॥
ह्वै मदमत्त वन मैं फिरत, श्री बलिदेव रसाल॥ २७॥
सुमन माल पहिरै हिर्दै, कुंडल अैंक सुकांन॥
औस बूंद ज्यौं कंवल परि, श्रमकन छबि अप्रमांन॥ २८॥
कालिंदी जू कौ जांह, भयै बुलावत रांम॥
इन्हकौं मदमत्त जांनिकैं, आई नहिं बहिं ठांम॥ २९॥
तब हलसौं बलदेव जू, लीनी षैंचि रिसाय॥
अरु बोलै तुहि हम्ह इहां, बुलई पैं नहिं आय॥ ३०॥
तातैं तैरै टूक सत, हौं करिहौं या ठांम॥
इहि सुनि जमुना जू डरपि, बोली करि परनांम॥ ३१॥
अहो राम तुम्ह पराक्रम, म्हैं का जांनत नांहिं॥
हौय रूप फनगैस तुम्ह, भुव धारैं फन ठांहिं॥ ३२॥
परम तत्व म्हैं रावरौ, नहिं जान्यौ निरधार॥
तातैं दीजै छौडि मुहि, अब निज क्रिपा प्रकार॥ ३३॥
जमुना जु कौ छौडि तांह, दैत भयै बलिदैव॥
नवल तियन जुत नीर मैं, कियौ बिहार सुभैव॥ ३४॥
करिकैं नीर बिहार सुष, बाहरि निकसै रांम॥
भूषन माला नील पट, दिय जमुना उहि ठांम॥ ३५॥
भूषन माला नील पट, पहरै श्री बलदेव॥
सौभावंत भयै महा, बरनि सकत नहिं भैव॥ ३६॥
हलसौं षैंची फिरि गई, जमुना जू बहिं बार॥
सौ अबहूं बलि चरित इहि, देषत सब संसार॥ ३७॥
नव गौपिन कैं रूप सौं, मोहित हुव बलिरांम॥
बउत दिवस इक दिवस सम, बितयै ब्रजधर ठांम॥ ३८॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते पंच षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६५॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ षट् षष्टितमोऽध्यायः ॥

(पौंड्रक और काशिराज का उद्धार)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - सुक कहत कि बलदेव जू, जबैं रहै ब्रजठांम॥
कुरुष दैस कौं ता समैं, नृपति महा अघधांम॥ १ ॥
वासुदैव श्रीकृस्न हौ, चित मैं ऐसौ मांनि॥
पठवत भौ श्रीकृस्न पैं, दूत कुबुधि उर आंनि॥ २ ॥
आवत भौ बहि दूत जहँ, सकल सभा अवनैस॥
वासुदैव वा झूठ कैं, प्रभुहिं कहै संदैस॥ ३ ॥
म्हैं सबकौं पालन निमित, वासुदेव प्रगटाय॥
तातैं झूठौ नांम इहि, अब तुम्ह द्यौ छुटकाय॥ ४ ॥
अरु तुम्ह धारत चिह्न मो, सौउ दीजियै छौडि॥
नहिं तो मोसौ जुध करौ, बलधरि हौडाहौडि॥ ५ ॥
सुक कहत कि इहि बात सुनि, उग्रसैंन नृप आदि॥
हसत भयै जादव सबै, सुनि बहि बचन विवादि॥ ६ ॥
हसि बोलै भगवांन यौ, तौ चिह्न हे अग्यांन॥
दूरि करौगौ म्हैं सही, जिन्हकौं तुहि अभिमांन॥ ७ ॥
तौ तन मृत कहि षाहिंगै, काक पंछी अरु स्वान॥
बेगै हीं तू करम कौ, पैहैं फल सुनिदांन॥ ८ ॥
कही बात अैं दूत सब, अपनैं नृप सौं जाय॥
पाछै तैं रथ चढि प्रभू, कासी गयौ सुभाय॥ ९ ॥
बासुदैव मिथ्या सु लै, द्वै अष्यौहिनी सैंन॥
निकस्यौ बाहरि नगर कैं, धरै रीस मन नैंन॥ १० ॥
अरु कासी कौं नृपति लैं, तीन अष्यौहिनि सैंन॥
वासुदैव वा झूठ सौं, सामिल ह्वैहिं सुषैंन॥ ११ ॥
पाछै प्रभु की पीठ कै, आयै दुहूं उमांहिं॥
वासुदेव मिथ्या बहै, गरुड षग पै स्वारहिं॥ १२ ॥
संष चक्र नीरज गदा, चहुँ कर धरै सुढाल॥
कौस्तभ मनि श्रीचिह्न उर, पीतांबर बनमाल॥ १३ ॥
मक्राक्रित कुंडल श्रवन, भूषन बस्त्र रसाल॥
च्यारि भुजा कंवल चरन, नैंना बड्डे बिसाल॥ १४ ॥
ऐसौं नट सम रूप बहि, अपनौं सौ प्रभु दैषि॥
हँसि कै फिरि लागै कहन, वासौं जुधहिं अलैषि॥ १५ ॥
तौमर बरछी पुनि गदा, सूल बांन तरवार॥
इन्ह सस्त्रन सौं जुद्ध अरि, करत भयै निरधार॥ १६ ॥

चक्र गदा तरवारि सर, इन्हसौं कृस्न कुमार॥
दुहु दुष्टन की सैंन कौ, करत भये संघार॥ १७॥
प्रलैं काल कौ अगनि ज्यौं, दैत प्रजाहिं जराय॥
तइसै प्रभु अरि सैंन कौं, कीनी चुरि रिसाय॥ १८॥
गिरै अस्व गज ऊँट नर, चक्र सुदरसन लागि॥
भयौ मसांन निदांन बहि, सिव क्रीडा की जागि॥ १९॥
वासुदेव मिथ्याहिं सौं, कहत भये भगवांन॥
दूत हम्हारै पास तैं, पठयौ हुतौ अग्यांन॥ २०॥
अब तौ मिथ्या चिह्न हम्हहिं, सकल देहिं निरवारि॥
अरु तै झूठौ नाम सौं, राष्यौ सौ द्यौ टारि॥ २१॥
पुनि तौ सौं हम्ह जुद्ध करि, सकिहैं क्यूंहूं नांहिं॥
हौं रहिहैं तेरै सरन, समझि आप मन मांहिं॥ २२॥
अैसै कहि वा दुष्ट कौं, तौर्यौ रथ भगवांन॥
फेरि सुदरसन चक्र सौं, वा सिर कट्यौ निदांन॥ २३॥
जइसै परबत पंष कौ, काटत भौ सुरराय॥
त्यौं ही सिर वा दुष्ट कौं, काट्यौ प्रभू रिसाय॥ २४॥
अैसै हीं कासैस कौं, सिर काट्यौ प्रभु फेरि॥
बहि सिर कासी पुरी बिच, डारि दियौ बिनु झेरि॥ २५॥
बासुदैव मिथ्याहिं प्रभू, सषा सहित संघारि॥
भयै पधारत द्वारका, बजि नीसांन सुढारि॥ २६॥
करत रह्यौ बहु दुष्ट नित, प्रभू ध्यांन अरिभाय॥
म्हैं ही हूं भगवांन इहि, जांनत रह्यौ सदाय॥ २७॥
तासौं वांकैं छुटि गयै, बंधन प्रकति सजौर॥
दुष्ट देह निज त्याग करि, पाई मुक्ति सुतौर॥ २८॥
कुंडल जुत कासेस सिर, पर्यौ बीचि दरबार॥
सौ लषि सब लागै कहन, इहि किंहिं सिर निरधार॥ २९॥
फेरि सीस कासैस कौं, तिय सुत परजा जांनि॥
सब मिलि कैं रौवन लगैं, मूंड कूटि निज थांनि॥ ३०॥
पुत्र जु नृपति कासैस कौ, नांम सुदषिन जु जासि॥
कर निज पितु की क्रिया सौं, मन मैं हौय उदासि॥ ३१॥
कहत भयौ पितु हतक कौं, म्हैं जु करौं संघार॥
ऊरन म्हैं निज पिता सौं, जब ह्वै हौं निरधार॥ ३२॥
इहि बिचार चित मांहिं धरि, समझि सत्रुताहिं भैव॥
महादैव कौ ध्यांन धरि, लाग्यौ करिबै सैव॥ ३३॥

सिव कह्यौ कि वर मांगि इन्हिं, वर मांग्यौ या भाय॥
मारौं मो पितु हतक कौं, मंत्र सुदैहुं बताय॥ ३४॥
इहि सुनि सिव बौलत भये, म्हैं बतवत उपचार॥
दषिनागनि की द्विजन जुत, सेवा करहुँ सुढार॥ ३५॥
आगै म्हैरे गनन किय, बही अगनि की सैव॥
तासौं कार्ज अनैंक किय, जें मन ईछा भैव॥ ३६॥
जौ बिप्रननि कौं भगत तौ, सत्रु हौयगौ जु नांहिं॥
तौ बहि मार्यौ जायगौ, पूर्न हौय तौ चांहिं॥ ३७॥
अैसै सिव कैं बचन सुनि, प्रभु कौं मारन काज॥
हौम करत भौ अगनि मैं, बोलि सुबिप्रहिं समाज॥ ३८॥
मूर्ति धरै निकस्यौ अगनि, बांह कुंड कैं ठांम॥
जिहिं कच तांबे तप्त सम, दीसत अति अघ धांम॥ ३९॥
आनन दाढै भौंह जिहँ, अति कठौर दरसाय॥
चाटत रसनां सौ गरौ, महा क्रौध अनुभाय॥ ४०॥
कर मैं लियैं त्रिसूल कढि, नैत्रननि तैं अंगार॥
कंपावत है प्रिथी कौं, दीरघ पग अनुसार॥ ४१॥
सहित भूत प्रेतनि बहै, अगनि महा रिस छाय॥
जारत सकल दिसांन कौं, पुरी द्वारका आय॥ ४२॥
द्वारावति वासी डरै, अगनि मंत्र कौं जु दैषि॥
जइसैं बन कैं दाह सौं, मृग डरपत अन लैषि॥ ४३॥
प्रभु चौपरि षैलत रहै, सकल सभा जन मांहिं॥
तिन्हसौं जाय प्रजा कह्यौ, जो भय बढ्यौ अथांहिं॥ ४४॥
डरपत लषि अपनैंन कौं, हँसि बोलै भगवांन॥
करिहैं तुम्ह रिछया भलैं, मति डरपौं सुनिदांन॥ ४५॥
अंतरजामी सबन कैं, प्रभू गयै इहि जांनि॥
सिव की उपजाई इहै, कृत्या अगनि प्रमांनि॥ ४६॥
नास करन ताकौं तांह, चांहिं प्रभू करतार॥
चक्र सुदरसन कौं दई, आग्यां हरि बहिं बार॥ ४७॥
कौटि सूर्ज सम अरु प्रलै, कैं पावक समभास॥
चक्र सुदरसन नभ दिसा, मधि करि आपु प्रकास॥ ४८॥
दैत भयौ बहि अगनि कौं, पीड़ा अधिक रिसाय॥
चक्र सुदरसन सौं डरपि, कृत्या गई पलाय॥ ४९॥
पुत्र जु कासि पति कौ करत, रह्यौ हौय निज गैह॥
उन्हहीं पठयौ हो इहै, अगनि कराल अछैह॥ ५०॥

बही अगनि उलटौ बहुरि, कासी पुर मधि जाय॥
कासी पति कैं पुत्र जु कौं, द्विज जुत दियौ जराय॥५१॥
पाछै तें पउचत भयौ, चक्र सुदरसन जाय॥
संपूरन कासी पुरी, दैत सुभयौ जराय॥५२॥
कासी पुरी जराय कैं, चक्र सुदरसन फेरि॥
आवत भौ श्रीकृस्न पैं, पाय फतै बिनु झेरि॥५३॥
इहै चरित भगवांन कौं, सुनै सुनावै कौय॥
जनम जनम कै पाप जिन, निश्चै दूरि सुहौय॥५४॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते षट् षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६६ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ सप्त षष्टितमोऽध्यायः ॥

(द्विविद का उद्धार)

॥ राजोवाच ॥

दोहा - नृप पूछत सुकदैव सूं, जिनकौं नांम अनंत॥
अरु अदभुत तिनकैं चरित, अैसै बलि भगवंत॥१॥
तिन्हकौं औरहुँ चरित म्हैं, सुन्यौं चहत हौं चांहिं॥
सौ हम्हसौं आछैं कहौ, हे सुकदेव उमांहिं॥२॥

॥ श्री सुक उबाच॥

सुक कहत कि वनचर द्विविद, नरकासुर कौ मीत॥
जु मंत्री हौ सुग्रीव कौं, मैंद भ्रात सु अभीत॥३॥
नरकासुर कैं हतक प्रभु, जांनि चहै अग्यांन॥
बैर लैंन द्वारावती, पहुँचउ और निदांन॥४॥
बउत उपद्रव करत भौ, वानर महा सजौर॥
अगनि लाय देतौ भयौ, पुर ग्रामन की ठौर॥५॥
अरु परबतन उठाय कैं, नगरन ऊपर डारि॥
करत भयौ चूरन नगर, धरि निज बल अधिकारि॥६॥
जिन्ह जिन्ह दैसन मैं अधिक, बसहीं कृस्न कुमार॥
तिन्ह दैसन मैं करत भौ, अति उपद्रव निरधार॥७॥
कबहूं नीर समुद्र कौं, लै जल अंजुलि मध्य॥
गांव किनारे कैंन कौं, बौरत भयौ प्रसध्य॥८॥

ब्रछ रिष आस्त्रम कैं सबैं, डारै तोरि उषारि॥
अगनि कुंड मैं मूत्र मल, करत भयौ रिसधारि॥ ९ ॥
पुरवासी अस्त्री पुरष, तिन कौं गहि लै जाय॥
बीच कंदरा रोकि सिल, द्वारै दैत लगाय॥ १० ॥
षौवै धरम तियनि कौं, निरदय दुष्ट अग्यांन॥
करत उपद्रव यौं बउत, संक न धरत निदांन॥ ११ ॥
अैक दिनां बह गांन सुनि, नग रइवत कैं ठांम॥
जात भयौ मनमोद धरि, जांह हुतै बलिरांम॥ १२ ॥
पहिरै माला कंवल की, सुंदर रूप उदार॥
बैठे बिच अस्त्रीन कैं, जें तिय परम सुढार॥ १३ ॥
पीवत मदिरा वारुनी, करत अनूपम गांन॥
घूम रहे मदमत्त द्रिग, पंकज छबि उनमांन॥ १४ ॥
तांह दुष्ट कपि जायकैं, चढि ऊपर तरु डार॥
बृछ हलाय करतौ भयौ, सबद किलकिला ढार॥ १५ ॥
वानर की लषि धृष्ठता, हसन लगी सब नारि॥
करत भयौ अवग्या बहै, अस्त्रीनि की बहिं बारि॥ १६ ॥
अरु मुष भौंहन सौं बहै, तियन भयौ डरपात॥
दिषवत पिछलौ अंग निज, अैसै किय उतपात॥ १७ ॥
भय चलावत पाथर इक, कपि परश्री बलिदैव॥
ताकौ बहै बचायगौ, करिकैं कछु छल भैव॥ १८ ॥
मदिरा घटहिं उठाय कपि, डार्यौ फेरि रिसाय॥
पुनि पट श्रीबलिदेव कैं, फारै भय नहिं पाय॥ १९ ॥
कपि की अैसी दुष्टता, श्री बलिदेव निहारि॥
हल मूसल निज हाथ लिय, अपनैं सस्त्र संभारि॥ २० ॥
भयौ चलावत राम पैं, इक तरु दुविद उषारि॥
तब बह बृछ लीनौं पकरि, तृन ज्यौंश्री हलधारि॥ २१ ॥
तब बानर कैं सीस बलि, कीनौं मुसल प्रहारि॥
तासौं वांकौ सीस फटि, निकस चली रत धारि॥ २२ ॥
जइसै निकसत नगन तैं, बहु धातन की धार॥
त्यौही कपि कैं सीस तैं, बह्यौ रुधिर वां बार॥ २३ ॥
दुविद और तरु ल्याय फिरि, किय तन रांम प्रहार॥
वां तरु कैं सत टूक किय, हल सौं श्री हलधार॥ २४ ॥
कपि ल्यायौ तरु और फिरि, ताहू कैं बलिरांम॥
करि डारै सौ टूक धरि, रीस अधिक चित ठांम॥ २५ ॥

औरहूँ बृछ अनैक कपि, ल्यावत भयौ उषारि॥
बैहुं कियै सत टूक बलि, हल मुसलन सौं मारि॥ २६॥
अैसै जें जें तरु द्विविद, ल्यावत भयौ उषारि॥
तैं करि डारे चूर सब, बलि निज बलि बिसतारि॥ २७॥
रह्यौ न तरु कौऊ जबै, सिल बरषा कपि कीन॥
बैहुँ सिला बलिदैव जू, सब चूरन करि दीन॥ २८॥
दुविद बांधि मूठी दुहूं, दौन्यौ भुजा उठाय॥
करि प्रहार श्रीराम उर, कपि निज बल सरसाय॥ २९॥
फैरि समरि बलिदैव जू, कर निज सस्त्र समारि॥
कपि कैं कंध षवांनि बिचि, कीनौं मुसल प्रहार॥ ३०॥
रुधिर अंग तैं बहि चल्यौ, गिर्यौ पछरि बेहाल॥
कपि गिरनै मैं तरुन जुत, कंप्यौ गिरि उहिं काल॥ ३१॥
जै जै सबद उचार किय, सुर मुनि सिद्ध सुढार॥
मुदित हौय बरषैं सुमन, लहि आनंद अपार॥ ३२॥
अैसै श्री बलिदैव जू, दुविद दुष्ट कौं मारि॥
भयै पधारत द्वारका, पुरी मोद मन धारि॥ ३३॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते सप्त षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६७॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अष्ट षष्टितमोऽध्यायः ॥

(कौरवों पर बलरामजी का कोप और साम्ब का विवाह)

॥ श्री सुक उवाच॥

दोहा - श्री सुक कहत कि सुता इक, दुरजोधन कैं धांम॥
जास स्वयंबर कौ समैं, हौ हस्तिनां पुर ठांम॥ १॥
जांबवती कौ सांबु सुत, बहि कन्या वां बार॥
बरजोरी हरि लै चल्यौ, करि निज रथ पैं स्वार॥ २॥
जब कौरव बोलै बचन, अैसै आप समांहिं॥
देषौ सबै बिचार इहि, बालक आछौ नांहिं॥ ३॥
ल्यायौ नाहिं मन मैं हम्हहुँ, धरि पउरष अभिमांनि॥
कन्या कौं जौरावरी, हरि लै चल्यौ निदांनि॥ ४॥
का करिहैं जादव अबैं, बांधि लीजियैं यांहिं॥
क्रिपा हम्हारी तैं करत, जादव राज सचांहिं॥ ५॥

बछ रिष आस्त्रम कैं सबैं, डारै तोरि उषारि॥
अगनि कुंड मैं मूत्र मल, करत भयौ रिसधारि॥ ९॥
पुरवासी अस्त्री पुरष, तिन कौं गहि लै जाय॥
बीच कंदरा रोकि सिल, द्वारै दैत लगाय॥ १०॥
षौवै धरम तियनि कौं, निरदय दुष्ट अग्यांन॥
करत उपद्रव यौं बउत, संक न धरत निदांन॥ ११॥
अैक दिनां बह गांन सुनि, नग रइवत कैं ठांम॥
जात भयौ मनमोद धरि, जांह हुतै बलिरांम॥ १२॥
पहिरै माला कंवल की, सुंदर रूप उदार॥
बैठे बिच अस्त्रीन कैं, जें तिय परम सुढार॥ १३॥
पीवत मदिरा वारुनी, करत अनूपम गांन॥
घूम रहे मदमत्त द्रिग, पंकज छबि उनमांन॥ १४॥
तांह दुष्ट कपि जायकैं, चढि ऊपर तरु डार॥
बृछ हलाय करतौ भयौ, सबद किलकिला ढार॥ १५॥
वानर की लषि धृष्ठता, हसन लगी सब नारि॥
करत भयौ अवग्या बहै, अस्त्रीनि की बहिं बारि॥ १६॥
अरु मुष भौंहन सौं वहै, तियन भयौ डरपात॥
दिषवत पिछलौ अंग निज, अैसै किय उतपात॥ १७॥
भय चलावत पाथर इक, कपि परश्री बलिदैव॥
ताकौ बहै बचायगौ, करिकैं कछु छल भैव॥ १८॥
मदिरा घटहिं उठाय कपि, डार्यौ फेरि रिसाय॥
पुनि पट श्रीबलिदेव कैं, फारै भय नहिं पाय॥ १९॥
कपि की अैसी दुष्टता, श्री बलिदेव निहारि॥
हल मूसल निज हाथ लिय, अपनैं सस्त्र संभारि॥ २०॥
भयौ चलावत राम पैं, इक तरु दुविद उषारि॥
तब बह बृछ लीनौं पकरि, तृन ज्यौंश्री हलधारि॥ २१॥
तब बानर कैं सीस बलि, कीनौं मुसल प्रहारि॥
तासौं वांकौ सीस फटि, निकस चली रत धारि॥ २२॥
जइसै निकसत नगन तैं, बहु धातन की धार॥
त्यौही कपि कैं सीस तैं, बह्यौ रुधिर वां बार॥ २३॥
दुविद और तरु ल्याय फिरि, किय तन रांम प्रहार॥
वां तरु कैं सत टूक किय, हल सौं श्री हलधार॥ २४॥
कपि ल्यायौ तरु और फिरि, ताहू कैं बलिरांम॥
करि डारै सौ टूक धरि, रीस अधिक चित ठांम॥ २५॥

औरहूँ बृछ अनैक कपि, ल्यावत भयौ उषारि॥
बैहुं कियै सत टूक बलि, हल मुसलन सौं मारि॥ २६॥
अैसै जें जें तरु द्विविद, ल्यावत भयौ उषारि॥
तैं करि डारै चूर सब, बलि निज बलि बिसतारि॥ २७॥
रह्यौ न तरु कौऊ जबै, सिल बरषा कपि कीन॥
बैहुँ सिला बलिदैव जू, सब चूरन करि दीन॥ २८॥
दुविद बांधि मूठी दुहूं, दौन्यौ भुजा उठाय॥
करि प्रहार श्रीराम उर, कपि निज बल सरसाय॥ २९॥
फैरि समरि बलिदैव जू, कर निज सस्त्र समारि॥
कपि कैं कंध षवांनि बिचि, कीनौं मुसल प्रहार॥ ३०॥
रुधिर अंग तैं बहि चल्यौ, गिर्यौ पछरि बेहाल॥
कपि गिरनै मैं तरुन जुत, कंप्यौ गिरि उहिं काल॥ ३१॥
जै जै सबद उचार किय, सुर मुनि सिद्ध सुढार॥
मुदित हौय बरषैं सुमन, लहि आनंद अपार॥ ३२॥
अैसै श्री बलिदैव जू, दुविद दुष्ट कौं मारि॥
भयै पधारत द्वारका, पुरी मोद मन धारि॥ ३३॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते सप्त षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६७॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अष्ट षष्टितमोऽध्यायः ॥

(कौरवों पर बलरामजी का कोप और साम्ब का विवाह)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - श्री सुक कहत कि सुता इक, दुरजोधन कैं धांम॥
जास स्वयंबर कौ समैं, हौ हस्तिनां पुर ठांम॥ १॥
जांबवती कौ सांबु सुत, बहि कन्या वां बार॥
बरजोरी हरि लै चल्यौ, करि निज रथ पैं स्वार॥ २॥
जब कौरव बोलै बचन, अैसै आप समांहिं॥
देषौ सबै बिचार इहि, बालक आछौ नांहिं॥ ३॥
ल्यायौ नाहिं मन मैं हम्हहुँ, धरि पउरष अभिमांनि॥
कन्या कौं जौरावरी, हरि लै चल्यौ निदांनि॥ ४॥
का करिहैं जादव अबैं, बांधि लीजियैं यांहिं॥
क्रिपा हम्हारी तैं करत, जादव राज सचांहिं॥ ५॥

अरु पकर्यौं सुनि याहि जौ, अैहैं जादव सैंन॥
तौ उन्हकौं करि मांन हत, दैहैं टारि सुषैंन॥ ६॥
दुरजोधन भीषम करन, जिग्यकेतु सल भूरि॥
इतनैं सांबुहिं बांधिबै, आयै लै दल पूरि॥ ७॥
दौरे आवत कौरवनि, लषि कैं सांबु कुमार॥
सजि सरधनु ठाढौ भयौ, समुष सिंघ अनुसार॥ ८॥
ठाढौ रहु ठाढौ रहौ, अैसै कौरव बौलि॥
सर बरषा किय सांबु पैं, अप अपनौं बल तौलि॥ ९॥
लगै सांबु कैं अंग मैं, उन्ह सत्रुननि कैं बांन॥
तऊ मन मैं ल्यायौ नहिं, सत्रुनन बिच घमसांन॥ १०॥
जइसै पउरष मृगन कौं, बदत नांहिं मृगराज॥
ज्यौंही सांबु गन्यौ नांहिं, कौरव बल दल साज॥ ११॥
करन आदि छह रथी जें, तिन पर छह छह बांन॥
धनुष षैंचि चलवत भयौ, सांबु भलैं उनमांन॥ १२॥
च्यार च्यार घौरांन कैं, इक इक सारथि अंग॥
बांन सांबु मारत भयौ, धरि पउरष उछरंग॥ १३॥
दैषि पराक्रम सांबु कौं, सबहिंन करी सराह॥
धन्य धन्य इह कृस्न सुत, सत्रुहुन बौलत वाह॥ १४॥
किहुं इक कौरव सांबु कैं, रथ कौं डार्यौ तौरि॥
च्यार जनैं मिलि अस्व चहुँ, रथ कैं हतै बहौरि॥ १५॥
अैंक जनैं सारथि हत्यौ, इक डार्यौ धनु काटि॥
बउत कष्ट तैं सांबु कौं, बांधि लयौ जुध थाटि॥ १६॥
कन्या कौं अरु सांबु कौं, लै कौरव जुत सैंन॥
गयै हस्तिनांपुर बिषै, हरषित ह्वै लहिं चैंन॥ १७॥
इहै बात नारद जु मुनि, कही जादवनि जाय॥
सौ सुनि कैं जादवनि चित, अधिक क्रौध प्रगटाय॥ १८॥
उग्रसैंन नृप की सकल, जादव आग्यां पाय॥
जुद्ध करन कौरवन सौं, भयै तय्यार रिसाय॥ १९॥
समांधान जादवन कौं, किय तव रांभ बिचारि॥
जुद्ध करन कौरवन सौं, मन न रह्यौ वां बारि॥ २०॥
बिप्रन अरु बृध जादवनि, निज संग लै बलिरांम॥
चलै द्वारका तैं निकसि, नगर हस्तिनां ठांम॥ २१॥
निकट हस्तिनां नगर कैं, उपवन बाग सुढार॥
जांह जाय उतरत भयै, श्री बलिदैव उदार॥ २२॥

उद्धव कौं धृतराष्ट्र पें, पठय दयौ समझाय॥
कहहुं जाय बलदेव जू, आयै पुर नियराय॥ २३॥
धृतराष्ट्र रु दुरजोधन, भीषम बालिक द्रौंन॥
इहैं जाइ उद्धव कही, ऐसै बात सुठौंन॥ २४॥
आयै हैं बलिदैव जू, उतरै बाग सथांनि॥
इहि सुनि कौरव भेंट लैं, आयै मोदि सुमांनि॥ २५॥
श्री बलिदैवहिं अरघ दैं, बिधिवत पूजा कीन॥
जांनत रहैं प्रभाव तिन, वंदन कियौ प्रवीन॥ २६॥
कुसल पूछी बंधून की, बोलै श्री बलिदैव॥
दीनी है उग्रसैंन नृप, आग्यां तुम्हहिं सभैव॥ २७॥
तुम्ह कौरव दल बउत अरु, इकलौ सांबु कुमार॥
करि अधरम जुध सांबु कौं, तुम्ह बांध्यौ निरधार॥ २८॥
जांनि आपनैं तुम्हहिं हम्ह, छमा करी इहि बात॥
अबै सांबु कौ जुत बधू, ल्याय दैहुँ बिषयात॥ २९॥
ऐसौ बचन गुमांन कौं, बोलै श्री बलिरांम॥
सौ सुनि कौरव क्रौध करि, बोलै जरि हिय ठांम॥ ३०॥
देषौ अचिरज इहि बडौ, ऐसी है गति काल॥
मुकट राषियैं तहँ चढ्यौ, जूती चहत सचाल॥ ३१॥
जांन सबंधी जादवनि, हम्ह अपनैं सम कीन॥
आसन परि बैठारि संग, भोजन नृप पद दीन॥ ३२॥
मुकट छत्र रु बिजनां चंमर, संष आदि नृप चिह्न॥
क्रिपा हम्हारी पाय कैं, धारि जादवनि लिह्न॥ ३३॥
तातैं जोग्य रह्यौ नांहिं, इन्हकौं नृप पद दैंन॥
ज्यौं अहि कौं पय दैत तउ, काटै ताहि लजैंन॥ ३४॥
ऐं जादव सब बढे हैं, क्रिपा हम्हारी पाय॥
हम्हहीं पर आग्यां अबैं, चलवत है न लजाय॥ ३५॥
हम्ह आग्यां बिन इंद्रहूं, सकत कछू करि नांहिं॥
ऐं चलवत है आपनीं, आग्यां हम्ह सिर ठांहिं॥ ३६॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि धन मद छकै, कौरव कहि यौं बैंन॥
धरिकैं अति अभिमांन उर, जात भयै निज ऐंन॥ ३७॥
बुरै बचन कौरवन कैं, सुनि लषि दुष्ट सुभाव॥
बोलै श्री बलिदेव जू, करिकैं रिस अधिकाव॥ ३८॥
मद अनैक हैं जिन नरन, महा असाध सुभाय॥
तैं न सूधै ह्वै आपहिं, आछौ समझि उपाय॥ ३९॥

पसू सुधे ह्वै जात हैं, दीनैं दंड निदांन॥
त्यौं ही कौरव हौंयगें, सुधे दंड उनमांन॥ ४० ॥
कीनौं है श्रीकृस्न जू, इन्ह पैं क्रौध अपार॥
समांधान उन्हकौं भलैं, हम्ह करिकैं निरधार॥ ४१ ॥
आयै हैं पुर हस्तिनां, इन्हसौं राषन प्रीति॥
अैं मूरष जुधहीं चहत, समझत भली न रीति॥ ४२ ॥
करि म्हैरी अवग्यां कहै, महा दुष्ट यौं बैंन॥
उर आंधे मद मत्त हैं, अैं कौरव अघ अैंन॥ ४३ ॥
अधिपति का उग्रसैंन नृप, नहिं जादव कैं मांहिं॥
इंद्रादिक आग्यां जिननि, मांनत है अधिकांहिं॥ ४४ ॥
सभा सुधरमा कलप तरु, हैं जिहँ नृप कैं धांम॥
अरु जिन चरनन कौं करत, कृस्न कुँवर परिनांम॥ ४५ ॥
मांनत हैं श्रीकृस्न जू, जिहिं आग्या जुत चांहिं॥
सैवत जिन्ह नृप कैं चरन, लछमी सहित उमांहिं॥ ४६ ॥
जिहँ राजा कौ नृपति करि, अैं मांनत हैं नांहिं॥
ताकौं अचिरज है महा, हौत रीस मन मांहिं॥ ४७ ॥
अरु जिन्ह पद रज तीर्थ सम, जांनि धरत सुर सीस॥
सैवत है बिधि सिव रमा, तिहँ पद बिसवाबीस॥ ४८ ॥
अैसै है श्रीकृस्नं जू, करता पुरष उदार॥
तिन्हकौं नृप करि मांनत न, अैं मूरष निरधार॥ ४९ ॥
जादव का कौरवन की, दीनी भौगत भूमि॥
अैं मूरष अभिमांन की, राषत है अति धूमि॥ ५० ॥
सीस ठौर तौ आपु अैं, कौरव भयै अग्यांन॥
अरु करि मांनत है हम्हहिं, पनहीं ठौर प्रमांन॥ ५१ ॥
मत्त भयै हैं राज्य करि, इन्हकैं बढ्यौ गुमांन॥
इन्हकैं रूषै बचन अैं, कौंनुं सहै तजि सांन॥ ५२ ॥
आजु प्रिथी निह कौरवी, म्हैं करिहौं या बार॥
यौं कहि अपनैं सस्त्र लैं, हुव ठाढै निरधार॥ ५३ ॥
रिस करिकैं पुर हस्तिनां, हल सौं लयौ उठाय॥
उलटौ करिकैं गंग बिच, दैंन लगै पटकाय॥ ५४ ॥
नगर नांव सम बुडत लषि, कौरव गंगा मांहिं॥
सिथल भयै अति डरपि कैं, पउरष राष्यौ नांहिं॥ ५५ ॥
जीव कुंटंबनि राषिबै, करि निज चितहिं बिचारि॥
आश्रै श्री बलिदैव कैं, आयै ताहीं बार॥ ५६ ॥

सुता लछमनां सांबु जुत, लै कौरव कर जोरि॥
आय समुषश्रीरांम कैं, ठाढे सीस निहोरि॥ ५७॥
बलि अहो कौरव बोलै, तुम्ह प्रताप अधिकाय॥
सौ हम्ह जान्यौ नांहिनैं, मूरषता कैं भाय॥ ५८॥
हम्ह अति मूरष कुबुधि हैं, छिमा करौ अपराध॥
सैषनाग भगवांन तुम्ह, दीरघ सक्ति अगाध॥ ५९॥
इक फन पैं राषत प्रिथी, फन हजार मधि आप॥
सौय रहत हौ प्रलै करि, निंद्रा समैं सथाप॥ ६०॥
उतपति पालन प्रलै जग, करता तुम्ह निरधार॥
लोक षिलौना करि इहै, क्रीडा करत अपार॥ ६१॥
तुम्ह रिस हम्हपैं करत हौ, सौ सिछांहु कैं काज॥
पालन करता जगत कैं, आपु सदा माराज॥ ६२॥
सकल सक्ति तुम्ह हौ धरै, सबकैं आत्मा आहि॥
भलैं जगत कौं रचत हौ, तुम्हहिं प्रनांम सुचाहि॥ ६३॥
हम्ह अब सरनै रावरै, आयै हैं श्रीरांम॥
करौ दया निज कर धरौ, सीस हम्हारै ठांम॥ ६४॥

॥ श्रीसुक उवाच॥

सुक कहत कि ऐसै डरपि, आयै सरन निहारि॥
प्रसंन हौय बोलै कि मति, डरपौ अब निरधारि॥ ६५॥
साठ वरसै सु ग्यान गज, बारह सै अस्व लाष॥
कंचन कै रथ सहस छह, सषी सहस चहु पाष॥ ६६॥
इतौ दायजौ अरु बधू, सहित भतीजहिं रांम॥
लै आवत भय द्वारका, उच्छब ठांमनि ठांम॥ ६७॥
आय मिलै बंधून सौं, अरु सब जादव मांहिं॥
कह्यौ पराक्रम आपनौं, बैठि सभा कैं मांहिं॥ ६८॥
अबहूं लौं पुर हस्तिनां, टेडौ दछिनहुँ वौर॥
करत जु श्रीबलदेव कौं, प्रगट पराक्रम तौर॥ ६९॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अष्ट षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६८॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अैंकोन सप्ततितमोऽध्यायः ॥

(देवर्षि नारद जी का भगवान् की गृहचर्या देखना)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि नरकासुरहिं, मारि कृस्न करतार॥
अैंक महूरत मैं वरी, सौरह तिया हजार॥ १॥
तिन्ही चरित दैषन सुभग, नारद जू धरि हौंसि॥
द्वारावति आवत भयै, बीन लियै इक द्यौंसि॥ २॥
नारद चित अचिरज भयौ, धरै रूप इक स्यांम॥
कइसैं ब्याही इक लगन, सोरै सहस जु भांम॥ ३॥
नारद आयै द्वारका, तांह सौभ सरसाय॥
बागन मैं फूलै सुमन, गुंजत भमर सुभाय॥ ४॥
इंदीवर अंभोज अरु, उत्कल कुमुद कह्लार॥
फूलि रहै अैसै कमल, तापर भ्रमर गुंजार॥ ५॥
जहँ राजत है सुभग अति, फटिक मनिन कैं धांम॥
कंचन मरकत मनिन कैं, रतन षचित अभिरांम॥ ६॥
गली चौहट्टा घर सभा, मंदिर दैव सुढार॥
मग आंगन रु देहली, सींची सुगंध प्रकार॥ ७॥
ध्वुजा पताका घरन पैं, सौभित परम रसाल॥
जिन छाया सूं धूप नहिं, दीसत काहू काल॥ ८॥
तां भींतर श्रीकृस्न कौं, है अदभुत रनवास॥
जाकौं सबही दैवतां, सैवत धरै हुलास॥ ९॥
गैह बनावन मैं जांह, बिस्वकरमा मुदमांनि॥
अपनीं चतुरांई सबैं, प्रगट करी सुषदांनि॥ १०॥
सौरह सहस रु आठ जहं, है अस्त्रीन कैं धांम॥
तिन्हमैं मनि मुक्काननि की, रचनां अति अभिरांम॥ ११॥
थंभा है मूंगान कैं, नील मनिन की भूमि॥
मरकत मनि कैं घर सुभग, सुभ रचनां की धूमि॥ १२॥
लटकत है मुक्काननि की, झालरि चंदवनि ठांहिं॥
कसना जुत पलिंगा जांह, मनि रचना जिन मांहिं॥ १३॥
कौमल बिछी बिछाति जहँ, दूध फैन अनुसार॥
रतन कैं दीपक बरत, मैटत निसि अंधियार॥ १४॥
अगर धुवा लषि निकसतौ, मोर मैघ भ्रम पाय॥
ठौर ठौर नाचति मुदित, धामनि सीस झुकाय॥ १५॥
वय गुन रूप अनूप जिन, भूषन बस्त्र रसाल॥
कई हजारनि दासिका, सैवा करत षुष्याल॥ १६॥

बैठे डोढीवांन जें, दीसत इंद्र समांन॥
अैसै सब अस्त्रीन कैं, अदभुत सुभग सथांन॥ १७॥
तिन्हमैं तांह नारद मुनि, गयै रुकमनी गैह॥
उठि ठाढै हुव तिनहिं लषि, पूरन ब्रह्म अछैह॥ १८॥
नारद जू कैं चरन कौं, कीनौं प्रभु परिनांम॥
निज आसन बैठाय कैं, किय पूजा अभिरांम॥ १९॥
जें गुरु हैं सब जगत कैं, कृस्नं कुंवर करतार॥
नारद जू कौ चरन रज, निज सिर धर्यौ सुढार॥ २०॥
गंगा जिन प्रभु चरन जल, जु महा तीर्थ कहाय॥
अैसै प्रभु जें जुक्त हैं, ब्रह्मन देव नामांय॥ २१॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

बिधिवत पूजा करि प्रभू, बोलै सु अमृत बैंन॥
हे रिष आग्या करहुँ तुम्ह, सौ हम्ह करैं सुषैंन॥ २२॥

॥ श्री नारद उवाच॥

नारद जू बोलै कि तुम्ह, जग कैं प्रभू अषंड॥
म्हैरी पूजा करत हौ, दुष्टनि दैत जु दंड॥ २३॥
सौ राषत हौ धरम की, भलैं म्रजाद प्रकार॥
इहिं अचिरज नहिं तुम्ह धर्यौ, पालन जग अवतार॥ २४॥
जिन्हकौं ब्रह्मादिकहुँ सुर, धरत हिर्दै निज ध्यांन॥
पुनि तिन्हहीं सौं पाइयैं, पूरन मुक्ति सथांन॥ २५॥
चरन कंवल प्रभु रावरै, अैसैं हैं सुषदाय॥
सौं हम्ह देषैं भाग्य तैं, निज द्रिग हिर्दौ सिराय॥ २६॥
दुषद कूप संसार मैं, परै जीव अग्यांन॥
करता तिन्हीं उद्धार कैं, तुव पद कंवल सथांन॥ २७॥
तिन्हकौं हम्ह उर ध्यांन धरि, फिरत बीचि संसार॥
करहुँ क्रिपा भुलैं न तुम्ह, सुमरन काहूं बार॥ २८॥

॥ श्री सुक उवाच॥

यौं कहि नारद जू गयै, किहूं और तिय गैह॥
जोगैसर भगवांन की, दैषन प्रकति अछैह॥ २९॥
देषै जु बांह जाय तौ, उद्धव जुत श्रीकृस्नं॥
चौपरि अपनीं तिया सौं, षैलत महा सप्रस्नं॥ ३०॥
नारद जु कौं दैषि तांह, प्रभु उठि आसन दीन॥
बंदन करि मनुहार जुत, बिधिवत पूजा कीन॥ ३१॥
अरु प्रभु हौय अजांन सै, बोलै अैसै बैंन॥
तुम्ह कब आयै कहहुँ मुनि, इहां जु हम्हैर अैंन॥ ३२॥

पसू सुधै है जात हैं, दीनैं दंड निदांन॥
त्यौं ही कौरव हौंयगें, सुधै दंड उनमांन॥ ४० ॥
कीनौं है श्रीकृस्न जू, इन्ह पैं क्रौध अपार॥
समांधान उन्हकौं भलैं, हम्ह करिकैं निरधार॥ ४१ ॥
आयै हैं पुर हस्तिनां, इन्हसौं राषन प्रीति॥
अैं मूरष जुधहीं चहत, समझत भली न रीति॥ ४२ ॥
करि म्हैरी अवग्यां कहै, महा दुष्ट यौं बैंन॥
उर आंधै मद मत्त हैं, अैं कौरव अघ अैंन॥ ४३ ॥
अधिपति का उग्रसैंन नृप, नहिं जादव कैं मांहिं॥
इंद्रादिक आग्यां जिननि, मांनत है अधिकांहिं॥ ४४ ॥
सभा सुधरमा कलप तरु, हैं जिहँ नृप कैं धांम॥
अरु जिन चरनन कौं करत, कृस्न कुँवर परिनांम॥ ४५ ॥
मांनत हैं श्रीकृस्न जू, जिहिं आग्या जुत चांहिं॥
सैवत जिन्ह नृप कैं चरन, लछमी सहित उमांहिं॥ ४६ ॥
जिहँ राजा कौ नृपति करि, अैं मांनत हैं नांहिं॥
ताकौं अचिरज है महा, हौत रीस मन मांहिं॥ ४७ ॥
अरु जिन्ह पद रज तीर्थ सम, जांनि धरत सुर सीस॥
सैवत है बिधि सिव रमा, तिहँ पद बिसवाबीस॥ ४८ ॥
अैसै है श्रीकृस्नं जू, करता पुरष उदार॥
तिन्हकौं नृप करि मांनत न, अैं मूरष निरधार॥ ४९ ॥
जादव का कौरवन की, दीनी भौगत भूमि॥
अैं मूरष अभिमांन की, राषत है अति धूमि॥ ५० ॥
सीस ठौर तौ आपु अैं, कौरव भयै अग्यांन॥
अरु करि मांनत है हम्हहिं, पनहीं ठौर प्रमांन॥ ५१ ॥
मत्त भयै हैं राज्य करि, इन्हकैं बढ्यौ गुमांन॥
इन्हकैं रूषै बचन अैं, कौंनुँ सहै तजि सांन॥ ५२ ॥
आजु प्रिथी निह कौरवी, म्हैं करिहौं या बार॥
यौं कहि अपनैं सस्त्र लैं, हुव ठाढै निरधार॥ ५३ ॥
रिस करिकैं पुर हस्तिनां, हल सौं लयौ उठाय॥
उलटौ करिकैं गंग बिच, दैंन लगै पटकाय॥ ५४ ॥
नगर नांव सम बुडत लषि, कौरव गंगा मांहिं॥
सिथल भयै अति डरपि कैं, पउरष राष्यौ नांहिं॥ ५५ ॥
जीव कुंटंबनि राषिबै, करि निज चितहिं बिचारि॥
आश्रै श्री बलिदैव कैं, आयै ताहीं बार॥ ५६ ॥

सुता लछमनां सांबु जुत, लै कौरव कर जोरि॥
आय समुषश्रीरांम कैं, ठाढे सीस निहोरि॥५७॥
बलि अहो कौरव बोलै, तुम्ह प्रताप अधिकाय॥
सौ हम्ह जान्यौ नांहिनैं, मूरषता कैं भाय॥५८॥
हम्ह अति मूरष कुबुधि हैं, छिमा करौ अपराध॥
सैषनाग भगवांन तुम्ह, दीरघ सक्ति अगाध॥५९॥
इक फन पैं राषत प्रिथी, फन हजार मधि आप॥
सौय रहत हौ प्रलै करि, निंद्रा समैं सथाप॥६०॥
उतपति पालन प्रलै जग, करता तुम्ह निरधार॥
लोक षिलौना करि इहै, क्रीडा करत अपार॥६१॥
तुम्ह रिस हम्हपैं करत हौ, सौ सिछांहु कैं काज॥
पालन करता जगत कैं, आपु सदा माराज॥६२॥
सकल सक्ति तुम्ह हौ धरै, सबकैं आत्मा आहि॥
भलैं जगत कौं रचत हौ, तुम्हहिं प्रनांम सुचाहि॥६३॥
हम्ह अब सरनै रावरै, आये हैं श्रीरांम॥
करौ दया निज कर धरौ, सीस हम्हारै ठांम॥६४॥

॥ श्रीसुक उवाच॥

सुक कहत कि अैसै डरपि, आयै सरन निहारि॥
प्रसंन हौय बोलै कि मति, डरपौ अब निरधारि॥६५॥
साठ वरसै सु ग्यान गज, बारह सै अस्व लाष॥
कंचन कै रथ सहस छह, सषी सहस चहु पाष॥६६॥
इतौ दायजौ अरु बधू, सहित भतीजहिं रांम॥
लै आवत भय द्वारका, उच्छब ठांमनि ठांम॥६७॥
आय मिलै बंधून सौं, अरु सब जादव मांहिं॥
कह्यौ पराक्रम आपनौं, बैठि सभा कैं मांहिं॥६८॥
अबहूं लौं पुर हस्तिनां, टेडौ दछिनहुँ वौर॥
करत जु श्रीबलदेव कौं, प्रगट पराक्रम तौर॥६९॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अष्ट षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६८ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अैंकोन सप्ततितमोऽध्यायः ॥

(देवर्षि नारद जी का भगवान् की गृहचर्या देखना)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि नरकासुरहिं, मारि कृस्न करतार॥
अैंक महूरत मैं वरी, सौरह तिया हजार॥ १॥
तिन्ही चरित दैषन सुभग, नारद जू धरि हौंसि॥
द्वारावति आवत भयै, बीन लियै इक द्यौंसि॥ २॥
नारद चित अचिरज भयौ, धरै रूप इक स्यांम॥
कइसैं ब्याही इक लगन, सोरै सहस जु भांम॥ ३॥
नारद आयै द्वारका, तांह सौभ सरसाय॥
बागन मैं फूलै सुमन, गुंजत भमर सुभाय॥ ४॥
इंदीवर अंभोज अरु, उत्कल कुमुद कह्लार॥
फूलि रहे अैसै कमल, तापर भ्रमर गुंजार॥ ५॥
जहँ राजत है सुभग अति, फटिक मनिन कैं धांम॥
कंचन मरकत मनिन कैं, रतन षचित अभिरांम॥ ६॥
गली चौहट्टा घर सभा, मंदिर दैव सुढार॥
मग आंगन रु दैहली, सींची सुगंध प्रकार॥ ७॥
ध्वुजा पताका घरन पैं, सौभित परम रसाल॥
जिन छाया सूं धूप नहिं, दीसत काहू काल॥ ८॥
तां भींतर श्रीकृस्न कौं, है अदभुत रनवास॥
जाकौं सबही दैवतां, सैवत धरै हुलास॥ ९॥
गैह बनावन मैं जांह, बिस्वकरमा मुदमांनि॥
अपनीं चतुरांई सबैं, प्रगट करी सुषदांनि॥ १०॥
सौरह सहस रु आठ जहं, है अस्त्रीन कैं धांम॥
तिन्हमैं मनि मुक्ताननि की, रचनां अति अभिरांम॥ ११॥
थंभा है मूंगान कैं, नील मनिन की भूमि॥
मरकत मनि कैं घर सुभग, सुभ रचनां की धूमि॥ १२॥
लटकत है मुक्ताननि की, झालरि चंदवनि ठांहिं॥
कसना जुत पलिंगा जांह, मनि रचना जिन मांहिं॥ १३॥
कौमल बिछी बिछाति जहँ, दूध फैन अनुसार॥
रतन कैं दीपक बरत, मैटत निसि अंधियार॥ १४॥
अगर धुवा लषि निकसतौ, मोर मैघ भ्रम पाय॥
ठौर ठौर नाचति मुदित, धामनि सीस झुकाय॥ १५॥
वय गुन रूप अनूप जिन, भूषन बस्त्र रसाल॥
कई हजारनि दासिका, सैवा करत षुष्याल॥ १६॥

बैठे डोढीवांन जें, दीसत इंद्र समांन॥
अैसै सब अस्त्रीन कैं, अदभुत सुभग सथांन॥ १७॥
तिन्हमैं तांह नारद मुनि, गयै रुकमनी गैह॥
उठि ठाढै हुव तिनहिं लषि, पूरन ब्रह्म अछैह॥ १८॥
नारद जू कैं चरन कौं, कीनौं प्रभु परिनांम॥
निज आसन बैठाय कैं, किय पूजा अभिरांम॥ १९॥
जें गुरु हैं सब जगत कैं, कृस्नं कुंवर करतार॥
नारद जू कौ चरन रज, निज सिर धर्यौ सुढार॥ २०॥
गंगा जिन प्रभु चरन जल, जु महा तीर्थ कहाय॥
अैसै प्रभु जें जुक्त हैं, ब्रह्मन देव नामांय॥ २१॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

बिधिवत पूजा करि प्रभू, बोलै सु अमृत बैंन॥
हे रिष आग्या करहुँ तुम्ह, सौ हम्ह करैं सुषैंन॥ २२॥

॥ श्री नारद उवाच॥

नारद जू बोलै कि तुम्ह, जग कैं प्रभू अषंड॥
म्हैरी पूजा करत हौ, दुष्टनि दैत जु दंड॥ २३॥
सौ राषत हौ धरम की, भलैं म्रजाद प्रकार॥
इहिं अचिरज नहिं तुम्ह धर्यौ, पालन जग अवतार॥ २४॥
जिन्हकौं ब्रह्मादिकहुँ सुर, धरत हिर्दै निज ध्यांन॥
पुनि तिन्हहीं सौं पाइयैं, पूरन मुक्ति सथांन॥ २५॥
चरन कंवल प्रभु रावरै, अैसैं हैं सुषदाय॥
सौं हम्ह देषैं भाग्य तैं, निज द्रिग हिर्दौ सिराय॥ २६॥
दुषद कूप संसार मैं, परै जीव अग्यांन॥
करता तिन्हीं उद्धार कैं, तुव पद कंवल सथांन॥ २७॥
तिन्हकौं हम्ह उर ध्यांन धरि, फिरत बीचि संसार॥
करहुँ क्रिपा भुलैं न तुम्ह, सुमरन काहूं बार॥ २८॥

॥ श्री सुक उवाच॥

यौं कहि नारद जू गयै, किहूं और तिय गैह॥
जोगैसर भगवांन की, दैषन प्रकति अछैह॥ २९॥
देषै जु बांह जाय तौ, उद्धव जुत श्रीकृस्नं॥
चौपरि अपनीं तिया सौं, षैलत महा सप्रस्न॥ ३०॥
नारद जु कौं दैषि तांह, प्रभु उठि आसन दीन॥
बंदन करि मनुहार जुत, बिधिवत पूजा कीन॥ ३१॥
अरु प्रभु हौय अजांन सै, बोलै अैसै बैंन॥
तुम्ह कब आयै कहहुँ मुनि, इहां जु हम्हैर अैंन॥ ३२॥

तुम्ह पूरन सब बात सौं, कहा करैं हम्ह सैंव॥
आग्या कछु हम्ह परि करहुँ, जनम सफल ह्वै दैव॥३३॥
हौयहिं षिसांनै चित मैं, नारद मुनि उठि जाय॥
द्वार किहूं तिय और कैं, झांकत अचिरज भाय॥३४॥
तहँ देषैं तौ बालकनि, सांम षिलावत चांहिं॥
लषैं और घर जाय तौ, करत सनांन उमांहिं॥३५॥
अगनिहौत्र जिग्य पंच कहुँ, करत लषै भगवांन॥
कहूं जिमावत ब्राह्मननि, कहूं दैत गौदांन॥३६॥
कहूं आप भोजन करत, कहूं करत है सैंन॥
लिय ढाल तरवार कहूं, फिरत कंवल दल नैंन॥३७॥
संझ्या बंदन कहुँ करत, धरि भगतन कौं ध्यांन॥
लषत सुनत नृत गान कहुँ, जल बिहार किहुँ थांन॥३८॥
प्रभू अस्व गज रथ चढै, फिरत मोद मनमांनि॥
कहूं बंदीजन करत प्रभु, अस्तुति जोरि निज पांनि॥३९॥
उद्धव आदि मंत्रीन सौं, कहुँ कछु करत बिचार॥
कहूं महाभारत प्रभू, सुनत भलैं अनुसार॥४०॥
हँसत हँसावत हैं कहूं, कलह करत किहुँ धांम॥
कहूं करद्रव्य जतन कहूं, विषै भोग अभिरांम॥४१॥
कहूं धरम सैवन करत, कहूं आपुकौं ध्यांन॥
बिधिवत सैवा बडन की, कहूं करत भगवांन॥४२॥
कहूं सहित बलिदैव जू, अैसौ करत बिचार॥
भक्त जनन कौं कौंनुं बिधि, भलौ हौय निरधार॥४३॥
कहुँ बेटा बेटीन कौं, करत बिबाह मुरारि॥
कहुँ पठवत बेटीन कौं, बहुधन दै सुसरारि॥४४॥
कहूं बुलावत गैह निज, बैटिन कौं करि प्यार॥
कहूं अस्व परि स्वार ह्वै, षैलत सुभग सिकार॥४५॥
कहूं लगावत बाग कहुं, षदुवत कूप तलाव॥
जिग्य करत है ठौर किहुँ, धरम म्रजाद प्रभाव॥४६॥
ठीक करन तिय बात कहुँ, फिरत रूप धरि और॥
लीला करतअनैंक यौं, कृस्नं रसिक सिरमौर॥४७॥
लीला लषि भगवांन की, नारद अचिरज पाय॥
कहत भयै यौं सांम सौं, रुकमनि कैं ग्रह जाय॥४८॥

॥ नारद उवाच॥

हे प्रभु अैसी रावरी, माया है अनपार॥
बड़ै बड़ै मायावंतहुं, पाय सकत नहिं पार॥४९॥

जिहिं माया कैं तत्व कौं, हम्हहूं जांनत नांहिं॥
तुव चरित जु गावत फिरत, तिहूं लौक कैं मांहिं॥५०॥
बिदा हम्हारी कीजियै, अबै प्रसंन ह्वै स्यांम॥
पूरन ब्रह्म अनांदि हरि, तुम्हकौं है परनांम॥५१॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

प्रभु बोलै म्हैं धरम कौं, करता बकता आहि॥
धरम सिषावत हौं भलैं, सकल जगत कौं चाहि॥५२॥
मो लीला अनपार तू, दैषि अबै या बार॥
हे नारद निज चितहिं मैं, करहुँ न षैद बिचार॥५३॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि ऐसै प्रभुहिं, नारद लषि सब धांम॥
ग्रहवंतन कैं धरम सब, करत प्रगट अभिरांम॥५४॥
प्रभु की माया जोग लषि, नारद अचिरज पाय॥
नारद की कीनी बिदा, करि आदर अधिकाय॥५५॥
बिदा हौय जु नारद मुनि, उर धरि प्रभु कौं ध्यांन॥
बीन बजावत किय गवन, अपनैं सुभग सथांन॥५६॥
ऐसै मानुष रूप धरि, नारायन करतार॥
किय तिय सौरह सहस सौं, रमन भलैं अनुसार॥५७॥
उतपति पालन प्रलै जग, करनहार भगवांन॥
करत भयै बिच जगत कैं, अदभुत करम सुजांन॥५८॥
उन्ह प्रभु कै करमनि कौउ, कहै सुनै चित लाय॥
तौ उर निश्चै प्रगटि है, पूर्न भगति सुषदाय॥५९॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते ऐंकोन सप्ततितमोऽध्यायः ॥६९॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ सप्ततितमोऽध्यायः ॥

(भगवान् श्रीकृष्ण की नित्यचर्या और उनके पास जरासंध के कैदी राजाओं के दूत का आना)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि निस कौं तिया, पिय कंठहिं लपटाय॥
सैंन करत मुदि मांन मन, प्रात भयौ न सुहाय॥ १ ॥
कुर्कट कौं सुनि सबद निस, बितयौ श्री पति नारि॥
प्रात भयौ जतवत पियहिं, इहि चित भेद बिचारि॥ २ ॥
निस बितयौ मंदार कैं, गंध सहित चलि पौंन॥
पंछी जगि बौलन लगै, गुंजत भंवर सुठौंन॥ ३ ॥
अैसै ब्रह्म महूर्त कैं समैं, कृस्नं कुंवर करतार॥
उठि तजि भौग विषैंन कौं, कीनैं धरम प्रकार॥ ४ ॥
पांव धौय आचमन लै, बैठि इकंत सुथांनि॥
करत भयै श्रीकृस्न जू, उर आत्मा कौं ध्यांनि॥ ५ ॥
जोति रूप अविनासि इक, दैंन अबिध्याहुँ टारि॥
अैसै आत्मा रूप कौ, किय हिय ध्यांन मुरारि॥ ६ ॥
पीछै निरमल नीर सौं, करि सिनांन सुभ ठांम॥
पहरि बस्त्रन उतम सुभग, अगनि हौत्र करि सांम॥ ७ ॥
संझया करि अरु मंत्र पढि, अस्तुति सूर्ज की कीन॥
सुर रिष पितरन कौं कियौ, तरपन सांम प्रवीन॥ ८ ॥
मुक्त माल उर पुनि कलित, कंचन श्रंग सुढार॥
ऊपरि आछै बस्त्र जुत, बछरा दूध अपार॥ ९ ॥
जिन षुर च्यारौं रजत कैं, अैसी गाय अनंत॥
बस्त्र चर्म मृत तिलक सहित, दियै बिप्रन भगवंत॥ १० ॥
पूजा विधवत द्विज वरन, कीनी भलैं प्रकार॥
भूषन पट भौजन सुभग, दैत भयै अनपार॥ ११ ॥
चौरासी तैरह सहस, गायैं इक इक ठांम॥
दैत रहै नित कृस्न जू, सौरह सहसनि धांम॥ १२ ॥
गाय बिप्र सुर और सब, प्रांनिन करि परिनांम॥
कपिला गौ लौं मंगलिक, बस्त्र छुवत भयै सांम॥ १३ ॥
भूषन बस्त्र सुगंध पुनि, माला पुहप सुढार॥
आप भयै धारन करत, सुंदर कृस्न कुमार॥ १४ ॥
करिकैं छाया दांन प्रभु, दैषि बिमल आईन॥
गाय देवता द्विज बृषभ, इन्हकौं दरसन कीन॥ १५ ॥

फिरि रनवासी जनन कैं, कियै मनोरथ पूर॥
पुरवी बहुरि प्रजा इछा, ह्वै इक जीवन मूर॥ १६॥
सैंन पुहप सुग्रीव घन, च्यारौं अस्व लगाय॥
इतनैं हीं मैं सारथी, प्रभु पै स्थलैं आय॥ १७॥
उद्धव अरु सात्यकि सहित, पकरि सारथी हाथ॥
हौत भयै सिंदन उपरि, स्वार निज बिस्व कैं नाथ॥ १८॥
रवि उदयाचल अद्रि पैं, सौभित जइसैं भाय॥
सिंदन पैं श्रीकृस्नं जू, तइसै सौभा पाय॥ १९॥
निकसै बिच बाजार जब, दैषि नगर की नारि॥
रीझि रीझि ह्वै प्रेम वस, तन मन डारति बारि॥ २०॥
मंद मंद हसि तियन कैं, मन कौं हरहीं स्यांम॥
महामोहनी मंत्र सम, द्रिग कटाछि अभिरांम॥ २१॥
जाय सुधरमा सभा मधि, बैठै कृस्न कुमार॥
आसपास जादव सकल, सौभित मुदित अपार॥ २२॥
बैठे तैं वा सभा मैं, महामोद प्रगटांहिं॥
बृध अवसथा रोगहुँ पुनि, भूष प्यास ह्वै नांहिं॥ २३॥
बैठे अैसी सभा मैं, सुंदर कृस्न कुमार॥
दिसा प्रकासक करत है, आप तेज अनुसार॥ २४॥
बीच जादवनि सभा कैं, प्रभु सौभित या भाय॥
मधि तारन कैं चंद्रमा, ज्यौं छबि अधिकी पाय॥ २५॥
करि अनैंक बिधि हास रस, मंत्री गन वां ठांम॥
करत प्रसंन भगवांन कौं, गहि मरजी अभिरांम॥ २६॥
नृतकारी जु नृतत जांह, गुनी करत है गांन॥
ताल बीन मुरली मृदंग, बजत भलैं उनमांन॥ २७॥
बंदी मागध सूत सबै, करत असतुति उच्चार॥
कौतक कार्ज अनैंक तहँ, हौत बीचि दरबार॥ २८॥
हुतै ब्रह्मवादी कितै, बिप्र सभा वां मांहिं॥
तैं पहिलैं नृप धरमधर, तिन्हकी कथा चलांहिं॥ २९॥
अैक पुरष वां बार कौ, प्राप्त हौय भौ आय॥
द्वारपाल प्रभु पास तिहिं, हाजर कीनौं ल्याय॥ ३०॥

॥ दूत उवाच॥

किय प्रनांम कर जोरि उन्ह, पुरुष दैषि बिसवेस॥
जरासिंधु रौके नृपति, तिन्हकैं कहे संदेस॥ ३१॥
जरासिंधु जीती दिसा, धरि पउरस जिहिं बार॥
मिलैं आपतैं नहिं नृपति, धरि पउरष जिहिं ष्वार॥ ३२॥

गिरव्रजनामी किला इक, सब रोकै वां ठौर॥
बीस सहस अरु आठ सै, नृप ह्वै कैंद अजौर॥ ३३॥
उन्ह बिनती कीनी कि हे, कृस्न कंवल दल नैंन॥
सरनांगत कैं भयहरन, महा मुक्ति सुषदैंन॥ ३४॥
जरासंधि सौं डरपि हम्ह, सरन गही तुम्ह नाथ॥
दीनबंधु हम्ह सिर धरौ, दया जुक्त निज हाथ॥ ३५॥
लागि रह्यौ संसार इहि, बुरै करन कैं मांहिं॥
तुम्ह निज सेवा निगम बिच, कही सुकरही नांहिं॥ ३६॥
काल रूप तुम्ह जगत कैं, हरत प्रांन निरधार॥
नमसंकार तुम्हकौं प्रभू, मन बच बारंबार॥ ३७॥
साधुन की रछया करन, दुष्टन देबै दंड॥
प्रगट भयै हौ आपु हरि, इहि अवतार अषंड॥ ३८॥
हम्ह इहि नांहिन जांनत कि, कौउ मनुष जग मांहिं॥
चित चाहै सौ करै तुम्ह, आग्यां मांनत नांहिं॥ ३९॥
अरु अैसौहू है कि नहिं, सकल जगत बिच मर्म॥
तुम्ह जु करत सौ हौत है, जीव भुक्तत निज कर्म॥ ४०॥
इन्ह तिहुँ बातन मध्य है, कहा ठीक निरधार॥
हम्हकौं देहुँ बताय सौं, दीनबंधु करतार॥ ४१॥
सुपनैं सम सुषराज कौं, विषैंन कैं आधीन॥
सौहू सुष जांनै मनुष, जो तन है रोगीन॥ ४२॥
जामैं नित भय रहत है, अैसौ मृतक सरीर॥
तापरि सुत अस्त्रीन कौं, महाबौझ दुषसीर॥ ४३॥
प्रभू तुम्हारी प्रकति करि, हम्ह मोहित अग्यांन॥
छौडि भगति सुष परि हरै, बीचि कलैस निदांन॥ ४४॥
तुम्हकौं करै प्रनांम कौ, जो धरि निज उर हैत॥
तौ वांकौ तुम्ह पद कंवल, सब कलैस हर लैत॥ ४५॥
जरासंधि रूपी हम्हहिं, करम बंध रह्यौ लागि॥
तातैं हम्हहिं छुडाइयै, बैगि दया रस पागि॥ ४६॥
बल है गज दस सहस कौं, जिहँ पापी कैं मांहिं॥
बीस सहस नृप कैद करि, राषै दुरगम ठांहिं॥ ४७॥
जीतै सत्रहहिं बेरि तुम्ह, जीति इहै इक बेर॥
मत्त भयौ है दैत दुष, तुम्ह प्रजाहिं है सेर॥ ४८॥
जरासंधि रोकै हम्हैं, तुम्ह दरसन की चाह॥
सरन रावरै दीन हम्ह, आये सहित उमाह॥ ४९॥

अबै हम्हारौ हे प्रभू, करहुँ आप कल्यांन॥

॥ श्री सुक उवाच॥

समाचार यौं नृपन कैं, कहै दूत बुधिबांन॥५०॥
आयै प्रभु पैं तिहिं समैं, मुनि नारद निहकांम॥
तिन्हकौं लषि प्रभु सभा जुत, उठि कीनौं परिनांम॥५१॥
आसन दैं आदर सहित, मुनि कौं करि अति प्रस्न॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

बोलै अमृत सम सुबचन, हाथ जोरि श्रीकृस्न॥५२॥
तिहूं लौक मैं फिरत तुम्ह, दरसी हौ जु त्रकाल॥
नाहिं छांनी तुम्ह तैं कछु, बात सुकाहू काल॥५३॥
तातैं हम्ह पांडवन की, पूछत है कुसलात॥
कहियै हम्हैं सुनाय कैं, तुम्ह जांनत सब बात॥५४॥

॥ श्री नारद उबाच॥

नारद बोलै बिस्व सब, प्रभु तुम्ह सिरजनहार॥
दैषी माया रावरी, हे प्रभु म्हैं बहु बार॥५५॥
अंतरजामी रूप तुम्ह, सब कछु जांनन हार॥
गौप्य रहत हौ जगत सौं, लीला करत अपार॥५६॥
निज माया सूं स्त्रजत जग, बहुरि करत संघार॥
समझि सकत कौं नांहिंनैं, तुम्ह लीला अनुसार॥५७॥
झूठौ है इहि जगत तुम्ह, सबतैं न्यारै सांम॥
अपरमपार अनादि प्रभु, तुम्ह कौ है परिनांम॥५८॥
इहै जीव संसार मैं, पर्यौ रहत अग्यांन॥
करत उपाय न मुक्ति कौ, तजि प्रभु की पहचांन॥५९॥
तुम्ह लीला अवतार धरि, निज जस प्रगट करंत॥
सौ अमृत समहुँ सुजस सुनि, प्रांनी मुक्ति लहंत॥६०॥
भुवा तुम्हारी कौ प्रभू, पुत्र जुधिष्टिर जु राय॥
ताकौं कहत मनोर्थ म्हैं, तुम्हकौं प्रगट सुनाय॥६१॥
जिग्य राजसूय करन कौं, धरत मनोरथ राय॥
आग्यां चाहत रावरी, परम प्रीत अनुभाय॥६२॥
आपु पधारौगै उहां, तौ तुम्ह दरसन काज॥
आवैगैं सबहीं उमगि, सुर रिष नृपति समाज॥६३॥
सुमरन किरतन ध्यांन जो, करै तुम्हारौ चांहिं॥
तौ पवित्र चांडालहूं, हौत सकल जग मांहिं॥६४॥
अरु जें सपरस रावरौ, करत प्रीति अनुभाय॥
सौइ पवित्र ह्वै जात हैं, अचिरज कछु न कहाय॥६५॥

फैलि रह्यौ है रावरौ, सुजस सुर्ग भुवमांहिं॥
वार पार ताकौं कौउ, पाय सकत है नांहिं॥ ६६॥
सुर्ग मांहिं मंदाकिनी, भुव बिच गंग सुढार॥
भोगवती पाताल मधि, सौभित भलैं प्रकार॥ ६७॥
चरनौदिक तुव चरन कौं, अैं तिहुँ गंग प्रवाह॥
तैं पवित्र सबै जगत कौं, करत दैत सुषलाह॥ ६८॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि इह जादवन, भली लगी नहिं बात॥
उन्हें मनोरथ हौ करन, कौं जरासंधि कि घात॥ ६९॥
उद्धव सौ ता समैं प्रभु, बोलै अैसे बैंन॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

हे उद्धव तुम्ह सुहृद हौ, हम्हकौं अति सुष दैंन॥ ७०॥
सारमंत्र कैं तुम्ह सदा, आछे जांनन हार॥
नैत्रन सम हौ कहौ कछु, सौइ करैं निरधार॥ ७१॥
कृस्न कुंवर सरबग्य यौं, बोलै हौय अजांन॥
तब उद्धव प्रभु आश्रै सौं, बोलै मूरत ग्यांन॥ ७२॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते सप्त तितमोऽध्याय: ॥ ७०॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अैक सप्ततितमोऽध्याय: ॥

(श्रीकृष्ण भगवान का इन्द्रप्रस्थ पधारना)

॥ श्री सुक उवाच॥

दोहा - सुक कहत कि अैसौ बचन, मुनिकौं सुनि वां बार॥
सब जदुकुल कौं जांनि मत, उद्धव कह्यौ बिचार॥ १॥
नारद जू आछे कहत, सुनियै कृस्न कुमार॥
रिछया जुधिष्टिर जिग्य की, करनी है निरधार॥ २॥
अरु आयै हैं रावरै, सरनै जितै नृपाल॥
तिन्हहूं की करनी रछा, तुम्हकौं जोग्य कृपाल॥ ३॥
राजा सकल दिसांन कैं, जीतै जो धरि धाप॥
जिग्य राजसूय सौं करै, जस फैलाय अमाप॥ ४॥
तातैं चलियै जिग्य मैं, पहलैं कृस्न कुमार॥
जरासंधि कैं हतन कौं, कीजै उहां बिचार॥ ५॥

कार्ज दुहुँन कौं हौहिंगौ, करौ इहै निरधार॥
तामैं अति जस रावरौ, फैलै बिच संसार॥ ६॥
तातैं नृप बंदिवांन कौं, दैनै बेगि छुडाय॥
असरन सरन कृपाल प्रभु, तुम्ह सबहिंन सुषदाय॥ ७॥
दस हजार गज बल सही, जरासंधि कैं मांहिं॥
तासौं लरिबैं जोग्य इक, भीम सैंन भुव ठांहिं॥ ८॥
जु करै अकेलै दुंदु जुध, भीमसैंन मघ ईस॥
तब बहि जीत्यौ जायगौ, निश्चै बिस्वाबीस॥ ९॥
बह ब्राह्मन है जो कौउ, धरि ब्राह्मन कौ रूप॥
वापै मांगै जाय कछु, तौ न नटै मघभूप॥ १०॥
भीमसैंन द्विज रूप धरि, तातैं वापै जाय॥
जाचन्या जुद्ध दुंदू की, करै भलैं अनुभाय॥ ११॥
तबै अकेलौ दुंदु जुधहिं, बहि करिहैं जुत चाय॥
भीम निकट रहिहौ सु तुम्ह, तब बहिं जीत्यौ जाय॥ १२॥
जग उतपति पालन प्रलै, करता तुम्ह भगवांन॥
कहन मात्र ही है सही, ब्रह्माकाल जु निदांन॥ १३॥
हौत नाम बिधि काल कौ, तुम्ह सुकरत सब काज॥
अैसै तुम्ह भीमहिं निकट, ठाढै क्रिपा जिहाज॥ १४॥
सब करिहौ कारज तुम्हहिं, ह्वैहिं भीम कौं नांम॥
क्रिपा तुम्हारी बिनु कछू, है न काज अभिरांम॥ १५॥
महा सुषद तुव चरन कौं, आस्त्रय भलौं बिचारि॥
जो गावत जस रावरौ, नृप बंदिवनि की नारि॥ १६॥
आवैंगै श्रीकृस्न प्रभु, जरासंधिहूं मारि॥
सुष देहैं हम्ह पतिन कौं, दुष बंधन निरवारि॥ १७॥
जइसै गहिकैं लै चल्यौ, संषचूड़ गौपीन॥
तबै सुजस उन्ह रावरौ, गायौ प्रेमाधीन॥ १८॥
गज जस गायौ रावरौ, ग्राह गह्यौ जिहिं बार॥
रावन हरी जबै सिया, सुमर्यौ तुम्ह जस सार॥ १९॥
परै जबै माता पिता, काराग्रह कैं मांहिं॥
तब सुमर्यौ प्रभु रावरौ, सुजस सुषद चित्त ठांहिं॥ २०॥
और सकल मुनि देवता, पुनि हम्हहूं चित्त चांहिं॥
जस गावत हौ रावरौ, आछै सहित उमांहिं॥ २१॥
जरासंधि कैं हतन मैं, सरिहैं काजि अनैंक॥
अरु जिग्य मैं जान्यै तुम्हहिं, जोग्य सुसहित विवैंक॥ २२॥

सबहिंन करन जु प्रसंन जसु, सुनि उद्धव कैं बैंन॥
जुत नारद जादवनि प्रभु, करी सराह सुबैंन॥ २३॥
चलन जिग्य मैं सबन कौं, दिय आग्या श्रीकृस्न॥
अरु आग्यां बसुदेव पैं, मांगी प्रभू सप्रस्न॥ २४॥
भयै चलावत पहल निज, सुत अस्त्री करि स्वार॥
फिरि अग्रज उग्रसैंन की, लै आग्यां करतार॥ २५॥
चढै सुभग सिंदन ऊपरि, परी निसांननि ठौर॥
फरहरात रथ पैं ध्वुजा, गरुडाकार सुतौर॥ २६॥
लै सैंना चतुरंगिनी, चलै निसांन बजाय॥
बजै बउत बाजै तिन्हनि, सबद दिसनि रह्यौ छाय॥ २७॥
सोनै कैं रथ पालकी, तिन्ह परि ह्वै ह्वै स्वार॥
प्रभु की अस्त्री सुतन जुत, चाली सजैं सिंगार॥ २८॥
पटभूषन माला पुहपि, पहरि सुगंध लगाय॥
लियै सस्त्र जोधा बउत, चलै संग सुषपाय॥ २९॥
बाजारी नर नारि अरु, नृतकारी नरनारि॥
चलै विविधि स्वारीन चढि, महामोद अनुसारि॥ ३०॥
छत्र चमर रु आयुध ध्वुजा, मुकट कवच आभर्न॥
झमकत हैं रवि किरन सौं, सत्रुनिनि अति भय कर्न॥ ३१॥
नारद जू कौ प्रभु तबै, भलैं बिदा करि दीन॥
कृस्न रूप निज ह्रदै धरि, नारद गवन सुकीन॥ ३२॥
उन्ह राजन कैं दूत सौं, प्रभु यौं कह्यौ सुनाय॥
कहियौ मति डरपौं नृपति, करिहौं भलैं सहाय॥ ३३॥
इहि सुनि दूत जु नृपन सौं, कही बात सब जाय॥
प्रभू पधारन कौं करत, चित बिचारबै राय॥ ३४॥
मारवार सौंबीर अरु, आनर्तक कुरषैत॥
नदी ग्राम परबत नगर, लांघि सुकृस्न बिजैत॥ ३५॥
नदी सरस्वती द्रिषवती, मछ पांचालहुँ दैस॥
लांघि हस्तिनांपुर बिषै, प्राप्त भयै बिसबैस॥ ३६॥
जिन्हकौं दरसन मनुष कौं, दुरलभ है सुषसार॥
अैसै कृस्न कुमार कौं, आवत लषि वां बार॥ ३७॥
मित्रननि अरु ब्राह्मननि लैं, संग जुद्धिष्टिर राय॥
चलैं समुष श्रीकृस्न कैं, अधिक हरष उफनाय॥ ३८॥
सबद सुगीत बाजित्र कौ, छाय रह्यौ सुषदाय॥
हौत जात है बेद धुनि, नृप कै संग सुभाय॥ ३९॥

भयौ प्रेम बिह्वल नृपति, लषि श्रीकृस्न कुमार॥
बउत दिनन में मिलैं तैं, बढ्यौ प्रेम अधिकार॥ ४० ॥
प्रभु सौं मिलतैं नृपति कैं, पाप रहै सब जात॥
प्रेम पुलक रोमांच ह्वै, बिसर गयौ सुधि गात॥ ४१ ॥
नृपति महा आनंद कौं, प्राप्त भयै वां बार॥
मिटै सकल दुष सौंक सबि, प्रभु कौं लषि सुषसार॥ ४२ ॥
भीम नकुल सहदैव अरु, अरजुन सहित उमंग॥
मिलत भयै श्रीकृस्न सौं, उमड्यौ प्रेम अभंग॥ ४३ ॥
मिलै भीम अरजुन दुहूं, प्रभु उर सौं उर लाय॥
कियौ नकुल सहदैव नै, प्रभुहिं प्रनांम सुभाय॥ ४४ ॥
कियौ बहुरि द्विज वरन कौं, प्रभु परनांम सुढार॥
दरसन करि श्रीकृस्न कौं, सबनि लह्यौ सुषसार॥ ४५ ॥
कैकय कुर संजय इननि, दैसन कैं सब राय॥
प्रभु कौं आदर किय नृपन, नृप प्रभु आदरभाय॥ ४६ ॥
बजि दुंदुभि भैरी मृदंग, बीन संष सहनाय॥
नृतकारी नृत करत द्विज, अस्तुति करत सुषदाय॥ ४७ ॥
मित्रननि जुत सबहींन कौं, संग लियै करतार॥
नगर मध्य प्रापति भयै, मोद बढाय अपार॥ ४८ ॥
भींजि रह्यौ मग नगर कौ, गज मद जल अनुसार॥
बंदन माल ध्वुजा लसत, पुर बिच द्वारहिं द्वार॥ ४९ ॥
देहलि मंगल कलस तरु, कदली लसत रसाल॥
आंगन चौक बिराजहीं, सब नरनारि षुष्याल॥ ५० ॥
अदभुत भूषन बस्त्र अरु, सुमन माल अभिरांम॥
पहरैं नरनारी फिरत, सरस सौभ पुर ठांम॥ ५१ ॥
निजपति अरु ग्रहकाज तजि, सकल नगर की भांम॥
उमगि उमगि आवत भई, दैषन सुंदर स्यांम॥ ५२ ॥
भीर सैंन चतुरंगनी, तापैं प्रभु परि चांहिं॥
कितिक तिया बरषत पहुप, गौषनि चढी उमांहिं॥ ५३ ॥
हसि चिताय उन्ह तियन सौं, यौं बिच द्रिगनि जताय॥
भली करी आयै इहां, कृस्नं कुंवर सुषदाय॥ ५४ ॥
जहँ जहँ है निकसै प्रभू, तहँ तहँ कैं सब लौक॥
बिबिधि भैंट कीनी सुभग, अति सनैह की वौक॥ ५५ ॥
आदि बाजित्र बजाय सब, पुरबासी जुत चाय॥
किय पूजा भगवांन की, महामोद चितपाय॥ ५६ ॥

प्रभू जाय प्रापत भयै, नृप बैठन कैं अैंन॥
अंतहपुर की तियन कैं, लषि प्रफुलित हुव नैंन॥ ५७॥
तीन लौक कैं ईस हरि, अपुन भतीजा जांनि॥
दैषि प्रसंन ह्वै मिलत भइ, कुंती अति सुष मांनि॥ ५८॥
कुंती जू श्रीकृस्नं कौं, लैं आई निज गैह॥
प्रभु पूजा करनौ भुल्यौ, मगन नृपति बिच नैह॥ ५९॥
कुंती जुत बृध तियन कौं, किय श्रीकृस्न प्रनांम॥
अरु प्रभु कौं परनांम किय, द्रुपदि सुभद्रा भांम॥ ६०॥
कुंती जू की द्रौपदी, लहि आग्यां वां बार॥
प्रभु की अस्त्रीन की करी, पूजा भलैं प्रकार॥ ६१॥
अदभुत भूषन बस्त्र लैं, पहरायै जुत प्रीति॥
मिलि कीनी मनुहार बहु, परम प्रेम की रीति॥ ६२॥
अति सुष सौं श्रीकृस्न कौं, राषै नृपति प्रवीन॥
मंत्री सैंना तियन लौं, नित नव आदर कीन॥ ६३॥
षांडव वनहिं जराय कैं, तृपति अगनि कौं कीन॥
लिय बचाय मय दइत कौं, सभा नृपहिं तिन दीन॥ ६४॥
अर्जुन सौं मिलि श्रीकृस्न जू, अैसैं करत बिहार॥
कितक मास बितयै उहां, नृप सनैह अनुसार॥ ६५॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अैकसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ द्वि सप्ततितमोऽध्यायः ॥

(पांडवों के राजसूय यज्ञ का आयोजन और जरासंध का उद्धार)

॥ श्री सुक उवाच॥

दोहा - सुक कहत कि छत्री वयसहिं, मुनि द्विज बंधू भ्रात॥
इन्ह जुत इक दिन सभा मैं, बैठै नृप बिषयात॥ १॥
आचारी कुलहिं बृध पुनि, भाई जाति सबंध॥
इन्ह सबकैं सुनतैं नृपति, बचन कह्यौ या संध॥ २॥

॥ युधिष्ठिर उवाच॥

सुनि अैहै श्रीकृस्नं जू, राजसूय करि जिग्य॥
तुम्ह बिभूति सुर तिन चहत, करन संतुष्ट अथग्य॥ ३॥

सौ जिग्य तुम्ह करवाय हौ, तब ह्वै हैं निरधार॥
तुम्ह बिनु कछु कारज न ह्वै, कबहूं किहूं प्रकार॥ ४॥
सैवत तुम्ह पद पावडी, धरत ध्यांन लैं नांम॥
सकल मनोरथ जुक्त जें, लहत मुक्ति अभिरांम॥ ५॥
देव देव हम्ह करत हैं, तुम्ह पद सैव सुढार॥
ताकौ फल देषैं अबैं, आछै सब संसार॥ ६॥
तुम्हकौं कौइक भजत अरु, नांहिं भजत है कौय॥
तिन दुहूंन की रीति अब, प्रगट जिग्य बिच हौय॥ ७॥
तुम्ह सर्वात्मा ब्रह्म हौ, समदरसी भगवांन॥
मगन रहत आनंद मैं, धरै अपुन निज ध्यांन॥ ८॥
हे प्रभु नांहिंन रावरै, है कौउ अपुन पराय॥
कल्पबृच्छ कौ सौ सही, है सुभाव सुषदाय॥ ९॥
जइसी कौ सैवा करैं, प्रभू तुम्हारी चांहिं॥
तइसौ ही फल दैत हौ, तुम्हहूं सहित उमांहिं॥ १०॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

प्रभु बोलै हे नृपति तुम्ह, प्रगट भली बुध कीन॥
यामैं तुम्ह कीरति बडी, ह्वै हैं लोक सुतीन॥ ११॥
सुर मुनि सुहृद रु हम्हहिं इहि, जिग्य महाप्रिय आंहिं॥
तुम्ह तांकै आरंभ कौ, करत बिचारि उमांहिं॥ १२॥
जीति सकल राजांन कौं, निज बस करि सब भूम॥
करौ जिग्य आरंभ तुम्ह, सजि सामग्री जु धूम॥ १३॥
बिनां धरम वारैन कैं, म्हैं बसि हौत जु नांहिं॥
दैव अंस तुम्ह भ्रात पुनि, म्हैं बसि हौत जु चांहिं॥ १४॥
तैज सुजस संपति इननि, बस्त्रन कैं उनमांन॥
मौ भक्तन सौं अमरहूं, जीति न सकैं निदान॥ १५॥

॥ श्री सुक उवाच।.

सुक कहत कि अैसौ बचन, प्रभु कौं सुनिकैं राय॥
प्रसंन्न हौय जीतन दिसा, पठयै भ्रात सुभाय॥ १६॥
तिन्हमैं अपनौं तैज प्रभु, राषत भयै सुढार॥
दछिन दिसहिं सहदैव कौं, पठयौ नृपति उदार॥ १७॥
पछिम कौं पठयौ जु नकुल, अर्जुन उत्तरहिं वोर॥
पूर्ब पछिम कैकय संजय, इन्ह जुत भीम सजोर॥ १८॥
अैं भाई चहुँ दिसनि कैं, सकल नृपन कौं जीति॥
धन अनंत ल्यावत भयै, कीर्ति बढाय सुरीति॥ १९॥

जीत्यौ गयौ न अैंक नृप, जरासंधि बलवंत॥
नृपति जुधिष्ठिर सुनि इहै, सोच कियौ बहि तंत॥ २०॥
तब सुधि आई प्रभू कौ, उद्धव कही सुबात॥
रु करत भयै उदिम करन, जरासंधि की घात॥ २१॥
भीमसैंन श्रीकृस्न अरु, अरजुन धरि द्विज रूप॥
जात भयै गिरिब्रज विषै, जरासंधि जहँ भूप॥ २२॥
कियै जाचन्या तिहुँन मिलि, जरासंधि पैं जाय॥
हे राजा हम्ह दूरि तैं, तौहि पैं अर्थी आय॥ २३॥
हम्ह चाहत हैं सौ अबै, दीजै नृपति उमांहिं॥
नटि जैबौ या बेरि तुहि, निश्चै जोग्य सुनांहिं॥ २४॥
क्रौध रहित जन कौनुं सी, सकैं बात सहि नांहिं॥
करनी साधू जनन की, कहा अकार्ज कहांहिं॥ २५॥
दाता दै न सकैं सु का, बस्तु बीचि संसार॥
समदरसी कैं पर अपुन, नाहिं कौउ निरधार॥ २६॥
जो कौं अनित सरीर धरि, जस न करै जग मांहिं॥
ताकी निंदा हौत है, भलौ गनत कौं नांहिं॥ २७॥
रंति देव रु सिबि उछव्रत, बलि कपौत हरिचंद॥
बधिक आदि दै तनहुं जस, सुर्ग लह्यौ सुषकंद॥ २८॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि सोचत भयै, जरासंधि वां बार॥
सुर आकृति पुनि हाथ मैं, आंटन धनु अनुसार॥ २९॥
इन्हीं लछिन सौ दिसि परत, अैंहिं छत्री निरधार॥
अरु म्हैं देषैं हैं कबहुं, इन्हकौं काहू बार॥ ३०॥
हैं अैंहिं छत्री रूप द्विज, धरि आयै मो पास॥
अैं मांगै मो प्रांनहूं, तौ द्यौं सहित हुलास॥ ३१॥
छल करि बांवन जू बलिहिं, पठयौ बिचि पाताल॥
तउ बलि की सब जगत मैं, कीरति बढि बिसाल॥ ३२॥
बलि नृप जांनत हौ कि यैं, सही बिस्नु भगवांन॥
दै हैं सकल छिनांय मो, इंद्रहिं राजसथांन॥ ३३॥
तु सब प्रिथवी दै चुक्यौ, नाथ हाथ मंडवाय॥
मनै कियौ गुरु सुक्र तऊ, मान्यौ नहिं बलिराय॥ ३४॥
इहि सरीर गिरि परत है, इक दिन औसर पाय॥
तासौं द्विज कार्ज न करैं, तौ नृप सुर्ग नहिं जाय॥ ३५॥

॥ जरासंध उवाच ॥

जरासंध बोल्यौं बचन, ऐसी बात बिचारि॥
तुम्ह ब्राह्मन कौं कहहुँ अब, निज मनौर्थ निरधारि॥ ३६ ॥
तुम्ह मांगौंगे तौ अपुन, दैहुँ हिर्दैहूं आजि॥
प्रगट मनौरथ करहुँ निज, तुम्ह आयै किहिं काजि॥ ३७ ॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

प्रभु बोलै तू अैकलौं, हम्हसौं करि संग्राम॥
हम्ह राजा हैं अंनधन, कछु न चहत चित ठांम॥ ३८ ॥
इहि अरजुन इहि भीम हैं, म्हैं तेरौ अरि कृस्नं॥
जुद्ध जाचन्या हम्ह करी, सौ दै दांन सप्रस्नं॥ ३९ ॥
इहि सुनि हँसि बोलत भयौ, जरासंधि रिस धारि॥
हे मूरष हौ जूधही, दैहुँ भलै जु प्रकारि॥ ४० ॥
तुम्ह सौ तौ हे कृस्न म्हैं, जुद्ध करौगौं नांहिं॥
तुम्ह तौ डर तजि मधुपुरी, बसै सिंधु तट ठांहिं॥ ४१ ॥
तुम्ह कटि डेढ बिलस्त की, मो समांन बल नांहिं॥
बांकै नैंन बिसाल लहि, ठगत सब निज गमांहिं॥ ४२ ॥
अरु अरजुनहूं म्हैं नहिंन, मो समबल अधिकार॥
भीम सैंन मो सम बली, तासौं लरहुँ सुढार॥ ४३ ॥
यौं कहि इक दीरघ गदा, भीमहिं दई मंगाय॥
अैंक गदा लैं आपु पुर, बाहरि गयै रिसाय॥ ४४ ॥
ठौर जुद्ध की जायकै, प्राप्त भयै बलबांन॥
हौत प्रहार सु गदा कौं, दुहु घात बज्र समांन॥ ४५ ॥
वांम दाहिनी ओर जुद्ध, गदा भैद उनमांन॥
जरासंधि अरु भीम मिलि, करत भयै घमसांन॥ ४६ ॥
चट चट सबद गदान कौं, बज्र पात सम हौत॥
जौधै गज कैं लरन मैं, दंतहिं सबद उदौत॥ ४७ ॥
कंध चरन कटि जंघ करि, छाती जुत इन्ह ठौर॥
आपु समांहिं प्रहार दुहू, करत भयै बढि जौर॥ ४८ ॥
अंगन सौं लगि ह्वै गई, गदा दुहुन की चूर॥
ज्यौं हाथी कैं लरन मैं, आक तूटि ह्वै दूर॥ ४९ ॥
दुहुं बलीन मैं है जु सम, दीरघ बल अभ्यास॥
तातैं जुद्धहिं समांन भौ, कोउ न मांनत त्रास॥ ५० ॥
भयै आठ अरु बीस दिन, करतहिं जुध बलबांन॥
रात्रि समैं मिलि अैकठै, बैठैहिं मित्र समांन॥ ५१ ॥

अैक दिवस श्रीकृस्न सौं, कही भीम या बात॥
जरासंधि मो सौं अबै, जीत्यौ नांहिन जात॥ ५२॥
जरासंधि कैं दूक द्वै, जरा दियै हैं जोरि॥
यहै बात श्रीकृस्न जू, जांनत है जगमोरि॥ ५३॥
जरासंधि कै हतन कौ, कीनौं प्रभू बिचारि॥
भीमसैंन मैं तैज निज, धरत भयै करतारि॥ ५४॥
जुद्ध समैं पुनि कृस्न जू, ब्रछ साषा इक चीर॥
भीमहिं दिषय जताय दिय, हतन भेद बिच भीर॥ ५५॥
भीम तबैं मघ ईस कौ, पग गहि पटक सु दीन॥
इक पग निज पग कैं तरै, इक पग कर मैं लीन॥ ५६॥
जरासंधि कैं चीर पग, करि डारै द्वै टूक॥
ज्यौं तरु साषा तोरि गज, मांनत मोद कछूक॥ ५७॥
जरासंधि कैं टूक द्वै, दैषि प्रजा दुषदाय॥
हा हा कार कियौ बउत, कूटत सिर बिललाय॥ ५८॥
मिलै भीम कौं कंठ लगि, अरजुन अरु श्रीकृस्न॥
करि सराह अति भीम की, दुहूँ भ्रात है प्रस्न॥ ५९॥
जरासंधि कौ पुत्र जु हौ, जिहँ सहदैव सुनांम॥
ताकौ दिय श्रीकृस्नं जू, नृप पदवी वां ठांम॥ ६०॥
रुकै हुतै राजा तिहैं, दीनै प्रभू छुडाय॥
बउत कष्ट बहु दिनन तैं, मैट्यौ प्रभु सुषदाय॥ ६१॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते द्विसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७२॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ त्रिसप्ततितमोऽध्यायः ॥

(जरासंध की जेल से छूटे हुये राजाओं की विदाई और भगवान् का
इन्द्रप्रस्थ लौट आना)

॥ श्रीसुक उवाच॥

दोहा श्री सुक कहत कि दस सहस, और आठ सै राय॥
अैंक कंदरा तैं सबैं, काढै प्रभु सुषदाय॥ १॥
अंग बस्त्र उन्ह कैं मलिन, लटै तृषित जुत भूष॥
चरन टिकत नहिं भूमि पर, मुष जु रहै हैं सूष॥ २॥

ऐसैं उन्हकौं हरि लषै, उन्ह प्रभु दरसन कीन॥
दुरलभ दरसन लषि नृपन, नैंनन कौं फल लीन॥ ३॥
धरै पीत पट च्यार भुज, आयुध सहित रसाल॥
प्रसंन बदन द्रिग कंवल सै, सुंदर सांम कृपाल॥ ४॥
मकराकृत कुंडल श्रवन, मुकट सुभग बनि सीस॥
जथा जोग्य भूषन बनै, अदभुत परहीं दीस॥ ५॥
कौस्तभ मनि श्रीचिह्न उर, अरु सौभित बनमाल॥
ऐसौ प्रभु कौ रूप लषि, सब नृप भयै निहाल॥ ६॥
नासा सौं प्रभु अंग कौं, सुगंध लैत भय राय॥
चरननि कौ परनांम किय, हित जुत सीस नवाय॥ ७॥
प्रभु दरसन तैं कैद कौ, दुष सब नृपति मिटाय॥
हाथ जोर करतै भयै, अस्तुति महा सुषदाय॥ ८॥
देव देव हे जगतपति, कृस्न कुमार कृपाल॥
सरनागति कौ दुष हरन, दासनि करन निहाल॥ ९॥
हम्ह बिरक्त हुवै जगत सौं, सरन रावरै आय॥
तुम्ह चरननि वंदन करत, करौ हम्हारि सहाय॥ १०॥
जरासंधि सौं ईरषा, हम्ह कछु करहीं नांहिं॥
कृपा रावरी हौय जब, राज साज छुटि जांहिं॥ ११॥
हौत महा मद मत्त नर, नृप पदवी कौ पाय॥
तासौं ह्वै कल्यांन नहिं, प्रगटै दुष अधिकाय॥ १२॥
रैत चमक लषि ज्यौं हिरन, दौरै जल भ्रम पाय॥
त्यौं माया की बस्तू कौं, मूरष सत्य जनाय॥ १३॥
लछमी मदसौं हम्ह पहल, हौय रहै हे अंध॥
आपुस मांही ईरषा, करतै तुम्ह बिनु संध॥ १४॥
निरदय ह्वै कैं जनन कौं, दैतै दुष अनपार॥
गनतै नहिं डर मृत्यु कौ, भूलि बीचि संसार॥ १५॥
बै ही हम्ह अब राज्य तैं, काल भ्रष्ट करि दीन॥
तातैं मैंटहिं भजत हैं, तुम्ह चरननि हित भीन॥ १६॥
मृग तृस्ना कौं रूप है, राज्य महा दुषदाय॥
देह रोग कौ भूल है, तासौं सुष नहिं पाय॥ १७॥
तातैं हम्ह राज न चहत, चहत सुर्गहू नांहिं॥
देहुँ बताय उपाय अस, तुव चरननि न भुलांहिं॥ १८॥
बासुदैव श्रीकृस्न हरि, परमातम गौविंद॥
सरनागत कैं दुष हरन, है प्रनांम ब्रजचंद॥ १९॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि अैसै नृपन, कीनी असतुति बनाय॥
प्रसंन हौय भगवांन तब, कह्यौ बचन सुषदाय॥ २०॥

॥ श्री भगवानुाच ॥

हे नृप मो भगति जो द्रिढ, है दुरलभ जग मांहिं॥
सौं तुम्ह सबकौं आजि तैं, ह्वै हैं प्राप्ति सदांहिं॥ २१॥
अरु तुम्ह इहि सांची कही, बात बुधि जु अनुसारि॥
राज्य रु लछमी पाय कैं, बाढत मद अधिकारि॥ २२॥
रावन बानासुर नहुष, बेण इन्हहिं लौं आदि॥
नर सुर असुर मदंध ह्वै, षौयौ स्वारथ जादि॥ २३॥
तातैं तुम्ह या देह कौं, सदा अनित्य सुजांनि॥
करौ जिग्य मो निमित अरु, पालहुं प्रजा निदांनि॥ २४॥
उपजावौ संतान तुम्ह, सुष दुष लषौ समांनि॥
मिलै जु कछु ता मध्यही, गहौ संतोष सुजांनि॥ २५॥
प्रीत करौ मति देह मैं, करौ सु आत्म विचार॥
मनहि लगावौ मो विषै, पै हौ मोहि सुढार॥ २६॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि यौं नृपन सौं, अैसै कहि भगवांन॥
पठयै बहु अस्त्री पुरष, नृपति करावन ह्वांन॥ २७॥
पूजा सब राजान की, वा सतदैवहिं पास॥
करवाई श्रीकृस्न जू, संजुत कृपा हुलास॥ २८॥
सुमन माल सउगंध पुनि, भूषन बस्त्र रसाल॥
नृपन जोग्य पठवत भयै, असरन सरन क्रिपाल॥ २९॥
वै सिनांन करि पट पहरि, बैठै जबै नृपाल॥
पठयै बीरां जुत प्रभू, भौजन बिबिधि रसाल॥ ३०॥
प्रभु किय यौं सनमांन उन्ह, नृपतिन कौ उहि ठांहिं॥
तब वै यौं सोभै मनौं, ग्रह रितु सरदहिं मांहिं॥ ३१॥
अस्व भूषित मनि कनक सौं, सुंदर रथनि लगाय॥
तिन्हपैं वै नृप स्वार करि, दिय प्रभु विदा बडाय॥ ३२॥
अैसै जब श्रीकृस्न जू, राजा दियै छुडाय॥
तब वै नृप प्रभु चरन कौं, नमत भयै सिरनाय॥ ३३॥
निज निज दैसन कौ गयै, राजा सबै उमांहिं॥
कहत भयै परजांन सौं, प्रभू महातम चांहिं॥ ३४॥
कियौ हुतौ उपदैस प्रभु, अैसै ही अनुसार॥
रहत भयै राजा सबै, करि सुभ धरम बिचार॥ ३५॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि यौं भीम पैं, जरासंधि हतवाय॥
अरु कैदी राजा सबै, उन्हकैं घरनि पठाय॥ ३६ ॥
सहित भीम अरजुन प्रभू, फिरि सहदेवहिं पास॥
भयै पधारत उन्ह करी, पूजा धरै हुलास॥ ३७ ॥
बहुर्यौ बन षांडव निकट, आयै तीनौं भ्रात॥
संषनाद करि सुष दियौ, मित्रननि कौं बिषयात॥ ३८ ॥
संषनाद सुनि प्रजा कौं, हुव आनंद अपार॥
नृप जान्यौ निश्चै भयौ, जरासंधि संघार॥ ३९ ॥
भीम पार्थ श्रीकृस्न किय, वंदन नृप कौ आय॥
निज चरितहिं कहतै भयै, राजा सौं समझाय॥ ४० ॥
नृपति जुधिष्टिर सुनि चरित, लह्यौ परम आनंद॥
प्रेम उमडि द्रिग सजल हुव, लषि प्रभु आनन चंद॥ ४१ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते त्रिसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७३ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुः सप्ततितमोऽध्यायः ॥

(भगवान की अग्र पूजा और शिशुपाल का उद्धार)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि नृप जुधिष्टिर, सुनि प्रभु चरित सुढार॥
प्रसंन हौय बौलत भयै, बचन सु या अनुसार॥ १ ॥

॥ युधिष्ठिर उवाच ॥

तीन लौक कैं हौ बडै, आप सदा जगदीस॥
तुम्ह आग्यां निज सिर धरत, सब लौकन कैं ईस॥ २ ॥
मांनत हौ हम्हरौ बचन, सौ तुम्ह पंकज नैंन॥
इहि अचिरज मय बात है, क्यूं हूं समझि परैंन॥ ३ ॥
ब्रह्मनि देव परमातमा, जगमगात सब ठांहिं॥
करम कियैं तैं रावरौ, तैज घटत कछु नांहिं॥ ४ ॥
प्रभु तुम्ह भक्तन कैं नाहिंन, अहंता ममता हौत॥
अैंक पसुनहीं कैं प्रगट, भैदहिं बुद्धि उदौत॥ ५ ॥
सुक कहत कि नृप जुधिष्टिर, यौं कहि वचन प्रवीन॥
विप्र जु हौम करतांन की, जिग्य मधि बरनी कीन॥ ६ ॥

फेरि कृस्न करतार की, राजा आग्यां पाय॥
बेद पात्र द्विज वरन की, बरनी करी सुभाय॥ ७॥
द्वैपायन भरद्वाज कृतु, गौतम असित सुमंत॥
चिवन कवष मैत्रेय त्रित, अरु बसिष्ट बुधिवंत॥ ८॥
बिस्वामित्र जैमिनी कण्व, कस्यप बैसंपाय॥
गर्ग पारासर अथर्वा, वामदैव रिषराय॥ ९॥
पैल धौम्य भार्गव रु ब्रण, मधुछंदा द्विज रांम॥
वीति हौत्र कृतु आसुरी, वीरसैंन गुन धांम॥ १०॥
अैं द्विज भीषम द्रौन पुनि, कृपाचार्ज जुत पूत॥
धृतराष्ट्र अरु बिदुर लौं, छत्रीगननि अदभूत॥ ११॥
वैस सूद्र छत्री सद्विज, आयै दैषन जिग्य॥
और सकल राजांन की, आई प्रजा अथग्य॥ १२॥
तांह जिग्य आरंभ मैं, कंचन हल लैं हाथ॥
बिप्र भूमी षौदत भयै, मुष वेदन धुनि गाथ॥ १३॥
नृपति जुधिष्ठिर कौ द्विजनि, दिछा जिग्यहिं सुदीन॥
जिग्य राजसूय कौं भलैं, सुभ आरंभ जु कीन॥ १४॥
पात्र सकल सउवर्न कैं, हुतै जिग्य वां मांहिं॥
सामग्री सुषदाय सबै, नृपति धरी जिग्य ठांहिं॥ १५॥
लौकपाल इंद्रादिक अरु, बिधि सिव वर्न गंधर्ब॥
विद्याधर रु गंधर्ब अहि, जछि मुनि अरु सुर सर्व॥ १६॥
राछिस चारन किंन्नर सु, नृप नृपति या समाज॥
जिग्य जुधिष्टिर नृपति कौ, आयै दैषन काज॥ १७॥
कृस्न भक्त नृप धर्म सत, ताकौ जिग्य सुढार॥
पूरन सबही तरह करि, लष्यौ सबनि निरधार॥ १८॥
जिग्य करावनहार द्विज, नृपति जुधिष्ठिर पास॥
करवावत भय राजसू, जिग्य सुसहित हुलास॥ १९॥
नृप सिनांन कैं दिवस किय, द्विज पूजा सुभ रीति॥
चलि आई है सदा तैं, बेद बिदित ज्यौं नीति॥ २०॥
पहलै जाकी कीजियै, पूजा जिग्य मंझार॥
ताकौ सबही सभा जन, लागै करन बिचार॥ २१॥
पैं इक कहुँ पूजन पहल, निश्चै भयौ न भैव॥
तबै जुधिष्ठिर कौ अनुज, यौं बोल्यौ सहदैव॥ २२॥
पहलै पूजा करन कैं, जोग्य कृस्नं भगवांन॥
काल दैस संपूर्न सुर, अैई प्रगट निदांन॥ २३॥

इहै जिग्य अरु जगत सब, है इन्हहीं कौ रूप॥
सांष्य जोग्य आहुत अगनि, मंत्र जुग जोति संजूप॥ २४॥
निश्चै अैंही अैंक हैं, और दुतिय कौं नांहिं॥
जग उतपति पालन प्रलै, अैंई करत सदांहिं॥ २५॥
भलै भलै सुभ धर्म अरु, करम अनैंक प्रकार॥
इन्ह प्रभुहीं की कृपा सौं, करत मनुष निरधार॥ २६॥
सबहिंन तैं उत्तम महा, अैं श्रीकृस्न कुमार॥
इन्हकी पूजा कीजियै, पहलै भलैं प्रकार॥ २७॥
इन्हकी पूजा करन मैं, सबही पूजै जात॥
सब भूतन कैं आतमा, समदरसी बिषयात॥ २८॥
पूरन है सब भांति करि, सांत महा सुषदाय॥
इन्हकौं दीजै तनक सौं, अधिक पुन्य बढि जाय॥ २९॥
अैसै कहि चुप ह्वै रह्यौ, वां बैरां सहदेव॥
जांनत हौ श्रीकृस्न कौ, भलैं महातम भेव॥ ३०॥
सुभग बचन सहदैव कैं, सुनि बोलै सब कौय॥
है इहि उत्तम बात नृप, मानहुँ मुदित सु हौय॥ ३१॥
बचन सबन कौं सुनि इहै, सभा मनौरथ जांनि॥
प्रभु की पूजा करत भौ, हित जुत नृप मुद मांनि॥ ३२॥
चरन कंवल श्रीकृस्न कैं, जल सौं धौय नृपाल॥
चरनौदक निज सिर धर्यौ, सहित कुटंब षुष्याल॥ ३३॥
पीत बस्त्र अरु आभरन, अति उत्तम पहराय॥
पूजि समुष लषि सकत नहिं, द्रिगन प्रेम जल छाय॥ ३४॥
पूजा समैं निहारि सब, किय कर जोरि प्रनांम॥
पुहपन की बीरषा भई, बढि सौभा अभिरांम॥ ३५॥
इहि सुनिकैं सिसुपाल उर, बढ्यौ क्रौध अधिकाय॥
उठि सिंघासन तैं विकल, बोल्यौ भुजा उठाय॥ ३६॥
काल सबन तैं जोरवर, इहै सत्य है बात॥
कबहुँ बालकनि बचन तैं, ब्रधनि बुद्धि फिरि जात॥ ३७॥
उत्तम पात्रहिं सभा जन, तुम्ह सब जांनन हार॥
बचन बाल सहदैव कौ, क्यूं मान्यौं इहि बार॥ ३८॥
सभा जनन इहि का कियौ, कारिज बिनां बिचारि॥
पहलै पूजा कृस्नं की, करवाई दै भारि॥ ३९॥
तप बिद्या अरु ब्रत जु धरै, अघ मिटि ग्यांन प्रभाय॥
बड रिष ब्रह्म ग्यांनी जिह्नैं, पूजत सुर जुत चाय॥ ४०॥

तजि अैसै रिषि जनन कौं, बड़े जिग्य कैं मांहिं॥
कीनी पूजा कृस्नं की, पात्र पिछांन्यौ नांहिं॥ ४१ ॥
इहै कृस्न तौ ग्वाल है, नीच सु निज कुल मांहिं॥
कइसै पूजा जोग्य है, समझहुँ निज चित ठांहिं॥ ४२ ॥
जिग्य भाग कैं जोग्य ज्यौं, काक कहावत नांहिं॥
तइसैं पूजा जोग्य नहिं, कृस्न जिग्य कै मांहि॥ ४३ ॥
वर्नास्त्रम अरु धरम तैं, अैं न्यारै निरधार॥
मन मैं आवत सौ करत, है गुनहीन कुचार॥ ४४ ॥
सौ ह्वै कइसी भांति सौं, पूजा जोग्य निदांनि॥
ताकी पूजा जिग्य मैं, करी बात का जांनि॥ ४५ ॥
अरु इन्हकैं कुल कौं लग्यौ, नृप जजाति कौ श्राप॥
वृथा करत मद पांन अैं, पूजा जोग्य न आप॥ ४६ ॥
रिष ब्रह्मन जिन मैं बसत, अैसै देसनि त्यागि॥
लूटत है अै प्रजा कौ, बसि समुद्र तटि जागि॥ ४७ ॥
अैसै बचन कठौर बहु, प्रभुहिं कहै सिसुपाल॥
नष्ट भई बुद्धि दुष्ट की, नच्यौ सीस पैं काल॥ ४८ ॥
बचन दुष्ट कैं सुनि कछु न, बोलै पंकज नैंन॥
ज्यौं बौलत मृगराज नहिं, सुनि श्रंगाल कैं बैंन॥ ४९ ॥
प्रभु निंदा सुनि सभा जन, दै सिसुपालहिं गारि॥
कांन मूंदि कैं सभा तैं, निकसि गयै वां वारि॥ ५० ॥
प्रभू कैं भक्तन की जांह, अरु प्रभु निंदा हौय॥
तहँ तैं उठि नहिं जाय तौ, धरम दैत निज षौय॥ ५१ ॥
पांडव मछ कैकय संजय, इन्ह दैसन कैं राय॥
सिसुपालहिं मारन उठे, कर षड्ग लैं रिस छाय॥ ५२ ॥
सिसुपालहुँ चित क्रौध करि, कर लै फिरि तरवारि॥
प्रभू पछी राजांन कौ, षीजन लग्यौ लबारि॥ ५३ ॥
प्रभु बरजै अपनैंन कौं, दैषि वोर सिसुपाल॥
चक्र सुदरसन सौं लियौ, काटि सीस तिहिं काल॥ ५४ ॥
मरनै मैं सिसुपाल कैं, बडौ हौत भयौ सौर॥
संगी सबै सिसुपाल कैं, भाजि छिपै किहुँ ठौर॥ ५५ ॥
जीव जोत सिसुपालकी, प्रभु मैं गई समाय॥
सौ लषि चित सबहींन कैं, हुव अचिरज अधिकाय॥ ५६ ॥
तीन जनम इन्ह बैर करि, धर्यौ प्रभू कौं ध्यांन॥
तातैं प्रभुही मधि मिल्यौ, दैषत सकल जहांन॥ ५७ ॥

बऊत दछिना धरम सुत, दई जिग्य कैं थांन॥
सबनि पूजि जिग्य अंत मैं, किये जिग्यांत सिनांन॥ ५८॥
अैसी बिधि श्रीकृस्न जू, नृप पैं जिग्य कराय॥
रहें जुधिष्टिर पासही, कितक मास हित भाय॥ ५९॥
बिदा मांगि फिरि नृपति तें, प्रभू अस्त्रीनि समेति॥
भये पधारत द्वारका, जिन्हें बेद कह नेति॥ ६०॥
करि जिग्यांत सिनांन नृप, बैठि सभा कैं मध्य॥
बासव सम सौभित भयौ, जुत भायन सप्रसध्य॥ ६१॥
सुर नर निज निज गेह कौं, बिदा जुधिष्ठिर कीन॥
तें प्रभु कौं नृपकौं सुजस, कहत भये सुष भीन॥ ६२॥
प्रसंन भये नर नारि सब, नृप कौ जिग्य निहारि॥
इक दुरजोधन जिग्य लषि, दुषित भयौ अनपारि॥ ६३॥
इहि चरित जु श्रीकृस्न कौं, अरु सिसुपाल संघार॥
कैदी नृपनि छुडायवौ, जिग्य कराय सुढार॥ ६४॥
कहै सुनै जिहिं अघ मिटै, लहै महा सुषसार॥
सौ तुम्ह सौं बरनन कर्यौ, हम्ह इहि भलै प्रकार॥ ६५॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते चतुः सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७४॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ पंच-सप्ततितमोऽध्यायः ॥

(राजसूय यज्ञ की पूर्ति और दुर्योधन का अपमान)

॥ राजोवाच ॥

दोहा - नृप पूछत लषि जिग्य सब, प्रसंन भयौ नर दैव॥
इक दुरजोधन दुषित क्यौं, हुव सौ कहियै भैव॥ १॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि हे नृपति तौ, दादै कैं जिग्य मध्य॥
जुदी जुदी लीनी टहल, भ्रातनि बांटि प्रसध्य॥ २॥
भीम रसोई कै भयै, अधिपति अति मुदमांनि॥
टहल रसोई करन की, लिय द्रौपदि बुधिवांनि॥ ३॥
दुरजोधन भंडार कौ, दारौगापन लीन॥
सबकौ पूजन की टहल, लिय सहदैव प्रवीन॥ ४॥

निकुल द्रव्य पैदा करै, करन सबनि दै दांन॥
सैवा करै बडैन की, अरजुन परम सुजांन॥ ५॥
द्विज पग धौवन की टहल, लिय श्रीकृस्न कुमार॥
इहै टहल लघु जांनि किहुं, और न लिय निरधार॥ ६॥
हारदिक्य जुजुधांन विदुर, कर्न जु आह जुत सूत॥
संतरदन भूरीश्रवा, वाह्लीक कैं पूत॥ ७॥
इन्हहू कौं दिय जिग्य की, टहल सु बांटि अनैंक॥
प्रसंन करन नृप टहल सब, करहीं सहित विवैक॥ ८॥
सभा सदनि सुहृदनि अवर, जिग्य करवन हारैनि॥
दई बऊत नृप दछिनां, करि आदर सारैनि॥ ९॥
कृस्न कुँवर भगवांन मैं, लीन भयौ सिसुपाल॥
ता पाछै जिग्यांत किय, नृप सिनांन सुभ काल॥ १०॥
संष नगारै ढौल भैरि, सहनाई रु मृदंग॥
बैन बींन लौं आदि बहु, बजि बाजित्रहिं सधंग॥ ११॥
गावन वारे गावहीं, नृत करहीं नृतकार॥
मागध बंदी जन करत, अस्तुति भलैं अनुसार॥ १२॥
ध्वुजा पताका बिचित्र रथ, हाथिनि पैं फहरात॥
जौधा करैं सिंगार है, स्वार कढै सुभगात॥ १३॥
जदु संजय कांबौज क्रुर, कैकय कौसल देस॥
इन्हकैं नृप कंपातभुव, चलै मुदित सुविसेस॥ १४॥
आगैं है सबहींन कैं, चलै जुधिष्ठिर राय॥
करत जु बेद धुनि बिप्र सुर, बरषत पुहप सुभाय॥ १५॥
पहरैं भूषन बस्त्र सब, लै सुगंध मय नीर॥
आपस मैं छिरकति उमगि, यौं बिहरत भट भीर॥ १६॥
जल गुलाब गौरस हरद, कैसरि मलय फुलेलि॥
इन्हसौं पुरषनि छिरकहीं, नृतकारनी नवेलि॥ १७॥
बड्डे बड्डे राजांन की, तिय चौडोलनि स्वार॥
ज्यौं अपसरा बिमांन पैं, सौभित भलैं प्रकार॥ १८॥
तिन्हकौं नीर गुलाब सौं, सींचत सषी सुजांन॥
मोदमांनि बै हँसत हैं, पावत सुष अप्रमांन॥ १९॥
सौभित राजा जुधिष्ठिर, भयै स्वार किंकान॥
गंगा तटि करि जिग्य बिधि, किय जिग्यांत सिनांन॥ २०॥
सुर नर पुर दुंदुभि बजै, हुव आनंद अपार॥
उमगि अमर नर रिष पितर, बरषै पुहप सुढार॥ २१॥

नरनारी उहिं ठौर सब, करत भयै जु सिनांन॥
जिहिं ठां कियै सिनांन अघ, पुंज मिटत सुनिदांन॥ २२॥
नृप सिनांन करिकें सुभग, पटभूषन तन धारि॥
बिबिधि भेंट करि द्विजन की, किय पूजा सुभ कारि॥ २३॥
जाति बंधु मित्र रु सुहृद, आदि सकल जन और॥
पूजन किय नृप जुधिष्ठिर, दै धन आछै तौर॥ २४॥
नारायन कौं भगत नृप, सौ आछै अनुसार॥
करत भयौ सबहींन की, पूजा बारंबार॥ २५॥
महा सुभग भूषन बसन, पहरै सब नरनारि॥
अति सौभा पावत भयै, मुदित हौंय वां बारि॥ २६॥
बिप्र बैस्य छत्री नृपति रु, सूद्र पितर रिषराय॥
जुत इंद्रादिक दैवतां, निज निज पूजा पाय॥ २७॥
अपनैं अपनैं घर गयै, सबही हरषित हौय॥
अस्तुति करत नृप जिग्य की, हारत नांहिंन कौय॥ २८॥
सुहृद सबंधी बंधु निज, नृपति बिदा सब कीन॥
सहि न परै प्रभु बिरह उन, तातैं बिदा न दीन॥ २९॥
प्रभुहूं करिबैं प्रसंन नृप, बसै सुवाही ठांम॥
निज पुत्रननि जुत जादवनि, पठयै अपनैं धांम॥ ३०॥
कीनौं हुतौ समुद्र सौं, नृप मनोर्थ वां बार॥
सौ पूरन प्रभु क्रिपा तैं, हौत भयै निरधार॥ ३१॥
राजा कैं रनवास की, सौभा इक दिन दैषि॥
दुरजोधन भो दुषित अति, चित्त ईरषा जु पैषि॥ ३२॥
लिछमी बड्डै नृपननि की, जगमगाति उहिं ठांम॥
अरु लछमी सुर राज की, सौभित जहँ अभिरांम॥ ३३॥
रानी जिहिं ठां द्रौपदी, बैठी जुत गुन रूप॥
जास निकट श्रीकृस्न की, सौभित तिया अनूप॥ ३४॥
अैंक दिनां मय दइत की, रची सभा कैं मध्य॥
श्रीकृस्न रु भाइन सहित, बैठ्यौ नृपति प्रसध्य॥ ३५॥
सिंघासन पैं जुधिष्ठिर, बैठ्यौ इंद्र समांन॥
सुछत्र चमर सौभित सुभग, जन बिच सभा सुजांन॥ ३६॥
बंदीजन करहीं अस्तुति, कौतिग हौति अपार॥
चहल पहल आनंद उमंग, लसत बीच दरबार॥ ३७॥
दुरजौधन धारै मुकुट, लियैं हाथ तरवार॥
आवत भौ बिच सभा कैं, भ्रातन जुत वां बार॥ ३८॥

दुरजोधन थल मध्य जल, लषि लिय बस्त्र उठाय॥
अरु जल मैं थल जांनि दिय, डारि बस्त्र सु भिजाय॥ ३९॥
रची सभा मय दैत की, तामैं इही प्रभाय॥
दुरजौधन जान्यौ नांहिं, माया कौं जु उपाय॥ ४०॥
बहे दैषिकैं भीम अरु, नृपति हँसै सब और॥
मनै कियै राजा रु प्रभु, सिषयै हँसै सजौर॥ ४१॥
दुरजोधन लज्जित तबैं, ह्वै मुष नीचौ कीन॥
क्रौध जुक्त पुर हस्तिनां, गयौ नहिं उत्तर दीन॥ ४२॥
हा हा कार कियौ सबनि, कही बुरी हुव बात॥
भयौ धरमसुत प्रसंन नहिं, समझि उपद्रव घात॥ ४३॥
चह्यौ टरन भुवभार प्रभु, ताकौ जतन सुकीन॥
हँसि कैं फिरि चुप ह्वै रहै, कृस्न कुमार प्रवीन॥ ४४॥
दुरजौधन क्यौं दुषित हुव, तैं पूछ्यौं हौ राय॥
ताकौ कारन हम्ह इहै, तौकौ कह्यौ सुनाय॥ ४५॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते पंच-सप्ततितमोध्यायः ॥ ७५॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ षट् सप्ततितमोऽध्यायः ॥

(शाल्व के साथ यादवों का युद्ध)

॥ श्री सुक उवाच॥

दोहा - सुक कहत कि प्रभु कैं चरित, सुनौं औरहूं राय॥
जइसैं मार्यौ साल्व कौं, फत्तै कृस्न जू पाय॥ १॥
साल्व सषा सिसुपाल कौं, बीचि रुकमनी ब्याहि॥
आयौ हौ जहँ जादवनि, जीत्यौ दै उर दाहि॥ २॥
जरासंधि लौं आदि नृप, जीति औरहूं लीन॥
निकट सकल राजांन कैं, साल्व प्रतंग्या कीन॥ ३॥
या भू पर म्हैं रहन नहिं, दैहूं जादव कौय॥
देषौगे तुम्ह सकल नृप, करिहुं पराक्रम सोय॥ ४॥
प्रतंग्या करिकैं साल्व नैं, सिव आराधन कीन॥
अैंक मुष्टिका धूरि निति, षाय रहै तन छीन॥ ५॥

थोरी ही सेवा कियै, बैगि प्रसंन सिव होत॥
पैं याकौ इक बरष मैं, दिय दरसन उदौत॥६॥
दरसन दैकें सिव कह्यौ, लैहुँ साल्व बर आज॥
जो तू तेरै मुष कहै, सौ सब पुरवूं काज॥७॥
सुर नर असुर गंधर्ब जछि, अहि राछिस किहुँ भाय॥
जाकौं तोरि सकै न मन, तैं सतगुनौं चलाय॥८॥
ऐसौं बनै बिमांन अरु, हूं चाहू जहँ जांय॥
इहि ईछा करिकैं पुजे, दैव तुम्हारै पांय॥९॥
जल थल नभ गति संचरै, सुंदर रूप बिमांन॥
करौ जुध तापर चढयौ, ऐसौ देहुँ सुजांन॥१०॥
रावन कौं ससुरा हुतौ, मंदोदरि कौं बाप॥
ताहिं हुकम सिंभू कियौ, रचि बिमांन द्यौ आप॥११॥
बहीं बेर मय लौह कौं, पुर सम रच्यौ बिमांन॥
भयौ सौभरथ नांम जिहँ, हरष्या दुष्ट निदांन॥१२॥

(छंद भुजंगी)

बड्डौ ही बिमांन लग्यौ जुद्ध नेहं॥
भयौ अंध मद्दं भुल्यौ आप देहं॥
बरंपाय कैं साल्व आयौ जु गेहं॥
सिसूपाल कैं बैर तैं दुष्ष देहं॥१३॥
उठी साल्व कै चित्त मैं आगि क्रुद्धं॥
लई द्वारिका घैरि कैं हीन बुद्धं॥
इहां कृस्न कौं इंद्र प्रस्थै बतायौ॥
बली बाहु ठौरै लियै सैंन आयौ॥१४॥
लियैं सैंन भारी चहूं अंग साजै॥
कितै लष्ष नीसांन ता मांहि बाजै॥
सजै कौच कैंतै बली बाहु दैतं॥
धरै सीस नेतं सदा बाहु जैतं॥१५॥
धकैं धर्नि हींलै पहारै धकावै॥
धरा मांहिं आकास पाताल धावै॥
जलं मध्य पैठै न भीजै सरीरं॥
गिरै बह्नि बीचं जरै नांहिं वीरं॥१६॥
सबै नीच बिद्या पढी हैं करालं॥
कितै जाल जंजाल माया बिसालं॥
सनाहै सुठांहै चढै व्यौम मांहिं॥
मनौ ऊठि कारी घटा ठीक ठांहीं॥१७॥

पुरी द्वारिका आनि कैं दुष्ट घैंरी॥
बिहार स्थलं तोरि बजाय भैंरी॥
करी बांण बर्षा चढ्यौ व्यौम ठौरं॥
सिला बीज औ बृछ ब्रषैं सजौरं॥१८॥
दई साल्व पीडा पुरी कौं अपारं॥
अचैनं भयौ द्वारिका मैं कुढारं॥
प्रजा दैषि कैं पीडतं मैंन क्कारं॥
कह्यौ धीर धारौ डरं दुष्ष टारं॥१९॥
चढ्यौ आय कैं कृस्न कौं पूत रत्थं॥
महा रूप रासी बिद्या मैं समत्थं॥
चलै स्वार ह्वै कै सबै जदु बंसी॥
मनौ सिंघ उठ्यौ निसा कैं अरंसी॥२०॥
धरी हाथ मुछं सजीलै सनाहं॥
सबै सस्त्र बंधं महाबीर बाहं॥
सजीलै लजीलै सबै चंद्र बंसी॥
लियै धर्म कर्मे मुषं जोति हंसी॥२१॥
मुषं बैद बोलै करं सस्त्र तोलै॥
फुरै बाहु जंघं हसै वौक लोलै॥
करै क्रुध मैं नांक भौंहैं न लाजैं॥
चढ्यौ कोप भारी जदू सैंन साजैं॥२२॥
करैं अस्त्र सस्त्रहिं तैं बांधि लीनैं॥
तबै प्रद्युम्नहीं कियै धर्नु टंकार षीनैं॥
कियौ जुद्ध भारी जदू साल्व दौऊ॥
सकै कौनुँ अैसौ कहै जुद्ध कौऊ॥२३॥

दोहा - जइसै सुर अरु असुर दुहु, किय आगै घमसांन॥
तइसै जदुकुल साल्व मिलि, कीनौं जुद्ध प्रमांन॥२४॥
साल्व करी माया प्रगट, तिहँ किय प्रदुमन नास॥
ज्यौं मैंटत अंधियार कौं, सूरिज करि सप्रकास॥२५॥
सैंनापति हौ साल्व कौं, तापर प्रदुमन रीस॥
धनुष तांनि कैं कांन लौं, मारै बांन पचीस॥२६॥
सौ सर मारैं साल्व कैं, अस्वन मारै जु तीन॥
इक इक सर सब सैंन पैं, सारथि कैं दस तीन॥२७॥
प्रदुमन कौं इहि जुद्ध लषि, सब यौं ही अदभूत॥
अपुन परायै सकल जन, लागै करन अस्तूत॥२८॥

दैत दिषाई रूप बहु, कबहूं बहै बिमांन॥
दीसत कबहूं नांहिनैं, दीसत कबहुँ निदांन॥ २९॥
कबहुं दीसत प्रिथी पर, कबहूं बिच आकास॥
कबहूं परबत पैं कबहुं, जल मैं परहीं भास॥ ३०॥
अैसौ माया मय बहै, मय कौ रच्यौ बिमांन॥
तापर साल्व चढ्यौ करत, भुजा ठौक घमसांन॥ ३१॥
जित जित साल्ब समेत बहि, व्यौम दिषाई दैत॥
तित तित हीं बरषत भयै, सर जदुबंसि बिजैत॥ ३२॥
महा भयंकर सर्प सै, तैज सु अगनि समांन॥
अैसै बांनन सौं लग्यौ, टूटन साल्व बिमांन॥ ३३॥
सैनांपति नृप साल्व कौं, तिहँ बांनन अनुसार॥
जादवहूं पीडत भयै, पैं न तज्यौ रन सार॥ ३४॥
प्रदुमन महा जोधा सूं, हौत भयौ संघार॥
साल्व कौं चिंता भई, करन लग्यौ संभार॥ ३५॥

(छंद भुजंगी)

दुहूँ वोर जूटै कुटै हत्थ सारं॥
बकै मुष्ष तै मार मारं अपारं॥
करै दाव घावं फरी वोडि हत्थं॥
लरै बीर बिद्या पढै जै समत्थं॥ ३६॥
तहां रौकि छोडै कुटै फेरि हक्कै॥
गदा की बिद्या मैं नहीं हौत चुक्कै॥
कुदै अंग कौं अंग लै जंग मांही॥
पलं हाल तंगं छुटै क्रौध नांहीं॥ ३७॥
दवंट्टै झपंट्टै दुहू हत्थ मारै॥
रिझी सैंन दोऊ बिद्या यौं बिथारै॥
करै वार मारं बकै मार मारं॥
तकै प्राण मारं छकै पार वारं॥ ३८॥

दोहा - सेनापति नृप साल्व कौं, तिहिं द्युमान हौ नांम॥
प्रदुमन कैं मारी गदा, तासौं फटि उर ठांम॥ ३९॥
तब दारुक सुत सारथी, कुँवरहिं ल्यायौ गेह॥
सांवधान द्वै घरी मैं, हुव प्रदुमन की देह॥ ४०॥
कुँवर सारथी सौं तबै, कह्यौ बुरौ तैं कीन॥
मुहि छुडाय रन ठौर घरि, लै आयौ मति हीन॥ ४१॥
कहि हौं कहा पराक्रमहिं, म्हैं पित मातहिं पास॥
मोकौं हँसिहैं सकल जन, सत्रु मित्र पुनि सब दास॥ ४२॥

पुरी द्वारिका आनि कैं दुष्ट घैंरी॥
बिहार स्थलं तोरि बजाय भैंरी॥
करी बांण बर्षा चढ्यौ व्यौम ठौरं॥
सिला बीज औ बृछ ब्रषैं सजौरं॥१८॥
दई साल्व पीडा पुरी कौं अपारं॥
अचैनं भयौ द्वारिका मैं कुढारं॥
प्रजा दैषि कैं पीडतं मैंन क्कारं॥
कह्यौ धीर धारौ डरं दुष्ष टारं॥१९॥
चढ्यौ आय कैं कृस्न कौं पूत रत्थं॥
महा रूप रासी बिद्या मैं समत्थं॥
चलै स्वार ह्वै कै सबै जदु बंसी॥
मनौ सिंघ उठ्यौ निसा कैं अरंसी॥२०॥
धरी हाथ मुछं सजीलै सनाहं॥
सबै सस्त्र बंधं महाबीर बाहं॥
सजीलै लजीलै सबै चंद्र बंसी॥
लियै धर्म कर्मे मुषं जोति हंसी॥२१॥
मुषं बैद बोलै करं सस्त्र तोलै॥
फुरै बाहु जंघं हसै वौक लोलै॥
करै क्रुध मैं नांक भौंहैं न लाजैं॥
चढ्यौ कोप भारी जदू सैंन साजैं॥२२॥
करैं अस्त्र सस्त्रहिं तैं बांधि लीनैं॥
तबै प्रद्युम्नहीं कियै धर्नु टंकार षीनैं॥
कियौ जुद्ध भारी जदू साल्व दौऊ॥
सकै कौनुँ औसौ कहै जुद्ध कौऊ॥२३॥

दोहा - जइसै सुर अरु असुर दुहु, किय आगै घमसांन॥
तइसै जदुकुल साल्व मिलि, कीनौं जुद्ध प्रमांन॥२४॥
साल्व करी माया प्रगट, तिहँ किय प्रदुमन नास॥
ज्यौं मैंटत अंधियार कौं, सूरिज करि सप्रकास॥२५॥
सैंनापति हौ साल्व कौं, तापर प्रदुमन रीस॥
धनुष तांनि कैं कांन लौं, मारै बांन पचीस॥२६॥
सौ सर मारैं साल्व कैं, अस्वन मारै जु तीन॥
इक इक सर सब सैंन पैं, सारथि कैं दस तीन॥२७॥
प्रदुमन कौं इहि जुद्ध लषि, सब यौं ही अदभूत॥
अपुन परायै सकल जन, लागै करन अस्तूत॥२८॥

दैत दिषाई रूप बहु, कबहूं बहै बिमांन॥
दीसत कबहूं नांहिनैं, दीसत कबहुँ निदांन॥ २९॥
कबहुं दीसत प्रिथी पर, कबहूं बिच आकास॥
कबहूं परबत पैं कबहुं, जल मैं परहीं भास॥ ३०॥
अैसौ माया मय बहै, मय कौ रच्यौ बिमांन॥
तापर साल्व चढ्यौ करत, भुजा ठौक घमसांन॥ ३१॥
जित जित साल्ब समेत बहि, व्यौम दिषाई दैत॥
तित तित हीं बरषत भयै, सर जदुबंसि बिजैत॥ ३२॥
महा भयंकर सर्प सै, तैज सु अगनि समांन॥
अैसै बांनन सौं लग्यौ, टूटन साल्व बिमांन॥ ३३॥
सैनांपति नृप साल्व कौं, तिहँ बांनन अनुसार॥
जादवहूं पीडत भयै, पैं न तज्यौ रन सार॥ ३४॥
प्रदुमन महा जोधा सूं, हौत भयौ संघार॥
साल्व कौं चिंता भई, करन लग्यौ संभार॥ ३५॥

(छंद भुजंगी)

दुहूँ वोर जूटै कुटै हत्थ सारं॥
बकै मुष्ष तै मार मारं अपारं॥
करै दाव घावं फरी वोडि हत्थं॥
लरै बीर बिद्या पढै जै समत्थं॥ ३६॥
तहां रौकि छोडै कुटै फेरि हक्कै॥
गदा की बिद्या मैं नहीं हौत चुक्कै॥
कुदै अंग कौं अंग लै जंग मांही॥
पलं हाल तंगं छुटै क्रौध नांहीं॥ ३७॥
दवंट्टै झपंट्टै दुहू हत्थ मारै॥
रिझी सैंन दोऊ बिद्या यौं बिथारै॥
करै वार मारं बकै मार मारं॥
तकै प्राण मारं छकै पार वारं॥ ३८॥

दोहा - सेनापति नृप साल्व कौं, तिहिं द्युमान हौ नांम॥
प्रदुमन कैं मारी गदा, तासौं फटि उर ठांम॥ ३९॥
तब दारुक सुत सारथी, कुँवरहिं ल्यायौ गेह॥
सांवधान द्वै घरी मैं, हुव प्रदुमन की देह॥ ४०॥
कुँवर सारथी सौं तबै, कह्यौ बुरौ तैं कीन॥
मुहि छुडाय रन ठौर घरि, लै आयौ मति हीन॥ ४१॥
कहि हौं कहा पराक्रमहिं, म्हैं पित मातहिं पास॥
मोकौं हँसिहैं सकल जन, सत्रु मित्र पुनि सब दास॥ ४२॥

तब यौं बोल्यौ सारथी, म्हैं किय धरम बिचार॥
ल्यावत है घर सारथी, लषि घाइल सिरदार॥ ४३॥
इहीं बिचारि कैं मैं तुहि, लै आवत भौ गेह॥
गदा लागि कैं हिर्दै फटि, हुव मूर्छित तुम्ह देह॥ ४४॥
भौ अचेत तातैं उहां, उपजी इहि बुधि मोहि॥
करौ बिचार कुमार तुम्ह, याकौ दौष न तोहि॥ ४५॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते षट् सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७६॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ सप्त सप्ततितमोऽध्यायः ॥

(शाल्व का उद्धार)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि प्रदुमन कुँवर, अैसै सुनिकैं बैंन॥
कवच पहरि लै आचमन, कर धरि धनुष सुषैंन॥ १॥
कह्यौ सारथी सौं तमकि, पुरष अपुन सम्हालि॥
सैंनापति नृप साल्व कौं, तापैं मुहि लै चालि॥ २॥
कुँवर बचन सुनि सारथी, ह्वै आग्यां आधीन॥
जुध ठौर मैं जु बेगहीं, सिंदन ठाढौ कीन॥ ३॥
बह सैंनापति जादवनि, दैत रह्यौ अति दुष्ष॥
ताकौं प्रदुमन आठ सर, मारै हौय समुष॥ ४॥
चार बांन सौं अस्व हतै, इकसौ सारथि मारि॥
पुनि दौय सरन सौं धूजा, धनु कटि सिर अनुसार॥ ५॥
फिरि काट्यौ इक बांन सौं, सैंनापति कौ सीस॥
गादि सांबु सात्यक हनी, सत्रु सैंन धरी रीस॥ ६॥
बैठनहार बिमांन कैं, लरि कटि कटि वां बार॥
गिरि गिरि परै समुद्र मैं, लगि जादव सर मार॥ ७॥

(छंद मोतीदाम)

मच्यौ जुद्ध पूर दुहू दिसि सूर॥
करै ललकार सुबोल गरूर॥
हकारत बीर महा दुहु वोर॥
गदाघम घम्म घमंकत जोर॥ ८॥

करै ललकार महाभट्ट वंक॥
सुसज्जन प्रीति मिटी सब संक॥
परै तब टूटि जु वारन दंत॥
मनौ घन मांहि लसै बगपंत॥९॥
लगी गज सुंडन पै जु सिंदूर॥
मनौ उठि जागि दवागि सपूर॥
अरी गन कौं जु मिलावहिं धूर॥
परै भट पैत वरै तिहि हूर॥१०॥
चढै गज दंत छती ललकार॥
बकै मुष मारहिं मार अपार॥
हटाय दयौ तब नृपति साल्व॥
कियौ जुध जोर रुक्कमनि लाल॥११॥
लरै रन दैत महारन आज॥
परै धर सूर बड़ै गजराज॥
गहै दुहु हत्थ रु मारत षाग॥
सु उड्डुत ढाल मनौ नभ लाग॥१२॥
भई तब मार कसै धनु बांन॥
महा भुज ऐंचि तहां लगि कांन॥
बहै षग सूंल त्रिसूल अपार॥
गिरै धर झूझि उठै षग धार॥१३॥
तहां मचि तौमर सैलहिं मार॥
गहै हथ सत्थ अवत्थ कुढार॥
तुटै रथ वीर गिरै असवार॥
फुटै सिर हत्थ लियै जु झुंझार॥१४॥
करै दुहु वाह महा बलबीर॥
तहां धुकिधाय पछारत धीर॥
धरै रथ भुज हनै भुव मांहि॥
पछारत कप्पर जौं सिल ठांहि॥१५॥
गहै कर सिंधुर दंत उषारि॥
किधौं घन तैं बगपंत बिडारि॥
लयै भुज वारन वीर उठाय॥
मनौं हनुमंत द्रुनां गिरि पाय॥१६॥
गहै गिरवांन चलै जम दाढ॥
फटै कर षंजर पंजर वाढ॥
तहां भुज ताल कराल सुबज्र॥

करै जुध सूर मनौ मल्ल गज्र॥ १७॥
गहै कर कंध सुसंध मरौर॥
मनौ तरबूज उछारत तौर॥
जयै जय कान्ह जयै जदु बंस॥
जयै जय दुष्ट सुस्वामि प्रसंस॥ १८॥
भयौ जुत दैव अदैव न जुद्ध॥
इहै जदुदैव अदैत सु क्रुद्ध॥
बहै रन मुक्किय पक्किय ठौर॥
लष्यौ नहिं जात जु सांझहिं भौर॥ १९॥
भ्रमै तब ग्रिध चिह्ली अनपार॥
भयै मन मौद कितै पल चार॥
नची सकती दस च्यार पचास॥
हँसै चित नारद चित्त हुलास॥ २०॥
चली तब अप्छर साजि बिमांन॥
झड़ाझड़ सूर जितै किर पांन॥
बहै गुर जै वुरजै भट टूटि॥
कटै तन प्रांन समत्थहिं छूटि॥ २१॥
तुटै भट सीस उठै ललकारि॥
तुट्यौ धर मैं सिर बौलत मार॥
लयै सिर हत्थ उठै धर वीर॥
भयौ रन सिंधु बहै रत नीर॥ २२॥
जयै जय मैंन जयै सुर राज॥
रिझै लषि कौतिग दैव समाज॥
गहै लटपट्ट झपट्ट चपैटि॥
मरै षल छूटि परै धर लैटि॥ २३॥
लगै तन लौह भभक्कत घाव॥
मनौ जल मैं घट बूडत भाव॥
चलै रन ठेलत पैलत सैल॥
परै गज बाज सुषाय उथैल॥ २४॥
भयै दुहु वौर उतारय अब्ब॥
परी अति मार जुटै भट सब्ब॥
धमाधम गद्द झड़ाझड़ षग्ग॥
कटाकट तौमरि घौपरि लग्ग॥ २५॥
बड़ाबड़ बज्जिय मुंड परिघ्घ॥
षुलै षल सीस गई गिर पघ्घ॥

झड़ाझड़ ग्रीधन पंष अकास ॥
दड़ादड़ मूंड गिरै कर जास ॥ २६ ॥
बजैं झड़ मच्चत औचक मार ॥
जुटै रनभट्ट करैं किलकार ॥
हतै रनबीर उछारत हत्थ ॥
करै नट षैल सुभट्ट समत्थ ॥ २७ ॥
कितै रनबीच परै हय दैषि ॥
गहै तिहि पाय फिराय विसैषि ॥
हनै अरि कैं उर मैं भट षीजि ॥
लग्यौ मनु बज्र किधौं परि बीजि ॥ २८ ॥
परै षल दैषि गहै सब षैति ॥
फिरायहिं पाय चलाय सुदैति ॥
करैं ललकार अपार हकार ॥
करैं सिंघ नाद दुधार प्रहार ॥ २९ ॥
गहै गज रत्थ पछारत बत्थ ॥
मनौ रघु सैंन धरै नग हत्थ ॥
दुहूं दिसि सैंन बहै षग धार ॥
बकै भट मारहिं मार अपार ॥ ३० ॥
हब्बकत हत्थ समत्थ सुसूर ॥
गहै करकंध मदंध गरूर ॥
चलै भट लैतहिं मत्थ नभच्च ॥
गहै गिरवांन कितैं नर कच्च ॥ ३१ ॥
तहां सिर टौपि गिरै छुटि बाल ॥
जुटै बनमानहुँ कूदत भाल ॥
लटं चट भट्ट करं चल दंत ॥
लरै मनु रींछ जुझै बलवंत ॥ ३२ ॥
करैं सिंघनाद परै गल बत्थ ॥
जुटै मनु बाघ महाबल सत्थ ॥
जुटै जदुबंस प्रसंसित दैव ॥
रिझै रिषराज सुजांनत भैव ॥ ३३ ॥
लियै कर बीन रिषव्वर राव ॥
महाजुद्ध दैषि बद्यौ चितचाव ॥
जयै जय भाषि सहर्ष सुभाव ॥
जयै जदु नाथि प्रसंस प्रभाव ॥ ३४ ॥

दोहा - यौं जादव अरु साल्व की, सैंना आपस मांहिं॥
जुद्ध बीस अरु सात दिन, कियौ उमगि उर ठांहिं॥ ३५॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि श्रीकृस्न जू, इंद्रप्रस्थ हे आप॥
तहँ नृप जिग्य पूरन भयौ, बाढ्यौ सुजस अमाप॥ ३६॥
तहिं सिसुपालहिं मारिकैं, नृप की आग्यां मांगि॥
आवत हे पुर द्वारिका, हुव असुगन मग जागि॥ ३७॥
तब बिचार श्रीकृस्न किय, मित्रननि भ्रात समैति॥
नृपति जुधिष्ठिर पैं इहां, हम्ह आयै धरि हैति॥ ३८॥
नृप संगी सिसुपाल कैं, धारि भुजाबल सैंन॥
नगर हम्हारै कौं महा, ह्वै हैं देत अचैंन॥ ३९॥
इहि बिचार कर तैज रथ, बेगि चलै भगवांन॥
प्रास हौत भय आयकैं, जांह हुतौ घमसांन॥ ४०॥
प्रदुमन जुत जादव सबै, बिकल दैषि उहिं ठांम॥
पठयै पुर रिछया करन, सैंना जुत बलिरांम॥ ४१॥
साल्वहिं लषि कैं सारथी, सौं बोलै करतार॥
मो रथ बेगै लैं पउंचि, साल्व पास या बार॥ ४२॥
मायावंत बड्डौ इहै, है नृप साल्व कुपात॥
तासौं तू मति डरपि यौ, लषि माया उतपात॥ ४३॥
इहि सुनि दारुक सारथी, अधिक तैज रथ कीन॥
गरुड ध्वुजा फहरात है, अदभुत अस्व नवीन॥ ४४॥
बिच सैंना देषैं सबनि, आयै कृस्न कुमार॥
लषत भयौ नृप साल्वहुँ, प्रभु कौं ताही बार॥ ४५॥

(छंद पद्धरी)

प्रभु आय तहां पुहमी विजैत॥
इहि कोपि कृस्नं संगराम हैत॥
तहँ कर्यौ दुष्ट लषि सक्ति दांव॥
स्वरथी हननी कियनौ उपांव॥ ४६॥
सुसक्ति लषि हरी धनू सम्हारि॥
रन बीजय बांन मुष्यौ मुरारि॥
सुलग्यौ मनु बांन बज्र समांन॥
सत टूक करी बरछी निदांन॥ ४७॥
पुनि बांन स्यांम बहै अपारि॥
उहिं रथ्थहिं हनै सारंग धारि॥
सुहिं व्यौम तबै भ्रमहीं निपाय॥

षल बिक्कल भौ चित रीस छाय॥४८॥

दोहा - सर छौड्यौ धनु तांनि कैं, साल्व नृपाल रिसाय॥
बहै बांन श्रीकृस्नं कैं, लग्यौ बांम भुज आय॥४९॥
गिर्यौ धनुष सारंग भुव, प्रभु फिर ल्यौ उठाय॥
मनहु हतन अरि विंदयैं, प्रभु कैं पंकज पाय॥५०॥
धनुष गिरत सबहिन कर्यौ, सुरनर हाहाकार॥
सिंघनाद करि साल्व कहि, प्रभु सौं बचन सुढार॥५१॥
हे मूरष बसुदेव सुत, तू अभिमान बढाय॥
अस्त्री म्हेरै जु मित्र की, ल्यायौ चोरि छिनाय॥५२॥
कुंदनपुर सिसुपाल सौं, तब लैं अैसी कीन॥
सभा जुधिष्ठिर मधि हत्यौ, बहि मो मित्र जु नवीन॥५३॥
आज बांन तीछननि सौं, मारि तौहि लौं बैर॥
जो भजि जाहौ नांहि तौ, करिहौं गाढौ घैर॥५४॥

(छंद चौपाई)

॥ श्री भगवानुवाच॥

अब लैहुँ बैर वांकौ बिष्यात। अन उचित कही यौं दुष्ट बात॥
हँसि कृस्न कह्यौ अैसै हकारि। नहिं बचै दुष्ट तू चित्त धारि॥५५॥
निज दैह जतन करियै सु आप। जिहँ तैं न हौय तोकै संताप॥
पुनि नच्यौ काल तुव आनि सीस। नहिं लपी परी तुहि चढी रीस॥५६॥
रनमांहि बकत नहिं सूरवीर। समरत्थ हौय सौ हौत धीर॥

॥ श्री सुक उवाच॥

कर गदा धारि कोपैं मुरारि। उर साल्व हनी हसि रीस ढारि॥५७॥
तब मूर्छित भौ पल बिन करारि। लहि चेत बहुरि ऊठ्यौ लबारि॥
कंपायमान हुव साल्व अंग। कढि रुधिर धार मुषतैं कुवंग॥५८॥
कौमोदकि लगितैं साल्व राय। भौ अंतरध्यान न दिष्टि आय॥
फिरि साल्व प्रगट माया सुकीन। सौ कपट रूप नहिं परत चीन॥५९॥
इक कपट रूप द्वै घरी मांहिं। आयौ सु दूत प्रभु निकट ठांहिं॥
करि रुदन बह बोल्यौ या भाय। मो कौं भेज्यौ दैवकी माय॥६०॥

दोहा - बचन दैवकी यौं कहै, पर बस हौं बसुदैव॥
बांधि लै गयौ साल्व नृप, करि निज विक्रम भैव॥६१॥
सुनि माता की वोर कै, अैसै बचन अजैब॥
छिनक सोच करि हँसि लष्यौ, दूत कपट कौ भैव॥६२॥
किय बिचार है भ्रात मो, पुरी द्वारिका मांहिं॥
जिन्हकौ दानव दैव कौ, जीति सकत है नांहिं॥६३॥

उन्हकौं बिन जीतै पिता, साल्व हाथ क्यूं आय॥
करैं बिधाता हौय सौ, अचिरज किय नर भाय॥ ६४॥
ताही समैं बिमांन बहि, दीसत भौ नभ बीच॥
कह्यौ बचन श्रीकृस्न सौं, साल्व दुष्ट मति नीच॥ ६५॥
राषि सकौं तौ राषियै, कहियत हौ अवतार॥
विक्रम मोहि दिषाइयै, अबै न लावहुँ बार॥ ६६॥
यौं कहि कपट सरूप करि, दिषयौ नृप बसुदैव॥
बैठ्यौ मनौं बिमांन परि, बहै भूष अनभैव॥ ६७॥
असंभावना बात इहि, जांह हौय बलदैव॥
अैसै कइसै आय हैं, अरि कर श्री बसुदैव॥ ६८॥
अैसै प्रभु कैं कहतही, साल्व निकट तहिं आय॥
कपट रूप बसुदैव कौ, दिय सिरकाट बगाय॥ ६९॥
फिरि बिमांन परि चढि गरजि, बोल्यौ बचन अकास॥
प्रिथवी परि जादव रहन, नहिं दैहौं कर नास॥ ७०॥
बडग्यानी श्रीकृस्न जुत, उरनै भाव दिषाय॥
पितु सनेह तैं अति बिकल, हौत भयै दुषपाय॥ ७१॥
जांनि गयै फिरि इहि, प्रगट, माया कीनी साल्व॥
धीरज निज संगीन कौं, दीनी प्रभू कृपाल॥ ७२॥
फिरि देषै तौ पिता कौं, नहिं सरीर जुध मांहिं॥
अरु आयौ है दूत बहि, सोउ परत लषि नांहिं॥ ७३॥
साल्व चल्यौ सुबिमांन परि, दैषि बीच आकास॥
सावधांन हुवै सत्रु कौ, मारन सहित हुलास॥ ७४॥
साल्व चलावत बांन निज, प्रभु परि रिस अतिथाटि॥
ता अरि कौं धनु कवच मनि, सिर कौं दिय प्रभु काटि॥ ७५॥

(छप्पय)

वोप कोप करि स्यांम, आप कर गदा उभारिय॥
कउमोदकि लषि मुदित, सुरनि जय जयति उचारिय॥
बीरबाहु करि उच्च, तांह धुंधुंकारव बज्जिय॥
तुटि बिमांन पल सहित, मांन दित वंस सु लज्जिय॥
जल मांझ पर्यौ तहिं सउभ, रथ तूटि फूटि चकचूर हुव॥
कर गदा धारि नृप साल्व, तब भयौ बिरथ रन षैत भुव॥ ७६॥
मार मार उच्चारि, तांह षल सांमुह धायौ॥
भुजन तानि हरि बांन, कांन लगि अैंचि नवायौ॥

काटै दुहु कर रीस, वीर वीर तिह रिसौही॥
हत्यौ चक्र छबि बक्र, तुट्यौ सिर भभक्यौ लौही॥
रन पर्यौ साल्व जब पैत, मैं जयति जयति ब्रज ईस की॥
तिहूं लौक ठौर ठौरहिं, प्रगट सदा किर्ति जगदीस की॥७७॥

दोहा - दंतवक्र लषि साल्व कौं, मर्यौ सुपलटा लैंन॥
आयौ प्रभु सौं लरन कौं, चित अति पाय अचैंन॥७८॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते सप्त सप्ततितमोऽध्यायः ॥७७॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अष्ट सप्ततितमोऽध्यायः ॥

(दंतवक्र और विदूरथ का उद्धार तथा तीर्थ यात्रा में बलराम जी के
हाथ से सूत जी का वध)

॥ श्री सुक उबाच॥

चोपई - सुक कहत कि सिसुपाल रु साल्व। मिथ्या वासुदैव अघजाल॥
दंतवक्र यै मरे बिचारि। पलटौ लैंन क्रौध चित्त धारि॥१॥
दोयौं ह्वै प्यादौ इकलौहि। भुव कंपावत महा छछोहि॥
लरिवै प्रभु कैं सांमुह धाहिं। मित्रननि बैर लैन अकुलाहिं॥२॥
तिहँ आवत लपि रथ तैं उतरि। समुप गय प्रभु गदा सुकर धरि॥
दंतबक्र निज गदा उठाय। बोल्यौ प्रभु कौं बचन सुनाय॥३॥
तुम्ह मो मातुल सुत हौ भ्रात। अैंपरि द्रोही अमित्र कुपात॥
तातैं हतिहौं तुम्हैं निदांन। वाहि गदा मो बज्र समांन॥४॥
ऊरन तब ह्वै हौं मित्रन सौं। तुम्ह भ्राता पै बधि सत्रुन सौं॥
जइसै रोग देह मैं हौत। तासौं प्रगटत दुष्प उद्दौत॥५॥
यौं कठोर कहि बचन कुढार। करि प्रभु सीसहि गदा प्रहार॥
सिंघनाद बहि दुष्ट सुकीनि। दुष्ट महा रिसकैं आधीनि॥६॥
वाकी गदा लगन अनुसार। पीडा कछु न लही करतार॥
फूलमाल ज्यौं गज कैं लागि। भय पीडा कछु उर नहिं जागि॥७॥
कर कउमोदक लै भगवांन। मारी अरिकैं हिदैं सथांन॥
गदा सु कउमोदक कैं लागि। निकस्यौ अरि मुष रुधिर अथागि॥८॥
पर्यौ भुव कर रु चरन पसारि। जीव जोति मिलि प्रभू मंझारि॥

जयति जयति श्रीकृस्न उचारि। सुर मुनि रिष हर्षित नरनारि ॥ ९ ॥

दोहा - दंतवक्र कौ भ्रात इक, जास बिदूरथ नांम॥
सौ आयौ दुष मांनि फिरि, षड्ग लीनैं कर ठांम॥ १० ॥
ताकौ सिर प्रभु चक्र सूं, काटत भयै रिसाय॥
दुष्ट मर्यौ भुव पै पछरि, पर्यौ महा दुषदाय॥ ११ ॥
दंतवक्र अरु बिदूरथ, साल्व पाप कौ रूप॥
इन्ह तिहूंन मारत भयै, कृस्न कुमार अनूप॥ १२ ॥
मुनि बिद्याधर रु अपछरा, सिध चारन गंधर्ब॥
जछि किंनर अहि पितरगन, मनुष देवतां सर्ब॥ १३ ॥
प्रभु कौं जस गावत भयै, करि करि अस्तुति सुढार॥
जुद्ध बीच पाई फतै, सुंदर कृस्न कुमार॥ १४ ॥

चौपई - सुरपुर बजै बाजै अपार। सुर सुमन बरपि कर लिय थार ॥
पुर जनन तांह उछव जु कीन। बजार छिरकि सउरभ नवीन ॥ १५ ॥
हाट संवारि बहु भैंट साजि। दुंदुभि अपार घरघरहिं बाजि ॥
पुनि राग रंग सुगान हौत। हर्ष्यौ सुचित्त उत्सव उदोत ॥ १६ ॥
प्रभु बिजय पाय सब सुभट संग। मुँह धरै कुँवर बिजई अनंग ॥
तिय मांन गांन सुकलस सीस। आसिष दैत द्विज वर रिषीस ॥ १७ ॥
पुर पैठि आय मुहन प्रवीन। केउ सजै कलस त्रिय नवीन ॥
सुभ सगुन भयै जदुवंस राव। लौकिक रीत की जुत सुभाव ॥ १८ ॥
पुनि कलस भैंट बिधिक्रम कीन। ब्राह्मनि दांन बहु भांत दीन ॥
अरु बोलि भाट मगध जु सूत। प्रभु दांन दयै कितै अभूत ॥ १९ ॥
किय भैंट सब जादव अनूप। सब सैंन भइ सुरपति संजूप ॥
श्रीकृस्न आय पुर करि प्रवैस। निज गेह द्वार आय नरैस ॥ २० ॥
दैवकि माय बसुदैव राय। सिर सूंघि सूंघि लीनि बलाय ॥
बलदैव बीर जु मिलै तीर। पुर रछिक हे जे वीर धीर ॥ २१ ॥
भुषन अपार द्रव भरै थार। केउ वारि फिरि दिनैं उछारि ॥
रनवास निछार्वि बउत कीन। धरि हर्ष हियै बहु दांन दीन ॥ २२ ॥
कहि सकि कौनुँ हरि जस सुभाय। सेस न गनेस न पार पाय ॥
कौ सकि बरनि ब्रजराज रीति। जस गावत जांकु निगम गीति ॥ २३ ॥

दोहा - भयै पधारत द्वारका, ऐसै कृस्न कुमार॥
मोद मांनि कैं भक्त जन, कियै उछाह अपार॥ २४ ॥
जुध कैरव पांडवनि मधि, सुनिकैं श्री बलदैव॥
तीरथ यात्रा मिस चलै, उन्ह पैं धरि हित भैव॥ २५ ॥

पहलै छैत्र प्रभास मैं, करि बलिदैव सिनांन॥
विधिवत बिधि सौं देव रिषि, तरपन करि बुधिवांन॥ २६॥
बिप्रननि जुत आवत भयै, नदी सरस्वती पास॥
सुभग सथल पुन्यातमा, देष्यौ सहित हुलास॥ २७॥
बिंदु सरोवर प्रथोदक, सत्रित कूप जु बिसाल॥
ब्रह्मतीरथ अरु सुदरसन, तीरथ महा रसाल॥ २८॥
अरु प्रवाह जिन नदिन कौं, पूरब दिस की वौर॥
ऐसी जमुना सरस्वती, गंगा नदी सुठौर॥ २९॥
जांह सूत सउनक रिषनि, कहत कथा सुषधांम॥
नैमिषारन्य जु वन विषै, तहिं आयै बलिरांम॥ ३०॥
इन्हकौं आवत लषि रिषनि, उठि कीनौं परिनांम॥
बिधिवत बिधि पूजा करी, दिय आसन अभिरांम॥ ३१॥
नांम रोमहर्षन सु जिहँ, सूत कहावत जाति॥
बैठे आसन उच्च जांह, व्यास सिष्य बिषयाति॥ ३२॥
आवत लषि बलिदैव जू, उठि न कियौ परिनांम॥
तातैं कीनौं क्रौध अति, ताँ ऊपरि बलिरांम॥ ३३॥
इहीं दुरबुधी है महा, याँकौ नीच सुभाय॥
बैठ्यौ है ब्राह्मननि तैं, आसन उच्च बिछाय॥ ३४॥
अरु हम्ह पालक धरम कैं, तिन तैं बैठ्यौ उच्च॥
तातैं निश्चै जोग्य है, हतिबौ या मद मुच्च॥ ३५॥
सिष्य व्यास जू कौ इहै, है अति बिद्यावंत॥
धरम सास्त्र इतिहास्य अरु, पढ्यौ पुरान सुतंत॥ ३६॥
तऊ नरम नहिं है धरत, व्रथा बिद्या अभिरांम॥
यामैं गुन कछु नहिं बिद्या, सीषी नट उनमांन॥ ३७॥
मारन पाषंडीन कौं, हम्ह लीनौं अवतार॥
यौं बिचारि कुस सौं कियौ, वांकौं बलि जु संघार॥ ३८॥
हाहाकार कियौ मुनिन, अरु बोलै यौं बैंन॥
व्यासानन दीनौं हुतौ, याकौं हम्ह जु सुषैंन॥ ३९॥
अरु आरबल हुँ याहि हम्ह, दई हुती हित गौय॥
सहस बरस कौ जिग्य इह, जबलौं पूरन हौय॥ ४०॥
ब्राह्मन कौ सौ वध कियौ, बह बिनु जानै आप॥
पै न लगै ईस्वर कौ, ब्रह्म हत्या कौ पाप॥ ४१॥
औरनि करौ जु पवित्र तुम्ह, तुम्हहिं लगै अघ नांहिं॥
हे अषिलेस्वर धरम की, मूरति आप सदांहिं॥ ४२॥

॥ भगवान श्री बलराम उवाच॥

इहि सुनि बोलै राम हम्ह, लौक म्रजादा काज॥
ब्रह्म हत्या कौ प्राश्चित, करिहैं कहौ इलाज॥ ४३॥
अरु दै दीरघ आरबल, जोग सक्ति अनुसार॥
देहौं सूत जिवाय हौं, तुम्ह हौ प्रसंन सुढार॥ ४४॥

॥ ऋषय ऊचुः॥

रिष बोलै तुम्ह अस्त्र कौं, अरु हम्ह बचन प्रभाव॥
ठीक रहै सौ कीजियै, दुहू बात कौ न्याव॥ ४५॥

॥ भगवान श्री बलराम उवाच।

बलि बोलै पित आतमा, पुत्रहिं बेद जु बताय॥
तातैं याकौं सुत तुम्हहिं, कहि हैं कथा सुनाय॥ ४६॥
अरु ह्वै हैं याहि पुत्र की, आरबलहुँ अधिकाय॥
औरहु हौय मनोर्थ तुम्ह, सुं कहौ करहुँ सुभाय॥ ४७॥
ब्रह्म हत्या कौ पाप इहि, हम्ह कीनौं बिनु जांन॥
सु ताकौं उतम प्राश्चित, देहुँ बताय निदांन॥ ४८॥

॥ ऋषय ऊचुः॥

रिष बोलै बलवल दयत, इलवल कौं सुत आंहि॥
जिग्य हम्हारौ मैटि सौ, जात जु बली अथांहि॥ ४९॥
लौहू मद मलमूत्र उपल, बरषत है जिग्य मांहिं॥
वा पापी कौ हतौ अब, हम्ह सैवा अधिकांहिं॥ ५०॥
भरत षंड कैं तीरथ फिरि, करहुँ बरष इक आप॥
तबै सुद्ध ह्वै हौं भलैं, मिटि ब्रह्म हत्या पाप॥ ५१॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अष्ट सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७८ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ ऐकोनासीतितमोऽध्यायः ॥

(बल्वल का उद्धार और बलराम जी की तीर्थ यात्रा)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि जब जिग्य कौ, आयौ पर्व सुभाय॥
तबै प्रबल चलि पवन रज, बरषन लगी कुदाय॥ १॥

अरु बरषा मल मूत्र की, बलवत दैत सुकीन ॥
आयौ हाथ त्रिसूल लै, महाक्रौध आधीन ॥ २ ॥
जाकौ बड्डौ सरीर मनुँ, काजर ढैर कुढार ॥
तांबे तप्त समांनहुँ जिहिं, सकल अंग कै बार ॥ ३ ॥
भयंकर अरु दाढै दिरघ, मुष भौंहैं दरसाय ॥
ऐसौ लषि दानव बहै, बलि अति क्रौध बढाय ॥ ४ ॥
सुमरन किय हल मुसल कौ, निज चित मैं बलिरांम ॥
आय गयै बै बेगहीं, हल मूसल वां ठांम ॥ ५ ॥
बलवत हौ नभ मांहिं तिहिं, हल सौं ख़ैचि नवाय ॥
मूसल कौं बहिं सीस मैं, कियौ प्रहार रिसाय ॥ ६ ॥
वाकौ माथौ फटि गयौ, लौहू बह्यौ अपार ॥
बड्डौ सबद करि गिरि पर्यौ, प्रिथवी परि बिकरार ॥ ७ ॥
मानहुँ परबत गिरि पर्यौ, लागि बज्र की मारि ॥
मुनि दे आसिरवाद किय, सैस अस्तुति वां बारि ॥ ८ ॥
रांमहि करवावत भयै, रिष सब उमगि सिनांन ॥
कमल माल बैजंति अरु, पटभूषन दिय दांन ॥ ९ ॥
अरु आग्यां लै मुनिन की, द्विजन सहित बलिरांम ॥
आयै षारनिमैष तैं, नदी कौसिकी ठांम ॥ १० ॥
अैक सरौवर मध्य फिरि, कीनौं रांम सिनांन ॥
तामैं तैं सरजू नदी, निकसी मल उनमांन ॥ ११ ॥
तीर तीर सरजूहिं ह्वै, गवनै ठौर प्रयाग ॥
तहिं सिनांन करि अरु पितर, तरपन करि बडभाग ॥ १२ ॥
तहिं तैं पुलहाश्रम बिषै, गवनै श्री बलिरांम ॥
तांह महा पुन्यातमा, बडनद नद्दी सुठांम ॥ १३ ॥
नदी गौमती गंडकी, विपासा रु नद श्रौंन ॥
तिन्हमैं कियौ सिनांन उर, हरषित ह्वै कैं दांन ॥ १४ ॥
पितरन कौं करि गया मैं, श्राद्ध भलैं अनुसार ॥
गंगासागर संग महि, मधि गवनैं सुभढार ॥ १५ ॥
नग महेंन्द्र मैं रांम जू, कौं तहँ दरसन कीन ॥
ह्नायै और नदीन मैं, सुनि तिह्न नांम प्रवीन ॥ १६ ॥
भीमरथी गौदावरी, पंपा बेणा तप्त ॥
सरिता सुभग सुहावनी, बिप्रहिं बेद जहँ जप्त ॥ १७ ॥
सुभग ठौर श्री सैल नग, जहँ सिव बसत सदांहिं ॥
तांह सकंद कुमार कौं, दरसन कियौ उमांहिं ॥ १८ ॥

काम कोस्नी नदी अरु, कावेरी नदि नांम॥
तिहँ ठां कांची पुरी मधि, रंगनाथ अभिरांम॥ १९॥
तांह जाय तिन्हकौं कियौ, दरसन अति सुषपाय॥
दषिनी मथुरा रिषभ नग, सेतुबंध फिरि जाय॥ २०॥
दस हजार गायै सुभग, दिय बिप्रननि कौं दांन॥
पांव पूजि द्विजवरन कैं, कीनौं अति सनमांन॥ २१॥
फेरि ताम्रपर्नी सरिता, अरु कृतमाला पास॥
गयै मलय परबत बिषै, श्री बलि सहित हुलास॥ २२॥
रिष अगस्त कौं ठौर जिहिं, करत भयै परिनांम॥
उन्ह दिय आसिरबाद उठि, प्रसंन भयै बलिरांम॥ २३॥
दरसन दुर्गा कौं कियौ, फेरि सिंधु तटि जाय॥
करि सिनांन जप दांन दिय, अति सोभा सरसाय॥ २४॥
फालगुन अरु पंचाप्सर, तीर्थ ठौर रह बिस्नु॥
तांह जाय दस सहस गौ, द्विजनि दई ह्वै प्रस्न॥ २५॥
कैरल और त्रिगर्त इन्ह, दैसन मैं फिरि आय॥
सिव कौ तीरथ गौकरन, तहँ सिव बसत सदाय॥ २६॥
आर्य्या अरु द्वैपायनी, देवी है जिहिं ठांम॥
सुरपारक तीरथ तांह, गयै फेरि बलिरांम॥ २७॥
निरविंध्या अरु पयोस्नी, तापी सरिता मांहिं॥
करि सिनांन आवत भयै, दंडकारन्य ठांहिं॥ २८॥
तांह तैं रैवां नदी पैं, आयै श्री बलिदैव॥
जांह नगरी माहिषमति, बसत सु आछै भैव॥ २९॥
मनु तीरथ मैं ह्नाय फिरि, आयै छैत्र प्रभास॥
तांह सुनि कैरव पंडवनि, कौ जुद्ध भयै उदास॥ ३०॥
सुन्यौ कि सब राजा मरै, दूरि भयौ भुव भार॥
दुरजोधन अरु भीम जुद्ध, करत गदा अनुसार॥ ३१॥
उन्ह दुहूँन कौं बरजबै, रांम गयै कुरुषैत्र॥
जांन्यौ दुरजोधन जियै, अबहू काहू हैत॥ ३२॥
कृस्न जुधिष्टिर सहदैव, सु नकुल इन्हैं निहारि॥
बंदन करि संदेह किय, अैं आयै किहिं ढारि॥ ३३॥
दुरजोधन अरु भीम कौं, लरत दैषि वां ठौर॥
कहत भयै बलिदैव जू, उन्हकौं अैसै तौर॥ ३४॥
है दुरजौधन भीम तुम्ह, हौ दुहु बली समांन॥
मो प्रांन सम दुरजोधन, भीम अधिक निदांन॥ ३५॥

जीति हार तातैं दुहुनि, मधि किहु ह्वै है नांहिं॥
हौ तुम्ह दौउ समांन बलि, बृथा जुद्ध की चांहिं॥ ३६॥
उन्ह दुहूंन कैं चितहुँ मैं, हुतौ बैर अधिकांहिं॥
तातैं मांन्यौ नांहिं बलि, बचन क्रौध चित छांहिं॥ ३७॥
तांह दैष्यौ बलिदैव जू, अैं मांनत दुहुँ नांहिं॥
तबै आप आवत भयै, पुरी द्वारका ठांहिं॥ ३८॥
बहुरि नैमिषारन्य बन, जात भयै बलिदेव॥
तांही करवायौ रिषन, इन्ही मैं जिग्य सुभेव॥ ३९॥
दैत भयै बलिदेव जू, मुनिन ग्यांन उपदेस॥
तासौ जगत रु आतमा, इन्ह लषि परम सुवेस॥ ४०॥
अस्त्री जुत बलिदेव जू, कियै जिग्यांत सिनांन॥
सुभग बस्त्र भूषन पहरि, सोभै ससि उनमांन॥ ४१॥
बड़ै बलि माया अनंत, करि धार्यौ नर रूप॥
अैसै श्री बलिदैव जिनि, चरित अनंत अनूप॥ ४२॥
तिन्हकौं सांझ सबैर कौ, नांम लैय चित लाय॥
तासौ हौंहि प्रसंन प्रभु, पाप सकल मिटि जाय॥ ४३॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अैंकोनासीतितमोऽध्यायः ॥ ७९ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ असीतितमोऽध्यायः ॥

(श्रीकृष्ण जी द्वारा सुदामा जी का स्वागत)

॥ श्री राजोवाच ॥

दोहा - राजा पूछत है कि जिन, प्रभु कौ बीर्ज अनंत॥
अैसैं हरिकौं चरित हौं, औरहुँ सुन्यौ चहंत॥ १॥
मुनि चरित जु भगवांन कैं, त्रिपति प्रवीन न हौत॥
विषहि वासना सौं जगहिं, हैं अति दुष्य उदौत॥ २॥
जासौं हरि गुन गाइयै, बानी सौइ सुढार॥
हाथ भलै वे जिननं सौं, हौय सैव करतार॥ ३॥
अरु मन आछौ है बही, जासौं भलैं प्रकार॥
प्रभु कौं सुमरन कीजियै, सकल ठौर निरधार॥ ४॥
श्रवन भलैं वे जिनन सौं, सुनियै हरि गुन गांन॥
नैत्र भलैं वे तिन्हन सौं, ह्वै दरसन भगवांन॥ ५॥

सीस बही है भलौ जो, प्रभुहिं करैं परिनांम॥
वई भलै पग जें करैं, प्रभु परिक्रमन अकांम॥६॥
सकल अंग या मनुष कैं, बेई भलैं कहाय॥
जिन ऊपर प्रभु कौं परै, चरनोदक सुषदाय॥७॥

॥ सूत उबाच॥

सूत कहत सउनक रिषनि, नृपति प्रस्न यौं कीन॥
तबै मगन हरि ध्यांन मैं, ह्वै सुक कह्यौ प्रवीन॥८॥

॥ श्री सुक उबाच॥

अैंक बिप्र श्रीकृस्न जु कै, सषा धरै चित ग्यांन॥
सांत दांत अरु बिषय तैं, महाबिरक्त सुजांन॥९॥
आय मिलै कछु सहज मैं, तामैं करैं निबाह॥
लटै दरिद्र प्रभाव पट, धरै मलिन तियनाह॥१०॥
इक दिन तिय पतिव्रता करि, मुष मलीन भरि नैंन॥
कांपत महा दरिद्र बसि, बौली पति सौं बैंन॥११॥
सषा तुम्हारे है सुभग, कृस्न कमल दल नैंन॥
सरनागति पालन ब्रह्मनि, साधुन कौं सुष दैंन॥१२॥
महादरिद्री रु कुटंबी, तुम्ह हौ उन्ह पैं जाहुँ॥
तुम्ह कौ निश्चै दैहिंगै, बै बहु द्रव्य अथांहुँ॥१३॥
भौज बस्निं अंधक इती, जादव जाति प्रकार॥
तिन्ह कैं ईस्वर वै सही, कृस्नं कुंवर करतार॥१४॥
जो उन्हकौं सुमिरन करैं, तिहँ आपनपौं दैत॥
द्वारावती बिराजहीं, वै प्रभु बंधु समैत॥१५॥
प्रारथना अस्त्री जबै, कीनी या अनुसार॥
तबै जु सुदामा बिप्र यौं, निज चित कियौ बिचार॥१६॥
याही मिस श्रीकृस्न कौं, दरसन ह्वै हैं मोहि॥
यौं बिचारि कैं चलन कौं, किय मनोर्थ अवरोहि॥१७॥
चांवर मूठी च्यार तिय, मांगि कहूं तैं ल्याय॥
बांधि फटै पट भेंट प्रभु, पति कर दियै छिपाय॥१८॥
तिन्हकौं लैकै द्वारिका, कौं द्विज चल्यौ सुजात॥
दरसन ह्वै हैं कृस्न कौं, इहै बिचारत बात॥१९॥
दरवाजै रतननि जटित, बैठे रछिक अपार॥
तिहैं लांघि आवत भयौ, बीच पुरी निरधार॥२०॥
दैषत घर जादवन कैं, पहुँच्यौं बिच रनवास॥
ग्रह तिय सौरह सहस मैं, गौ द्विज अैक अवास॥२१॥
तांह निज तिय कैं पलिंग, पर बैठै हे भगवांन॥
द्विजहिं दैषि उठिकैं मिलै, अपुन सषा पहिचांन॥२२॥

मिलि प्रभु अपनैं सषा सौं, लहत भयै आनंद॥
करत भयै अति अपनेस सौं, नैत्र सजल ब्रजचंद॥ २३॥
पलिंगा परि बैठाय द्विज, बिधवत पूजा कीन॥
पांव धौय निज सीस जल, राष्यौ तारन दीन॥ २४॥
चंदन कुंकम अगर घसि, लायौ द्विज कैं अंग॥
धूप दीप करि पांन दै, पूछी कुसल कुवंग॥ २५॥
नसै निकसि अंग अंग की, लट्यौ कुचील मलीन॥
अैसै द्विज कौ लछमना, रानी चमर सु कीन॥ २६॥
दैषत भई चरित इही, अंतहपुर की भांम॥
कीयौ दरिद्री बिप्रहिं कौं, दीरघ आदर मांन॥ २७॥
कहत भई याहि बिप्र नैं, बडौ पुन्य कोउ कीनि॥
तातैं मिलि श्रीकृस्न कौं, जनम सफल करि लीनि॥ २८॥
बिप्र भिष्यारी हीन धन, जिहिं निंदा जग मांहिं॥
निज पलंग बैठाय तिहिं, करि पूजा अधिकांहिं॥ २९॥
जे त्रिलौक कैं ईस गुर, रमा निवास अपार॥
समुष जाय तैं बिप्रहिं सौं, मिलै भ्रात अनुसार॥ ३०॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि श्रीकृस्न द्विज, पढै हुतै गुर गेह॥
तहिं की चरचा कृस्न जू, करन लगै जुत नेह॥ ३१॥

॥ श्रीभगवानुवाच॥

प्रभू कह्यौ हे द्विज पढै, हम्हे तुम्ह अैक सथांन॥
अब तुम्ह कीनौं है कि नहिं, अपनौं ब्याह निदांन॥ ३२॥
हम्हतौ जांनत है कि तुम्ह, उदासीन बिच जक्त॥
धन तैं अरु ग्रहस्थाश्रमहुं, तैं नित चित जु बिरक्त॥ ३३॥
जग तैं हौत बिरक्त कौ, राषै कछू न कांम॥
तऊ ग्रहस्थहूं कै करत, करम सु या भुव ठांम॥ ३४॥
जइसै करतहुं करम म्हैं, जगतहिं सिष्यन काज॥
पैं निरलैप रहूं सदा, बिच सब लौक समाज॥ ३५॥
हे ब्राह्मन हम्हे तुम्ह दुहूं, बसै हुतै गुर धांम॥
सौ सुधि आवत है कि नहिं, कहहुं सषा अभिरांम॥ ३६॥
जीव हौत है मुक्ति इह, गुर सौं पायौ ग्यांन॥
हौत तीन गुर मनुष कैं, बात सु इहै प्रमांन॥ ३७॥
इक तौ दाता जनम कौ, गुर निज पिता कहाय॥
दूजौ गुर बह जांनियै, देबै बेद पढाय॥ ३८॥

अरु गुर कहियै त्रितिय जो, करै ग्यांन उपदेस ॥
सौ ईस्वर सम जांनियै, सबमैं श्रेष्ठ बिसेस ॥ ३९ ॥
बरनाश्रम मैं मनुष जे, तिन मैं बैड़ प्रवीन ॥
जें गुर सौं लहि ग्यांन भव, सागर तिरत सरीन ॥ ४० ॥
कियै करम जिग्यादि हौं, तइसौ प्रसंन न हौत ॥
जइसौ गुर सेवा कियै, हौहुं प्रसंन सम गौत ॥ ४१ ॥
रु अैक चरित भयौ हुतौ, इक दिन गुर घर मध्य ॥
सौ सुध आवत है कि नहिं, तुम्हकौं बहै प्रसध्य ॥ ४२ ॥
गुर अस्त्री पठयै हुतै, वनकौं लकरी लैंन ॥
जाय प्राप्त हम्ह तुम्ह भयै, बडवन विषै सुषैंन ॥ ४३ ॥
बिनु रित बरषै मैह जहँ, अरु अति चली बयार ॥
हौय गयौ सूरज असत, बढ्यौ प्रबल अंधियार ॥ ४४ ॥
ठौर ठौर जल भर गयौ, भुव परि वां बन मांहिं ॥
ऊंचौ नीचौ थल कहूं, दीसि परत भौ नांहिं ॥ ४५ ॥
हम्ह तुम्ह बरषा पवन सौं, बिकल भयै अधिकांहिं ॥
हाथ गहै आपुन दुहू, चहुँ दिसि भ्रमत फिरांहिं ॥ ४६ ॥
सांदीपन गुर जांनि इहि, ढूंढत वां बन आय ॥
तांह दैषि हम्ह कौ बचन, बोलै या अनुभाय ॥ ४७ ॥
काज हम्हारै पुत्र तुम्हहिं, पायौ दुष्ष अधिकाय ॥
सौ कछु गन्यौ न चित विषै, परम प्रीति सरसाय ॥ ४८ ॥
भलौ सिष्य गुर की करत, अैसी ही विधि सैव ॥
ह्वै बिसुद्ध चित आत्महूं, गुरहिं दैत अनभैव ॥ ४९ ॥
म्हैं तुम्ह ऊपरि प्रसंन भौ, हौ मनोर्थ तुम्ह पूर ॥
बेद पढै सौ भुलहु मति, रु सत्रु हौहुं सब चूर ॥ ५० ॥
अैसै गुर कैं गेह मैं, भयै अनैक चरित्र ॥
गुरहीं की लहि क्रिपा हुव, पूर्न मनोर्थ पवित्र ॥ ५१ ॥

॥ सुदामा उवाच ॥

कह्यौ सुदामा हम्ह बडे, पुन्यातमा निदांन ॥
संग तुम्हारै वास किय, गुर कै गेह सथांन ॥ ५२ ॥
तुम्ह हौ मूरति बेद की, लौकनि सिषवन हैति ॥
बसै जाय गुर गैह भू, वैद कहत जिहँ नैति ॥ ५३ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते असीतितमोऽध्याय: ॥ ८० ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ ऐकासीतितमोऽध्यायः ॥

(सुदामा जी को ऐश्वर्य की प्राप्ति)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - सुक कहत कि यौं बिप्रहिं सौ, बात करत करतार॥
हँसि बोलै सबहींन कैं, मन कैं जांनन हार॥ १॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

हे द्विजवर तुम्ह गेह तैं, मो लीनै का ल्याय॥
भगत अलपहू दैय तो, मोहि लगै अधिकाय॥ २॥
बिना भगति जो बउतहूं, भेंट करै मुहि कौय॥
तासौं काहू भांति करि, मो चित प्रस्न न हौय॥ ३॥
पत्र फूल फल जलहुँ कौउ, मोहि भक्ति करि दैत॥
सो म्हैं भौजन करतहूं, मोदमांनि धरि हैत॥ ४॥
इहि सुनि लज्जित हौय द्विज, मुष नीचौ करि लीन॥
चांवर प्रभु कौ देत नहिं, हौय सकुच आधीन॥ ५॥
मन मनोर्थ सबहींन कैं, जांनन वारै स्यांम॥
द्विज आगम कारन समझि, हौय प्रस्न सुषधांम॥ ६॥
याकै तौ धन कौ कछू, नहिं मनोर्थ मनमांहिं॥
अस्त्री कौ पठयौ इहै, आयौ इहां उमांहिं॥ ७॥
जो दुरलभ है सुरन कौ, ऐसौ धन द्यौ याहि॥
इहि बिचारि द्विज पास तैं, लिय चांवर प्रभु चाहि॥ ८॥
कहत भयै तुम्ह मो लियै, ऐं ल्यायै हौ मित्र॥
तिन्ह तैंहू अति मुदित ह्वै, प्रसंन्न भयौ उर अत्र॥ ९॥
ऐं चांवर करि है तृपत, सब जक्तहिं अरु मौहिं॥
ऐसै हैं तिन्ह हौड कछु, नहिं जिग्यहू कौ हौहिं॥ १०॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

यौं कहि मूठी ऐक लै, चांवर प्रभू चवाय॥
दूजी मूठी लैंन कौं, किय आरंभ हित छाय॥ ११॥
तब लछमी जू आय गहि, लीनौं प्रभु कौं हाथ॥
अरु बोली ऐसै बचन, सुनहुँ जगत कैं नाथ॥ १२॥
याकै मूठी ऐकहीं, मैं सब संपति आहि॥
या लौक रु परलौक मैं, कछु न चाहियै याहि॥ १३॥
ऐक रात्र प्रभु पासही, बिप्र रह्यौ मुदी मांनि॥
करि भौजन जल पांन सुष, पायौ हृदै सथांनि॥ १४॥
प्रातहिं किय परनांम प्रभु, चल्यौ सुदामा धांम॥
फिरि आयै पउँचाय कैं, बउत दूर लौं सांम॥ १५॥

धन नहिं पायौ द्विज बहै, तु कछु मांग्यौ नांहिं ॥
प्रभु दरसनहीं सौं भयौ, आनंदित हिय ठांहिं ॥ १६ ॥
मन मैं कियौ बिचार इहि, ब्रह्मनि दैव भगवांन ॥
म्हैं देषी तिन ब्रह्मनिता, लह्यौ महा सुष दांन ॥ १७ ॥
दीन दरिद्री म्हैं महा, अरु बै रमा निवास ॥
करि आदर उठि कैं मिलैं, मो सौं सहित हुलास ॥ १८ ॥
निज अस्त्री कैं पलिंग परि, मोहि दियौ बैठाय ॥
लगी करन मोकौ चँवर, बह अस्त्री हित छाय ॥ १९ ॥
म्हैरी करि सैवा बउत, पग दाबै सुष पाय ॥
दैवतांन कौं पूजियै, मुहि पूज्यौ जिहिं भाय ॥ २० ॥
स्वर्ग मोष सुष संपदा, पूर्न मनोर्थ प्रकार ॥
प्रभु चरननहीं सौ भलैं, पइयतु है निरधार ॥ २१ ॥
इहि निरधन है पाय धन, भुलि जै हैं मो ध्यांन ॥
इहै जांनि दीनी नांहिं, मुहि संपति भगवांन ॥ २२ ॥
ऐसौ करत बिचार द्विज, निज घर निकट सु आय ॥
रवि ससि अगनि बिमांन सम, गैह परे दरसाय ॥ २३ ॥
बिबिधि बाग फुलवार जहँ, बौलत पंछी अपार ॥
कंवल प्रफूलित सरवरनि, भ्रमर करत गुंजार ॥ २४ ॥
पहरै पट भूषन सुभग, बउँत फिरै नरनारि ॥
ऐसौ लषि द्विज सोच किय, इहि किय गेह मुरारि ॥ २५ ॥
इतनै मैं नरनारि मिलि, सहित गीत बाजित्र ॥
आयै द्विज कैं सांमुहे, लै जाबै ग्रिह अत्र ॥ २६ ॥
पति कौं आयौ दैषि कैं, अस्त्री हरष बढाय ॥
रमा रूप धारन कियै, ग्रिह तैं बाहिर आय ॥ २७ ॥
पतिहिं दैषि तिय पतिब्रता, नैत्रसजल निजकीन ॥
आलिंगन अति प्रेम सौं, मन करि पियकौं दीन ॥ २८ ॥
लषी सुदामा लसत है, तिय अपसरा समांन ॥
फिरत टहल आधीन बहु, दासी परम सुजांन ॥ २९ ॥
अति अचिरज ब्राह्मन कर्यौ, लषि नवनिधि घर मांहिं ॥
प्रसंन्न हौय आवत भयौ, निज मंदिर की ठांहिं ॥ ३० ॥
रतन जटित जहँ भूमि है, फटिक मनिन कैं धांम ॥
बासव कैं सै लसत हैं, अदभुत घर अभिरांम ॥ ३१ ॥
सिंघासन पलंका बिछै, कंचन कलित सुढार ॥
सुभग बिछौनां है बिछै, दूध फैन अनुसार ॥ ३२ ॥

डांडी मनिमय लसत तिन, अैसै चंवर ढुलंत॥
रतननि कैं दीपक बरत, अदभुत सौभ लसंत॥ ३३॥
अैसी संपति दैषि कैं, द्विज सोच्यौ मनमांहिं॥
है प्रभु क्रिपा प्रताप इहि, और भेद कछु नांहिं॥ ३४॥
भाग्यहीन म्हैंरै इहै, संपत दीसत गैह॥
प्रभु दरसन परताप सौं, भई बिनां संदैह॥ ३५॥
लछमी कैं पति मो सषा, कृस्न कुँवर करतार॥
बउत दैहि तोहू उन्हैं, अलप लगत निरधार॥ ३६॥
तातैं आगै आपनैं, कछू दैत प्रभु नांहिं॥
पाछै तैं संपति बउत, धरत दास ग्रिह ठांहिं॥ ३७॥
जइसै मघवा करत है, बरषा आधी रात॥
षितहर लषि निज षैत मैं, प्रस्न्न हौत बहि प्रात॥ ३८॥
दास भक्ति थोरी करै, वे मांनत अधिकाय॥
अैक मूठि चांवर सु मम, षायै प्रीति बढाय॥ ३९॥
सष्य मित्रता सुहृदता, जनम जनम कैं मांहिं॥
इन्हहीं प्रभु सौं हौहुँ निति, बढि सनैह चित ठांहिं॥ ४०॥
जिन्हकौं बड्डौ प्रताप है, गुन कैं निधि भगवांन॥
तिन्हकै भक्तननि कौं सदा, मुहि हौ संग निदांन॥ ४१॥
संपति राज समाज नहिं, भक्तननि दै करतार॥
संपति मैं भगवांन भुलि, रहत न ग्यांन बिचार॥ ४२॥
अैसै प्रभू कैं भक्त कौं, निश्चै करि मनमांहिं॥
विषै भोग कीनौं तऊ, हुवै आसक्त जु नांहिं॥ ४३॥
विषै छौडिवै कौ रह्यौ, द्विज मनोर्थ निस भौर॥
अैक प्रभू की भगति ही, चहत भयौ उर ठौर॥ ४४॥
लष्यौ सुदामा बिप्र नै, अैसौ प्रभू सुभाय॥
भक्तनहिं कैं आधीन निति, रहत स्यांम सुषदाय॥ ४५॥
कियौ दूरि अग्यांन निज, द्विज धरि हरि कौं ध्यांन॥
प्राप्त भयौ प्रभु लौक कौं, परम तत्व पहचांन॥ ४६॥
ब्रह्मनि दैव भगवांन कौं, चरित सुनैं जो कौय॥
सौ छुटि बंधन करम तैं, प्राप्ति भक्ति सुष हौय॥ ४७॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अैकासीतितमोऽध्यायः ॥ ८१ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ द्वयसीतितमोऽध्याय: ॥

(भगवान श्रीकृष्ण बलराम से गोप-गोपियों की भेंट)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - सुक कहत कि बलदैव जू, अरु श्रीकृस्न कुंवार॥
अैक समैं द्वारावती, बिलसत हे सुषसार॥ १॥
तिहिं बेरा सूरज परब, प्राप्त हौत भौ आय॥
प्रलै समैं जइसौ परब, आवत औसर पाय॥ २॥
अैसौ सूरज परब बह, जांनि मनुष बुधिवांन॥
पहलैं हीं कुरुषैत कौं, चलै हौन कल्यांन॥ ३॥
करी नषत्री भूम सबै, फरसीधर द्विजरांम॥
नृप रुधिरन कैं कुंड तब, रचै हुतै उहिं ठांम॥ ४॥
ठौर दैषि पुन्यातमा, लै द्विज संग अपार॥
परसरांम जू जिग्य तहीं, कीनैं हुतै सुढार॥ ५॥
करमन सौं न्यारैं हुतै, वे तौ प्रभु अवतार॥
पै लौकनि दिषवन अरथ, करि निज चितहुँ बिचार॥ ६॥
कर्यौ नृपति संघार जिहँ, मैटन पाप प्रकार॥
कीनौं बिधिवत भायसौं, जिग्य भलैं अनुसार॥ ७॥
भइ तीरथ जात्रा बड्डी, ठौर जांह कुरुषैत॥
भरतषंड कैं नारि नर, जुरै धरम कैं हैत॥ ८॥
आहुक प्रदुमन सांबु सुक, गद अक्रूर वसुदैव॥
जुत सुचंद्र सारन सबै, जदुबंसी धर्मेव॥ ९॥
गयै तीर्थ कुरषैत कौं, धरम धार मति सुद्ध॥
सैंना कैं जु रछक भयै, कृत वरमा अनिरुद्ध॥ १०॥
सिंदन देवविमांन सै, चंचल अस्व सुढार॥
घन गरजत सै गज सुभग, अनगिन करभ कठार॥ ११॥
अमरन की सी कांति जिन, अैसै मनुष अपार॥
बड्डी संग सैंना लियै, जदुबंसी सिरदार॥ १२॥
करि सिनांन कुरषैत मैं, ब्रत कीनौं उहिं बार॥
पयंस्वनी तरुनी महा, दई गाय निरधार॥ १३॥
भूषन बस्त्र सुवर्न बहु, दियै बिप्रन कौं दांन॥
कुंड रचै द्विज राम कैं, फिरि तहिं कियौ सिनांन॥ १४॥
बिमल भगति श्रीकृस्न की, चित्तहिं हम्हारै हौय॥
अैसै कहि द्विज वरन कौ, दिय भोजन हित गौय॥ १५॥
लै आग्यां द्विज वरन की, जादव भोजन कीन॥
फिरि बैठत भय ब्रछन तर, भली ठौर चित्त चीन॥ १६॥

सुहृद सबंधी नृप बांह, आयै लषि सबहींन॥
मिलत भयै जादव सबै, हौय प्रीति आधींन॥ १७॥
कैकय आनर्त कैंरल, कांबौज मद्र रु कुंत॥
इन्ह दैसन कैं नृपति औ, आयै तहिं बुधिवंत॥ १८॥
मिलि आयै कुरुषैत मैं, कियै पुन्य बहु भाय॥
ब्रज जनहूं आवत भयै, कृस्न मिलन कैं चाय॥ १९॥
आपस मैं मिलतैं भयै, जांनि हियै निज मित्र॥
सबकैं मुष प्रफुलित भयै, मोद मांनि उर अत्र॥ २०॥
अस्त्रीहूं मिलती भई, आपस मैं उर लाय॥
कियै परसपर द्रिग सजल, परम प्रेम अनुभाय॥ २१॥
बृद्धन कौं छौटेन किय, नमसकार सिरनाय॥
कुसल प्रस्न पूछत भयै, आपस मैं हित भाय॥ २२॥
फेरि कथा श्रीकृस्न की, कहन लगै सुषलाय॥
कहै सुनै जिहँ कथा कौ, जीव हौत भवपार॥ २३॥
संकरषन श्रीकृस्न अरु, अस्त्रीन जुत वसुदैव॥
लषि कुंती सुषमांनि कैं, टार्यौ निज दुष भैव॥ २४॥
कुंती फेरि बसुदैव सौं, कह्यौ सुनौ हे भ्रात॥
पुन्यहीन म्हैं आपकौ, मांनत हौं बिषयात॥ २५॥
जाति सुहृद माता पिता, पुत्र मित्र पति अरु भ्रात॥
जिहँ सुमरन नहिं करत सौं, भाग्यहींन दरसात॥ २६॥

॥ बसुदेव उवाच॥

इहि सुनिकैं बसुदेव जू, बोलै या अनुभाय॥
करहुँ न हम्ह पैं ईरषा, अहौ बहन रिस ल्याय॥ २७॥
हम्ह जु षिलौनां दइब कैं, ईस्वर बसि संसार॥
कार्ज करावत करत है, ईस्वर ही निरधार॥ २८॥
पाय कंस डर भाजि हम्ह, गयै दिसानन मांहिं॥
ईस्वर ईछा सौं अबै, मिलैं आंनि या ठांहिं॥ २९॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि उग्रसैंन बसु, दैव आदि जदुबंस॥
किय पूजा सब नृपन की, जें उहिं आय प्रसंस॥ ३०॥
सब राजा भगवांन कौं, करि दरसन सुषदाय॥
लहत भयै आनंद अति, महामौद उफनाय॥ ३१॥
गांधारी धृतराष्ट्र अरु, दुरजोंधन भिषम द्रौंन॥
अस्त्रीन जुत पांडव विदुर, कुंती बुद्धि सुठौंन॥ ३२॥

किरिपाचार्ज संजय द्रुपद, पुरजित भौज विराट॥
कुंत नगनजित सल्प धृष्ट, कैतु लियै बड्डु थाट॥ ३३॥
कासिराय दमघोष मद्र, पुत्रननि जुत वाह्लीक॥
बिसालाष कैंकय मिथिल, जुधामन्यु बुद्धि नीच॥ ३४॥
सुसर्मा अरु बहु और नृप, मिलि कुरुषैतहिं ठांहिं॥
करि दरसन भगवांन कौं, बिसमति हुव मनमांहिं॥ ३५॥
रामकृस्न सब नृपन की, पूजा किय पग धौय॥
प्रभु कैं जादव भगत तिन, अस्तुति करत सब कौय॥ ३६॥
हे जादव हौ धन्य है, तुम्ह सु जनम जग मांहिं॥
दुरलभ जोगैस्वरन सौं, दरसन करत सदांहिं॥ ३७॥
जिन चरनोदिक गंग जिन, बचन बेद जिन कीर्ति॥
करतहिं पवित्र सु जगत कौं, आदि अंत इहि रीति॥ ३८॥
जिन्ह चरनन कैं परस सौं, भुवहू औसर पाय॥
पूर्न मनौरथ सबन कैं, करत भलैं अनुभाय॥ ३९॥
ता प्रभु कौं दरसन परस, बौलन भोजन ब्याह॥
सज्या रु आसन अैक अैं, तुम्ह सौं भैद अथाह॥ ४०॥
सदा तुम्हारै गेह मैं, बसत कृस्न जमनाह॥
तुम्हकौं राषी नांहिं कछु, सुवर्ग मुक्ति की चाह॥ ४१॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि ब्रजपति सुन्यौ, श्रीकृस्न रु बलिरांम॥
सकल जादवन संग लै, आयै हैं या ठांम॥ ४२॥
प्रभु कैं दरसन कौ उमगि, गौपी गौप समेत॥
पास नृपति बसुदैव कैं, गयै धरै उर हेत॥ ४३॥
दैषि नंद जू कौ भयै, प्रसंन सबै जदुबंस॥
आयै तन मैं प्रांन ज्यौं, बढत मोद सप्रसंस॥ ४४॥
मिलत भयै सब प्रीति सौं, लहि आनंद अपार॥
बउत दिनन कैं मिलन मैं, बढयौ प्रीत बिस्तार॥ ४५॥
विह्वल हुव अति प्रेम सौं, मिलि बसुदैव रु नंद॥
उमडै आंसौं द्रिगन तैं, बंधै नैह कैं फंद॥ ४६॥
गौकुल धर आयै हुतै, सुतहिं कंस भय पाय॥
करत भयै सौ बात सुधि, मिलि कैं प्रीति प्रभाय॥ ४७॥
मिलि कैं मातापिता सौं, संकरषन अरु सांम॥
हरषित ह्वै मुद मांनि उर, करत भयै परनांम॥ ४८॥
ब्रजपति ब्रजरांनी दुहू, बौल सकै कछु नांहिं॥
उमडि अंसुधारा चली, नैंननि तैं उर ठांहिं॥ ४९॥

ब्रजरांनी दुहू पुत्र कौं, लैं निज गौदी मांहिं॥
मिलिकैं निज दुष्ष दूरि किय, मौद लह्यौ उर ठांहिं॥ ५०॥
मिली दैवकी रौहिनी, जसुमति सूं हित छाय॥
सुधि करि वांतै प्रीत की, बौली या अनुभाय॥ ५१॥

॥ देवकी - रोहणी उवाच॥

हे जसुमति भुलै सु कौनुं, तुम्ह सनैह अनपार॥
दिय न जात तुम्ह प्रीति कौं, पलटौ किहूं प्रकार॥ ५२॥
पुत्र तुम्हारै तौ जु तुम्हहिं, जांनत है पितु मात॥
पालन पोषन तुम्ह कर्यौ, इन्हकौं आछी भांत॥ ५३॥
नैंत्रननि की रिछा करत, पलकैं जिहिं अनुसार॥
तुम्ह इन्हकी रिछया करी, पूरन प्रेम प्रकार॥ ५४॥
साधन कैं कबहूं न ह्वै, अपुन पराय बिचार॥
सबसौं राषत है सदा, दया भाव इकसार॥ ५५॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि श्रीकृस्न कैं, दरसन करिबै मांहिं॥
पलक लागती तब बिधिहिं, दैती श्राप सदांहिं॥ ५६॥
अैसी गौपी सांम सौं, मिलि बहु दिवसनि मांहिं॥
कृस्न मई हुव कृस्न कौं, राषि रूप उर ठांहिं॥ ५७॥
अैसी सब गौपीन की, दसा दैषि करतार॥
बैठि कहूं अैकांत लैं, बोलै कृस्न कुमार॥ ५८॥
हम्हहिं कबहुं हे सषी जू, सुधिहुँ करत हौ आप॥
हम्ह तौ नहिं भूलत कबहुँ, तुम्ह सनैह अनमाप॥ ५९॥
हम्ह सत्रुननि कौं मारिबै, मित्रननि रिछया काज॥
निकसि गयै बहु दूरि लौं, तजि ब्रज कौ सुष साज॥ ६०॥
हम्हहिं कृतघ्नी कबहूँ तुम्ह, मति जांनौ हे भांम॥
करत तुम्हारौ ध्यांन म्हैं, निसदिन आठौ जांम॥ ६१॥
ईस्वर सब प्रांनीनन कौं, समैं समैं उनमांन॥
कबहुँ मिलावत है कबहुं, न्यारै करत निदांन॥ ६२॥
जइसै तृन अरु रेत कौं, चलि बयार अधिकाय॥
कबहूं इकठै करत पुनि, कबहूं दै बिछुराय॥ ६३॥
मुक्ति दैत प्रांनीन कौं, म्हैरी भगति सुढार॥
और कछू मो भगति सम, नहिंन बीचि संसार॥ ६४॥
लछमीहूं की चाह कछु, म्हैं राषत हूं नांहिं॥
अैक भगतिहीं कैं रहत, हौं आधीन सदांहिं॥ ६५॥

आदि अंत बाहरि रु मध्य, म्हैं प्रांनिन कै आंहिं॥
रहत पंच महाभूत ज्यौं, तनकैं विषैं सदांहिं॥ ६६॥
म्हैं ब्यापक हौं सबन मैं, सब म्हैरै आधार॥
भौग अरु भुक्ताहूं प्रगट, म्हैं हूं बिच संसार॥ ६७॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि गौपीन कौं, दिय प्रभु अैसै ग्यांन॥
उन्ह सुमरन सौं तियन कौं, मिट्यौ अग्यांन निदांन॥ ६८॥
कहत भई गौपी कि तुम्ह, चरन कंवल सुषसार॥
राषत जोगैस्वर बड़ै, निज उर भलैं प्रकार॥ ६९॥
परै कूप संसार मैं, मूरष मनुष अपार॥
तिन्हकौं करत उधार तुम्ह, चरन कंवल निरधार॥ ७०॥
रहौ हम्हारै मन विषैं, नित प्रति आंठौ जांम॥
तुम्ह चरननिहीं कौं सुभग, ध्यांन महा सुषधांम॥ ७१॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते द्वयसीतितमोऽध्यायः ॥ ८२॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ त्रयसीतितमोऽध्यायः ॥

(भगवान की पटरानियों के साथ द्रोपदी की बातचीत)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि गौपीन कौं, अैसै दै कैं ग्यांन॥
फिरि जुधिष्टिरहिं आदि बहु, सुहृदनि मिलि भगवांन॥ १॥
कुसल प्रसंन पूछत भयै, परम प्रीति अनुसार॥
प्रभु पद दरसन सौं मिटै, उन्हकैं पाप अपार॥ २॥
अरु बोलै हे प्रभु सुनौ, तुम्ह पद कंवल रसाल॥
साधन कैं हिय मैं बसत, नित प्रति करत निहाल॥ ३॥
निकसत उन्हकौं महातम, साधनि मुष किहु बार॥
सौ हम्ह कानन सौं सुनत, मोद बढाय अपार॥ ४॥
ताकैं सुनबैं सौं सकल, दूरि हौत अग्यांन॥
तिहँ प्रताप करिकैं सदा, है हम्हरौ कल्यांन॥ ५॥
तुम्ह निज रूप प्रकास सौं, जगत प्रकासित कीन॥
भैद तुम्हारौ भगत जन, जांनत परम प्रवीन॥ ६॥

जागत सुपन सुषौप्ति अैं, तिहूं अवसथा आंहिं॥
आनंद ग्यांन सरूप तुम्ह, तिन्ह तैं जुदे सदांहिं॥ ७॥
बेद नष्ट हुव काल करि, तिन्ह रिछया कैं काज॥
तुम्ह धार्यौ अवतार इहि, कृस्न गरीब निवाज॥ ८॥
परम हंस सजननहिं की, तुम्ह हौ गति करतार॥
चरन रावरै कौं सदा, है परनांम सुढार॥ ९॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि प्रभु की अस्तुति, यौं सब करत नृपाल॥
मोद मांनि भगवांन कौं, लषि लषि हौत निहाल॥ १०॥
जादव पांडव कौरवनि, की अस्त्री वां बार॥
आपस मैं कहती भई, कृस्न कथा सुषसार॥ ११॥

॥ द्रौपदी उवाच॥

कह्यौ द्रौपदी रुकमनी, आदि सुनहुँ हरि नारि॥
अपनैं अपनैं ब्याह की, कहहुँ बात सुभढारि॥ १२॥
लौक रीति निज प्रकृति करि, दिषवत भलैं प्रकार॥
कइसै ल्यायै ब्याह कैं, तुम्हकौं कृस्न कुमार॥ १३॥

॥ रुक्मिण्युवाच॥

बैदर्भी बौली ब्याहन, सिसुपालहिं नृप मोहिं॥
जरासंधि लौं आदि नृप, ल्यायै रछिक जु होहिं॥ १४॥
तिन्ह सिरि परि दैं पांव मुहि, ल्यायै कृस्न अछैहि॥
ज्यौं सृंगालन मध्य तैं, सिंघ भाग निज लैहि॥ १५॥
अब म्हैं उन्हकैं चरननिहीं, की सेवा कैं मांहिं॥
सदा रहूं इहि चहतहूं, और इछा कछु नांहिं॥ १६॥

॥ सत्यभामोवाच॥

सतिभामा बोली कि मो, पितु कौं भ्रात प्रसैन॥
ताहिं मारि कैं सिंघ लइ, मनि सिमंतक सुष दैंन॥ १७॥
बाहि मारि मनि लै गयौ, जांबुवांन बलवांन॥
दिय कलंक म्हैरे पिता, हरि कैं सीस निदांन॥ १८॥
जांबुवांन सू जूध करि, तब मनि ल्यायै स्यांम॥
दीनी म्हैरे पिता कौं, आय द्वारका धांम॥ १९॥
तब लज्जित ह्वै मो पिता, मोहि दैत भौ ब्याहिं॥
पहलैं मुहि अक्रूर कौं, देबै की ही चाहिं॥ २०॥

॥ जाम्वत्युवाच॥

जांबवती बौली कि मो, पिता बीस अठ द्यौस॥
करत भयै भगवांन सौं, बलधरि जुद्ध बस रौस॥ २१॥

फिरि पाछै जांनै कि अैं, हैं मो प्रभु श्रीरांम॥
तब मुहि दीनी ब्याहि अरु, मनिहूं दिय अभिरांम॥२२॥

॥ कालिंद्युवाच॥

कालिंदी बौली कि म्हैं, धरि हरि दरसन आस॥
मन द्रिढ करि तपस्या करी, आछै सहित हुलास॥२३॥
अरजुन जुत श्रीकृस्न जहँ, जाय मोहि लै आय॥
ग्वरी सु म्हैं उन्ह गेह की, हौं दासी जसु माय॥२४॥

॥ मित्रविंदोवाच॥

मित्र बृंदा बौली कि मो, रच्यौ सयंबर तात॥
तांह पधारै कृस्न जू, पूर्न पुरष बिषयात॥२५॥
बउत नृपन कैं बीच तैं, चलै मोहि हरि सांम॥
तब मो भ्रातन जुत सकल, नृप मिलि किय संग्राम॥२६॥
तिह्नैं जीति ल्यावत भयै, मोकौं कृस्न कुमार॥
तिन्ह चरनन की सेव मुदि, म्हैं नित चहत सुढार॥२७॥

॥ सत्योवाच॥

सत्या बौलि यौं नगनजित, नृपति परीछा लैंन॥
सात सांड म्हैरै पिता, राषै हे निज अैंन॥२८॥
जिन्हकैं तीछन श्रृंग अरु, धारै बल अधिकाय॥
निकट जाय कौ गहत नृप, ताकौं हतै रिसाय॥२९॥
तिन्हकौं प्रभु नाथत भयै, किय मो पित पन पूर॥
मोहि ब्याहि ल्यायै सकल, नृप सैंना करि चूर॥३०॥

॥ भद्रोवाच॥

भद्रा बौली मो पिता, कृस्नहिं गेह बुलाय॥
करि बिबाह म्हैरो दयौ, दायुज बउत सुभाय॥३१॥
सैंना संग अषौहिनी, दिय पउचाँवन काज॥
अैसै ल्यायै ब्याहि मुहि, हरि आनंद जिहाज॥३२॥
अब इन्हहीं कैं चरन कौं, सपरस बारंबार॥
जनम जनम मैं हौहुँ मुहि, इहि चाहत निरधार॥३३॥

॥ लक्ष्मणोवाच॥

कहत भई फिरि लछमनां, सुनहुँ द्रौपदी बात॥
नारद जू कैं मुष सुनैं, म्हैं हरि गुन बिषयात॥३४॥
तबि लाग्यौ श्रीकृस्न सौं, मो चित सहित सनैह॥
ज्यौं लछमी कौं चित लग्यौ, बिच भगवांन अछैह॥३५॥
ब्रहतसैंन म्हैरौ पिता, मो मनोर्थ पहिचांनि॥
कीनौं सोच बिचारि कैं, अैक उपाय निदांनि॥३६॥

जइसी बिधि हे द्रौपदी, तोहि सयंबरि मध्य॥
मछ बैधन होतौ भयौ, सौ बिच जगत प्रसध्य॥ ३७॥
तइसै ही म्हैरे पिता, मछ बांध्यौ थंभ मांहिं॥
पन किये बेधे मछ जिहि, सुता बिबाहूं चांहिं॥ ३८॥
अरजुन बैध्यौ जु मछ सौं, रह्यौ दिषाई दैत॥
इहि मछ दीसतहूं नांहिं, रह्यौ सु काहू हैत॥ ३९॥
इहि सुनि आये नृपति सब, मो पित नगरी मांहिं॥
अस्त्र सस्त्र सजि कैं भलैं, सावधांन अधिकांहिं॥ ४०॥
जथा जोग्य म्हैरे पिता, सबकी पूजा कीन॥
उन्ह मछ बैधन काज कौं, धनुष बांन कर लीन॥ ४१॥
कौ तौ धनुष चढायहू, सकैं नृपाल सुनांहिं॥
कौउ नवाय चढावनै, लगै धनुष वां ठांहिं॥ ४२॥
सकल नृपन कैं हाथ तैं, धनुष जात भौ छूटि॥
नृप भुव पर गिरि गिरि परै, तनकौं सत वित तूटि॥ ४३॥
करन भीम दुरजौधन रु, जरासंधि सिसुपाल॥
उन्हकौं तौ दीसि न पर्यौ, बहै माछ उहिं काल॥ ४४॥
अरजुन लषि प्रतिबिंब वा, मछ कौं पांनी मांहिं॥
सर मोष्यौ सपरस भयौ, पैं मछ बेध्यौ नांहिं॥ ४५॥
गरब मिट्यौ सब नृपन कौं, तबैं कृस्न भगवांन॥
धनुष षैंचि मछ नीर मैं, लषि मारत भय बांन॥ ४६॥
भलै महूरत मांहिं मछ, बैध्यौ कृस्न मुरारि॥
पुहप बरषि सुरन दुदुंभि, बजवत भयै सुढारि॥ ४७॥
तब म्हैं अपनैं हाथ मैं, लै पहुपन की माल॥
भूमि सयंबर कै मही, आवत भई षुष्याल॥ ४८॥
बउत नृपन की सभा मधि, मैं लषि कृस्न कुमार॥
पहराई बरमाल उर, हुव जय सबद उचार॥ ४९॥
नृतकारी नाचन लगै, गायै गुनी सुढार॥
बिबिधि बजै बाजित्र जांह, उच्छव भयौ अपार॥ ५०॥
इहि लषि उपजी ईरषा, सकल नृपन मनमांहिं॥
सबनि प्रभू सौं लरन कौं, कियौ मतौ वा ठांहिं॥ ५१॥
रथ मैं मुहि बैठार हरि, लै निज कर धनुबांन॥
समुष भयै सब नृपनि कैं, करिबै कौं घमसांन॥ ५२॥
कटै अंग कैउ नृपन कैं, परै कौउ रन षैत॥
भाजि गय कैउ जीव लै, छौडि लाज सौं हैत॥ ५३॥

मोहि उहां तैं लै चलै, करि रथ तैज मुरारि॥
ज्यौं निज बल मृगराज लै, हिरन अपार विडारि॥५४॥
मो कौ लै आवत भयै, द्वारावति भगवांन॥
जहँ ठां ठां तौरन बंधै, बाजत सुभग निसांन॥५५॥
सुहृद बंधु आयै तिननि, मो पितु पूजा कीन॥
अस्व गज भूषन बस्त्र जुत, उह्नैं बउत धन दीन॥५६॥
अरु दायज भगवांन कौं, दीनौं भलैं प्रकार॥
अस्व गज भूषन बस्त्र धन, दासी दास अपार॥५७॥
कृस्न आतमां रांम हैं, तिह्न की हम्ह सब दासि॥
बड्डी तपस्या सौं गह्यौ, इन्हकौं करि सुष रासि॥५८॥

॥ महिष्य ऊचुः॥

भौमांसुर जीतै हुतै, बलिधर बउत नृपाल॥
तिह्नकीं हम्ह कन्या हुती, गुन जुत रूप रसाल॥५९॥
भौमांसुर कौं मारि प्रभु, हम्हहिं दैषि बहिं गैह॥
लै आयै श्रीकृस्न जू, करिकैं क्रिपा अछैह॥६०॥
अष्ट सिध पद इंद्र लौं, सब प्रिथवी कौं राज॥
ब्रह्मलौक बैकुंठ जुत, महा मुकति कौं साज॥६१॥
अैं हम्ह कछु चाहत नांहिं, कबहूं निज मनमांहिं॥
प्रभु पदरजहीं सीस पैं, धरबौ चहत सदांहिं॥६२॥
इहीं मनौरथ ब्रजतियनि, कीनौ हौ निरधार॥
बनवासी अस्त्रीन कैं, चितमधि इहै बिचारि॥६३॥
गाय चरावन निकसतै, जब श्रीकृस्न प्रवीन॥
तब ब्रज कैं त्रिन लताहूं, इहि मनौरथ सुकीन॥६४॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते त्र्यसीतितमोऽध्यायः ॥८३॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुर सीतितमोऽध्यायः ॥

(वसुदेव जी का यज्ञोत्सव)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - श्री सुक कहत कि सब नृपन, की तिय अरु ब्रजनारि॥
सुनि कैं रीति बिबाह की, अचिरज किय अनपारि॥१॥

मिलि पुरषन मैं पुरष अरु, मिलि नारिन मैं नारि॥
कहत चरित श्रीकृस्न कैं, परम प्रीति अनुसारि॥ २॥
बही समैं आवत भयै, सब मुनि वरन समाज॥
अग्रज जुत श्रीकृस्न कौं, दरसन करिबैं काज॥ ३॥
बेद ब्यास नारद बचन, दैवल बिसवामित्र॥
सतानंद भरद्वाज भृगु, गौतम कसयप अत्र॥ ४॥
परसरांम सिषयन सहित, असित बसिष्ट पुलस्त॥
जाग्यबल्क गुरु गालव रु, द्विति त्रिति और अगस्त॥ ५॥
अैकत बिधिसुत अंगिरा, वांमदैव इन्ह आदि॥
बहु रिष आयै करन कौं, प्रभु दरसन अहलादि॥ ६॥
मुनि जन आवत सब उठै, सकल नृपति वा ठांम॥
रामंकृस्न पांडवनि जुत, करत भयै परनांम॥ ७॥
अरघ पाद्य अनुलैप अरु, धूप पहुप की माल॥
इन्ह बस्तनि सौं मुनिन की, पूजा करी रसाल॥ ८॥
कुसल पूछि कैं मुनिन कौं, आसन दियौ बिछाय॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

फिरि प्रभु रिछयक धरम कैं, बोलै बचन सुभाय॥ ९॥
पायौ है निज जनम कौं, हम्ह पूरन फल आज॥
हुव दरसन तुम्हसैन कौं, बिनु कछु कियै इलाज॥ १०॥
तुम्हसै बैस्नव मुनिन कौं, दरसन अति सुषसार॥
सौ दुरलभ कहियतु प्रगट, अमरनिहूं निरधार॥ ११॥
जिन्ह प्रांनिन तपस्या अलप, कीनी है जग ठांहिं॥
अरु दैषत भगवांन कौं, इक प्रतिमांहीं मांहिं॥ १२॥
साधुन कौं प्रभु रूप सम, बै जु गनत है स्वामि॥
अरु पूजा करि दुहुन की, नित प्रति करत प्रनांमि॥ १३॥
तिन्हकौं तुम्हसै मुनिन कौं, दर्सन परसन प्रनांम॥
सपरस पूजा चरन की, दुरलभ है सुषधांम॥ १४॥
जलमय तीरथ अरु सिला, मृतिका मय सुर मूर्ति॥
तिह्नकौं पूजै तैं न ह्वै, बैगिहिं पबित्र सुपूर्ति॥ १५॥
साधुनि दरसन करतही, बैगिहिं पबित्र सु हौत॥
प्रांनी कैं किहुं पाप कौं, फेरि न हौय उदौत॥ १६॥
नभ नछत्र रवि ससि अगनि रु, भुव जल पानी पौंन॥
मन संजुत इह्नकी कियैं, पूजा भांति सुठौंन॥ १७॥
अैं प्रांनी कैं पाप कौं, बैगि हरत हैं नांहिं॥
साधुनि पूजे छिनकहूं, पाप प्रलै ह्वै जांहिं॥ १८॥

वात रु पित कफ की वनी, है मानुष की दैहि॥
ताकौं अपनीं मांन नर, करत कुटंब सनैहि॥१९॥
अरु जलहीं तीरथ गनत, प्रभु प्रतिमांही मांहिं॥
साधुन कौं प्रभु रूप सम, बै जु गनत हैं नांहिं॥२०॥
तै नर षर अरु स्वांन सम, अग्यांनी जगमांहिं॥
साधुन प्रभु तीरथ गनत, तै नर धन्य कहांहिं॥२१॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि सुनि मुनि सबै, अैसै प्रभु कैं बैंन॥
अचिरज किय अैसी अस्तुति, क्यूं प्रभु करत सुषैंन॥२२॥
जांनि गयै मुनि जन बहुरि, जगतहिं सिषवन काज॥
अस्तुति हम्हारी करत हैं, प्रभू गरीब निबाज॥२३॥

॥ श्री मुनय ऊचुः॥

फिरि हँसकैं बौलत भयै, मुनि जन अैसै बैंन॥
धन्य धन्य करता पुरष, कृस्न कंवल दल नैंन॥२४॥
बड्डै कहावत है हम्ह सु, बीच सकल संसार॥
तैहूं प्रभु की प्रकृति करि, मुहित हौत निरधार॥२५॥
सौ तुम्ह छिपि निज प्रकृति सौं, मनुष भाव दरसात॥
चरित बिचित्र सु रावरै, किहुँ पैं बरनि न जात॥२६॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस अैं, रूप धार तुम्ह तीन॥
उतपति पालन अरु प्रलै, जग कौ करत प्रवीन॥२७॥
सर्व रूप या जगत मैं, तुम्हहीं हौ भगवांन॥
ज्यौं मृतका कैं पात्र हैं, मृतका रूप निदांन॥२८॥
अदभुत चरित सु रावरै, हे स्वामी करतार॥
पाय सकत है नांहिं कौं, तुम्ह लीला कौ पार॥२९॥
तौहू साधुन की रिछ्या, करिबै भलैं प्रकार॥
सतगुन अंगीकार कर, धरत आपु अवतार॥३०॥
वेद मार्ग बरनास्त्रमनि, रिछया करत मुरारि॥
साधुन कौ सुष दैत हौ, दुष्टन कौं संघारि॥३१॥
तपस्यां संजम कारिज रु, कारन ब्रह्म सरूप॥
कह्यौ बेद मधि बेद सौ, है तुम्ह हिर्दै अनूप॥३२॥
तातैं द्विज वां बेद कैं, पढनहार पहचांनि॥
आपु बडाई करत हौ, ब्रह्मनि देव भगवांनि॥३३॥
मिथ्या तपस्यां जनम द्रिग, सबकौं फल हम्ह आजि॥
पायौ है निरधार करि, गयै पाप सब भाजि॥३४॥

तुम्हकौं नित्य प्रनांम है, कृस्न कुंवर भगवांन॥
चरन कंवल प्रभु रावरै, दैन महा सुषदांन॥ ३५ ॥
छिपवत निज महिमां सु तुम्ह, माया जोग प्रभाय॥
हौ परमातम ब्रह्म हरि, कृस्न कुंवर सुषदाय॥ ३६ ॥
नृपति निकटवाती सु अै, जादव सब बिनु ग्यांन॥
माया मोहित हौय कैं, सकत न तुम्हहिं पिछांन॥ ३७ ॥
तुम्हहीं हौ परमातमा, तुम्हहीं काल सरूप॥
तुम्हहीं ईस्वर जगत कैं, हे श्रीकृस्न अनूप॥ ३८ ॥
ज्यौं सुपनैं मैं रूप बहु, झूठौ अपनैं मांनि॥
निज सरूप मनुष कौं सौ, भूलत बिनु गुर ग्यांनि॥ ३९ ॥
झूठै बिषयन मैं त्यौंहिं, नर आसक्ति न हौय॥
माया सौं मोहित भयौ, सुधि नहिं राषत कौय॥ ४० ॥
तातैं आत्म सरूप तुम्ह, जिनकौ जांनत नांहिं॥
मुक्ति गैह नर दैह तिहँ, मूरष बिथा गमांहिं॥ ४१ ॥
जिन्हमैं गंगा बसत है, पाप दैत है टारि॥
अैसै तुम्ह पद कंवल हम्ह, देषै अति सुष सारि॥ ४२ ॥
इन्हहीं कौं जोगैस निज, हिर्दै धरत है ध्यांन॥
तासौं हौय पबित्र बै, पावत पूरन ग्यांन॥ ४३ ॥
कियै तुम्हारी भगति कौ, जीव मुक्ति ह्वै जात॥
तातैं अनुग्रह करि हम्हहिं, दैहुँ भगति बिषयात॥ ४४ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

श्री सुक कहत कि प्रभू की, मुनि करि अस्तुति सुढार॥
कृस्न जुधिष्टिर राष्ट्रधृत, पूछै फिरि वां बार॥ ४५ ॥
मुनिन मनोरथ किय चलन, निज निज आश्रम ठांम॥
तिह्नकौं लषि बसुदेव जू, बोलै करि परनांम॥ ४६ ॥

॥ वसुदेव उवाच ॥

हे रिष तुम्हहिं प्रनांम है, तुम्हहौ देव सरूप॥
संग तुम्हारै तैं मनुष, पावत भैदि अनूप॥ ४७ ॥
अैसौ करम बताइयै, जास करम अनुसार॥
छूटि करम बंधन सबै, पइयै मुक्ति सुढार॥ ४८ ॥

॥ श्री नारद उवाच ॥

इहि सुनि कैं नारद मुनी, बोलै अैसै बैंन॥
हे ब्राह्मन हौं कृस्न कौं, मानुषि जांनि सुषैंन॥ ४९ ॥
हम्हकौं मारग मुक्ति कौं, पूछत है बसुदैव॥
ताकौं मति मांनौ कछू, निज चित अचिरज भैव॥ ५० ॥

उत्तम जनहूं जो रहै, निकट किहूं कैं जाय॥
तौ वांकौ आदर नांहिं, हौत सु औसरि पाय॥५१॥
ज्यौं गंगावासी मनुष, तजिकैं गंग सथांन॥
और ठौर कौं जात है, करिबै आपु सिनांन॥५२॥
काल रूप उतपति प्रलै, पुनि गुन प्रकृति प्रभाय॥
आपहुँ औरहुँ तैं सु जिहिं, प्रभु कौं ग्यांन न जाय॥५३॥
क्लैस करम फल क्लैस कै, माया गुन निरधार॥
जिन्ह सौं जा प्रभु कौ कबहुँ, मिटत न ग्यांन प्रकार॥५४॥
जे ईस्वर है अैक है, तैं अब नर वपु धारि॥
छिपै रहत है करि बउत, लीला प्रभू मुरारि॥५५॥
जइसै रवि घन ग्रहन सूं, ढपि न दिषाई दैत॥
त्यौंहीं प्रभु दीसि न परत, मनुष भाव कैं हैत॥५६॥
फिरि सब मुनि बसुदैव सौं, बोलै बचन सुतौर॥
रांम सांम अरु सब नृपति, सुनत रहै जिहिं ठौर॥५७॥
सकल करम जिहिं करम सूं, मिटै सु है इहि कर्म॥
जिग्य करिकैं भगवांन कौ, प्रसंन करै तजि भर्म॥५८॥
सास्त्र सोधि कैं कविजनन, करि बिचार मन मांहिं॥
दियौ बताय सुजिग्यहीं, करिबौ उत्तम जु ठांहिं॥५९॥
याही सौं चित नृमल ह्वै, इहिहीं मुकति उपाय॥
अरु याही सौं धरम कौ, हौत उदौत सुभाय॥६०॥
ग्रिहस्थ द्विजन कौं है इहीं, मारग भलौ निदांन॥
निरमल मन करिकैं करै, जिग्य प्रभु निमत सुजांन॥६१॥
जिग्य दांन करि द्रव्य इछा, छौडि दैहिं बुधिवांन॥
ग्रिहस्थाश्रम करि तिय तजै, पुत्रननि चाह विनांन॥६२॥
सुवर्गहुँ चंचल जांनि कैं, तिहिं ईछा तजि दैहिं॥
प्रसंन हौय भगवांन अरु, इछा चित धरि लैहिं॥६३॥
निश्चै करिकैं हौत है, तीन बरन कौं रीन॥
सुर रिन रिषरिन पितर रिन, समझहुँ भेद प्रवीन॥६४॥
ब्रह्मचर्ज करिकैं मिटै, रिषरिन भलैं प्रकार॥
सुत उपजायै तैं मिटत, पितरन रिन निरधार॥६५॥
दैवतांन कौं रिन मिटत, जिग्य करन अनुभाय॥
दीनै बेद बताय अैं, तिहुँ रिन मिटन उपाय॥६६॥
रिष पितरन कौ दियौ तुम्ह, रिन सब भलै मिटाय॥
अब जिग्य करि रिन सुरन कौं, दैहुँ मैटि सुभ भाय॥६७॥

प्रभु पूजन कीनौं महा, तुम्ह तौ हे बसुदेव॥
तातैं प्रगटै गेह तुम्ह, सुत ह्वै प्रभू अजेव॥ ६८॥

॥ श्री सुक उबाच॥

सुक कहत कि सुनि रिष बचन, करि बसुदैव प्रनांम॥
कह्यौ कि कराहुँ जिग्य हे, मुनि तुम्ह याही ठांम॥ ६९॥
अति उत्तम सामग्रीन सूं रिष, जन बिच कुर षैत॥
करवावत भयै जिग्य बहु, प्रभू प्रसंनता हैत॥ ७०॥
जिग्य दिछा बसुदैव लिय, तिहँ बेरां जुत चाहिं॥
न्हाय पहिरि भूषन बसन, जादव बैठै आहिं॥ ७१॥
अरु अस्त्री बसुदैव की, पटभूषन तन धारि॥
जिग्य साला आई लियै, पूजा सौंज सुढारि॥ ७२॥
संष नगारै मृदंग डफ, ढोल भैरि सहनाय॥
इन्ह आदि जु बाजै बउत, बाजन लगै सुभाय॥ ७३॥
नृतकारी नाचत भयै, गुनी करत भय गांन॥
मागध बंदीजन अस्तुति, लागै करन सुजांन॥ ७४॥
दीनौं द्रिग बसुदेव कै, काजर भलै बनाय॥
मांषन ल़ायौ देह मैं, बेद रीत अनुभाय॥ ७५॥
अस्त्री अष्टदसहिं सहित, सौभित भौ बसुदेव॥
ज्यौं तारन बिचि चंद्रमा, सौभित आछै भैव॥ ७६॥
पहरै भूषन बसन तिय, दरसत सुंदर रूप॥
सौभित औढै चर्म मृग, श्री बसुदैव अनूप॥ ७७॥
पहरै जिग्य करता द्विजनि, रतन आभरन अंग॥
सौभै द्विज जिग्य इंद्र कै, अैसै लसत सुवंग॥ ७८॥
रामकृस्न बंधुनि सहित, अरु तिय सुतनि समेत॥
अति उछरंग उमंग सौं, भयै महा छबि देत॥ ७९॥
जिग्य अग्नि हौत्रादि द्विज, करत भयै सुभ भाय॥
अरु प्राकृत वैकृत दुहू, बिधि किय जिग्य बनाय॥ ८०॥
जिग्य करता द्विज बरन कौं, दछिनां दई सुढार॥
भूषन कन्या गाय जुत, धन दीनौं अनपार॥ ८१॥
कुरषैत्रहिं कैं मध्य पुनि, करि बसुदैव सिनांन॥
पहरि बस्त्र भूषन सुभग, सोभै भल उनमांन॥ ८२॥
स्वान आदि लौं जीव सब, तृपत अंन सौं कीन॥
कुटंब सहित बंधुन कौं, करि आदर धन दीन॥ ८३॥
कुर बिदर्भ कैकय संजय, कौसल कासी ठांम॥
इन्ह दैसन कैं नृपति अरु, सभासदहुँ बहु नांम॥ ८४॥

जिग्य करावनहार द्विज, पितर देव रन भूत॥
बिद्याधर गंधर्व रु जछि, चारन मागध सूत॥८५॥
इह्नकौं नृप बसुदेव जू, दीनौं धन अनपार॥
करत अस्तुति जे गेह निज, जात भयै वां बार॥८६॥
पांडव धृतराष्ट्र रु बिदुर, कुंती भीषम द्रौंन॥
सुहृद संबंधी बंधु मुनि, व्यास नार्द बुधि भौंन॥८७॥
अपन बंधु जादवन सौं, मिलि मिलि प्रीति प्रकार॥
बिरह बिकल ह्वै कैं चलै, निज निज ग्रिह उहिं बार॥८८॥
ब्रजपति की ग्वालन सहित, पूजा करि सुभ रौस॥
रांमकृस्न उग्रसैंन मिलि, राषै कैतक द्यौस॥८९॥
हुव मनोर्थ बसुदेव कैं, पूरन आछै भैव॥

॥ श्री वसुदेव उवाच॥

ब्रजपति कौ कर गहि उमगि, बोलै नृप बसुदैव॥९०॥
रच्यौ बिधाता नैह कौं, बंधन अैहौ भ्रात॥
सौ जोगैसर सुरनहूं, तैं न छुटत बिषयात॥९१॥
भ्रात तुम्हारे हम्ह कछू, करि न सकै उपकार॥
अरु तुम्हहीं राषत रहे, हम्ह सौं प्रीति अपार॥९२॥
लछमी कै मद सौ भयै, हम्ह तौ अंध अग्यांन॥
तातैं तुम्ह उपगार कछु, करि नहिं सकै निदांन॥९३॥
राज रु लछमी हौहुँ मति, किहूं पुरष घर मांहिं॥
अंध हौय धन राज सूं, दैषत मित्रननि नांहिं॥९४॥

॥ श्री सुक उवाच॥

अैसै नृप बसुदैव ह्वै, बिह्वल प्रीति प्रभाय॥
रुदन करत चुप ह्वै रहे, द्रिग अरु सीस नवाय॥९५॥
रांमकृस्न बसुदेव अरु, ब्रजपति आपस मांहिं॥
परम प्रीति कै बंध सौं, छौडि सकत है नांहिं॥९६॥
आज चलै कालहिं चलै, अैसौ करत बिचार॥
तीन महीनां लौ वांह, बसत भयै बसि प्यार॥९७॥
पटभूषन बहुधन दियौ, ब्रजपति कौ बसुदैव॥
सौ लैकैं ब्रज कौ चलै, बिछुरै लहि दुष भैव॥९८॥
ब्रजपति गौपी गौप तिन, मन लाग्यौ हरि मांहिं॥
सौ फिरि छूट्यौ नांहि लै, तन आयै ब्रज ठांहिं॥९९॥
अैं बंधुन सौं मिलि चुकै, बरिषा आई जांनि॥
प्रभू पधारै जादवनि, जुत द्वारका सथांनि॥१००॥

जिग्य भयौ बंधुनि मिलै, तीरथ जात्रा मांहिं॥
सौ सबहिंन अपनैंन सौं, कही द्वारका ठांहिं॥ १०१॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते चतुरसीतितमोऽध्यायः ॥ ८४॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ पंचासीतितमोऽध्यायः ॥

(श्रीभगवान के द्वारा वसुदेव जी को ब्रह्मज्ञान का उपदेस तथा
देवकी जी के छः पुत्रों को लौटा लाना)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा – सुक कहत कि बसुदैव कौ, इक दिन कृस्न कुमार॥
करत भयै उठि प्रातही, नमसकार जुत प्यार॥ १॥
सुनि कहि गयै हुतै कि है, ईस्वर अैं श्रीकृस्न॥
अरु बड़सैहीं चरित लषि, किय बिस्वास ह्वै प्रस्न॥ २॥

॥ श्री बसुदेव उबाच॥

तब बोलै बसुदैव जू, अैसै बचन सुढार॥
कृस्न कृस्न बलिदैव तुम्ह, ईस्वर हौ निरधार॥ ३॥
जांह रु जाकरि जा निमिति, जातै जो कछु हौत॥
सौ सब तुम्हहीं हौ सही, प्रगट रूप ऊदौत॥ ४॥
तुम्हहीं सिरज्यौ है इहै, जगत अनैक प्रकार॥
काल रूप ह्वै करत हौ, फिरि तुम्हहीं संघार॥ ५॥
ग्यांन क्रियाहूं सक्ति करि, ह्वै प्रविष्ट या मांहिं॥
पालन सबहीं जगत कौ, आछै करत सदांहिं॥ ६॥
स्त्रिजनहार संसार कै, सूत्र रूप प्रानादि॥
तैं जड़ तुम्ह चैतन्य हौ, प्रभू अनंत अनादि॥ ७॥
तुम्ह चैतन्य तासौ भलै, उन्ह मैं चैतनताय॥
तातै बै निरधार करि, पराधीन सुकहाय॥ ८॥
ससि मैं कांति रु छटा मैं, प्रभा तैज रवि मांहिं॥
सत्ता मधिहिं उडगनन कैं, तुम्ह हौ प्रभू सदांहिं॥ ९॥
स्थिरतापनौं जु गगन मैं, गंध सु प्रिथवी मध्य॥
जल मैं त्रिपति जिवायवौ, रस तुम्हहीं जु प्रसध्य॥ १०॥
है बल चैष्टा वौज वच, पवन सु तुम्हहीं सांम॥
बहु प्रदेस है दिसन मैं, सौ तुम्हहीं बहु नांम॥ ११॥

स्फोट नाद आंषर अवर, आकृति बैष्रि उंकार॥
तुम्हहीं हौ निश्चै प्रगट, करता पुरष उदार॥ १२॥
तुम्हहीं हौ इंद्रीन कै, परकासक अरु दैव॥
बुद्धि मैं ग्यांन रु जीव मैं, तुम्हहीं स्मृति सुभैव॥ १३॥
मध्य पंच महाभूत कै, हौ तामस अहंकार॥
रजोगुनी अहंकार हौ, इंद्रिन मधि निरधार॥ १४॥
दैवतांनि कै मध्य हौ, सतोगुनी अहंकार॥
माया जीवन मध्य अै, सब तुम्हहीं करतार॥ १५॥
जइसै माटी सत्य है, घट झूठौ निरधार॥
सकल पदारथ झूठ है, तुम्ह सांचै सुषसार॥ १६॥
सत रज तम तिहु गुनन की, सक्ति सु माया आंहिं॥
जाकरि कै इहि हौत सब, निश्चै तुम्हहीं मांहिं॥ १७॥
सूछम गत है रावरी, बीचि सु या संसार॥
मूरष न जांनै हौत है, जनम मरन बहुबार॥ १८॥
दुरलभ मानुष दैह इहि, हम्ह भागन तैं पाय॥
तुम्ह माया बसि जगत बिच, रचि कैं दई बताय॥ १९॥
इहि म्हैं अैं मो पुत्रहिं अैं, तिय धन दासी दास॥
अैसै तुम्ह बांध्यौ जगहिं, बिच सनैह की फांस॥ २०॥
प्रक्रति पुरष दुहु रूप प्रभु, तुम्हहीं हौ साष्यात॥
दूरि भार भुव कौ करन, प्रगटै हौ दुहु भ्रात॥ २१॥
हे दीनन कैं बंधु प्रभु, असरनसरन क्रिपाल॥
टारन भय संसार कौ, तुम्ह पद कंवल रसाल॥ २२॥
तिन्हकैं हूं आयौ सरन, धरि चित अधिक उमाह॥
तौ मो या संसार कैं, पार करहुँ जगनाह॥ २३॥
तुम्ह उपजै ताही समैं, कही हुती इहि बात॥
करबै रिछया धरम की, हौं प्रगटयौ बिष्यात॥ २४॥
तुम्ह निरलैप अकास सम, धरत तजत बहुरूप॥
जांनि सकत कौ नांहिं तुम्ह, माया भैद अनूप॥ २५॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि पितु कौ बचन, अैसौ सुनि भगवांन॥
हँसि कै मधुरी वांनि सौं, बोलै सांम सुजांन॥ २६॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

अहौ पिता तुम्हरै सु हम्ह, हैं बालक इहि जांनि॥
तिह्न सौं आप सु कहत हौ, परम सत्य इहि ग्यांनि॥ २७॥

ब्रह्म रूप जइसै हम्हहिं, तुम्ह जांनत हौ तात॥
तइसै ब्रह्म सरूप सब, जगतहिं लषौ बिष्यात॥ २८॥
स्वयं जोति न्यारै रु निति, निरगुन आत्मा अैक॥
आपहि जगत बनाय कैं, ता मधि रूप अनैक॥ २९॥
इह्नि सब देहादिकन मैं, सगुन रु निरगुन भाय॥
रूप अनैक सुब्रह्महीं, प्रगट परत दरसाय॥ ३०॥

॥ श्री सुक उबाच॥

सुक कहत कि भगवांन कै, अैसै सुनि कैं बैंन॥
प्रसंन हौय बसुदेव जू, हँसि चुप रहै सुषैंन॥ ३१॥
भैद बुद्धि बसुदैव कैं, मन तैं गई पलाय॥
तत्त्व ग्यांन पूरन प्रगट, हौत भयौ सुषदाय॥ ३२॥
कियौ देवकी ता समैं, चित बिचार या भाय॥
मर्यौ पुत्र गुर कौ जु दियौ, म्हैरे पुत्रनि सु ल्याय॥ ३३॥
पुत्र देवकी कैं जू षट, प्रथम हतै हे कंस॥
तिह्न सुधि करि रौवन लगी, मोह बिबस बढि संस॥ ३४॥

॥ देवक्युवाच॥

पुत्रननि सौं बौली कि हे, रांमकृस्न सुषसार॥
आदि पुरष ईस्वर तुम्हहिं, म्हैं जांनै निरधार॥ ३५॥
मिट्यौ सत्वगुन काल बसि, चलत कुमार्ग नृपाल॥
तातैं तुम्ह प्रगटै हरन, भुव कौ भार बिसाल॥ ३६॥
ब्रह्मादिक गुन प्रकृति कैं, अंस तुम्हारै आंहिं॥
तिन्हसौं जग उतपति प्रलै, पालन हौति सदांहिं॥ ३७॥
मर्यौ पुत्र पुत्र जु गुर कौ हुतौ, सौ जमपुर तैं ल्याय॥
गुर दछिनां मैं तुम्ह दियौ, हे पूरन सुषदाय॥ ३८॥
ईस्वर जोगैसरन कै, तुम्ह हौ कृस्न कुमार॥
मो मनोर्थ हूं कीजियै, पूरन भलैं प्रकार॥ ३९॥
दुष्ट कंस मारै हुतै, मो सुत पहली बार॥
तिह्नैं दैषिबै कौ भयौ, मो मनोर्थ बसि प्यार॥ ४०॥

॥ श्री सुक उबाच॥

रांम सांम सुनिकैं बचन, माता कौं या भाय॥
माया बलि सौं सुतल मैं, प्राप्त हौत भय जाय॥ ४१॥
तहँ इन्हकौं दरसन कियौ, परम भगत बलिराय॥
जांनि अपुन अरु जगत कै, इष्टदैव सुषदाय॥ ४२॥
दरसन सौं आनंद लहि, मगन भयौ मनमांहिं॥
करि प्रनांम बैठारिहूँ, ऊंचै आसन ठांहिं॥ ४३॥

चरन धौव भगवांन कैं, जल राष्यौ निज सीस॥
भूषन बस्त्र सुगंध सौं, पूजै प्रभु जगदीस॥ ४४॥
नृप बलि प्रभु पद परस सौं, मगन भयै बढि प्रेम॥
गदगद कंठ रुमांच तन, ह्वै बोल्यौ लहि षेम॥ ४५॥

॥ बलिरुवाच॥

तुम्ह अनंत हौ बड्डे हौ, हौ सबकै करतार॥
करनहार हौ कृस्न सुभ, सांष्य जोग बिसतार॥ ४६॥
अहौ ब्रह्म परमातमां, तुम्हकौं है परिनांम॥
दुरलभ है प्रांनीन कौं, तुम्ह दरसन अभिरांम॥ ४७॥
रजोगुनी रु तमोगुनी, हम्ह तौ हैं निरधार॥
तिन्हकौं दरसन रावरौ, हुव भागन अनुसार॥ ४८॥
राछिस दांनव दैत सिध, बिद्याधर रु गंधर्ब॥
चारन भूत पिसाच जछि, प्रथम बिनायक सर्ब॥ ४९॥
अैसै जीव तमौगुनी, धरि अग्यांन कौं घैरि॥
तुम्ह परमातमा सुध नित, तिनसौं राषत बैरि॥ ५०॥
तिन्हमैं कितैक द्वैषकरि, करि करि ध्यांन सजाप॥
मिलै तुम्हहिं मैं ज्यौं नहिंन, मिलै अमर बिन जाप॥ ५१॥
तुम्ह माया कौं जांनत न, बड्डै बड्डै जोगैस॥
तौ हम्ह जीव तमोगुनी, कहा जांनै बिस्वैस॥ ५२॥
तातैं हम्ह परि प्रसंन तुम्ह, हौहुँ कृस्न करतार॥
ग्रेह कूप तैं कढि दैहुँ, भगति तुम्हहिं सुषसार॥ ५३॥
अरु साधुन कै संगही, मधिहूं रहूं निदांनि॥
अैसी कीजै हे प्रभु, मोहि दास निज जांनि॥ ५४॥
तुम्ह जीवन कै हौ प्रभू, हम्हहिं करौ उपदैस॥
मांनै तुम्ह उपदैस तिहँ, रहै न बंधन लैस॥ ५५॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

इहि सुनि प्रभु बोलै कियौ, स्वायंभू मनु मांहिं॥
रिषी मरीच तैं पुत्र छह, हुव उरणाया गर्भाहिं॥ ५६॥
चतुरानन मोहित भयौ, स्वसुता सौ जिहँ बार॥
हँसै हुतै बैहिं पुत्र षट, कीनौं कछु न बिचार॥ ५७॥
तबहीं माया जोग सौं, हर्नैकस्यपु कैं ग्रैह॥
प्रगट भयै बैहीं छ सुत, पाय आसुरी दैह॥ ५८॥
बहुर्यौं बै प्रगटत भयै, उदर दैवकी मांहिं॥
उन्हिं पुत्रननि कौं दैवकी, सौच करत हिय ठांहिं॥ ५९॥

पुत्र छहौं है बैहिं सही, अबै तुम्हारै पास॥
तिन्हकौं हम्ह लै जांहिगैं, मिटन जननि दुष त्रास॥ ६०॥
घ्रणी समर उदगीथ अरु, छुद्रभृत परिस्वंग॥
पतंग सहित इन्ह छहुँन कौं, श्राप हौयगौ भंग॥ ६१॥

॥ श्री सुक उवाच॥

ऐसै प्रभु कै बचन सुनि, बलि फिरि पूजा कीन॥
अरु उन्हहिं पुत्र छहौंन कौं, ल्याय प्रभू कौं दीन॥ ६२॥
उन्ह छहूंनि लैं द्वारका, आयै कृस्न कुमार॥
दियै दैवकी मातु कौं, बंदन करि करतार॥ ६३॥
पुत्रननि लषि निज दैवकी, बही स्तननि पय धार॥
गौदी मैं लै मिलि भई, अधिक प्रसंन वां बार॥ ६४॥
करवावत भइ पांन पय, धरिकर पुत्रननि सीस॥
हुव प्रभु माया सौं मुहित, माता बिसवाबीस॥ ६५॥
प्रथम दैवकी कौं कियौ, स्तन पांन भगवांन॥
फेरि प्रसादी पय पियौ, उन्ह छहुं सुधा समांन॥ ६६॥
अरु सपरस प्रभु अंग कौं, हुव ताकै अनुसार॥
उन्ह छहूँन उर प्रगट भौ, ग्यांन महा सुषसार॥ ६७॥
रांम सांम बसुदैव अरु, दैवकि कैं पद बंदि॥
सबकैं दैषत सुवर्ग छहु, गयै हिर्दै आनंदि॥ ६८॥
लष्यौ दैवकी पुत्रनि मो, आयै रु रहै जात॥
जांनि गई हरि की रची, माया है बिषयात॥ ६९॥
ऐसै चरित अनैंक है, प्रभु कै बिच संसार॥
तिन्हकी गिनती करि कौउ, नहिंन सकै निरधार॥ ७०॥
सूत कहत इहि प्रभु चरित, पापहिं मैटनहार॥
बरनन कीनौं ब्यास जू, करि आछै बिसतार॥ ७१॥
याहि सुनैं सौ प्राप्त है, प्रभू लौक कौ जाय॥
सकल करम बंधन मिटै, लहै मोद अधिकाय॥ ७२॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते पंचासीतितमोऽध्यायः ॥ ८५॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ षडसीतितमोऽध्यायः ॥

(सुभद्रा हरण और भगवान् का मिथिलापुरी में राजा जनक और श्रुतदेव ब्राह्मण के घर एक ही साथ जाना)

॥ राजोवाच ॥

दोहा - नृप पूछत है म्हैं सुन्यौ, चाहत इहै चरित्र॥
सौ आछै बरनन करौ, हे मुनि परम पवित्र॥ १॥
रांम सांम की बहन जो, जास सुभद्रा सुनांम॥
ताकौं अरजुन ब्याहि कैं, कइसै ल्यायै धांम॥ २॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

सुक कहत कि चहुँ दिसनि फिरि, लषि बहु धरम निवास॥
तीरथ जात्रा पार्थ करि, आयै छैत्र प्रभास॥ ३॥
तांह अरजुन अैसी सुनी, दुरजोधन कौं चांहिं॥
रांम सांम सुभद्रा बहनि, दैहैं भलैं बिबांहिं॥ ४॥
धरि संन्यास त्रिदंड कौ, इहि सरूप उहिं बार॥
लैंनहिं सुभद्रा द्वारका, आयै पांडु कुमार॥ ५॥
साधुन अपनौं काज जहँ, किय चौमासै वास॥
पुरवासिन आदर बउत, कीनौं सहित हुलास॥ ६॥
अरु कीनौं बलिदैव जू, आदर अति हित भाय॥
अरजुन किहुँ जांनिन पर्यौ, संन्यासी दरसाय॥ ७॥
भोजन करवावनि उमगि, अैक दिनां बलिरांम॥
अरजुन कौं ल्यावत भयै, हित जुत अपनैं धांम॥ ८॥
तांह सुभद्रा सु कन्यका, दैषी परम रसाल॥
तासौं करि अति प्रीत द्रिग, प्रफुलित हुव ततकाल॥ ९॥
अरु मन अति चंचल भयौ, तन सुधि दई बिसारि॥
बढ्यौ प्रेम विह्वल भयौ, कन्या सुभग निहारि॥ १०॥
पुनि अरजुनहूं कौ महा, सुंदर लषि वां बारि॥
सौभद्राहूं कौ जु भयौ, प्रीति मनोर्थ सुढारि॥ ११॥
करि कटाछि मुसकाय कैं, लषि रहि अरजुन वौर॥
प्रीत छिपाई छिपत नहिं, कीनै जतन करौर॥ १२॥
तब अरजुन दैषत समैं, अति कामातुर हौय॥
दांव लहूं तौ जाहुँ लै, का करिहैं मो कौय॥ १३॥
इक दिन सुर जात्रा हुती, रथ चढि कैं तिहि ठांहिं॥
गई सुभद्रा मातपिता, कृस्न भ्रात मति मांहिं॥ १४॥
तहिं अरजुन हरि लै चल्यौ, रथ चढि सरधनु साजि॥
जुध करिबै आयै तिह्नै, जितै केउ गय भाजि॥ १५॥

इहि सुनि कैं बलिदैव जू, कियौ क्रौध अधिकाय॥
छुऐ चरन जब कृस्न जू, पुरजन दिय समझाय॥ १६॥
क्रौध मिट्यौ तब रांम कौं, सीतल भयौ सुभाय॥
रांम सांम दायुज बउत, पाछै दयौ पठाय॥ १७॥
सुक कहत कि श्रीकृस्न कौं, भगत धरम कौ धांम॥
बसै बीच मिथिलापुरी, द्विज श्रुतदैव सुनांम॥ १८॥
रह्यौ ग्रिहस्थ अरु सहज मैं, प्राप्त हौय जो आय॥
ताही मैं निरबाह निज, करै सत्व गुन भाय॥ १९॥
अरु नृप मिथलापुरी कौ, नांम जास बहुलास॥
परम भगत माया रहित, हित जुत प्रभु कौं दास॥ २०॥
उन्ह दुहुं तैं अति प्रसंन ह्वै, लै मुनिजन निज संग॥
रथ चढि प्रभु मिथलापुरी, चलै सहित उछरंग॥ २१॥
ब्यास अत्रि नारद रु च्यवन, वांमदैव मैत्रैय॥
असित अरुन सुरगुर कणव, सुक द्विज रांम सभैय॥ २२॥
इतनैं मुनि भगवांन कै, संग हुतै वां बार॥
दैस दैस कैं नरन किय, पूजा भलैं प्रकार॥ २३॥
मुनिन सहित श्रीकृस्न जू, सौभित भयै सुभाय॥
ग्रहन बीच ग्रहराज ज्यौं, लहत सौभ अधिकाय॥ २४॥
धन्व जांगल आनर्त कुरु, कंक मत्स पांचाल॥
कौसल कैकय कुंति मधु, अैसै दैस बिसाल॥ २५॥
तिनकैं वासी प्रभू कौं, मुष लषि जुत मुसक्यांन॥
प्राप्त परम आनंद कौं, भयै भलैं उनमांन॥ २६॥
हरि दरसनहिं सौं मिट्यौ, नैत्रन कौं अग्यांन॥
अरु उन्हकौं श्रीकृस्न जू, दीनौं पूरन ग्यांन॥ २७॥
सुर नर मुष निज जस बिमल, सुनत जहँ तहँ जु सांम॥
प्राप्त हौत भय जायकै, मिथला नगरी ठांम॥ २८॥
तहिं पुरवासी अरु नृपति, आयै सुनि भगवांन॥
लै पूजा की सौंज सब, आयै समुष सुजांन॥ २९॥
प्रफुलित हुव सबकै हिर्दै, प्रभु कौ बदन निहारि॥
किय प्रनांम करजोरि कैं, महामोद अनुसारि॥ ३०॥
तांह सुबिप्र श्रुतदैव हूं, प्राप्त हौत भौ आय॥
प्रभु आयै करिकैं क्रिपा, नृप द्विज दुहूं जनाय॥ ३१॥
श्रुतदैव रु बहुलास नृप, प्रभु कौं करि परनांम॥
कह्यौ कि प्रभु भोजन करौ, मुनिन सहित हम्ह धांम॥ ३२॥

दैन दुहुनि आनंद प्रभु, द्वै सरूप निज धारि॥
भयै पधारत दुहुनि ग्रिह, करिकैं क्रिपा मुरारि॥ ३३॥
दुरलभ सुननौ नांम जिन, अैसै मुनि अरु कृस्न॥
निज घर आयै जांनि नृप, हौत भयौ अति प्रस्न॥ ३४॥
बैठारै आसन सुभग, लषि लषि भयौ निहाल॥
नैंन सजल हुव भगति सौं, धोयै चरन रसाल॥ ३५॥
चरनौदक सुकुटंब जुत, राष्यौ अपनैं सीस॥
बिधिवत बिधि पूजा करी, मुदित हौय अवनीस॥ ३६॥
धरि निज गोदी प्रभु चरन, दाबत प्रीति प्रभाय॥
सुअमृत सम बोल्यौ बचन, अैसै प्रभुहिं सुनाय॥ ३७॥

॥ राजा बहुलास्व उबाच॥

साछी ब्यापक आतमा, हौ भगवांन सु आप॥
तुम्हहिं भजत हम्ह तिह्नैं दिय, दरसन आप सुजाप॥ ३८॥
लछमी अग्रज बिधिहुं नहिं, प्यारै भगत समांन॥
सत्य करन निज बचन इहि, दिय दरसन भगवांन॥ ३९॥
सांत निकंचन मुनिन तुम्ह, दैत सु अपनौं ग्यांन॥
ध्यांन तुम्हारै चरन कौं, करै सोइ बुधिवांन॥ ४०॥
टारन अघ संसार कैं, निज जस बढवन काज॥
प्रगट भयै जदुवंस मैं, कृस्न गरीब निवाज॥ ४१॥
नारायन भगवांन तुम्ह, कृस्न कुंवर करतार॥
मुनि जुत तुम्हकौं करत हौं, बंदन बारंबार॥ ४२॥
द्वै इक दिनंनि बसिअैं प्रभु, मो ग्रिह कृस्न कुमार॥
कुलहिं पबित्र म्हैरो करौ, निज पद कैं अनुसार॥ ४३॥
अैसै नृप बहुलास कैं, सुनि प्रभु बचन सुढार॥
बसै मिथलवासीन कौं, भलौं करन करतार॥ ४४॥

॥ श्री सुक उवाच॥

अरु ब्राह्मन श्रतिदैव लषि, प्रभु आयै निज गैह॥
प्रभु कौं अरु मुनि जनन कौं, करि परनांम अछैह॥ ४५॥
नृतकरन लाग्यौ उमंगि, परम प्रेम अनुभाय॥
कुस आसन चौकीन पर, बैठारै जुत चाय॥ ४६॥
प्रभु कैं अरु मुनि जनन कैं, धोयै चरन रसाल॥
जुत कुटुंब सिर चरन जल, धरिकैं भयौ निहाल॥ ४७॥
चरनौदक सौं छिरकि ग्रिह, कियै मनोरथ पूर॥
धन्य भाग्य मांनत भयौ, लषि हरि जीवन मूर॥ ४८॥

जल सुगंध मृतका तुलसि, कुस पंकज फल मिष्ट ॥
इन्ह सौं सैवा करत भौ, जांनि प्रभू निज इष्ट ॥ ४९ ॥
सतोगुनी भोजन सुभग, करवावत भौ चांहिं ॥
अरु बिचार ऐसौ कियौ, बिप्र हिर्दै निजू मांहिं ॥ ५० ॥
अंधक कूप ग्रिह मांहिं, हुँ पर्यौ रह्यौ अग्यांन ॥
झूठे सब ब्यौहार कौं, मान्यौ सत्य निदांन ॥ ५१ ॥
करतहिं पवित्र सु जगत कौं, जिन चरनन की रैंन ॥
ऐसे प्रभु मुनिजन सहित, आयै म्हैरे ऐंन ॥ ५२ ॥
सौ इहि अचिरज है बडौ, धन्य धन्य करतार ॥
कीनी मो सै पतित परि, ऐसी क्रिपा अपार ॥ ५३ ॥

॥ श्रुतदेव उबाच ॥

प्रभु सौं अरु मुनिजनन सौं, कहत भयौ श्रुतदैव ॥
परम पुरष प्रभु आजि मुहि, दरसन दियौ अजैव ॥ ५४ ॥
तुम्हहीं या सब जगत कौं, आछी भांत बनाय ॥
बैठे हौ निज सकति सौं, किहुँ न परत दरसाय ॥ ५५ ॥
सुपनैं मैं मनतैं मनुष, ज्यौं बहु बस्त बनाय ॥
तिन्हमैं आपुहिं पैठ कैं, भासत हौ जुत चाय ॥ ५६ ॥
जौ तुम्ह चरित कहै सुनै, पूजै करि परनांम ॥
तिन्हकैं हिय मैं हौत हौ, प्रगट सांम सुषधांम ॥ ५७ ॥
करमन मैं आसक्त जें, तिन्हहुँ हिर्दै कै मांहिं ॥
बसत रहत हौ पैं कबहुँ, दरसावत हौ नांहिं ॥ ५८ ॥
अरु जो प्रभु कैं भगत हैं, तिन्हसौं निकट सदापि ॥
अरस परस ह्वै रहत हौ, करिकैं क्रिपा अमापि ॥ ५९ ॥
निर अहंकारी कौ सुभग, मुकति दैत हौ दांन ॥
अरु अग्यांनी जिवन कौं, दैत जगत जग भांन ॥ ६० ॥
माया अरु अहंकार कौ, करनहार बसि सांम ॥
रोक्यौ सबकौ ग्यांन निज, माया सौं बहु नांम ॥ ६१ ॥
हम्हहिं करौ सिष्या अबै, करैं कहा हम्ह काज ॥
बारबार परिनांम है, तुम्हहिं कृस्न माराज ॥ ६२ ॥
जबलौं दरसन रावरौ, प्रभू दैत हौ नांहिं ॥
तबलौं छुटै कलैस नहिं, प्रांनी कौं जग मांहिं ॥ ६३ ॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

सुक कहत कि प्रभु दास कै, दुष हरता करतार ॥
सुनि ब्राह्मनि श्रुति दैव कैं, सुभग बचन वां बार ॥ ६४ ॥

बोलै अमृत सम सु बचन, पकरि हाथ सौं हाथ ॥
क्रिपा पात्रहिं लषि बिप्र कौं, श्री गौवरधन नाथ ॥ ६५ ॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

हे ब्राह्मन करिकैं क्रिपा, मुनि आयै तौ धांम ॥
जें निज पदरज सौं करत, अतिहिं पबित्र जग ठांम ॥ ६६ ॥
दरसन पूजन परस सौं, बउत दिनन कैं मांहिं ॥
छैत्र तीरथ रु सुरन है, करन पबित्र जु सदांहिं ॥ ६७ ॥
सौ साधुनहीं की क्रिपा, लहि जु पवित्र नर हौत ॥
साधु क्रिपा बिनु कबहुँ कछु, नहिं आनंद उदौत ॥ ६८ ॥
सबतैं ब्राह्मन स्त्रैष्ठ है, कहत सुनिगम जताय ॥
पैं बिद्या तप रु भगति मो, भयैहुं पबित्र कहाय ॥ ६९ ॥
इहै चतुरभुज रूपहूं, तैं प्रिय मुहि द्विज रूप ॥
सर्व बेदमय द्विजहुं मैं, सबै सुरमय सुनूप ॥ ७० ॥
करत अवग्या द्विजन की, मूरष नर जगमांहिं ॥
गुर ब्राह्मन मो रूप है, निश्चै बेद बतांहिं ॥ ७१ ॥
इक प्रतिमांहीं कैं बिषै, मुहि जांनत अग्यांन ॥
या जग कैं कारन सबै, म्हेरौ रूप निदांन ॥ ७२ ॥
अैं मुनि म्हैरे भगत है, तिन्हकौं मो सम जांन ॥
पूजै गौ तो म्हैं अपुन, पूजा लैंहौं मांन ॥ ७३ ॥
करि अवग्यां इन्ह मुनिन की, म्हैरे भगत सतांहि ॥
जें द्विज द्यौ संतापहीं, मुहि हौहिं दुषदांहि ॥ ७४ ॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

सुक कहत कि श्रीकृस्न की, अैसै आग्यां पाय ॥
मुनिन सहित श्रीकृस्न की, पूजा करी बनाय ॥ ७५ ॥
सदगति कौ प्रापति भयौ, प्रभू पूज श्रुतिदैव ॥
लही मुकति बहुलास्वहूं, सदगति करि प्रभु सैव ॥ ७६ ॥
अैसै निज भगतन प्रभू, करि आछै उपदैस ॥
भयै पधारत द्वारका, कृस्न कुंवर अषिलैस ॥ ७७ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते षडसीतितमोऽध्यायः ॥ ८६ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ सप्तासीतितमोऽध्यायः ॥

(वेद स्तुति)

॥ राजोवाच ॥

दोहा - नृप पूछत सुकदेव जू, ब्रह्म रूप अनुसार॥
बचन कहन मैं आवत न, कबहूं किहूं प्रकार॥ १॥
कारिज कारन तैं परै, निरगुन ब्रह्म निदांन॥
ताकै पूरन रूप कौं, कइसैं हौय बषांन॥ २॥
सगुन रूप कौ बेद तौ, आछै सकै बताय॥
तातैं कइसै निरगुनहिं, कहै जु प्रतछि जताय॥ ३॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

इहि सुनिकैं बोलै बचन, श्री सुकदैव सुजांन॥
ईस्वर श्रज्यौ सुजीव कैं, मन बुद्धि इंद्री प्रांन॥ ४॥
भोग करन कैं काज कौं, बुद्धि रची भगवांन॥
अरु सब इंद्री रची जें, करिबै करम विनांन॥ ५॥
मन कौ सृज्यौ सुजांनियै, जनम धरन जग मांहिं॥
मन नहिं ह्वै तौ तुरत हीं, जीव मुकति ह्वै जांहिं॥ ६॥
मुकति हौंन कैं निमत इहि, श्रज्यौ सु ईस्वर प्रांन॥
रौकि प्रांन जोगैस जन, पावत मुकति सथांन॥ ७॥
तातैं दाता मुकति कौं, है इहि निश्चै प्रांन॥
पैं मन इंद्री संग सौं, बहकि जात बिनु ग्यांन॥ ८॥
यौं ईस्वर जीवहिं लयै, बुद्धि इंद्री लौं आदि॥
श्रृष्टि बनावत करत है, बरनन सगुन सुज्यादि॥ ९॥
अैपरि बेद जु करत है, इहि उपदेस अनूप॥
अहे जीव हम्ह तुम्ह दुहू, निरगुन ब्रह्म कैं रूप॥ १०॥
पैं तौ मधि अबिद्या लगी, तातैं जीव कहाय॥
सुग्यांन सुबिद्या है सही, ईस्वर मांहिं सुभाय॥ ११॥
तातैं करता जगत कौं, ईस्वर सगुन कहात॥
सुद्ध रूप दोनौंन कौं, निरगुन ब्रह्म बिष्यात॥ १२॥
अैसी बिधि लषि परत है, निरगुन रूप अग्यात॥
निरगुन ब्रह्महिं और बिधि, कहि न परत साष्यात॥ १३॥
तत्व ग्यांन कौ भेद इहि, बरन्यौ बेदनि मांहिं॥
जथा सकति सौ तुम्हहिं हम्ह, कह्यौ बरनि या ठांहिं॥ १४॥
बड्डै बड्डै हूं यौं कहत, सरधा करि जो यांहिं॥
मन मैं राषै तौ लहै, मुकति महा सु उमांहिं॥ १५॥

इहां कथा इक हम्ह कहत, सौ सुनि जुत अहलाद॥
नारायन कैं और मुनि, नारद कौ संवाद॥ १६॥
नर नारायन रूप द्वै, प्रभु कै परम उदार॥
राजत बद्रीनाथ सुदिस, जहँ इक दिन किहुँ बार॥ १७॥
उन्हकैं दरसन कौं गयै, नारद मुनि जुत चाय॥
भ्रमत भ्रमत बिच प्रिथ्वी कैं, प्रापत भय उहिं जाय॥ १८॥
बै नारायन है प्रगट, सहित धरम अरु ग्यांन॥
भरतषंड मैं तप करत, जग कौ करन कल्यांन॥ १९॥
वासी ग्राम कलाप कैं, मुनि सभ मिलि यां ठौर॥
नर नारायन प्रभू पैं, बैठे निकट सुतौर॥ २०॥
नारद जू तहँ जाय कैं, करत भयै परिनांम॥
महामोद मान्यौ मनहिं, करि दरसन अभिरांम॥ २१॥
अरु इहि पूछी ब्रह्म कौं, निरगुन रूपाकार॥
कइसै बेद बतावहीं, बचनन कैं अनुसार॥ २२॥
तबैं और सब रिषन कैं, सुनतैं ही सुषदैंन॥
नारायन बौलत भयै, नारद सौं यौं बैंन॥ २३॥
जो आगै जन लौक मैं, ब्रह्म मौ कियौ बिचार॥
सौ नारायन नार्द सौं, कहत भयै सुभ ढार॥ २४॥

॥ श्री भगवानुबाच॥

हे नारद जन लौक मैं, अैक समैं किहुँ बार॥
ग्यांन जिग्य सब द्विजन मिलि, कियौ सुतहँ निरधार॥ २५॥
सनक सनंदन सनातन, चौथे सनतकुमार॥
इन्ह च्यारौं बिधि सुवन मिलि, ब्रह्म कौं कियौ बिचार॥ २६॥
प्रभु कौं दरसन करन कौं, उमंगि धारि चित ठांहिं॥
गयै हुतै तुम्ह वां समैं, स्वेत द्वीप कैं मांहिं॥ २७॥
जा समयै सनकादिकन, कीनौं ब्रह्म बिचार॥
इक बक्ता कीनौं रु हुवै, श्रौता तीन सुढार॥ २८॥
बक्ता सौं श्रौता तिहूँनि, पूछ्यौ इही बिचार॥
जो हम्हकौं जु नारद मुनि, तुम्ह पूछत या बार॥ २९॥
हुतै बेद तप मांहिं सम, बै च्यारौं हीं भ्रात॥
सत्रु अरु मित्र उन्हकैं जु सम, है इहि बात बिष्यात॥ ३०॥
तऊ इक कौ बक्ता कियौ, श्रौता भयै सुतीन॥
बक्ता सौं श्रौता तिहूंनि, अैसौ प्रस्न सुकीन॥ ३१॥
निरगुन ब्रह्म सरूप कौं, कइसै बेद बताय॥
तबहिं सनंदन भ्रात यौं, बोल्यौ बचन सुभाय॥ ३२॥

॥ सनन्दन उबाच॥

करिकैं श्रृष्टि संघार प्रभु, जब ईछा निज भाय॥
सोय रहत है जगत करि, निंद्रा भाव जताय॥ ३३॥
जा समयै भगवांन कौं, कहिकैं रूप अपार॥
बेद जगावत है प्रभुहिं, रचिबै श्रृष्टि प्रकार॥ ३४॥
ज्यौं राजा सौवत जबै, प्रात समैं की बार॥
बंदीजन गुन बरनि कैं, जगवत भलैं प्रकार॥ ३५॥
चहूं बेद भगवांन कैं, आगैं अस्तुति करंत॥
सौ अब हम्ह बरनन करत, सुनिअैं नारद संत॥ ३६॥

॥ श्रुतय ऊचुः॥

अहौ अजित काहू कबहुं, तुम्हकौं जीतै नांहिं॥
प्रगट करौ अपनौ सुजस, अब तजिकैं निंद्राहिं॥ ३७॥
सब जीवन की कीजियैं, प्रकृति अबिद्या सुदूर॥
ग्यांन रु आनंद जीव कौं, रोक्यौ तिहुँ गुन पूर॥ ३८॥
तुम्ह षटगुन अइस्वर्ज जुत, माया कैं बसिकार॥
थावर जंगम जियन की, प्रकृति मिटावनहार॥ ३९॥
अरु सबहिंन कौं ग्यांन कैं, तुम्ह दाता करतार॥
परमानंद सरूप हौ, हे अनादि अनपार॥ ४०॥
जुत षटगुन अइस्वर्ज करि, माया अंगीकार॥
जब बिहार तुम्ह करत हौ, रचि संसार प्रकार॥ ४१॥
ता समयै म्हैं हूं कछू, निज मति कैं अनुसार॥
बरनि सकत हौं रावरौ, अदभुत रूप उदार॥ ४२॥
जगत जितौ देष्यौ सुन्यौ, इंद्रादिक लौं आदि॥
सकल ब्रह्महीं है सही, दूजौ है सब वादि॥ ४३॥
प्रलैं समैं केवल सु तुम्ह, ब्रह्म रूप रहि जात॥
अरु बिकार तुम्ह मैं कछू, नहिं बिषयात अग्यात॥ ४४॥
रहौ जगत मैं तबहुँ प्रभु, न्यारै ही हौ आपु॥
तुम्हहीं तैं सब जगत कौं, उतपति प्रलैं सथापु॥ ४५॥
जइसैं माटी तैं बउत, घट उपजत निरधार॥
माटी ही मैं जात मिलि, बहुर्यौ काहू बार॥ ४६॥
तातैं दिष्या बेद कैं, रिष मन बचन प्रभाय॥
करैं किहूं की अस्तुति सौ, तुम्हरी अस्तुति कहाय॥ ४७॥
इंद्रादिक सुरगनहुँ मधि, तुम्हहीं हौ भगवांन॥
ज्यौं कौऊ पग धरै, धरतैं जुदौ न जांन॥ ४८॥

अषिल लौक कैं मैल कौं, निश्चै टारनहार॥
अमृत रूप समुद्र तुम्हहिं, कथा महा सुषसार॥ ४९ ॥
ताकौं जन बुधिवंत करि, सैवन भलैं प्रकार॥
दूरि करत निज पाप बहु, लहै आनंद अपार॥ ५० ॥
प्रभु तुम्ह हौ त्रिगुनात्मक, प्रकृति नचावन हार॥
पूर्न ब्रह्म अंनादि अन, अंत अपार उदार॥ ५१ ॥
रागद्वैष गुन काल कैं, जरा मृत्यु अहंकार॥
टारै अंतहकरन कैं, निज सरूप अनुसार॥ ५२ ॥
अैसै तुम्ह तिन्हकौं अषंड, आनंद रूप सुढार॥
जिन्हकौं जें सैवत सदा, मन बच कैं निरधार॥ ५३ ॥
तिन्हकैं अघ मिट जाहिं सौ, है कछु अचिरज नांहिं॥
करै तुम्हारी भगति जिहिं, जीवन सफल कहांहिं॥ ५४ ॥
भगति तुम्हारी नहिं करै, व्रथा जीवनौ जास॥
ज्यौं लुहार की चाम तै, पबन संग तैं सास॥ ५५ ॥
अहंकार महतत्त्व लौं, आदि तत्त्व चौबीस॥
सिरजत है ब्रह्मांड धरि, क्रिपा रावरी सीस॥ ५६ ॥
पंचकौष निरधार करि, है सरीर या मांहिं॥
कौष अंनमय इक दुतिय, कौष प्रानमय आहिं॥ ५७ ॥
त्रितिय मनोमय कौष है, चौथो अनुभव कौष॥
पंचम है आनंदमय, कौष प्रगट सुभ रौष॥ ५८ ॥
तिन्ह मधि बिच सब कौष मैं, चैतन्यता सुकरंत॥
अरु आनंदमय कौषहूं, तुम्हहीं हौ भगवंत॥ ५९ ॥
अैंपरि इन्ह पांचौन तैं, परै सुद्ध तुम्ह रूप॥
साधन बिनु जांनत नांहिं, बहै सरूप अनूप॥ ६० ॥
है मनिपूरक चक्र इक, उदरहिं मधि सुनिदांन॥
तामैं ब्रह्म उपासना, करत कितक अग्यांन॥ ६१ ॥
सब नाडी जासौं लगी, अैसै हिर्दै सथांन॥
ताकी करत उपासनां, कौइक मनुष अजांन॥ ६२ ॥
स्थित दहर ब्रह्म रूप है, हिर्दै सथांनहिं मध्य॥
कौइक अरुनिहिं तैं करत, तिहं उपास सप्रसध्य॥ ६३ ॥
नाम सुषमना हिर्दै तैं, उच्च तुम्हारौ ठांम॥
जोतिमई मसतक उपरि, सौभित है अभिरांम॥ ६४ ॥
जांह तुम्हारौ ध्यान जें, करत कौउ बुधिवांन॥
तैं फिरि प्रापति मृत्यु कौं, हौतहुँ कबहुँ निदांन॥ ६५ ॥

तुम्हहीं देही बिचित्र इहि, दीनौ प्रगट बनाय॥
तिन्हमैं पैठहिं आप लघु, दीर्घ परहुँ दरसाय॥ ६६॥
तुम्ह तौ सब ठां अैकसै, हौ पावक अनुभाय॥
काष्ट संग सौ अगनि ज्यौं, बउत रूप दरसाय॥ ६७॥
है सरीर झूठै सकल, तिन्ह मैं तुम्ह सत्य रूप॥
सदा अैकरस रावरौ, रहत सरूप अनूप॥ ६८॥
करम कामना करत नहिं, जिन्ह बुधि निरमल हौत॥
तै जन जांनत रावरौ, पूरन रूप उदौत॥ ६९॥
या सरीर मैं जीव तुम्ह, धरनहार सब सक्ति॥
तिह्नैं बषांनत अंस कहिं, कितक मनुष बिच जक्ति॥ ७०॥
बाहरि भीतरि मनुष कौं, झूठौ है आवर्न॥
तत्त्व जीवकौं झूठ अस, जांनि ग्यांन उरधर्न॥ ७१॥
मुकति दैंन तुम्ह पद कंवल, पूरन सुष कैं धांम॥
तिह्नैं भजहिं बिसवास धरि, ह्वै आछै निहकांम॥ ७२॥
दुरलभ है अति कठन है, आत्म ग्यांन सुषसार॥
तातैं जगत उद्धार कौं, तुम्ह धारत अवतार॥ ७३॥
चरित तुम्हारै हे प्रभू, अमृत सिंधु सुषदाय॥
तामैं करत सिनांन जिन, श्रम सब जात पलाय॥ ७४॥
अैसै भगत सुरावरै, मुकति चाहत न फेरि॥
चाहत तुम्ह इक पद कंवल, अति सुषदाता हेरि॥ ७५॥
तुम्ह पद अमृत समुद्र कैं, जें बड्ड बैस्नव हंस॥
तिन्हकौं करहीं संग बै, तजि ग्रिह बंध प्रसंस॥ ७६॥
प्रांनी कौं दै मनुष तन, सकल समझि संजुक्त॥
तुम्ह प्रिय आत्मा चहत हौ, कीनौ याकौ मुक्त॥ ७७॥
अैसै औसर पाय कै, तुम्ह पद भजहीं नांहिं॥
करै लडायौ देह कौ, आर्बल बृथा बितांहिं॥ ७८॥
तै या जग मैं लहत हैं, बुरौ जनम बहुबार॥
भ्रमत फिरै जग बीच निज, बुरौ करै निरधार॥ ७९॥
वसि करि इंद्री पवन मन, जोग करत जनकौय॥
तब तिन्हकौं जो सुद्ध गति, आछै प्रापति हौय॥ ८०॥
सौही गति अरि रावरौ, कंसादिक तजि देह॥
करि करि ध्यान सु रावरौ, पावत भयौ अछेह॥ ८१॥
सेस सरीर सु मांनहै, प्रभु तुम्हरै भुज दंड॥
तिन्ह मैं जन प्रांनीन की, लागत प्रीति अषंड॥ ८२॥

अरु पद पंकज रावरै, सेवत सहित सनेह॥
तिन्ह संजुत हम्ह बेद है, तुम्ह समबिनु संदेह॥ ८३॥
कइसैहूं सुमरन करौ, प्रभू रावरौ कौय॥
तिन्ही उद्धार सुकरत हौ, अति क्रिपाल प्रभु हौय॥ ८४॥
ब्रह्मादिक सुरगन सबै, तुम्हहीं तैं प्रगटाय॥
जीवहुँ कौ उपजन मरन, तुम्ह पाछै दरसाय॥ ८५॥
तुम्ह आगै हौ सबनि तैं, करता पुरस उदार॥
तातै प्रभु रावरी मति, कौ जांनै निरधार॥ ८६॥
तुम्ह करि प्रलै सुजगत कौ, सौवत हौ भगवांन॥
तब कारन महतत्त्व नहिं, काल सास्त्र न रहंत॥ ८७॥
तातैं कइसै जांनहीं, जीव रावरौ रूप॥
हम्हहूं जांनि न सकत हैं, अदभुत भेद अनूप॥ ८८॥
सास्त्र जु वैससिक मध्य यौं, कहत कि इहि संसार॥
आगै नांहिंन रह्यौ अब, उपज्यौ है निरधार॥ ८९॥
न्यायसास्त्र वारै कहत, अैसी भांत बिचारि॥
सकल भेद तुम्ह तैं नहिंन, छिपै किहूं अनुसारि॥ ९०॥
दुष्ष इकबीस प्रकार कै, तिन्हकौं हौत सुनास॥
तब प्रापति ह्वै मुकति की, प्रांनी सहित हुलास॥ ९१॥
अरु जें मांनत भेद भ्रम, आत्मा मध्य निदांन॥
सास्त्र वारै गनत सत्य, सुकरमहीं जु विधांन॥ ९२॥
मीमांसक तै सकल मत, वारै भ्रम अनुसार॥
तुम्हहिं त्रिगुनमय कहत अरु, मांनत है निरधार॥ ९३॥
तुम्हकौं मांनत त्रिगुनमय, अग्यांनी जगमांहिं॥
ग्यांन रूप तुम्ह तिन्हहिं मधि, त्रिगुन संभवै नांहिं॥ ९४॥
झूठौ इहि सब जगत सौ, भासत सत्य निदांन॥
तुम्ह सत्ता सौं है प्रगट, त्रिगुनात्मक जु जिहांन॥ ९५॥
ग्यांनी आत्म सरूप करि, मांनत है सत्य भाय॥
ज्यौं सुबरन कैं आभरन, सुबरन हीं दरसाय॥ ९६॥
तुम्हहीं तैं उपजत सकल, इहि संसार अपार॥
अरु रूपहुँ है रावरौ, हे स्वामी करतार॥ ९७॥
तुम्हहीं हौ सब ठौर इहि, भैद जांनि मनमांहिं॥
चरन कँवल प्रभु रावरै, सैवत रहत सदांहिं॥ ९८॥
तै मृतु कै सिर पांव दै, तुम्हकौं मिलत उमांहिं॥
जनम मरन कौ काटि दुष्ष, ह्वै आनंद अथांहिं॥ ९९॥

पंडित भगत सु रावरै, तिन्हकौं कबहुँ निदांन॥
करम बंधननि सौं नहिंन, तुम्ह बांधत भगवांन॥१००॥
तुम्ह सौं करहीं प्रीत जै, अपनौं चितहिं लगाय॥
तै औरनहूं कौ प्रगट, करत पबित्र जु सवाय॥१०१॥
बिनु इंद्रीहीं तुम्ह करत, सकल काज करतार॥
अरु इंद्री चैतन करत, सबहिंन की निरधार॥१०२॥
अरु इंद्रादिक दैवतां, तुम्हकौं पूजत चांहिं॥
औरन पैं बलि लैंत पुनि, तुम्हकौं दैत उमांहिं॥१०३॥
ज्यौं छोटै नृप लैंत कर, प्रजा पासि धरधापु॥
नृपति चक्रवरती तिह्नैं, जाय दैतबलि आपु॥१०४॥
प्रभु तुम्ह जा अधिकार पर, जो सुर दिय बैठाय॥
ताही पैं बै रहत हैं, सावधांन अधिकाय॥१०५॥
माया सौं करि निज इछा, जब तुम्ह करत बिहार॥
जीव सुथावर जंगमी, उपजत बउत प्रकार॥१०६॥
आगै हौ तुम्ह प्रकृति तैं, करता पुरस उदार॥
माया की दिसि लषत हौ, कहियतु इही बिहार॥१०७॥
प्रभू तिहारी दिष्टि सौं, हौत समैं अनुभाय॥
जीवन कैं आछै बुरै, करम सकल प्रगटाय॥१०८॥
जइसै करम सुप्रगट हीं, तइसै जनम धरंत॥
अपुन परायौ रावरै, नहिंन कौउ भगवंत॥१०९॥
जांनत नहिं मन बचन करि, कौउ तुम्हारौ रूप॥
तातैं नभ सम सून्य कहि, बतवत तुम्हहिं अनूप॥११०॥
जो हौहीं अैं जीव सब, ब्यापक नित्य अनंत॥
तौ तुम्ह सम ह्वै जांहि तुम्ह, प्रभु न हौहुँ भगवंत॥१११॥
अरु अैं नहिं हैं जीव सब, ब्यापक नित्य अनंत॥
तुम्हैं जु करता जगत कै, तब सब कहत सुतंत॥११२॥
जातैं उपज्यौ हौय सौ, प्रभु बसि करन कहाय॥
सौ तुम्ह हौ तुम्ह तैं इहै, सकल जगत प्रगटाय॥११३॥
जे नर कहत कि हम्ह प्रभुहिं, जांनत हैं निरधार॥
तें तुम्ह कौ जांनत नांहिं, निश्चै किहूं प्रकार॥११४॥
अरु जें कहत कि हम्ह कबहुँ, प्रभु कौं जांनत नांहिं॥
तें तुम्हकौं जांनत भलैं, सकल जगत कैं मांहिं॥११५॥
अैंक ब्रह्म इक प्रकृति तैं, श्रृष्टि सु उपजत नांहिं॥
दौनूं कैं संजोग तैं, प्रगटत जगत सदांहिं॥११६॥

जइसै मिलि जल पवन तैं, बुदबुदा हौत॥
त्यौंहीं ब्रह्म माया मिलै, हौय जगत उदौत॥११७॥
फिरि तुम्हहिं मैं जात मिलि, इहै सकल संसार॥
मुकति हौत याकी तबै, पावत सुष अनपार॥११८॥
जइसै सब रस बृछन कौं, मिलै सहत इक मांहिं॥
त्यौंहीं थावर जंगमी, जीव मिलत तुम्ह ठांहिं॥११९॥
जन बुधिवंत सु तुम्हहिं सौं, राषत अपनीं प्रीति॥
तिन्हकौं भ्रम उपजय नहिं, सकल काल जग जीति॥१२०॥
आश्रय तुम्ह पद कँवल कैं, जें प्रांनी है नांहिं॥
तिह्नैं काल भय दैत है, ह्वै निसंक चित ठांहिं॥१२१॥
जिन्हनि प्रांन इंद्री रु मन, चंचल जीतै नांहिं॥
तें प्रांनी अतिही दुष्षित, हौत सदा जग मांहिं॥१२२॥
कबहूं गुर कै चरन नहिं, सेयै धरि चित चाह॥
तातैं दुष्ष पावत महा, लहत न सुष की लाह॥१२३॥
जइसै मध्य समुद्र कैं, बनि या डार जिहाज॥
पैवट राषत नांहिं जब, दुष पावत बैकाज॥१२४॥
अस्त्री पुत्र रु सरीर तिय, धन घर प्रिथवी प्रांन॥
अैं नांहिंन कछु कांम कैं, झूठे सदा निदांन॥१२५॥
इक रस आत्मा तुम्ह जिह्नैं, न किनहुं आश्रयकीन॥
तिन्हकौं और कछू नहिंन, आछौ लगत सरीन॥१२६॥
आत्म सुषहि जांनत न जें, रहत विषै सुष मांहिं॥
तिह्नैं कछुन सुष जगत बिनु, सार सुचंचल आंहिं॥१२७॥
बिन अहंकारी रिषिन उर, तुम्ह पद बसत सुभाय॥
जिन्हि चरनन कौं जल सुभहिं, दैत जु पाप गमाय॥१२८॥
तुम्ह आत्मा सुष रूप नित, तिन्हमैं अैकहुँ बार॥
सार हरन इहि कूप मैं, बै न बसत निरधार॥१२९॥
कौउ कहत उपज्यौ इहै, सांचै तैं संसार॥
तातैं है सांचौ सही, प्रतछि सुभलैं प्रकार॥१३०॥
ज्यौं कंचन तैं आभरन, उपजै बउत प्रकार॥
अैंपरि कंचन रूप है, सांचै ही निरधार॥१३१॥
अरु कौउ कहत जगत इहि, सांचै तैं प्रगटाय॥
अैंपरि झूठौ है सदा, कछुन सांच दरसाय॥१३२॥
कौ कहत कि उपज्यौ न इहि, सांचै तैं संसार॥
प्रगट्यौ झूठी प्रकृति तैं, तातैं झूठ प्रकार॥१३३॥

इहै जगत भ्रम रूप है, कबहू सांचौ नांहिं॥
या सौं इक विवहार की, चलि आयौ जु सदांहिं॥ १३४॥
करम जिग्यादिक बेद मैं, कहै तैहुं है झूठ॥
सुवर्ग जाय फिरि गिरि परत, बिच मृतु लौक अपूठ॥ १३५॥
रह्यौ हुतौ नहिं सृष्ट है, पहलै इहि संसार॥
अरु रहिहै नहिं प्रलैं कै, पाछैहूं निरधार॥ १३६॥
बिचही झूठौ जगत इहि, तुम्ह मैं परत लषाय॥
ताकौं मूरष समझि बिनु, मांनत सांचै भाय॥ १३७॥
जीव करत है प्रकृति कौ, आलिंगन बिनु ग्यांन॥
याकौं लागत है तबै, देह सुप्रगट निदांन॥ १३८॥
तब सरीर कुं जीव अपुन, मांनत ह्वै अनुरक्त॥
तातैं याकौं मोद मिटि, पर्यौ रहत बिच जक्त॥ १३९॥
सु चर्म याकौं तुम्ह प्रभू, अैसै छौडि सु दैत॥
जइसै अहि निज कांचली, छौडत है बिनु हैत॥ १४०॥
बडौ प्रताप सु रावरौ, करत अष्ट सिध सैव॥
देव देव पति जगत कैं, करता पुरष अजैव॥ १४१॥
करम बासनां जें कोउ, हियतैं करत न दूर॥
उन्ह दुष्टन उर बसत तुम्ह, तउ बै लषत न मूर॥ १४२॥
ज्यौं मनि ह्वै निज कंठ मैं, तिहिं भूलै नर कौय॥
और ठौर ढूंढति फिरैं, तिहिं परिश्रमहीं हौय॥ १४३॥
दुरलभ जांनै मनि मिलन, जइसैहीं अनुसार॥
तुम्ह दुष्टनि उर बसत तउ, उह्वैं दुर्लभ करतार॥ १४४॥
जें इंद्रिन कैं सुवाद मैं, मगन रहत नर कौय॥
तिन्ह सौं मृत्यु कौं दुष्य महा, दूरि कबहुं नहिं हौय॥ १४५॥
बै साधत हैं जोग तउ, तुम्हरि प्रापति न हौत॥
भ्रमत रहंत बिच जगत कैं, ह्वै नहिं सुष ऊदौत॥ १४६॥
है षटगुन संजुक्त प्रभु, तुम्हकौं भलैं प्रकार॥
जें कौं जांनत जगत बिच, परम प्रेम अनुसार॥ १४७॥
करम भलै न बुरे न कैं, फल सुष दुष अनपार॥
जांनत कबहूं नांहिंनैं, बीच सकल संसार॥ १४८॥
सुनै हौहिं गुन रावरै, साधुन मुष उपदैस॥
जिन्ह हिय मैं तुम्ह आयकैं, दैत मुकति बिसवैस॥ १४९॥
अंत रावरौ जांनत न, इंद्रादिकहूं दैव॥
तुम्ह अनंत हौ तुम्हहुं निज, अंत न लहत अजैब॥ १५०॥

तुम्ह मधि संजुत आवरन, भ्रमत अनंत ब्रह्मंड॥
ज्यौं रजकन आकास मैं, उडत सु रहत अषंड॥ १५१॥
ताही मैं हम्ह बेदहूं, तुम्हकौं है जग तात॥
तातपर्य करि कहत हैं, कहि न सकत साष्यात॥ १५२॥
तुम्हरे सगुन सरूप कौं, गुनकौं नांहिंन अंत॥
अरु कहनैं मैं आवत न, निरगुन हे भगवंत॥ १५३॥
तातैं गुन तुम्ह सगुन कैं, अरु निरगुन कौ रूप॥
कइसी भांति सुं कहि सकैं, है इहि भेद अनूप॥ १५४॥
दीस परत तुम्ह तैं जुदौ, ताहि बेद हम्ह च्यार॥
निश्चै झूठौ कहत है, निज वांनी अनुसार॥ १५५॥
दैत दिषाई सौ सबैं, झूठौ है संसार॥
तातै आगै ब्रह्म है, सौ सांचौ निरधार॥ १५६॥
ऐसी भांति सु ब्रह्म कौ, हम्ह जु बतावत बेद॥
सकत तहिं न साष्यात कहि, ब्रह्म रूप कौ भेद॥ १५७॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

श्री नारायन बोलै युं, बिधि सुत तिहूं सुजांन॥
चौथे भ्रात सनंदनहिं, सौ लहि आतम ग्यांन॥ १५८॥
आत्मरूप कौं जांनि कै, तिहूं भ्रात उहिं बार॥
भयै सनंदन की करत, पूजा भलै प्रकार॥ १५९॥
सकल पुरांन रु बेद कौ, इहै भैद है सार॥
सौ बिधि सुत सनकादिकन, प्रगट कियौ निरधार॥ १६०॥
नारद मुनि राषौ सु तुम्ह, याही तत्त्व मनमांहिं॥
कांम वासनां दैहि दुष, यासौ सब मिटि जांहिं॥ १६१॥

॥ श्री सुक उबाच॥

सुक कहत कि ऐसै सुभग, नारायन कै बैंन॥
सुनि नारद मुनि हृदै निज, राषत भयै सुषैंन॥ १६२॥
हे ब्रह्मचारी सदा कै, नारद मुनि जुत ग्यांन॥
कहत जू भयै अैं बचन, बहुर्यौं परम सुजांन॥ १६३॥

॥ श्री नारद उबाच॥

नमसकार श्रीकृस्न कौ, है म्हैरो बहुबार॥
करन मुक्ति संसार जे, धरत अनंत अवतार॥ १६४॥
हौ नारायन रूप तुम्ह, उन्हीं के जु अवतार॥
उन्हकी लीला कौं कछू, नांहिंन वारापार॥ १६५॥
रिषन सहित नारायनहिं, ऐसै करि परनांम॥
नारद मुनि आवत भयै, ब्यास आसरम ठांम॥ १६६॥

ब्यास कियौ आदर बउत, आसन दियौ बिछाय॥
करन लगै चरचा सुभग, दुहू मौद मन पाय॥ १६७॥
नारायन कैं मुष सुन्यौ, नारद ब्रह्म बिचार॥
कहत भयै सौ व्यास सौं, करि आछै बिसतार॥ १६८॥

॥ श्री सुक उबाच॥

हे राजा इहि प्रस्न तैं, कीनौ हुतौ उमांहिं॥
कइसै निरगुन ब्रह्म कौ, बेद बतावत चांहिं॥ १६९॥
सौ हम्ह बरनन करि भलै, तुम्हकौं दियौ सुनाय॥
अैसै निरगुन ब्रह्म कौ, बतवत बेद सुभाय॥ १७०॥
दिष्टा है सबै जगत कौं, जो प्रभु बिसवाबीस॥
आदि अंत मधि बैहिं करत, जीव प्रकृति कैं ईस॥ १७१॥
जें प्रभु देह बनाय कैं, जामधि जीवहिं राषि॥
अंतरजामी रूप ह्वै, आप बसत अभिलाषि॥ १७२॥
जीवहिं अबिद्या तजत है, जा ईस्वर कौं पाय॥
रहत न ग्यांन सरीर कौं, आनंद रूप लषाय॥ १७३॥
दैषन वारै और नर, दैषत याकी देह॥
इहि जांनत है नांहिं कछु, निज सरीर कौ छेह॥ १७४॥
ज्यौं नर सोवत है जबैं, रहत न तन कौ ग्यांन॥
दैषन वारै और या, तन कौ लषत निदांन॥ १७५॥
माया तैं न्यारै सदा, अैसै जें भगवांन॥
तिन्हकौं इहि प्रांनी सदा, राषै हिय मैं ध्यांन॥ १७६॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते सप्तासीतितमोऽध्यायः ॥ ८७॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अष्टासीतितमोऽध्यायः ॥

(शिवजी का संकटमोचन)

॥ राजोवाच॥

दोहा - नृप पूछत सुर असुर नर, सिवहिं भजत जें कौय॥
तिन्हकौं या संसार मधि, संपति अधिक सुहौय॥ १॥
अरु जो कौ भगवांन कौ, भजत चित्त जु निज लाय॥
तिन्हकैं धन नहिं हौत इहि, कारन कहौ सुनाय॥ २॥

दुहु कैं जुदै सुभाय क्यौं, इहि म्हैरे संदेह ॥
सिव दासनि धन दैत धन, दैत न प्रभू अछैह ॥ ३ ॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

कहत भयै सुकदेव जू, सुनि नृप भैद अनूप ॥
अधिष्ठाता अहंकार कै, सिव है सगुन सरूप ॥ ४ ॥
अहंकारहीं तैं प्रगट, षौडस भयै बिकार ॥
तातैं सगुन सुबस्तु धन, दै सिव सगुनाकार ॥ ५ ॥
सबकैं दिष्टा हरि निर्गुन, जुदै प्रकृति तैं आंहिं ॥
तिह्नैं भजै सौ निर्गुन ह्वै, रहत न धन की चांहिं ॥ ६ ॥
अैंक समैं नृप धरम सुत, जिग्य अस्वमेध सुकीन ॥
भय समापत सौ भलै, प्रभु ईछा आधीन ॥ ७ ॥
तबै सुनैं भगवांन मुष, भगवत धरम सुढार ॥
ता पाछै नृप धरमसुत, बोलै या अनुसार ॥ ८ ॥
काहे तैं भगवांन तुम्ह, भक्तनि धन नहिं दैत ॥
तबैं अरथ या बात कौ, कह्यौ प्रभू करि हैत ॥ ९ ॥
मुकति करन यौं जगत की, जादव कुल कैं मध्य ॥
प्रगट भयै श्रीकृस्न जू, पूरन ब्रह्म प्रसध्य ॥ १० ॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

प्रभु बोलै जापर करौं, म्हैं अनुग्रह हे राय ॥
ताकौं पहलै हौय धन, सौऊ दैहुँ गमाय ॥ ११ ॥
तब तिहिं निरधन जांनि तजि, दैत सुभाई बंध ॥
उदिम करै सू नृफल ह्वै, मिटै सकल सुष संध ॥ १२ ॥
प्रगट हौय बैराग तब, वां नरकैं हिय मांहिं ॥
जबै करैं सतसंग मौ, साधुन कौं जुत चांहिं ॥ १३ ॥
तब म्हैं वां परि करि क्रिपा, लैहुँ भलै अपनांहिं ॥
तब प्रगटै मो भगति उर, प्रेम लछिनां जु आंहिं ॥ १४ ॥
अति सूछिम अति कठिन है, म्हैरो ब्रह्म सरूप ॥
तातैं तजि मो भजन नर, भजै और सुर भूप ॥ १५ ॥
देत अमर बै बेगि पर, राज रु लछमी आदि ॥
हौय मत्त नर जब करै, सबन अवग्यां ज्यादि ॥ १६ ॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

ब्रह्मा अरु सिव अै दुहू, बेगि स्त्राप बर दैत ॥
बेगि आप बर प्रभु न दै, क्रौध क्रिपा कैं वैत ॥ १७ ॥
इहां कथा इक कहत सौ, सुनिहूं नृपति सुजांन ॥
ज्यौं सिव संकट मैं परै, वर दै व्रकहिं निदांन ॥ १८ ॥

नारद जू सौं व्रकासुर, अैसै पूछौ जाय॥
बेगै बिधि सिव बिस्नुं मैं, कौ ह्वै प्रसंन सुभाय॥ १९॥
नारद बोलै सिवहिं तुम्ह, सेवौं सहित उमंग॥
वै बैगैहीं दैत है, बर अरु स्राप अभंग॥ २०॥
हुव रांवन अरु बांन सौं, बैगि प्रसंन अधिकांहिं॥
बड्डौ राज दै आप फिरि, परै सु संकट मांहिं॥ २१॥
इहि सुनि कै सेवन लग्यौ, सिवहिं वृकासुर चांहिं॥
सौ कीनौं हौमारंभ, कैदार तीर्थ ठांहिं॥ २२॥
काटि काटि निज देह कौ, मांस व्रकासुर आप॥
सिव निमंत हौ मन लग्यौ, करि मुष मंत्रनि जाप॥ २३॥
सात दिवस अैसै बितै, सिव दरसन नहिं दीन॥
तब तीरथ मैं ह्वाय निज, सिर काटन ष्डग लीन॥ २४॥
अग्निकुंड तै प्रगट हुव, तब सिव करुनाहंत॥
हाथ पकरि बरजत भयै, सिर काटन कैं तंत॥ २५॥
सिव करत परस सौ भयै, आछै सबहीं अंग॥
मांस कटै कौ दरद मिटि, मान्यौ मोद उतंग॥ २६॥
सिव बोलै वर मांगि तू, जो तेरै चित चाह॥
हे ब्रह्म म्हेरे निमति तै, पायौ दुष अनथाह॥ २७॥
बर मांगत भौ व्रकासुर, सिव पैं अैसै भाय॥
जिहिं सिरि पैं म्हें कर धरौं, सोई भस्म ह्वै जाय॥ २८॥
इहि सुनि हौय अप्रसंन सिव, असुरहिं बहि बर दीन॥
जइसै कौऊ सांप कौं, प्यावै अमृत प्रवीन॥ २९॥
बह सिवही कैं सीस पैं, धरन लग्यौ निज हाथ॥
चाहत हौ लीनौं सिवा, धरै हिर्दै अघ गाथ॥ ३०॥
तब डरि कंपत सिव भजै, बिच नभ दिसनि पताल॥
बस न चलत कछु सुरन कौं, चुप बैठै बेहाल॥ ३१॥
तब सिव पुर बैकुंठ कौं, जात भयौ भय पाय॥
जांह गयै तै फेरि नर, और ठौर नहिं जाय॥ ३२॥
जांह बिराजत है भलै, सकल बिस्व कै तात॥
मुकति दैन ग्यांनीन कौ, नारायन साष्यात॥ ३३॥
सिव संकट भगवांन लषि, धरि ब्रह्मचारी रूप॥
समुष व्रकासुर कैं गयै, भक्तनि रछिक अनूप॥ ३४॥
धरै चर्म मृग मैंषला, बड्डौ तैज झमकंत॥
आसिरवाद व्रकासुरहिं, देत भयै भगवंत॥ ३५॥

॥ श्री भगवानुबाच॥

अरु बोलै भगवांन हे, सकुनि सुवन सुनि बात॥
इती दूरि आयौ सुक्यौं, थक्यौ हौयगौ गात॥ ३६॥
तातैं तनक बिश्राम लै, सुष दीजै आत्माहिं॥
कहन जोग्य ह्वै हम्हहिं तौ, कहुँ कारन या ठांहिं॥ ३७॥

॥ श्री सुक उबाच॥

सुक कहत कि अैसै प्रभू, कहै अमृत से बैंन॥
तब अपनीं सब बात बहि, लाग्यौ कहन सुषैंन॥ ३८॥
प्रभु बोलै सिव कौ बचन, हम्ह तौ मांनत नांहिं॥
दछि श्राप लागि तैं प्रगट, बोरैं सैं दरसांहिं॥ ३९॥
जु तुहि इन्हकैं बचन कौ, है बिस्बास निरधार॥
तौ तू कर निज सीस पैं, धरि दैषहुँ या बार॥ ४०॥
तब तू झूठौ इन्ह बचन, जांनि दीजियौ दंड॥
तासौं अैसै फिरि न कहुँ, बहकावै करि भंड॥ ४१॥
अैसै प्रभु कै वचन सुनि, व्रक बिसवास प्रकारि॥
दुरबुधि निज सीस पैं निज, कर धर्यौ बिनु बिचारि॥ ४२॥
हाथ धरतहीं सीस कटि, गिर्यौ पछरि छुटि प्रांन॥
जय जय सबद उचारि सुर, बजवत भयै निसांन॥ ४३॥
अमर पितर रिष प्रसंन ह्वै, बरषै पुहप अपार॥
सिवकौ संकट दूरि किय, करता पुरष उदार॥ ४४॥
फिरि सिव सौं बोलै प्रभू, अैसै बचन सुनाय॥
हे सिव इहि पापी महा, हुतौ असुर दुषदाय॥ ४५॥
करि अपराध बड़ैन कौं, मरै नांहिं सौ कौनुं॥
सेवा कियै बड़ैन की, लहै महासुष भौनुं॥ ४६॥
तुम्ह ईस्वर गुर जगत कैं, महादैव त्रय नैंन॥
तिन्ह अपराध कियै न ह्वै, किहुँ कल्यांन रु चैंन॥ ४७॥
परमातम हरि तिन दियौ, सिव संकट सु छुडाय॥
इहि चरित सुनि मुक्ति ह्वै, संकट कबहुं न पाय॥ ४८॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते अष्टासीतितमोऽध्यायः ॥ ८८॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अैकोननवतितमोऽध्यायः ॥

(भृगुजी द्वारा त्रिदेवों की परीक्षा तथा भगवान् का मरे हुए ब्राह्मण-बालकों को वापस लाना)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - श्री सुक कहत कि इक समैं, नदी सरस्वती तीर॥
करत रहे जिग्य मिलि सबै, बउत रिषन की भीर॥ १ ॥
तिन्ह मन मैं संदेह इक, प्रगट भयौ वां बार॥
बिधि सिव रु बिस्नु तिहुंन मैं, बडौ कौनुँ निरधार॥ २ ॥
इहै परीच्छा लैंन कौं, बिधि सिव बिस्नुहिं पास॥
पठयै बिधि सुत भृगु रिषहिं, सबहिंन सहित हुलास॥ ३ ॥
पहलैं तौ भृगु रिष गयै, बिधि कै पार्षद मांहिं॥
तांह अस्तुति परनांम अैं, करत भयै कछु नांहिं॥ ४ ॥
अैसै इन्हकौं दैषि बिधि, ह्वै गय अगनि समांन॥
क्रौध बढ्यौ पै बुझय दिय, लषि निज पुत्र निदांन॥ ५ ॥
उहिं तैं उठि कैलास ठां, जात भयै सिव पास॥
भ्रात जांनि इन्हसौं मिलै, सिव अति धारि हुलास॥ ६ ॥
भृगु बोलै अति भृष्ट अरु, हौ कुमारगी आपु॥
तातै तुम्ह सौं नहिं मिलैं, हम्ह निज प्रीत सथापु॥ ७ ॥
सिव चित उपज्यौ क्रौध तब, लिय त्रिसूल निज हाथ॥
मारन लगै तब सिवा, बरजै नाय सुमाथ॥ ८ ॥
उहां तैं उठि भृगु रिष गय, पुर बैकुंठ सथांन॥
तांह सज्या परि रमा जुत, सौवत हे भगवांन॥ ९ ॥
उहां दिय प्रभू कैं हिर्दैं, भृगु निज लात प्रहार॥
लछमी जुत उठि सैंज तैं, किय प्रनांम करतार॥ १० ॥
अरु बोलै हे रिष भलै, तुम्ह आयै मम धांम॥
क्रिपा करौ बैठौ इहां, ऊंचै आसनि ठांम॥ ११ ॥
हे रिष आवन रावरौ, हम्ह जांनत भय नांहिं॥
चूक हम्हारी छमहुँ अब, बिप्र क्रिपाल जु कहांहिं॥ १२ ॥
म्हैरे हिर्दै कठौर की, तुम्ह पद कौमल मांहिं॥
चोट लगी ह्वै है सु इहि, दुष है मो उर ठांहिं॥ १३ ॥
जगहिं पवित्र मो हृदै मैं, हुव तुव पद रज भाय॥
यौं कहि भृगु रिष कै प्रभु, दाबन लागैं पाय॥ १४ ॥
तुम्ह चरनौदक तीरथनि, करतहिं पवित्र सदाय॥
लछमी कौ पति आजु म्हैं, निश्चै भयौ सुभाय॥ १५ ॥

अब लछमी मो मैं सदा, बसिहै कबहुँ न जाय॥
मिटै पाप मो हिर्दै कैं, तुम्ह पद सपरस पाय॥ १६॥

॥ श्री सुक उबाच॥

सुक कहत कि अैसै बचन, बोलै जब भगवांन॥
आनंदित भृगु भयै द्रिग, जल उमड्यौ अप्रमांन॥ १७॥
जिग्य करत है मुनि जांह, आयै भृगु रिष फैरि॥
समाचार तिहुं ठौर कैं, कहै ब्रतांत सु हैरि॥ १८॥
सुनि चरित रिषी सबनि मैं, बिस्नुहीं मांनै श्रेष्ठ॥
क्रौध न ह्वै जिन्ह मांहि तै, कहियै जग मैं जेष्ठ॥ १९॥
जिन्ह मैं बड्डु अइस्वर्ज जस, धरम ग्यांन बैराग॥
अैसै हैं भगवांन जें, लीला करत अथाग॥ २०॥
सत्व गुन जिन्हकी मूर्ति द्विज, जिन्ह कैं इष्ठ सुतंत॥
उन्ह हरि कौ निहकांम ह्वै, सदा भजत बुधिवंत॥ २१॥
सत रज तम अैं तिहुँ प्रगट, उन्ह प्रभुही कैं रूप॥
राछिस सुर आसुर सकल, माया श्रृजै अनूप॥ २२॥
च्यारि पदारथ दैत है, सतगुन तिन्हकैं मांहिं॥
सोई सतगुन धरै प्रभु, सौभित बिस्नु सदांहिं॥ २३॥
सुक कहत कि द्विज सारस्वत, मैटन जग संदैह॥
करी परीछा सबन मिलि, मतौ बिचारि अछैह॥ २४॥

॥ सूत उबाच॥

सूत कहत सुक मुष कढी, कथा सुअमृत समांन॥
ताहिं कहै रु सुनै कौउ, सौ लहै मुकति सथांन॥ २५॥
जनम मरन फिरि नांहिं है, उन्हकौं बिच संसार॥
प्रापत परम आनंद कौ, हौहीं भलैं प्रकार॥ २६॥

॥ श्री सुक उबाच॥

श्री सुक कहत कि इहि समैं, नगर द्वारका मांहिं॥
इक द्विज कौ बालक मर्यौ, उपजि गिरत भुव ठांहिं॥ २७॥
रु मरै पुत्र कौ बिप्र बही, उग्रसैंन कै द्वार॥
लै आयौ अति दीन फिरि, कीनी रोय पुकार॥ २८॥
द्विज द्वेषी बिषई महा, लोभी मूर्ष अग्यांन॥
अैसै नृप कै पाप सौं, मो सुत मर्यौ निदांन॥ २९॥
करै बउत हिंसा रु निज, इंद्री जीतै नांहिं॥
षोटौ हौय सुभाव नृप, अैसै कैं पुर ठांहिं॥ ३०॥
प्रजा दरिद्री रु दुषी ही, रहै सदा निरधार॥
कबहूं सुष पावै नांहिं, नृप कैं कृत अनुसार॥ ३१॥

यौं कहि बालक कौं पटकि, गयौ बिप्र निजू गेह॥
फिरि वइसै ही दूसरै, ल्यायौ सुत की देह॥ ३२॥
पटकि उहां हीं द्वार परि, कहत भयौ दुर्बैन॥
यौं सुत मृतक सु आठ निज, पटकै पाय अचैंन॥ ३३॥
फेरि मृतक सुत नवम निज, वइसै हीं लै आय॥
कहत भयौ उग्रसैंन कौ, अति दुरबचन सुनाय॥ ३४॥
वहिं अरजुन बैठ्यौ हुतौ, कुंवर कृस्न कै पास॥
सौ ब्राह्मन कै बचन सुनि, बोल्यौ धरै हुलास॥ ३५॥

॥ अर्जुन उबाच॥

हे द्विज उहां उत्तम कौ, नहिंन छत्री धनुधार॥
धन दारा सुत करि दुषी, होहै बिप्र जिन्ह द्वार॥ ३६॥
वै राजा न कहावही, या प्रिथवी कैं मांहिं॥
नट समांन निज देह पैं, धरै स्वांग दरसांहिं॥ ३७॥
तौ पुत्रननि की म्हैं अबैं, करिहौं रिछा सुदेस॥
अरु जो रछा न हौयगी, करिहौं अगनि प्रवेस॥ ३८॥

॥ द्विज उबाच॥

द्विज बोल्यौ प्रदुमनहिं बलि, हरि अनुरुध बलवांन॥
अैं रिछया मो पुत्रन की, करि न सकत जु निदांन॥ ३९॥
जो कारिज ईस्वरन सौं, कर्यौ जात है नांहिं॥
सौ कारिज है कठिन अति, तासौं क्यौं बनि आहि॥ ४०॥
तातैं तेरै है बचन, बालक बचन प्रकार॥
तिन्हकी मोहि प्रतीत नहिं, आवत है निरधार॥ ४१॥

॥ अर्जुन उबाच॥

अरजुन बोल्यौ म्हैं न बलि, हरि प्रदुमन अनिरुद्ध॥
हौं अरजुन गांडीव धनु, पैंचि करन बडु जुद्ध॥ ४२॥
महादैव कौ प्रसंन म्हैं, कीनैं करि संग्राम॥
करहुँ अवग्यां नांहिं द्विज, है पारथ मो नांम॥ ४३॥

॥ श्री सुक उबाच॥

अैसै अरजुन बिप्रहिं कौ, समाधांन तहिं कीन॥
प्रसंन्न हौय कैं गेह निज, जात भयौ द्विज दीन॥ ४४॥
बालक हौबै कौ समैं, हौत भयौ जिहिं बार॥
द्विज अरजुन सौ कह्यौ करि, सुत रिछया निरधार॥ ४५॥
तब लै अरजुन आचमन, सिव कौ करि परिनांम॥
अपनैं सस्त्र संभारि कैं, बैठ्यौ बिच द्विज धांम॥ ४६॥

द्विज घर सस्त्र अनैंक सौ, लिय चहुँ दिस तैं छाय॥
तिरछै ऊंचैं तरै सर, पंजर रच्यौ बनाय॥४७॥
बालक प्रगट्यौ रुदन किय, देह सहित ग्यौ जात॥
और बेर रहतौ सुतन, छुटतै प्रांन बिष्यात॥४८॥
अरजुन की निंदा तबै, द्विज प्रभु आगै कीन॥
कहै बचन बहु अन उचित, हौय महा दुष लीन॥४९॥
द्विज बोल्यौ म्हैं मूरष हूं, जोग्य धृकारी दैंन॥
अैसै अरजुन क्लीव कौं, म्हैं मान्यौ हौ बैंन॥५०॥
रांमकृस्न अनिरुध प्रदुम्न, इन्हसौं रिछा न हौय॥
ताकी रिछया करि नांहिं, सकै और जो कौय॥५१॥
अरजुन कौ धिक्कार है, कोटि कोटि यां बार॥
अरु अरजुन कैं धनुषहूं, कौ निश्चै धिक्कार॥५२॥
दइव लैं गयौ ता सुतहिं, ल्यायौ चाहत फैरि॥
यौं अरजुन कौं श्राप दिय, रिस करि द्विज वां बैरि॥५३॥
अरजुन लज्जित हौय कैं, अपनीं बिद्या संमारि॥
संजमनी जमकी पुरी, जिहिं ठां गयौ बिचारि॥५४॥
द्विज सुत लष्यौ उहां न जब, गयौ इंद्रपुर ठांम॥
उहांहुं लष्यौ न तब गयौ, लौकपाल कै धांम॥५५॥
नैरिति सौम्या वारुनी, वायव्या आग्नेपि॥
इन्ह पुरीन मैं नहिं लष्यौ, तब आयौ बह छेपि॥५६॥
सुवर्ग रसातल आदि मैं, सब ठां हेर्यौ हारि॥
बालक लह्यौ न निज बचन, पूर्न भयौ निरधारि॥५७॥
अगनि मांहिं लाग्यौ जरनि, अरजुन तबै लजाय॥
मनै कियौ श्रीकृस्न जू, अैसै बचन सुनाय॥५८॥
हे अरजुन तुहि दिषैहैं, हम्ह बहि द्विज कै बाल॥
करत लौक निंदा तेई, करिहैं अस्तुति बिसाल॥५९॥
अैसै कहि अरजुन सहित, प्रभु दिव्य रथ ह्वै स्वार॥
पछिम दिसी की वोर कौं, चालै कृस्न कुमार॥६०॥
सप्तदीप नग सप्त अरु, सप्त समुद्र लंघाय॥
परबत लोकालोक तैं, आगै चलै सुभाय॥६१॥
लष्यौ महा अंधकार तहं, सूझि परत कछु नांहिं॥
प्रभु सिंदन कै अस्व निज, गति भूलै वां ठांहिं॥६२॥
अैसी अपनैं अस्वन की, गति लषि कै करतार॥
चक्र सुदरसन कौ कियौ, आगै ताहीं बार॥६३॥

रह्यौ हुतौ तिहिं ठौर मैं, फैलि महा अंधियार॥
ताहिं सुदरसन चक्र दियै, टारि भलैं अनुसार॥६४॥
पाछै चक्र सुदरसन हीं, कै रथ चल्यौ सचाल॥
देषै आगै जाय तौ, है प्रभु जोति बिसाल॥६५॥
परम जोति बहि पार्थ पैं, देषी गई सुनांहिं॥
मूदि लैत भौ नैंत्र निज, हरबराय उहिं ठांहिं॥६६॥
देषै आगै जायतौ, जलकौ दीर्घ प्रवाह॥
प्रबल पवन कैं जोर सौं, बढत तरंग अथाह॥६७॥
तांह हजारन मनिन कैं, थंभा लगै सुढार॥
अैसौ अदभुत गेह है, रचना रची अपार॥६८॥
सेसनाग फन सहज जुत, बैठै है ता मांहिं॥
सयांम कंठ द्रिग द्वै सहस, स्वैत रंग दरसांहिं॥६९॥
बिराजमांन है तांपरि, पुरषोतम भगवांन॥
स्यांम रंग मुष प्रसंन जिन्ह, द्रिग पंकज उनमांन॥७०॥
पीतांबर धारन किये, अदभुत सुंदर रूप॥
जथा जोग्य भूषन बनैं, अंग अंग सौभ अनूप॥७१॥
पारषद ठाढै है जहँ, नंद सुनंदहिं आदि॥
जु ठाढै आयुध चक्र लौं, मूर्तिवंत अहलादि॥७२॥
पुष्टि कीर्ति श्री जया अैं, सैवहिं सक्ति अनूप॥
पति है ब्रह्मादिकन कैं, अैसै प्रभु सुष रूप॥७३॥
अैसै अपनैं रूप कौ, किय श्रीकृस्न प्रनांम॥
अरजुन कैं चित मैं महा, भय उपज्यौ वा ठांम॥७४॥
हँसिकै वै भूमा पुरष, प्रभु सौं बोलै बैंन॥
तुम्हहिं दैषिबै बिप्र सुतनि, हम्ह ल्यायै या अैंन॥७५॥
हम्ह तुम्ह अैक सरूप है, कछू भैद है नांहि॥
तुम्ह असुरन कौ मारिबै, प्रगट भयै भुव ठांहि॥७६॥
नर नारायन रूप तुम्ह, हौ दुहु पूरन कांम॥
धरम जगत कै राषिबै, प्रगटै प्रिथवी ठांम॥७७॥
अैसै भूमा पुरष कै, सुनि सुवचन अभिरांम॥
करि प्रनांम द्विज पुत्रनि लै, आयै प्रभु निज धांम॥७८॥
दसौं पुत्र जु वा बिप्रहिं कै, दियै ल्याय भगवांन॥
पूर्नमनोरथ बिप्रहिं कै, किनै क्रिपा निधांन॥७९॥
वहै बिस्नु कौ रूप लषि, अरजुन अचिरज कीन॥
दैषि चरित श्रीकृस्न कै, मान्यौ मोद प्रवीन॥८०॥

या जांनत भौ कार्ज जग, मनुष करै जू कौय॥
सौ प्रभुहीं की क्रिपा सौं, निश्चै पूरन हौय॥८१॥
अैसै चरित अनैंक प्रभु, दिषवत भलैं प्रकार॥
विषै भोग करतै भयै, तिन्हकौ वार न पार॥८२॥
कीनै जिग्य अनैंक बहु, मारै दुष्ट नृपाल॥
अरु अरजुन पैं दुष्ट केउ, मरवायै करि घ्याल॥८३॥
धरम प्रगट किय जगत मैं, भक्तनि दीनौं चैंन॥
भार उतार्यौ प्रिथी कौ, कृस्न कंवलदल नैंन॥८४॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अैकोननवतितमोऽध्यायः ॥८९॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ नवतितमोऽध्यायः ॥

(भगवान् श्रीकृष्ण के लीला बिहार का वर्णन)

॥ श्री सुक उबाच॥

दोहा - सुक कहत कि प्रभु द्वारका, बसै सहित आनंद॥
रही सर्व संपति उहां, हुतौ न कछु दुषदंद॥१॥
बड्डै बड्डै जादव जांह, बसत रहै सुषपाय॥
करत भयै भगवांन कौ, दरसन मोद बढाय॥२॥
सुउत्तम जिन्हकौं रूप नव, जौबन सौभावंत॥
बैठी बिचि मंदिरन कै, अैसी तिया अनंत॥३॥
मत्त गजननि कैं मद चुवत, तिन्हसौं रुकि रहि राह॥
अस्व जोधा नग जटित रथ, ठाढै द्वार अथाह॥४॥
वन उपवन रु उद्यान मैं, रहै ब्रछी बहु फूलि॥
सबद करत पंछी बिबिधि, गुंजत अलि सुष झूलि॥५॥
जहँ तिय सौरह सहस मिलि, अैक पुरष भगवांन॥
रंग बिहार कियै बउत, तिन्ह गनती न निदांन॥६॥
उन्ह तिय सौरह सहस कै, घरन मांहि करतार॥
सौरह सहस सरूप धरि, करतै रंग बिहार॥७॥
अंभोज कुमुद रु कह्लार, उत्कल कँवल अपार॥
जिन्हकौं उडत पराग जहँ, निरमल नीर सुढार॥८॥
बौलत जहँ पंछी बिबिधि, भ्रमरहिं करत गुंजार॥
उडि पराग पंकज सुगंध, फैलि रह्यौ सुषसार॥९॥

ऐसै सुभग सरोवरनि, मधि श्रीकृस्न कुमार॥
करत भयै अस्त्रीन सहित, बिबिधि प्रकार बिहार॥ १०॥
तिय आलिंगन करत है, प्रभु सौं प्रेम प्रभाय॥
तिन्ह कुच कुंकुम स्याम अंग, लगी सुभग दरसाय॥ ११॥
बजबत बिबिधि बाजि सुभग, करत गंधर्व सुगांन॥
मागध बंदीजन करत, अस्तुति भलैं उनमांन॥ १२॥
जलसौं छीटत है प्रभू, हँसि हँसि तिय सुषपाय॥
तिय पट भीजै अंग सौं, लपटे निपट सुहाय॥ १३॥
पुहप गिरत तिय सीस तै, षुलि षुलि बार बिसाल॥
मदन बिवस अंग अंगनि मुष, सौभा लसत रसाल॥ १४॥
नट नृतकारी गांन करि, बाजै बजवनहार॥
तिन्हकौं प्रभु प्रभु की तिया, देत दांन अनपार॥ १५॥
प्रभु कौ हँसनौ बोलनौ, आलिंगन अधिकार॥
गति चितवनि ऐकांत की, बातैं बिबिध प्रकार॥ १६॥
हरी गई बुधि तियन की, इन्ह बातनि अनुसार॥
बोरैं कैं सै कहत है, तातैं बचन प्रकार॥ १७॥

॥ स्त्रिय ऊचुः ॥

अस्त्री बोलै हे कुररि, पंछी सुवत तूं नांहिं॥
हितौ विलाप सु विमुषि हौ, सौवत हरि या ठांहिं॥ १८॥
मुहित हम्हारौ चित भयौ, हरि की सौभा दैषि॥
तइसै है का तूं मुहित, सौवत नहिं निस पैषि॥ १९॥
हे चकई तेरै नयन, हौत सुमुंदित नांहिं॥
चकवा तौ पै है नहिंन, बिरह बिकल दरसांहिं॥ २०॥
प्रभु पद राष्यौ चहत है, हम्ह अपनैं हिय मांहिं॥
तइसै तूं हौ का चहत, बात सुनिज उर ठांहिं॥ २१॥
हे समुद्र तूं सौवत न, गरजत रहत सु नित्य॥
जान्यौ हर्यौ मुकुंद नै, तेरौहूं चित वित्य॥ २२॥
कौस्तुभ मनि तौ मध्य तैं, लिय निकारि भगवांन॥
तौकौ ताकैं सौच सौं, नींद न आय निदांन॥ २३॥
हे ससि तुहि षय रोग है, तातै ह्वै अति षीन॥
निज किरनन सौं तूं नहिंन, करत प्रकास सरीन॥ २४॥
कैं हरि सौं हम्ह मुदित त्यौं, तूहूं मोहित हौय॥
युं थकित रह्यौ बीच नभ, कृस्न रूप उर गौय॥ २५॥
अहे मलय कै पवन हम्ह, कहा बुरौ तौ कीन॥
हरि कटाछ सौं बिंध्यौ उर, करत मदन आधीन॥ २६॥

अहे मेघ हम्ह धरत है, प्रभु कौ ध्यांन सुढार॥
तइसै तूं हौ धरत है, प्रभू ध्यांन करि प्यार॥२७॥
पै मिलि सकत न ता लियै, उत्कंठा सुबढाय॥
आंसूं डारत प्रेम सौं, बूंदन कै अनुभाय॥२८॥
हे कौकिल यौं कुहकि तूं, बौलत मधुरी बांनि॥
तासौं जियै मरै मनुष, आय श्रवन मैं प्रांनि॥२९॥
अति कौमल है कंठ तौ, बांनी सरस सुहाय॥
कहै सु तेरौ मनोरथ, पूरन करै सुभाय॥३०॥
हे नग तूं बौलत बचन, नांहिंन है किहुँ बार॥
सौ का बैठ्यौ है धरै, प्रभु कौ ध्यांन सुढार॥३१॥
ज्यौं हम्ह राष्यौ चहत है, प्रभु पद निज उर ठांहिं॥
त्यौं तूंहूं का चहत प्रभु, पद राष्यौ हिय मांहिं॥३२॥
हे समुद्र पतनी सरिताहुँ, बिरह ग्रीष्म की ताप॥
भई कृसकाय अतिहिं तुम्ह, सूषै कंवल संताप॥३३॥
मैघ न दैहिं तौ प्रियजल, बिवस भई समभाय॥
चाहत तुम्हहूं प्रिय वृष्टि, स्यांम सु हम्ह चित चाय॥३४॥
अहो हंस आयै भलैं, कहा करैं मनुहार॥
कहौ कुसलता स्यांम की, करिहैं कबु संभार॥३५॥
लछमी कै बसिभूत है, भूलि गयै प्रिय स्यांम॥
पूर्न मनोरथ ह्वैहिं जब, दरसन दै घनस्यांम॥३६॥

॥ श्री सुक उबाच॥

सुक कहत कि यौं कहत भइ, अस्त्रीन प्रेम प्रभाय॥
तातैं उत्तम गतिहिं लहीं, जग जंजाल मिटाय॥३७॥
बातैं वा भगवांन की, सुनि मन हर्यौं सुजाय॥
देषैं तिय जिन्ह मनन कौं, मोहित हौय सुभाय॥३८॥
प्रभु जग गुर तिन्ह चरन की, सैव करी जिन्ह नारि॥
उन्ह तपस्यां कौ कीजियै, का बरनन निरधारि॥३९॥
कर्म रु धर्म कहे बेद मैं, तें करि करि भगवांन॥
लौकन सिषयौ ग्रिह धरम, जू अर्थ काम कौ थांन॥४०॥
धर्म किरत श्रीकृस्न किय, ग्रहस्थाश्रम सुभ भाय॥
सौरा सहस रु अैक सौ, तिया हुती सुषदाय॥४१॥
तिन्हमैं पटरांनी हुती, आठ रुकमनी आदि॥
इक इक कैं दस दस भयै, सुतगुन रूपनि ज्यादि॥४२॥
तिन्ह पुत्रन मैं महारथी, भयै अठारह जांनि॥
बड्डौ सुजस उन्हकौं भयौ, सुनि तिन्ह नांम निदांनि॥४३॥

प्रदुमन अनिरुद्ध सांबु मधु, दीप्तमानु चित्रमांनु॥
भानुमांन ब्रहदभानु व्रक, कवि विरूप चित्र बांहु॥ ४४॥
बेदबाहु पुसकर अरुण, निग्रोध अरु श्रुति दैंव॥
सुपुत्र सुनंदन आदि अैं, नांम अष्ट दस भैंव॥ ४५॥
प्रधुमन अतिहि उत्तम भयै, इन्हहुँ अष्ट दस मांहि॥
जिन्हहिं बिबाही रूकम की, बेटी धरि चित चांहि॥ ४६॥
ताकैहिं अनिरुध पुत्र हुव, जुत गुन रूप उदार॥
दस हजार गज कौं रह्यौ, उन्हमैं बल निरधार॥ ४७॥
तें रुकमी की नातिनी, ब्याहत भयै उमांहिं॥
बज्रनाभि तिहँ सुत भयौ, जोग्य सुकरन सनांहिं॥ ४८॥
सकल जादवन कैं रहै, पाछे बैइ निदांन॥
धर्म ग्यांन संजुत भयै, नृपति बड्डे बुधिवांन॥ ४९॥
तिन्हकैं हुव प्रतिबाहु सुत, हुव सुनाभि सुत जास॥
सांतसैंन जिहिं पुत्रहिं तिहं, सुत सतसैंन सुभाय॥ ५०॥
जिन्हकैं धन संतान नहिं, हौय भलैं ग्रिह ठांहि॥
अैसे प्रभु के बंस मैं, पुत्र भयै कोउ नांहि॥ ५१॥
अलप पराक्रम आप द्विज, आदर करहीं नांहि॥
अैसैहूंन भयै कोउ, कृस्न बंस कै मांहि॥ ५२॥
जदुकुल मैं जें ग्रगट हुव, प्रसिद्ध कर्म जिन्ह आंहि॥
बरष हजारन मध्यहूं, उन्ह गनती है नांहि॥ ५३॥
बालक जदुबंसीन कैं, बिप्रहिं पढावनहार॥
बीस त्रय कोटि जुत धरै, बेद बिद्या कौ भार॥ ५४॥
इतनैं हीं जदुकुल विषै, बालक भयै सुजांन॥
तातै नहिं जादवन की, गनती कौ उनमांन॥ ५५॥
रहतें नृप उग्रसैंन संग, जादवनि जु अनपार॥
महाबली जोधा बड्डे, पूर्न धर्म कैं धार॥ ५६॥
दैवतांनि जें जुद्ध मैं, हतै असुर बलवांन॥
जें है मनुष प्रजांन कौ, दुष्ष दीनौं अप्रमांन॥ ५७॥
तिन्हैं मारिबै कौ सुरनि, आग्या दिय भगवांन॥
बैहि जादव है ब्रध कौ, प्रापति भयै निदांन॥ ५८॥
भोजन आसन बौलनौ, सज्या क्रीडाहिं थांन॥
इन्ह ठौरन मैं सदाहीं, प्रभु संग रहै सुजांन॥ ५९॥
अरु प्रभुहीं कौ ध्यांन निति, उन्ह उर रह्यौ सुढार॥
और बात की सुधि कछू, नहिं राषी किहुँ वार॥ ६०॥

पहलै प्रभु निज चरन सौं, गंगा प्रगट सुकीन॥
फिरि जदुकुल मैं प्रगट किय, कीरति तीर्थ सरीन॥ ६१॥
सत्रुहुँ जिन्हसौं जुद्ध करि, लहत भयै हरि रूप॥
श्री सैवत निज चरन कौं, अैसै प्रभू अनूप॥ ६२॥
कहै सुनैं जिन्ह प्रभू कौ, नांम सुकाहू भाय॥
दूरि अमंगल हौहिं सब, महामंगल सरसाय॥ ६३॥
प्रगट हौय जदुकुल विषै, धरम प्रगट जिन कीन॥
करि चरित जु अदभुत महा, निज भक्तननि सुषदीन॥ ६४॥
चक्र सुदरसन जु काल सम, जिन्हकौं आयुध आहि॥
दूरि करै भुवभार तें, अचिरज कहा कहाहि॥ ६५॥
प्रगट दैवकी गर्भ तैं, भयै कृस्न करतार॥
सो कहनै की बात है, भैद न कछु निरधार॥ ६६॥
जादव जिन्ह कै सषा अरु, निज भुजानि अनुसारि॥
अधरम कीनौ दूरि अघ, जग कैं दीनैं टारि॥ ६७॥
सुंदर मुष मुसक्यांन जुत, दैन महा सुषदांन॥
सो दिषाय बाढ्यौ अनंग, गौपिन हिर्दै सथांन॥ ६८॥
निति बिराजत जैहिं प्रभू, ब्रज मैं सुंदर स्यांम॥
अधिक कहत बैकुंठ तैं, बेदहुँ ब्रजधर ठांम॥ ६९॥
रिछया करिबै धरम की, जिन्ह प्रभु लिय अवतार॥
अदभुत कियै सुचरित बहु, दैन महा सुषसार॥ ७०॥
जो कौं जन भगवांन सौं, मिल्यौ चहै निरधार॥
तौ उन्हहीं कै चरित कौ, सुमरै भलैं प्रकार॥ ७१॥
कहै सुनै भगवांन कै, चरित मनुष कौ चाहि॥
तौ जाकैं ह्वै नहिं कबहुँ, जनम मरन अवगाहि॥ ७२॥
सुक कहत कि श्रीकृस्न की, लीला जु मनोहारि॥
श्रवन कीर्तन सुमरन जिहिं, परमधांम सुभकारि॥ ७३॥
प्रभु कैं लोकहिं प्राप्त ह्वै, जास लौक कैं काज॥
मनुष करत है बन बिषै, तपस्यां तजि तजि राज॥ ७४॥
लीला जिहँ भगवांन की, दैन मुकति सुषसार॥
ताकौ अचिरज कौउ कछु, मतिमांनौ निरधार॥ ७५॥

(इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे उत्तरार्द्धे भाषा ब्रजदासी कृते नवतितमोऽध्यायः॥ ९०॥)

॥ दसम स्कंध संपूर्णम्॥

(॥ पोथी को सं. १८३४ वि. श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री॥)

(कुल छन्द २७२० - छंद योग क्रम १६,०८७)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

***

॥ श्रीसर्वेश्वरोजयति ॥

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

(कृष्णगढ़ महाराजाधिराज श्री राज राजेस्वर राजा श्री राजसिंघ जी की महाराणी श्रीमती ब्रजकुंवरी जी बांकावती 'श्री ब्रजदासी' जी कृत श्रीमद्भागवत भाषा एकादस स्कंध लिष्यते)

॥ एकादस – स्कंध ॥

॥ अथ प्रथमोऽध्यायः ॥

(यदुवंश को ऋषियों का श्राप)

(मंगलाचरण)

छप्पय - नमो नमो गौपाल, लाल गौवरधन धारी॥
नमो नमो बृषभानु, कुँवरि पिय प्रांन पियारी॥
नमो नमो मम गुरू, प्रसध्य वृंदावन दे नांम॥
नमो नमो हरि भक्त, रसिक जे अति अभिरांम॥
नमो नमो श्रीमदभागवत, क्रिपा सिंधु मंगल करन॥
दिनकर समांन झलमलत सो, प्रगट जगत अघ तम हरन॥ १ ॥

॥ अथाख्यान ॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि बलिदेव जू, जुत श्रीकृस्न कुमार॥
मारि असुर सब धरम की, रिछया किय निरधार॥ २ ॥
द्रुपदि केस कौ गहन कैं, कारन सौं करतार॥
कौरव पांडवमध्य जुध, रचि टार्यौ भुवभार॥ ३ ॥
जादवकुल सौ बहु नृपति, मरवायौ भगवांन॥
करत भयै फिरि चित्त मैं, यहै बिचार निदांन॥ ४ ॥
अबहीं तौ नांहिंन भयौ, दूरि प्रिथी कौ भार॥
मिट्यौ भारत तब जांनिय, ह्वै जादव संघार॥ ५ ॥
इन्हकैं है मो आसरय, अरु संपति अधिकाय॥
तातै हतै न जांहि अैं, औरन सूं किहुँ भाय॥ ६ ॥
तासौं जदुकुल कै बिषै, बडौ कलह उपजाय॥
करि इन्हकौं संघार निज, लौक जाहुँ सुषपाय॥ ७ ॥
यौं बिचार करि कृस्न जू, श्राप द्विजन पैं द्याय॥
जदुकुल कौ संघार किय, निज ईछा अनुभाय॥ ८ ॥
सुंदरता सब लौक की, जामैं परत लषाय॥
अैसौ अंग रसाल निज, प्रभू प्रतछ दरसाय॥ ९ ॥
लौचन सबही जगत कै, मोहित कर भगवांन॥
निज वांनी सौं सबन कैं, चित हरि क्रिपा निधांन॥ १० ॥

चरनन सौं सबहींन की, क्रिया मैटि करतार ॥
अरु निज कीरति जगत मैं, बहु बिसतारि सुढार ॥ ११ ॥
भये पधारत लौक निज, भुव कौ भार उतारि ॥
प्रभू चरित गावै सुनै, हौहिं जगत भय पारि ॥ १२ ॥

॥ राजोबाच ॥

नृप बोल्यौ दाता ब्रह्मनि, प्रभु उदार चित चांहि ॥
सैवक ब्रिधन कै सदा, राषन धरम अथांहि ॥ १३ ॥
अैसौ जदुबंसीन कौ, कइसै लाग्यौ श्राप ॥
अरु उन्ह का मुनि जनन कौ, जदुबंसिन किये पाप ॥ १४ ॥
किहिं कारन भौ श्राप का, श्राप लग्यौ मुनि राय ॥
आपस मैं कइसै लरै, सो सब कहौ सुनाय ॥ १५ ॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

सुक कहत कि श्रीकृस्न जू, धारै सुंदर देह ॥
करत करम सुभ प्रिथी पर, हे राजन निज गेह ॥ १६ ॥
करतै बिबिध प्रकार की, क्रीडा तांह अथाह ॥
निज कुल कै संघार की, उपजी प्रभु चित चाह ॥ १७ ॥
जासौं मिटहीं मैल कलि, अैसै करम पबित्र ॥
करत रहै बसुदैव ग्रिह, प्रभु भक्तननि कैं मित्र ॥ १८ ॥
तिन्हकैं प्रेरे मुनि किते, करन करम सुषदाय ॥
पिंडारक छैत्रहिं बिषै, प्राप्त हौत भय जाय ॥ १९ ॥
भृगु बसिष्ठ कसयप असित, नारद बिसवामित्र ॥
अरु दुरबासा अंगिरा, बामदैव पुनि अत्र ॥ २० ॥
इतनै रिष द्वारवती, आयै बुधिसुबिसाल ॥
करत हुतै क्रीडा जांह, सबै जदुबंसी बाल ॥ २१ ॥
उन्ह सांबुहिं करवाय कैं, नारी भैष सुढार ॥
पूछन लागै रिषिन सौं, नम्र हौहिं वां बार ॥ २२ ॥
गरभवती है इहि तिया, पूछत नहिं करि लाज ॥
तातैं हम्ह पूछत तुम्हहिं, कहौ भैदि रिष राज ॥ २३ ॥
सुत कि सुता या गरभ तैं, का ह्वै है संतान ॥
याकै सुत की कांमना, है चितमांहि निदांन ॥ २४ ॥
यौं झूठैहीं रिषन कौं, ठगन लगै बाल ॥
तब रिष बोलै रीस करि, अैसी बिधि उहिं काल ॥ २५ ॥
हे मूरष तुम्ह बंस कौ, करै नास निरधार ॥
अैसौ मूसल हौहिगौ, याकै याही बार ॥ २६ ॥

इहि सुनिकै बालक सबै, डरि निज चित कैं मांहि॥
बस्त्र सांबु के षोलि सब, डारे वाहीं ठांहि॥ २७॥
तहँ मूसर इक लौह कौं, लषत भयै सब कौय॥
पिछतांनै बालक सबै, अति बिसमैं चित हौय॥ २८॥
हम्ह का कीनौं करम इहि, कहि है कहा संसार॥
ब्याकुल ह्वै लै मुसल ग्रिह, आयै सकल कुमार॥ २९॥
भयै मलिन मुष सबन कैं, सोचि कियौ दुषपाय॥
बिनु समझैं हम्ह रिषन सौं, कीनौं का इहि हाय॥ ३०॥
उग्रसैंन नृप पास सब, हुतै सु जादव जात॥
तांह जाय उन्हसौं कही, सकल बालकन बात॥ ३१॥
सफल जांनि द्विज श्राप अरु, बहि मूसल सब दैषि॥
पुरवासी डरपत भयै, निज चित अचिरज पैषि॥ ३२॥
वा मूसर कौं चूर्न नृप, उग्रसैंन करवाय॥
रती रती सामुद्र मैं, दीनौं सकल बहाय॥ ३३॥
लौह बच्यौ टूकैक सौ, जल मैं दीनौं डार॥
निगल गयौ बहि टूक मच्छ, जांनि जंत बिचबार॥ ३४॥
जल तरंग सौं चूर्न बहि, लग्यौ सिंधु तटि आय॥
सो अैरा उपजत भयै, प्रभु ईछा अनुभाय॥ ३५॥
अरु बहि टूक सु लौह कौ, निगल गयौ हौ मीन॥
ताहिं पकरि हति बधिक किहुँ, भाल तीर की कीन॥ ३६॥
कृस्न कुँवर भगवांन सब, जांनि गये मन मांहिं॥
तऊ श्राप द्विज बरन कौं, झूठ करत भय नांहिं॥ ३७॥
अरु निज ईछा सौं प्रभू, कुल कौ श्राप दिबाय॥
प्रभु प्रसंन भयै भुवभार, सब टरि हैं इहिं भाय॥ ३८॥
प्रभु निज बंस संघार की, कीनी जिहिं अनुसारि॥
मनहिं मन अनुमौदन किय, काल रूप निज धारि॥ ३९॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते प्रथमोऽध्यायः ॥ १॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥

(वसुदेव जी के पास श्री नारद जी का आना और उन्हें राजा जनक तथा नौ योगीश्वरों का संवाद सुनाना)

॥ श्री सुक उबाच ॥

दोहा - सुक कहत कि प्रभु की भुजन, करी रछित निरधार ॥
ऐसी नगरी द्वारका, अदभुत परम उदार ॥ १ ॥
बसत भये नारद मुनी, तिहँ ठां बारंबार ॥
जिन्हकैं हरि कै दरस की, चाह रहत अनपार ॥ २ ॥
कौनुँ भजै नहिं प्रभु चरन, मानुष इंद्री धार ॥
जिन्हकौं जग मैं मृत लगी, चहुँ दिसि तैं सब बार ॥ ३ ॥
जेहिं उत्तम है देवता, सब अमरन कैं मांहिं ॥
वैहुँ प्रभू पद कँवल की, करत उपास सदाहिं ॥ ४ ॥
इक दिन नृप बसुदेव ग्रिह, नारद आय मुनेस ॥
तब रिष की पूजा करी, श्री बसुदेव सु देस ॥ ५ ॥
बैठे तहँनारद मुनी, थिर ह्वै लहि आनंद ॥
तब बोलै बसुदेव जू, मुनि सौं बचन सुछंद ॥ ६ ॥

॥ श्री बसुदेव उबाच ॥

हे मुनि आवन रावरौ, सबकौ करन कल्यांन ॥
जइसै लषि पितु मात कौं, सिसु ह्वै प्रसंन निदांन ॥ ७ ॥
इन्ह जीवन कौं सुर रचित, दुष सुष दोन्यौ दैत ॥
तुम्ह सै प्रभु मैं लीन जिन्ह, चरित सबन सुष हैत ॥ ८ ॥
देवतांन कौ भजत है, इहि प्रांनी जिहँ भाय ॥
तइसैं ही प्रांनीन कौ, अमर भजत सुष पाय ॥ ९ ॥
दीन जनन परि साधु जन, क्रिपा करत निरधार ॥
तुम्हहिं भागवत धरम हम्ह, पूछत है सुष सार ॥ १० ॥
ताकौं सुनिकैं छुटित इहि, भय रूपी संसार ॥
ऐसौ भगवत धरम तुम्ह, हम्हसौं कहौ सुढार ॥ ११ ॥
म्हैं पहलै सुत कैं निमत, प्रभु की तपस्या कीन ॥
मोष निमत तप नहिं कियौ, ह्वै माया आधीन ॥ १२ ॥
दुष्ष बिचित्र जामैं अरु अति, भय ऐसौ संसार ॥
जासौं हम्हरी मुक्ति है, ऐसौ करौ बिचार ॥ १३ ॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

सुक बोलै बसुदैव नै, जब यौं प्रस्न जु कीन ॥
तब नारद ऐसै बचन, कहत भयै हरि लीन ॥ १४ ॥

॥ नारद उवाच ॥

हे बसुदेव भलौ कियौ, तुम्हनैं इहै बिचार॥
धन्य धन्य है जगत बिच, तू धरमग्य उदार॥ १५ ॥
धरम भागवत हम्हहिं तुम्ह, पूछत हौ करि प्यार॥
सोइ पबित्र सबहींन कौं, करत भलैं अनुसार॥ १६ ॥
भगवत धरम सुनैं पढै, चाहि धरै उर ध्यांन॥
आदर करै सराहहीं, भेद अनूप पिछांन॥ १७ ॥
तौ पबित्र संसारहिं कैं, अघ तैं हौहिं निदांन॥
जनम मरन कौं कष्ट मिटि, पावै मुकति सथांन॥ १८ ॥
करता परम कल्यांन जिन्ह, कीर्तन श्रवन पबित्र॥
सुमरन अैसै कृस्न कौ, सुध ह्यायौ मुहिमित्र॥ १९ ॥
इहां अैक इतिहास हम्ह, तुम्ह सौं कहतसुनाय॥
नृपति जनक अरु रिषन कौं, है संवाद सुभाय॥ २० ॥
स्वायंभुव मनु कै भयौ, पुत्र सुप्रियब्रत नांम॥
आगनीध्र जिहँ सुत भयौ, नाभि सुवन बहिं धांम॥ २१ ॥
भयै जस नृप नाभि कै, रिषभ दैव भगवांन॥
दैंनहार जें जगत कौ, सहजहिं मुकति सथांन॥ २२ ॥
तिन्हकैं प्रगटै सुपुत्र सत, पढै बेद वे चांहि॥
भरत श्रेष्ट भौ सबनि मैं, रहि प्रभु सरन उमांहि॥ २३ ॥
जास भरत कै नांम सौ, भरथ षंड सुकहाय॥
पहल नांम या षंड कौ, हौ अजनाभि सदाय॥ २४ ॥
प्रथम भोग करि भरत नृप, फिरि करि ग्रिह कौं त्याग॥
तप करि जनम सुतीन मैं, प्रभु पायै बड भाग॥ २५ ॥
नौ सुत सौ उन्ह मध्य हुव, नौ षंडन कैं राय॥
भयै इक्यासी बिप्र तैहिं, करमन मैं चित लाय॥ २६ ॥
अरु नौ सुत जोगैस हुव, तत्वभैद धरि चित्त॥
आत्म बिद्या मैं चतुर अति, नगन मगन रहि नित्त॥ २७ ॥
आविर हौत्र प्रबुध रु कवि, करभाजन हरि जांन॥
द्रुमिल अंतरिष चमस नव, पिपलायन बुधिवांन॥ २८ ॥
सत अरु असत संसार कौ, देषै प्रभु कौ रूप॥
अैसै प्रिथवी पर फिरत, भ्राता नऊ अनूप॥ २९ ॥
ह्वै मनोर्थ इन्ह नउन कौं, जिहीं लोक कौ जांहि॥
किहूं भांत किहुँ ठौर मैं, इह्नैं अटक ह्वै नांहि॥ ३० ॥
सुर नर किंनर साध्य जछि, सिद्ध गंधर्ब रु नाग॥
मुनि चारन सिद्ध बिद्याधर, वुन्हि लौकन की जाग॥ ३१ ॥

फिरै नऊ जोगैस अैं, निज ईछा अनुसार॥
तिह्वैं कहूं नांहिंन अटक, सब पूजै करि प्यार॥ ३२॥
बै नौ मुनि निमि जनक कैं, आयै सहज प्रकार॥
करत हुतै रिष जग्य जांह, बेद रीत अनुसार॥ ३३॥
नउ ग्यांनी आदित्य सम, आयै रिषन निहार॥
आग्नि बिप्र जजमांन उठे ठाढै हुव वां बार॥ ३४॥
नारायन मैं चित लग्यौ, जिन्हकौं नृपति बिदैह॥
प्रसंन हौय आसन दियौ, पूजे पद जुत नैह॥ ३५॥
बे प्रकास रूपी प्रगट, बिधि सुत सूं दरसाय॥
नम्र हौहिं कै प्रस्न नृप, पूछ्यौ उह्वैं सुभाय॥ ३६॥

॥ विदेह उवाच॥

कहत भयौ नृप जनक तुम्ह, प्रभु कैं सैवक आंहि॥
लौकननि करन पबित्र या, भुव पैं फिरत अचांहि॥ ३७॥
दुरलभ मानुष देह है, पुनि निश्चै छिन भंगु॥
तुम्हसैं ग्यांनी जनन कौ, दुरलभ दरसन संगु॥ ३८॥
अैक निमिषहूं हौहिं जो, तुम्हसैं जन कौ संग॥
तौ छुटहिं दुष संसार कौ, ह्वैहिं कल्यांन अभंग॥ ३९॥
तातैं हम्हहिं सुनाइयै, भगवत धरम सुढार॥
जासौं दैं निज अपनपौ, प्रसंन हौहिं करतार॥ ४०॥

॥ श्री नारद उबाच॥

नारद कहत कियौ जबै, प्रस्न जनक नृप कीन॥
तब जोगैसर क्रिपा करि, आछैहुँ उत्तर दीन॥ ४१॥

॥ कविरुवाच॥

कवि बोलै भय हौत नहिं, हरि उपासनां मांहिं॥
सो तजि झूठै जगत मधि, भूल्यौ आत्म वृथांहिं॥ ४२॥
सकल ठौर भगवांन कौ, देषै रूप सुढार॥
तबै हौंहि भय दूरि सब, बढै मोद अनपार॥ ४३॥
अपनीं प्रापति हौंन प्रभु, जें जें कहे उपाय॥
बैहिं भागवत धरम है, निश्चै जानहुँ राय॥ ४४॥
जिन्ह धरमन कैं कियै तै, कबहुँ प्रमाद न हौय॥
वा मारग मैं मूंदि द्रिग, चलै परै नहिं कौय॥ ४५॥
वांनी इंद्री देहि मन, बुधि सुभाव अहंकार॥
इन्हसौं करम करै सु दै, प्रभुहिं समर्पित सुढार॥ ४६॥
बिमुष हौंहि हरि तैं सु तिहि, दुतिय भैद दरसाय॥
जाकौं चित प्रभु मैं लग्यौ, सोई परत लषाय॥ ४७॥

तातैं आछैं भगति करि, प्रभुहिं भजै चित लाय॥
निज गुर कौ भगवांन करि, मांनै निसचल भाय॥ ४८॥
सपन मनौरथ सम दुतिय, प्रभु बिनु भैद लषाय॥
देषै सबहीं ठौर हरि, सौ सति भैद कहाय॥ ४९॥
रूप सकल लषि बिकल मन, ताकौं राषै रौकि॥
तबै अभय ह्वै छूटि भय, हरि आश्रय की वौकि॥ ५०॥
जनम करम भगवांन कै, सुनै भलै उनमांन॥
निलज हौंहि गावै किहूं, संक न करै निदांन॥ ५१॥
प्रभु सौं उपजै प्रीत यौं, तो कौमल चित हौय॥
बौरौं सौ गावै हंसै, नचै कबहुँ दै रौय॥ ५२॥
दिसा नषत्र भुव नद नदी, नभ जल अग्नि तृस वाय॥
इन्ह सब ठां हरि कौ करै, प्रनांम समुष सुभाय॥ ५३॥
अैसै जो हरि कै चरन, भजै चाहि चित लाय॥
भगति ग्यांन बैराग जब, उपजि सांतता छाय॥ ५४॥

॥ राजोवाच ॥

इहि सुनि राजा निमि जनक, कह्यौ जोरि बियपांनि॥
धरम बैस्नवन कै कहौ, हम्हहिं भलैं उनमांनि॥ ५५॥

॥ हरिरुवाच ॥

हरि रिष बोलै जे कउ, उत्तम सुभगत कहांहिं॥
तैं हरि कौं जग मधि लषै, अरु सब जग हरि मांहिं॥ ५६॥
ईस्वर साधु अग्यांनि अरि, इन्ह सब मैं समभाय॥
क्रिपा उपैष्या रु मित्रता, अैं राषै चित लाय॥ ५७॥
सौ निश्चै करि जांनियै, मध्यम भगत निदांन॥
और भैद हम्ह कहत अब, सो सुनि नृप बुधिवांन॥ ५८॥
इक प्रतमांही की करै, पूजा प्रीत प्रभाय॥
साधुन कौं पूजै न सौ, प्राक्रत भगत कहाय॥ ५९॥
इंद्री सौं देषैं बिषैं, हरष सोक जिहिं नांहिं॥
जगहिं लषै प्रभु प्रकृति सौ, उत्तम भगत जु गनांहिं॥ ६०॥
मन बुधि इंद्री प्रांन तन, जिन्हकौं जनम रु नास॥
त्रिस्नां निंद्रा भूष भय, राग द्रौह पुनि प्यास॥ ६१॥
क्रम सौं अैं संसै मारि, कैं धर्म कर्म निरधार॥
जाकौं मौहित नहिं करै, कबहूं किहूं प्रकार॥ ६२॥
कांम बीर्ज जाकैं न है, धारै हरि कौ ध्यांन॥
नित प्रति प्रभु आस्त्रय रहै, समझि भेद तत ग्यांन॥ ६३॥

जनम करम बरनाश्रम रु, संपति ऊंची जात॥
इन्हकौं जिहँ अहं कृत न सौ, उत्तम भगत जु लषात॥ ६४॥
अपन परायौ द्वैष नहिं, जिन्हकैं बिच संसार॥
सब प्रांनिन सम लषैं सो, उत्तम भगतहिं सुढार॥ ६५॥
त्रिभुवनहूं कै काज जो, छिनक मात्रहूं चांहिं॥
हरि पद तैं न्यारौ न ह्वै, भगवत भगत सु आंहिं॥ ६६॥
प्रभु पद कंवल प्रताप सौं, मिट्यौ हौंहि जिहिं ताप॥
ताकौं लागै फेरि क्यूं त्रिबिध ताप की धाप॥ ६७॥
रास निरत पद नष चंद्र, सौं सुसीतल सुभाय॥
जिन्हकैं संताप दूरि ह्वै, ताकौं रवि न सताय॥ ६८॥
इक पलहूं नहिं छौडि हैं, चरन सरन जिन्हि पाय॥
त्रिभुवन विभव न चांहिं हैं, बैस्नव उत्तम कहाय॥ ६९॥
हरि न तजै जाकौं हिर्दै, बंधै प्रेम की दांम॥
कहियत उत्तम भगत सोइ, प्रकृति रहित अभिरांम॥ ७०॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते द्वितीयोऽध्यायः ॥ २॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

(माया व माया से पार होने के उपाय तथा ब्रह्म और कर्मयोग
का निरूपण)

॥ जनक उबाच॥

दोहा - बोलै राजा जनक प्रभु, परम बिस्नुं भगवांन॥
मुहित करै जिन्ह प्रकृति बहु, जान्यौ चहत निदांन॥ १॥
सो माया कहियै हम्हैं, आछी भांत जताय॥
मिटै सकल संताप तब, परमातम सुधि आय॥ २॥
अमृत रूपी हरिकथा, सुनि म्हैं तृपत न हौत॥
प्रभू चरित फिरि फिरि सुनन, ह्वै ईछा ऊदौत॥ ३॥
त्रिबिध ताप तैं तप्त नर, लहत दुष्ष अनपार॥
ताकी औषद पाय ज्यौं, तृपति न ह्वै निरधार॥ ४॥

॥ अंतरिक्ष उवाच॥

इहि सुनि बोलै अंतिरिष, जीव सिद्धि कै काज॥
प्रभू पंचमहाभूत करि, श्रजि प्रांनीन समाज॥ ५॥

श्रजै पंच महाभूत सौं, यौं प्रांनिन कै देह॥
तिन्हमैं मन कौं रूप इक, धर्यौ प्रभू अनछेह॥ ६॥
अरु दस इंद्रिन कौं धर्यौ, रूप भलैं अनुसार॥
तासौं करहीं जीव इहि, भोग सु बिबिधि प्रकार॥ ७॥
आपु प्रकासी इंद्रियन, तिन्हसौं जीव अग्यांन॥
भोग बिषै कौ करत है, मांनमोद अप्रमांन॥ ८॥
अरु या झूठी देह कौ, गनिकैं आत्म समांन॥
अति आसक्त सु हौत है, यामैं जीव निदांन॥ ९॥
जीव बासनां जुत करत, करम इंद्री सौं कर्म॥
ग्रहन दुषात्मक करत है, ताकैं फल कौ मर्म॥ १०॥
यासुं अमंगल करम की, गति कौ प्रापति हौत॥
या जग मैं तबलौं लहै, जनम मरन ऊदौत॥ ११॥
प्रलै पंच महाभूत कौ, निकट जबै आवंत॥
तब तन सूछिम थूल कौं, काल अनादि अनंत॥ १२॥
मेल देत है प्रकृति मैं, प्रभु ईछा अनुभाय॥
मायाहीं सौं फिरि प्रगट, हौत सु औसर पाय॥ १३॥
पहलैं तौ सौ बरष लौं, बरषा हौत सुनांहि॥
भांन करत संतप्त अति, जीवन लौकनि मांहि॥ १४॥
कढत सैस मुष मध्य तैं, प्रबल अगनि की ज्वाल॥
सौ जारत संसार कौ, प्रेरक पवन बिसाल॥ १५॥
बरषत है सौ बरष लौं, संवर्त मैघगन फेरि॥
रूप बिराट सुमध्य जल, लीन हौत बहि बेरि॥ १६॥
प्रभु बिराट कौ जीव तब, तजि निज रूप बिराट॥
लीन हौत है प्रकृति मैं, मैटि जगत कौ थाट॥ १७॥
गंध प्रिथी कौ पवन कर, सकल रहत है जात॥
अरु इहि प्रिथवी नीर मधि, जाय समाय बिष्यात॥ १८॥
दूरि हौत रस सलिल कौ, मिलत अगनि कै मांहिं॥
अगनि रूप मिट जाय पुनि, मिलत पवन तन ठांहिं॥ १९॥
परस मिटत है पवन कौ, सुनि आकास प्रभाय॥
बहुर्यौ मधि आकास कै, पवन लीन ह्वै जाय॥ २०॥
जात रहत ,आकास कौ, सबद सु ताहीं बार॥
नभ तामस अहंकार मैं, लीन हौत निरधार॥ २१॥
रजोगुनी अहंकार मैं, ह्वै बुद्धि इंद्री लीन॥
सात्त्वक अहंकार मधि ह्वै, मन सुर इंद्रीलीन॥ २२॥

अहंकार महतत्त्व मधि, लीन हौत निरधार॥
लीन हौंहि महतत्त्व फिरि, माया मधि वां बार॥ २३ ॥
इहि माया भगवांन की, त्रिगुन मई अनपार॥
उतपति पालन प्रलै जग, करत भलैं अनुसार॥ २४ ॥
प्रभु की माया त्रिगुन मय, हम्ह दिय बरन जताय॥
अब तुम्ह का चाहत सुन्यौ, सो कहियै समझाय॥ २५ ॥

॥ राजोवाच॥

बोलै राजा जनक फिरि, जिन्ह चित चंचल आंहि॥
तिन्हसौं प्रभु की प्रकृति इहि, तरी जात है नांहि॥ २६ ॥
सो माया अग्यांनहूं, बिन परिश्रम तरि जाय॥
अैसौ भेद बताइयै, मोकौं मुनि सुषदाय॥ २७ ॥

॥ प्रबुद्ध उवाच॥

इहि सुनि बोलै प्रबुध मुनि, सुनियै जनक नरैस॥
करम करत है मनुष निज, टारन दुष रु कलैस॥ २८ ॥
अरु ग्रहस्थाश्रम करत नर, सुष की प्रापति काज॥
उन्ह करमन तैं हौत दुष, मिलत न कछु सुष साज॥ २९ ॥
निति आरत चिंता अधिक, जासौं निज मृत हौय॥
अैसौ जांनि द्रव्य ग्रिह, नर अग्यांन चित गौय॥ ३० ॥
ग्रिह सुत पसु चंचल सदा, थिर ह्वै रहत न कौय॥
इन्हसौं लायै प्रीत निज, कबहुँ कछू न फल हौय॥ ३१ ॥
यौं ही इंद्रादिकन कै, लौक नष्ट ह्वै जात॥
बिना अैक प्रभु भगति कछु, और न थिर ठहरात॥ ३२ ॥
सुवर्ग ठौरहूं सुरन मधि, केउ गुरू समभाय॥
केउ लघु लहि फल धर्म कौ, फिरि गिरि परत सदाय॥ ३३ ॥
ज्यौं इहां प्रिथ्वी परि केउ, षंड षंड कै राय॥
केउ चक्रवर्ती नृपति कौ, इहिं रीति उहां आय॥ ३४ ॥
बेद पढ्यौ जो हौंहि अरु, जांहिं ब्रह्म कौ ग्यांन॥
अैसै गुरु की सरन गह, जो चहै निज कल्यांन॥ ३५ ॥
जांह भागवत धरम सुभ, सीषै गुर कैं पास॥
जा करि कै संतुष्ट हरि, हौंहिं जांनि निज दास॥ ३६ ॥
हरि बिनु लावै कहुं न मन, करै साध सतसंग॥
दया विनम्रता रु मित्रता, सबसूं रषै सुबंग॥ ३७ ॥
तब पबित्रता सूं सहनौं, पढनौं अपनौं बेद॥
साधि मौन ब्रह्मचर्य्य नहिं, मानैं दुष सुष भेद॥ ३८ ॥

प्रभुहिं लषै सरवत्रहिं पुनि, करै जीव बध नांहि॥
सदा अैकलौं हीं रहै, घर न रचै किहुँ ठांहि॥ ३९॥
बस्त्र फटै टूटै कछू, मिलै सु पहरै अंग॥
राषै किहूं प्रकार करि, चित कौ रौकि अभंग॥ ४०॥
सरधा श्री भागौत मधि, राषै भलैं प्रकार॥
सति बोलै नांहिंन करै, निंदा काहू बार॥ ४१॥
इंद्री बांनी करम मन, निज बस रषै सदापि॥
सुमरन कीर्तन ध्यांन हरि, करै सनैह सथापि॥ ४२॥
जनम करम गुन प्रभू कै, बरनन करै उमांहि॥
उन्हहिं प्रभू कै निमत सुभ, करम करै जुत चांहिं॥ ४३॥
जिग्यादिक तपस्यां रु जप, भलौ आचरन दांन॥
अैसैं करमनि कर सुभग, हिर्दै धारि तत ग्यांन॥ ४४॥
जो अपनीं प्रिय बस्त है, तिय सुत ग्रिह प्रानांदि॥
प्रभूहिं समर्पित तै सबै, करै हिर्दै अहलादि॥ ४५॥
प्रभु कै भक्तन सौं सदा, अपनीं प्रीति लगाय॥
आछी बिधि सेवा करै, समझि उह्वैं सुषदाय॥ ४६॥
साधसंग मैं परसपर, गावै प्रभु गुन चांहि॥
ताहीं सौं फिरि प्रसंन अति, हौंहि आपु चित मांहि॥ ४७॥
अघ हरता भगवांन जिन्हि, सुमिरन करै सुढार॥
अरु और न सुधि द्यावहीं, प्रभु सुध बारंबार॥ ४८॥
करत करत हरि भगत यौं, प्रभु सौं लागि सनैहु॥
प्रेम सुलछिनां भगति उर, उपजै बिनु संदैहु॥ ४९॥
कबहूं हरि कौ ध्यांन करि, रोवै यौं पछिताय॥
अबलौं म्हैं नांहिंन भजै, हाय प्रभू सुषदाय॥ ५०॥
कबहूं तन रोमांच ह्वै, प्रेम मत्त ह्वै जाय॥
कबहूं हँसै गुननि की, करि सराह अधिकाय॥ ५१॥
निर्त करै कबहूं कबहुँ, गावै हरिगुन चांहि॥
सेवा आछी भांत सौं, प्रभु की करै उमांहि॥ ५२॥
पाय चुकै भगवांन कौ, तबै सोच मिट जाय॥
ज्यौं निरधन लहि महाधन, हौत नचिंत सुभाय॥ ५३॥
धरम भागवत यौं मनुष, सीषै भलै प्रकार॥
प्रेमाभक्ति जासौं प्रगट, ह्वै जांकै निरधार॥ ५४॥
तब आश्रय भगवांन कै, हौय मनुष मुद मांनि॥
दुसह माया कौ जु भलैं, सहजहिं तरै निदांनि॥ ५५॥

॥ राजोवाच ॥

इहि सुनिकैं राजा जनक, बोलै बचन अनूप॥
परमातम प्रभु ब्रह्म कौ, हम्हसौं कहियै रूप॥ ५६॥

॥ पिप्पलायन उबाच ॥

उतपति पालन प्रलै जग, करता जे बिसबैस॥
फिरि पिप्पलायन रिष कह्यौ, सुनियैं जनक नरैस॥ ५७॥
जिन्हकैं उतपति करन कौं, है नांहिंन निरधार॥
नारायन भगवांन जें, परम तत्त्व सुषसार॥ ५८॥
बाहरि भीतरि जागतै, सुपन सुषोप्तहिं मांहि॥
बाहरि विषै समाधि कैं, है सुब्रह्म सति आंहि॥ ५९॥
चयतन ह्वै जांकै कियै, हीय इंद्री तन प्रांन॥
सो निश्चै परमातमा, समझहुँ नृप बुधिवांन॥ ६०॥
परमतत्त्व परमातमा, परमब्रह्म तिहुँ नांम॥
रूप अैकहीं जांनियैं, निश्चै प्रभु अभिरांम॥ ६१॥
इंद्री वांनी प्रांन मन, जीव नैत्र लौं आदि॥
पउँचत नहिं बहि रूप लौं, अैसौ प्रभू अनादि॥ ६२॥
बेदहुँ जांकौ रूप गुन, बरनि सकत है नांहि॥
नेति नेति भाषत सदा, चहूं जुगन कैं मांहि॥ ६३॥
स्थूल सूछम सब ब्रह्म है, अैसी बिध निरधार॥
माया सकति संजुक्त है, प्रगट बीचि संसार॥ ६४॥
पहिलैं तौ इक ब्रह्म हो, हुतौ अनादि अपार॥
फिरि तिहुँ गुन करिकै भयौ, प्रकृति रूप निरधार॥ ६५॥
अहं सूत्र महतत्त्वहूं, प्रभुहीं है निरधार॥
इंद्री इंद्रिन कैं अमर, विषै रूप करतार॥ ६६॥
ब्रह्म कबहुँ उपजत नांहिं, हौत नांहि तिहि नास॥
घटत बढत नांहिंन कबहुँ, सब ठां जांकौ वास॥ ६७॥
सबकौ दिष्टा है वही, सदा रहत समभाय॥
निति है अनभव मात्र है, ग्यांन रूप सुषदाय॥ ६८॥
अैक ब्रह्म इंद्रीन तैं, दीसत भांत अनैक॥
जगमगा रह्यौ जगत बिच, निज ईछा कै टैक॥ ६९॥
बिच सरीर ज्यौं पंच बिधि, जीवहिं लाग्यौ प्रांन॥
त्यूंहीं जागत सोवतै, बीच सुषोप्त निदांन॥ ७०॥
हौत लीन निरधार करि, इंद्री अरु अहंकार॥
अंतहकर्नहुँ हौत है, लीन सुषौप्त मंझार॥ ७१॥

जा प्रभु कौ हम्हकौं रहत, ग्यांन भाग्य अनुसार॥
जासौं सबहीं ठौर मैं, दीसि परत करतार॥ ७२ ॥
चित कै मैल सु जांहि टरि, जब हरि भगति प्रभाय॥
आतमा कौ ता चित्त मैं, ह्वै प्रकास सुषदाय॥ ७३ ॥
जइसै नैत्रन मध्य कछु, दोष नांहिंनैं हौत॥
दीसि परत आछै तबै, सूरज कौ ऊदौत॥ ७४ ॥

॥ राजोवाच ॥

बोलै राजा जनक यौं, कहौ करम रिष राय॥
जासूं छूटै करम सब, तत्त्व ग्यांन प्रगटाय॥ ७५ ॥
सनक सनंदन सौं इही, हम्ह बिधि आगै बात॥
पूछी उत्तर नांहिं दियौ, कहौ कारन अग्यात॥ ७६ ॥

॥ आविर्होत्र उवाच ॥

बोलै आविरहौत्र रिष, कर्म अकर्म विकर्म॥
इन्हकैं आछी भांत सौं, कहै बेद बिच मर्म॥ ७७ ॥
निश्चै निगम कहावही, प्रभु कौ रूप उदौत्त॥
गुन मंडित पंडित बड़ै, तामैं मोहित हौत॥ ७८ ॥
बेद कहत है जगत कौ, वाद सुभेद छिपाय॥
ज्यौं निज सिसुनि बड़ै करत, सिछा लोभ जु दिषाय॥ ७९ ॥
करम बतावत वेद सौ, मुकति निमत निरधार॥
मिथ्या ऊपर तैं कहत, लालच स्वर्ग सुढार॥ ८० ॥
आछै करमन कौ कबहुँ, फल नहिं स्वर्ग कहाय॥
फल तौ निश्चै मुकति है, तासौं दुष मिटि जाय॥ ८१ ॥
दीजै औषदि कटुक ज्यौं, बालक कौ बहकाय॥
तब लडवा दिषराइयै, दैनौं कहि ललचाय॥ ८२ ॥
सो वा औषदि कौ कछू, फल है लडवा नांहि॥
फल है रोग गमावनौ, जासौं सुष सरसांहि॥ ८३ ॥
कर्म करै बेदोक्त नहिं, बहै विकर्म कहाय॥
जनम मरन बहु बार है, सो अधर्म अनुभाय॥ ८४ ॥
कर्म करै वेदोक्त सो, दै समर्पित हरि मांहि॥
तौ प्रापति है सिद्धि कौ, जनम मरन मिटि जांहि॥ ८५ ॥
ग्यांनहीन तिन्ह जनन की, रुचि उपजावन काज॥
कहै बेद स्वर्गादिक फल, और न कछू इलाज॥ ८६ ॥
दूरि करन चाहै कौउ, जो अपनौं अग्यांन॥
जो प्रभु की पूजा करै, रुचि सौं सहित विधांन॥ ८७ ॥

वेद सास्त्र की रीत सौं, पूजा की बिधि जांनि॥
पूजै हरि की मूर्ति कौ, बिधिवत विधि उनमांनि॥ ८८॥
प्रभु प्रतिमां कै सांमुहै, बैठै हौहि पवित्र॥
प्रानायांम अंगन्यास, बिधि करै मुदित उर अत्र॥ ८९॥
तब प्रतिमां कै मध्य अरु, अपनौं हिर्दै सुमांहि॥
पूजा प्रभु करतार की, करै सहित निज चांहि॥ ९०॥
जो सामग्री प्रापत है, ताही सौं चित लाय॥
आछी बिधि पूजा करै, जांनि प्रभू सुषदाय॥ ९१॥
उत्तम आसनहिं बैठि लै, नीर मंत्र पढि पांनि॥
प्रभुहिं छिरक सब बस्त कौ, दै समरपि जुत ग्यांनि॥ ९२॥
पगधौवन कौं पात्र लै, बैठै अपनैं पास॥
मूलमंत्र करि प्रभू कौ, पूजै सहित हुलास॥ ९३॥
अंग उपांग संजुक्त हरि, अरु पार्षदनि संजुक्ति॥
वा मूरति कौ ध्यांन उर, करै काज निज मुक्ति॥ ९४॥
पाद अर्घ आचमन अरु, भूषन बस्त्र सनांन॥
धूप दीप माला पुहप, सुभ सुगंध फल पांन॥ ९५॥
इन्हि सामग्री सौं करै, पूजा प्रभु की चांहि॥
करै प्रनांम सतौत्र पढि, परम प्रेम अवगांहि॥ ९६॥
हिर्दै सिर सिषा न्यास करि, पढि पढि मंत्र सुभाय॥
दधि अषत मधुपर्क निविद, हरि समरपि चितलाय॥ ९७॥
परिजन सहित अस्तुति करै, लै लै इष्ट कौं नांम॥
श्रद्धा सौं निरमाल्य लै, विग्रह करी प्रनांम॥ ९८॥
प्रतमां कौ हरि रूप लषि, धरै चित पुनि सुध्यांन॥
पूजा करि हरि की सु यौं, करै विसर्जन जांन॥ ९९॥
अैसैहीं रवि अगनि जल, अतिथहिं निज हिय मध्य॥
प्रभू जांनि पूजा करै, मुकति हौहि सुप्रसध्य॥ १००॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादश स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

(भगवान के अवतारों का वर्णन)

॥ श्री जनक उवाच ॥

दोहा - पूछत राजा जनक प्रभु, जें जें धरि अवतार॥
कर्म कियै पुनि करत फिरि, करि है इछा प्रकार॥ १॥
सो सब हम्ह सौं तुम्ह कहौ, आछी भांत सुनाय॥
जिन्ह करमन के सुनतहीं, सकल पाप मिटि जाय॥ २॥

॥ द्रुमिल उवाच॥

इहि सुनि बोलै द्रुमिल रिष, है अनंत भगवांन॥
उन्हकै गुननि अनंत है, वेद न सकत बषांन॥ ३॥
तै पूरन चाहै कह्यौ, तौ बुधि बाल कहांहि॥
भुव रजकन जाही गनै, प्रभु गुन गनै न जांहि॥ ४॥
पंचभूत करि प्रथम प्रभु, रच्यौ बिराट सरूप॥
तामैं अपनैं अंस करि, पैठे आपु अनूप॥ ५॥
नारायन कहवत भयै, तब पुरषा अवतार॥
है सरीर जिन्ह कौं प्रगट, तीन लौक निरधार॥ ६॥
जिहँ करता भगवांन की, इंद्रिन कैं अनुभाय॥
ग्यांन कर्म इंद्री दसौं, प्रांनिन कैं प्रगटाय॥ ७॥
आपुहिं तै जिन्ह मांहि है, परम ग्यांन ऊदौत॥
देह सकति इंद्रिय सकति, क्रिया जिन्हहिं तैं हौत॥ ८॥
सतगुन रजगुन तमोगुन, इन्ह तिहुँ गुन अनुसार॥
उतपति पालन प्रलै सब, करत बेइ करतार॥ ९॥
रजगुन करिकैं सृष्टि मधि, प्रभू भयै मुष च्यार॥
बिस्नु भयै पालन समैं, सत्त्व रूप निरधार॥ १०॥
बहुरि तमोगुन करि भयै, प्रलै समैं भूतैस॥
उतपति पालन प्रलैं इन्ह, तिहुँ तैं हौत बिसैस॥ ११॥
माता मूर्ति रु धर्म पितु, तिन्ह दुहूनि कैं धांम॥
नर नारायन रूप द्वै, प्रगटै प्रभु अभिरांम॥ १२॥
करत भयै तै कर्म सुभ, मुकति निमत बिसवेस॥
अबहुँ बिराजत है प्रगट, सेवत सकल रिषैस॥ १३॥
इंद्र डर्यो अैं साधि तप, लैं हैं म्हेरौ लोक॥
कांम कौ वाहि पठायौ, बद्रिकाश्रम भय सोक॥ १४॥
रित बसंत अरु अपसरा, मंद सुगंध बयार॥
चलै कांम कै संग अै, गहि मूरष अधिकार॥ १५॥

सर कटाछि अपसरन कैं, तिन्हसौं तांह अनंग॥
नर नारायन कौ भयौ, बैधत सहित उमंग॥ १६॥
इन्हकी महिमां कौ नाहिंन, जांनत रह्यौ अग्यांन॥
अपनैं पौरष कौ महा, धरत भयौ अभिमांन॥ १७॥
नर नारायन हँसि कह्यौ, चूक इंद्र की जांनि॥
अहौ मदन अपसर पवन, तुम्ह मति डरहुँ निदांनि॥ १८॥
लैहूँ हम्हरै पास तैं, तुम्ह भौजन या बार॥
तौ हम्हरौ आश्रम जु इहि, हौंहि सफल निरधार॥ १९॥
सबहिं अभय दाता प्रभू, बोलै अैसै बैंन॥
तबै लजित ह्वै बै सबै, नीचै कर रहि नैंन॥ २०॥
पवन अपसरा मदन यौं, बोलै दया दिषाय॥
यहै बात तुम्ह मैं प्रभू, नांहिंन बिचित्र लषाय॥ २१॥
तुम्ह प्रभु हौ सब जगत कै, दीन बंधु सुषधांम॥
धीरजवंत बड्डे करत, तुम्ह चरननि परनांम॥ २२॥
तुम्हकौं सैवत भक्तजनन, तिन्हकैं कारिज मांहि॥
बिघन करत है देवता, धरि इरषा चित ठांहि॥ २३॥
पैं सैवत है भक्तजनन, तुम्हकौं निज चित लाय॥
तै तुम्हकौं मिलहीं प्रगट, दै अमरन सिर पाय॥ २४॥
अरु जें मांनत सुरन कौं, तिन्ह कैं कारिज मध्य॥
बिघन करत नहिं देवता, इहै बात जु प्रसध्य॥ २५॥
सीत उस्न बरिषा पवन, भूष दुष और प्यास॥
अै सामुद्र अनैंक है, तिह्नैं लांघि बिन त्रास॥ २६॥
बहुर्यौ निरफल क्रौध कै, बसि ह्वै कै जन कौय॥
बिनु समझै सब दैत है, अपनी तपस्यां षौय॥ २७॥
नर नारायन प्रभुन सौं, अैसै बचन सुढार॥
कहत भयै कर जोरि कैं, वै सब संजुत मार॥ २८॥
रहत हुति केउ अपसरा, नर नारायन पास॥
सो नर नारायन उह्नैं, दिषई सहित हुलास॥ २९॥
कमला सम बै रूप मैं, अंग सुगंध अपार॥
तिन्हकौं लषि वै मदन जुत, मुहित भयै निरधार॥ ३०॥
नर नारायन प्रभु कह्यौ, उन्हसौं सहित उमाहुँ॥
इन्हमैं लायक स्वर्ग कैं, अपसर तुम्ह लै जाहुँ॥ ३१॥
वै इन्ह आग्यां मांन कैं, करि प्रभु कौं परनांम॥
गयै स्वर्ग लै उरवसी, सबमैं श्रेष्ठ सुवांम॥ ३२॥

बासव कौ परनांम करि, अमर सभा कै मांहि॥
नर नारायन कौ कह्यौ, अतुलित बल उहिं ठांहि॥ ३३॥
सो सुनि डरप्यौ इंद्र पुनि, किय अचिरज अधिकाय॥
प्रसंन भयौ लषि उरवसी, जांनै प्रभु सुषदाय॥ ३४॥
दीनबंधु करता पुरष, सुधारि हंस अवतार॥
आत्म जोग सनकादिकनि, सिषयौ भलैं प्रकार॥ ३५॥
दत्तात्रैय सनकादिक रु, रिषभ प्रकासिक ग्यांन॥
अैं धारै अवतार प्रभु, करन जगत कल्यांन॥ ३६॥
असुर बली हयग्रीव नैं, लीनैं बेद चुराय॥
हयग्रीवा अवतार तब, धारिकैं प्रभू सुभाय॥ ३७॥
बेद ल्याय बिधि कौ दियै, मार्यौ असुर कुजात॥
रिछया सबहीं जगत की, करत भयै जगतात॥ ३८॥
प्रिथवी की सब अंन की, अरु मनु की करतार॥
करत भयै रिछया भलैं, धरि मछा जु अवतार॥ ३९॥
धरि वाराह सरूप निज, करता पुरष उदार॥
मारि दैत्य हरनाछ कौं, जल तैं भुवी उछार॥ ४०॥
समैं मंथन सामुद्र कैं, ह्वै कछप भगवांन॥
मंदर गिर राषत भयै, अपनैं पीठ सथांन॥ ४१॥
ग्राह ग्रस्यौ गज कौं जबै, प्रभु धरि हरि अवतार॥
गज की करी सहाय सुनि, श्रवननि दीन पुकार॥ ४२॥
इक्यासी जु हजार रिषि, बालष्यल लघु देह॥
गौषुर जल मधि बुडि कियै, प्रभु की अस्तुति अछैह॥ ४३॥
तिन्हहूं की रिछया करी, हरि अवतार क्रिपाल॥
गौषुर जल तैं पार किय, उन्हकौं मिट्यौ जंजाल॥ ४४॥
इंद्रहिं वृत्र कै हतन कौ, लग्यौ हुतौ बड पाप॥
ताहू की रिछया करी, हरि अवतार सजाप॥ ४५॥
देवतांन की तियन लै, गयै असुर निज गैह॥
रौकि रौकि राषत भयै, निरदय असुर अछैह॥ ४६॥
बउत भगत प्रहलाद कौ, दीनौं दुष अनपार॥
तबै हरनकसयप हत्यौ, ह्वै नरसिंघ अवतार॥ ४७॥
सुर असुरन बिच जुद्ध ह्वै, तब तब धरि अवतारि॥
प्रभू असुर कौं मारि जग, रिछया करत मुरारि॥ ४८॥
ह्वै बांवन अवतार प्रभु, बलि सौं ठगई ठांनि॥
लै त्रिलौक दिय इंद्र कौ, थप्यौ आपनौं जांनि॥ ४९॥

परसरांम अवतार धरि, छत्री हतै अपार॥
कीनौं सहश्राबाहु कौ, बंस नष्ट करतार॥ ५० ॥
रांम रूप ह्वै कै प्रभू, बांध्यौ सैतु बनाय॥
लंक बभीषन कौं दई, हति रावन दुषदाय॥ ५१ ॥
जिन्हकी कीरत जगत कै, पापहिं टारनहार॥
जय जय श्रीरघुनाथ जी, दैंन मुकति सुषसार॥ ५२ ॥
भार उतारन प्रिथी कौ, जादव कुल कैं मध्य॥
प्रगट हौंहिगें कृस्न प्रभु, पूरन कला प्रसध्य॥ ५३ ॥
तैं करिहै अदभुत चरित, तिन्हकौं नांहिन पार॥
देवतांनहूं तैं न ह्वै, वै चरित जू उदार॥ ५४ ॥
ह्वै कलिजुग की आदि मैं, प्रभू बुधा अवतार॥
मुहित जिग्य करतांन कौं, करि है बउत प्रकार॥ ५५ ॥
फिरि कलकि अवतार धारि, पूर्न ब्रह्म भगवांन॥
पापिन पुनि वै मारि है, थापन धरम निदांन॥ ५६ ॥
अैसै प्रभु कै जनम अरु, करम महा सुषदाय॥
है अथाह तै हम्ह बरनि, तुम्हकौं दियै सुनाय॥ ५७ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते चतुर्थोऽध्याय: ॥ ४ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ पंचमोऽध्याय: ॥

(भक्तिहीन पुरुषों की गति और भगवांन की पूजा विधि का
वर्णन)

॥ जनक उवाच ॥

दोहा - पूछत राजा जनक जे, भजत न प्रभु कौ कौय॥
कांम मुहित ब्याकुल महा, तिन्हकी का गति हौय॥ १ ॥

॥ चमस उवाच ॥

जनक नृपति कै बचन सुनि, बोलै चमस रिषैस॥
चरन जंघ आनन भुजा, प्रभु कै परम सुदेस॥ २ ॥
तिनकैं चव आश्रम सहित, अरु संजुत गुन तीन॥
बिप्र आदिक च्यारौं बरन, प्रगटै करमाधीन॥ ३ ॥
सकल जगत चहुँ बरन बिच, जा प्रभु सौं प्रगटाय॥
ताहि न भजि परहीं नरक, थांन भ्रष्ट ह्वै जाय॥ ४ ॥

नारी वैस्य रु सूद्र लौं, कौइक जन जग मांहि॥
प्रभु की कथा रु कीरतन, कबहुँ करत है नांहि॥ ५॥
तिन्ह परि चहियै करहिं अति, तुम्ह सै क्रिपा उदौत॥
तातैं राजा बैस्य द्विज, प्रभु कौ प्रापति हौत॥ ६॥
बिप्र पढत है वेदहिं अरु, उत्तम जनमहिं सुपाय॥
मुहित हौत संसार बिचु, प्रभुहिं दैत बिसराय॥ ७॥
अरु वै जें जन कर्म करि, जांनत है कछु नांहि॥
मूरष है आपुहिं गनत, अति पंडित हिय ठांहि॥ ८॥
बै नर वांनी वेद मधि, मोहित है निरधार॥
मांनत है सब भोगहीं, श्रेष्ठ बीच संसार॥ ९॥
रजगुन करिकैं करत है, नित्य मनोर्थ अपार॥
जिन्हकौं बैर सु सर्प सम, है कांमी मति छार॥ १०॥
अति अभिमांनी पाप कै, करता महा अग्यांन॥
हरि भक्तन कौ दैषिकैं, हँसत षौय निज स्यांन॥ ११॥
तिय की करहिं उपासनां, ग्रिह बिच मग्न अथग्य॥
जिन्हमैं अनगनित दछिनां, अैसै करहीं जग्य॥ १२॥
अपनैं भोजन कै लियै, मारत पसू अपार॥
दया धरत नहिं तनक अरु, नांहिंन धरम बिचार॥ १३॥
लछमी विद्या रूप रु कुल, त्याग कर्म बल पाय॥
मांनि गर्ब निज हिय अधिक, हौय सुअंध कुभाय॥ १४॥
परम भगत हरि कै अबुर, हरि कौ मांनत नांहि॥
परै नर्क सम बिच जगत, यौं ही जनम बितांहि॥ १५॥
सम आकास बिराजहीं, प्रभु सब प्रांनिन मध्य॥
जिन्हकौं गावत है निगम, नेति नेति सप्रसध्य॥ १६॥
तिन्हकैं सुनत चरित नांहिं, जें मूरष अग्यांन॥
करत अनैक मनोर्थ निज, जिन्हमैं दुष अप्रमांन॥ १७॥
पल भछिन तिया भौगनौ, करिनौ मदरा पांन॥
उपजतहीं इन्हमैं मनुष, रुचि राषत बिनु ग्यांन॥ १८॥
अरु यौं याहि बतावहीं, प्रभु की आग्या वेद॥
ब्याह जग्य सौत्रामणई, और जु समै निषेद॥ १९॥
करि बिबाह संतान कैं, निमत करै तिय संग॥
मांस भषै तौ जिग्य मधि, औरन काहू बंग॥ २०॥
जिग्य करिकैं सउत्रामणी, वास मात्र मदिरांहिं॥
सूंघै पुनि किहुं बेर मैं, पांन करै लै नांहिं॥ २१॥

वेद कहीयै वाद सौं, दूरि करन निरधार॥
तातें वर्जित ही इहै, लहियै भेद बिचार॥ २२॥
अनभव फल है ग्यांन कौ, धन कौ फल है धर्म॥
सौ लगाय दै ग्रहहिं मधि, लषत न मृतु कौ मर्म॥ २३॥
पसु हतनौ मद सूंघनौ, कह्यौ जिग्यही मांहिं॥
अरु निमतहिं संतान कै, तिय प्रसंग सुबतांहिं॥ २४॥
नहिं जांनत या तत्त्व कौ, मूरिष जन अग्यांन॥
विषै भोगहीं कौ सदा, मांनत सुषहिं निदांन॥ २५॥
जें ऐसै जांनत नांहि, नवत न किहुँ सूं नांहि॥
आपुहिं मांनत साधुहिं पसु, हतन वार न लगांहि॥ २६॥
तिन्हकौ पसु वै षात है, बिच पर लौक कुढार॥
किय कर्म इहां कै उहां, भुक्तत भलैं प्रकार॥ २७॥
आत्मा राजत है प्रगट, देह पराई मांहि॥
तासौ राषत द्रौह निज, मित्र समझहीं जु नांहि॥ २८॥
समझि कुंटबी रु मित्र निज, तिन्ह सुं करत न सनैह॥
तै नर नर्कहिं जात है, पावत दुषहिं अछैह॥ २९॥
जें जन मुक्तहुँ नांहि अरु, है मूरषहूं नांहि॥
है त्रिवर्न मैं तें करत, निज बिगार अधिकांहि॥ ३०॥
आतमघाती वै मनुष, कहियत है जगमांहि॥
जें अग्यांन कौं ग्यांन करि, मांनत निज उर ठांहि॥ ३१॥
धन्य धन्य वै जगत बिच, कबहुँ कहावै नांहि॥
समैं पाय उन्ह नरन कैं, सब मनोर्थ मिट जांहि॥ ३२॥
सुहृद पुत्र ग्रिह प्रकृति कै, रचै बीच संसार॥
तिन्ह संगति तैं हरि बिमुष, परत नर्क निरधार॥ ३३॥

॥ राजोवाच॥

इहि सुनि राजा जनक फिरि, पूछत भैद सुढंग॥
हरि कौ किह किह समैं है, कौनुँ कौनुँ सौ रंग॥ ३४॥
अरु का का भगवांन कै, प्रगट हौत है नांम॥
किह किह बिधि सौं कीजियै, प्रभु पूजा अभिरांम॥ ३५॥

॥ करभाजन उवाच॥

ऐसै राजा जनक कैं, सुनिकैं बचन सुढार॥
करभाजन बौलत भयै, जिन्ह चित ग्यांन अपार॥ ३६॥
सतजुग त्रैता द्वापुर रु, कलिजुग मधि निरधार॥
नांम रंग आकृति सदा, प्रभु कै हौत अपार॥ ३७॥

स्वैत रंग सतजुग विषै, प्रगट्यौ हौत सुढार॥
पहरै बलकल बस्त्र तन, सीस जटा भुज च्यार॥ ३८॥
धरै जनेउ चर्म मृग, दंड कमंडल हाथ॥
ब्रह्मचारी कौ रूप निज, राषत जग कै नाथ॥ ३९॥
सांत दांत वा समैं मैं, मनुष रहत सब कौय॥
सकल सुहृद ह्वै परसपर, किहुँ कै बैर न जौय॥ ४०॥
करनौ सम दम तप भलै, अपनौं चित्त लगाय॥
इही वा समैं प्रभुन की, पूजा सुभग कहाय॥ ४१॥
हंस सुपर्ण रु आतमा, धर्म पुरष जोगैस॥
ईस्वर अरु बैकुंठ अैं, जब प्रभु नांम सुदैस॥ ४२॥
लाल बरन हरि हौत है, त्रेता जुग कैं मध्य॥
सुबरन से कच च्यार भुज, बेद सरूप प्रसध्य॥ ४३॥
हौम पात्रनि जु हाथ मैं, लीनैं प्रभु करतार॥
सर्व देवमय अंग जिन्ह, पूरन ब्रह्म उदार॥ ४४॥
पढकै वेद सु ता समैं, जन धरमिष्ट अपार॥
ब्रह्मवादी भगवान कौ, पूजत भलैं प्रकार॥ ४५॥
सर्वदेव उरुक्रम प्रभू, प्रस्नगर्भ उरुगाय॥
जयंत व्रषाकपि जग्यि अैं, जब प्रभु नांम कहाय॥ ४६॥
अरु ह्वै द्वापुर कैं समैं, स्यांम बरन भगवांन॥
धरै संष चक्रादिक चहुँ, आयुध अपनैं पांन॥ ४७॥
पीतांबर धारन कियै, श्री चिह्न उर कै ठांम॥
महाराज कै से धरै, चिह्न परम अभिरांम॥ ४८॥
वेदतंत्र करि प्रीत जुत, जन बुधिवंत अपार॥
हरि कौ पूजन करत है, हौंन मुकति निरधार॥ ४९॥
वासुदैव प्रदुमन्य अरु, संकरषन अनिरुद्ध॥
इन्हकौं है परनांम इहि, मंत्र पढहिं ह्वै सुद्ध॥ ५०॥
बासुदैव बिस्वैस पुरष, नारायन रिष आप॥
सब प्रांनिन कैं आतमा, तिन्हकौं करत सुजाप॥ ५१॥
सबै करहिं प्रभु की अस्तुति, अैसै द्वापुर मांहि॥
नाना तंत्र विधान करि, पूजै हरि कौ चांहि॥ ५२॥
अब कलजुग की रीत तुम्ह, सुनौं नृपति चित लाय॥
प्रभु कौ स्यांम सरूप तन, उज्जल दुति जु लषाय॥ ५३॥
आयुध भक्तन जुत प्रभू, परमानंद सरूप॥
या कलिजुग कै समैं मैं, प्रगटत महा अनूप॥ ५४॥

अैसै प्रभु कौ करि भलै, नांम कीरतन चांहि॥
आछी बिध पूजन करै, दास भाव अवगांहि॥५५॥
कलजुग मैं हरिनांम है, जिग्यहुँ तैं अधिकांहि॥
सो लीनैं हरिनांम नर, बिनु परिश्रम तरि जांहि॥५६॥
ध्यांन करन के जोग्य प्रभु, ईछावर कैं दैंन॥
दुष रूपी जु कुटुंब तैं, टारन पंकज नैंन॥५७॥
सिव बिधि करहीं निति अस्तुति, सब तीर्थन कैं धांम॥
सरनांगत पालन समर्थ, दीनबंधु अभिरांम॥५८॥
अपनैं दासन के सदा, दुष कैं टारनहार॥
या संसार समुद्र की, नउका है करतार॥५९॥
महापुरष असरन सरन, हे स्वामी बहु नांम॥
चरन कंवल तुम्हरैन कौं, बार बार परनांम॥६०॥
जु राज लछमी छौडि कै, बचन पिता कौ मांन॥
राषन धरम म्रजाद कौ, बन गवनै भगवांन॥६१॥
माया मृग सीता चह्यौ, तब दौरे उहिं साथ॥
महापुरष सुंदर वदन, अैसै श्रीरघुनाथ॥६२॥
तिन्हकैं चरनन कौं करत, बार बार परनांम॥
अैसै कलि कै समैं जन, गावत गुन सुषधांम॥६३॥
जुग जुग कै अनुसार यौं, प्रांनी बिच संसार॥
प्रभु दाता कल्यांन कै, तिन्हकौं पुजहिं सुढार॥६४॥
जें पहचांनत गुन सुभग, लैत बस्त कौ सार॥
तें जन कलजुग की करत, सदा सराह अपार॥६५॥
नांम कीरतन प्रभू कौ, कीनैं कलजुग मांहि॥
सब स्वारथ पइयै भलैं, रहै कछू दुष नांहि॥६६॥
सांति पाय क्रौध न करै, तौ दुष तैं छुटि जांहि॥
परम लाभ या तैं कछू, है प्रांनिन कै नांहि॥६७॥
सतजुग लौं तिहुँ जुगन मैं, जें प्रांनी प्रगटाय॥
तें कलजुग कैं मध्य फिरि, प्रगट्यौ चहत सुभाय॥६८॥
नांम लियै भगवांन कौ, प्रांनी कलजुग मांहि॥
मुक्त हौत निरधार करि, जनम मरन मिटि जांहि॥६९॥
ताम्रपर्णी रु महापुन्या, पयस्वनी कृतमाल॥
कावेरी पुनि प्रतीची, अैं सरिता सुविसाल॥७०॥
द्रविड देस कैं मध्य अैं, है सरिता सुषदाय॥
तिन्हकैं जल कै पांन सौं, परम भगति सरसाय॥७१॥

सकल कर्म तजि प्रभु सरन, जो कौ आयौ हौय॥
भूत पितर रिष सुरन कौं, करजदार नहिं सौय॥ ७२॥
जो सैवत प्रभु पद कंवल, परम प्रीति अनुसारि॥
ताकैं हिय मैं पैठि हरि, पाप दैत सब टारि॥ ७३॥

॥ नारद उवाच॥

नारद नृप बसुदैव सौं, कहत सुनौं हौ राय॥
सुनिकैं भगवत धरम नृप, जनक भलै अनुभाय॥ ७४॥
रिषभदेव कै सुतन की, पूजा करी सुढार॥
रिष हुव अंतरध्यांन वै, सबनि लषत वां बार॥ ७५॥
करत भागवत धरम वै, राजा जनक बिदैह॥
प्राप्त परम गति कौ भयै, प्रभु सौं ल्याय सनैह॥ ७६॥
तुम्ह हौ हे बसुदैव जू, करौ भागवत धर्म॥
तौ प्रापति भगवांन कौं, ह्वै हौ तजि जग भर्म॥ ७७॥
तुम्ह दुहु तिय पति कैं सुजस, सोहैं पूर्न जहांन॥
जिन्हकैं पुत्र जु भयै प्रगट, कृस्न कुँवर भगवांन॥ ७८॥
आलिंगन दरसन सयन, बैठन बौलन बैंन॥
भौजन जुत अैं बात सब, प्रभु संग करत सुषैंन॥ ७९॥
पुनि अपनैं सुत मांनि कैं, करत सनेह अपार॥
तातैं महापबित्र तुम्ह, भयै बीच संसार॥ ८०॥
बासुदैव मिथ्या बहुरि, नृपति साल्व सिसुपाल॥
इह्नैं आदि केउ दुष्ट किय, प्रभु सौं बैर बिसाल॥ ८१॥
तिनहूं सौवत बैठतै, राष्यौ प्रभु कौ ध्यांन॥
बेउ लीन भगवांन मैं, भयै भलै उनमांन॥ ८२॥
तातैं जें जन प्रीत करि, पूजत प्रभुहिं उमांहि॥
तैं पावत है मुकति सो, क्यूं हूं अचिरज नांहि॥ ८३॥
ईस्वर आत्मा सबनि कैं, है श्रीकृस्न कुमार॥
तिन्हमैं करहुँ न पुत्र बुद्धि, तुम्ह अब काहू बार॥ ८४॥
माया करि मानुष भयै, बै ईस्वर करतार॥
दुष्ट नृपन कौं मारिकैं, टारन भुवकौं भार॥ ८५॥
सांध संत रिछया करन, सांति मुक्ति जीव दैंनि॥
परब्रह्म अवतरित हुवै, परम कीरति सुषैंनि॥ ८६॥

॥ श्री सुक उवाच॥

बोलै श्रीसुकदेव यौं, सुनिकैं नृप बसुदैव॥
करत भयै अचिरज महा, समझि पुत्र कौ भैव॥ ८७॥

मातु देवकी कौ भयै, महामोह सब दूरि॥
जान्यौ अपनैं सुपुत्र कौं, ईस्वर भेद सपूरि॥ ८८॥
जें कौं जन इतिहास इहि, राषै निज उर ठांम॥
ताकैं सबहीं पाप टरि, लहै मुकति अभिरांम॥ ८९।
परम पबित्र इतिहास इहि, सुनै जु चित्त लगाय॥
सोक मोह सब दूरि ह्वै, लहै ब्रह्मपद सुभाय॥ ९०॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

(देवताओं की भगवान् से स्वधाम पधारने हेतु प्रार्थना तथा यादवों को प्रभासक्षेत्र जाने की तैयारी करते देखकर उद्धव का भगवान के पास आना)

॥ श्रीसुक उबाच ॥

दोहा - श्री सुक कहत प्रजापति रु, पुत्रननि जुत मुष च्यारि॥
लियै संग निज भूतगन, महा मुदित त्रिपुरारि॥ १॥
सुर आदित रिभु अंगिरा, बसु रु अस्वनी कुमार॥
बिस्वे देवा साध्य सिध, पितर गंधर्ब अपार॥ २॥
गुह्यक चारन अपसरां, बिद्याधर रिष रु नाग॥
इन्द्र सबहिंन कौ संग निज, लै वा सब बहि जाग॥ ३॥
ऐं सब आयै द्वारका, धरै मोद अनपार॥
करन काज श्रीकृस्न कौ, दरसन अति सुषसार॥ ४॥
प्रभु जिहँ सुंदर रूप कौ, धरिकैं भलैं प्रकार॥
अघ हरता सब लौक कौं, कीनौं जस बिसतार॥ ५॥
जुत संपति पुर द्वारका, बीच सकल सुर आप॥
करत भयै श्रीकृस्न कौ, दरसन अति सुषपाय॥ ६॥
किय बरषा भगवांन पैं, फूल सुवर्ग कैं लाय॥
लषि सौभा श्रीकृस्न की, मांनत भाग बडाय॥ ७॥
चित्र बिचित्र सुमध्य जिहीं, निकसत अर्थ अपार॥
अैसी बांनी सौं करी, प्रभु की अस्तुति सुढार॥ ८॥

॥ देवा ऊचुः ॥

सुर बोलै जे चहत है, कर्म फासि तैं मुक्त॥
तेहिं जन तिन्हकौं चितवन, करत सुप्रेमहिं जुक्त॥ ९॥
मन बच इंद्री प्रांन बुद्धि, करिकैं धरहीं ध्यांन॥
अैसै तुम्ह पद कँवल कौ, नमसकार भगवांन॥ १०॥
उतपति पालन प्रलै तुम्ह, करत प्रकृति अनुसार॥
कर्म मध्य तुम्ह लिप्त नहिं, सुष मैं मन अनपार॥ ११॥
पढनौ बेद रु दांन तप, बिद्या कर्महिं सुढार॥
इन्ह करि दुष्टन हौत सुध, जइसै भलै प्रकार॥ १२॥
सरधा करिकैं रावरौ, सुनत सुजस सुषसार॥
जासौं जइसै हौत है, दुष्ट सुद्ध निरधार॥ १३॥
निजू कल्यांन निमत मुनि, जांहि रषत उर ठांम॥
चतुरव्यूह सु उपासनां, मधि पूजा बहु नांम॥ १४॥
अैसै हे प्रभु रावरै, चरन कमल सुषदाय॥
जारन मो उर मैंल हौ, अग्नि समांन सुभाय॥ १५॥
बेदत्रई की बिधिन सौं, लै कर सुध हविस्यांन॥
कीजै जांकै चिंतवन, मन वच भल उनमांन॥ १६॥
जोग रु माया रावरी, जिन्हैं समझ बे चाह॥
परम भक्त अैंसिन्नी सहित, तुम्ह निति हौ जग नाह॥ १७॥
बहि बनमाला बसी है, हिर्दै रावरै मध्य॥
ईर्षा लछमी सौति ज्यौं, तासौं करत प्रसध्य॥ १८॥
लछमी कौ त्रसकार करि, जल दल भक्त उमांहि॥
तुम्हहिं दैत सौ लैत हौ, आपु बउत करि चांहि॥ १९॥
असुभ बासनां जारिबै, कारन है करतार॥
चरन रावरै अगनि सम, है निति प्रति निरधार॥ २०॥
जिन्ह चरनन मधि सौभहीं, गंग पताक समांन॥
सुर असुरन की सैंन कौं, दैंन अभय भय दांन॥ २१॥
स्वर्ग दैत हौ सेवकनि, नर्क दैत पापीन॥
तुम्हहिं भजत हम्ह तिन्ह अधिन, करौ चरन तुम्ह छीन॥ २२॥
ब्रह्मादिक जिन्हि वसि सदा, नाथै ब्रषभ समांन॥
प्रकृति पुरस कै हौ परै, काल रूप भगवांन॥ २३॥
अैसै पुरसोतम परम, तुर्म्ह हौ स्यांम सुजांन॥
तिन्हकैं पद पंकज करौ, नित प्रति हम्ह कल्यांन॥ २४॥
उतपति पालन अरु प्रलै, आपु करत हौ स्यांम॥
महतत्त्व माया जीव कौ, दैंन सिछा बहु नांम॥ २५॥

सबकैं नांम निमंत तुम्ह, प्रगट हौत करतार॥
अैसै काल गंभीर कै, आप रूप निरधार॥ २६॥
अरु जें जग मधि पुरष सब, तुम्ह तैं बीरज पाय॥
गर्भ समांन सुधरत है, महतत्त्व कौ सुषछाय॥ २७॥
सो महतत्त्व माया सहित, स्त्रजत भयौ अंडाहि॥
अष्टावर्न जु सहित है, अंडा सुई सदाहि॥ २८॥
थावर जंगम जीयन कैं, हौ ईस्वर जु सदाप॥
भौग प्रकृति कैं गुनन कौं, करत लिप्त नहिं आप॥ २९॥
बिषै बासनां मध्य सब, और लिप्त ह्वै जात॥
तुम्ह सब ठां निर्लेप हौ, हे स्वामी जगतात॥ ३०॥
अस्त्री सौरह सहस जिन्ह, द्रिग कटाछि सर मैंन॥
तैऊ मुहित न कर सकी, तुम्ह कौ पंकज नैंन॥ ३१॥
कथा रावरी अमृत जल, ताकी नदी सुढार॥
अरु चरनौदक की नदी, दुहु अघटारन हार॥ ३२॥
इक गंगा अरु दुतिय सुभ, कीरति तुम्हरी स्यांम॥
अति सुषदायक जगत बिच, अैं दुहु तीरथ ठांम॥ ३३॥
सुद्ध करत ह्वै श्रवन मग, हे प्रभु तुम्ह जस गीत॥
करत पबित्र जु सिनांन तैं, गंगा तीर्थ पुनीत॥ ३४॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि प्रभु अस्तुति यौं, करि बिधि सुरनि समेत॥
करि प्रनांम आकास बिच, बोल्यौ धरि अति हेत॥ ३५॥

॥ ब्रह्मोवाच॥

दूरि करन भुवभार मैं, तुम्ह सौं बिनती कीन॥
सो तुम्ह भुव कौ भार सब, टार्यौ प्रभू प्रवीन॥ ३६॥
अरु थाप्यौ संसार मैं, महाधरम भगवांन॥
टारन लौकन मैल किय, निज जस प्रगट दिसांन॥ ३७॥
प्रगट हौय जदुकुल बिषै, धरि निज सुंदर रूप॥
जग कै हित लीनै किये, उत्तम करम अनूप॥ ३८॥
चरित रावरै जो कौउ, कहिहैं सुनिहै चांहि॥
तैं तरिहै अग्यांन कौ, प्रांनी कलजुग मांहि॥ ३९॥
बरष सवा सै तुम्हहिं हुव, प्रगटै जदुकुल मांहि॥
देवतांन कौ कार्ज कछु, अबै रह्यौ है नांहि॥ ४०॥
जादव कुल द्विज श्राप लगि, हौय रह्यौ है नष्ट॥
अब थौरैहीं दिनन मैं, ह्वै है अधिकी कष्ट॥ ४१॥

तातैं ईछा रावरी, हे स्वामी जो हौय॥
तौ बैकुंठ पधारियै, नहिं कारजहूं कौय॥ ४२॥
लौकपाल हम्ह रावरै, है सेवक करतार॥
तिन्हकी रिछया कीजियै, निज ईछा अनुसार॥ ४३॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

प्रभु बोलै म्हैं बिधि सुनैं, तैं जु कहे सो बैंन॥
म्हैं टार्यौ भुव भार किय, कारिज अषिल सुषैंन॥ ४४॥
नीरज लछमी सूरता, ताकरि पूरन जदुवंस॥
इन्हकौं ह्वै संघार नहिं, तबलौं म्हैं न त्रसंस॥ ४५॥
अैं जियहैं तौ प्रिथी कौं, करिहै नांस सजोरि॥
प्रलैं समैं वै लाइ ज्यौं, दैत समुद्र सुबोरि॥ ४६॥
तातैं अब इन्ह नांस कौ, समैं प्राप्ति भौ आंनि॥
इन्हकौं करि संघार म्हैं, अै हौ आपु सथांनि॥ ४७॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि यौं प्रभु कह्यौ, बिधि सौं बचन सुनाय॥
तब अमरन जुत लौक निज, विधि गौ सीस नवाय॥ ४८॥
दैषि बढै उतपात बहु, पुरी द्वारका मांहि॥
बड्डे बड्डे जदुकुल बिषै, प्रभु अैसै बतरांहि॥ ४९॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

बउत उठत उतपात इहिं, कुलहिं लग्यौ द्विज श्राप॥
हे जादव चाहौ जियौ, तब तौ इहिं सौं आप॥ ५०॥
चलियै छैत्र प्रभास कौ, नीकौ परम पुनीत॥
करि सिनांन जहँ रोग छय, ससि किय दूर सुरीत॥ ५१॥
पूरन भई सबै कला, ससि कैं भलैं प्रकार॥
पितरन कौं तरपन तांह, हम्ह करि है सुभढार॥ ५२॥
भोजन बिबिधि प्रकार कै, देहै द्विजनि अपार॥
बिप्र सुपात्र है दांन कै, हम्ह देहै निरधार॥ ५३॥
पापन कौं तरि जांहिगै, हम्ह दै बिप्र जु निदांन॥
जइसै सागर कौं तरत, चढि नउका बुधिवांन॥ ५४॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि सब जनन कौ, प्रभु आग्यां यौं दीन॥
वै सब चलन प्रभास कौं, त्यार सवारी कीन॥ ५५॥
परमभक्त भगवांन कै, ऊधव जू तिहिं वार॥
प्रभु कै सुनिकैं बचन अरु, असुगन घोर निहार॥ ५६॥

करि प्रनांम श्रीकृस्न कौ, दैषि समैं अैकांत ॥
जोरि हाथ प्रभु सौं बचन, उद्धव कहै सुभांत ॥ ५७ ॥

॥ उद्धव उवाच ॥

हे अमरन कैं ईस्व हरि, ईस जोग कै आपि ॥
जिन्हकौं कीर्तन श्रवन है, महा पबित्र सदापि ॥ ५८ ॥
सो तुम्ह निज कुल कौ अबै, करि संघार निदांन ॥
चाहत हौ या लौक तैं, भयौ सु अंतरध्यांन ॥ ५९ ॥
तुम्ह समरथ सब भांत तउ, टार्यौ नहिं द्विज श्राप ॥
तातैं जानत हौ कि अब, इहां न रहिहौ आप ॥ ६० ॥
करनहार मंगल महा, तुम्ह पद कँवल सदांहिं ॥
तिन्हकौं म्हैं सैवत सदा, छोड्यौ चाहत नांहिं ॥ ६१ ॥
तातैं अपनैं लौक कौ, मुहि लै चलियैं संग ॥
तुम्ह बिनु म्हैं या लौक बिच, नहिंन रहौ किहुँ वंग ॥ ६२ ॥
हे प्रभु लीला रावरी, लौकनि मंगलकार ॥
श्रवन सुनै तैं मिटत है, नर तृस्नां दुषसार ॥ ६३ ॥
प्रभू प्रसादी रावरी, सुमन माल सउगंध ॥
ताकरि हम्ह मंडित रहत, बंधै प्रेम कै बंध ॥ ६४ ॥
भोजन झूठौ रावरौ, करि हम्ह जुत आनंद ॥
जीतत है माया प्रबल, मिटत महा दुषदंद ॥ ६५ ॥
उर धरै ताहि संत रिष, संन्यासी जुत ग्यांन ॥
रूप रावरै ब्रह्म कौ, वै ह्वै प्राप्त निदांन ॥ ६६ ॥
हम्ह मूरष तौ भ्रमत हैं, कर्म मारग कैं मांहिं ॥
भगति रावरी की कछू, सुध राषत है नांहिं ॥ ६७ ॥
तुम्ह भगतन कै संग कहि, बात रावरी स्यांम ॥
तरिहैं अति अग्यांन कौं, मोद मांन चित ठांम ॥ ६८ ॥
हास बात चितवनि चलनि, अरु तुम्ह चरित अपार ॥
जें सुमरै किहुँ भांति तैं, पावत मुक्ति सुढार ॥ ६९ ॥

॥ श्री सुक उवाच।

अैसै जब बिनती करी, प्रभु सौं ऊधव संत ॥
तबै बचन बौलत भयै, कृस्न कुमार अनंत ॥ ७० ॥
हम्हहुँ आपतैं बिरह की, चिंता बडी अनंत ॥
सुषदाइक सरन माहा, आश्रय चहूँ अनंत ॥ ७१ ॥

इहि बिन्ति सुनहूँ दास की, चलिहुं रावैर संग॥
इहां छांडि न सिधारियैं, हिर्दै भयौं उमंग॥ ७२॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

(अवधूतोपाख्यान - पृथ्वी से लेकर कबूतर तक आठ गुरुओं की कथा)

॥ श्री भगवानुवाच ॥

दोहा - प्रभु बोलै ऊधव सुनौ, तुम्हहिं कहत हौ बात॥
म्हैरो वंछित है इही, पैं न करत बिषयात॥ १॥
लौकपाल बिधि सिवहिं लौं, सबकैं अब इहि चाह॥
जाहूँ लोक बैकुंठ कौ, लीला करी अथाह॥ २॥
देवकार्ज संपूर्ण सब, हौं करि चुक्यौ निदांन॥
बिधि बिनती सौं जा निमत, प्रगट्यौ हौ भुवथांन॥ ३॥
कुलहिं लग्यौ द्विज श्राप मिलि, जुध करि ह्वै है नष्ट॥
दिवस सात बै वोरिहैं, नगरी सिंधु साद्रष्ट॥ ४॥
मो बिनु ह्वै हैं लौक सब, महा अमंगल रूप॥
जीवन कौं त्रसकार अति, करिहैं कलिजुग भूप॥ ५॥
म्हैं भुव छोडौ तू तबै, मति रहियौ या ठांम॥
कलिजुग कैं जन हौहिंगै, पाप सरूप सकांम॥ ६॥
सजन बंधु तैं नेह तजि, तू चित मोमैं लाय॥
प्रिथवी म्है फिरयौं भ्रमत, बसियौ मति ठहराय॥ ७॥
नैत्र कर्ण मन बचन करि, ग्रहन कछू करि लैंन॥
सौ निश्चै माया मई, जांनौ चित्त सुषैंन॥ ८॥
जिहँ चित चंचल अधिक सौ, लषत पदार्थ अपार॥
फिरि उन्हहीं मैं दोष गुन, काढत बिबिधि प्रकार॥ ९॥
जाकैं बुधि गुन दौष की, हेरनहार निदांन॥
ताकौं कर्म अकर्म अरु, लागत विकर्म विधांन॥ १०॥
तातैं बसि इंद्रीन करि, बसि करि जगहिं बिसैषि॥
मो आत्मा मैं दैषि पुनि, आत्मा मोमैं दैषि॥ ११॥

आत्मा कैं अनुभव सहित, जुक्त ग्यांन बिग्यांन ॥
भलै बुरै तउ कर्म तैं, ह्वै न निवर्त्ति निदांन ॥ १२ ॥
प्रांनी कै गुन दोष की, बुधि मिटही बढि ग्यांन ॥
भलै बुरै तउ कर्म तैं, ह्वै न निवर्ति निदांन ॥ १३ ॥
पै गुन दोष न करत बहि, बुधि करिकैं निरधार ॥
भलौ बुरौ समझि न करत, बालक कै अनुसार ॥ १४ ॥
जांनै सब प्रानिन सुहृद, जगत ग्यांन बिग्यांन ॥
जगहिं लषै मो रूप तिह, नहिं संसार निदांन ॥ १५ ॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सुक कहत कि ऊधवहिं दिय, यौं आग्यां भगवांन ॥
तब कुल जांनन चाह धरि, बोलै ऊधव भांन ॥ १६ ॥

॥ उद्धव उवाच ॥

हे प्रभु आत्मा जोग कै, और जोग्य फल दैंन ॥
अरु प्रगट्यौ है जोगहूं, तुम्ह तैं पंकज नैंन ॥ १७ ॥
म्हैरे ऊपरि करि क्रिपा, निमत सु मो कल्यांन ॥
सकल बस्त कौं त्याग तुम्ह, बतवत हौ भगवांन ॥ १८ ॥
त्याग बिषै कौ कठिन है, बिषइन सौं जग मांहिं ॥
जें अब करिहै रावरे, तिह्नैं, कठिन अधिकांहि ॥ १९ ॥
सो म्हैं मूरषहूं महा, जुत कुटंब बुधि नीच ॥
अहंता ममता मानिकैं, पर्यौ जगत कै बीच ॥ २० ॥
प्रभू रावरी प्रकति सौं, जगत रह्यौ है लागि ॥
हौं समझौं जौ मुहि करौ, सिछा अऊर सपागि ॥ २१ ॥
हौ दृष्टा तुम्ह आतमां, सत्य रूप करतार ॥
तुम्ह सौं नहिं बक्ता कौउ, सुरनहुँ मध्य सुढार ॥ २२ ॥
सब ब्रह्मादिक देवता, बिषयासक्त सुभाय ॥
प्रकृति रावरी सौं मुहित, निश्चै रहत सदाय ॥ २३ ॥
तुम्ह ईस्वर हौ सर्वदा, हौ निरदोष अपार ॥
रहित काल करिहौं सदा, पुर बैकुंठ सुढार ॥ २४ ॥
म्हैं बिराग जुत दुषन करि, हौ संतप्त अथाहि ॥
तुम्ह नारायन नर सषा, म्हैं तुम्ह सरन सचाहि ॥ २५ ॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

उद्धव कै अैसै बचन, सुनि बोलै भगवांन ॥
लोक तत्त्व कै जांनिबै, कारन मनुष निदांन ॥ २६ ॥
विषै वासना तै जगत, अपनौं चहत उधार ॥
आछी भांति सुं करत है, बिच याही संसार ॥ २७ ॥

अपनौं गुर इहि आपही, है मनुषहिं निरधार॥
करि प्रतच्छ उनमांन निज, करत कल्यांन अपार॥ २८॥
जोग सांख्य दुहु सास्त्र मैं, जें प्रवीन जन कोय॥
सर्वसक्ति जुत लषत मुहि, मनुष जनम मैं होय॥ २९॥
इक द्वै त्रय चव पुनि अनंत, जिन्हिं जीवन कैं पांव॥
बिनां चरन कै जीव कैं, अैसै बहु तन भाव॥ ३०॥
तिह्नमैं मनुष सरीर मुहि, प्रिय लागत अधिकाय॥
बार बार सौ रूप धरि, म्हैं प्रगट भुवहिं आय॥ ३१॥
या जनमहि मधि जडन कै, मध्य प्रकास न कोय॥
ढूंढत है प्रांनी हम्हहिं, अधिक चाह चित गोय॥ ३२॥
तिन्ह चिह्न न करि कहत है, म्हैरो ग्रहन निदांन॥
मुहि जांनत उनमांन करि, बुधि सौं परुँ न जान॥ ३३॥
तातैं हम्ह इतिहास इक, तोसौं कहत सुनाय॥
नृप जदु अरु अवधूत कौ, इहि संवाद कहाय॥ ३४॥
अैक बिप्र अवधूत सौ, निरभै फिरत सुषैंन॥
है त्रिकाल दरसी तरुन, लषि नृप बोलै बैंन॥ ३५॥

॥ यदुरुवाच॥

इहि बुधि तुम्ह पाई कांह, जासौं सब कछु जांनि॥
कर्म कछू नहिं करत हौ, फिरत सुबाल समांनि॥ ३६॥
त्रृकालग्य सामर्थ जुत, तुम्ह हौ परम प्रवीन॥
कछु न करत बोलौ अलप, नहिं किहुँ चाह अधीन॥ ३७॥
जड उनमत्त पिसाच सम, फिरत सु प्रिथवी ठांम॥
हौत किहूं कैं भाग्य तैं, तुम्ह दरसन अभिरांम॥ ३८॥
काम लोभ की अग्नि सौं, जीव जरत सब कौय॥
तामैं तुम्ह नहिं जरत ज्यौं, गज गंगा बिच हौय॥ ३९॥
तुम्ह अपनैं आनंद कौं, कारन कहौ सुनाय॥
केवल आतम रूप हौ, लज्या रहित सदाय॥ ४०॥
कृस्न कंवल द्रिग कहत है, अैसै बचन सुनाय॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

राजा जदु यौं प्रस्न किय, मुनि कैं निकट सुआय॥ ४१॥

॥ दत्तात्रेय उवाच॥

दत्तात्रेय जदु नृपति सौं, बोलै अैसै बैंन॥
म्हैं निज बुधि सौं बउत गुर, कीनै सिच्छा लैंन॥ ४२॥
जिन्हतैं हौं बुधि पायकैं, लहि आनंद अपार॥
मुकत भयौ डौलत मगन, बीच सकल संसार॥ ४३॥

प्रिथवी पवन अकास जल, ससि रवि सिंधु पतंग॥
अजगर अग्नि कपोत गज, बेस्यां भ्रमर कुरंग॥४४॥
बालक कन्या सर्प लघु, मछ मकरी सरवार॥
पै ससकारी कीट पुनि, पंछी कुरर निरधार॥४५॥
अैं गुरु मो चौबीस म्हैं, इन्हिसौं सिच्छा लीन॥
सो सब तुम्हसौं कहत हौं, जदु नृप सुनौ प्रवीन॥४६॥
जो कौ प्रांनी दइब बस, या जीवहिं दुष दैय॥
तौहू अपनौं मार्ग नहिं, तजियै काहू भैय॥४७॥
जइसै प्रिथवी कौ मनुष, षोदौ लीपौ कौय॥
निज सुभाय छौडत नाहि, धरनी अति दुष हौय॥४८॥
चेष्टा साधू करत है, करिबै पर उपगार॥
अरु पर निमतहिं उन्ह जनम, धार्यौ है निरधार॥४९॥
नग प्रिथवी कौ रूप है, तिन्ह तैं हम्ह इहि बात॥
सीषी है मुदमांनि कैं, मिटन अनष उतपात॥५०॥
अैसौ निज ब्रत कीजियै, जांसौ ठहरै प्रांन॥
इंद्रियन कौ नहिं जांनियै, प्यारी कबहुँ निदांन॥५१॥
ग्यांन नष्ट ह्वै जाय अरु, मन अति चंचल हौय॥
कबहूं नांहिंन कीजियै, अैसौ भोजन कौय॥५२॥
पवन चहत नहिं सुवाद कछु, चाहत मात्र अहार॥
इहै बात हम्ह पवन सौं, सीषैं भलैं प्रकार॥५३॥
ग्यांनी बउत विषैन मैं, प्राप्त कबहुँ जो हौय॥
तौ उन्हमैं नहिं लिप्त ह्वै, आत्म भेद चित गौय॥५४॥
अरु गुन दोष न कौ कछू, नांहिंन करै बिचार॥
जइसी भांत जु पवन कौ, है सुभाव निरधार॥५५॥
अैं प्रिथवी कैं वनेतन, ह्वै प्रविष्ट तिन्ह मांहि॥
उन्हमैं चित्त आसक्त नहिं, कबहूं करै सचांहि॥५६॥
जइसै पवन जु गंध करि, ह्वै न कहूं आसक्त॥
सकल ठौर संचरत है, बीच सकल या जक्त॥५७॥
थावर जंगम जीवन मैं, व्यापक ब्रह्म सरूप॥
तिह निज रूपहि देहतैं, जांनै जुदौ अनूप॥५८॥
जइसै नभ निरलैप है, सबसौं जुदौ लषाय॥
त्यौंहीं ब्रह्मसरूप कौं, तनतैं जुदौ जनाय॥५९॥
अंनमय मेघादिक रु जल, तेजहिं करि आकास॥
जइसै जात छुयौ नाहिं, परत दिष्ट सौभास॥६०॥

त्यौं त्रिकाल कै गुनहिं करि, आत्मा लिप्त न हौत॥
अरु सबही प्रांनीन मैं, करि राष्यौ उदौत॥ ६१॥
तीरथ रूप स्वभाव तैं, न्रिमल सचिक्कन मिष्ट॥
अैसै जल सम कितक मुनि, है धारै हरि इष्ट॥ ६२॥
तिन्हकैं देषन परस सौं, अरु लीनैं उन्हनांम॥
प्रांनी हौत पबित्र अति, मैटि पाप दुषधांम॥ ६३॥
तप सौं दीपत तेजस्वी, पात्र उदर ही जास॥
सब कछु भोजन करत पै, नहिं लागत अथ त्रास॥ ६४॥
इहै अगनि कौ गुन सुभग, हम्ह लीनौं है चांहि॥
भूष प्यास कौ दुष कछू, तातैं उपजत नांहि॥ ६५॥
कहूं ढक्यौ उघर्यौ कहूं, करै सकल जिहँ सैंव॥
जो सेवै ताकैं मिटत, त्रिबिधि पाप कैं भैंव॥ ६६॥
जइसै बस्तू बुरी भली, अगनि दैत है जारि॥
तइसैहीं मुनि अगनि सम, चहियै बिच संसार॥ ६७॥
सूछिम स्थूल सरीर मैं, ज्यौं लघु दीरघ काय॥
त्यौहिं काष्ट लघु दीर्घ सम, अगनि परत दरसाय॥ ६८॥
जनमहिं तैं लै मरन लौं, दुष सुष तन मैं हौत॥
आत्मा कौ ह्वै दुष न सुष, सदा अैकंग उदौत॥ ६९॥
घटत बढत ज्यौं ससि कला, कालहि करि निरधार॥
सदा रहत है अैक सौ, ससि तौ भलैं प्रकार॥ ७०॥
प्रांनिन की उतपति प्रलैं, कालहिं करकै हौत॥
अैं नांहिंन लषि परत है, कछू भेद उदौत॥ ७१॥
हरवै हरवै अगनि ज्यौं, बुझत परत नहिं जांनि॥
त्यौंही उतपति प्रलैं कौं, भेद न परत पिछांनि॥ ७२॥
समैं पाय कैं नीर कौं, षैच लैत ग्रहराय॥
समैं पाय घन रूप ह्वै, बरिषा करत सुभाय॥ ७३॥
पैं न लिप्त वां नीर सौं, कबहुं हौत निदांन॥
हम्ह लीनौं है गुन इहै, रवि सौं भल उनमांन॥ ७४॥
जइसै नीरादिकन मैं, रवि अनैंक दरसात॥
त्यौं आत्मा बहु देह मैं, दीसत बिधि बिषयात॥ ७५॥
इहि प्रांनी किहुँ ठौर मैं, बउत न करै सनैह॥
कीनै पंछी कपौत ज्यौं, पावै दुष अनछैह॥ ७६॥
निति प्रति रहै कपौत यक, बृछ परि गेह बनाय॥
रह्यौ कपौती संग ह्वै, बहू दिवस सुष पाय॥ ७७॥

बुधि सौं बुधि अरु द्रिष्टि सौं, द्रिष्टि अंग सौं अंग॥
मेलि दोउ बांधत भयै, अधिक सनेह सुबंग॥ ७८ ॥
फिरनौ सौवन बैठनौ, क्रीडा भोजन बात॥
अैं लीला बन मैं दोउ, इकठै करि उमगात॥ ७९ ॥
तिया कपौती जो कछू, मांगै बस्तू सुभाय॥
अजित इंद्री सु कपौत बहि, देवै दुष करि ल्याय॥ ८० ॥
रहत कपौती कै भयौ, गर्भ समैं वय पाय॥
दिय अंडा निज थांन मैं, सैंवत धरि चित चाय॥ ८१ ॥
तिन्ह मैं तैं प्रगटै बचा, प्रभू की सक्ति प्रभाय॥
तिन्हकैं तन मैं पंष अति, कोमल परत लषाय॥ ८२ ॥
तिय पति पंछी बचन की, रछा करत भय षाय॥
चैष्टा बचन बचान कै, तै ह्वै मुदित अथाय॥ ८३ ॥
प्रभु की माया सौं मुहित, पालत भयै बचानि॥
नेह परसपर दुहुनि उर, बाढ्यौ अधिक निदांनि॥ ८४ ॥
इक दिन काज बचान कैं, चुग्गा लैंन बन मांहि॥
गयै हुतै दंपति पंछी, बंधै नेह की फांहि॥ ८५ ॥
उन्ह बचान कौं देषि कैं, बधिक जाल बिसतारि॥
निरदय ह्वै पकरत भयौ, तनक न दया बिचारि॥ ८६ ॥
मात पिता लै कैं चुग्गा, आयै अपनैं गेह॥
लषै पुकारत जाल मैं, बचा दुषित बिन छेह॥ ८७ ॥
दैषि कपौति निजी बचा, दुषित जाल कैं मांहि॥
जात भई उडि आपहूं, बचा हुतै जिहँ ठांहि॥ ८८ ॥
आप हुतै प्रिय पुत्र तिय, परैं दैषि बिच जाल॥
लाग्यौ करन विलाप अति, ह्वै कपौत बेहाल॥ ८९ ॥
अल्पअरु पुनि दुरि बुधि मैं, लष्यौ भयौ मो नास॥
बिषै भोग भोग्यौ नांहि, म्हैं रह्यौ बिच निवास॥ ९० ॥
पतिब्रता मो सम सदा, अति हित कारन नारि॥
मोहित ज्यौं ग्रिह सुन्य मैं, सुत जुत सुवर्ग सिधारि॥ ९१ ॥
म्हैरी प्रांन प्यारी तिय, अति. अनुरूपा. नारि॥
मो मांनत पतिदेवता, सो अब सुवर्ग सिधारि॥ ९२ ॥
मो तिय नहिं संतान मो, अब म्हैं सूनै धांम॥
इकलौ रहि करिहौं कहा, हुव रंडवा बिनु बांम॥ ९३ ॥
तिया बचा बिच जाल कैं, परै कपोत निहारि॥
जाय फसत भौ आपहूं, तन सौं नेह बिसारि॥ ९४ ॥

पंछी कपौत कपौत तिय, जुत बचानि वां बारि॥
लै कै राजी ह्वै बधिक, निज धरि गयौ कुचारि॥ ९५॥
विषयासक्त ग्रहस्त यौं, मुहित कुटंबहिं मांहि॥
ह्वै हैं नष्ट कुटंब जुत, दुष कपौत ज्यौं पांहि॥ ९६॥
जें कुटंबी विषयासक्त, सुष मांनै संसार॥
भरनपोषन मैं रत रहि, सुध बुध अपनि बिसार॥ ९७॥
सांत दांत पावै नांहि, परै संसारी जाल॥
कपोत सम कलपाइहै, जरै जक्तादिक ज्वाल॥ ९८॥
मुक्ति द्वार नर लोक इहि, पाय मनुष जें कौय॥
ह्वै ग्रिह मैं आसक्त निज, रतन जनम दै षौय॥ ९९॥
तै कपौत ज्यौं पाइ दुष, सकल नष्ट ह्वै जात॥
जइसै ऊंचौ चढि कोउ, भुव पर गिरत कुपात॥ १००॥
आसक्त जें तिय सुतन मैं, मरै कपोत सुभाय॥
गिरि सम जीवन पाइकैं, आरूढ च्युत नसाय॥ १०१॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते सप्तमोऽध्यायः ॥ ७॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अष्टमोऽध्यायः ॥

(अवधूतोपाख्यान - अजगर से लेकर पिंगला तक नौ गुरुओं की कथा)

॥ दत्तात्रेय उवाच ॥

दोहा - दत्तात्रैय जू कहत है, सुनौ नृपति गुनधांम॥
इंद्रिन कैं सुष हौत है, स्वर्ग नर्क किहुँ ठांम॥ १॥
बिन चाह्यौ प्रांनीन कौ, दुष आवत जिहँ भाय॥
त्यौहीं सुष निरधार करि, आवत औसर पाय॥ २॥
ग्रास मिष्ट ह्वै रसन है, अलप अधिक आहार॥
मिलै सहज मैं जो कछू, भोजन करै सुढार॥ ३॥
जइसै अजगर सर्प कै, मुहि आगै किहुँ बार॥
आवत है सौ षात है, उद्यम कौ न बिचार॥ ४॥
अजगर कै सम मुनिहुँ कौ, ग्रास मिलै नहिं आय॥
तौ अद्रष्टही कौ करै, भोग भलै अनुभाय॥ ५॥

मन कौं अरु इंद्रीन कौ, है अजगिर कै जोर॥
पैं कछु कर्म सरीर तैं, करत न किहूं अकोर॥ ६॥
है इंद्री चैतन्य तऊ, अहि अजिगर किहुं बार॥
करै नांहि कारज कछू, पर्यौ रहै निरधार॥ ७॥
निंद्राहूं जाकै नांहि, करि कारज कछु नांहि॥
ऐसैही स्वाभाव कौ, मुनि चहियै जग ठांहि॥ ८॥
मुनि चहियै सप्रसंन चित, जास बात गंभीर॥
तिहँ पार न पावै कोउ, हौहिं महामति धीर॥ ९॥
कांम विवस ह्वै कै कोउ, मैलौ करै न ताहि॥
जइसै गुदलौ सिंधु कौ, सकै कोउ करिनांहि॥ १०॥
पूर्न कामना चित्त की, हौहुँ न हौहुँ निदांन॥
प्रभु पद पंकज कै सदा, आश्रय रहै सुजांन॥ ११॥
कबहुं घटै न बढै तपसि, प्रभु आश्रय ठहराय॥
ज्यौं समुद्र घटत न बढत, बरिषा रितहूँ पाय॥ १२॥
प्रभु की माया तिया तिहँ, जिति इंद्रीहूं देषि॥
वांकै भाव न करि मुहित, निश्चै हौहिं अलैषि॥ १३॥
ज्यौं पतंग बिच अगनि कै, परहीं जाय अजांन॥
त्यौं नर तियसौं मुहित ह्वै, छौडि दैत सुभ ग्यांन॥ १४॥
तियकैं पटभूषन रचित, माया करि निरधार॥
जिन्हकौं दैषि लुभाय कैं, परै विषै विवहार॥ १५॥
द्रिष्टि नष्ट याकी तबै, हौत पतंग समांन॥
परत विषै की अगनि मैं, बिनु समझै सुभ ग्यांन॥ १६॥
तातैं चहियै नहिं करै, मुनि ऐसौ कछु काज॥
तासौं लहै पतंग ज्यौं, महादुष्ष कौ साज॥ १७॥
थोरौ ही भोजन करै, जासौं रहै सरीर॥
जीमिऐक ठां ग्रिहस्थ कैं, बांध न लैहु षंभीर॥ १८॥
अलप अलप रस लैत ज्यौं, अलि बहु फूल मंझार॥
त्यौं लघु दीरघ सास्त्र तैं, लै प्रवीन जन सार॥ १९॥
निसदिन मैं भोजन मिलै, भावै सौ लै षाय॥
दूजै दिन कै काज कौ, नहिं राषै ललचाय॥ २०॥
मषी सहत की सम कबहुँ, करै सुसंग्रह नांहि॥
पात्र ठौर निज हाथही, राषै सदा उमांहि॥ २१॥
अरु जो संग्रह करत है, मधु की मषी समांन॥
आपहुँ मार्यौ जात है, कारज बिनां निदांन॥ २२॥

काहू कौ धन दे नांहीं, जोरै लोभी हौय॥
आपहुँ भोग करै नांहि, दैय सभैं सब षौय॥ २३॥
तिहि कौ धन सुनि औरही, भोगै औसर पाय॥
ज्यौं जोरै माषी सहत, लै कौ और छिनाय॥ २४॥
चहियैं छुवै न पग हुतै, काठहु कौं तिय रूप॥
छूऐ तैं दुष लहति अति, परिहीं बिच जग कूप॥ २५॥
जइसै हथनी काठ की, लषि हाथी बौराय॥
गजनी उपर दौर परै, गिरत षाड बिच जाय॥ २६॥
ऐसौ कारज साध जन, करै भूलहूं नांहि॥
कीनैं तैं सुभ ग्यांन मिटि, जनम मरन दुष पांहि॥ २७॥
अस्त्री मृत्यु सरूप है, तापैं साध न जाय॥
गयै मार डारै कोउ, हाथी कै अनुभाय॥ २८॥
जोगी हौहि सुजांन सौ, बसै बीचि बन जाय॥
बिषियन कै राग न सुनै, कबहू किहूं प्रभाय॥ २९॥
सुनै राग विषईन कै, याकौ उपजै घात॥
राग बधिक कौ सुनत हीं, ज्यौं मृग मार्यौ जात॥ ३०॥
इहै बात हम्ह हिरन सौं, सीषि कियौ गुर चांहि॥
जिहि सिच्छा सूं जगत कौ, सुष दुष लागत नांहि॥ ३१॥
नृत्य गीत बाजित्रहिं सुनि, अस्त्रीन कैं बिनु गांम॥
हिरनी कौ सुत मुहित भौ, जास श्रृंगि रिषि नाम॥ ३२॥
रसनां कै रस सौं मुहित, जीव सु मार्यौ जाय॥
जइसै कांटी सौं सफर, मार्यौ जात कुदाय॥ ३३॥
बिनु भौजन बसि हौत है, इंद्री सबही और॥
बिनु भौजन जिह्वा नांहिंन, जीती जात सुतौर॥ ३४॥
राजा जनक बिदेह कौ, नगर महा अभिरांम॥
तामैं इक बैस्यां बसत, जास पिंगला नांम॥ ३५॥
जासौं जो कछु बात हम्ह, सीषैं हैं निरधार॥
सौ आछै करि कहत हौ, सुनियैं नृपति उदार॥ ३६॥
अपनैं मित्रननि गेह निज, लै जाबै कै काजि॥
द्वारै बैठै आनि कैं, सजि तन सौभा साजि॥ ३७॥
वांकै घर आगै पुरस, कैं आव कैउ जात॥
तिन्हमैं जो धन दैहि तिहँ, पति मानैं बिषयात॥ ३८॥
बउत पुरष आयै गयै, तउ इहि चित मैं आस॥
आवै कोउ धनवंत तौ, लै बिच जाहुँ निवास॥ ३९॥

या आसा सौं द्वार निज, बैठी रहै अग्यांन॥
निद्राहूं जिहि गम जु गई, कल नहिं परत निदांन॥ ४०॥
छिन बाहरि भीतरि छिनक, पुनि ठाढी रहि द्वार॥
अैसै ही बीतत भई, अरध निसा निरधार॥ ४१॥
द्रवि आसा सौ सूषि मुष, चित भौ दीन अथाग॥
यौं धन की चिंता करत, प्रगट भयौ बैराग॥ ४२॥
जुत बैरागहि चित्त सौं, उन्ह जो कह्यौ बिचारि॥
जो म्हैं सुन्यौ सुकहतहूं, तौ सौं भलै प्रकारि॥ ४३॥
आसा रूपी फांसि कौं, काटन काज निदांन॥
अति तीछन तरवार सम, है बैराग बिधांन॥ ४४॥
उपज्यौ है बैराग नहिं, जा नर कै चित मांहि॥
सौ सरीर मैं तैं कबहूं, ममता छौडै नांहि॥ ४५॥

॥ पिंगलोवाच॥

बौली बैस्यां पिंगला, म्हैं मा मूरष आंहि॥
आत्मा कौ जांनत नांहि, बढ्यौ मोह अनथांहि॥ ४६॥
झूठै मित्रन तैं चहत, सुष पायौ अधिकाय॥
तिन्ह मित्रन तैं कबहुँ नांहिं, सुषकी रिद्धि सरसाय॥ ४७॥
म्हैरे हिय मैं निकट ही, ईस्वर पति सुषदाय॥
जो निति दाता द्रव्य कौ, ताकौहूं छुटकाय॥ ४८॥
दै न सकै जे कामनां, मानुष पर आधीन॥
सौक मौह भय दुष्ष कै, जें दाता मति हीन॥ ४९॥
तुच्छ मनुष अैसैन कौं, हौं चाहत मतिमंद॥
म्हैं यौंही निज अपनपौं, दुषित कियौ परिफंद॥ ५०॥
और पुरस निज गेह मैं, लै जैबौ करि प्रीति॥
निंद कर्म है इहि महा, धरम गमावै नीति॥ ५१॥
लोभी बस अस्त्रीन कैं, सोच न जोग्य निदांन॥
तिन्ह करि म्हैं निज अपनपौं, बैचि चहत धन आंन॥ ५२॥
जामैं थूंनी हाड की, तिरछै हाड सुवांस॥
हाड पीठ कौ है बला, अैसौ देह निवांस॥ ५३॥
तुचा रोमनष सौ मढ्यौ, अरु जाकै नवद्वार॥
झरत रहै मलमूत्र करि, है पूरन निरधार॥ ५४॥
अैसै पुरष सरीर कौ, म्हैं ही भज्यौ अग्यांन॥
और कोउ किहि मीत करि, नांहिन भजै सुजांन॥ ५५॥
नृप बिदेह कैं नगर मैं, म्हैं ही मूरष अैक॥
जो प्रभु कौ तजि और पैं, द्रव्य सुष चहौं अनैक॥ ५६॥

है ईस्वर सबकौ सुहृद, अति प्रिय आत्मा आंहि॥
तिन्ह कर दे निज अपनपौं, रमू रमा सम चांहि॥५७॥
बिषै भोग कै जें पुरष, दैंनहार निरधार॥
तिन्हतैं अब तांई कहा, हुव मो भलौ सुढार॥५८॥
आदि अंत सबहीन कौ, है स्वामी करतार॥
नष्ट काल करि हौत है, सुरगनहूं निरधार॥५९॥
किहूं कर्म करि प्रसंन हुव, मो परि प्रभू अथाग॥
मो बड आसावंत कौ, उपज्यौ सुषद बिराग॥६०॥
जिन्ह बातन करि हौत है, प्रगट पूर्न बैराग॥
बै बातैं म्हैरे नांहिं, म्हैं तौ हूं मंद भाग॥६१॥
बंधन जा बैराग करि, काटि मनुष सुष पाय॥
प्राप्त हौत है सांति कौ, दीरघ दुषहि मिटाय॥६२॥
म्हैं बिषयन मैं मिलि रही, तापरि क्रिपा बिचार॥
दीनौं है भगवांन इहि, मुहि बैराग सुढार॥६३॥
याकौं म्हैंधरि सीस पै, छौडि दुरासा चाह॥
जैंहूं उन्हहीं कै सरन, जें सब जग कैं नाह॥६४॥
रहिहौं म्हैं संतुष्ट जो, लाभ हौहिंगौ मौहि॥
ताही मैं आजीवका, करिहौं धीर अरोहि॥६५॥
म्हैरे पति निरधार करि, है ईस्वर करतार॥
उन्हहीं सौं करिहौ भलै, म्हैं जुत प्रीति बिहार॥६६॥
जगत सरूपी कूप मैं, पर्यौ मनुष अग्यांन॥
जांकै नैत्र विषैन हरि, लीनै हौहि निदांन॥६७॥
काल सरूपी सर्प नैं, जाकौ ग्रस्यौ सरीर॥
जाकौ हरि बिनु और कौ, सकै छुडाय सधीर॥६८॥
अपनौं रिछयक आपुही, है इहि मनुष सदापि॥
अरु इही सौ हौत जु है, अपनौं बुरौ अमापि॥६९॥
जो सबसौं बैराग उर, याकैं उपजै आय॥
तबै ग्रस्यौ जग काल अहि, मनुषहिं परत लषाय॥७०॥

॥ दत्तात्रैय उवाच॥

दत्तात्रैय बोलै कि यौं, निश्चै करि पुर नारि॥
सांत दांत ह्वै आस तजि, मित्रन की वां बारि॥७१॥
बाहरि तैं निज गेह मैं, बैठि नचींती हौय॥
बैठी अपनैं पिलंग परि, रह्यौ नाहिं दुष कौय॥७२॥
आसा है दुष रूप अरु, है सुष रूप निरास॥
आसा कीनै हौत है, प्रांनी कौ दुष त्रास॥७३॥

जइसै बैस्यां पिंगला, तजि मित्रन की आस॥
पाइ महा सुष सैज पैं, सोई बीच निवास॥ ७४॥
तातैं काहू भांत करि, धरियै आसा नांहिं॥
सीषी है इहि बात हम्ह, बैस्यां सौ मन मांहिं॥ ७५॥
आसा दुष की मूल है, सुष निरासा सुपाहिं॥
आसा तजिहै मनुष तौ, परमानंद समांहिं॥ ७६॥

(इति श्रीभागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अष्टमोऽध्यायः ॥ ८॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ नवमोऽध्यायः ॥

(अवधूतोपाख्यान - कुरर से लेकर भृंगी तक सात गुरुओं की कथा)

॥ दत्तात्रेय उवाच ॥

दोहा - दत्तात्रेय बोलै कि है, जो कछु प्रिय प्रांनीन॥
ताकौ संग्रह करन मैं, जिय दुष लहै सरीन॥ १॥
अैक कुरर पंछी हुतौ, लियै जात हौ मास॥
ता पाछै पंछी बली, दोरै बीच अकास॥ २॥
कुरर पंछी पल डार दिय, तब बैठ्यौ सुष पाय॥
अर्थ तजन की सीष मैं, इहि सचांन पै पाय॥ ३॥
नहिंन मांन अपमांन कौ, म्हैरे कछू बिचार॥
तन ग्रहस्थाश्रम की नांहि, ममता किहूं प्रकार॥ ४॥
क्रीडा आत्माही विषै, आत्माही सौ प्रीति॥
फिरत बीच संसार मैं, हौ बालक की रीति॥ ५॥
चिंता मिट गई मग्न हौ, परमानंद मंझार॥
जड मूरष बालक जु सम, माया गुननि वसिकार॥ ६॥
इक कन्या आयै लषै, निज मांगन कौ द्वार॥
बंधु गयै कहु आप उन्ह, किय आदर वां बार॥ ७॥
उन्हकैं भोजन कैं लियै, कूटन लागी साल॥
तब चूरी बजि करन की, सबद भयौ वां काल॥ ८॥
सौ सुनि बाजी कन्यका, बाहरि सुनि है कोरी॥
तातैं दुहु कर की चुरी, सबही डारी फोरी॥ ९॥
राषी ही द्वै द्वै चुरी, दुहू हाथ कै मांहि॥
उन्हहूं मैं हुव सबद तब, इक इक राषी ठांहि॥ १०॥

म्हैं वा सौं सिच्छा इहै, सीषी भलै प्रकार॥
तत्व लौक कौ जांनिबै, फिरौ बीच संसार॥ ११॥
बउत हौहि तौ कलह ह्वै, दोयन बिच ह्वै बात॥
तातैं मुनि इकलौ रहै, कन्या कंकन भांत॥ १२॥
आत्म स्वास कौ जीति कैं, मन लावै अैकत्र॥
निज मन कौ बैराग सौं, वसि करि लैय सुतत्र॥ १३॥
आत्मा मैं मन लागिकैं, फिरै कबहुँ फिरि नांहि॥
दूरि हौहि रज कर्म की, तब रज तम मिटि जांहि॥ १४॥
सतगुनहूं मिटि जात है, समझहुँ भेद सुजांन॥
अरु सतगुन कै बढै बिनु, काष्ट अग्नि उनमांन॥ १५॥
बाहरि भीतर तैं तबै, याकौ मन थिर हौय॥
ज्यौं सरगर कौ चित्त लग्यौ, सरही मैं बुधि गौय॥ १६॥
सैंन सहित निकसै नृपति, परै ठौर नीसांन॥
तौहू सरगर कौ कछू, षबर न भई निदांन॥ १७॥
रहै ठौर इक ग्रेह रचि, बोलै अलप मुनेस॥
नहिंन दिषावै किहूंकौ, निज आचार जु देस॥ १८॥
करनौं ग्रह आरंभ सो, है निरफल दुष रूप॥
लघु अहि बसि पर ग्रेह मैं, पावत दुष्ष अनूप॥ १९॥
इक नारायन इहि रच्यौ, माया करि संसार॥
प्रलै समैं मैं काल करि, करै सबनि संघार॥ २०॥
अद्विितीय आधार निज, सबकौ आश्रय आंहि॥
निश्चै आत्मा कौ प्रगट, काल प्रभाव कहांहि॥ २१॥
तासौ सक्ति जुदी जुदी, सबकी हौत सुढार॥
सत्त्वादिक गुनहूं मिलत, माया मैं निरधार॥ २२॥
तब माया संजुत पुरष, लघु दीरघ कौ ईस्व॥
अैक आपु रहि जात है, सुनौ जदू अवनीस्व॥ २३॥
अनभव आनंद जस सदा, रूप सु विना उपाधि॥
अपरंपार अनादि प्रभु, जिन्हकी कीर्ति अगाधि॥ २४॥
केवल अपुन प्रताप सौं, करता पुरस अनंत॥
ईछां करिकैं जुक्त हरि, ताकरि सूत्र स्त्रजंत॥ २५॥
बहि माया है त्रगुनमय, सृष्टि उपजावन हार॥
ता माया मय जग रच्यौ, मोहित जीव अपार॥ २६॥
ज्यौं मकरी क्रीडा करै, मुषतैं तार निकारि॥
बहुरि तार कौं जाय ग्रसि, निज ईछा अनुसारि॥ २७॥

तइसै ही लीला करत, प्रभू सृष्टि उपजाय॥
फैरि करत संघार जग, निज ईछा अनुभाय॥ २८॥
मन लावत जहँ जहँ मनुष, प्रीति द्वेष भय पाय॥
तइसै ही जिय लहत है, अपनौं रूप सदाय॥ २९॥
भृंगी कीरा और लै, राषत निज ग्रह मांहि॥
सौ भृंगी ह्वै जात है, देह तजत निज नांहि॥ ३०॥
म्हैं सीषी गुर इतै तैं, जुदी जुदी मति चांहि॥
अरु सीष्यौ निज देह तैं, सौ अब सुनौ उमांहि॥ ३१॥
हेत विरक्ति विवैक कौ, है गुर इहि मो देह॥
जनम मरन याकौ लगै, निति दुष रूप अछेह॥ ३२॥
याकौ धरिकैं करतहूं, म्हैं सुभ तत्त्व बिचारि॥
इहि तन अपुन न मांनि तजि, प्रीति फिरत निरधारि॥ ३३॥
हे नृप या निज देह कौं, सुष प्रापति कै जांनि॥
पालत अपनैं पुत्र तियहिं, धन ग्रिह मित्रनि समांनि॥ ३४॥
सो तन ब्रछ समांन है, जगत बीच बिषयात॥
बीर्ज और तन कौ प्रगट, करि सु नष्ट ह्वै जात॥ ३५॥
जीभ नैत्र नासा श्रवन, त्वचा उदर कर पाय॥
अपनीं अपनीं औरकौं, षैचत मनहिं कुदाय॥ ३६॥
अपनौं अपनौं भोग सब, इंद्री चहत सुतौर॥
ज्यौं बहु तिय इक पुरष कौ, षैचत निज निज वोर॥ ३७॥
और सरीर रचै सबै, माया करि भगवांन॥
तिन्ह देहन सौं प्रसंन हरि, नांहिंन भयै निदांन॥ ३८॥
ब्रह्महि जांनन जोग्य इहि, मानुष देह बनाय॥
महामोद मांनत भयै, करता प्रभु सुषदाय॥ ३९॥
दुरलभ दाता अर्थ कौ, छिन भुंगर निरधार॥
बउत जनम पाछै इहै, लहि नर जनम सुढार॥ ४०॥
रहै देह जबंलौं करै, आछै मुक्ति उपाय॥
विषै भोग तौ सब जनम, मधि प्रापति ह्वै आय॥ ४१॥
दुरलभ मानुष जनम इहि, षनषन अनित नसाय॥
परम मुक्ति साधन करै, नितहिं मृत्यु अनुभाय॥ ४२॥
अैसै मो हिय मैं प्रगट, हुव बैराग रु ग्यांन॥
अहंकार रु किहुँ संग नहिं, करत फिरत भुव थांन॥ ४३॥
इक गुर तैं दीरघ स्थिर, बउत हौत नहिं ग्यांन॥
ब्रह्म अैक तातैं कियै, बहु गुर दोष न जांन॥ ४४॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

बोलै कृस्न कुमार यौं, राजा जदु सौं वात॥
रिष दत्तात्रेय और ठां, कहुं रहत भयै जात॥ ४५ ॥
दत्तात्रैय सौं नृपति जदु, किय प्रनांम पुजि पाय॥
सुनि उन्हकैं अमृत बचन, प्रसंन भयै अधिकाय॥ ४६ ॥
बड्डै हम्हारै बड्डुन कैं, नृप जदु तजि सब संग॥
हुव समांन चित जांनि कैं, तत्त्व भेद अनभंग॥ ४७ ॥
अैसै ही हे प्रियउधव, मो उपदेस सदाय॥
सर्वसंग विविर्मुक्त ह्वै, समचित्त स्थिर ह्वै जाय॥ ४८ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ दसमोऽध्यायः ॥

(लौकिक एवं पारलौकिक भोगों की असारता का निरुपण)

॥ श्री भगवानुबाच ॥

दोहा - प्रभू कहत है म्हैं कहै, जितै जीव कै धर्म॥
सावधांन तिन्हमैं रहै, तजि सकाम कै कर्म॥ १ ॥
म्हैरो आश्रय राषिकैं, हौय मनुष निहकांम॥
कुंलाचार आश्रम बरन, साधै बिच निज धांम॥ २ ॥
विषई जांनत देह कौ, आतम तत्त्व सरूप॥
तातैं उलटौ ह्वै उहैं, फल सु बुरौ दुष कूप॥ ३ ॥
इहि बिचार निज चित्त मैं, राषै भलै प्रकार॥
तौ कछु दोष न लगत है, कीनैं कुल आचार॥ ४ ॥
ध्यांन मनोरथ करत सौ, सैंन समैं कै मांहि॥
दैषत विषै अपार इहि, मांनत मोद अथांहि॥ ५ ॥
इंद्री दैषत रूप बहु, सो झूठै फलहीन॥
विषै मनौरथहूं सबै, झूठै सुनौ प्रवीन॥ ६ ॥
कर्मनिवर्ति सुभगति मो, करै भलै चित चांहि॥
कर्म प्रवर्तिहि छौडि दै, निरफल जांनि सदांहि॥ ७ ॥
आत्मा कौ जांननि निमत, भौ प्रवर्ति बिच जक्त॥
तातैं कर्मनि कांम हम्ह, अधिन हौय आसक्त॥ ८ ॥

करै नैम यम भक्ति मो, मुहित जांनै ह्वै सांत॥
मो आश्रय कौ हौहिं जिहिं, आश्रय करै सुभांत॥ ९॥
करै न किहुँ की इरषा रु, करै न चित अभिमांन॥
ममता राषै नहिं कहूं, आपहुँ हौहिं सुजांन॥ १०॥
प्रभु सौं जाकी प्रीत ह्वै, चंचलता ह्वै नांहि॥
ब्रथा बचन बोलै न मुष, तत्त्व बिचारै चांहि॥ ११॥
भलौ परायौ दैषि कैं, दुष नहिं मानैं आप॥
दया करै किहुँ मांहि जो, देषै कछु संताप॥ १२॥
घर धर तिय सुत धन स्वजन, इन्ह सौं रहै उदास॥
लषै बराबर अर्थ निज, सबहिंन मैं अनियास॥ १३॥
लिंग सथूल सरीर तैं, आत्म जुदौ है और॥
सौ दिष्टा है जीव कौ, ग्यांन रूप जगमौर॥ १४॥
काठहिं जारत अगनि सौ, जुदौ काष्ट तैं आहि॥
आत्मप्रकासक है त्युंहीं, तन इंद्रिन कैं माहि॥ १५॥
लघु दीरघ उतपति मरन, गुन तन कैं अनपार॥
जीव सरीर समंध सौं, आपहिं मांनत भार॥ १६॥
अैसै तन कैं गुनन कौ, दिष्टा आत्म उदार॥
प्रकृति गुनन सौं रच्यौ तन, जियहिं लग्यौ निरधार॥ १७॥
तिहिं आत्मा अग्यांन अपुन, तातैं लग्यौ संसार॥
मैटत ग्यांन अग्यांन तब, मुक्ति होत निरधार॥ १८॥
केवल आत्म स्वछंद कौ, जांनन काज सदांहि॥
लिंग सथूल सरीर दुहु, समझै सत्य सुनांहिं॥ १९॥
पहली अरनी काष्ट है, आचारिज जग मांहिं॥
दूजी अरनी गुर बचन, है ऊपर कैं ठांहिं॥ २०॥
काष्ट तीसरौ ग्यांन है, उद्धव समझि प्रवीन॥
तिहूं काष्ट इकठै भयै, दरसै अगनि सरीन॥ २१॥
तीन काष्ट मिलि ज्यौं अगनि, निकसत है निरधार॥
त्यौं गुर सिष्य कै मिलन सौं, प्रगटै ग्यांन सुढार॥ २२॥
प्राप्ति सिष्य कौ हौत है, जब बहि पूरन ग्यांन॥
तब माया कौ करत है, दूरि भलै उनमांन॥ २३॥
माया कै सब गुनन कौ, करिकैं दाह निदांन॥
हौहि जात है आपहूं, संमित निश्चै ग्यांन॥ २४॥
जे कौ प्रांनी करत है, कर्म प्रवर्ति सुढार॥
ते सुष दुष कौ लहत है, भोग अनैंक प्रकार॥ २५॥

लोक काल आत्माहिं वै, नित जांनत अग्यांन॥
चलि आयै है सदा तैं, सकल पदार्थ निदांन॥ २६॥
ग्यांनहु बउत प्रकार कौ, है बिच सकल जिहांन॥
जनम काल करि जीव इहि, मांनत आपु अग्यांन॥ २७॥
अबै कहतहुँ सिद्धांत सौ, सुनियै सषा प्रवीन॥
कर्म करन मैं जीव इहि, नांहिंन निज आधीन॥ २८॥
अरु अपनैं आधीन नहिं, भोग करनहूं मांहि॥
ह्वै अपनैं आधीन तौ, इहि दुष भुक्तै जु नांहि॥ २९॥
पंडित कौ कछु सुष नांहि, मूर्षहि दुषनहिं हौय॥
झूठै सुष दुष जगत कै, मांनत चित सब कौय॥ ३०॥
सुष की प्राप्ति रु नास दुष, जो इहि जांनै जीव॥
तौ मृत्युही अपनैं निकट, दै आवन न कदीव॥ ३१॥
तातैं जांन्यौ परत है, जीव सु पर आधीन॥
सकल बस्तु कौ कोउ याहि, दाता और सरीन॥ ३२॥
अर्थ कांम कहा दैहि या, प्रांनी कौ सुष साज॥
बिनां भजै भगवांन कौ, कछु न संवरै काज॥ ३३॥
जो चोरहिं मारन समैं, ष्वावत लडुवा जांन॥
बहि सुष मांनतनांहि त्यौ, जीव मृत्यु भयवांन॥ ३४॥
सपर्धा ईर्षा नास अरु, घटनौ बढनौ भार॥
इन्ह बातन संजुक्त है, स्वर्ग लौक निरधार॥ ३५॥
जइसै षैती कौ बिघन, लगै अनैंक प्रकार॥
सवर्ग जायबै मृत्युही, बिघन हौत अनपार॥ ३६॥
जग्यादिक करि सवर्ग जो, पउँचै बिघन न होय॥
सुनौ जांह की रीत जौ, ठौर चहत सब कोय॥ ३७॥
सवर्ग जात है जिग्य करि, इहि मनुष जुतहिं चाव॥
भोग करत है द्रव्य तांह, अपनैं पुन्य प्रभाव॥ ३८॥
निज पुन्य न करि उहां इहां, पावत सुभग विमांन॥
चढ्यौ फिरत ता ऊपरै, दैषत बउत सथांन॥ ३९॥
अपसरांन कौ करत है, इहि मोहित उहिं ठौर॥
याकौ जस गावत विहसि, मिलि गंधर्व सुतौर॥ ४०॥
घुंघरू लगै विमांन कौ, जित मन ह्वै तित जाय॥
संग अपसरा सुरन सम, भोग करत सुषदाय॥ ४१॥
अैक दिनां मैं गिरौंगौ, इहि सुधि कबहुं आय॥
भूलि जात है सुधि सबै, बिह्वल ह्वै अधिकाय॥ ४२॥

सुष भुक्तै इहि सवर्ग मैं, जब लौं पुन्य प्रभाय॥
छीन पुन्य भय काल वसि, गिरत ऊंध मुष आय॥ ४३॥
इहि तौ गत है सवर्ग की, जांह भोग अनपार॥
पैं उहिं ठां पावत नांहिं, प्रांनी मुक्ति सुढार॥ ४४॥
संग असाधन कौ कहूं, इहि जो प्रांनी पाय॥
इंद्रिन कौ जीतै नांहि, करै अधर्म कुभाय॥ ४५॥
कांमी लोभी दीन तिय, तिन्हकैं बसि ह्वै आप॥
जीव अनैंकन कौ हतै, मन धरि मोद अमाप॥ ४६॥
भूत रु प्रेतन कै निमत, जिग्य करै मति हीन॥
नर्क जाय करि मधि परै, अैं अघ कियैं सरीन॥ ४७॥
तातैं कर्म सकांम सब, है दुष रूप निदांन॥
पै फिरि बेई कर्म इहि, प्रांनी करत अग्यांन॥ ४८॥
ताही सौं इहि धरत है, देह सु बारंबार॥
प्राप्त हौत है मृत्यु कौ, फिरि फिरि तन कौ धार॥ ४९॥
लौकपालकनि कै उरहि, म्हैरो भय अधिकाय॥
अैक कल्प बै जियत है, बहुरि मृत्यु ग्रसि जाय॥ ५०॥
है ब्रह्मा की आयु सब, द्वै परार्ध उनमांन॥
सोहू मो सौ रहत है, डरपत सदा निदांन॥ ५१॥
कर्म करत इंद्रीन सौं, जीव अनैंक प्रकार॥
अरु इंद्रिन उपजावही, माया गुन निरधार॥ ५२॥
जीव सकल इंद्रीन मैं, मांनि आपु अहंकार॥
मुदित हौहि कै करत है, भोग भलै अनुसार॥ ५३॥
उपजत सृष्टि सु जबहि लौ, जीव सरीर न मांहि॥
जुदै जुदै या जगत मैं, बउत रूप दरसांहि॥ ५४॥
जबलौं दैषत जीव इहि, आत्मा रूप अपार॥
तब तांई ही रहत है, पराधीन भयकार॥ ५५॥
अरु जब तांई जीव इहि, पराधीन अनपार॥
तब तांई निश्चै रहत, ईस्वर सौं भयवांन॥ ५६॥
जोग करत है जो कोउ, बीच सु या संसार॥
तै निश्चै करि हौत है, प्रांनी मुहित अपार॥ ५७॥

॥ उद्धव उवाच॥

उद्धव बोलै जीव कौ, माया गुन लपटाय॥
तौ कहियै या जीव की, मुक्ति हौय किहुँ भाय॥ ५८॥
जीव प्रकति कैं गुनन सौं, बंधत सु कौनुं प्रकारि॥
अरु कइसी बिध हौत है, फैरि मुक्ति दुष टारि॥ ५९॥

हौहि चुक्यौ ह्वै मुक्ति जिहिं, कइसी रीति सुहौय॥
कौनुँ कर्म कौ करत है, कइसै जांनै कौय॥ ६०॥
मुक्ति भयौ है सो कहा, भोग करै तजि देय॥
कइसै सो वै चलै पुनि, बैठै कइसै भैय॥ ६१॥
नित मुक्त जो जीव है, म्हैरै इहि भ्रम आहि॥
प्रभु म्हैरे इन्ह प्रस्न कौ, उत्तर देहुँ सचाहि॥ ६२॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते दसमोऽध्यायः ॥ १० ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अैकादसोऽध्यायः ॥

(बद्ध, मुक्त और भक्तजनों के लक्षणों का निरुपण)

॥ श्री भगवानुवाच ॥

दोहा - कहत कृस्न भगवांन यौं, जीवहि मुक्त रु बंध॥
प्राप्त हौत मो प्रकृति कै, तिहूं गुननि सनमंध॥ १॥
असति मौछ बंधन लियै, म्हेरौ आत्म सरूप॥
मौछ रु बंधन तैं सदा, न्यारौ रहत अनूप॥ २॥
सौक मौह सुष दुष जनम, जियहि प्रकृति करि हौत॥
ज्यौं सुपनैं मैं बुधिहि ह्वै, भ्रम अनैंक उदौत॥ ३॥
तइसैही झूठौ प्रगट, है इहि सब संसार॥
चलि आयौ है सदा तैं, तिहँ कछु वार न पार॥ ४॥
बिद्या रु अबिद्या अैं दुहू, व्रत्य माया की आहि॥
इन्हसौं बंधन मुक्ति सब, प्रांनी हौत सदाहि॥ ५॥
बिद्या सौहिं है मुक्ति अरु, बंधन अबिद्या भाय॥
अैं दुहु सक्ति अनादि है, कही तोहि समझाय॥ ६॥
जीव अैक ही है सदा, म्हेरौ अंस निदांन॥
प्रतिबिंबित बीचि अबिद्या, हौत भयौ बिनग्यांन॥ ७॥
तातैं न्यारौ देह प्रति, जीव सु जान्यौ जाय॥
लछिन बंध अरु मुक्ति कौ, अबहौं कहौ जताय॥ ८॥
जीवात्मा परमातमा, रहै अैक तन मांहि॥
जीवात्मा बंधि दुषी, परमात्मा सुषी सदांहि॥ ९॥
जीवात्मा परमातमा, पंछी सषा समभाय॥
इक सरीर बृछ तासु मधि, बैठे ग्रह सु बनाय॥ १०॥

जीव करत है ललच कै, विषै भोग अनपार॥
परमातम बलवंत सौ, जुदौ रहत सब बार॥ ११॥
जो अंतरजामी नहिंन, भोग करत ललचाय॥
सौ जांनत है रूप निज, सकत न प्रकृति भुलाय॥ १२॥
विद्या जु करि परमातमा, सदा रहत है मुक्त॥
जीव अविद्याहिं करि रहत, नित प्रति बंधन जुक्त॥ १३॥
पंडित है तन मांहिं अैं, न्यारौ रहत सदाय॥
ज्यौं सुपनौं लषि जागि नर, साचौ नहिंन जनाय॥ १४॥
अरु मूरषहूं दैत है, न्यारौ सदा निदांन॥
पै परदेहहिं अपुन करि, मांनत स्वपन समांन॥ १५॥
ग्रहन विषै कौ करत है, इंद्री सकल उमांहि॥
तउ पंडित अहंकार कछु, मांनत कबहूं नांहि॥ १६॥
कर्म गुनन सौ हौत अरु, देह कर्म आधीन॥
जिहँ तन मैं करता निजहि, मांन बंधत मति हीन॥ १७॥
सैंन बैठनौं दैषनौं, फिरनौं सुननौं स्नांन॥
भौजन करनौं सूंघनौं, सपरस हौंन निदांन॥ १८॥
इन्ह बस्तू सौ हौत नाहिं, मोहित पंडित भूलि॥
केवल आत्म बिचारि कै, सुष मैं रहत सुझूलि॥ १९॥
बुधि ग्यांन रु बैराग सौं, तीछन हौहि सुढार॥
तासौ निज संदेह जिन्ह, डारै काट अपार॥ २०॥
जइसै सुपनौं दैषिकैं, जागि उठै जब आप॥
तब सुपनैं कैं भ्रम सबै, गनत न सत्य सथाप॥ २१॥
तइसै ही ग्यांनी पुरष, करि मन मांहि बिचार॥
कबहूं जांनत नांहिनैं, सांचौ इहि संसार॥ २२॥
मन बुधि इंद्री प्रांन मैं, जाकैं काहू बार॥
ह्वै संकल्प विकल्प नहिं, रहै सधीर सुढार॥ २३॥
सौ ग्यांनी तन कौ धरै, पै हैं बहि मुक्ति निदांन॥
जिह मारौ पूजौ कौउ, दुष सुष ताहि समांन॥ २४॥
करै न किहुँ निंदा अस्तुति, बोलै नहिं किहुँ बार॥
काहू कै गुन दौष कौ, नांहिंन करै बिचार॥ २५॥
भलै बुरै किहुँ कौ कबहुँ, ध्यांन धरै हिय नांहि॥
जड सम आत्माराम है, फिरै सकल जग मांहि॥ २६॥
कछू कार्ज नांहिंन करै, मगन आतमां मांहि॥
सौ ग्यांनी है मुक्त है, बीच सुप्रथवी ठांहि॥ २७॥

बेद पढ्यौ कौ हौहि अरु, ब्रह्म ग्यांन नहिं हौय॥
तौ बह श्रम है ब्रथा ज्यौं, बिनु पय सुरभी कौय॥ २८॥
अपतिब्रत अस्त्री अरु ह्वै, दूध बिनां की गाय॥
पराधीन तन सुत बुरौ, बिनां दांन द्रवि पाय॥ २९॥
जामैं म्हैरी बात नहिं, अैसौहि बचन और॥
इन्हीं बस्तन कौ संग्रहण, राषै दुषी अपार॥ ३०॥
जिहिं वाणी मैं हौहि नहिं, म्हैरे कर्म रसाल॥
अरु उतपति पालन प्रलै, लीला मौन विसाल॥ ३१॥
मो अवतार चरित्रहिं पुनि, वा वांनी मैं नांहि॥
बह निरफल असमूढ है, वांनी कूर सदांहि॥ ३२॥
अैसौ भेद बिचारि कै, इक ईस्वर कौ जांनि॥
मो मैं निज मन लाय कहुँ, बैठे निश्चल मांनि॥ ३३॥
जो मन ईस्वर कै विषै, निश्चल ह्वै लगि जाय॥
तो कर्महूं करि समर्पै, मोहि भलै अनुभाय॥ ३४॥
सुनै कथा मो श्रद्धा सौ, करत सुद्ध मो गीत॥
गावै मो जन्मअरु करम, उत्सव करै सुरीत॥ ३५॥
धर्म कर्म मो निमित करि, मो आश्रय रहि चांहि॥
हे उद्धव अैसै जननि, ह्वै मो भक्ति सदांहि॥ ३६॥
भक्ति पाय सतिसंग सौं, मुहि सेवै चित लाय॥
तब मो पद कौ प्राप्त ह्वै, छूटि प्रकृति दुषदाय॥ ३७॥

॥ उद्धव उवाच ॥

उद्धव बोलै रावरै, मत मैं हे करतार॥
कइसौ चहियै साध जिहिं, कहियै भेद प्रकार॥ ३८॥
अरु तुम्ह पद पंकजन सौं, कइसी चहियै भक्ति॥
सज्जन करै सराह जिहँ, जे तुम्ह सौं अनुरक्ति॥ ३९॥
है पुरषन मैं श्रेष्ठ है, श्रेष्ठ सुलौकन मांहि॥
प्रभू जगत कै तुम्हहि मैं, करत प्रनांम सचांहि॥ ४०॥
म्हैं अनुराग संजुक्त तुम्ह, सरनैं आयौ नाथ॥
कहियै मो सौ क्रिपा करि, जो म्हैं पूछत गाथ॥ ४१॥
तुम्ह नभ सम व्यापी सदा, परै प्रकति कै स्यांम॥
निज ईछा सौ रूप नर, धरि प्रगटै भुव ठांम॥ ४२॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

भयै क्रिपा करि कहत फिरि, उद्धव सौं भगवांन॥
साधन कै लछननि अबैं, सुनियै परम सुजांन॥ ४३॥

क्रिपावंत ह्वै सबनि पर, करै न किहुँ कौ द्रौह॥
सब की बातैं सहि रहै, बोलै सत्य अछौह॥ ४४॥
करै न किहुँ की ईरषा, अरु समदरसी हौय॥
उपकारी ह्वै सबन कौ, है न कामना कौय॥ ४५॥
इंद्री कीनी हौय बस, अरु ह्वै कौमल चित्त॥
रहै पवित्र निज पास कछु, नहिं राषै धन वित्त॥ ४६॥
अलप करै भोजन कछू, करै न जग कै काज॥
रहै स्थिर ह्वै कै सदा, बीच सुसाध समाज॥ ४७॥
साधै मौनि रू सरन मो, रहै हौय गंभीर॥
कबहूं करै प्रमाद नहिं, धीरज गहै सधीन॥ ४८॥
सौक मौह भय मृत्यु जरा, निद्रा भूष अरु प्यास॥
इन्हकौ जीतै मांन मन, नहिं धारै करि घ्यास॥ ४९॥
सबकौ आदर करै पर, उपदेसक बुधिवांन॥
रहै सबहिंन कौ मित्र ह्वै, करुणावंत सुग्यांन॥ ५०॥
भक्ति विरोधी धरम जो, ताकौ करिकै त्याग॥
करै भजन मो साधु सौ, कहियत है बडभाग॥ ५१॥
म्हैं जइसौ जितनौ बडौ, जइसौ म्हैरो रूप॥
तइसौ ही मुहि जांनि ह्वै, भक्त अनन्य अनूप॥ ५२॥
मोहि भजै सौ भक्त मो, कहियत है जगमांहि॥
मो प्रतिमा मो भक्त जन, इन्हसौं राषै चांहि॥ ५३॥
तिन्ह दरसन सपरस टहल, पूजन अस्तुति सुभाय॥
करै प्रीत नम्रत रहै, रीझै मो गुन गाय॥ ५४॥
राषै सरधा अधिक मो, कथा सुनन कैं मांहि॥
ध्यांन धरै म्हैरो भलै, मुदित हौहि हिय ठांहि॥ ५५॥
पावै आछी बस्तु सो, मो कौ दैय चढाय॥
आत्म समर्पन दैह करि, म्हैरो दास कहाय॥ ५६॥
आछी भांत कहै सुनै, जनम करम मो चांहि॥
नृत्य गीत वादित्र जुत, उत्सव करै उमांहि॥ ५७॥
स्थल हौहि म्हैरौ जांह, पुहप चढावै जाय॥
अरु चौमासै मैं करै, मो पूजा अधिकाय॥ ५८॥
वेदतंत्र की लै सिच्छा, अपनैं गुर कै पास॥
पुनि म्हैरे ब्रत करै निज, हिय मैं धारि हुलास॥ ५९॥
मो प्रतमा कै थपन मैं, राषै श्रधा विसाल॥
ह्वै इकत्र उदिम जु करै, प्रतमा थपन रसाल॥ ६०॥

अरु कर सकै न आप तौ, मिलि किहुँ औरन मध्य॥
म्हैरी पुजा करन कै, उद्यम जु करै प्रसध्य॥ ६१॥
जनम करम म्हैरो कथन, उछव पर्वादि मनाहिं॥
नृत्य गान अनुष्ठान करे, लीला सुनैं सुचाहिं॥ ६२॥
सफल बृछ फुलवार पुर, मंदिर वापी कूप॥
इन्हकै करवै कौ करै, उद्यम जु सदा अनूप॥ ६३॥
मो मंदिर की ठौर कौ, धोवै लीपै झारि॥
भद्र सर्वतो आदि दै, मंडल रचै संवारि॥ ६४॥
मो दाता तन धारि उर, ह्वै निहकपट निदांन॥
म्हैरे मंदिर की करै, सैव भलै उनमांन॥ ६५॥
करै नांहि अभिमांन अरु, करै दंभहूं नांहि॥
आछे कारज करै सौ, कहै नाहिं किहुँ ठांहि॥ ६६॥
म्हैरे मंदिर मध्य कै, दीपहुं कै उजियार॥
अपनैं घर कौ कार्ज कछु, नहिंन करै किहुँवार॥ ६७॥
मंदिर भोग बस्तुन की, चोरी करै न चाहिं॥
लग्यौ देव कैं भोग पुनि, मोहि भोग न लगाहिं॥ ६८॥
लोकनि जो प्रिय बस्तु अरु, आपहुँ कौ प्रिय कौय॥
करै निवेदन मोहि सौ, ताहि अनंत फल हौय॥ ६९॥
रवि नभ भुव जल अग्नि द्विज, साधु आत्म गौ वारि॥
इन्ह जुत प्रांनी सकल मो, पूजा स्थल सुढारि॥ ७०॥
वेद मंत्र पढि सूर्ज कौ, करि परनांम सदाय॥
रवि की है पूजा इही, दीनी बेद बताय॥ ७१॥
करै अग्नि मैं हौम दै, भौजन द्विजन सुढार॥
तृन नीरै सुरभीन कौ, सैवा करै अपार॥ ७२॥
साधुन कौ आदर करै, धरै हिर्दै निज ध्यांन॥
लै पूजा की सौंज सब, पूजै जलहि सुजांन॥ ७३॥
प्रिथवी मैं आछै करै, मंत्र न्यास बुधिवांन॥
आत्मा कौ देषै सदा, सब ठां अैक निदांन॥ ७४॥
करवावै निज आत्म कौ, भोग सुभोजन आदि॥
नीर अंन बिनु मर मिटै, अस कछु करै न ज्यादि॥ ७५॥
चहु आयुध जुत चतुरभुज, म्हैरो रूप सुढार॥
ताकौ सब अंग ध्यांन करि, पूजै भलै प्रकार॥ ७६॥
जिग्य करै मो निमत अरु, षुदवै कूप तलाब॥
बाग लगावै अति सुभग, धरि अपनैं चित चाव॥ ७७॥

अरु मो साधुन की करै, सेवा सहित उमाहि॥
तब पावै मो भक्ति सुष, मिटि तिहुँ विध की दाहि॥ ७८॥
साधुन की सतसंग करि, करै भक्ति मो चांहि॥
या बिनु हरि के मिलन कौ, और उपाय सुनांहि॥ ७९॥
गोप्य रहस्य इक बात अब, म्हैं तुहि कहत जताय॥
तू है मो सेवक सषा, सुहृद बंधु सुषदाय॥ ८०॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते ऐकादसऽध्यायः ॥ ११॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ द्वादसोऽध्यायः ॥

(सत्संग की महिमा और कर्म तथा कर्म त्याग की विधि)

॥ श्री भगवानुवाच॥

दोहा - बोलै प्रभु बिचारि यौं, जोग तत्त्व कौ भेद॥
करनौ तप संन्यास पुनि, पढनौ धर्म सुवेद॥ १॥
अग्निहोत्र करनौ बहुरि, दैनौ दांन सुढार॥
कुवा तलाब षुदावनौं, लगवन बाग अपार॥ २॥
रहसि मंत्र व्रत तीर्थ जिग्य, जम अरु नेम विधांन॥
ऐं मोकौ ऐसै कबहुँ, बस नहिं करत निदांन॥ ३॥
मोहि महा वसि करत है, मो साधुन कौ संग॥
साधु संग करि दैत है, और संग सब भंग॥ ४॥
राछस दैत्य गंधर्ब सिध, अपसर चारन नाग॥
गुह्यक बिद्याधर रु पंछी, किंनर पसू अथाग॥ ५॥
अस्त्री वैस्य रु सूद्रगन, चंडालादिक नीच॥
बहु प्रांनी रज तम गुनी, जुगन जुगन कै बीच॥ ६॥
ऐसै प्रांनी जगत मैं, बारंबार अपार॥
प्रगट क्रितारथ ह्वै गयै, साधु संग अनुसार॥ ७॥
बलि प्रहलाद बभीषन जु, व्रतासुर हनुमांन॥
जांबुवांन सुग्रीव मय रु, बधिक गीध गजवांन॥ ८॥
नांम तुलाधर वैस्य कै, द्विज पतनी ब्रजनारि॥
कुबजा आदिक इन्ह कबहुँ, वेद न पढ्यौ विचारि॥ ९॥
सेवा करन बडैन की, तप व्रतहूं किय नांहि॥
इक म्हेरौ गौपीन कौ, संग भयौ ब्रजमांहि॥ १०॥

ब्रज की गौपी गाय नग, मृगकाली अग्यांन॥
इन्ह आदिक मो प्रीत सौं, भयै कृतार्थ निदांन॥ ११ ॥
पढन वेद संन्यास तप, सांख्य जोग ब्रत दांन॥
जिग्य आदि इन्हसौं न जो, पइयै भल उनमांन॥ १२ ॥
सौ ब्रजजन पावत भयै, पूरन परमानंद॥
म्हैरे प्रीत प्रभाव सौं, भयौ सौक सब मंद॥ १३ ॥
म्हैं अग्रज अकरूरहिं जुत, भौ मथुरापुर जात॥
तब गौपिन मौ बिरह सौं, सुष न लह्यौ किहुँ भांत॥ १४ ॥
ब्रंदावन कै मांहि म्हैं, बसत रह्यौ जिहँ बार॥
करत रही मो संग मिलि, निस कै समैं बिहार॥ १५ ॥
उन्ह रात्रिन छिन अर्ध सम, गनत भई ब्रजनारि॥
अरु मो बिनु सम कल्प निस, मांनी उन्ह निरधारि॥ १६ ॥
उन्हकौ चित्त म्हैरै विषै, हौहि रह्यौ आसक्त॥
निज तन अरु पति पुत्रन सौं, कबहुँ न हुव अनुरक्त॥ १७ ॥
ज्यौं कछु और समाधि मैं, जांनत नहिंन मुनेस॥
त्यौंही कछु जांनत नाहिं, मो बिनु गौपि सुदेस॥ १८ ॥
जइसै नदी समुद्र मैं, मिली रहत निरधारि॥
तइसै ही मो मैं मिली, रहत सकल ब्रजनारि॥ १९ ॥
बै मुहि प्रिय जांनत रही, ईस्वर जांन्यौ नांहि॥
निश्चै करि प्रापति भई, बै गोपी मो मांहि॥ २० ॥
वेद कहै द्वै धर्म है, यक निवर्त्ति रु प्रवर्त्ति॥
चहियै सुन्यौ रु सुन्यौ सो, सब तजि हौय सचित्ति॥ २१ ॥
म्हैं आत्माहूं सबन कौ, तू मो सौं करि प्रीति॥
आवहूं म्हैरे सरन भय, ह्वै है दूरि सुरीति॥ २२ ॥

॥ उद्धव उवाच ॥

उद्धव बोलै हे प्रभू, सुनत तिहारै बैंन॥
मो मन कौ भ्रम हौत है, संसय भेद मिटैंन॥ २३ ॥
कबहूं तौ तुम्ह कहत हौ, करिहौं कर्म निरधार॥
कबहुँ कहत मो चर्न रजहि, सकल कर्म निरवार॥ २४ ॥
वचन रावरै यामही, मोहि हौत संदैह॥
कीजै कर्म कि नांहिनैं, हे करतार अछैह॥ २५ ॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

कहत भयै अैसै प्रभू, बचन अमृत कै रूप॥
या प्रपंच मैं जीव इहि, अविद्या कार संजूप॥ २६ ॥

विधि निषेध लगि रहे है, तिन्हतैं चित सुध हौंन॥
हम्ह सु बतायौ है इहै, करिबौ कर्म सुठौंन॥ २७॥
हौहि चुकै चित सुध जबै, करै कर्म कछु नांहि॥
करै भक्ति म्हैरी भलै, द्रिढ ह्वै निज उर ठांहि॥ २८॥
जग की उतपति कहत हौ, बागींद्री लौं आदि॥
सौ सुनि तू चित लाय कै, उद्धव उर अहलादि॥ २९॥
आधारादि सु चक्र मैं, है जिहँ प्रगट प्रकासि॥
अैसौ ईस्वर घोष अरु, प्रांन सहित सुष रासि॥ ३०॥
मधिमा वैषिरि पस्यंती, इन्ह नांमनि अनुसार॥
तीन भांत कै सब्द कौ, करत प्रकास सुढार॥ ३१॥
स्वर मात्रा जुत सब्द कौ, प्रगट करत है ईस्व॥
सबही कारज प्रांन करि, हौत सु बिसवाबीस्व॥ ३२॥
जइसै काष्टहि मथत मैं, सूछिम अग्नि प्रगटाय॥
तब क्रम क्रम सौ बढत फिरि, बउत तजि जु अधिकाय॥ ३३॥
त्यौं मो तै क्रम सौं बढत, वांनी भलै प्रकार॥
तासौं बौलत है बचन, भलौ बुरौ संसार॥ ३४॥
बचन बोलनौ कर्म गति, रस संकल्प विग्यांन॥
सपरस सुननौं देषनौं, गंधन ग्रिह अभिमांन॥ ३५॥
करनौं त्याग सुमूत्र मल, अैं सब बात अपार॥
इक मोही सौ हौत है, प्रगट भलैं अनुसार॥ ३६॥
जइसै कपरा सूत कै, है आधार निदांन॥
त्यौं ही मो आधार है, इहि सब जगत बिधांन॥ ३७॥
जगत रूप कौ बृछ है, कर्म रूप जिहि फूल॥
पाप पुन्य कै बीज है, भेद वासना मूल॥ ३८॥
अरु स्थूल साषा प्रगट, याकै है गुन तीन॥
सुनहूँ पंच महाभूत, है ब्रछ स्कंध सरीन॥ ३९॥
पांच विषै रस की सदा, यातैं उतपति हौत॥
ग्यारह इंद्री डार है, सुष दुष फल ऊदौत॥ ४०॥
जीवात्मा परमातमां, पंछी दोय सुढार॥
तिन्हकौं है या ब्रछ पै, रहन सथल निरधार॥ ४१॥
अरु या बृछ कै तीन है, वलक्कल पित कफ वात॥
रवि मंडल लौं है इहै, ब्रछ संसार बिषयात॥ ४२॥
यातैं आगै मुक्ति है, जो सुष रूप सदाय॥
ताकौ आछै लहत जे, मोहि भजत चित लाय॥ ४३॥

भौगत है विषई सदा, जग कौ फल दुष रूप॥
अरु भौगत ग्यांनी पुरष, फल सुष रूप अनूप॥ ४४॥
इहि तत्व जान्यौ जिन्ह सकल, जांन्यौ भेद रसाल॥
इहि नहिं जांनै सो मनुष, मूरष है सब काल॥ ४५॥
गुर उपासनां करि भलै, आवै ग्यांन सधीर॥
तीछन तिहीं कुठार सौं, काटै सुछम सरीर॥ ४६॥
तब आत्मा कौ प्राप्त ह्वै, सकल कर्म तजि दैय॥
भजन करै भगवांन कौ, समझि सदा सुभ भैय॥ ४७॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते द्वादसोऽध्यायः ॥ १२ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ त्रयोदसोऽध्यायः ॥

(हंस रूप से सनकादिकों को दिये हुये उपदेश का वर्णन)

॥ श्री भगवानुवाच॥

दोहा - प्रभु बोलै है प्रकृति कै, सत रज तम गुन तीन॥
आत्मा कै है नांहिनैं, उद्धव समझि प्रवीन॥ १॥
सतगुन करि गुन और द्वै, जीतै भलै प्रकार॥
बिनु सतगुन जीतै नहिंन, जीति किहूं अनुसार॥ २॥
उप सम रूप सु सत्त्वगुन, करिकै आछी रीति॥
करुना आदिक रूप फिरि, लै सतगुन कौ जीति॥ ३॥
सतगुन सौं निरधार करि, हौहि धर्म अधिकार॥
प्रेम लछिनां सुभक्ति मो, प्रगट हौहिं सुषसार॥ ४॥
सात्विक बस्तुन कौ करै, सैवन आछै भाय॥
तौ उपजै सत्त्वगुन तबै, धर्म अधिक बढि जाय॥ ५॥
दूर करै रज तम गुनहिं, प्रगट धर्म अधिकार॥
सतगुन की ह्वै बृधि जबै, मिटहि पाप अनपार॥ ६॥
सास्त्र प्रजा जलदेस अरु, काल कर्म संस्कार॥
मंत्र ध्यांन जन्म अैं सबै, तिहुँ गुन भेदनुसार॥ ७॥
अैक अैक अैहैं सकल, तीनहिं तीन प्रकार॥
सौऊ हम्ह कहिहैं तुम्हहिं, आछै भेद विचार॥ ८॥
अै सतगुनी पदार्थ दस, तिन्हकौ सेवै चांहि॥
रज तम गुनी पदार्थ दस, जिन्हकौ सेवै नांहि॥ ९॥

मध्यम कहियै रजोगुन, निंदत तम गुन आंहि॥
इन्हकौ सेवन किये तै, धर्म बढत है नांहि॥ १० ॥
सेवा सात्वकन की किय, बढै धर्म अधिकाय॥
तातैं उपजै ग्यांन फिरि, प्रगटै भक्ति सुभाय॥ ११ ॥
छह पुरांन तो है प्रगट, सात्विक सास्त्र सुढार॥
मग प्रवर्ति कै सास्त्र है, रजोगुनी निरधार॥ १२ ॥
अरु जिन्ह सास्त्रन मध्य है, मग पाषंड अपार॥
तै पुरान है तामसी, कहियै बिच संसार॥ १३ ॥
तीरथ जल सउगंध जल, सुरा गंध जल आहि॥
सात्त्विक रज तम गुनन कै, क्रम सौ है जु सदाहि॥ १४ ॥
जिन्ह बीरज है सात्त्विकी, तेमोगुनी द्रुमचार॥
कर्म प्रवर्तिहि कर तजै, रजोगुनी अनपार॥ १५ ॥
देस यकांत रु मग गली, जुवा षैल की ठौर॥
सत रज तम तिहुँ गुन मई, है त्रय ठौर सुतौर॥ १६ ॥
ब्राह्मी नांम महूर्त अरु, सांझ समैं अधिरात॥
रज तम गुनी रु सात्त्विकी, यैं है समैं बिष्यात॥ १७ ॥
करै न टौना टामन रु, कांम कर्म निति कर्म॥
रज तम सत तिहुँ गुन मई, तिहूं कर्म कै मर्म॥ १८ ॥
बैस्नव दिष्या तैं द्रवी, की दिष्या दुहुँ सुढार॥
तिन्हसौं प्रांनी सात्त्विकी, जनम लहत निरधार॥ १९ ॥
सूद्र देवता की दिष्या, दिष्या सकति की पाय॥
रजोगुनी रु तमोगुनी, हौत जनम दुषदाय॥ २० ॥
बिस्नु ध्यांन तिय ध्यांन अरु, निज वैरी कौ ध्यांन॥
सत रज तम तिहु गुण मई, है यै ध्यांन निदांन॥ २१ ॥
वर प्रमंत्र छुद्र मंत्र अरु, कांम मंत्र ऊचार॥
सत रज तम तिहुँ गुनन मय, जांनहि बुधि जु उदार॥ २२ ॥
आत्मा कौ सोधन रु घर, सोधन सोधन देह॥
सत रज तम तिहुँ गुनन मय, इह सोधन अवरेह॥ २३ ॥
जइसै बांसन तैं अगनि, प्रगटि रु बांसनि जारि॥
जात रहत है आपहू, ठहरै किहुँ न प्रकारि॥ २४ ॥
तइसैही बिधि जु अबिद्या, करि सरीर कौ नास॥
नष्ट आपहू हौत है, मांनत नहिं कछु त्रास॥ २५ ॥

॥ उद्धव उवाच ॥

इहि सुनिकै बोलै बहुरि, उद्धव ऐसै बैंन॥
हे प्रभु जांनत है मनुष, विषै दुष्ष कौ अैंन॥ २६ ॥

तऊ विषै कौ करत है, भोग भलैं चित चांहि॥
गर्दभ स्वांन समांन निज, जनमहिं सदा बितांहि॥ २७॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

प्रभु बोलै अैसी पहल, बुधि मनुष्य की हौय॥
अैहि सरीर रु आतमां, है मो भैद न कौय॥ २८॥
तासौं याकैं रजोगुन, प्रगट हौत अनथांहि॥
नित संकल्प विकल्प ह्वै, रजोगुनी मनमांहि॥ २९॥
तब उपजत या मनुष कै, काम महा बलवांन॥
अजितेंद्री ह्वै काम वस, कर्म करत अग्यांन॥ ३०॥
अरु जांनत है मनुष सब, कर्मन कौ दुष हौत॥
तउ रज गुन वस कर्म करि, अपनौं जनम बिगौत॥ ३१॥
रजतम गुन करि मनुष की, बुधि बौंरी ह्वै जात॥
तातैं आत्म सरूप की, कछु सुध रहि न सकात॥ ३२॥
पंडित जन अपनैं मनहि, वसि करि भलै प्रकार॥
कर्मन मधि आसक्त नहिं, कबहुँ होत निरधार॥ ३३॥
मो मैं मन लावै भलैं, सावधान ह्वै आप॥
करै सिताबी नांहिनैं, धीरज गहै अमाप॥ ३४॥
अरु निज मन वसिकरन मैं, उदासीन ह्वै नांहि॥
आसन द्रिढ़ राषै करै, प्रानायाम सदांहि॥ ३५॥
मो सिष सनकादिकन दिय, इहही जोग बतांहि॥
सब ठौरन तैं षैंचि मन, मो मैं दैय लगांहि॥ ३६॥

॥ उद्धव उवाच॥

उद्धव बोलै रूप जो, करिकै तुम्ह बिसवैस॥
विधि सुत सनकादिकन कौ, दैत भयै उपदैस॥ ३७॥
मन कौ वसि करनौ इहै, दिय जिह सूत बताय॥
सो सरूप कहियै प्रभू, आछै मोहि सुनाय॥ ३८॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

प्रभु बोलै सुत मानसी, विधि कै चहु सनकादि॥
ब्रह्मा सौं विधि जोग की, पूछत भयै अनादि॥ ३९॥
विधि सौं सनकादिक कहत, नर चित विषैन मांहि॥
हौय रह्यौ आसक्त अति, छूटत कबहूं नांहि॥ ४०॥
रूप बासनां लगि रहै, विषयन कैं मनमांहि॥
जे कोउ चाहै मुक्ति तौ, कइसै मुक्तिहिं पांहि॥ ४१॥
विषै रु चित न्यारै भयै, बिनां मुक्ति नहिं हौय॥
तातैं कहुं किहिं विधि विषय, मुक्ति हौय दुष षौय॥ ४२॥

प्रभु बोलै अैसै जबै, सनकादिक चहुँ बीर॥
चतुरानन सौं प्रस्न किय, करि बिचार मति धीर॥४३॥
है विधि सबतैं बड्डै पैं, करमन मैं आसक्त॥
तातैं अपनैं चित्त मैं, सोच प्रस्न की विक्त॥४४॥
कहत भयै इन्हकैं इही, किह आग्यां अनुसार॥
प्रगट भयौ है प्रस्न तिहँ, समझि न परत बिचार॥४५॥
उत्तर देवै प्रस्न कौ, विधि किय म्हेरौ ध्यांन॥
तब प्रगट्यौ बिधि पास मैं, हंस रूप भगवांन॥४६॥
विधि सनकादिक दैषि मुहि, म्हैरै निकट सु आय॥
करत प्रनांम पूछत भय, तुम्हकौं इहिं दरसाय॥४७॥
अैसै तत्त्व जांन्यौ चहत, सनकादिक मुष च्यारि॥
प्रस्न कियौ तब म्हैं उह्नैं, उत्तर दियौ सुढारि॥४८॥
इक आत्मा तैं दूसरौ, है पदार्थ कौ नांहि॥
तातैं तुम्ह हौ कौनुँ इहि, झूठौ प्रस्न सदांहि॥४९॥
याकौ उत्तर म्है कहा, तुम्हकौ देहुं निदांन॥
है कौ नांहिंन दूसरौ, बिनां अैक भगवांन॥५०॥
अरु जो तुम्ह पूछत नांहि, आत्मा पूछत नांहि॥
तउ पंच महाभूत कौ, इक तन है सब ठांहि॥५१॥
तातैं तुम्हरौ प्रस्न इहि, झूठौ परत लषाय॥
मन बच इंद्री कर्म सब, म्हैं हूं अैक सदाय॥५२॥
है सनकादिक विषय मैं, ह्वै आसक्त सुचित्त॥
विषई मन मैं वासनां, रूप लगि रहै नित्त॥५३॥
विषै रु मन दुहु प्रकति करि, लिप्त जिवहिं रहै लागि॥
जीव रूप मौ इन्हहिं तैं, जुदौ सदा बडभागि॥५४॥
तातैं हौहुँ विषै रु मन, आपस मैं आसक्त॥
तजि बिचार इन्हकौं निजहिं, न्यारौं जांनै भक्त॥५५॥
अरु जो अपनैं चित्त कौ, राषै गुननहिं मांहि॥
तो प्रविष्ट बिच गुनन कै, निश्चै हौहिं सदांहि॥५६॥
अरु उपजत है चित्त तैं, तीनौं गुन निरधार॥
मुहि जांनै निज रूप मन, विषै दुहू निरबार॥५७॥
-जाग्रत सुपन सुषोप्ति अैं, तिहूं अवसथा आंहि॥
माया कै गुन तैं प्रगट, हौत बुधि कैं जु मांहि॥५८॥
तातैं न्यारौ है सदा, सब सौं जीव निदांन॥
कहियत है भगवांन कौ, सषा भलैं उनमांन॥५९॥

माया कैं तिहुँ गुनन करि, उपज्यौ है संसार॥
तिहँ बंधन नईवर्त ह्वै, मोहि भजै निरधार॥ ६०॥
म्हैंहू तुरिय सरूप तिहँ, ध्यांन करै चित लाय॥
तब चित कौ अरु गुनन कौ, त्याग भलै ह्वै जाय॥ ६१॥
बंधन है या जीव कौ, अहंकार अनुसार॥
तातैं पंडित प्रभु समरि, चिंता तजत अपार॥ ६२॥
जब तांई या जीव सौं, भेद बुधि नहिं जाय॥
तब लौं जागतही इहै, सोयौ रहत सदाय॥ ६३॥
ज्यौं सुपनैं मैं आपकौ, जागत मनुष जनाय॥
तइसै ही इहि जागनौं, प्रगट परत दरसाय॥ ६४॥
आत्मा तै तनि आदि जें, जुदै सु झूठ निदांन॥
सुवर्ग कर्महू है सबै, झूठै सपन समांन॥ ६५॥
जागत मैं इंद्री सहित, देषैं विषै समस्त॥
सुपनैं मैं झूठै विषै, दैषत गनत असक्त॥ ६६॥
अरु सब छौडि सुषोप्ति अै, इक आत्मा रहि जात॥
तातैं है बह आतमा, सदा अैक विषयात॥ ६७॥
अैसै माया कै गुनन, करि मनकौं निरधार॥
तीन अवसथा हौत है, समझहू बुधि उदार॥ ६८॥
इहि निश्चै करिकैं भलै, मन की विथा संदेह॥
ग्यांन षडग सौं काटि मो, भजन करै जुत नेह॥ ६९॥
भ्रम विलास मन कौं इहै, है संसार निदांन॥
ग्यांन अगनि सौं भसम करि, ज्यौं तृन अगनि समांन॥ ७०॥
आत्मा है निति अैक अरु, माया रूप अपार॥
त्रृविधि स्वपनवत कर्यौ है, माया नैं निरधार॥ ७१॥
दिष्ट आपनीं ओर तैं, षैंचै तृस्नां टारि॥
ईस्वर है निज सषा तिहँ, अनुभव करै बिचारि॥ ७२॥
चेष्टा करै न और इहि, तबै हौहिं संतुष्ट॥
माया रचित विलास मैं, ह्वै नाहिं कबहुँ पुष्ट॥ ७३॥
अैक बेर संसार जिहँ, निश्चै झूठ जनाय॥
ताकौ कबहूं सांच फिरि, नहिं लागत किहुँ भाय॥ ७४॥
अैंपरि तन माया रचित, जबलौं छूटि न जाय॥
संसकार सौं तबहिं लौं, जगत परत दरषाय॥ ७५॥
इहि नर जीवन मुक्ति की, कही दसा समझाय॥
विषई जन संसार कै, सुष मैं रहै लुभाय॥ ७६॥

उठत बैठत दैषत नहिं, दैहहिं जीवन मुक्त॥
आत्म रूप मैं मगन नित, रहत प्रीति संजुक्त॥ ७७॥
जइसै मदिरा मत्त कौ, रहत कछू सुध नांहि॥
बस्त्र हौहुँ कैं नगन हौ, मगन आपु मन मांहि॥ ७८॥
रहै कर्म प्रारब्ध निज, जब तांई ठहराय॥
जीवन मुक्तहू कै कबहुं, तन नहिं रहत सुभाय॥ ७९॥
अरु जो याकौ चित लगै, बिच समाधि निरधार॥
तौ इहि जांनि चुकै भलै, आत्म तत्त्व सुषसार॥ ८०॥
देहादिक कौ स्वप्नवत, जांनै सदा निदांन॥
परमानंद सरूप नित, समझै इक भगवांन॥ ८१॥
जोग सांष्य दुहु सास्त्र कौ, गौप्य तत्त्व सुषसार॥
हे ब्राह्मन हम्हहीं कह्यौ, तुम्हसौं भलैं प्रकार॥ ८२॥
तुम्ह सौं कहिबे धर्म म्हैं, आयौ हूं भगवांन॥
हे ब्राह्मन हौ वचन मो, मानहुँ सत्य निदांन॥ ८३॥
जोग सांष्यं तप तेज श्री, वसि करनौं इंद्रीनि॥
कीरति आदि इहैं सकल, म्हैरो रूप सरीनि॥ ८४॥
निरगुन सब गुन भजत है, मोकौ भलैं प्रकार॥
म्हैं निरगुन हूं मोहि कछु, ईछा कौ न बिचार॥ ८५॥
म्हैं सबहिंन कौ सुहृद प्रिय, सबतैं न्यारौ आहि॥
निश्चै मो मैं मिलत है, जें मुहि भजही चाहि॥ ८६॥
अैसै म्हैरै बचन सुनि, मिटयौ द्विजन संदेह॥
बउत भक्ति सौं अस्तुति करि, किय आदर अनछेह॥ ८७॥
सनकादिक पूजा अस्तुति, किय मो भलै प्रकार॥
बिधि कै दैषत लोक निज, हम्ह आयै वां वार॥ ८८॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते त्रयोदसोऽध्यायः ॥ १३॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुर्दसोऽध्यायः ॥

(भक्तियोग की महिमा तथा ध्यान विधि का वर्णन)

॥ उद्धव उवाच ॥

दोहा - उद्धव बोलै हे कृस्नं, ब्रह्मवादी बुधिवांन ॥
बउत मार्ग कै कहत है, भेद करन कल्यांन ॥ १ ॥
वै सबही मुष मार्ग कै, इक मुषियन कै मध्य ॥
सौ कहियै समझाय प्रभु, मो सौं बात प्रसध्य ॥ २ ॥
तुम्ह तौ साधन कह्यौ इक, भक्ति जोग निरधार ॥
यातैं अधकी नहिं कछू, और मुक्ति उपचार ॥ ३ ॥
सकल ठौर तैं षैंचिमन, द्रिढ करि आछै भाय ॥
भक्ति जोग सौ नेकहीं, तुम्हमैं मन लगि जाय ॥ ४ ॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

प्रभु बोलै जें बेद कौ, तत्त्व जांनत है नांहिं ॥ ५ ॥
तिन्हकौं अर्थ सु और ही, सूझत है मन मांहि ॥
तातैं बै नर दैत है, मारग बउत बताय ॥ ६ ॥
मारग मैं तिन्ह कबहुँ कछु, नांहिंन सुषसरसाय ॥
बेद नष्ट हुव इक समैं, मैं विधि सौं तिहँ वार ॥ ७ ॥
कहे तिन्ह मैं रूप मो, बैस्नव धरम सुढार ॥
तै स्वायंभुव मनुहि दिय, ब्रह्मावेद पढाय ॥ ८ ॥
उन्ह भृगु रिष सप्त कौ, आछै दियै सिषाय ॥
निज पुत्रनि कौ सदा रिष, दीनैं बेद पढाय ॥ ९ ॥
उन्हतैं फिरि सीषत भयै, जन अनैंक सुषपाय ॥
किंनर गुह्यक विद्याधर, सुर दानव गंधर्व ॥ १० ॥
सिध चारन किंपुरष नर, छत्री नाग जू सर्व ॥
सहित राछसन इतै सब, धरि धरि हिर्दै हुलास ॥ ११ ॥
हुतै सुतिन्ह सबहीन कै, जुदै जुदै स्वाभाव ॥
सतगुनी कौ रजोगुनी, कौ तम गुनी कहाय ॥ १२ ॥
न्यारी न्यारी बुधि भई, तिहूं गुननि अनुसार ॥
अरु तिहुँ गुनही करि भलै, सुर नर भूत अपार ॥ १३ ॥
तिन्ह सबहिन अति मोद करि, निज स्वभाव अनुसार ॥
न्यारै न्यारै बेद कै, कियै अर्थ निरधार ॥ १४ ॥
और स्वभाव अनैक तैं, या जगही कै मांहि ॥
न्यारी न्यारी बुधि भई, सबहिंन कै हिय ठांहि ॥ १५ ॥

परंपरा तैं बहुतन कैं, मत पाषंड चलि आय॥
नर मो माया मुहित निज, रुचि सौं मार्ग चलाय॥ १६॥
कोउ कहै कीजै धर्म, अरु कोउ कहै जोग॥
कोउ कहत है कीजियै, जग मैं जस आरोग॥ १७॥
कौउ बतावत सत्य कौ, कौ मार्ग निति बताय॥
बसि करनौं इंद्रीन कौ, कौ यक कहत जताय॥ १८॥
कौउ संसारी बस्तु कौ, बतवत करनौं त्याग॥
कौउ कहत है कीजियै, जग मैं सुष अनथाग॥ १९॥
कोऊ बतावत जग्य अरु, कौउ बतावत दांन॥
तप व्रत कौउ बतावही, कौउ जम नेम विधांन॥ २०॥
इन्ह मार्गन कौ किये ह्वै, फल स्वर्गादिक झूठ॥
जिन्ह लौकन मैं सुष नांहि, है दुष उलटि अतूठ॥ २१॥
जो कोउ कछु चाहत नहिं, चित लगाय मो मांहि॥
तिन्हकौ जो सुष हौत सौ, विषयन कौ ह्वै नांहि॥ २२॥
सांत दांत सम कछु राषै, नाहिं भक्त मो वित्त॥
है सब ठां संतोष जिहँ, लह्यौ बेद कर चित्त॥ २३॥
इंद्र लौक विधि लौक भुव, और लौक पाताल॥
जोग रु सिधि अरु मुक्ति मो, भक्त नचैहैं काल॥ २४॥
इक मोही कौ भक्त मो, चाहत रहै सदाय॥
लागत नहिं मो भक्त कौ, मो तैं कछु अधिकाय॥ २५॥
सिव लछमी बिधि आत्म मो, हलधर धर बड सक्त॥
अैं अैसै प्रिय नांहि मुहि, जइसै प्रिय मो भक्त॥ २६॥
कछु न चाह जिन्ह भक्त कै, अधिक सुबौलत नांहि॥
समदिष्टि जु है किहूं सौं, बैर नांहि मनमांहि॥ २७॥
तिन्हकैं पीछै म्हैं चलौं, पद रज राषूं सीस॥
दरसन करत न तृपतिहूं, कबहूं बिसवाबीस॥ २८॥
कोटि कोटि ब्रह्मांड है, म्हैरे उदरहिं मध्य॥
भक्त चरन रज सौं करौ, तिहैं जु पवित्र प्रसध्य॥ २९॥
जिन्ह चित मो मैं लगि रह्यौ, कछु राषत नहिं पास॥
दयावंत है बड्डे है, हौत न क्रौध प्रकास॥ ३०॥
कबहूं कछू न कामनां, जें जन करत सुजांन॥
तिन्हकौ जो सुष हौत सौ, जांनत बेइ निदांन॥ ३१॥
म्हैरे भक्तन कौ लगै, विषय जोर वर आय॥
अरु इंद्रीहूं आपनी, जीती नांहिंन जाय॥ ३२॥

तौहू उन्हकै पास मो, भक्त महाबलवांन॥
तासौं विषै न करि सकैं, उन्हसौं जोर निदांन॥ ३३ ॥
भसम काष्ट कौ करत है, अगनि सु जइसै भाय॥
तइसै ही सब पाप कौ, दै मो भक्त जराय॥ ३४ ॥
जोग सांष्य तपस्या धरम, और बेद कौ पाठ॥
करि दैनौं त्यागन सबै, विषै भोग कौ ठाठ॥ ३५ ॥
अै अैसै करि सकत नहिं, मो कौ वसि निरधार॥
जइसै मुहि वसि करत है, म्हैरी भगति सुढार॥ ३६ ॥
म्हैं प्रियहूं सब जनन कौं, भगति करत वसि मोहि॥
वा मल सु मो भगति सौं, महा पवित्र जू होहि॥ ३७ ॥
हीन हौहि मो भगति सौं, जो प्रांनी जग मांहि॥
तिहँ सति धर्म दया विद्या, तप करिही सुध नांहि॥ ३८ ॥
गद गद कंठ रुमांच तन, भक्ति बिनां नहिं हौय॥
जबलौं प्रांनी कौ हिर्दै, ह्वै पवित्र नांहि कौय॥ ३९ ॥
अति कोमल चित हौय पुनि, गदगद बांनि सुभाय॥
कबहुँ हंसै रोवै कबहुँ, नांचै हरि गुन गाय॥ ४० ॥
यौं बौंरे ज्यौं निति रहै, प्रेम मत्त उर अत्र॥
अैसौ ह्वै मो भक्त सौ, सबहिंन करै पवित्र॥ ४१ ॥
जइसै अगनि प्रसंग सौं, कनक दोष मिटि जाय॥
त्यौंही भगति सौं कर्म कटि, म्हैरी प्रापति पाय॥ ४२ ॥
कहै सुनै म्हैरे चरित, आत्मा उज्जल हौत॥
त्यौं त्यौं ही ह्वै नर हिर्दै, तत्त्व भेद ऊदौत॥ ४३ ॥
जइसै अंजन दियै तैं, नैंन मैल कटि जाय॥
तइसै सब दीसै परै, छिप न कछू नहिं पाय॥ ४४ ॥
विषै ध्यांन सौं विषैहिं, मधि नर चित लगि जाय॥
अरु मो सुमरन कियै तैं, मो मैं लगै सुभाय॥ ४५ ॥
तातैं मिथ्या पदारथनि, झूठ सुपन सम जांनि॥
मो मैं निज चित लाय मो, भक्ति करै बुधिवांनि॥ ४६ ॥
तिय अरु तिय संगीन कौ, त्याग करै निरधारि॥
रहि इकांत आछै करै, म्हैरो ध्यांन बिचारि॥ ४७ ॥
और संग सौं असन ह्वै, बंधन क्लैस उदौत॥
तिय संगी संगीन सौं, जइसौ बंधन हौत॥ ४८ ॥

॥ उद्धव उवाच ॥

इहि सुनि कै बौलत भयै, उद्धव भक्त प्रवीन॥
अहौ कंवलदल नैंन अब, इहि कहु तारनदीन॥ ४९ ॥

ध्यांन करत तुम्ह रूप कौ, मुक्तहुँ चाहनहार॥
सौ सरूप प्रभु रावरौ, मोहि कहौ करि प्यार॥ ५०॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

कहत भयै भगवांन यौं, आछे आसन बैठि॥
वांकौ टेढौ नहिं करै, आप सरीर अमैठि॥ ५१॥
लषै नासिका अग्रकौ, धरि गोदी मैं पांन॥
रैचक पूरक कुंभक रु, प्रानायांम विधांन॥ ५२॥
तिन्हसौं अपनैं प्रांन कौ, सुधहिं करै निरधार॥
हौय जितेंद्री करन मैं, प्रानायांम प्रकार॥ ५३॥
ज्यौं पंकज कै तंतु है, पूरन पंकज मांहि॥
तुडि डांडी पै जौ बढत, पै तिहँ अंत न आंहि॥ ५४॥
जइसै पूरन रहत है, नाद सु घंटा मध्य॥
त्यौंही सब्द ऊँकार है, व्यापक हृदै प्रसध्य॥ ५५॥
मात्रा सौं न्यारौ रहत, स्वर राषै तिहँ पास॥
करै सु यौं ऊँकार जुत, प्रानायांम अभ्यास॥ ५६॥
अैंक मास लौं निति करै, दस दस प्रानायांम॥
साधन मैं चूकै नांहिं, कबहूं लगि किहुँ कांम॥ ५७॥
निश्चै म्हैरो रूप है, हृदै कमल की ठौर॥
ऊंचि नालि बहि कमल की, मुष है नीची वौर॥ ५८॥
अष्ट पत्र वाहि कमल कै, तिहँ यौं धारै ध्यांन॥
वा पंकज कौ मुष भयौ, ऊंचै वौर निदांन॥ ५९॥
तास कंवल की कर्निका, मधि रवि करै सथाप॥
ता आगै ससि अगनि कौ, करै सथापन आप॥ ६०॥
फेरि अग्नि कै मधि करै, मो सरूप कौ ध्यांन॥
अति सुंदर मुष चतुर्भुज, मंद मंद मुसक्यांन॥ ६१॥
मकराकृत कुंडल सुभग, सीस मुकट अभिरांम॥
कौस्तभ मणि श्रीचिह्न उर, पीत बस्त्र घनस्यांम॥ ६२॥
संष चक्र नीरज गदा, आयुध धरै सुढार॥
बनमाला करि प्रभुहिं दै, मंडित परम उदार॥ ६३॥
नूपुर किंकन किंकनी, बाजूबंद मनिहार॥
कृपावंत है नैत्र अति, सुभग अंग सुकुमार॥ ६४॥
अैसै प्रभु कै रूप कौ, धरै भली विधि ध्यांन॥
मन इंद्रीन कौ विषै तैं, षैंच लैहि बुधिवांन॥ ६५॥
बुधि है स्वार्थी जास करि, मन लावै मो मांहि॥
मन व्यापत प्रभु अंग मैं, तिहँ लगवै इहि ठांहि॥ ६६॥

प्रभु कैं इक मुष कौ करै, ध्यांन भलैं अनुसार॥
मत्त मगन उहिं ध्यांन मैं, रहै आप निरधार॥ ६७॥
बहुर्यौ वाहू ठौर तैं, निज चित षैंचि उठाय॥
सब कारनि कै रूप मैं, आछै दैय लगाय॥ ६८॥
सौ तजि फिरि लावै मनहिं, सुध ब्रह्म कै मांहि॥
तबै ध्यांनहू जाय छुटि, ब्रह्म रूप ठहरांहि॥ ६९॥
यौं निश्चल बुधि करि लषै, मोहि आपही मध्य॥
अरु मो मैं लषि सबन कौं, जोतिहि मिलै प्रसध्य॥ ७०॥
जइसै जोगीस्वर करै, ध्यांन हृदै निज मांहि॥
तबै सकल भ्रम जांहि मिटि, महामुक्ति सुष पांहि॥ ७१॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते चतुर्दसोऽध्यायः ॥ १४॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ पंचदसोऽध्यायः ॥

(भिन्न भिन्न सिद्धियों के नामों और लक्षणों का वर्णन)

॥ श्री भगवानुवाच॥

दोहा - प्रभु बोलै है जित इंद्री, करही प्रानायांम॥
मो मैं चित लावत लहत, जोगी सिधि अभिरांम॥ १॥

॥ उद्धव उवाच॥

उद्धव बोलै कौनुंसी, कियै धारना जोग॥
सिद्धि कौनुँसी प्राप्त है, कहियै इहै प्रयोग॥ २॥
सिद्धिहूं कितिक देत हौ, तुम्हही सिधि जोगीन॥
तातैं पूछत हौ तुम्हहि, कहियै तारन दीन॥ ३॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

प्रभु बोलै जे धारना, करिकैं जोगाभ्यास॥
तैं अष्टादस सिद्धि कौ, बतवत है करिष्यास॥ ४॥
मुष्य आठ सिधि है सही, सब सिद्धन कै मध्य॥
अरु दस सिधि गुन सत्त्व कौ, दैत बढाय प्रसध्य॥ ५॥
अणिमां महिमां दौय सिधि, तीजी लघिमां जांनि॥
समैं पाय अैं देह कौ, तिहुँ सिधि हौत निदांनि॥ ६॥
प्रापति नामा सिद्धि इक, इहै अर्थ है जास॥
इंद्री इंद्री सुरन कौ, हौत सुग्यांन प्रकास॥ ७॥

औरन की दैषी सुनी, इहि जांनै सब बात॥
प्राप्ति सिद्धि याकौ कहत, चहूं वेद विषयात॥ ८॥
सुवर्ग भूमि पाताल कै, मुष है तिन्हकैं भोग॥
करनैं कौ सामर्थ सौ, सिद्धि प्रकाम प्रयोग॥ ९॥
प्रकति प्रकति कै अंस है, तिन्हकौं प्रेरनहार॥
सक्ति नांम की सिद्धि सौ, कहियत है निरधार॥ १०॥
विषै भोग आनै करै, अरु आसक्त न हौय॥
सौ सिद्धि वसिता नांम की, कहियतु सुनि चित गौय॥ ११॥
जो सुष चाहै सो लहै, इक सिद्धि इहै निदांन॥
अै आगै सिधि मुष्य है, उद्धव सुनौ सुजांन॥ १२॥
अबै या बस सिद्धि मैं, कहत सुनाय सुतौहि॥
भूष प्यास लौं आदि छह, बस्तु न तन कौं हौहि॥ १३॥
सुननी बात सुदूर की, अरु लैनी है दैषि॥
दौय सिद्धि अैंहै सही, भेद भलैं अवरैषि॥ १४॥
मन कै सम तन चलै अरु, चहै सुधारै रूप॥
कांम रूप नांमी लहै, कहियत सिद्धि अनूप॥ १५॥
देह पराई मांहि इहि, पैठि सुजाय सरीन॥
सो परकाय प्रवैस सिधि, कहियत सुनौ प्रवीन॥ १६॥
जब चाहै तब मरै इहि, मरै चहै बिनु नांहि॥
दैवतांन तैं मिल लषै, उन्ह क्रीडा बहु ठांहि॥ १७॥
मन मैं करै बिचार जो, सोइ आपु ह्वै जाय॥
अरु वांकी आग्या कोउ, मेटै नहिं किहुँ भाय॥ १८॥
अैं दस विधि तौ सौं कही, म्हैं आछै समझाय॥
पांच छह सिद्धि और अब, आछै कहूं सुनाय॥ १९॥
हौही ग्यांन त्रृकाल अरु, लगै न गरमी सीति॥
बात परायै चित्त की, जांन लैय सुभ रीति॥ २०॥
सूर्ज अग्नि जल विषै इह्लैं, दूर जु राषै थांभि॥
काहू सौं हारै नांहि, भलैं भैद चित षांभि॥ २१॥
जोग धारना करि सबै, अैं सिद्धि प्रापति हौय॥
अरु जो सिद्धि जा धारना, करिबै अब कहुं सौय॥ २२॥
सूषम भूत सरूप मैं, तामैं मन दै लाय॥
बहि म्हैरो सेवक लहै, अणिमा सिद्धि सुभाय॥ २३॥
चाहै अपनैं चित्त मैं, तैस्सौ लघु ह्वै जाय॥
जास नांम निरधार करि, अनिमा सिद्धि कहाय॥ २४॥

महत रूप मैं हूं सही, तामैं तइसौ हौय॥
अपनौं मन लावै रु नहिं, अंतर राषै कौय॥ २५॥
और पंचमहाभूत कै, परिमांनन कै मांहि॥
तइसौ ही लावै मनहिं, सौ महिमां सिधि पांहि॥ २६॥
आपु चहै तइसौ बडौ, रूप प्रगट ह्वै जाय॥
महिमां सिद्धि कहावही, जाकौं नांम सुभाय॥ २७॥
मो परिमांन सरूप है, मन लावै तिहिं मध्य॥
जो जांनै लघुकाल गति, है इहि लघुमा सिध्य॥ २८॥
अहं तत्त्व मो रूप तिहिं, मधि लावै मन गौय॥
सब जन की इंद्रिननि कौ, याकी प्रापति हौय॥ २९॥
याकौ नांम सुकहत है, प्राप्ति सिद्धि निरधार॥
सौ तौकौ समझाय हम्ह, कह्यौ भलै अनुसार॥ ३०॥
सूत्र रूप मो तास मध्य, मनि लगाय निज दैय॥
तौ वाकौ प्राकाम्य सिधि, प्रापति हौय सुभैय॥ ३१॥
बिस्नु त्रृगुन कैं ईस्व है, काल सरूपी देह॥
ताकौ प्रेरण जीव इहि, ईस्वर सिद्धि अवरेह॥ ३२॥
नारायन भगवांन है, मन लावै तिन मध्य॥
तो इहि वसिता सिद्धि कौ, प्राप्त हौय प्रसध्य॥ ३३॥
निरगुन ब्रह्म मो रूप है, मन राषै ता मांहिं॥
तौ ह्वै परमानंद इहि, सिद्धि प्रकामि कहांहि॥ ३४॥
स्वैत दीप पति धर्म मय, अैसौ म्हैरो रूप॥
ताकौ धारन कियै तैं, ह्वै सुध रूप अनूप॥ ३५॥
भूष प्यास लागै नांहि, रहै निहचिंत सदाय॥
वांछा जल अरु अन्न की, हौय नांहि किहुँ भाय॥ ३६॥
प्रांन रूप नभ रूप मधि, नाद सुमिरन करंत॥
मन लावै तौ दूरि तैं, वांनी सबनि सुनंत॥ ३७॥
नैत्र मिलावै रविहि मधि, रवि नैत्रन मैं मेलि॥
करै ध्यांन मो तौ लषै, सब ब्रह्मांड अकेलि॥ ३८॥
वाय देह संजुक्त मन, मो मैं दैय लगाय॥
तौ याकौ मन जाय जहँ, सही सरीरहुँ जाय॥ ३९॥
मनकौं लै करिकैं चहै, धार्यौ जाकौ रूप॥
सोही याकौ रूप ह्वै, समझहुँ भेव अनूप॥ ४०॥
अरु जो इहि पठयौ चहै, देह परायै मांहि॥
तौ वैस्सौ ही आपकौ, ध्यांन करै चित ठांहि॥ ४१॥

तौ इहि छौडि सरीर निज, ह्वै प्रांनन की राह॥
पर सरीर मैं प्राप्त ह्वै, संजुत अपनीं चाह॥ ४२॥
मूल द्वार कौ दाबि कैं, अैडी सौं थिर भाय॥
प्रांनन कौ उर उदर गर, मसतक तहँ लै जाय॥ ४३॥
तौ स्वछंद मृतु सिद्ध कौ, प्रापति हौहि सुभाय॥
ताकौ हम्ह तौसौ कह्यौ, आछै भेद सुनाय॥ ४४॥
देवतांन कौ जो इहै, निरगत जु ग्यांन याहि॥
देष्यौ चहै विहार तब, बिमांन अपसर आहि॥ ४५॥
मो आश्रै करिकैं करै, कछु जोगैस बिचार॥
ताही की प्रापति प्रगट, हौत भलैं अनुसार॥ ४६॥
अरु जो ईस्वर रूप मो, ताकौ धारै ध्यांन॥
तिहँ आग्यां मैटन कोउ, मो आग्यां उनमांन॥ ४७॥
भयौ हौहि जिह सुध चित्त, बढि मो भक्ति बिसाल॥
जोगैस्वर ही रहत सब, जन्मनि ग्यांन त्रृकाल॥ ४८॥
अगनि आदि जोगैस्व कै, तनकौ करत न नास॥
अरु जल थल जंतुनि सुषद, जइसौ ह्वै सुषरास॥ ४९॥
चिह्न श्रीवत्स संष पुनि, चक्र गदा जलजाति॥
सस्त्र छत्र बिजनां ध्वुजा, मो विभूति विषयाति॥ ५०॥
तिन्हकौं आछी भांत सौं, ध्यांन धरै चित लाय॥
सौ किहुँ सौं हारै नांहि, सब ठौरनि जय पाय॥ ५१॥
जो म्हैरो ह्वै उपासिक, ताकौ अैं सिधि जोग॥
प्रथम हौत है बहु तपै, वाहि न कछू प्रयोग॥ ५२॥
हौहि जितैंद्री निज मनहि, जिन्ह वसि कीनौ हौय॥
जीति प्रांन मो धारनां, करै भलै चित गौय॥ ५३॥
ताकौ सिधि सुकौनूं सी, दुरलभ है जग मांहि॥
अैंपरि म्हैरो दास ह्वै, धरत चाह कछु नांहि॥ ५४॥
जोगी कौ इहि बीच मैं, सिध करै अंतराय॥
प्रभु सौं मिलन न देत है, औसर देत गमाय॥ ५५॥
जनम वौषधी मंत्र तप, इन्ह करि जो सिधि हौत॥
सो जोगी कौ जोगही, करि सिद्धि ह्वै उदौत॥ ५६॥
और तरह सौं जोग की, सिधि प्रापति ह्वै नांहि॥
जोग सिधि की जोगही, सौं प्रापति भल पांहि॥ ५७॥
कारन प्रभू सबहिन कौं, म्हैं ही हौं निरधार॥
सांष्य जोग पुनि धर्महूं, कौ म्हैं प्रभू सुढार॥ ५८॥

बाहरि भीतरि जियन कैं, अंतरजामी रूप॥
म्हैं ही हूं पै हौत नहिं, उन्हमैं लिप्त अनूप॥ ५९॥
पंचभूत महा ज्यौं सकल, देहनि मध्य निदांन॥
तइसै ही सब ठौरहूं, म्हैं नित बीच जहांन॥ ६०॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते पंचदसोऽध्यायः ॥ १५॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ षोडसोऽध्यायः ॥

(भगवान की विभूतियों का वर्णन)

॥ उद्धव उवाच॥

दोहा - उद्धव कहत कि हे प्रभू, परम ब्रह्म हौ आप॥
आदि अंत नहिं रावरौ, सबतैं जुदे सजाप॥ १॥
सकल पदार्थन कै करन, उतपति पालन नास॥
तुम्हही हौ करतार प्रभु, जिन्हकौ हूं म्हैं दास॥ २॥
तुम्हकौ सब तनकै विषै, प्रांनी कहत जनाय॥
जांनत वेद सु तुम्हहि कौ, चित म्हैं आछै भाय॥ ३॥
जा जा ठौरहिं भगति करि, तुम्हकौं रिषगन सैय॥
प्राप्त हौत है तुम्हहि सौ, मो तैं कहौ सुभेय॥ ४॥
सबहीं प्रांणिन कै विषै, गुपत रहत हौ आप॥
अंतरजामी रूप हौ, पालन करन सजाप॥ ५॥
अैसे तुम्ह तिन्हहिं न लषत, अैं प्रांनी अग्यांन॥
अरु तुम्ह सब प्रांनीन कौ, दैषत हौ भगवांन॥ ६॥
प्रकति रावरी सौ मुहित, सब प्रांनी जग मांहि॥
परमानंद सरूप तुम्ह, जिन्हकौं जांनत नांहि॥ ७॥
दिसा स्वर्ग पाताल भुव, इन्हकैं मधि बहुभाय॥
है विभूति प्रभु रावरी, सौ मुहि कहौ सुनाय॥ ८॥
पद पंकज प्रभु रावरै, दैंनहार सुषसार॥
तिन्हकौ हौं वंदन करत, मन वच बारंबार॥ ९॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

फिरि बोलै भगवांन हे, उद्धव इहहीं बात॥
अर्जुन मुहि पूछी हुती, मधि क्रूरषैत अग्यात॥ १०॥

जुध करनौं चाहत रह्यौ, सत्रुननि सौं उहिं बार॥
तहं देषै दुहु सैंन बिच, निज कुटंब अनपार॥ ११॥
तब चित मैं जांनत भयौ, राज लोभ कै काज॥
निजकुल कौ वध करन सौ, है अधरम कौ साज॥ १२॥
अै दुहु झूठी बात है, मरनौं मारनहार॥
सौ अर्जुन समझ्यौ न तब, तजि बैठ्यौ जुध भार॥ १३॥
तांह अर्जुन कौ प्रीत सौं, हम्ह कीनौं उपदेस॥
तब अर्जुन पूछी हम्हहिं, तैं पूछी सुविसैस॥ १४॥
तब म्हैं अर्जुन सौं कही, प्रांनिन कौ जग मध्य॥
म्हैं आत्माहूं सुहृद हौं, ईस्वर हूं सु प्रसध्य॥ १५॥
अरु सब प्रांनी जगत बिच, है म्हैरो ही रूप॥
उतपति पालन प्रलैं कौ, करता म्हैं जु अनूप॥ १६॥

॥ छंद पद्धरी ॥

गति मैं गतिवंतन मध्य आंहि।
म्हैं काल वसी करतान मांहि॥
मधि गुनन सांम गुनहूं सरीन ।
स्वाभावक गुनहूं मधि गुनीन॥ १७॥

हूं मधि तत्त्वन कै सूत्र रूप।
हूं बडन मध्य महतत्त्व अनूप॥
सूषमन मधि मुहि जीवहुं मांनि।
दुर्जननि मध्य म्हैं मन निदांनि॥ १८॥

अरु वेद पढावनहार मध्य।
मुहि जांनहुँ चतुरानन प्रसध्य॥
पंच मंत्रननि मैं हौं उँकार।
क अकार सु म्हैं अष्षर मझार॥ १९॥

हूं छंदन मधि गायत्री छंद।
सब अमरन मधि म्हैं प्रगट इंद्र॥
हूं अग्नि अष्ट वसु मधि असील।
म्हैं रुद्रन मधि रोहित सुनील॥ २०॥

मधि आदित्यन मैं बिस्नुं नांम।
पुनि तीर्थन मैं हूं गंग धांम॥
भृगु बृहस्यपति दौनूं सुभाय।
हूं ब्रह्मरिषन कै मधि कहाय॥ २१॥

म्हैं राजरिषन कैं मधि प्रमांन।
हूं मनु स्वायंभुव बुधिवांन॥
मधि सुर रिषनहुँ नारद सुषैंन।
हूं गायन कै मधि काम धैंन॥ २२॥

हूं सिधिस्वरांन मैं कपिल देव।
हूं गरुड पछिन मधि बिनां भेव॥
हूं प्रजापतिनन मैं दछि पाल।
हूं दैत्यन मैं प्रहलाद बाल॥ २३॥

म्हैं ब्रह्म जिग्यहूं जिग्यहिं मांहि।
हू वरुन देव जल जंतु ठांहि॥
जछिराछसि मधि म्हैं हूं कुबैर।
थल वसन जोग्य मधि म्हैं सुमेर॥ २४॥

म्हैं अैरावति हूं बिच करीन।
उचश्रवा म्हैं बिच अश्वनी चीन॥
मधि मनुषन कै म्हैं हूं नरेस।
म्हैं धातुनि मधि कंचन सुदेस॥ २५॥

जुत क्रांति प्रतापी ह्वै जितैक।
तिन्हकैं मधि म्हैं हूं सूर्ज यैक॥
जे दंडवंत जग मैं जनाय।
तिन्ह मध्य सु म्हैं जम धर्म राय॥ २६॥

म्हैं वासुकि हूं मधि सर्पयैस।
हूं नागन मांही नाग सैस॥
वड श्रृंग दाड वारै अछैहुँ।
तिन्ह मांहि सिंघ मुहि जान लैहुँ॥ २७॥

मधि आश्रम कै हूं संन्यास।
हूं वर्नन मधि ब्राह्मन सभास॥
मधि सरोवरन मुहि सिंधु दैषि।
आयुधन मांहि मुहि धनुष लैषि॥ २८॥

धन दैंनहार मधि सिव सदाय।
अव अंनन मधिहूं जव सुभाय॥
बृछनि मांहि हूं पीपर सुश्रेष्ट।
प्रोहितन मधि म्हैं हूं जु वसिष्ट॥ २९॥

नहिं जाय सकत कौ जिन्हनि ठौर।
तिन्ह नगनन मध्यहूं हिम सुतौर॥

मग कै जु प्रवर्त्तक है अपार ।
तिन्ह मांहि जांनि मुहि वदन च्यार ॥३० ॥

मधि सैंनापति म्हैं हूं सकंद ।
हूं नछित औषधी मांहि चंद ॥
म्हैं ब्रत सु आहि साव्रतन ठांहि ।
म्हैं नारायन हूं मुनिन मांहि ॥ ३१ ॥

जल अग्नि अर्कवानी रु वाय ।
अै करन सबनि उत्तम सचाय ॥
तिह्वैं मांहि है मो पवन रूप।
हूं जुगन मांहि सतजुग अनूप ॥ ३२ ॥

अष्टांग जोग मांही नृधार ।
मनहि वसि करनौं म्हैं सुढार ॥
संग्राम मध्य जे जयति चाहि ।
जेत मंत्र तिन्ह मैं हूं सदाहि ॥ ३३ ॥

जें है प्रवीन सुविवेक वंत।
जिन्ह मैं हूं आत्म आत्म तंत॥
सबही सुष्याति वां दीन मांहि।
म्हैं हूं विकल्प सुनि श्रवन ठांहि ॥ ३४ ॥

सतिरूपा हूं म्हैं मधि तियांन।
म्हैं स्वायंभुव मनु मधि प्रुषांन॥
ब्रह्मचारिन मधि सनत कुमार।
हूं धर्मन मैं संन्यास सार॥ ३५ ॥

सबै अभय सथांन मधि सथांन।
म्हैं अंतर निष्ठा हूं प्रमांन॥
हूं गुप्पन मैं सुभ वचन मौन।
हूं मासन मैं अगहन सुठौन॥ ३६ ॥

हूं काल सावधानन मंझार।
म्हैं सुक्र कविन मैं बुधि उदार॥
सब रितुन मांहि हूं रितु बसंत।
किंपुरसन मैं हूं हनूमंत॥ ३७ ॥

मधि मुहरत हूं अभिजित सुनांम।
मुहि दर्भ जांनियै तृनन ठांम॥
हूं देवल अस्ति सधार्न मध्य।
मुहि सुभग पुहुप मैं कमल लध्य ॥ ३८ ॥

म्हैं रतननि मधि हूं पदमराग।
तू ऊधव हूं वैस्नंवन जाग॥
मधि व्यास आठबीसन निदांन।
म्हैं वेदव्यासहूं अति सुजांन॥ ३९॥

बडसक्तिवंत जे है अमाप।
हूं वासदेव तिन्ह मैं सुजाप॥
हूं होमन सौंज मैं गव्यपंच।
म्हैं उद्यमीन मैं रमा मंच॥ ४०॥

कपटीन मांहि म्हैं छल बिचार।
बलवंतन मैंहूं बल प्रकार॥
जो कोऊ सराहत वात भेद।
तिन्हमैं हूं सहि रहनौं अषैद॥ ४१॥

हूं सत्त्व गुनीन मैं सत्त्व सुभाय।
म्हैं नगननि मांहि हूं थिरताय॥
मो भक्त करत जितनैक कर्म।
तै म्हैं ही हौं तू समझि मर्म॥ ४२॥

है हरि की मूरति सकल च्यार।
हूं वासुदैव तिन्ह मैं सुढार॥
म्हैं विस्वावसिहूं मधि गंधर्व।
हूं पूरब चित मधि अपछर सर्व॥ ४३॥

मुहि प्रिथवी कै मधि गंध जांनि।
असृजल मांहि मुहि रस पिछांनि॥
म्हैं अगनि तेजवंतनहिं मध्य।
हूं क्रांति सूर्ज ससि मैं प्रसध्य॥ ४४॥

मुहि सबद जांनियै मधि अकास।
हूं ब्रह्मन मांहि बलि नृप सभास॥
जें प्रिथवी मधि है महावीर।
हूं जिन्हकैं मधि अर्जुन सधीर॥ ४५॥

बहु जनम स्थिति पुनि प्रलैं हौहि।
सौ प्रांनिन कै मधि जांनि मौहि॥
म्हैं हूं सब इंद्रिनि कै सुकर्म।
अै इंद्रिनि इंद्री समझि मर्म॥ ४६॥

जल तेज वायु प्रिथवी अकास।
अहंकार जीव महतत्त्व प्रकास॥

माया विकार जुत यतीवस्त।
हूं म्हैं ही निश्चै करि समस्त॥ ४७॥

इन्ह वस्तन कौ फल तत्त्व ग्यांन।
हूं म्हैं ही प्रगट सु बिच जिहांन॥
गुन गुनी षेत्र षैत्रग्य जीव।
जुत ईस्वर म्है ही हूं सदीव॥ ४८॥

दोहा - परिमांनन की करत है, गनती कौउ सुजांन॥
मो विभूति की हौत नहिं, गनती कबहुँ निदांन॥ ४९॥
तैज लछमी अइस्वर्ज, कीर्त लाज विग्यांन॥
षटगुन वीरज सहि रहन, सुंदरता अरु दांन॥ ५०॥
अैं गुन ह्वै जा पुरस मैं, सौ म्हैं ही निरधार॥
उद्धव तुहि संछैप मैं, कह्यौ विभूति विचार॥ ५१॥
मो विभूति मन कौ प्रगट, है विकार जग ठांहि॥
अैं बिकार मिटि जांहि जब, मिलै भलै मो मांहि॥ ५२॥
वांनी इंद्री प्रांन बुधि, मन जुत वसि करि लैय॥
तौ तुहि कबहूं हौहि नहिं, संसार सुकिहुँ भैय॥ ५३॥
मन वांनी कौ जो कोउ, करै आपु बसि नांहि॥
ताकै तप व्रत दांन जिग्य, निश्चै यौंही जांहि॥ ५४॥
काची मृतिका कौ रचै, जइसै घट आकार॥
तामैं पांनी भरै तैं, निकसि जात निरधार॥ ५५॥
तातैं तू ऊधव अबै, निज मन वचन रु प्रांन॥
वस करिकैं आश्रय सु मो, रहियै भलै सुजांन॥ ५६॥
जब ह्वै है तौको प्रगट, म्हैरी भगति सुभाय॥
तबै कृतारथ हौइगौ, तू सब दुषहि मिटाय॥ ५७॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते षोडसोऽध्यायः ॥ १६ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ सप्तदसोऽध्यायः ॥

(वर्णाश्रम धर्म का निरुपण)

॥ उद्धव उवाच॥

दोहा - उद्धव बोलै जें वरन, आश्रम कै आचार॥
तिन्ह संजुत है मनुष्य जिन्ह, कर्म कहौ करतार॥ १॥

जिन्ह कर्मन के कियै तैं, भगति तुम्हारी स्यांम॥
प्रगट हौहि सौ धर्म मुष, कहौ मोहि अभिरांम॥ २॥
पहलै धर्म कहे हुतै, तुम्ह धरि हंस सरूप॥
रहै नांहि संसार मैं, अब वै धरम अनूप॥ ३॥
पालक रु वक्ता धरम कै, तुम्ह समांन नहिं कौय॥
अैक ब्रह्म कै लोक मैं, वेद हौय तौ हौय॥ ४॥
ह्वै हौ अंतर ध्यांन तुम्ह, तब अैसौ सुभ धर्म॥
सकि है कौनुं सुकहि भलैं, हे सुषदाता पर्म॥ ५॥
जो जाकौ है धरम अरु, जास धरम अनुसार॥
प्रगट रावरी भगति ह्वै, सौ कहियै करतार॥ ६॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सुक कहत कि उद्धव परम, भक्त प्रस्न इहि कीन॥
तबै कहै उत्तम धरम, करता पुरस प्रवीन॥ ७॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

बोलै कृस्नं क्रिपाल हे, उद्धव इहि तौ प्रस्नं॥
दाता है महामुक्ति कौ, मैटन झूठी तृस्न॥ ८॥
वरणाश्रम कै धरम अरु, आचारिन कै धर्म॥
म्हें तौमौं अब कहतहूं, तू सुनि तजि सब भर्म॥ ९॥
हंस वरन सबही मनुष, हुतै सु सतजुग मध्य॥
हौत मनुष कृतार्थ जब, करि मो भक्ति प्रसध्य॥ १०॥
वेद यैक ही हौ प्रगट, पहल रूप ऊँकार॥
ब्रषभ रूप चहुँ पांव जुत, म्है हौ धर्म सुढार॥ ११॥
म्हैरे हंस मो हिर्दै तैं, हुव त्रैता जुग मांहि॥
तब सबही लागै करन, जग्य भलैं चित चांहि॥ १२॥
मुष बाहु जंघ चरन मो, जिन्ह तैं या जग मांहि॥
द्विज छत्री वैस्य रु सूद्र, चहूं वरन प्रगटांहि॥ १३॥
उपजै पुरष वैराट तैं, सबलीनैं आचार॥
सो वर्तत है जगत बिच, निज निज मति अनुसार॥ १४॥
ग्रहस्थाश्रम है मो जंघा, मो मसतक संन्यास॥
वानप्रस्थाश्रम बछसथल, ब्रह्मचर्ज उरभास॥ १५॥
उत्तम ठौरनि भयै तिन्ह, उत्तम भयौ सुभाय॥
नीच ठौर उपजै जिन्हनि, नीच सुभाव जनाय॥ १६॥
सम दम तपस्या पवित्रता, सत्य संतोष रु सांति॥
दया करन निहकपटता, म्हैरी भक्ति सुभांति॥ १७॥

निश्चै है ब्राह्मनन कै, अैई कार्ज सुभाव॥
सौ सब कहै सुनाय हम्ह, तुम्हहूं सुनि जुत चाव॥ १८॥
धीरज सूरता निज बल, उदिम ब्राह्मन ताय॥
अईस्वर्ज रु उदारता, रिस न करन अधिकाय॥ १९॥
अै सुभाव छत्रीनन कै, समझि लैहुं मन मांहि॥
अबहूं वैस्य सुभाव तुहि, कहौ भलैं या ठांहि॥ २०॥
धर्म मांननौ दंभ नहिं, करनौं दैनौं दान॥
द्विज सेवा द्रव्य संचनौं, बिनु संतोष सुजांन॥ २१॥
वैस्यन कै स्वभाव अै, तोसौ कहै सुनाय॥
इन्ह स्वभाव जुत हौहि सौ, वैस्य प्रवीन कहाय॥ २२॥
सुर द्विज गायन की करै, सेवा दै हित पौष॥
तिन्ह मैं तै पावै जु कछु, तामैं करै संतौष॥ २३॥
चोरी कलह अपवित्रता, झूठ बोलनै बैंन॥
कांम क्रोध तृस्ना अवर काहू कौ मांनैंन॥ २४॥
सूद्रन कै स्वभाव अैं, कहियतु है जग मांहि॥
सत्य बोलै रु सबन सौं, हित राषै हिय मांहि॥ २५॥
अै सब नर स्वाभाव कै, कहियतु धर्म सुढार॥
अरु नीच कर्म करत सौ, है पसु बिच संसार॥ २६॥
उपजै पाछै जनेऊ, लैत सुबिप्र जिहँ वार॥
जनम हौत है दूसरौ, ब्रह्मचैर्य निरधार॥ २७॥
तब इहि निज गुर की करै, सेवा भलैं प्रकार॥
जो गुर आग्या दैय तौ, वेद पढै सुषसार॥ २८॥
जटा जनेऊ कमंडल, दंड रु माल रुद्राछ॥
बस्त्र भगौहे चर्म अंग, अरु मेषला सुताछ॥ २९॥
इन्हकौं धारन करै पुनि, दर्भ ही राषै हाथ॥
दांत बउत धावै नांहि, करि मंजन इक साथ॥ ३०॥
संझ्या भोजन हौम कै, समै समै जप स्नांन॥
मल मूत्रहूं त्यागन समै, राषै मौन निदांन॥ ३१॥
करै त्याग नहिं वीर्य कौ, अरु जो कबहूं हौय॥
तौ करि प्रानायांम जप, करै गायत्री गौय॥ ३२॥
नष निज हाथ रु पाव कै, कितक ठौर कै कैस॥
दूरि करै कबहूं नांहि, बिच ब्रह्मचर्यहिं भैस॥ ३३॥
अग्नि अर्क वैस्नव रु गुर, बिप्र देवता गाय॥
इन्ह सबकी सेवा करै, आछै चित्त लगाय॥ ३४॥

अरु गुर कौ मो रूप करि, जांनै निज चित मांहि॥
और मनुष्य सम मनुष्य करि, मांनै कबहूं नांहि॥ ३५॥
सांझ प्रात जो मांगि कै, भिछा लावै जु आप॥
करै निवेदन गुरहि सौ, करि सरधा अनमाप॥ ३६॥
जो गुर भौजन करन की, याकौ आग्यां दैय॥
तो आपहु भौजन करै, नहिं तो व्रत करि लैय॥ ३७॥
आसन सज्या सथांन कै, समैं प्रीति अनुसार॥
कर जौरै ठाढौ रहै, गुरहि पास निरधार॥ ३८॥
विषै भौग कौ त्यागि यौं, बसै सुगुर कुल ठांहि॥
विद्या पूर्न ह्वै जबहिं लौ, रहै चर्यब्रह्म मांहि॥ ३९॥
जो चाहै जायौ इहै, महर लौक कौ आपु॥
तौ निति रहि ब्रह्मचर्ज सौं, सेवै गुरहि सदापु॥ ४०॥
आप अग्नि गुर मांहि अरु, सब प्रांनिन कै मांहि॥
मुहि देषै राषै नांहि, भेद दिष्टि किहुँ ठांहि॥ ४१॥
तिय कौ सपरस बोलनौ, लषिवौ हास कटाछि॥
ब्रह्मचारी त्यागन करै, अैं बातैं सुभ साछि॥ ४२॥
साधै संध्या नम्रता, जप पवित्रता सनांन॥
तीरथ जात्रा आचमंन, आसन सुभग सथांन॥ ४३॥
नीचन सौं बोलै नांहि, कबहूं किहूं प्रकार॥
उद्धव सब आश्रमन कौ, है इहि धर्म सुढार॥ ४४॥
सबही प्रांनिन कै विषै, देषै मोहि सदाय॥
मन सरीर वांनी सहित, वसि राषै उमगाय॥ ४५॥
ब्रह्मचर्य या भांति सौं, राषै भलै प्रकार॥
तौ ब्राह्मन कौ अग्नि सम, तेज बढै अनपार॥ ४६॥
तीरथ व्रत तप भक्ति मो, करि दै कर्म जलाय॥
तौ दैहिं गुर कौ दछिनां, गुर की आग्यां पाय॥ ४७॥
ग्रहस्थाश्रम आछै करै, निज ईछा अनुसार॥
वै मोकौ भूलै नांहि, तौ लहै भक्ति सुढार॥ ४८॥
कै तौ ग्रहस्थाश्रमहु करि, वानप्रस्थ नर हौय॥
कै लेकै संन्यास मन, प्रभु मैं राषै गौय॥ ४९॥
अै क्रम सौं आछै बसै, सकल आश्रमन मांहि॥
कार्ज अन्यथा नहिं करै, चित्त विषै जग ठांहि॥ ५०॥
जो ग्रहस्थाश्रम करन की, याकौं उपजै चांहि॥
तौ निजकुल सम धी वयस, तिय सौ करै विवांहि॥ ५१॥

वेदहि पढन पढावनौ, दैनौं लैनौं दांन॥
करनौं हौम करावनौं, जिग्य भलैं उनमांन॥५२॥
इहि ब्राह्मन कौ धरम प्रति, ग्रहं कौ जांनै यांहि॥
मैटन तप जस तेज तौ, करै धर्म यहु नांहि॥५३॥
और दोय आजीवका, है सौ करै सुभाय॥
विषै भोग कै करन कौ, विप्र जनम नाहि पाय॥५४॥
विप्र करै याहि लोक मैं, तपस्यां भलै प्रकार॥
तौ पावै परलोक मैं, मुक्ति सुपरम सुढार॥५५॥
अंन पर्यौ ह्वै षैत मैं, कै बिच पर्यौ बजार॥
सौ चुनि लावै चित धरै, अति संतोष सुढार॥५६॥
सावधांन निज धर्म मैं, सदा रहै निरधार॥
अरु मो मैं चित आपनौं, लावै भलै प्रकार॥५७॥
घर मैं रहै यकांत बहु, ठौर न ह्वै आसक्त॥
सांत दांत ब्राह्मन तबै, हौहि रहै बिच जक्त॥५८॥
ब्राह्मन म्हैरौ भक्त जो, दुष पावत ह्वै कौय॥
तिहँ दुष मेटै जास दुष, हूं म्हैं हूं पछ हौय॥५९॥
धीर पुरस नृप आपनौं, आपही दुष मिटाय॥
पित समांन निज प्रजा कौ, सब दुष दैहि नसाय॥६०॥
जइसै किहुँ गज और कौ, भय प्रापति ह्वै आय॥
तब भय दुष गज आपनौं, आपहि देत मिटाय॥६१॥
या प्रकार कौ नृपति अघ, मैटि विमांन सवार॥
इंद्र लोक मैं जाय कैं, लहै आनंद अपार॥६२॥
ब्राहमन मैं संकट जबै, परै कबहुँ जो आय॥
तब वृत्ति छत्री वैस्य की, करै भलैं अनुभाय॥६३॥
नीचन की नांहिंन करै, सेवा कबहुँ निदांन॥
नीचन की सेवा किये, तैज न रहै ठिकांन॥६४॥
नृपति आदिक छत्रीन कौ, जब कछु संकट हौय॥
तब अपनीं आजीवका, करै तरह इक दौय॥६५॥
कैं सिकार सौ वैस्य द्विज, इन्ह व्रति सौं सुष पाय॥
साधै निज आजीविका, नीच न ढिंग नहिं जाय॥६६॥
अरु जो संकट वैस्य मैं, परहीं कबहूं आय॥
तो साधै आजीवका, सूद्रन व्रति अनुभाय॥६७॥
अरु जो संकट सूद्र मैं, कबहूं परै अगाधि॥
तौ बनाय कै चटापी, आजिवका लै साधि॥६८॥

इहै बडन कौ धर्म है, ताहि करै जुत चांहि॥
अरु संकट नहिं हौहि तौ, करै और व्रत नांहि॥ ६९ ॥
वेद पढै सुर पितर कौ, जजन करै ज्यौं रीति॥
सबहीं प्रांनिन मैं लषै, म्हैरो रूप अभीति॥ ७० ॥
द्विज कौ अंन ह्वै प्राप्त सौ, लै दुषी भृत्यन दैय॥
जिग्य कबहुं नांहिंन करै, समझि धरम कौ भैय॥ ७१ ॥
ह्वै आसक्त न कुटंब मैं, अरु नहिं करै प्रमाद॥
स्वर्ग आदि संसार कौ, जांन अनीति विषाद॥ ७२ ॥
तिय सुत भाई बंधु कौ, मिलनौं बिच संसार॥
राहगीर सम ताहि इहि, जांनै निति निरधार॥ ७३ ॥
पाछै अपनीं देह कै, संग चलत कोउ नांहि॥
जइसै जागै तै सुपन, क्यूं हूं नहिं ठहरांहि॥ ७४ ॥
रहै अतिथि सम ग्रेह मैं, बंधै नहि ग्रह मांहि॥
अहंता ममता नहिं करै, कबहूं निज चित ठांहि॥ ७५ ॥
ग्रहस्थाश्रम कै कर्म करि, मुहि सेवै जुत प्रीति॥
कै तौ रहै ग्रहस्थ ही, निश्चै आछी रीति॥ ७६ ॥
अरु कै वान प्रहस्थ ह्वै, कै लैं हीं संन्यास॥
म्हैरै आश्रय रहै तौ, बंधै न बिच जग फास॥ ७७ ॥
जाकी सुत धन ग्रेह मैं, लगी रहत है आस॥
अस्त्री कै आधीन ह्वै, चित मूरषता भास॥ ७८ ॥
सूम हौहिं अरु जास चित, अहंता ममता हौय॥
सौ जग मांहि बंधत है, और बंधत नहिं कौय॥ ७९ ॥
मात पिता मो व्रध है, तिह्नैं तजौं किहुँ भाय॥
सुत नाती असमर्थ है, तिया तरुन अधिकाय॥ ८० ॥
तिन्हहूं कौ कइसै अबै, तजै नांहिनैं जात॥
वै अनाथ ह्वै मो बिनां, जीवैंगे किहुँ भांत॥ ८१ ॥
यौं ग्रहस्थाश्रम मैं विकल, रहै मूर्ष नर आपु॥
ध्यांन कुटंब कौ करत मरि, नर्कहि जाय सपापु॥ ८२ ॥

(इहि श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते सप्तदसोऽध्यायः ॥ १७ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अष्टदसोऽध्यायः ॥

(वानप्रस्थ और संन्यासी के धर्म)

॥ श्री भगवानुवाच ॥

दोहा - बोलै श्री भगवान अब, वानप्रस्थ कौ धर्म॥
उद्धव हम्ह तुम्ह सौं कहत, समझि लैहुँ सब मर्म॥ १ ॥
ऊपरि पचास तै जबै, नर वय ह्वै जिहँ वार॥
वानप्रस्थ ह्वै छौडि ग्रह, जांनि तुछ संसार॥ २ ॥
अरु अस्त्री कौ जाय धरि, निज पुत्रननि के पास॥
नहिं तौ अपनैं संग लै, करै भलैं बनवास॥ ३ ॥
ह्वै पचैहतरि वरष की, निज आर्बल जबतांय॥
बन बसहीं मुद मांनि कै, कंदमूल फल षांय॥ ४ ॥
त्रन बलकल मृग चर्म अरु, पातनि पहरै चांहि॥
कहुँ कै कच दूर न करै, दांतुन करहीं नांहि॥ ५ ॥
अंग न धोवै अरु करै, जल मैं स्नांन तृकाल॥
सोय रहै पुनि भूमि मैं, आयै नींद बिसाल॥ ६ ॥
ग्रीषम मैं पंचागन सौं, तापै सहित उमाह॥
अरु बरिषा रितु के समैं, सहिरहि मेह अथाह॥ ७ ॥
कंठहि लौं रितु सीत मैं, पैठि रहै जल मांहि॥
भूंजि अग्नि मैं अंन कै, काचौ ही भषि जांहि॥ ८ ॥
ह्वैन दांत मुष मांहि जो, कूटि पथर सौ लैय॥
दांत हौय तौ चाबि कै, षाय छुधा कै भैय॥ ९ ॥
बन कौ अंन सु आपुही, ल्यावै भौजन काज॥
भषै ताहि संतोष गहि, और न करै इलाज॥ १० ॥
देस काल कौ जांनि बल, जो कौ ल्यावै और॥
ता अंनहि लै नांहिनैं, आपु सुकाहू तौर॥ ११ ॥
करै अग्नि हौत्रादिहूं, बन कै अंनहि ल्याय॥
वानप्रस्थ जिग्य न करै, जीव हिंसा अनुभाय॥ १२ ॥
पूर्नमास चत्रुमास अरु, अग्निहौत्र जिग्य यैह॥
करै भली बिधि बेद नै, आग्यां बैहि करैह॥ १३ ॥
अैसै तपस्या कियै तैं, देहमहा लटि जाय॥
धरै रहै निज हृदै मैं, म्हेरौ ध्यांन सदाय॥ १४ ॥
तब सब लौकन मध्य ह्वै, मो कौ प्रापति हौय॥
तामैं काहू भांति सौं, है संदेह न कौय॥ १५ ॥
तपस्यां दाता मुक्ति की, बउत कष्ट सू साधि॥

फेरि धरै चित कामनां, सो मूरष बुधि बाधि॥ १६॥
ब्रध अवसथा सौ जबै, कांपन लागै अंग॥
साध सकै नहिं आपनौं, धर्महु आछै वंग॥ १७॥
चित विचार इहि अग्नि कौ, करै आपु मैं नांहि॥
धीरज धरि प्रवेस नर, करै अग्नि कै मांहि॥ १८॥
जो स्वर्गादिकन नर्क सम, जांनि ग्रहै बैराग॥
तौ संन्यास आश्रम गहि, करि पावक कौ त्याग॥ १९॥
सौ बिधि अब संन्यास की, हूं तुहि कहूं सुनाय॥
आछै करि म्हेरौ जजन, अपनौं चित्त लगाय॥ २०॥
दैय हौमकर्ता द्विजनि, निज सर्वस निरधार॥
मन सौं आनै प्रांन मैं, राषै अग्नि सुढार॥ २१॥
सब ईछा कौ त्याग करि, ह्वै संन्यासी आप॥
सकल धर्म संन्यास कौ, राषै भलै सथाप॥ २२॥
ब्राह्मन लै संन्यास जब, याकै घर बिच बैठि॥
बिघन करत है देवता, तिय पुत्रननि मैं पैठि॥ २३॥
हम्हहिं लांघि इहि जायगौ, सबतैं ऊंचै लोक॥
सुर इहि जांनि करै बिघन, अपनैं मन गहि सोक॥ २४॥
बस्त्र संन्यासी धरै तौ, इतनैं ही उनमांन॥
जांसौ ठौर कुपीन की, ढांपी जाय निदांन॥ २५॥
जो तन हौय निरोग तौ, धरै और पट नांहि॥
रोगी ह्वै तौ औरहूं, धरै वस्त्र तन ठांहि॥ २६॥
धारै दंड कमंडल रु, पांनी पीवै छांनि॥
दैषि दैषि कै दिष्टि सौं, पांव धरै भुव थांनि॥ २७॥
सत्य वचन बोलै करै, कर्म जु पवित्र सुढार॥
मौन क्रियांन करै करै, प्रानायाम विचार॥ २८॥
इहि मन वचन सरीर कौ, प्रगट दंड निरधार॥
दारु दंड धारै न ह्वै, संन्यासी मन मार॥ २९॥
वानप्रस्थ चव बरन मैं, भिष्या ल्यावै मांगि॥
उन्हहूं मैं उत्तम नहिं ह्वै, तिन्हकौ देवै त्यागि॥ ३०॥
ताही मैं संतोष करि, रहै भलै अनुभाय॥
जल तट जाय सिनांन करि, मौंन साधि उहिं वार॥ ३१॥
जल मैं अंन डबौय लै, हौन जु पवित्र सुढार॥
कितक जीव जंतन लियै, कछुक अंन दै डार॥ ३२॥
हौंहि जितेंद्री किहूं कौ, संग करै कहूं नांहि॥
निरभय ह्वै कै अकेलौ, फिरै सुप्रथवी ठांहि॥ ३३॥

आत्मा सौं क्रीडा करै, देषै आत्म उदार॥
आत्माही सौं प्रीत निज, लावै भलै प्रकार॥ ३४॥
निर्भै सथल अैकांत कहुं, दैषि करै निज वास॥
वासौं अपनीं प्रीति थिर, राषै सहित हुलास॥ ३५॥
चित्त उज्जल राषै सदा, तजिहिं मलिन विबहार॥
भेद आप अरु ब्रह्म मैं, नहिं राषै निरधार॥ ३६॥
आपहि बंधन हौय नहिं, अैसौ करै बिचार॥
जांनत रहै कि ग्यांन करि, हौत मुक्ति सुषसार॥ ३७॥
इंद्री चंचल कियै तैं, बंधन प्रापति हौय॥
इंद्रिन कौ संजम कियै, लहत मुक्ति दुष षौय॥ ३८॥
तातैं षट इंद्रीन कौ, निज वस करि दृढ भाय॥
त्यागन करि कै कामनां, ह्वै विरक्त जुत चाय॥ ३९॥
तब सुष आत्म सरूप कौ, पावै भलै प्रकार॥
जाय आपुहि भिछा निमत, नगर ग्राम मंझार॥ ४०॥
पर्वत देस पवित्र बन, सुभग नदी इन्ह ठौर॥
बसै आप आनंद सौं, मो कौ भजै सुतौर॥ ४१॥
वांनप्रस्थ ही बसत हैं, सदा सुवन के मांहि॥
तिन्ह पै भिछा मांगिहुं कै, ल्यावै भषै सदांहि॥ ४२॥
जास सिला कै अंन तैं, दूर हौत है मोह॥
महाग्यांन प्रगटै हृदै, सब सौं रहै अछोह॥ ४३॥
सांचौ या संसार कौ, कबहूं जांनै नांहि॥
समैंपाय ह्वै जात है, याकौ नास सदांहि॥ ४४॥
या लोक रु परलोक की, ईछा मैं किहुँ वार॥
हौहि नांहि आसक्त सब, झूठौ लषि विवहार॥ ४५॥
अहंता ममता कौ तजै, सपनैं सम सब जांनि॥
आत्म विचार करै इहै, जग माया मय मांनि॥ ४६॥
ग्यांनी विरक्त भक्त मो, तिहुँ आश्रम छुटिकाय॥
विधि निषैद कौ छौडि कै, जहँ चाहै तहँ जाय॥ ४७॥
है पंडित मो भक्त पैं, क्रीडै बाल समांन॥
ह्वै प्रवीन अैंपरि फिरै, जड सम हौय निदांन॥ ४८॥
अति ग्याता है पै वचन , बोलै बौंर समांन॥
सावधांन जांनै नांहि, कोउ नर बिच जहांन॥ ४९॥
वेद अर्थ जांनै सबै, पै न गहै कछु नेम॥
मन मैं आवै सो करै, राषि प्रभू सू प्रेम॥ ५०॥

अरु निगमन कौ किहूं सौं, नहिंन विवादन चाहि॥
हेत न पूछै वेद मैं, ह्वै पाषंडी नांहि॥५१॥
झूठे वाद विवाद मैं, किहुँ की पछि नहिं लैय॥
किहुँ सुदुष आप नहिं लहै, आप किहुं न दुषदैय॥५२॥
आपुहि कोउ बुरौ कहै, तौ सहि रहै सधीर॥
अवग्यां किहुँ की नहिं करै, हौत न किहुँ बेपीर॥५३॥
जिन्ह सरीर कै काज कौ, हौय पसू कै तौर॥
बैर किहूं सू नहिं करै, लषि आत्मा सब ठौर॥५४॥
भोजन कौ किहुं उंवार ह्वै, तौ दुष पावै नांहि॥
भोजन पायै हर्ष नहिं, करै इछा प्रभु चांहि॥५५॥
चहै सदा अहार इतौ, जासौं ठहरै प्रांन॥
ठहरै प्रांन सुकरि सकै, आछै तत्त्व विग्यांन॥५६॥
कीनै तत्त्व बिचार कै, पावत मुक्ति सुढार॥
प्रांन धारनां कै लियै, तातै करै अहार॥५७॥
बुरौ भलौ भोजन मिलै, जु कछु सहज मैं आय॥
सोइ षाय निज देह कौ, करै निर्बाह सुभाय॥५८॥
बस्त्र पहरबै कौ अवर, सोवन काज सथांन॥
मिलै सहज मैं आय तौ, लै बिनु चाह सुजांन॥५९॥
जांनि वेद कौ वचन इहि, सौच आचमन स्नांन॥
ईछा ह्वै तो करै पुनि, नेम न धरै निदांन॥६०॥
अरु जइसै म्हैं करतहूं, ईस्वर नेम विधांन॥
तइसै जगहि सिषायबै, करै भलै उनमांन॥६१॥
वांकै म्हैरी क्रिपा करि, भेद दिष्टि ह्वै दूर॥
सो म्हैरौ हू रूप है, हेर फेर नहिं मूर॥६२॥
मो सौं भासत जुदौ सो, जबलौं वांकै देह॥
तन छूटै मो मैं मिलै, ह्वै सरूप मो नेह॥६३॥
विषै महा दुष रूप है, तिन्हतैं किहुँ चितमांहि॥
उपज्यौ ह्वै बैराग मो, धर्महिं जांनै नांहि॥६४॥
तो निज गुर पैं जायकै, लै उपदेस सुभेव॥
गुर कौ ईस्वर जांनि कै, करै भली विधि सेव॥६५॥
समझि चुकै मो धर्म जब, फिरै अकेलौ आपु॥
तुछ जांनि संसार चित्त, मो मैं दैहि सथापु॥६६॥
छह इंद्री जीती न जिन, वसि इंद्रिन कै हौय॥
ताकै चित बैराग अरु, ग्यांन न उपजै कौय॥६७॥

जो नर लैहि संन्यास सौ, संन्यासी है नांहि॥
सुरनि जियहिं मुहि जास चित, दगा दैंन की चांहि॥ ६८ ॥
वांके मन कै जात नहिं, मैल कबहुँ बिनसाय॥
याकौ करु परलौक तै, चहै नष्ट ह्वै जाय॥ ६९ ॥
बस करनौं इंद्रीन कौ, जीव बध्य करनौंन॥
तप करनौं संन्यास कै, अै है धर्म सुठौंन॥ ७० ॥
ब्रह्मचारी साधै भलै, गुर सेवा चित लाय॥
रिछया सब प्रांनीन की, करै दया अनुभाय॥ ७१ ॥
जिग्य करै ब्रह्मचर्ज गहि, अरु राषै संतोष॥
कबहूं काहू बात तैं, किहुँ धारै नहिं रोष॥ ७२ ॥
मास मास ब्रह्मचर्ज सौं, रहै ग्रहस्थ सुजांन॥
वांनप्रस्थ तपस्यां करै, वेद रीत उनमांन॥ ७३ ॥
अैसी भांत सुधर्म करि, मोहि भजै जुत चाय॥
सब ठां देषै भाव मो, तो हरि भक्तिहिं पाय॥ ७४ ॥
उतपति पालन प्रलैं कौ, कर्ता सबकौ ईस्व॥
म्हैं हूं तिहूं प्रापत करि, भक्ति सु बिसवाबीस॥ ७५ ॥
म्हैरी गति जांनै भलै, बोलै सांचै बैंन॥
राषै सदा सुधर्म मैं, अपनौं चित्त सुषैंन॥ ७६ ॥
हौहि ग्यांन विग्यांन अरु, हौहि बिरक्त सुढार॥
सो मोकौ निरधार करि, मिलै भलैं अनुसार॥ ७७ ॥
बरनाश्रम वारैंन कै, कहियतु है अै धर्म॥
अैक भक्ति सौं भक्त सौ, पावत मुक्ति सुपर्म॥ ७८ ॥
उद्धव तुम्ह पूंछै हम्हहिं, बर्नाश्रम कै धर्म॥
कहै सुहम्ह जिन्ह तैं मिलै, मो सौं तजि जग भर्म॥ ७९ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते अष्टादसोऽध्यायः ॥ १८ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अैकोविंसोऽध्यायः ॥

(भक्ति, ज्ञान और यम-नियमादि साधनों का वर्णन)

॥ श्री भगवानुवाच॥

दोहा - बोलै श्री भगवान फिरि, उद्धव सौं यौं बैंन॥
आत्मा कौ जाकौ हृदै, अनभव हौहि सुषैंन॥ १ ॥

माया मात्र सु जांनि जग, देय ग्यांन हूं त्यागि॥
मग्न हौहि मो प्रीत मैं, मोहि सौं रहै पागि॥ २॥
सब साधन कौ फल सुभग, म्हैं ही हूं निरधार॥
अति प्रिय ग्यांनी जनन कौ, म्है हूं सदा सुढार॥ ३॥
ग्यांनी अपनैं हिदैं मैं, मोकौ राषत चांहि॥
अरु मोहू कौ प्रिय महा, है ग्यांनी जग मांहि॥ ४॥
सहित ग्यांन विग्यांन जे, है कौ या जग ठांम॥
तै पहचांनत है भलै, मो सरूप अभिरांम॥ ५॥
तप तीरथ जप दांन जुत, जे है बस्त्र पवित्र॥
अै अैसी सिधि करि सकत, नांहिंन काहू तंत्र॥ ६॥
रु जइसी सिधि सु हौत है, ग्यांन कला अनुसार॥
तातैं ग्यांन प्रभाव करि, आत्महि जांनि सुढार॥ ७॥
हौहि ग्यांन वा ग्यांन जुत, करि मो भक्ति सुभाय॥
मो सेवन आछै करै, अपनौं चित्त लगाय॥ ८॥
करिकै ग्यांन विग्यांन जगि, अरु करि म्हैरी सैव॥
सर्व जग्य पति म्हैं सु तिहि, प्रापति हौत मुनैव॥ ९॥
इहि तन त्रिविधि विकार जुत, आदि अंत कै मांहि॥
झूठौ है निरधार करि, सांचौ कबहूं नांहि॥ १०॥
आदि अंत मैं रहत है, सोई सत्य निदांनि॥
आदि अंत मैं सत्य नहिं, सोइ झूठ पहिचांनि॥ ११॥

॥ उद्धव उवाच॥

फिरि उद्धव बोलै कि है, बडौ सुभ जु निरधार॥
ग्यांन विग्यांन बिराग जुत, भगति जोग सुषसार॥ १२॥
जाकौ ढूंढत साध जन, निसदिन चित्त लगाय॥
सो मुहि है बिस्व रूप तुम्ह, आछै कहौ सुनाय॥ १३॥
तीन ताप करि तप्त म्हैं, बीच घोर संसार॥
मुक्ति दैंन दुषहरन तुम्ह, पदहूं गनत सुढार॥ १४॥
काल सरूपी सर्प है, जाकौ बिल है जक्त॥
जिन्ह मुहि काट्यौ ता लियै, तुछ सुष मैं आसक्त॥ १५॥
तातैं मो उद्धार अब, कीजै हे करतार॥
सींचि सुधा सम बचन सौं, मैटहुँ दुष अनपार॥ १६॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

प्रभु बोलै बंधून सौं, जुध करि भारत मांहि॥
बंधुनि हति नृप धर्म सुत, अति दुष किय चित ठांहि॥ १७॥
तबै जाय कुरषैत मधि, भीष्म पितामहि पास॥

नृपति जुधिष्टिर धर्म बहु, पूछै सहित हुलास॥ १८॥
मोष्ष धर्म पूछै बहुरि, पूछि धर्म सब और॥
तब हम्ह भीषम मुष सुनै, मोष्ष धर्म सुभ तौर॥ १९॥
सौ म्हैं तौसौं कहत हौं, सुनि उद्धव बुधिवांन॥
भगति ग्यांन बैराग जुत, है इहि धर्म निदांन॥ २०॥
महतत्त्व ग्यारह इंद्री, प्रकृति पुरष अहंकार॥
पंचभूत महा तीन गुन, इन्ह तत्त्वनि अनुसार॥ २१॥
है सबकौ तन ता मांहीं, व्यापक आत्म उदार॥
यौं जांनै जाकौ कहत, ग्यांन नांम निरधार॥ २२॥
उतपति पालन प्रलै जुत, अै तत्त्व जांनै नांहि॥
इक आत्मा सब ठां लषै, सौ बिग्यांन कहांहि॥ २३॥
आदि अंत मधि रहत है, जामैं इहि संसार॥
फिरि जानैं है लीन सौ, म्हैं हूं सबही वार॥ २४॥
श्रुति प्रतछ सब मैं प्रसध्य, उनमांनहिं जुत च्यार॥
अैं प्रमानहिं कहियत प्रगट, समझहु बुद्धि उदार॥ २५॥
इन्हहिं प्रमानन तैं सदा, न्यारौ है मो रूप॥
तजि संकल्प विकल्प कौ, सौ तू दैषि अनूप॥ २६॥
ब्रह्म लोक लौं लोक जे, निरभै आछै नांहि॥
ते कर्मनि सौ हौत है, प्रांनिन कौ जग ठांहि॥ २७॥
इहां कै सै सुषहि उहां, बिनु देषै लै जांनि॥
इहां उहां दुहु ठौर कै, थिर सुष नांहि निदांनि॥ २८॥
भक्ति जोग तो म्हैं तु ही, पहलहिं कहै सुनाय॥
अब फिरि कारन भक्ति कौ, तोसौ कहू जताय॥ २९॥
म्हैरी कथा रु कीरतन, करि श्रृधा अधिकाय॥
राषै पूजा करन मैं, निष्ठा भलैं प्रभाय॥ ३०॥
अस्तुति करै म्हैरी भलै, जोरि दुहू निज हाथ॥
नमसकार अष्टांगहि मुहि, करै नवाय सुमाथ॥ ३१॥
अरु म्हैरी सेवा करै, आदर सौं जुत चाय॥
पूजै म्हैरै बैस्नवनि, मोही तैं अधिकाय॥ ३२॥
कार्ज करै सब मो निमत, मोहि लषै सब ठांम॥
मो मैं मन लावै कहै, मो गुन तजि सब कांम॥ ३३॥
सकल भोग सुष कौ करै, म्हैरै लीनै त्याग॥
जिग्य दान तपस्या करै, मो अर्थ सु बड भाग॥ ३४॥
इन्ह साधनि सौं भक्ति मो, प्रगट हौहि हिय मांहि॥
तब वा जनकौं जगत बिच, कछु दुरलभ है नांहि॥ ३५॥

चित लावै मो मांहि जब, धर्म ग्यांन बैराग॥
आपहि तैं सब ह्वै रहै, छूट कलेस अथाग॥ ३६॥
जो या झूठै जगत मैं, मन दौरै ललचाय॥
ताहि रजोगुन जांनियै, निश्चै करि ठहराय॥ ३७॥
अरु जो चित ह्वै नष्ट तो, लैहुँ तमोगुन जांनि॥
आत्मा कौ सब ठां लषै, है इहि ग्यांन निदांनि॥ ३८॥
भक्ति करै म्हैरी सोइ, कहियत धर्म सुढार॥
अरु अनिमादिक सिद्धिही, है ईस्वर्ज प्रकार॥ ३९॥
हौहिं नांहि आसक्त जो, माया कै गुन मांहि॥
सौ बैराग कहावही, समझ लैहुँ हिय ठांहि॥ ४०॥
उद्धव बोलै यम नियम, सम दम धीरज दांन॥
सहि रहनौं तप पराक्रम, बचन सत्य उनमांन॥ ४१॥
इष्ट जग्य धन लाभ बल, दया दछिनां रु त्याग॥
सुष दुष बंधु बल लछमी, लाज बिद्या ग्रह जाग॥ ४२॥
पंडित लौभी मूर्ष नर, दारिद्री रु धनवांन॥
ईस्वर मार्ग कुमार्ग पुनि, सुवर्ग नर्क कै थांन॥ ४३॥
उन्ह सबहिन कौ रूप मुहि, कहियै हे भगवांन॥
अरु उलटैहुँ भेद कहूं, इन्हकैं भल उनमांन॥ ४४॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

बोलै श्री भगवांन बध, जीवनि करनौं नांहि॥
ईस्वर कौ मांनै रहै, ब्रह्मचर्ज कै मांहि॥ ४५॥
संग्रह कछु नांहिन करै, बोलै सांचै बैंन॥
करै न चोरी अर किहूं, संग न करै सुषैंन॥ ४६॥
तीर्थ करि रहै मौंन सौं, चित राषै थिरताय॥
निरभै रहै षिमां गहै, जप तप करै सुभाय॥ ४७॥
हौम करै राषै श्रद्धा, करै परायौ काज॥
रहै पवित्र सेवै गुरहि, धारै मन मैं लाज॥ ४८॥
म्हैरी करै रु अतिथि की, पूजा भलै सुभाय॥
साधै जम अरु नेम जौ, म्हैं तुहि कहै नाय॥ ४९॥
अैं सब आछी भांत सौं, करै रीत अनुभाय॥
तो मनोर्थ सब भांत करि, पूरन हौहि सदाय॥ ५०॥
बुधि राषै म्हैरै विषै, इहि सम भेद कहाय॥
वसि करनौं इंद्रीन कौ, सौ दम नांम गनाय॥ ५१॥
लघु दीरघ दुष सहि रहै, याही तितिछा जांनि॥
काम जिह्वा कौ जीतनौं, सोइ नांम धृति मांनि॥ ५२॥

किहुँ कौ दुष दैनौं नांहि, इहि कहियत है दांनि॥
करै काम कौ त्याग नर, सौ तपस्या उनमांनि॥ ५३॥
जीतै निज स्वाभाव कौ, इही सूरता सार॥
समदरसी सब ठौर ह्वै, सोही सत्य प्रकार॥ ५४॥
भलौ बचन बोलै सोइ, कहियतु रीति सुढार॥
करै संग किहुँ कौ नांहि, इही कर्म विवहार॥ ५५॥
त्याग कहत है जोग कौ, धर्म सुहै धन इष्ट॥
करै ग्यांन उपदेस सौ, है दछिनां संदृष्ट॥ ५६॥
म्हेरौ रूप सु जिग्य है, बल है प्रानायांम॥
अरु म्हैरी प्रेमाभगति, जांनि लाभ अभिरांम॥ ५७॥
भेद न देषै इहि विद्या, भाग सु मो ईस्वर्ज॥
हौहि ग्लानि द्रुष्कर्म मैं, सोही कहियतु लर्ज॥ ५८॥
कछू बस्त चाहै नांहि, सोइ रमा अधिकार॥
त्यागै सुष दुष जगत कै, इहही सुष अनपार॥ ५९॥
ईछा कांम सुष की सौ, जानहुँ दुष निरधार॥
बंध मोष जांनै सु है, पंडित पर्म उदार॥ ६०॥
अपनीं जांनै देह कौ, सौ मूरष अग्यांन॥
गुरही अपनौं बंधु है, देह सुग्रेह सथांन॥ ६१॥
सत्त्व गुन उदै सु स्वर्ग है, मारग बेदहिं जांन॥
मन चंचल करनौं इही, समझि कुमार्ग निदांन॥ ६२॥
बढै तमोगुन है सोइ, महानर्क दुषदाय॥
ह्वै कोउ गुनवंत सोइ, द्रव्यवंत अधिकाय॥ ६३॥
जाकै नांहि संतोष सो, द्रारिद्री पहचांनि॥
इंद्री वसि नांहिन करै, सोइ कृपन नर मांनि॥ ६४॥
जो माया कै गुनन मैं, ह्वै आसक्त सुनांहि॥
सो ईस्वर निरधार करि, है या जगतहि ठांहि॥ ६५॥
हौहि रहै आसक्त जो, प्रकति गुनन कै मांहि॥
सौ ईस्वर है नांहिनै, समझि लैहु हिय ठांहि॥ ६६॥
हे उद्धव तौ प्रस्न कौ, हम्ह इहि उत्तर दीन॥
कहँ तांई गुन दोष कौ, बर्नन करौं प्रवीन॥ ६७॥
लषिबौ परगुन दोष कौ, इही दोष निरधार॥
नहि दैषत परदोष गुन, सो कहियतु गुन सार॥ ६८॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते अैकोनविंसोऽध्यायः ॥ १९ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

।। अथ विंसोऽध्यायः ।।

(ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग वर्णन)

।। उद्धव उवाच ।।

दोहा - उद्धव बोलै वेद मैं, विधि निषेध कहि दीन ।।
कारिज इहि करियै रु इहि, करियै नांहि कधीन ।। १ ।।
अैसी भांत सु वेद मैं, दिय गुन दोष बताय ।।
समझत तिन्हकैं भेद मैं, जे ग्यांनी अधिकाय ।। २ ।।
जे कोउ उत्तम वर्न है, नीच लोम अनुलोम ।।
द्रव्य देस वय काल पुनि, सुवर्ग नरक की भोम ।। ३ ।।
इन्ह सबहिंन कै वेद नैं, आछै कहै प्रकार ।।
सब सुर नर कै है प्रगट, वेद नेत्र निरधार ।। ४ ।।
साधन स्वर्गादिकहूं कौ, कह्यौ वेद कै मध्य ।।
तातैं गुन अरु दोषही, बेदहि कहै प्रसध्य ।। ५ ।।
कर्म करन कै समैं मैं, कितक कार्ज अनुभाय ।।
भेद दिष्टिहूं वेद नैं, निश्चै दई बताय ।। ६ ।।
अैसी बातैं बेद नैं, काहे कहीं जताय ।।
अरु इन्ह बातैंन कै किय, मुक्ति हौहि किहुँ भाय ।। ७ ।।
पुनि तुम्ह अैसौ कहत हौ, हे स्वामी करतार ।।
सब तजिकै इक मो सरन, आवहुं भलै प्रकार ।। ८ ।।
इन्ह बातन करि हौत है, भ्रम म्हैरै चित ठांम ।।
सौ मैटहुँ मो भ्रम इहै, बचन बोलि अभिरांम ।। ९ ।।

।। श्री भगवानुवाच ।।

प्रभु बोलै तोकौ दियै, हम्ह त्रय जोग बताय ।।
इन्हसौं हौत कृतार्थ सब, जीव भलै अनुभाय ।। १० ।।
कर्म जोग पुनि भक्ति है, ग्यांन जोग सुष सार ।।
अैं उपाय है मुक्ति कै, और न कछू विचार ।। ११ ।।
ग्यांन जोग बिरकतन कौ, दियौ बताय सुढार ।।
नहिं विराग जग तैं जिहैं, कर्म जोग कह्यौ सार ।। १२ ।।
पूर्न भाग हरि हौय जिहैं, रुचि मो गाथा मांहि ।।
नहिं विरक्त अरु आसक्त, मो बहु भ्रम जग नांहि ।। १३ ।।
जाहि बतायौ है भलै, भक्ति जोग सुषसार ।।

जाकै साधै तैं कछू, नहिं दुरलभ निरधार॥ १४॥
सावधांन निज धर्म मैं, हौहि कामनां नांहि॥
सौ नर कबहूं जाय नहिं, स्वर्ग नर्क की ठांहि॥ १५॥
वर्तमान या लौक मैं, सावधांन मधि धर्म॥
रहि तपाय जो ग्यांन कौ, प्रापति ह्वै तजि भर्म॥ १६॥
फिरि प्रापति मो भक्ति कौ, हौहि लहै आनंद॥
बहुरि भक्ति सौं अधिक कछु, कारज नांहि सुछंद॥ १७॥
स्वर्ग नर्क वारैंन कै, है नर तन की चाहि॥
मनुष जनम इहि मुक्ति कौ, कारन प्रगट सुआहि॥ १८॥
या लोक रु दिवलोक की, करै कामनां नांहि॥
अरु प्रमाद नहिं करै धरि, मनुष देह जग ठांहि॥ १९॥
अै है भेद जु मृत्यु इहि, समझि लैहि हिय ठांम॥
तो पावै निरधार करि, महामुक्ति सुषधांम॥ २०॥
इहि बिचार मन मैं करै, चंचल है नरदेह॥
अैंपरि करता है सही, कारिज बडै अछेह॥ २१॥
रहै अस जन ठौर जिहीं, ता ग्रह कौ तजि देय॥
तौ इहि जीव कल्यांन कौ, प्राप्त हौहि बिनु भेय॥ २२॥
निसदिन नर की आयु इहि, यौंही बिनसी जाय॥
इहि भय मांनि रु छौडि दै, असत संग दुषदाय॥ २३॥
ईछा काहू बस्त की, कबहूं राषै नांहि॥
सांत दांत कौ प्राप्त तौ, हौहि महा सुष पांहि॥ २४॥
नर तन सबकी आदि है, अरु दुरलभ अधिकाय॥
अैंपरि हरि की क्रिपा सौं, सुलभ लही है पाय॥ २५॥
इहि नर तनही नाव है, गुर षैवट सुषदाय॥
पवन सु म्हैरी प्रसंनता, जानहुँ आछै भाय॥ २६॥
इतनैं परहूं जो न इहि, तिरै सिंधु संसार॥
तौ अपनौं ही करत्त है, बुरौ बउत मति छार॥ २७॥
कर्मन सौं जु विरक्त ह्वै, लै इंद्रिन कौं जीति॥
तबै जोग करि अचल मन, मो मैं धरै सुरीति॥ २८॥
जो मन चंचल हौहि कै, मो मैं ठहरै नांहि॥
तौहू जतन अनैक करि, लावै मोही मांहि॥ २९॥

आछै जीत हौहीं जिन्ह, अपनैं इंद्रीजांन॥
सो मन गतिहूं और ठां, भांन न देहिं सुजांन॥ ३०॥
निज बुधि करिकैं सतगुनी, मन बसि करै सुभाय॥
मन वस करनौं है सोइ, दीरघ जोत कहाय॥ ३१॥
ज्यौं करि चंचल अस्व कौ, राजा भलै प्रकार॥
हरुवे हरुवे आपनैं, वसि करि लैय सवार॥ ३२॥
जइसै अपनैं मनहुं कौ, राजी करि बुधिवांन॥
निज वसि राषि लगाय दै, आत्मा मांहि निदांन॥ ३३॥
सांष्य सास्त्र कै भैदि कौ, करिकैं भलैं बिचार॥
तत्त्वनि उतपति प्रलै करि, अनित लषै निरधार॥ ३४॥
जासौं निजमन प्रसंन ह्वै, सकल स्नेह निरवारि॥
अरु मांनै संसार सत्य, हौत दुष्ष अनपारि॥ ३५॥
ह्वै उदास संसार तैं, जो विरक्त मन हौय॥
जानै आत्म सरूप कौ, चित आत्मा मधि गौय॥ ३६॥
जाकौ मन संसार कौ, जांनि अनित्य निदांन॥
छौडि देत है दुष्टता, आछै समझ सुग्यांन॥ ३७॥
जीव जोग अष्टांग करि, पुनि करि आत्म विचार॥
मो पूजा करि बहुरि मो, सरन गहै सुषसार॥ ३८॥
जो प्रमाद करिकै करै, जोगी करम अधर्म॥
तो समाधि करिकै भलै, मेटै वाहि अकर्म॥ ३९॥
निज निज मारग मैं रहै, गुन है सोइ सुढार॥
निज मग तजि मग और कौ, गहै सु अवगुन भार॥ ४०॥
कर्म जितै है तैं सबै, है असुद्ध निरधार॥
बैई किहुँ कौ गुन कहै, किहुँ कौ दोष प्रकार॥ ४१॥
है इन्ह सबही बात कौ, इहै प्रयोजन भैंव॥
त्याग सु सबही कर्म कौ, करै गहै मो सैंव॥ ४२॥
जाकै म्हैरी कथा मैं, सरधा उपजी हौय॥
ह्वै विरक्त सब कर्म सौं, भेद प्रकति कौ षौय॥ ४३॥
अरु सब जांनै कामनां, महा दुष्ष कौ रूप॥
अैंपरि छौड सकै नांहि, विषै भोग की चूप॥ ४४॥
तब सर्धा संजुक्त वहै, द्रिढ बुधि ह्वै कै आप॥

मोहि भजै भोगहूं करै, जांनै बुरे तथाप॥ ४५॥
भक्ति जोग करिकैं करै, म्हेरौ भजन सुभाय॥
तब म्हैं वाके हृदै मैं, आऊँ उमंग बढाय॥ ४६॥
अरु सब वाकी कामनां, नष्ट हौहि निरधार॥
हिय मैं गांठि अग्यांन की, सो षुलि जाय सुढार॥ ४७॥
तब संदेह मिटै सबै, अरु ह्वै कर्महूं छीन॥
मो दरसन तै सकल दुष, मिटि सुष हौय सुषीन॥ ४८॥
तातैं ह्वै मो भक्ति जुत, मो मैं जिहि मन लागि॥
अैसौ जोगी मुक्त है, बिनहुँ ग्यांन बैरागि॥ ४९॥
कर्म ग्यांन बैराग तप, धर्म योग इहि सार॥
इन्ह जुत सब सुभ कर्म करि, सुष पावत निरधार॥ ५०॥
म्हैं मो भक्तनि दैतहूं, महा मुक्ति सुषसार॥
अैंपरि म्हेरै भक्तन, चाहत कछु न अकार॥ ५१॥
म्हैं कछू चाहत नांहि सौ, दाता मुक्ति निदांन॥
तातै करै न कामनां, जु लहै भक्ति सुजांन॥ ५२॥
जें है म्हेरै भक्त जिन्हि, सम चित है सब ठांहि॥
आत्मा कौ जांनत जिह्नैं, बिधि निषेध कछु नांहि॥ ५३॥
म्हैं कहि मग निज प्राप्ति कै, तिह्नैं करत जैं कौय॥
तैं मो ब्रह्म सरूप कौ, निश्चै प्रापति हौय॥ ५४॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते विंसोऽध्यायः ॥ २० ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अैकविंसोऽध्यायः ॥

(गुण - दोष - व्यवस्था का स्वरूप और रहस्य)

॥ श्री भगवानुवाच॥

दोहा - प्रभु बोलै हम्ह कहै है, कर्म भक्ति अरु ग्यांन॥
अैं तीनौं मग छौडि कै, जे कौ मनुष अजांन॥ १॥

छुद्र विषयन कै सुषन मैं, है आसक्त जु आप॥
तौ संसार विषै सदा, करहीं परै कलाप॥ २॥
भक्ति ग्यांन अरु कर्म मैं, जो जइसी ह्वै जोग॥
ताकौ इक इक जुदै हम्ह, कारज कहै असोग॥ ३॥
याकौ तौ है नांम गुन, समझि लैहुँ मन मांहि॥
अबै दोष कौ भेद हम्ह, कहिकैं तुम्हहिं जतांहि॥ ४॥
अधिकारी नहिं हौहि जो, इन्ह मारग कै मांहि॥
ह्वै प्रवर्त्ति कै मारग मैं, सो ही दोष कहांहि॥ ५॥
निश्चै सकल पदार्थ तो, है समांन जग मध्य॥
अैंपरि सुधता असुधता, बतई वेद प्रसध्य॥ ६॥
फिरि बतयै गुन किहूं मैं, बतवयै अगुन दोष॥
बेद बचन कै भेद कौ, उद्धव समझि सुरोष॥ ७॥
धर्मवंत है जे तिन्हनि, हौंन धरम बढवार॥
अरु बिहार कैं निमत पुनि, तन निवहन निरधार॥ ८॥
बस्त्र समांनहुँ मांहि हम्ह, ठहरायै गुन दोस॥
बेद बचन इहि समझि कै, तजि दीजै अपसोस॥ ९॥
धरा अग्नि जल नभ पवन, पंचभूतन कै मांहि॥
बिधि तैं लै सब जियन कै, इकसै जिय तन आंहि॥ १०॥
निगम बतायै नांम बहु, तन इकसारन मध्य॥
चहू बर्न कै रूपहूं, न्यारै कहै प्रसध्य॥ ११॥
वर्नाश्रम कै धरम सुभ, दैन महा सुषसार॥
जीवन कै उधार कौ जु, कहै बेद निरधार॥ १२॥
देसकाल अरु द्विजन कै, गुन दोषहु कहि दीन॥
उन्हतैं छुटि कैं भक्ति मैं, लगै हौहि सुषलीन॥ १३॥
जामैं कारौ मृग न ह्वै, द्विज बैस्नुव ह्वै नांहि॥
देस किकट आदर न ह्वै, सो अपवित्रहिं कहांहि॥ १४॥
द्विज वैस्नव मृग सांम अरु, सबकौ आदर भाय॥
हौय देस जा मध्य सो, मग दुहु सुद्ध कहाय॥ १५॥
समैं बउत आछौ रु ह्वै, पर्वादि ता मधि जौय॥
जामैं यासौं दांन पुन, भलै बनि आव हौय॥ १६॥
सोही काल सु पवित्र है, निश्चैहुँ या जग मांहि॥
जांनत है पुन्यातमा, इही बात चित्त ठांहि॥ १७॥
अरु यामैं उहि काल मैं, बनैं न कछु पुन दांन॥
सूत कहै तिह काल मैं, सोइ अपवित्र सुजांन॥ १८॥

कोऊ बस्त तौ हौत है, जल सौं धोयै सुद्ध॥
मूत्र लगै तैं ह्वै असुध, सुनियै हे बड बुद्ध॥ १९॥
कोऊ बस्त द्विज कहे तौ, असुधहुँ सुध ह्वै जाय॥
अरु किहू बस्तहिं छौलियै, तबै ह्वै सुध सुभाय॥ २०॥
पुनि कोउ बस्त सु हौत है, सुद्ध काल अनुभाय॥
कोऊ बस्त सुध हौत है, भयै बउत अधिकाय॥ २१॥
जइसै जइसै हौत सुध, जो जो बस्त निदांन॥
सो न करै तो बस्त सब, असुध सु बीच जहांन॥ २२॥
असुध बस्त है असुध ही, जो समर्थता न हौय॥
अरु असुधहूं हौय सुद्ध, ह्वै असमर्थ जो कौय॥ २३॥
सूतक लाग्यौ हौहि तौ, बस्त पवित्रहू मांहि॥
निश्चै ह्वै जु अपवित्रही, समझि भेद चित ठांहि॥ २४॥
जो इहि ह्वै धनवंत तौ, असुध बस्त तजि दैय॥
निरधन ह्वै तौ बस्त सब, है पवित्र सुनी भैय॥ २५॥
देस अवसथा काल कैं, अनुसारहिं ह्वै पाप॥
अरु कीनै मो भक्ति कै, मिटै सकल संताप॥ २६॥
जीरन पट धनवंत कौ, असुध सेव प्रभु मांहि॥
अरु दारिद्री कौ पट बहि, कहियतु सुधहि सदांहि॥ २७॥
अंन काष्ट सउवर्न घ्रत, तेल सूत गजदंत॥
चर्म पात्र लौं आदि अै, जो ह्वै असुध अनंत॥ २८॥
तौ मृतका जल पवन अरु, अगनि काल अनुसार॥
महा सुद्ध ह्वै जात है, रहत न असुध प्रकार॥ २९॥
लगै बस्तू अपवित्र जोइ, बस्त्रादिकन कै मांहि॥
ताकी मिटै द्रुगंध सो, कीजे सुध ह्वै जांहि॥ ३०॥
अवस्था तपस्या अस्नांन रु, बीर्ज कर्म सिरधार॥
अरु म्हैरो सुमरन कियै, सुध ह्वै नर निरधार॥ ३१॥
सुधि जु मंत्र की हौत है, म्हैरो ग्यांन प्रभाय॥
कर्म समर्पन मुहि कियै, कर्मनि सुध प्रगटाय॥ ३२॥
देस काल द्रवि मंत्र अरु, करता मानुष कर्म॥
इन्ह करि उपजत धर्म सौ, न करै हौय अधर्म॥ ३३॥
कहुं गुनहूँ ह्वै दोष कहुँ, दोषहुँ गुन ह्वै जात॥
अग्यांनीन ही लगत है, अैं गुन दोष बिष्यात॥ ३४॥
पापी पाप करै तऊ, उन्हकौं कछु बिगरैंन॥
संग ग्रहस्थहुँन कौ कियै, उह्रैं दोष लागैंन॥ ३५॥
ग्रहस्थ संग अर्थ औरहूं, करै संन्यासी कौय॥

तौ वाकौ निरधार करि, दोस अगनित जु हौय॥ ३६॥
जहँ तैं याकौ मन षिचैं, तहँ तैं षैंचि सुलेय॥
बड्डौ धर्म इहि मनुष कौ, समझहुँ उद्धव भेय॥ ३७॥
सोक मोह भय कौं इही, धर्म करत रहै भंग॥
विषैंन मैं गुन बुद्धि ह्वै, तब उन्ह कर ही संग॥ ३८॥
वाहि संग तै हौत है, प्रगट काम उर आय॥
काम भयै तैं हौत है, क्रौध असंगति पाय॥ ३९॥
क्रौध हौंहि फिरि कलह सौ, मोह क्रौध सौं हौत॥
रु मोह तैं काज अकाज, की सुध नाहिं उदौत॥ ४०॥
सुधि बिनु काज अकाज कौ, रहत विवेक सुनांहि॥
बिनु विवेक ह्वै म्रतक सम, इहै मनुष जग मांहि॥ ४१॥
तब याकौ स्वारथ कछू, नांहिन सधै निदांन॥
रतन जनम इहि मनुष कौ, षौवत व्रथा अग्यांन॥ ४२॥
आपहि औरहि जानत न, मुहित विषै मैं होय॥
वृछ लुहार कैं चाम ह्वै, अग्यांनहिं उर गोय॥ ४३॥
कर्म मार्ग सौं बेद नै, दी है मुक्ति बताय॥
सो निवर्त्ति मग मांहि रुचि, उपजांवन अनुभाय॥ ४४॥
बालक कौ चाहै दियौ, ज्यौं वोषद बेस्वाद॥
तब पहलै यौं कहत तुहि, दै है लडवा ज्याद॥ ४५॥
जब बालक ह्वै कै प्रसंन, बहि वोषद पिय ज्याव॥
तब नहिं लडवा दीजियै, रोग बढिन दुष ज्याव॥ ४६॥
है अनर्थ कै कार्न अै, विषै स्वजन अरु प्रांन॥
तिन्हमैं उपजत ही मनुष, ह्वै आसक्त निदांन॥ ४७॥
बेइ मूरष जांनत नहिं, अपनौं हित किहुँ भाय॥
भ्रमत रहै संसार मैं, ह्वै मोहित अधिकाय॥ ४८॥
तिन्ह कौ मार्ग बतावही, ग्यांनी पुरष सुजांन॥
जो मारग म्हैं तुहि कह्यौ, आछी भांत बषांन॥ ४९॥
कितै कुबुध जांनत न पैं, इहै तत्व सुषसार॥
फल कर्म कौ समझत नहिं, वेद कौ इहि विचार॥ ५०॥
बे लोभी है क्रपन है, कामी है निरधार॥
स्वर्गहि कौ बे फल बडौ, मांनत है धरि प्यार॥ ५१॥
मोहित जिग्यादिकन मैं, बे ह्वै रहै अग्यांन॥
जिन्हकौं आत्म सरूप सौं, नांहिन कछु पहिचांन॥ ५२॥
म्हैं आत्मा उन्ह हिर्दै मैं, जासौं सब जग हौत॥
ताहू कौ बे जांनत न, बिनां ग्यांन ऊदौत॥ ५३॥

कर्म सास्त्र ही है भलै, उन्हकै सदा प्रमांन॥
पसु ज्यौं बे नर जगत बिच, पालत अपनैं प्रांन॥ ५४॥
जइसै रोग जु कुष्ट कौ, रोकत है दुषदाय॥
अइसै उन्हकी दिष्टि है, रुकी अग्यांन प्रभाय॥ ५५॥
बे विषई जांनत नांहिं, मो मति गोपि सुदेस॥
जांनत है मो साध जन, जिन्हकै मन मो प्रेम॥ ५६॥
म्हैरी मति तो है इहि कि, जो चाहै पसु हौय॥
तो जिग्यही कै मधि करै, हिर्दै धर्म रुचि गौय॥ ५७॥
जें नर निज सुष कै लियै, करि पसून की घात॥
भूत रु पितरन कौ सदा, धरि उर उमंग चढात॥ ५८॥
सुवर्ग लौकहू सुपन सम, झूठौ है निरधार॥
सुनतैं ही आछौ लगत, उहि कौ भोग प्रकार॥ ५९॥
कौ नर करिकै कामनां, धन षरचन अनपार॥
कर्म सकांमन मैं लगै, रहत सु बिनां बिचार॥ ६०॥
जइसै लगवत बउत धन, पहल जहाजन वार॥
पाछै हौ किहुँ लाभ कै, बूडि जाउ किहुँ बार॥ ६१॥
माया कै तिहुँ गुनन मैं, हौहि मनुष आसक्त॥
इंद्रादिक की करत है, बे उपास बिच जक्त॥ ६२॥
मो उपासनां करत नहिं, भूलै माया मांहि॥
तुछ सुषन मैं पगि आपुन, स्वारथ समझत नांहि॥ ६३॥
सुवर्ग जाहि हम्ह जिग्य करि, उहिं ठां करै निवास॥
आपुहि मांनि ग्रहस्थ बे, ब्याकुल रहै सत्रास॥ ६४॥
वांनी प्रवृर्त्ति सु वेद की, सुनि अैसै उनमांन॥
उन्ह मन बह क्यूं रुचत नहिं, मो बातां सूं जांन॥ ६५॥
तीन कांड है वेद कै, तिन्ह मैं कर्म रु ग्यांन॥
भली भांत सौं कहे है, सो तत्त्व छिप्यौ निदांन॥ ६६॥
ताकौ म्हैं जांनत रु रिषि, जांनत है बुधिवांन॥
बेद सब्द कौ रूप है, समझत भेद सुजांन॥ ६७॥
सब्द सु उपजत है प्रथम, प्रांनन तैं निरधार॥
इंद्री तैं मन तैं बहुरि, लहत न वाकौ पार॥ ६८॥
अति गंभीर है सब्द बह, गहि सकत कोउ नांहि॥
म्हैं हूं सक्ति अनंत तिहि, पार लहत कौ नांहि॥ ६९॥
सबद बचन कौ रूप है, ताकै भेद सु च्यार॥
परा पस्यंती मध्यमां, वैषरी नांम प्रकार॥ ७०॥

परापस्यंती मध्यमां, कौ नहिं पहचानंत॥
वैषरी रूप सु सब्द कौ, चोथौ सब जानंत॥ ७१ ॥
नाद नांम जिहि कहत है, समझहुं भेद अनूप॥
जइसै जाल मकरि कौ, ऐसौ म्हैरो रूप॥ ७२ ॥
ज्यौं मकरी बिसतरतहीं, जाल तार अधिकार॥
ज्यौं म्हैं वांनी वेद कौ, बिसतारत अनपार॥ ७३ ॥
वांनी बेद बढाय म्हैं, षैंचि लैतहूं फेर॥
बढवन षैंचन मैं कछू, म्हेरै नांहिंन झेर॥ ७४ ॥
नभ तैं प्राननि अरु प्रांन, तें मन सब्द प्रगटाय॥
सब्द ब्रछ दो मय अप्रतमय, मार्ग अनैक बताय॥ ७५ ॥
है पाछै उंकार कै, पंचाषरी सरूप॥
उंष मांहि अषर बिचित्र वा, सबद सु बोल अनूप॥ ७६ ॥
च्यार च्यार अषर पहलै, छंदहि तैं वा मांहि॥
चलै जात है अधिक इहि, समझहुँ भेद अथांहि॥ ७७ ॥
वेद सब्द है ता मही, आठ जाति कै छंद॥
सो म्हैं कहूं गनाय तुहि, सुनै हौहि आनंद॥ ७८ ॥
गायत्री जगती बृहति, अत्यष्टि अरु त्रष्टूप॥
अनुष्टपु उस्निक पंक्तिअै, आठौ छंद अनूप॥ ७९ ॥
किहुँ कौ करत निषेद अरु, किहुं कौ करत विधांन॥
कहा कहत इहि वेद कौ, तातपर्ज उनमांन॥ ८० ॥
म्हैं ही जांनतहूं भलै, कोइ न जांनत और॥
बेद करत मो थापना, बतवत मोहि सुतौर॥ ८१ ॥
निवर्ति मार्ग अब कहत हौं, इहै वेद कौ अर्थ॥
माया मात्र सुजगत कौ, कहत प्रगट असमर्थ॥ ८२ ॥
तिह निषेध करही निगम, बतवत मोहि निदांन॥
मुहि बिनु कछु न बतावही, इहि निश्चै उनमांन॥ ८३ ॥
सर्व वेदार्थ सबद कौं, बस याही है भेव॥
माया म्हैरी जक्त है, म्हैं अधिष्ठान सुदेव॥ ८४ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अैकविसोंऽध्यायः॥ २१ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ द्वाविंसोऽध्यायः ॥

(तत्वों की संख्या तथा पुरुष प्रकृति विवेक)

॥ उद्धव उवाच ॥

दोहा- उद्धव बोलै रिषन तत्व, कितैक कहै गनाय॥
तुम्ह तौ अठाईसही, कहत तत्व जदुराय॥ १॥
कोइ बतावत सात तत्व, बतत कोइ पच्चीस॥
कौउ नव कोउ छह कहत, रु कोउ कहत छबीस॥ २॥
कौउ ग्यारह तत्व कहत, कोउ कहत है च्यार॥
कौउ सत्रह तत्व कहत कौ, सोरह कहत निर्धार॥ ३॥
कौ तेरह तत्व कहत यौं, रिषि बतवत कह जांनि॥
सो कहौ मो सभेद तुम्ह, आछी भांत बषांनि॥ ४॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

प्रभु बोलै द्विज कहत सौ, है सब सत्य निदांनि॥
पै माया बसि कहत यौं, सो ही माया जांनि॥ ५॥
तू कहत सुनहि सत्य म्हैं, कहत सुसत्य विचार॥
मो माया सूं मुहित रिषि, वाद करत या ढार॥ ६॥
उन्हकैं याही वाद सौं, संकलप हौहि जक्त॥
भेद दिष्टि उपजत सदा, आत्म ग्यांन ह्वै रुक्त॥ ७॥
सम दम कीनै हौत है, वाद विवाद सुदूर॥
वाद विवाद मिटै जबै, ह्वै आनंद सपूर॥ ८॥
अैं तत्व मिलि रहि परसपर, जुदै नहिंन दरसाय॥
इन्हकौं पूर्वापर दिषन, बरनैं ज्यौं मन आय॥ ९॥
इक तत्त्व मैं सब और तत्व, पैठे सै दरसांहि॥
कौउ पूर्व तत्व मैं मिलै, कौ मिलि परतत्व मांहि॥ १०॥
इन्हकौं पूर्वापर कहत, जें रिषि करि निरधार॥
न्यारी न्यारी जुक्त सौं, बरनत सबै बिचार॥ ११॥
अनादि बिद्या जु करि सबै, जीव मुहित बिनु ग्यांनि॥
आपतै न समझत तत्त्वनि, समझायै लै जांनि॥ १२॥
जीवात्मा रु परमात्मा, है दुहु अैक निदांन॥
भेदहि राषनौ इन्हि मधि, सौ झूठौ उनमांन॥ १३॥
ग्यांन सुगुन है प्रकृति कौ, इहि जानहुँ निरधार॥
गुन समता कौ कहत है, प्रकति नांम अनुसार॥ १४॥
है त्रय गुन वा प्रकति कै, आत्मा कै न सरीन॥
उपज प्रलै पालन करत, सत रज तम गुन तीन॥ १५॥

ग्यांन रूप ह्वै सत्व गुन, है रज गुन तम रूप ॥
तम गुन रूप अग्यांन है, समझहुँ भेद अनूप ॥ १६ ॥
अरु तीनूं ही गुनन कै, जातैं ह्वै अधिकार ॥
अैसौ काल महाबली, प्रगट बीच संसार ॥ १७ ॥
निश्चैहिं सूत्र सुभाव तौ, है महतत्त्वहि मांहि ॥
प्रथम तत्व महतत्व है, सब तत्त्वन के ठांहि ॥ १८ ॥
प्रकति पुरष महतत्व नभ, अग्नि पवन अहंकार ॥
भुव जुत अै नव तत्त्व कौ, मांनत है निरधार ॥ १९ ॥
दरसन जिभा त्वचा अरु, गंध नासिका कांन ॥
ग्यांन इंद्री इन्ह सौ कहत, सुनि उद्धव बुधिवांन ॥ २० ॥
वानी पाव उपस्थ करि, गुदा सहित अै पांच ॥
कहियतु है इंद्री करम, अै ग्यारह तत्व सांच ॥ २१ ॥
दुहु बिधि की इंद्रीन सौं, मन है मिल्यौ निदांन ॥
सब्द रूप रस गंध स्परस, तनमात्रा अै मांन ॥ २२ ॥
गति बौलन मलमूत्र कौ, त्यागन करनौं कर्म ॥
ग्यांन इंद्री कै कर्म अै, समझ लीजियै मर्म ॥ २३ ॥
मांनत है तत्व पांच ही, भेद कह्यौ तिन्ह अैह ॥
कारन रूपा सृष्टि मैं, है माया अनछैह ॥ २४ ॥
सत्वादिक गुन करि सृजत, माया जगत अपार ॥
ताकौ द्रिष्टा है पुरष, आत्म सरूप उदार ॥ २५ ॥
सकल धात बल प्रकति कै, इहि ब्रह्मांड सृजंत ॥
जिह द्रिष्टा ईस्वर पुरष, कहियतु सक्ति अनंत ॥ २६ ॥
कौउ कहत है सात तत्व, तिन्हकौं सुनियै भेव ॥
पंचभूत महा जीव अरु, ईस्वर आत्म अजेव ॥ २७ ॥
कौउ मांनत है तत्व छह, तिन्हकौ सुनौ विधांन ॥
जीव ईस्वर पंचभूत, महा सुछह पहचांन ॥ २८ ॥
कौउ कहत है चार तत्व, आत्मा अग्नि भुव नीर ॥
इन्हसौं उतपति लहत है, निश्चैहिं सकल सरीर ॥ २९ ॥
कौउ सत्रह तत्व कहत है, तिन्हकौं कहौं प्रकार ॥
पंचभूत महा पंच तन, मात्रा आत्म उदार ॥ ३० ॥
पंच ग्यांन इंद्री रु मन, अैं तत्व सत्रह जांनि ॥
कौ सौरह तत्व कहत है, तै अब कहूं बषांनि ॥ ३१ ॥
पंच ग्यांन इंद्री रु महा, पंचभूत दस मांनि ॥
तन मात्रा पुनि पंच मन, आतम अैक निदांनि ॥ ३२ ॥

कोउ तेरह तत्व कहत, ते पंच इंद्री ग्यांन॥
पंच भूत महा जीव मन, ईस्वर समझि सुजांन॥ ३३॥
ऐसै भेद सु तत्वनि कै, कीनैं रिषनि अपार॥
पंडित रिषनि कह्यौ सु सब, जानहुँ सत्य बिचार॥ ३४॥

॥ उद्धव उवाच॥

उद्धव कहत कि हे प्रभू, सुनियै कृस्न क्रिपाल॥
जुदै जुदै हे पुरष अरु, प्रकति दुहू सब काल॥ ३५॥
औ दोनूं मिलि रहै है, दिसत भेद कछु नांहि॥
दीसत माया आत्म मैं, आत्मा माया मांहि॥ ३६॥
इहि म्हैरे संदेह है, सौ दीजै प्रभु टारि॥
तुम्हही तैं सब जियन कौ, हौत ग्यांन सुषसारि॥ ३७॥
अरु तुम्ह माया सौं प्रभू, जात रहत है ग्यांन॥
निज माया की गति सु तुम्ह, जांनत प्रभू सुजांन॥ ३८॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

प्रभु बोलै प्रकति रु पुरष, न्यारै है निरधार॥
तिन्हही सौ इहि हौत है, प्रगट सृष्टि अनपार॥ ३९॥
म्हैरी माया गुन मई, गुननहि कै अनुसार॥
उपजावत है भेद बुधि, जो है तीन प्रकार॥ ४०॥
आदि भूतक अध्यातमक, आदि दईवक तीन॥
भेद बुधि ऊपजावही, गुन सौं प्रकृति सरीन॥ ४१॥
द्रिग इंद्री रवि देवता, अरु द्रिग गोलक जांनि॥
अैई परसपर द्रिष्ट कौ, सिद्धि सु करत निदांनि॥ ४२॥
आत्मा इन्हतैं परै है, इन्हमैं सामिल नांहि॥
निज प्रकास सौं सबन कौ, करत प्रकासिक चांहि॥ ४३॥
तुचा कर्न द्रिग नासिका, जिह्वा इन्हहूं मांहि॥
तीन तीन है भेद सौ, जांनत सुबुधि सदांहि॥ ४४॥
भौ माया कै गुनन करि, सब जग रूप विकार॥
क्रम सौं तत्व महतत्व तैं, उपजै है निरधार॥ ४५॥
तामैं तीन प्रकार कौ, है निश्चै अहंकार॥
सतौगुनी रु रजौगुनी, तमौगुनी अनुसार॥ ४६॥
अरु आत्मा है ग्यान मय, गुनमय नहिंन कहाय॥
आस्ति नास्ति इहि है सही, मिथ्या विवाद सदाय॥ ४७॥
मो तैं जिन्ह प्रांनीन की, बुधि है फिरी निदांन॥
तिन्हकौ इहि निरधार करि, प्रगट हौय अग्यांन॥ ४८॥

॥ उद्धव उवाच ॥

उद्धव बोलै बहिर मुष, है तुम्ह तैं जे कौय॥
ऊंच नीच जोनि सुजिह्नैं, निज कर्मनि सूं हौय॥ ४९ ॥
तै कइसै पावत जनम, ऊंच नीच बहु बार॥
पंडितहूं यामै मुहित. हौत प्रकति अनुसार॥ ५० ॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

प्रभु बोलै पांचौ इंद्री, जुत मन बहु ठां जाय॥
तिह संग आत्मा जात है, साषी भूत कहाय॥ ५१ ॥
देषै सुनैं विषैंन कौ, रु मनहिं धारै ध्यांन॥
मन लागै जिहि ठौर सौ, लहै जनम सु प्रमांन॥ ५२ ॥
बात सु पहलै जनम की, भूल इहै मन लाय॥
ह्वै आसक्त विषैंन मैं, आत्मा कौं न जनाय॥ ५३ ॥
इही मृत्यु निरधार करि, जानहुँ निज मन मांहि॥
जानै आत्मसरीर कौ, सौ इहि जनम कहांहि॥ ५४ ॥
ज्यौं मनोर्थ अरु स्वपन कौ, लीजै सत्य सु जांनि॥
त्यौंही जनम रु मरन कौ, गनन सत्य उनमांनि॥ ५५ ॥
स्वपनै मैं रु मनोर्थ मैं, इहै अैक आत्मांहि॥
न्यारौ कर जांनै लषै, आत्म अपूर्व सदांहि॥ ५६ ॥
छिनक छिनक मैं काल करि, उपपजत देह नवीन॥
पहलौ तन ह्वै नष्ट सौ, जांनत अग्यानीन॥ ५७ ॥
अति सूछिम है काल जिहि, गति किहि नहिं दरसाय॥
ताकौ भेद सुनौ अबै, तुम्हहिं कहूं समझाय॥ ५८ ॥
जइसै ज्वाला अग्नि अरु, तरु फल नदी प्रवाहि॥
हौत नवीन नवीन जिह, अवस्था नहिं दरसाहि॥ ५९ ॥
अरु ज्यौं नदी प्रवाह फल, दीप परत दरसाय॥
तइसै ही लषि परत है, सबप्रांनिन कै काय॥ ६० ॥
अग्नि काष्ट मधि रहत है, फेरि निकरिहू जात॥
त्यौही कर्म सौं उपजि तन, बिनसत बार न लात॥ ६१ ॥
निसेष जनम सबाल्य वय, कुमार जुवनि सु मध्य॥
ब्रधपन मृत्यु अै अवस्था, तन की नवौ प्रसध्य॥ ६२ ॥
न्यारौ इन्ह अवस्थानिसौं, कोइ विवेकी जांनि॥
त्याग देह कौ करत है, आत्महि लैत पिछांनि॥ ६३ ॥
प्रभु माया कै गुनन सौं, अै जु अवसथा हौत॥
तातै तन अरु अवसथा, दोनूं मिथ्या उदौत॥ ६४ ॥

यौ मानुष इहि लषत पित, मरत रु सुत प्रगटाय॥
ता अटकर सौं निज जनम, मरन भलै लष जाय॥ ६५॥
जनम मरन कौ है सही, द्रिष्टा आत्म जु निदांन॥
पंडित कर्म विपाक तैं, जनम मरन लै जांनि॥ ६६॥
जइसै न्यारौ है सही, ब्रछ कौ दैषन हार॥
त्यौंही द्रष्टा देह कौ, न्यारौ आत्म उदार॥ ६७॥
माया कौ अरु आत्म कौ, नहिंन विवेक जनाय॥
लगि विषैंन मैं रहै सौ, जग बिच परै सुभाय॥ ६८॥
सत्व गुन करिकै हौत है, देव लोक सुषदाय॥
असुर लोक नरलोक है, रजो गुन तैंहि पाय॥ ६९॥
तम गुन करकै लहत नर, पसू प्रेत की जौंनि॥
अैसै तीनूं गुननि करि, भुगतत बिच जग भौंनि॥ ७०॥
निर्तत गावत है कोउ, जिहँ जो देषै कौय॥
सौ वइसै ही करन कौ, लगत मग्न मन हौय॥ ७१॥
यौं माया के गुनन करि, तनकी चेष्टा मांहि॥
वइसै ही जिय आपहू, मांन लैत जग ठांहि॥ ७२॥
जइसै नदी प्रवाह बिच, नउका के असवार॥
देषै वृछ नदि तीर कै, संग चलत निरधार॥ ७३॥
जइसै फेरी लैन मैं, लरका भ्रमत अग्यांन॥
उन्हैं भ्रमत ही सौ सबै, दीसत ग्रेह सध्यांन॥ ७४॥
त्यौंहि मनोर्थ विषैंन कौ, अनभव झूठौ जांनि॥
पंडित जन या बात कौ, सत्य न गनत निदांनि॥ ७५॥
विषै भोग सांचौ लगत, सुपनैं मैं जिहँ भाय॥
लगत जीव अग्यांन करि, मिथ्यां जगत सदाय॥ ७६॥
झूठौ है संसार पै, हौत निवर्ति सुनांहि॥
त्यौंहि विषै कै ध्यांन तैं, बही स्वपन दरसांहि॥ ७७॥
तातैं हे उद्धव अबै, समझि बात सुष सीर॥
दुष्ट इंद्रियन सौं विषै, भोग करहुँ मति वीर॥ ७८॥
आत्मा कै अग्यांन सौं, भौ इहि भ्रमत संसार॥
आत्महि जांनै ग्यांन करि, तब छूटै निरधार॥ ७९॥
कौइ करै याकी अस्तुति, कोइ करै अपमांन॥
कौइ रोकै मारै कौ, हति डारै कौ प्रांन॥ ८०॥
कौउ ठगै कै वचन सौं, डर पावै अधिकाय॥
याकै तन पर देत करि, कौ मलमूत्र कुदाय॥ ८१॥

समैं जास जो इहि चहै, अपनौं कियौ उधार॥
तौ दुष मांनै नांहिनै, किहूं तरह वां बार॥ ८२॥

॥ उद्धव उवाच॥

उद्धव बोलै हे प्रभू, म्हैं समझू जिहँ भाय॥
फैरि कहौ इहि बात तुम्ह, मुहि आछै समझाय॥ ८३॥
लगी पंडितनहूं इहै, माया अति बलवंत॥
इक बैस्नव तुम्ह सरन जिन्ह, भय सौक कछु न करंत॥ ८४॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते द्वाविंसोऽध्यायः ॥ २२॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ त्रयोविंसोऽध्यायः ॥

(एक तितिक्षु ब्राह्मण का इतिहास)

॥ श्री सुक उवाच॥

दोहा - सुक कहत कि बैस्नवन मैं, उद्धव मुष्य कहाय॥
जिन्हनि कहे अैसे वचन, प्रभु कौ जबै सुनाय॥ १॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

बोलै प्रभू निज भक्त कै, वचन सराहि क्रिपाल॥
जिन्ह प्रभु कै लीला चरित, सुननैं जोग रसाल॥ २॥
बृसपति कै सिष हे उद्धव, कहत जु सत्रु दुरबैंन॥
तिन्हकौं सहि रहनौं कठिन, कहियतु दैंन अचैंन॥ ३॥
बांन बिंधे तै देह मैं, अैसी पीड़ न हौत॥
जइसी सत्रु कै बचन सुनि, ह्वै है पीड़ उदौत॥ ४॥
हे उद्धव या ठौरहिं हम्ह, कहत अैक इतिहास॥
सावधांन ह्वै सुनहुं तुम्ह, बात हम्हारै पास॥ ५॥
किहुँ संन्यासी कौ दियौ, सत्रुनि दुष्य अनपार॥
तब उन्ह वचन कहे सु म्हैं, तौसौं कहत सुढार॥ ६॥
फल भौगत कर्म कौ, धरि धीरज अधिकाय॥
वचन कहै उन्ह ग्यांन कै, सो म्हैं कहूं सुनाय॥ ७॥

चोपाई - नगरी अैक अवंतिका नांमा। इक धनवंत बिप्र उहिं ठांमा॥
सौ बहि लोभी काम बस हुहीं। जु करै बुरौ भौजन अति गुहीं॥ ८॥
जाति अतिथि कौ बचनहुँ करिकै। आदर किय न कबहुँ चित धरि कै॥
घर वाकौ सूनौ ही जु रहै। षात पेट भर आपुहुँ न जुहै॥ ९॥

जाकौ कदरज बुरौ सुभावहि। करत बंधहू द्रोह कुदावहि॥
तिया पुत्री दुष्ष सेवक भरै। वाकौ कह्यौ कबहूं नहिं करै॥ १०॥
धन रिछया करही बुध भ्रिष्ट। दुहू लोक ताकै हुवै नष्ट॥
धर्म· काम करि हीन भयौ नर। पंच जग्य सुर रिष कीय ता पर॥ ११॥
उन्हकै क्रौध करन अनुसारहि। भयौ छीन उहिं पुन्य प्रकारहिं॥
बउत परिस्रम करि जोर्यौ धन। सौहू नष्ट भयौ काहू छन॥ १२॥
कछु तौ धन हरलीनौ जातहि। कछु लिय नृप करि दंड विष्यातहि॥
कछु षेती मैं तोटौ आयौ। कछु धर्यौ धन धरहीं विलायौ॥ १३॥
कछू आग लगि कै जरि गयौ। या प्रकार द्रवि नष्ट सू भयौ॥
धर्म रु विषै भोगहू आछै। करि न सक्यौ द्विज काहू ताछै॥ १४॥
तज्यौ हितुनहू आदर वाकौ। तब चिंता बढि द्विज चित थाकौ॥
नष्ट हौत भौ द्रव्य अमापा। तासौं बढ्यौ अधिक संतापा॥ १५॥
करन लग्यौ द्रवही कौ ध्यांना। चलै पेद सौं आंसु निदांना॥
गदगद कंठ जु हौय दुषछयौ। अति बैराग प्रगट तवै भयौ॥ १६॥
तब द्विज बोल्यौ म्हैं धन जोरहिं। व्रथा दियौ तन कौ दुष घोरहिं॥
न तौ धर्म सध्यौ सुषसारा। न किय विषै कौ भोग प्रकारा॥ १७॥
म्हैं धन जोरन मैं बहु वारहिं। कियौ परिस्रम बउत कुढारहिं॥
द्रव्य कदरजन कौ दुष दैनू। तासौ कबहूं हौहि न चैनू॥ १८॥
या लोकहु कै मधि दुष दायी। मरै जबै नरकहि लै जायी॥
जसवंतन कौ जस अनपारा। अरु गुनीन कौ गुन अधिकारा॥ १९॥
मैटि दैत है लोभ कुपाता। है अघ रूप लोभ बिषयाता॥
रूपहि कोढ मिटावत जइसै। गुन जस मैटत लोभ सु तइसै॥ २०॥
धनहि जोरनौं फेरि बढानौं। अरु रछा करनी बहु भावनौं॥
तामैं हौहि द्रव्य कौ नासहि। तब बढि परिस्रम चिंता त्रासहिं॥ २१॥
प्रांनी कौ निश्चै भ्रम हौही। दैत सुधीर्ज पदारथ पौही॥
द्रव्य तैं इत्ती बातैं हौत जु। चोरी दंभ रु काम उदौत जु॥ २२॥
झूठ बोलनौं ईर्षा क्रोधहि। रु जीव बध करनौं बिनु बोधहि॥
बैर फूट ह्वै आपस मांही। रहै किहूं बिसवास सु नांही॥ २३॥
मद अति बढै कछू नहिं सूझै। समता अैक बडन की बूझै॥
इन्ह बातन जुत दुष अनपारा। द्रव्य सौं उपजत है निरधारा॥ २४॥
तातैं द्रव्य अनर्थ कौ मूला। याहि साध तो चहत न भूला॥
अपनौं भलौ चहै जो कोई। पहलैं ही धन तजि दै सोई॥ २५॥
भाई सुहृद पिता सुत नारी। छूटि जाय अैहुँ उहिं बारी॥
सकल मित्र कोडी कै काजै। सत्रु हौत तिहँ कछु ना इलाजै॥ २६॥

दोहा - थोरै द्रव्य कै लियै सब, क्रौध करत अनषाय॥
छोडि मित्रताइ दैहि दुष, जु धनवंतहि अधिकाय॥ २७॥
सुर जिहँ चाहत सो दुर्लभ, जु जनम बिप्र कौ पाय॥
अपनौं भलौ न करत तै, लहत कुगति दुषदाय॥ २८॥
स्वर्ग मुक्ति कौ द्वार इहि, कहियतु लोक सुढार॥
सो लहि मूल अनर्थ द्रव्य, चाहै करि कै प्यार॥ २९॥
देव पितररिष्य भूत बंधु, जाति साधु द्विज दीन॥
इन्हसौं बांटि न षाय द्रव्य, सो लहै नर्क सरीन॥ ३०॥
बिनां अर्थ करिवौ करै, द्रव्य चिंता बुधि हीन॥
ताकी आयुर्बल ब्रथा, जात रहत ह्वै छीन॥ ३१॥
ब्रधपन मांहि जरूरही, साधै नर पर लौक॥
बिनु साधै तैं जगत मैं, पावत दुष की सौक॥ ३२॥
करन परिस्त्रम है ब्रथा, द्रवि संचन कै मांहि॥
प्रभु की माया सौं मुहित, है सब लोक सदांहि॥ ३३॥
विषै भोग दाता अवर, विषै भोग अनपार॥
धन अरु धनदाता पुरष, काम कै न किहुँ बार॥ ३४॥
याकौ तौ लगि रही है, मृत्यु महा बलवांन॥
ताकै भय सौं सुष कछू, जांनि न परत निदांन॥ ३५॥
दैंनहार उत्तम जु जनम, जे है कर्म अनूप॥
तिहुँ तैं कारिज कछु नहिंन, संवरत है सुष रूप॥ ३६॥
सब दैवन मय प्रभू है, मो परि प्रसंन सु आज॥
जिन्ह म्हैरी अैसी दसा, करी संवारन काज॥ ३७॥
कियौ प्रगट बैराग इहि, म्हैरै हिर्दै सुढार॥
है नौका बैराग की, तरन सिंधु संसार॥ ३८॥
बाकी मो आर्बल रही, अब जितनीं या बेर॥
तासौ तपस्या करहुँगौ, आत्म सरूपहि हेर॥ ३९॥
ह्वै हौ म्हैं पर लोक मैं, सावधांन अब चाहि॥
तबै देवता करहिगैं, म्हैरी अधिक सराहि॥ ४०॥
नृप षट्वांग प्रभु भजन करि, चारि घरी कैं मध्य॥
हरि कै क्रिपा प्रताप सूं, भयै कृतार्थ प्रसध्य॥ ४१॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

प्रभु बोलै ब्राह्मन वहै, करि या भांत बिचार॥
संन्यासी हो तौ भयौ, तजि अग्यांन अनुसार॥ ४२॥
वसि करि निज इंद्रीन कौ, फिरत भयौ भुव ठांम॥
रु छिपि कै भिछा काज कौ, आवै निज पुर ग्राम॥ ४३॥

ब्रध ह्वैहि बस्त्र ना धरै, ताकौ दुरजन दैषि॥
लागै अति दुष दैंन कौ, ह्वै निरदय अनलैषि॥ ४४॥
किहूं दंड लिय षैचि अरु, किहूं कमंडल लीन॥
किहुँ लिय माल रुद्राछ की, पट कंथा लिय छीन॥ ४५॥
वाहि दिषाय कहै बहुरि, लैहुँ लैहुँ इहि आय॥
बहि लैबै आवै जबै, नहिं दै लैहि छिपाय॥ ४६॥
भिष्या भोजन करत हौ, बहि द्विज सरिता तीर॥
तिहिं सिर पर थूक्यौ किहूं, मूत्यौ किहुं बे पीर॥ ४७॥
रहै मौंनि सौ द्विज वहै, लगै बुलावन लौग॥
बहि बोलै नांहिन जबै, मारै है भय सौग॥ ४८॥
कौइ कहै इहि चोर है, कौउ कहै बांधौ याहि॥
फिरि बांधै कौ रसिन सौं, दया धरै चित नांहि॥ ४९॥
कौऊ अवग्या करि कहै, इहि पाषंडी आहि॥
गयी संपदा बंधुवनि, मुंह न लगायौ याहि॥ ५०॥
तब इन्हि पकर्यौ स्वांग इहि, पेट भरन कै काजि॥
बगुला कै नांई रहत, धरै मौंनि निरलाजि॥ ५१॥
कौ हसत कोउ कहत इहि, जौरावर अधिकाय॥
कौउ कहत इहि है बडौ, धीरजवंत सुभाय॥ ५२॥
यौं अनैंक दुरजननि मिलि, वाहि त्रिविधि दुषदीन॥
उन्ह जान्यौ है दइब की, ईछा इही सरीन॥ ५३॥
तातै इहि दुष भुगतनौं, मोहि जोगि या ठांहि॥
यौं बिचारि धरि धीर द्विज, डिग्यौ धरम तैं नांहि॥ ५४॥

॥ द्विज उवाच ॥

ब्राह्मन बोल्यौ मोहि अैं, जन सुष दुष नहिं दैत॥
काल कर्म ग्रह आत्म सुर, दुष न दैत किहुँ हैत॥ ५५॥
सुष दुष कौ कारन प्रगट, मनही है निरधार॥
मनही याहि भ्रमावही, बीचि सु या संसार॥ ५६॥
आवत है गुन प्रकति कै, जब मन ही कै मध्य॥
तब इहि प्रांनी करत है, त्रिविधि कर्म सु प्रसध्य॥ ५७॥
भलै बुरे मध्यम करत, प्रांनी जइसै कर्म॥
तइसै ही पावत जनम, पर्यौ रहत बिच भर्म॥ ५८॥
आत्मा कै ईछा कछू, कबहूं हौत है नांहि॥
मन कौ अपनौं जांनि कैं, मांनि लैत निज मांहि॥ ५९॥
आत्म प्रकास सरूप प्रभु, सषाअरु दिष्टा आंहि॥
मन सौं मिलि कैं करत है, विषै भोग जग ठांहि॥ ६०॥

मिलत प्रकति के गुननि सौं, अपनीं भूलि सह्यारि ॥
तातैं ह्वै या जीव कौ, जनम मरन बहु बारि ॥ ६१ ॥
दांन धर्म यम नेम सब, औरहु कर्म प्रकार ॥
तिन्हतें न्यारौ हौत है, मन वसि कियौ सुढार ॥ ६२ ॥
मन कौ वस करनौं सोइ, है बड जोग समाधि ॥
या सम जोग समाधि कछु, नांहि और योगाधि ॥ ६३ ॥
जिन्ह निज मन वसि कर्यौ है, गहि सुभेद हिय ठांहि ॥
ताकौं दानादिकन सौं, कछु कारज है नांहि ॥ ६४ ॥
जाकौं मन वसि ह्वै न सो, करै बउत तप दांन ॥
तौहू नहिं कछु काम कैं, सैंवर फल उनमांन ॥ ६५ ॥
मन कैं वसि है देवता, मन किहुं कै वसि नांहि ॥
मन ज़ोरावर है अधिक, तिहँ बसि प्रभू करांहि ॥ ६६ ॥
जौरावरहि इहि सत्रु मन, सहि न परै बल जास ॥
तिहँ जीतैं तैं और कौ, नांहि लरै दे त्रास ॥ ६७ ॥
उदासीन अरु मित्र जु मन, झूठै लैत सुमांनि ॥
उन्ह मैं ह्वै आसक्त नर, षौवत स्वार्थ निदांनि ॥ ६८ ॥
मनही सौं उपजत भयौ, इहि सरीर निरधार ॥
अहंता ममता जां मही, मांनत है बहु बार ॥ ६९ ॥
इहि म्हैं हूं वहि और है, इहि अरि बहि हितवंत ॥
यौं अपार अग्यांन मैं, बहु नर परै रहंत ॥ ७० ॥
और लौकहूं देत दुष, याकौ जो किहुँ भाय ॥
तौ दुष निश्चै देत है, देहहिं देह कुदाय ॥ ७१ ॥
काटि षात है दांत निज, निज जीभहिं किहुँ बार ॥
ताकौ करियै कौनुँ सौं, प्रगट क्रौध अधिकार ॥ ७२ ॥
आत्मां तौ न्यारौ सदा, तनहूं इक उनमांन ॥
अपन परायौ करि परै, लरै मनुष अग्यांन ॥ ७३ ॥
अरु इंद्रिन कै अमर है, जो याकौ दुषदैंन ॥
तौहू आत्मा जुदौ है, साषी भूत सुषैंन ॥ ७४ ॥
किन्हही मुह परि थाप दौ, या किहुं काट्यौ पांन ॥
तौ इंद्री कै सुर लरै, आपहि आप निदांन ॥ ७५ ॥
अरु आत्मा जो देत है, सुष दुष किहूं प्रकार ॥
सो सांचै ही है सदा, क्यूं रिस करै कुचार ॥ ७६ ॥
अरु जो सुष दुष देत है, नव ग्रह याहि सदाय ॥
तौहू आत्मा है जुदौ, ग्रह ग्रह लरत रिसाय ॥ ७७ ॥

जौरावर ग्रह देत है, ग्रह दुरबल कौ मारि ॥
क्रौध कौनुँ पर कीजियै, षिजियै सोच बिचारि ॥ ७८ ॥
कर्म जु सुष दुष दैत सौ, जडतन करत न कर्म ॥
अरु आत्मा आनंदमय, तिहँ न कर्म कौ मर्म ॥ ७९ ॥
तातैं झूठौ है करम, अरु सुष दुष्षहू झूठ ॥
मांनि लैत है ग्यांन बिनु, प्रांनी भेद अपूठ ॥ ८० ॥
कालहि दैत सुष दुष तौ, आत्महि कहा लगार ॥
काल सु है भगवांन कौ, अंस प्रगट निरधार ॥ ८१ ॥
हौत अगनि कै कनन कौ, नहिंन अगनि की ज्वाल ॥
सीत बरफ कौ बरफ कै, कननिन ह्वै किहुँ काल ॥ ८२ ॥
त्यौं उपजायै काल कै, सुष दुष नांहिंन हौत ॥
तातैं कीजै कौनुँ पै, प्रगट क्रौध ऊदौत ॥ ८३ ॥
आत्मा कौ सुष दुष कोउ, दैंन सकैं किहु भाय ॥
न्यारौ है सबहीन तैं, आत्म अनूप सदाय ॥ ८४ ॥
मांनि लैत अहंकार सौं, सुष दुष सब संसार ॥
आत्मा कौ सुष दुष कबहुँ, नांहिंन किहू प्रकार ॥ ८५ ॥
जा मनुष कौ हिरदै मैं, प्रगटै ऐसौ ग्यांन ॥
ताकौ काहू बात कौ, भय नहिं हौहि निदांन ॥ ८६ ॥
आगै सब रिषिगननहूं, ऐसौ भेद बिचारि ॥
इही ग्यांन अपनैं हिर्दै, राषत भये सुढारि ॥ ८७ ॥
तातैं प्रभु पद सेव अरु, इही ग्यांन अनुसार ॥
म्हैं हूं सिंधु अग्यांन कौ, तरिह्वै जै हौं पार ॥ ८८ ॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

प्रभु बोलै ब्राह्मन वहै, ह्वै विरक्त सुष मांनि ॥
फिरत भयौ प्रिथवी विषै, धन सोच न चित आंनि ॥ ८९ ॥
म्हैं तुहि इहि गाथा कही, तिहँ बल पाय अथांहि ॥
दुष्टनि दुष दिय तउ रह्यौ, द्विज निज धर्महि मांहि ॥ ९० ॥
सुष दुष दैत न और कौ, मनही कौ भ्रम जांनि ॥
सत्रु अरु मित्र संसार ह्वै, याहि सुकरि अग्यांनि ॥ ९१ ॥
तातैं सकल प्रकार सौं, उद्धव मन वसि राषि ॥
मो मैं चित लावै सही, जोग तत्व सुभ साषि ॥ ९२ ॥
इहि द्विज की गाथा कही, सौ राषै मन मांहि ॥
सुनै सुनावै तिहिं कबहुँ, सुष दुष लागै नांहि ॥ ९३ ॥

इहि भिछुनां गाथा गहि, ब्रह्म ग्यांन समांहि॥
साधक सिंघ समान है, दुष सुष-द्वंद नसांहि।।९४॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते त्रयोविंसोऽध्यायः ॥ २३ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुर्विंसोऽध्यायः ॥

(सांख्य योग निरुपण)

॥ श्री भगवानुवाच ॥

दोहा - प्रभु बोलै उद्धव अबै, सांष्य जोग सुषदाय॥
म्हैं तुहि कहूं सुनाय जिहँ, सुनै भेद मिट जाय॥ १ ॥
प्रलै काल कै समैं इक, आत्म हुतौ मय ग्यांन॥
अरु सत जुग मैं हूं रह्यौ, आत्म बिचार विधांन॥ २ ॥
मनुष विवेक जे कोउ, तिन्हकौ चहुँ जुग मांहि॥
निश्चै आत्म विचारही, है करनौं जुत चांहि॥ ३ ॥
ब्रह्म भयौ ह्वै रूप बहि, माया पुरष सरूप॥
सो आवत मन वचन कै, कहनैं मांहि अनूप॥ ४ ॥
कारिज कारन भेद दुहु, तिन्हही तैं प्रगटाय॥
उन्ह तैं न्यारौ है पुरष, ग्यांन रूप सुषदाय॥ ५ ॥
सत रज तम कै गुन तिहूं, माया तैं प्रगटाय॥
माया कौ म्हैं पुरष नैं, कीनौ छोभ सुभाय॥ ६ ॥
तातैं सूत्र भयौ प्रगट, जातैं हुव महतत्त्व।॥
तातैं भौ अहंकार तिहूँ, सत रज तम त्रय तत्व॥ ७ ॥
तनमात्रा इंद्री मनहि, कौ कारन अहंकार॥
पंच भूत महा प्रगट हुव, तामस तैं अनुसार॥ ८ ॥
सात्वक हुव अहंकार तैं, सब इंद्रिन कै देव॥
रजौगुनी अहंकार तैं, इही समझहुँ भेव॥ ९ ॥
प्रगट कियौ ब्रह्मांड अैं, सब तत्व हौहि समेल॥
बहि अंडा मो घर रह्यौ, पर्यौ सुजल कै भेल॥ १० ॥
वा अंडा बिच मैं रह्यौ, अरु मो नाभी मध्य॥
प्रगट्यौ पंकज ता मही, विधि प्रगट्यौ सप्रसध्य॥ ११ ॥

रजौगुनी ब्रह्मांड है, करत भयौ तप चांहि ॥
पालन करि जंग सृजत भौ, लहि मो क्रिपा अथांहि ॥ १२ ॥
स्वर्ग बसत भयै देवता, भूत बसै नभ मांहि ॥
मनुष बसै भुव लोक सिध, तिहुँ पुर ऊपर ठांहि ॥ १३ ॥
असुर नागपाताल मैं, बसत भयै सुषपाय ॥
प्रांनी तिहुँ लोकन फिरत, त्रिगुन कर्म अनुभाय ॥ १४ ॥
तपस्या जोग संन्यास कौ, जें साधत है कौय ॥
महरलौक जनलोक तप, लौक सु जाकौ हौय ॥ १५ ॥
अरु जो कौ साधे मनुष, म्हैरी भक्ति सुढार ॥
ताकौं म्हैरे लोक की, प्रापति ह्वै निरधार ॥ १६ ॥
आत्मा काल विधांन तिहुँ, म्हैं ही हूं सुनि संत ॥
इन्हही गुननि प्रभाव मैं, जगत बुडत उछलंत ॥ १७ ॥
पतरौ मोटौ दीर्घ लघु, जो पदार्थ कौ हौत ॥
पुरष प्रकति संजोग तैं, सो पावत ऊदौत ॥ १८ ॥
रहै पदार्थन कै जोइ, आदि अंत कै मांहि ॥
अरु विकार जो है प्रगट, घट घट आदि सदांहि ॥ १९ ॥
ताही कै मध्य हुव विषै, रहियै निकट सदांहि ॥
सो बिहार कै लियै है, समझहुँ भेद सुजांन ॥ २० ॥
लै कै जांहि पदार्थ सूं, उपजत पदार्थ और ॥
आदि अंत मैं है बही, सोई सत्य सु तौर ॥ २१ ॥
याकौ कारन प्रकति है, पुरष सु है आधार ॥
काल सु जत वनहार मुहि, तिहुँ मो रूप सुढार ॥ २२ ॥
सृष्टि सु पूर्वा परीय करि, चली जात जब तांइ ॥
महतत तैं लै है सबै, प्रलै सदा अनुभाइ ॥ २३ ॥
फेरि सकल लोकनि सहित, म्हैरो रूप विराट ॥
प्राप्त भयौ चहिं नास कौ, तब नर है कछु घाट ॥ २४ ॥
मनुष अंन कै भाव मैं, अंनहि बिच ह्वै लीन ॥
अरु ह्वै वीर्जन कै विषै, अंन सु लीन सरीन ॥ २५ ॥
वीर्ज प्रथी मैं लीन है, प्रथी मिलत बिच गंध ॥
गंध मिलत जल मांहि जल, मिलत बीच रस संध ॥ २६ ॥
रस ह्वै लीन सु अग्नि मैं, अग्नि रूप मैं लीन ॥
रूप वायु मैं लीन है, समझहु भेद प्रवीन ॥ २७ ॥
वायु मिलत सपरस मही, सपरस नभ मंझार ॥
मिलै सबद मैं नभ सबद, मिलै मध्य अहंकार ॥ २८ ॥

अपनैं कारन मध्य ह्वै, इंद्री लीन प्रसध्य॥
अरु इंद्रिन कै देवता, लीन हौत मन मध्य॥ २९॥
अहंकार महतत्व मैं, लीन हौत निरधार॥
महतत्व माया मैं मिलत, माया ब्रह्म मंझार॥ ३०॥
तब इक आत्मा ही रहत, जामैं भेद न नास॥
इहि बिचार जो करै तिहँ, ह्वै न भेद बुधि भास॥ ३१॥
ज्यौं सूरिज कै उदै मैं, अंधकार रहै नांहि॥
त्यौंही कियै बिचार इहि, भेद बुद्धि मिटि जांहि॥ ३२॥
सब संसय मैटन इहै, सांष्य सास्त्र सुष सार॥
तत्वभेद ताकौ कह्यौ, हम्ह तुहि भलै प्रकार॥ ३३॥
क्रम सौं उपजत अैक तैं, तत्व अनैंक निदांन॥
फिरि इक मैं ह्वै जात इक, लीन भलै उनमांन॥ ३४॥
याही कौ उतपति प्रलै, पालन नांम कहाय॥
सकल भेद उपजत मिटत, मो ईछा अनुभाय॥ ३५॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते चतुर्विंसोऽध्यायः ॥ २४॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ पंचविंसोऽध्यायः ॥

(तीन गुणों की वृत्तियों का निरूपण)

॥ श्री भगवानुवाच॥

दोहा - बोलै श्री भगवांन यौं, माया कै गुन तीन॥
जा गुन सौं जइसौ पुरष, हौत सुकहूं प्रवीन॥ १॥
सतगुन की अै वृत्ति है, सुनियै निज चितलाय॥
वसि करनौं इंद्री रु मन, रहन बिवेक बढाय॥ २॥
पूर्वापर कौ चिंतवन, आसतिका तप सत्य॥
लाभ जथारथ कौ दया, गहि बैराग सचित्य॥ ३॥
बुरै कर्म मैं लाज अरु, दैनौं दांन सुढार॥
राषै अपनीं प्रीति निति, आत्मा विषै अपार॥ ४॥
वृत्ति रजौगुन की अबै, सुनि तू बुद्धि उदार॥
असंतोष लाभहि विषै, बहु अभिलाष बिहार॥ ५॥
करै सुरन की प्रार्थना, द्रव्य हौन कैं काज॥
धरै गर्व मन मांहि अति, पाय कछुक सुष साज॥ ६॥

मद करि जुद्ध मैं पैठनौं, असतुति जस अउछाह॥
बलि रु पराक्रम हास्य कौ, उदम करन अनथाह॥ ७॥
अबै तमौगुन की कहुं, म्हैं वृत्ति तौहि सुनाय॥
झूठ बोलनौं लोभ डिंभ, क्रौध द्वेष अधिकाय॥ ८॥
लडनौं करनौं जीव बध, हर कछु लैनौं मांगि॥
सौक मौह दुष्य नींद अंन, उदिम अलस अथांगि॥ ९॥
सत्वगुन रज गुन तमोगुन, इन्ह तिहूंन की वृत्ति॥
जुदी जुदी बर्नन करी, सौ तुम्ह सुनी सचित्ति॥ १०॥
इन्हकौ मिल जांनौ अबै, सुनियै कहूं जताय॥
अरु ताम ताई न मिलन, सन्यपात दरसाय॥ ११॥
इंद्री तन मात्रा रु मन, इन्हकौ है मिल जांन॥
सोइ गुनन कौ हौत है, सन्यपात उनमांन॥ १२॥
दिव्य काम मैं धर्म मैं, जब प्रवर्त्त नर हौत॥
तब तिहुँ गुन इक सम इही, प्रगटि करत ऊदौत॥ १३॥
सर्द्धा रति धन प्रापति ह्वै, भयै गुननि ऊदौत॥
भयै जुदौ तिहुँ गुनन तैं, म्हैरी प्रापति हौत॥ १४॥
जग्यादिक नर करत थिर, रहत धर्म निज मांहि॥
ग्रहस्थाश्रम कै धर्म कौ, करत आचरन चांहि॥ १५॥
सोही है तिहुँ गुनन कौ, संनपात निरधार॥
समझहुँ आछी भांत इहि, उद्धव बुद्धि उदार॥ १६॥
पुरष सत्वगुन जुक्त है, करत जोग अभ्यास॥
रजगुन जुत ह्वै कामनां, अधकी करत प्रकास॥ १७॥
हौहि तमोगुन जुक्त नर, क्रौध करत अधिकाय॥
क्रौध महा अरि रूप है, प्रांनिन अति दुषदाय॥ १८॥
निज कर्मन कौ त्याग करि, भक्ति भजै नर मोहि॥
जांनि लीजियै जु तामैं, सत्त्व गुन वृत्ति अवरोहि॥ १९॥
करि निज कर्मनि मुहि भजै, चहै मनोर्थ अपार॥
रजगुन की वृत्ति जांनियै, तामस ऐं निरधार॥ २०॥
अरु जा समैं करै मनुष, हिंसा किहूं प्रकार॥
इहि वृत्ति तमोगुन सोई, लीजै समझि बिचार॥ २१॥
सतगुन रजगुन तमौगुन, ऐं इहै जीवहि लागि॥
अरु मो आत्म सरूप कौ, लगत न कबहूं पागि॥ २२॥
यौं तीनौं गुन चित्त तैं, प्रगट सुहौत निदांन॥
है इन्ह मैं आसक्त सौ, बंध्यौ जात अग्यांन॥ २३॥

दिव्य ग्यांन उपजै जबै, प्रगट सत्त्व गुन हौत॥
तब नर सुष पावै करै, धर्म ग्यांन ऊदौत॥ २४॥
सतगुन तमगुन कौ जबै, जीति रजौगुन लैय॥
तब जस लछमी कर्म करि, प्राप्त हौत दुष भैय॥ २५॥
अरु सतगुन रजगुनहि जब, लैत तमोगुन जीति॥
ताहि समै ह्वै जात है, इहै मनुष जड़ रीति॥ २६॥
सौक मोह निद्रा अलस, करनौं जीव संघार॥
ह्वै प्रवर्ति इन्ह मध्य नर, तम गुन कै अनुसार॥ २७॥
जा समैं ह्वै प्रसंन्न चित, ह्वै इंद्रिननि आनंद॥
अभय देह मैं हौहि मन, करै न किहुं दुष दंद॥ २८॥
इहि सतगुन सुषदाय है, म्हैरौ पद निरधार॥
सतगुन सम सुषदाय नहिं, रज तम गुन किहुँ बार॥ २९॥
करै कर्म बहु भांत कै, रहै प्रसंन चित नांहि॥
तन मैं रहै न चैन मन, भ्रमै अनैंकनि ठांहि॥ ३०॥
ताहि समैं पहचांनियै, रज गुन की बढवार॥
रजगुन तम गुन कै बढै, सुष न हौत किहुँ ढार॥ ३१॥
प्रगट सत्त्वगुन कै भयै, अमरन कै बल हौत॥
अरु रजगुन अनुसार ह्वै, दैतन बल ऊदौत॥ ३२॥
हौत राछसन कै अधिक, बल तम गुन अनुभाय॥
जांनत राछिस कै अधिक, रज तम गुन सुषदाय॥ ३३॥
प्रांनी जागत रहत है, सतगुन करि सब कौय॥
रजगुन करि देषै सुपन, तम गुन करि रहि सौय॥ ३४॥
अरु चौथी है अवसथा, तुरिय नांम सुकहाय॥
प्रगट हौत है नांमही, आत्म ग्यांन सुषदाय॥ ३५॥
सतगुन करि ह्वै प्राप्त नर, ऊंचै लौकनि ठौर॥
अरु नभ चारी हौत है, नर रजगुन कै तौर॥ ३६॥
वृछादिक कौ जनम ह्वै, सो तमगुन अनुसार॥
तीनौं गुन तजि मुहि भजै, ह्वै मो रूप सुढार॥ ३७॥
हौत स्वर्गगामी मनुष, सतगुन कै अनुभाय॥
मनुष लोक कै मध्य नर, रज गुन सौ प्रगटाय॥ ३८॥
तम गुन करि कैं लहत नर, नर्क महा दुषदाय॥
ग्यांनी जन ह्वै मुक्त सदा, म्हैरी प्रापति पाय॥ ३९॥
कर्म करै प्रांनी सु सब, मोहि समरपै चांहि॥
तिहँ फल निश्चै जांनियै, सत्वगुन रूप सदांहि॥ ४०॥

अरु चाहै फल वांछना, जो करि प्रांनी कर्म॥
ता फल कौ पहचांनियै, रज गुन रूपी मर्म॥ ४१॥
पुनि जो प्रांनी कर्म करि, करै जीयन संघार॥
सु तिहि फलहूं तमोगुनी, समझौ चित निरधार॥ ४२॥
मुक्ति हौहि जो ग्यांन करि, सतोगुनी सुग्यांन॥
अरु भ्रम ह्वै जा ग्यांन सौं, सो रजगुनी निदांन॥ ४३॥
ह्वै अग्यांनी जो ग्यांन करि, सो तमोगुनी रूप॥
मुहि जांनै जो ग्यांन करि, सो निरगुनी अनूप॥ ४४॥
बसनौं कांनन कै विषै, सो सतगुनी सथांन॥
बसन ग्राम मैं सो सथल, है रजगुनी प्रमांन॥ ४५॥
ग्रेह जु वाकौ हौहि सो, तमोगुनी है ठौर॥
म्हैरौ मंदिर हौहि सौ, निरगुन सथल सुतौर॥ ४६॥
कर्म करै हौवै नांहि, कर्मन मैं आसक्त॥
सो लीजै पहचांनि कर्म, सत्वगुनी बिच जक्त॥ ४७॥
कर्म करै आसक्त ह्वै, रजोगुनी सौ कर्म॥
म्हैरौ मांनि करै सोइ, निरगुन कर्म सुधर्म॥ ४८॥
भलै बुरै सब कर्म तैं, सुबुधि नष्ट ह्वै जाय॥
सो है कर्म तमोगुनी, सकल भांत दुषदाय॥ ४९॥
आध्यातम कौ ग्यांन ह्वै, तामैं सरधा हौत॥
सौ सतगुन रूपी सुभग, सुसरधा कौ उदौत॥ ५०॥
अरु कर्मन कै विषै निज, सरधा राषै चांहि॥
सौ सरधा है रजौगुनी, समझि भेद चित ठांहि॥ ५१॥
गनै अधर्महि धर्म करि, स्त्रधा तमोगुनी सौहि॥
मो सेवा मैं स्त्रधा सौ, स्त्रधा निरगुनी हौहि॥ ५२॥
जाचै बिनां पवित्र अंन, प्राप्त हौहि जो आय॥
सौ कहियतु है सतगुनी, अंन महा सुषदाय॥ ५३॥
जांसौ इंद्री प्रसंन है, अंन सु रजगुन रूप॥
दुषद अंन अपवित्र सौ, तमोगुनी जु सद्रूप॥ ५४॥
म्हैरौ महाप्रसाद सौ, निरगुन रूपी अंन॥
जाकै पायै हौत है, अति पवित्र तन मंन॥ ५५॥
सुष आत्मा कै ग्यांन कौ, प्राप्त हौत है आय॥
सोही सत्वगुन रूप है, समझहुँ आछै भाय॥ ५६॥
रूप रजोगुन कौ विषै, सो है प्रगट निदांनि॥
मांनत सुष अग्यांन करि, सुष तमगुनी सुजांनि॥ ५७॥

म्हैरै आस्त्रय हौहि सब, मांनत जौ निरधार॥
सो सुष निरगुन रूप है, पूरन सुष कौ सार॥५८॥
द्रिव्य देस फल अवसथा, निष्ठा ग्यांन रु क्रांति॥
काल कर्म कर्त्ता श्रद्धा, कर्म अनैंकनि भांति॥५९॥
अै सब भेद सुजांनियै, तीनहिं तीन प्रकार॥
सत्वगुन रजगुन तमोगुन, इन्ह तिहुँ गुन अनुसार॥६०॥
भाव मो विषै सर्वगुन, लष्यौ सुन्यौ कियो ध्यांन॥
पुरष रु माया मैं सिथत, स्वर्मण बुधि उनमांन॥६१॥
अै सब ठां गुन रूप है, समझहुं भलै प्रकार॥
प्रकति गुनन करि जीव कौ, अैसौ ह्वै संसार॥६२॥
अै गति लीनै जीव कै, मो करि रची सुढार॥
हौत जीव कै कर्म करि, और न कछु अनुसार॥६३॥
अरु जो आछी भांत सौं, जीव करै मो भक्ति॥
सो मुहि निश्चै प्राप्त ह्वै, परै नांहि बिच जक्ति॥६४॥
मनुष देह कौ पाय कै, माया गुन निरधार॥
जन प्रवीन ह्वै जे कोउ, मोहि भजै सब बार॥६५॥
सावधांन हौ चित्त निज, इंद्रीयन कौ जीति॥
ह्वै निसंग म्हैरौ भजन, करत सु आछी रीति॥६६॥
सेवन करि गुन सत्त्व कौ, रज तम गुन लै जीति॥
सांतताय सू सत्व गुनहि, पुनि जीतै सुभ रीति॥६७॥
जीति प्रकति कै तिहुँ गुननि, सूछिम तन कौ त्यागि॥
मो कौ प्रापति हौत है, नर सुबुधि सुबडभागि॥६८॥
सूछिम तन अरु प्रकति कै, गुनन सुं निव्रत सुहौय॥
तब मुहि प्रापति हौत है, जग बिच परत न सौय॥६९॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते पंचविंसोऽध्यायः ॥ २५ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ षड्‌विंसोऽध्यायः ॥

(पुरूरवा की वैराग्योक्ति)

॥ श्री भगवानुवाच ॥

दोहा - प्रभु बोलै बहु पुन्य करि, पावत मनुष सरीर ॥
तासौ करि मो भक्ति मो, दरसन लहै सधीर ॥ १ ॥
परमात्मा ह्वै हिर्दै मैं, परमानंद सरूप ॥
ताकौ प्रापति हौत है, करि मो भक्ति अनूप ॥ २ ॥
निव्रति हौत है जीव की, माया प्रगटै ग्यांन ॥
तब माया कै गुनन कौ, दैषत जीव निदांन ॥ ३ ॥
अैंपरि कछु पदारथ करि, क्यूंहूं जांनत नांहि ॥
करै प्रकति कै कार्ज तउ, लिप्त न ह्वै उन्हमांहि ॥ ४ ॥
जे अस जन तिन्हकी न हुव, विषै वासनां दूरि ॥
ग्यांनी पुरष करै नांहि, जिन्हकी संगति मूरि ॥ ५ ॥
उन्ह संगति कीनै परै, नर्क अंध तम मांहि ॥
इहै मनुष पावत महा, दुसह दुष्ष वा ठांहि ॥ ६ ॥
नैत्रहीन कौ ज्यौं कहूं, नैत्रहीन लै जांहि ॥
बै दोनूं ही षाड मैं, गिरत महा दुष पांहि ॥ ७ ॥
अैक चक्रवर्ती रह्यौ नृप, पुरूरवा हौ नांम ॥
सौइ मौहित उरवसि सौं, रहत भयौ वसि कांम ॥ ८ ॥
सो नृप अति दुष पाय कैं, ह्वै विरक्त पुनि आप ॥
अैसी गाथा कहत भौ, लषि विषैनि संताप ॥ ९ ॥
दैइ दिषाइ जु उरवसी, राजा कौ जिहि बार ॥
विह्वल भयौ पुरूरवा, ह्वै मोहित निरधार ॥ १० ॥
जात भई बहि उरवसी, नृप कौं तजि किहुं बार ॥
तबै नग्न उनमत्त ज्यौं, नृपति लागि उहिं लार ॥ ११ ॥
कहत भयौ हे उरवसी, ठाढी रहुँ मति जाय ॥
तौ दरसन कीनै बिनां, मोकौ दुष अधिकाय ॥ १२ ॥
विषै भोग नृप कौ करत, बीतै बरष अपार ॥
नहिं मनोर्थ पूरन भयौ, बढि तृस्नां अधिकार ॥ १३ ॥
चित्त पुरूरवा कौ लग्यौ, अपछर उरवसि मांहि ॥
तातैं चित मैं निस दिवस, सौ जांनत भौ नांहि ॥ १४ ॥
फिरि पुरूरवा नृपति कौ, प्रगट भयौ बैराग ॥
तबै कहत भौ अैं बचन, विषै भोग सुष त्याग ॥ १५ ॥

॥ पुरूरवा उवाच ॥

बोल्यौ नृपति पुरूरवा, देषै मो अग्यांन॥
मोहित ह्वै उरवसी सौं, राष्यौ नहिं निज स्यांन॥ १६॥
विषै भोग करतै गई, मो आर्बल सुबिताय॥
उदै अस्त मुहि सूर्ज कौ, पर्यौ नहिंन दरसाय॥ १७॥
कर्म सु निज बैदोक्त म्हैं, कीनैं नांहि बिचार॥
कितिक बरष बीतै युंही, ठग्यौ गयौ निरधार॥ १८॥
देषौ मोह अग्यांन मैं, चक्रवर्ती हौं राय॥
ताकौं क्रीडा मृग कियौ, मिलि अस्त्रीनि कुदाय॥ १९॥
लाज बडाइ छौडि कैं, म्हैं उनमत्त कीनी रीति॥
रुदन करत उरवसी कै, संगि लग्यौ धरि प्रीति॥ २०॥
सुधि आपन पै की बिसरि, लगत तिया के संग॥
तैज प्रताप सु हौत है, जास पुरष कौ भंग॥ २१॥
चल्यौ जात गंधर्व ज्यौं, संग गंधर्वी लागि॥
तिया करत त्रसकार तउ, इहि मांनत निज भागि॥ २२॥
विद्या मौन तप साधनौं, अरु रहनौं अैकंत॥
बिषै त्याग उपदेस सुभ, इतनी बात सुतंत॥ २३॥
निरफल है जा पुरष की, जिह चित हर्यौ तियांनि॥
कियै संग अस्त्रीन कौ, हौत ग्यांन की हांनि॥ २४॥
म्हैं अपनैं परलौक कै, कार्जन मांहि निदांन॥
सावधांन नांहिंन भयौ, रह्यौ मूर्ष अग्यांन॥ २५॥
अरु राष्यौ अभिमांन इहि, म्हैं पंडित निरधार॥
अैसौ म्हैं अग्यांन तिहिं, कोटि कोटि धिक्कार॥ २६॥
लहि संपति नृप पद सहित, धरि चित मैं अभिमांन॥
तिया वसि गंधर्ब ज्यौं वल, हौत भयौ तजि सांन॥ २७॥
भोग करत उरवसी सौं, बीतै बरष अनैंक॥
तऊ भयौ संतोष नहिं, नृप चित मांहि रतैक॥ २८॥
दिन दिन प्रति बढती भई, बहि ईछा अधिकार॥
ज्यौं घृत डारै अगनि मैं, हौत ज्वाल बढि बार॥ २९॥
अपतिव्रता तिय हर्यौ ह्वै, जाकौ चित किहुँ भाय॥
सौ चित चहै छुडावनौ, तौ नहिं सकै छुडाय॥ ३०॥
प्रभु अधोक्षज आत्म जे, करता पुरष उदार॥
तिन्ह बिनु कौऊ समर्थ नहिं, और छुडावन हार॥ ३१॥
कियौ उरबसी मुहि भलै, बचननि करि उपदेस॥
पै अग्यांन करिकै नहिंन, मोकौ लग्यौ लेस॥ ३२॥

नृप पुरूरवा कहत है, म्हैरो ही है दोष॥
लष्यौ रूप उरवसी कौ, है अति हित कौ पोष॥ ३३॥
अति चंचल इंद्री रही, म्हैरी सहित बिकार॥
भयौ यथारथ ग्यांन नहिं, तिन्हही कै अनुसार॥ ३४॥
जइसै रसरी कै विषै, अहि भ्रम ह्वै जिहँ बार॥
रसरी कौ नांहिंन रहत, ग्यांन किहूं अनुसार॥ ३५॥
इही सरीर अपवित्र अति, है दुरगंध जा मांहि॥
तामैं हौनौं मुहित सौ, भेद अविद्या जु आंहि॥ ३६॥
अस्त्री स्वामी मात पितु, गीध अग्नि अरु स्वांन॥
अैं अप अपनौं कहत है, या तनि कौ जु निदांन॥ ३७॥
तातै है तन कौनुँ कौ, सौ नहिं परत लषाय॥
सौहू थिरु नहिं रहत है, विनसि अैक दिन जाय॥ ३८॥
अैसौ झूठौ असुध तन, तिहँ यौं कहत अग्यांन॥
देषौ या तिय कौ वदन, है ससि पूनु समांन॥ ३९॥
तामैं तैं मनकौ हरन, प्रगट हौत है हासि॥
यौं कहि मांनत मोद मन, जांनि तियहिं सुषरासि॥ ४०॥
तुचा मांस रक्त मेद नस, मंज्जा अस्थि मलमूत्र॥
इन्ह करि रच्यौ सरीर इहि, प्रकति गुननि कै सूत्र॥ ४१॥
अैसौ लग्यौ सरीर इहि, जीवहि कर्मनि भाय॥
तामैं जो मुदि मांनिकैं, भोग करत सुषपाय॥ ४२॥
जांसै मांनत मुदि काम, परि बिष्टा कै मांहि॥
तातैं उन्ह पुरष रु क्रिमिनि, मैं कछु अंतर नांहि॥ ४३॥
तातैं विषयासक्त है, पुरष जितै जग मांहि॥
तिन्हकौ संग न करत है, ग्यांनी पुरष सदांहि॥ ४४॥
इंद्री विषै संजोग तै, मन चंचल ह्वै जाय॥
इन्हकौ ह्वै संजोग वहि, तौ ह्वै निश्चल भाय॥ ४५॥
दैषी सुनी न बस्त जो, मन न लगत तिन्ह मांहि॥
तातै इंद्रिन वसि करे, तौ मन वसि ह्वै जांहि॥ ४६॥
छह इंद्रीन ग्यानीहू, कौ लगि रही निदांन॥
सौहू विषयासक्त ह्वै, किहूं समैं बिनु ग्यांन॥ ४७॥
तौ अग्यांनी जनन की, गनती कहा चलाय॥
तातैं संग विषईन कौ, कीजै नहिं ललचाय॥ ४८॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

बोलैश्री भगवांन अै, उधव सुनहूं सुजांन॥
कहत भयौ युं पुरूरवा, तजि उरवसी सथांन॥ ४९॥

अपनैं वसि निज आपकौ, करत भयौ गहि ग्यांन॥
भयै अग्यांन निवर्ति मुहि, प्रापति भयौ निदांन॥ ५० ॥
तातैं नर बुधिवांन जे, तजि कुसंग की गैल॥
करै साधु सतसंग जो, टारि दैहि मन मैल॥ ५१ ॥
जिन्हकैं काहू बात की, इछा हौत है नांहि॥
जिन्हकौं चित म्हेरे विषै, लाग्यौ रहत सदांहि॥ ५२ ॥
सांत दांत ह्वै लषत है, सब ठां दिष्ट समांन॥
जिन्हकैं सुष दुष मोह अहं, जुत कुटंबन निदांन॥ ५३ ॥
अैसै म्हैरे साध है, बडभागी बुधिवांन॥
तिन्ह मैं ह्वै म्हैरी कथा, निश्चै अमृत समांन॥ ५४ ॥
अैसी म्हैरी कथा ह्वै, पाप मिटावन हार॥
ताहि कहत है साध जन, मनुष नहिंन निरधार॥ ५५ ॥
जो कौ वहि मो कथा सुनि, कहै सराहै चांहि॥
चितहि लगावै मो विषै, सो मो भक्तिहि पांहि॥ ५६ ॥
आनंद सरूप सुब्रह्महूं, जाकै गुन अनपार॥
तामैं प्रांनी कै हिर्दै, प्रगटै भक्ति सुढार॥ ५७ ॥
ताकौ या संसार मैं, वांछा रहै न कौय॥
तुच्छ लषै सब प्रभु बिनां, रहै प्रभु मय हौय॥ ५८ ॥
जो कौ प्रांनी अगनि की, सेवा करत सुभाय॥
ताकौ सीत अंध्यार कौ, भय कबहुं न प्रगटाय॥ ५९ ॥
त्यौंही साधुनि संग तैं, दूरि हौत अग्यांन॥
जा अग्यांन तैं लहत है, प्रांनी दुष अप्रमांन॥ ६० ॥
ज्यौं बूडै उछरै मनुष, परि समुद्र कै मांहि॥
ताहि सहाई सरन जब, ह्वै नउका वा ठांहि॥ ६१ ॥
त्यौंही सिंधु संसार मैं, जे बूडै है कौय॥
तिन्हकौ ठौर सुनांव की, साधु संग ही हौय॥ ६२ ॥
अंन सकल प्रांनीन कौ, जीवन है निरधार॥
अरु जे प्रांनी दुषित म्हैं, तिन्हैं सरन सुषसार॥ ६३ ॥
धन सुधर्म परलौक कौ, मैटन जम की त्रास॥
डरपत जे संसार तैं, जिह्नैं सरन हरिदास॥ ६४ ॥
स्थित रहत रवि की तरह, बैस्नव बिच संसार॥
ग्यांन रूप द्रिग दैत है, साधु महा सुषकार॥ ६५ ॥
बांधव देव सरूप है, साधू मित्र सुषदाय॥
अरु आत्मा भगवांन कै, निश्चै साधु कहाय॥ ६६ ॥

साधू मम प्रिय आतमां, म्हैरे रूप सुभाय॥
अंतरजोति सुग्यांन की, जें निश्चै प्रगटाय॥६७॥
हे उधव नृप पुरूरवा, छौडि उरवसी लौकि॥
अरु छौडि आसक्तताइ, सब ठां तैं मन रौकि॥६८॥
है आनंद सरूप जो, फिरत सकल भुव ठांम॥
जांनि तुछ संसार प्रभु, सरन गही अभिरांम॥६९॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते षड्विंसोऽध्यायः ॥ २६ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ सप्तविंसोऽध्यायः ॥

(क्रिया योग का वर्णन)

॥ उद्धव उवाच ॥

दोहा - उद्धव बोलै हे प्रभू, स्रेष्ठ बैस्नवन मांहि॥
कइसी भांति सु रावरौ, पूजन करत सदांहि॥१॥
बडे बडै जे रिषी सुर, ते कहि ऐसौ भेव॥
मनुषन कै कल्यांन की, करनहार हरि सेव॥२॥
इहही तुम्ह मुष कंज तैं, निकसी बात रसाल॥
सो सुनि नारद वृसपति, वेद व्यास जु क्रिपाल॥३॥
विधि विधिसुत भृगु आदि अरु, पार्वती महादेव॥
मार्ग बतावत है इही, प्रभु पूजा कौ भेव॥४॥
हे प्रभु आदर दैंन चहु, बर्न आश्रम रु नारि॥
इन्हकौं करन कल्यांन तुम्ह, पूजा मार्ग तुम्हारि॥५॥
हे करता संसार कै, कमल नैन घनस्यांम॥
काटै बंधन कर्म अस, पूजा मग अभिरांम॥६॥
म्हैं हूं भक्त सुरावरौ, इहि मग मोहि बताहुँ॥
मो मन तुव पद कँवल मैं, लागि रह्यौ जुत चाहुँ॥७॥

॥ श्रीभगवानुवाच ॥

बोलै श्री भगवान हे, उद्धव सुनहुं सुजांन॥
मो पूजा कै मार्ग कौ, नांहिंन पार निदांन॥८॥
अैंपरि म्है संछैप करि, तौकौ कहूं सुनाय॥
मो पूजा कै मार्ग है, तीन प्रकार सुभाय॥९॥

इक जु मग कह्यौ वेद नैं, इक कह्यौ तंत्रन मांहि॥
इक तंत्रन सौं वेद सौं, सामिल मार्ग कहांहि॥ १०॥
इन्ह तीनौं ही मार्ग मधि, ह्वै मनोर्थ जा मांहि॥
ताही मारग सौं करै, मो पूजन जुत चांहि॥ ११॥
धारन जग्यौपवीत कौ, करै पुरष इहि आप॥
जब बेदन मैं कह्यौ ज्यौ, मुहि पूजै जपि आप॥ १२॥
सरधा करि अरु भक्ति करि, मुहि पूजै जिहि भाय॥
सो म्हैं तौसौ कहत हूं, तू सुनि चित्त लगाय॥ १३॥
प्रतमां मधि पुनि प्रथी मधि, सूरज मधिजल मध्य॥
अगनि मधि द्विज मधि हृदै, मधि गुर मध्य प्रसध्य॥ १४॥
मोहि जांनि निहकपट ह्वै, पूजै भलै प्रकार॥
मो मैं अरु इन्ह ठौर मैं, करहि न भेद बिचार॥ १५॥
नित्य कर्म पहलैं करै, दंत धावनां आदि॥
पीछै करै सिनांन लै, म्हैरो नांम अनादि॥ १६॥
हौहि मनुष जा वर्न मैं, जाकै बतयै कर्म॥
संध्या तर्पन आदि सौ, कर्म करै तजि मर्म॥ १७॥
पाछै मो पूजा करै, करि संकल्प विधांन॥
प्रभु पूजा कै करन मैं, अलसावै न निदांन॥ १८॥
सुवरन काष्ट पषान मनि, म्रितका चंदन चित्र॥
इकहुँ मानसी आठ विधि, मो प्रतमां सुपवित्र॥ १९॥
इन्ह प्रतमां मैं द्वै तरह, अैक अचल चल अैक॥
प्रतमां ग्रह प्रभु वसन कौ, समझहुँ धारि विवैक॥ २०॥
हे उद्धव प्रतमां स्थिर, विषै सुभलै प्रकार॥
निति आवाहन विसर्जन, मंत्रन कै अनुसार॥ २१॥
आह्वान विसर्जन नहिं ह्वै, अचल प्रतमां सदाय॥
चल प्रतमां मैं करै नहिं, करै इछा कै दाय॥ २२॥
म्रतका की प्रतमां विषै, राषि आपनी चांहि॥
आवाहन अरु विसर्जन, आछै करै सदांहि॥ २३॥
प्रभू प्रतमां ह्वै चित्र की, तिहुँ न करावै स्नांन॥
और भांति आछै करै, पूजा हित विधांन॥ २४॥
हौहि भक्त मो निहकपट, तिहँ कछु प्रापति हौय॥
ताही सौ पूजा करै, म्हैरी निज चित गौय॥ २५॥
प्रसिद्धि द्रव्य ह्वै जास करि, करै जिग्य मो काज॥
जीव बध्य कौ जिग्य मैं, नांहिंन करै इलाज॥ २६॥

अरु जो कछु प्रापति न ह्वै, तौ धरि निज उर ध्यांन॥
सकल बस्त मुहि समरपैं, मनही कै उनमांन॥ २७॥
हे उद्धव प्रतमां सु मो, तिह सनांन करवाहि॥
आछै भूषन बस्त्र लै, पहरावै जुत चाहि॥ २८॥
अरु जो प्रथवी मैं करै, मो पूजन जुत प्यार॥
तो मो जा जा अंग मैं, बसत अमर निरधार॥ २९॥
बिन सबहिन मंत्रन सुकरि, पूजै भलै सथापि॥
अरु पावक मैं हौम करि, पूजै मोहि सदापि॥ ३०॥
उपस्थांन करि मंत्र सौं, मुहि पूजै रवि मध्य॥
अरु तर्पन करि जल विषै, पूजै मोहि प्रसध्य॥ ३१॥
सरधा करिकैं भक्त मो, पूजै अल्पहुँ सुभांति॥
तोहू मुहि आछौ लगै, परम मित्रता जुनांति॥ ३२॥
अरुअभक्त मुहि समरपै, सामग्री जु अनपार॥
तौहूं प्रसंन न हौउ म्हैं, मांनि मोद अधिकार॥ ३३॥
पहलै सुध ह्वै आप कुस, आसन परि थिर हौय॥
सुद्ध सामग्री पास लै, बैठै चित हित गौय॥ ३४॥
पूर्व वोर मुषहि करिकै, कर मुष प्रतमां वौर॥
बैठे चित थिर राषि कै, करि पवित्र भुव ठौर॥ ३५॥
अंगन्यास करन्यास विधि, पहलै करिकै आप॥
पाछै मो प्रतमां छुवै, जपि गुर मंत्रन जाप॥ ३६॥
काज सनांन सुजल कलस, लै बैठै निज पास॥
पात्र प्रोषणी नांम मधि, लै जल सहित हुलास॥ ३७॥
अमर स्थित मो देह मैं, तिन्हकौं रीति प्रकार॥
पूजै आछी भांति सौं, म्हैरो रूप बिचार॥ ३८॥
अैक मैं स्नांन कराही, अैक सौं अर्ध्यसुदैय॥
अैक नीर कौ कलस अै, तिहूं पात्र ढिग लैय॥ ३९॥
अर्ध्य पाद्य आचमन इन्ह, तिहूं काज कै अर्थ॥
ढिग राषै तिहुँ पात्र वै, प्रथमहि सुबुधि समर्थ॥ ४०॥
हृदै रु मसतक सिषा निज, पहलैं भलै प्रकार॥
पढि गायत्री सुमंत्र कौ, करै जु पवित्र सुढार॥ ४१॥
पवन अगनि तन मैं रहत, तिन्हकौं करिकै जोग॥
प्रथमहिं अपनीं देह कौ, करै सुविधि सुध योग॥ ४२॥
ता पांछै हिय कमल मैं, है मो सूछिम रूप॥
ताकौ आछी भांत सौं, धारै ध्यांन अनूप॥ ४३॥

जोगीस्वर कै हृदै मैं, सब्द हौत है अैक॥
ता पाछै वा आत्म कौ, देषै सहित विवैक॥ ४४॥
आत्मा जोति सरूप है, जास सरीर कै मांहि॥
ताकी सेवा मांनसी, करिकै निज चित ठांहि॥ ४५॥
वाहि ध्यांन बाहरि बहुरि, मो प्रतमां मधि राषि॥
मो सैवा पूजा करै, जुत सनैह अभिलाषि॥ ४६॥
अंगुछा पात्र सिनांन कौ, सबै सामग्री और॥
चहियै सौ निज निकट लै, बैठै पूजन ठौर॥ ४७॥
धर्म आदि नव पारषद, जे म्हैरे है दास॥
तिन्ह जुत मो आसन करै, लषिकैं सुभग निवास॥ ४८॥
जास ठौर मैं अष्टदल, पंकज जु चित्राकार॥
सहित केसरी कर्निका, लषैं भलै अनुसार॥ ४९॥
तंत्रन मैं अरु वेद मैं, जइसी रीति प्रभाय॥
म्हैरी पूजा कौ कह्यौ, मारग भलै जताय॥ ५०॥
ता करिकै आछै करै, मो पूजन सुषसार॥
दुहू मार्ग अै सिधि कै, दैंनहार निरधार॥ ५१॥
चक्र सुदर्सन संष धनु, बांन गदा अरिसाल॥
कौस्तुभ मनि हल मुसल श्री, चिह्न बैजंती माल॥ ५२॥
इन्ह सबकौ पूजन करै, पहलै भलै प्रकार॥
विनम्र हौंहि वंदन करै, धरि उर ध्यांन सुढार॥ ५३॥
नंद सुनंद प्रचंड बल, गरुड महाबल व्यास॥
विषुकसैंन अरु कुमद चंड, कौमोदन सुषरास॥ ५४॥
द्रुगा विनायक अमर सब, बसत अंग मो मांहि॥
तिन्हकौ प्रोषन कर भलै, पूजन करै सदांहि॥ ५५॥
चंदन अगर कपूर षस, और सुगंध जितैक॥
जल मैं मैलि सिनांन मुहि, करवावै गहि टैक॥ ५६॥
धन है तौ यौं नित्यही, मोहि करावै स्नांन॥
नहिं तौ उत्सव समैं दिन, अैसौ करै विधांन॥ ५७॥
राजनादि सहस्त्रसीर्सा, स्वर्नधर्मा अैं मंत्र॥
पढै बिद्या महापुरष करि, प्रभु स्नांन कै तंत्र॥ ५८॥
मुहि सिनांन करवाय कै, अंग अंगौछि सुढारि॥
फिरि मनोर्थ मो दास कौ, ह्वै जइसै अनुसारि॥ ५९॥
पटभूषन माला पुहप, सुगंध जनेउ आदि॥
पहराई रु सिंगार मो, करवायै अहलादि॥ ६०॥

चरनामृत आचमन के, पात्र सुगंध फल फूल॥
धूप दीप रु अछित सहित, इतनीं बस्त समूल॥ ६१ ॥
मोहि निवेदन करै निति, प्रेम भक्ति संजुक्त॥
म्हैरे दरसन मैं सदा, चित राषै अनुरुक्त॥ ६२ ॥
पुवा पापडी षीर गुड, थूली आदि सुढार॥
सामग्री मोहि भोग कौ, धरै अनैंक प्रकार॥ ६३ ॥
उत्सव दिन पंचांऽमृतहिं, करवावै असनांन॥
उबटन करि फिरि सुध जलहि, ढारै अंग सथांन॥ ६४ ॥
नित तैं उत्सव दिन धरै, सामग्री जु अधिकाय॥
रु नृत्य गीत बाजित्र जुत, उत्सव करै सुभाय॥ ६५ ॥
ऐसी म्हैरी सेव करि, अग्निहौत्र करै फेरि॥
कहियतु वेदन मांहि सौ, रीति आपु लै हेरि॥ ६६ ॥
वेद रीति सौं चौंतरी, कुंड सुभलै बनाय॥
चहूं वोर या कुंड कै, कुस लै धरै सुभाय॥ ६७ ॥
आधान अन्वाधान करि, समिधा जल प्रोषाय॥
बहुरि स्थापना अग्नि कौ, करै कुंड मैं ल्याय॥ ६८ ॥
सौंज हौम की सुध करै, मंत्रन करि जल छांटि॥
हौम करै फिरि मंत्र पढि, हृदै ध्यांन मो थाटि॥ ६९ ॥
जइसौ तप्त सुवर्न है, तइसौ म्हैरो रूप॥
संष चक्र नीरज गदा, चहुँ कर धरै अनूप॥ ७० ॥
पीतांबर धारन कियै, धरै सत्वगुन भेव॥
दैदिप्यमांन सु आभरन, पहरै प्रभू अजेव॥ ७१ ॥
सीस मुकट कटि किंकनी, बाजू बंध भुजांनि॥
कौस्तभ मनि श्रीचिह्न वन, माला हृदै सथांनि॥ ७२ ॥
हाथन मैं सौभित कडा, अरु मुंदिरनी पांति॥
नूपर पद पंकजन मैं, बाजत आछी भांति॥ ७३ ॥
करै आपनैं हृदै मैं, ऐसौ म्हैरो ध्यांन॥
सकल सौंज लै हौम की, हौम करै जुत ग्यांन॥ ७४ ॥
मंत्र षोडसा अषिरी करि, हौम करै चित लाय॥
कहै मंत्र कै अंत मैं, स्वाहा सब्द सुभाय॥ ७५ ॥
धर्म आदि पार्षदन हित, हौम करै जिहँ बार॥
स्विष्टकृत स्वाहा इहै, सब्द कहै निरधार॥ ७६ ॥
पारषदनि सबहीन कौ, पूजन करि बलि दैय॥
नमसकार वा ठौर करि, हौम जु करै सुभैय॥ ७७ ॥

कियौ मंत्र उपदेस गुर, ताहि जपै गहि मौंन॥
हरिमय सब संसार कौ, देषै सदा सुठौंन॥ ७८॥
भोग लगावै मोहि सौ, फिरि उठाय कै लैय॥
विषुकसैंन मो पारषद, तिहं आगै धरि दैय॥ ७९॥
प्रभुहि करावै आचमन, सुषद नीर लै दास॥
बहुर्यौ प्रभु आगै धरै, तांबूल रु मुष वास॥ ८०॥
मग्न हौहि म्हैरै समुष, करै नृत्य अरु गांन॥
करै आरती फेरि तिहँ, संग वारि निज प्रांन॥ ८१॥
स्थिर रहै अैक मुहुर्त मो, सुनै सुनावै गाथ॥
मध्य पुरान स्तोत्र जे, पढै नाय निज माथ॥ ८२॥
कै काहु महापुरष कै, कियै स्तोत्र जो हौहि॥
तिन्हकौ आछी भांत सौं, पढै भेद अवरौहि॥ ८३॥
हे हरि मो परि प्रसंन हौ, इहि कहि करै प्रनांम॥
फेरि कहै म्हैं रावरी, गही सरन अभिरांम॥ ८४॥
अघरूपी सामुद्र अरु, मृत्यु तैं हौं भय पाय॥
आयौ सरनै रावरै, तुम्ह मौं करौ सहाय॥ ८५॥
फेरि करै मो विसर्जन, करि हित जुत परनांम॥
आदर महाप्रसाद कौ, करि राषै सिर ठांम॥ ८६॥
जितनैं मौ अवतार तिन, मधि जिहँ प्रतमां मांहि॥
याकौ हौहि मनोर्थ जिहि, पूजै धरि चित चांहि॥ ८७॥
सबकै मध्य विराजही, म्हैरो आत्म सरूप॥
जाकौ करै बिचार निति, परम प्रीति संजूप॥ ८८॥
कह्यौ वेद तंत्रनहि मधि, मो पूजन या भाय॥
ताकौ जो प्रांनी करै, आछै निज चित लाय॥ ८९॥
या लौक रु परलौक मैं, जिह वांछित सिधि हौय॥
मो सेवा तैं और कछु, सुषदायक नहिं कौय॥ ९०॥
म्हैरी प्रतमां कै निमत, मंदिर रचै सुढार।।
पुहप चढावन काज वन, सथल जु करै उदार॥ ९१॥
हित जुत मोकौ समर्पित, करै छैत्र पुर ग्रांम॥
तांह प्रभु की सेवा अरु, उत्सव है अभिरांम॥ ९२॥
तौ बहि निश्चै हौहि जन, म्हैरी देह समांन॥
करवाये मो पितु कै जु, है भुव ईस निदांन॥ ९३॥
म्हैरौ पूजन रचै है, तिहूं लौक कौ ईस॥
म्हैरौ पूजन करि लहै, विधिपुर बिसवाबीस॥ ९४॥

अरु तीनौं विधि कियै तैं, लीन हौहि मो मांहि॥
जनम मरन कौ दुष्य वहि, कबहूं पावै नांहि॥ ९५॥
अरु मुहि पूजै भक्ति जुत, कछु फल चाहै नांहि॥
तौ म्हैरी प्रेमा भगति, प्रगट हौहि हिय ठांहि॥ ९६॥
औरनि दीनी हौहि कै, आपहि दीनी हौय॥
द्विज गौ की आजीविका, दूरि करै पुनि कौय॥ ९७॥
सौ कैतिक सहसनि बरष, ह्वै क्रमि विष्टा मांहि॥
महादुष्य भुक्तै जु पर्यौ, लहै पार कछु नांहि॥ ९८॥
जु कहै अधरम करन कौ, अरु जो करै अधर्म॥
बहुरि सराहै जो कोउ, कियौ महा अघ कर्म॥ ९९॥
वा पापी कै बै सबै, संगी हौत निदांन॥
वैहूं मिलि वा पाप कौ, फल भुक्तै बिनु ग्यांन॥ १००॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते सप्तविंसोऽध्यायः ॥ २७॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अष्टाविंसोऽध्यायः ॥

(परमार्थ निरूपण)

॥ श्री भगवानुवाच॥

दोहा - बोलै श्रीभगवान यौं, कर्म सुभलै जु राय॥
तिन्हकी निंदा अरु अस्तुति, नांहि करै किहुँ भाय॥ १॥
प्रकति पुरष करिकै रच्यौ, अै है सकल संसार॥
ताकौ ब्रह्म सरूप करि, देषै बिनां बिकार॥ २॥
कर्म सुभाव पराय की, कियै असतुति निदांन॥
निज स्वारथ ह्वै जात है, सकल नष्ट इहि मांन॥ ३॥
रजोगुनी अहंकार करि, जे इंद्री प्रगटाय॥
तिन्हमैं मन संजोग सौ, जीव स्वपन दरसाय॥ ४॥
अरु कै प्रापति हौत है, घोर सुनिंद्रा मांहि॥
यौ चित लागै द्वैत मैं, बउत पदार्थ लषांहि॥ ५॥
पहलैं तौ संसार ही, झूठौ है निरधार॥
तामैं बुरे भलै सबै, भेदहुँ झूठ प्रकार॥ ६॥
मन वचनन करि ध्यांन करि, जो दैषत नर बस्त॥
सौ सब निश्चै झूठ है, बिच संसार समस्त॥ ७॥

छाया प्रतिधुनि झूठ है, अै सति सौ दरसाय॥
अैसै ही या जीव कौ, देहादिक अनुभाय॥ ८॥
बढनौं मरनौं उपजनौं, झूठौ सति दीसंत॥
तामैं मोहित हौहि नहिं, जो कौ ह्वै बुधिवंत॥ ९॥
प्रभु आपुन कै ही विषै, रच्यौ जु इहि संसार॥
ताहि करत है प्रगट फिरि, रचना रचि अनपार॥ १०॥
चाहत कीनौं रछा जब, रछा करत बहु भाय॥
चाहै किय संसार पुनि, करत संघार कुदाय॥ ११॥
चाहै कियौ संसार पुनि, करत संघार सदाय॥
तातैं इहि संसार सब, ब्रह्म रूप निरधाय॥ १२॥
झूठी प्रकति कै गुन करि, दीसत तीन प्रकार॥
माया करिकै ह्वै रच्यौ, इहि झूठौ संसार॥ १३॥
सो है तीन प्रकार कौ, समझत समझनहार॥
अध्यात्म अधिदेव अधिभुत, प्रतीतिकौ व्यौहार॥ १४॥
यौं विधांन मो करि कह्यौ, आछै भेदि बषांनि॥
ग्यांऩ विग्यांन संजुक्त ह्वै, जांनै मनुष सुजांनि॥ १५॥
तातै निंदा अस्तुति कहु, करत न पुरष सुग्यांनि॥
रवि की नांई फिरत है, वै बिच प्रथवी स्थांनि॥ १६॥
करि प्रतिछ रु अनुमांन करि, वेदनि करि करि ग्यांनि॥
आदि अंत संसार कौ, भली भांति पहचांनि॥ १७॥
या झूठै संसार मैं, विचरत हौहि निसंक॥
उन्हकौ झूठी प्रकति कौ, लागि सकत नहिं पंक॥ १८॥

॥ उद्धव उवाच ॥

उद्धव बोलै हे प्रभू, इहि झूठौ संसार॥
आत्मा कौ अरु देह कौ, नहिंन लग्यौ निरधार॥ १९॥
जीव तुम्हारौ अंस इहि, काहि लग्यौ संसार॥
सो मो सौ आछै कहौ, हे स्वांमी करतार॥ २०॥
आत्मा कौ नहिं नास नहिं, लगै प्रकति गुन तीन॥
सुध है रूप प्रकास है, किहुँ करि धर्यौ न लीन॥ २१॥
अैसौ आत्मा ही रहै, या सरीर कै मांहि॥
जइसी भांत सु रहत है, अगनि काष्ट कै ठांहि॥ २२॥
तातैं किहुँ झूठौ लग्यौ, इहि संसार निदांन॥
सो कहियै समझाय मुहि, हे प्रभु क्रिपा निधांन॥ २३॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

उद्धव कौ सुनि कै वचन, बोलै श्री भगवांन॥
जबलौं आत्मा सहित है, इंद्री देह रु प्रांन॥ २४॥
तब तांई ही है सही, इहि झूठौ संसार॥
अग्यांनी प्रांनीन कौ, लागि रह्यौ निरधार॥ २५॥
जब लौं इन्ह संजोग है, तब लौं लग्यौ संसार॥
ज्यौं विषैन कौ ध्यांन ह्वै, जबलौं सत्य प्रकार॥ २६॥
जइसै सुपनैं मैं लषै, भेद अनैंक प्रकार॥
ते सपनौं है जबहि लौं, साचै है निरधार॥ २७॥
सौवत है जब लषत है, स्वपन अनैंक प्रकार॥
जागै जब जांनै सही, स्वपन इहै विवहार॥ २८॥
जइसै ही अग्यांन करि, सत्य मांनै संसार॥
ग्यांन प्रगट ह्वै जब लषै, झूठै जगत प्रकार॥ २९॥
सोक मोह चहनौं जनम, हरष क्रौध भय लौंभ॥
मृत जुत अै अहंकार करि, जीवहि लगत असौभ॥ ३०॥
अरु अै सब लागत नांहि, आत्मा कौ किहुँ वार॥
आत्मा साषीभूत है, प्रभु सरूप सुषसार॥ ३१॥
जीवात्मा अभिमांन गुन, तन मन इंद्री प्रांन॥
कर्म सूत्र महतत्व इन्ह, करि जग रच्यौ निदांन॥ ३२॥
तामधि मैं व्यापक रहत, काल रूप करतार॥
झूठौ है जग लषि परत, रूप अनैंक प्रकार॥ ३३॥
कर्म प्रांन तन मन वचन, इन्ह करि नर बुधिवांन॥
ग्यांन सरूपी षडग गही, दूरि करै अग्यांन॥ ३४॥
त्रस्नांहू सब छौडि कै, ग्यांनी पुरष सुजांन॥
ह्वै न बंध संसार मैं, बिचरत फिरत निदांन॥ ३५॥
तपस्या वेद विवैक अरु, प्रतछि आतमा ग्यांन॥
परंपरालौकीक की, काल हेतु उनमांन॥ ३६॥
इन्ह करि आदि रु अंत मैं, पहचांनै ब्रह्मरूप॥
मधि बिच झूठौ जगत है, सो हू ब्रह्म अनूप॥ ३७॥
ज्यौं सुवर्न ही जात रहि, आदि अंत कै मांहि॥
मधि बहु भूषन हौत सौ, कंचन ही दरसांहि॥ ३८॥
तइसै ही या जगत कै, आदि अंत मधि मांहि॥
सही ब्रह्म ही है सदा, ब्रह्म बिनां कछु नांहि॥ ३९॥
अधिभूतक अधयातमक, अधिदइवक त्रय भेव॥
इन्ह करि रचै सरीर अै, सकल सृष्टि कै देव॥ ४०॥

ताकै मधि मन करत है, बिबिधि भोग जुत चाय॥
जाग्रत सुपन सुषौप्त इन्ह, तिहूं अवसथा भाय॥ ४१ ॥
भोग अवसथा है सबै, झूठै सुनि निरधार॥
अग्यांनी जन सांच करि, मांनत बिना बिचार॥ ४२ ॥
अरु चतुरथ उनमीलनी, जांनि अवसथा नांम॥
तामैं जोगीस्वरन ह्वै, ग्यांन सुसति अभिरांम॥ ४३ ॥
पहलै रह्यौ न जगत पुनि, पीछै रहि है नांहि॥
दैत दिषाई मध्य मैं, बहु विवहार सदांहि॥ ४४ ॥
प्रगट भयौ है ब्रह्म तैं, इहै सकल संसार॥
तातै ब्रह्म सरूप ही, है जांनहु निरधार॥ ४५ ॥
जो जातैं ह्वै प्रगट सो, है वाही कौ रूप॥
इहि मत है म्हैरौ सही, समझहु भेद अनूप॥ ४६ ॥
भयौ रजोगुन करि प्रगट, इहि जग प्रकति संजूप॥
सो झूठौ ही लषि परत, ब्रह्म प्रकासक रूप॥ ४७ ॥
तनमात्रा मन सुर इंद्री, इन्ह रूपन अनुसार॥
बहु प्रकार कौ ब्रह्म ही, दरसत है निरधार॥ ४८ ॥
बहु भांति रु गुर वचन सौं, दूरि करै अग्यांन॥
जांनै ब्रह्म सरूप ही, सकल जगत उनमांन॥ ४९ ॥
निज संदेह अनैंक है, तिन्हकौं करिकैं दूरि॥
आनंद रूप मनोर्थ सौ, ह्वै संतुष्टि सपूरि॥ ५० ॥
इहि सरीर नहिं आतमा, जानहुँ प्रथी विकार॥
दीसत चयतनता सु है, आत्म संग अनुसार॥ ५१ ॥
इंद्री सुर जल अगनि मन, प्रांन अंन अहंकार॥
बुधि भूत माया अैं सब, आत्मा नहिं निरधार॥ ५२ ॥
न्यारौ है इन्ह सबन तैं, सौ है आत्म अनूप॥
जाहि पिछांनै तैं मनुष, हौहि आत्म ही रूप॥ ५३ ॥
म्हैरी इंद्री गुनन करि, निश्चल चंचल हौय॥
तउ इन्ह दोनू भांति करि, मो बिगार नहिं कौय॥ ५४ ॥
ज्यौं घन रवि कौ ढांकि लै, तौ रवि कौनुं बिगार॥
रु घन दूरि जो हौहि तौ, रवि कौ कछु न सुधार॥ ५५ ॥
भांन प्रकास सरूप है, अैसौ ही इक सार॥
जइसै नभ इन्ह गुननि करि, लिप्त न ह्वै किहुँ बार॥ ५६ ॥
प्रिथवी पवन रु अगनि जल, इन्ह गुन सुनौ प्रवीन॥
सौष लै न दै न जराय, करै न काच मलीन॥ ५७ ॥

इन्ह करिकैं रित औरहूं, आवत औसर पाय॥
हौत लिप्त आकास नहिं, इन्ह गुन कै अनुभाय॥ ५८॥
अैसौ ही जो ब्रह्महूं, ताकौ सदा उदौत॥
सत रज तम इन्ह गुनन करि, लिप्त नांहिंनै हौत॥ ५९॥
इन्ह मैं अहं मतिमांन है, ताहि लगै संसार॥
लागै तै संसार फिरि, दुष्ष पावै अनपार॥ ६०॥
जितै पदारथ प्रकति कै, रचै जगति कै मांहि॥
तिन्हकौ जबलौं संगि लै, प्रांनी करै सुचांहि॥ ६१॥
तबलौं म्हैरी भगतिद्रिढ, करिकैं भलै प्रकार॥
अपनैं मन कै मैल सब, सकै नांहिनैं टार॥ ६२॥
धात आदि जे औषदी, देवै बैद अग्यांन॥
तो फिरि फिरि ह्वै प्रगट बहि, रोग न जाय निदांन॥ ६३॥
तइसै जोगी जोग करि, मन द्रिढ कियौ न हौय॥
तौ फिरि फिरि संसार मैं, ह्वै यौं हित चित गौय॥ ६४॥
देवतांन कै कियै सिष, मानुष रूपहिधारि॥
कु जौगीन कै जोग मैं, अंतर करत अपारि॥ ६५॥
पहलैं जनम अभ्यास तैं, बहुर्यौ जनम सुधारि॥
करत जोग करत न करम, जोग भ्रष्ट नरनारि॥ ६६॥
किहूं जगत करि फेर मैं, प्रांनी करम करंत॥
मरनैं तांई करत है, करम विधांन अनंत॥ ६७॥
अैं उन्ह कर्मन मैं कबहुं, ह्वै आसक्त सुनांहि॥
ज्यौं आवत सब ठां पवन, पै न लिप्त किहुं ठांहि॥ ६८॥
परमातम कौ ग्यांन जब, प्रगटै परम अनूप॥
तब त्रस्नां ह्वै निव्रिति निति, रहै आनंद सरूप॥ ६९॥
बैठत चलत भोजन करत, करत मूत्र मल सैंन॥
इन्ह जुत और सुभाव करि, करमनि करत सुषैंन॥ ७०॥
इन्ह कर्मन कौ जांनत नहिं, जिहि ह्वै आतम ग्यांन॥
सहजहि मैं ह्वै जात नहिं, करत बढाय निदांन॥ ७१॥
इंद्री तुरी निकरि लषत, प्रकति पदार्थ अपार॥
पै अनैंकहू भांत करि, मांनत विरुध प्रकार॥ ७२॥
प्रकति पदार्थनि सत्य करि, कबहूं जांनत नांहि॥
सब उपाधि ग्यांनीन की, हौत निवर्ति अथांहि॥ ७३॥
करि गुन कर्म अग्यांन तैं, ग्रहन करै जो बस्त॥
तै आत्मा कै ग्यांन तैं, हौत निवर्त समस्त॥ ७४॥

कर्मनि करत न तजत है, आत्मा काहू भाय॥
सो इस्वर भाव ह्वै मनुष, आत्म ग्यांन कौ पाय॥ ७५ ॥
ज्यौं सूरज कै उदै मैं, अंधकार मिटि जांहि॥
त्यौं ही प्रगटै ग्यांन जब, बुधि कैं मैल मिटांहि॥ ७६ ॥
आत्म प्रकासक रूप है, जाकी उतपति नांहि॥
अद्विितीय है अैक है, आतम वचननि मांहि॥ ७७ ॥
निश्चै जा आत्माहि करि, प्रैरत वांनी प्रांन॥
आत्मा ही कै संग सौं, चलत रु फिरत निदांन॥ ७८ ॥
आत्मा तैं मांनत जुदै, और पदार्थनि आप॥
इतनौं ही मन कौ सही, है तुम्ह दैन संताप॥ ७९ ॥
आत्मा तैं न्यारौ न है, और पदारथ कौय॥
आत्मा सौ सांमिल सुजग, समझहुँ निज चित गौय॥ ८० ॥
नांम रु आक्रति करि कहन, दैषन मैं जो आय॥
ते पदार्थ झूठै सही, मानहुँ भेद सुभाय॥ ८१ ॥
जे कौ आपस मैं झगरि, इन्हकौं सत मांनैत॥
ते पंडित नहिं आपकौ, पंडित करि जांनैत॥ ८२ ॥
जोग करन मैं जोग सिध, पूर्न ह्वै सकै नांहि॥
रोगादिक ह्वै प्रगट तिहँ, या अनुसार मिटांहि॥ ८३ ॥
कितिक रोग ससि सूर्ज की, करि धारना मिटाय॥
कितिक पवन की धारना, कियै दूरि ह्वै जाय॥ ८४ ॥
कितिक मंत्र तप वौषधी, करि मेटै निरधार॥
तासौ पावै देह सुष, सिधही जोग प्रकार॥ ८५ ॥
अरु धरि म्हैरो ध्यांन करि, नांम कीरतन चांहि॥
पुनि करि जोगिन टहल अघ, रूपी रोग मिटांहि॥ ८६ ॥
अरु केतिक या देह कौ, लहि कै धीरजवंत॥
बहु उपाय सौं जोग सिध, करि सिधि कौ चाहंत॥ ८७ ॥
कुसल रूप है पुरुष जे, सिधि आदर न करंत॥
जे सिधि प्रगटत जोग तैं, जोगी कौ उलहंत॥ ८८ ॥
जइसै बृछ तैं उपजि फल, फेरि नष्ट ह्वै जात॥
त्यौंहि जोग तैं सिधि प्रगट, समै पाय बिनसात॥ ८९ ॥
जोग करत तन हौत द्रिढ, तामैं जिनि सरधान॥
तैं जौगहि तजि मो सरन, आवत साधु सुजान॥ ९० ॥
जोग करै अरु मो सरन, जो ह्वै प्रापति कौय॥
जास जोग कै करन मैं, बिघन न कबहूं हौय॥ ९१ ॥

आत्मा कै आनंद करि, बहि जोगेस सुजांन॥
किहूं बस्त की धरत नहिं, कबहूं चाह निदांन॥ ९२॥
जाकै रहै न कामनां, निस्पृह स्वयं सुषाय॥
आतमानंद मैं मगन, जोगी सहज सुभाय॥ ९३॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अष्टाविंसोऽध्यायः ॥ २८॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ औकोनत्रिंसोऽध्यायः ॥

(भागवत धर्मों का निरुपण और उद्धव जी का बद्रिकाश्रम गमन)

॥ उद्धव उवाच॥

दोहा - उद्धव बोलै हे प्रभू, सुनहुँ कमलदल नैंन॥
जोगहि म्हैं जांनत कठिन, अति परिश्रम कौ अैंन॥ १॥
जा साधन सौं इहि पुरष, बिनु परिश्रम तरि जाय॥
सो तुम्ह आछी भांत सौं, मो कौ कहौ सुनाय॥ २॥
जोगीस्वर मन आपनौं, लावत जोगहि मांहि॥
तब निज मन वसि करन मैं, पावत षैद अथांहि॥ ३॥
दैंनहार आनंद कै, तुव पद कंवल रसाल॥
तिन्हकौं भक्त सु रावरै, सैवत है सब काल॥ ४॥
तामैं जो सुष हौत है, उन्हकौ प्राप्त सुभाय॥
सो सुष कर्म रु जोग मैं, कबहूं नांहिंन पाय॥ ५॥
जे तुव माया सौं मुहित, प्रांनी बिच संसार॥
ते सब जोग रु कर्म मैं, सुष मांनत निरधार॥ ६॥
हे प्रभु दास जु रावरै, और सरन नहिं जात॥
तिन्हकै तुम्हही हौ सही, मित्र बंधु पुनि तात॥ ७॥
तिह्वै मुक्ति साजौज्य तुम्ह, दैत दास निज जांनि॥
तामै नांहिंन है कछू, अचिरज भेद निदांनि॥ ८॥
इंद्र पुरी सम ग्रह विभौ, तजि तजि बडै नृपाल॥
जात भयै वन तुव निमत, साधन भगति विसाल॥ ९॥
तुम्ह सबही प्रांनीन कैं, हौ प्रिय आतम ईस्व॥
सकल पदार्थन कै सदा, दैंनहार जगदीस्व॥ १०॥

द्विज चांडाल रु बिप्र कै, द्रवि कौ चोरनहार॥
ब्रह्मन्य अर्क कनि अग्नि, सांत क्रूर आकार॥ २७॥
इन्ह सबहिन कै मध्य है, जाकी द्रिष्टि समांन॥
सो नर कहियंतु है भलै, पंडित परम सुजांन॥ २८॥
अलप कालही मैं नरनि, विषै सु बारंबार॥
है मो भाव सु पुरष कौ, हौहि भलै अनुसार॥ २९॥
स्पर्धा अरु त्रसकार पुनि, अैक असूया जांनि॥
इन्ह सबकौ निरधार करि, हौत जु नास निदांनि॥ ३०॥
जबलौं सब प्रांनीन मैं, प्रगटै नहिं मो भाव॥
तब तांई निति प्रति अधिक, राषि हृदै निज चाव॥ ३१॥
मन सरीर इंद्रीन करि, अरु सुनि बचन रसाल॥
इन्ह करि मो सैवन करै, छौडि जगत जंजाल॥ ३२॥
सब ठां ईस्वर कौ लषै, इहि इक विद्य प्रकास॥
ताकरि कै सरवत्र ब्रह्म, रूप सु परही भास॥ ३३॥
अरु ब्रह्म लषत विश्राम कौ, प्राप्त हौय निरधार॥
दूर भयै चहुँ ओर तैं, जिह संदेह प्रकार॥ ३४॥
है मग रूप कल्यांन जे, तिन्ह सबहिन कै मांहि॥
मोकौ पूजन करन कौ, मारग उत्तम आंहि॥ ३५॥
मन सरीर व्रति वचन करि, अति द्रिढ करि जो चूप॥
सकल भूत प्रांनिन विषै, देषै म्हेरौ रूप॥ ३६॥
हे उद्धव निहकाम मो, धर्म महा सुषसार॥
ताकौ काहू करि न है, कबहू नास विचार॥ ३७॥
मो करि निश्चै कियौ है, वहि धर्म सुष सार॥
म्हैं निर्गुन तिह ईछा नहिं, बही धर्म अनुसार॥ ३८॥
कबहूं म्हेरै धर्म कौ, नहिंन हौत है नास॥
सदा स्थिर है सत्य है, अति आनंद निवास॥ ३९॥
और कर्महूं सहज मैं, प्रांनी करही कौय॥
करै समर्पित मोहि सो, नर निहकाम जु हौय॥ ४०॥
तो वै कर्महूं जात है, नष्ट कर्म कै रूप॥
तिन्हि सौं सब दुष जांहि मिटि, है आनंद अनूप॥ ४१॥
तइसै ही भय सोक इन्ह, कारन दोर निषेद॥
बुधिवंतन कौ हौत नहिं, समझहुँ उद्धव भेद॥ ४२॥
बुधिवंतन की बुधि इही, इहि चतुरनि चतुराय॥
मो सत रूपहि प्राप्त है, झूठै तन कौ पाय॥ ४३॥

उधव म्हैं संछेप तुही, पूर्न कह्यौ ब्रह्मवाद॥
देवतानिहू कौ कठिन, है इहि ग्यांन अनाद॥ ४४॥
जुक्ति सहित इहि ग्यांन म्हैं, कह्यौ सु बारंबार॥
रहत अग्यांन संदेह नहिं, याकौ जांनि बिचार॥ ४५॥
आछौ हुतौ सु प्रस्न जिहि, म्हैं किय धारन चांहि॥
प्रसंन हौहि तौ प्रस्न सौं, बरन्यौ ग्यांन अथांहि॥ ४६॥
छिप्यौ वेद मैं हम्‌ सदा, ऐसौ ग्यांन सुढार॥
जांनि लैय तो ब्रह्म कौ, प्राप्त हौहि निरधार॥ ४७॥
म्हैरै भक्तन कौ इहै, देय बउत जो ग्यांन॥
ताकौ म्है निज अपनपौ, देहि भलै उनमांन॥ ४८॥
पाठ करै याकौ कोउ, अरु किहुँ दै उपदेस॥
सो अतिहि पवित्र हौहि नर, रहै न अघ कौ लेस॥ ४९॥
सरधा करिकै मनुष जो, सावधांन चित हौय॥
याहि सुनै म्हैरै बिषै, भक्ति करै चित गौय॥ ५०॥
तो बहि कर्मन कौ कबहुँ, बंधन पावै नांहि॥
जुदौ रहै संसार सू, लहि आनंद अथांहि॥ ५१॥
हे उद्धव इहि ग्यांन तैं, सीष्यौ भलै प्रकार॥
तासौ तेरौ मोह सब, जात रह्यौ निरधार॥ ५२॥
अभिमांनी मूरष सदा, नास्तिक भक्ति न लैस॥
अरु जिन्ह कै गुरमंत्र नहिं, करहुँ न इहि उपदैस॥ ५३॥
इन्ह देसन कर रहत जे, हौय ब्रह्मन प्रिय साध॥
तिन्हसौं आछी भांत करि, भेद सु इही अगाध॥ ५४॥
अस्त्री सूद्रन कै ह्दै, प्रगटि भक्ति मो हौय॥
तिन्हि इहि भलै प्रकार सौं, कहियौ हित चित गौय॥ ५५॥
जांनि चुकै या ग्यांन कौ, आछी भांति सुजांन॥
तबै और कछु जांनिबै, जोग न रहत निदांन॥ ५६॥
जइसै प्रांनी करि चुकै, जब अमृत कौ पांन॥
तब कछु षांन पीयन की, ईछा रहत न आंन॥ ५७॥
हे उद्धव जु पदार्थ है, या संसारहि मध्य॥
ते सब म्हेरौ रूप है, जानहुँ भेद प्रसध्य॥ ५८॥
है मो च्यार प्रकार कौ, रूप सुबिच संसार॥
जास भेद म्हैं कहत सौ, लीजै समझि सुढार॥ ५९॥
प्रगटै म्हैरौ ग्यांन सौ, प्रगट मुक्ति अभिरांम॥
करै कर्म स्वाभाव करि, सौ कहियतु है कांम॥ ६०॥

अनिमादिक सिधि प्रगट ह्वै, जोग मांहि निरधार॥
अरु षैती मैं हौहि द्रव्य, सो है अर्थ प्रकार॥ ६१॥
दंड दै चलवौ नीत मैं, सो कहियतु है धर्म॥
ऐं सब म्हेरौ रूप है, निश्चै जांनहुँ मर्म॥ ६२॥
सब कर्मन कौ त्याग करि, मनुष भलै अनुसार॥
करै समर्पित अपनपौ, म्हेरै विषै सुढार॥ ६३॥
उहि मनोर्थ पूरन करन, जब मो ईछा हौत॥
ह्वै ऐस्वर्ज रु मुक्ति तब, मो सम हौहि उदौत॥ ६४॥

॥ श्री सुक उवाच॥

बोलै श्री सुकदेव जू, हे नृप या उनमांन॥
जोग मार्ग उपदेस किय, उद्धव कौ भगवांन॥ ६५॥
उद्धव प्रभु कै वचन सुनि, गदगद कंठ सु हौय॥
ह्वै द्रिग सजल सामर्थ नहिं, बौलन की रहि कौय॥ ६६॥
चित चंचल हुव प्रेम सौं, तिह वसि करि धरि धीर॥
आपहि मांनत भौ बड्डौ, प्रभू क्रिपा कै सीर॥ ६७॥
हाथ जोर परिनांम करि, जांनि महासुष दैंन॥
श्रेष्ठ जादवनि मध्य हरि, तिन्हसौं बोल्यौ बैंन॥ ६८॥

॥ उद्धव उवाच॥

उद्धव बोल्यौ हे प्रभू, मौह रूप अंधियार॥
तुव पद आश्रै सौं भयौ, दूरि भलै अनुसार॥ ६९॥
गयै अगनि पै ज्यौं मिटै, जड़ता सीत अंध्यार॥
त्यौंही प्रभु तुम्ह क्रिपा तैं, मो दुष मिट्यौ अपार॥ ७०॥
प्रभु म्है सेवक रावरौ, तापर क्रिपा जताय॥
ग्यांन रूप दीपक प्रगट, किय मो हिर्दै सुभाय॥ ७१॥
प्रभु तुम्ह आश्रै छौडि कै, सज्जन पुरष सुजांन॥
कबहूं नांहिन जात है, सरन किहूं कि निदांन॥ ७२॥
व्रष्ण्य दसारह अंधक हू, भक्त इन्हहिं कै मध्य॥
नैह रूप फांसी रही, सौ कढि गई प्रसध्य॥ ७३॥
श्रेष्ठ व्रछिन कौ तुम्ह रची, फासी रूप सनेह॥
सो फासी मो ग्यांन करि, कढि गइ बिनु संदेह॥ ७४॥
हे प्रभु जोगीस्वरन कै, ईस्वर तुम्हैं प्रनांम॥
सरन रावरै प्राप्त हौ, भयौ हौहि निहकांम॥ ७५॥
जइसै तुव पद पंकजनि, विषै भक्ति प्रगटाय॥
अइसी आग्या दीजियै, हे स्वामी सुषदाय॥ ७६॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

फिरि बोलै भगवान हे, उद्धव चित ठहराय॥
जाहु बद्रिकाश्रम विषै, तू मो आग्या पाय॥ ७७॥
बहि मो आश्रम है सही, ठौर महा सुषदाय॥
जांह बहत गंगा सु मो, चर्नन तैं प्रगटाय॥ ७८॥
तिहँ सपरस रु सनांन तैं, मनुष पवित्र ह्वै जात॥
नांम अलकनंदा सुजिहँ, देषै अघ ह्वै पात॥ ७९॥
भोज पत्र कौ पट्ट पहरि, कंद मूल फल षाउ॥
संसारी सुष छौडि सब, बसहु उहां जुत चाउ॥ ८०॥
सुष दुष सब सहि रहै उहि, बसहु साध ज्यौं जाय॥
वसि करि निज इंद्रीन बुधि, निश्चल राषै सुभाय॥ ८१॥
ग्यांन रु अनभवता सहित, ह्वै कै ह्वै पुनि सांत॥
म्हैं कीनौं उपदेस सौ, करि विचार अैकांत॥ ८२॥
वांनी चित म्हेरे विषै, लावहुँ प्रीत प्रभाय॥
मो धर्मनहू तैं अबै, ह्वै निवर्ति सुष पाय॥ ८३॥
ता पीछै तैं प्रकति की, तिहुं गति लांघि सुजांन॥
मोकौं प्रापति हौहिगौ, निज ईछा उनमांन॥ ८४॥

॥ श्री सुक उवाच॥

सु बोलै संसार कौ, जिन्ह बुधि करही दूरि॥
अैसै हरि उद्धवहि यौं, कह्यौ ग्यांन संपूरि॥ ८५॥
तब प्रभु कै पद पंकजनि, उद्धव करि परिनांम॥
परिकरमां दै द्रिग सजल, किय उद्धव निहकांम॥ ८६॥
प्रभु बिछुरन कै विरह करि, कातर उद्धव साध॥
प्रभु कौ छौडयौ चहत नहिं, उर बढि प्रेम अगाध॥ ८७॥
नमसकार भगवांन कौ, करिकै बारंबार॥
प्रभू पादुका सीस निज, राषि प्रीति अनुसार॥ ८८॥
अरु निज अंतहकरन मैं, राष प्रभू कौ ध्यांन॥
जात भयौ अति कष्ट सौं, बद्रीनाथ सथांन॥ ८९॥
जगतबंधु भगवांन ज्यौं, कीनौं हौ उपदेस॥
त्यौं उद्धव कीनी उहां, तपस्या साधि विसेस॥ ९०॥
प्राप्त भयै भगवांन कौ, लहि आनंद अपार॥
छुट्यौ जगत जंजाल सौं, लहि प्रभु क्रिपा सुढार॥ ९१॥
आनंद रूप समुद्र तैं, ग्यांन सुधा प्रगटाय॥
सो जोगिन कै ईस्व हरि, दियै उधवहि जताय॥ ९२॥

सरधा करि वहि सुधा कौ, करै सु सेवन कौय॥
सौ छुटि जगत कै बंध तैं, प्राप्त मुक्ति कौ हौय॥ ९३॥
रोगादिक संसार कै, दूरि करन निरधार॥
अलि ज्यौं लीनौं वेद तैं, ग्यांन रु अनभव सार॥ ९४॥
है विरक्त संसार तै, जे कौ प्रभु कै दास॥
तिन्हकौ प्रभु प्यावत भयै, ग्यांन सुधा सुषरास॥ ९५॥
अरु जे प्रभु कै दास है, मोहित बिच संसार॥
तिन्हकौ प्यायौ सिंधु तैं, काढि सुधा करतार॥ ९६॥
सब जदुकुल मैं श्रेष्ठ है, कृस्न नांम भगवांन॥
तिन्हकौ मो परिनांम है, वारंबार निदांन॥ ९७॥
द्रष्टा स्त्रष्टा हौ जगत कै, तौ प्रनांम सतबार॥
सुधा पिलावनहार प्रभु, कृस्नं कुँवर करतार॥ ९८॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते अैकोनत्रिंसोऽध्यायः ॥२९॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ त्रिंसोऽध्यायः ॥

(यदुकुल संहार)

॥ राजोवाच ॥

दोहा - बोलत भौ राजा सु तब, हे मुनि सुनहुं सुजांन॥
अति बैस्नव उद्धव गयै, बद्रीनाथ सथांन॥ १॥
ता पीछै श्रीकृस्न जू, पुरी द्वारिका मध्य॥
करत भयै कारिज कहा, बीच कुटंब प्रसध्य॥ २॥
श्रेष्ठ जादवनि मध्य हरि, दैंन परम आनंद॥
कठिन श्राप कुल कौ लग्यौ, तब का किय बृज चंद॥ ३॥
हरि कै सुन्दर रूप मैं, लगै तियन कै नैंन॥
तिहैं छुडावन कौ सही, नहिंन समर्थ सुषैंन॥ ४॥
साधुन श्रुत द्वारा सुह्वै, पैठत हिय कै मांहि॥
तांतें बै करता पुरष, कबहूं निकसत नांहि॥ ५॥
जिन्ह कैं गुन कविजनन किय, बरनन बउत प्रकार॥
जें गुन वांनी कै विषै, रति प्रगटात सुढार॥ ६॥
जें हरि सारथी पार्थ कै, भयै बीच संग्राम॥
तांह जिन्ह देषै तिन्ह लही, प्रभु प्रापति अभिरांम॥ ७॥

ऐसी सुंदर देह कौ, तजत भयै किहँ भाय॥
सौहू बरनन करि कहौ, हम्हकौं भेद सुनाय॥ ८॥

॥ श्री सुक उवाच॥

बोलै श्री सुकदेव जू, प्रिथी स्वर्ग नभ मांहि॥
हौत भयै असगुन बडै, जें अति बुरै लषांहि॥ ९॥
लषिकै उन्ह असुगनन कौ, कृस्न कुंवर करतार॥
कहत भयै जादवन सौं, बचन सु या अनुसार॥ १०॥
हम्ह तुम्ह सौं जो कहत है, जादव सुनियै बात॥
पुरी द्वारिका मधि प्रगट, असगुन बहु दरसात॥ ११॥
तातैं कौ जन मति रहौ, दोय घरी या ठौर॥
सब मिलि चलियै और ठां, समझि समैं कौ तौर॥ १२॥
जदु ब्रध बालक अरु तिया, तीरथ संषोधार॥
अरु हम्ह छैत्र प्रभास कौ, चलिहै याही बार॥ १३॥
तांह सरस्वती नांम की, सरिता है सुषदाय॥
करि सिनांन ता सरित मैं, हौहि पवित्र सुभाय॥ १४॥
सावधांन ह्वै चित्त मैं, व्रत सिनांन अरु हौम॥
प्रभु कौ पूजन करहि जे, आछी भांति जु सौम॥ १५॥
करिबैहैं द्विजनन पै, संजुत मित्र विधांन॥
पट सुवर्न असु गज प्रिथी, रथ घर गौ दे दांन॥ १६॥
उत्तम सुमंगल रूप इहि, विधि है महा सुढार॥
टारनहार अरिष्ट कौ, निश्चै भलै प्रकार॥ १७॥
गाय अमर ब्राह्मनन कौ, पूजन कियै सुभाय॥
देवलोक मैं हौहिगौ, आनंद अति अधिकाय॥ १८॥
बडै जादवन मध्य तैं, ऐं सुनि प्रभु कै बैंन॥
जात भयै चढि नांव परि, छैत्र प्रभास सुषैंन॥ १९॥
दई रही जदु कुलनि कौ, ज्यौं आग्यां भगवांन॥
निज कल्यांन कौ भक्ति करि, दिय तीरथ मैं दांन॥ २०॥
पुनि मइरैक जु नांम की, मदिरा कौ किय पांन॥
जांसौ बुधि जदुकुलन की, आछी गमी निदांन॥ २१॥
मत्त भयै मद पांन करि, गर्व बढत भौ ज्याद॥
माया मुहित लगै करन, सब मिलि वाद विवाद॥ २२॥
आतताय जादव सबै, करिकै रीस अपार॥
धनु भाला तोमर गदा, रिष्ट षडग करधार॥ २३॥
इन्ह सस्त्रन तैं जुध करन, लागै सिंधु किनार॥
गज रथ अस्व महिषा बृषभ, गदहाहुँन ह्वै स्वार॥ २४॥

जइसै गजवन मैं करै, जुध आपस कै मांहि॥
धुजा पताका गिर परै, हौतै जुद्ध अथांहि॥ २५॥
प्रदुमन कै अरु सांबु कै, हौत भयौ घमसांन॥
मधि अक्रूर अरु भोज कै, बढयौ जुध अप्रमांन॥ २६॥
सात्त्वक सुरथ संग्रामजित, सुभद्र सुमित्र अनुरुद्ध॥
अैं सब आपस मांहि मिलि, करिबै लागै जुद्ध॥ २७॥
अरु सहस्त्रजित निसठ पुनि, उल्मक सतजित भांन॥
अैं आपस मैं परसपर, लगै करन घमसांन॥ २८॥
अंधक ब्रह्म रु दसारह, अैं मिलि करहि संग्राम॥
प्रभु माया सौं मुहित सब, हुव बे सुधि हिय ठांम॥ २९॥
ककुर विसर्जन कुंत मधु, माथुर अरु सुरसैंन॥
इन्ह देसन कै नृपति तजि, मित्रताय कै चैंन॥ ३०॥
जुद्ध करत है परसपर, महा क्रौध उफनाय॥
मानहुँ इन्हकै सुमित्रता, हुती न काहू भाय॥ ३१॥
नाना मामा दोहिता, पुत्र पिता अरु भ्रात॥
मिलि आपस मैं लरत है, बढ्यौ महा उतपात॥ ३२॥
मित्र मित्र ही मिलि लरत जिन, चिति निरमल निरधार॥
या प्रकार किय गौत कौ, नास क्रौध अनुसार॥ ३३॥
करत करत जुद्ध सस्त्र सब, तूटि गयै वां बार॥
तब सिंधु तट अैरांन सौं, लागै करन प्रहार॥ ३४॥
इन्हि बांन सुं श्रीकृस्न जू, करत मनै घमसांन॥
तऊ परसपर जुध करत, भय उन्हतैं अग्यांन॥ ३५॥
आतताय जादव भयै, माया मोहित हौय॥
गनै सत्रु बलिदेव जुहू, कौ तांह सबै कौय॥ ३६॥
हे कुरनंदन हौय कै, जादव सब बिन बौध॥
अैरांन मुष्टि परिघ कै, करत प्रहार सक्रौध॥ ३७॥
द्विजननि श्राप करि जक्त प्रभु, माया मुहित निदांन॥
क्रौध ईरषा करि भयै, नासहि प्रास अजांन॥ ३८॥
ज्यौं वां बन मैं प्रगट है, अगनि ज्वाल अधिकाय॥
तासौं वन ह्वै दगध त्यौं, जादव नासहि पाय॥ ३९॥
अैसै सब कुल कौ भयौ, नास क्रौध अनुसार॥
तबै प्रभू मांनत भयै, दूर भयौ भुव भार॥ ४०॥
पुरष जोग सामुद्र तट, करिकैं श्री बलिरांम॥
निजहि संजोजन निज विषै, करि छोड्यौ भुव ठांम॥ ४१॥

तबै दैवकी सुवन हरि, लषि अग्रज तन त्याग॥
बैठे प्रभु करता पुरस, पीपर तर भुव जाग॥ ४२॥
प्रभु महा मंगल रूप जिन, स्यांम बरन भुज च्यार॥
मैटत अपनी क्रांति सौं, चहु दिसि कौ अंधियार॥ ४३॥
अग्नि धूम करि रहित ज्यों, प्रभु उदौत दरसात॥
पीतांबर धारन कियै, कनक रंग की भांत॥ ४४॥
हिर्दै चिह्न श्रीवत्स अरु, मंद मंद मुष हासि॥
कमल पत्र सै नैत्र मुष, प्रफुलित पंकज भासि॥ ४५॥
स्यांम कुंतलनि करि मंडित, गोल सुडोल कपोल॥
कुंडल देदीप्तिमांन किय, स्त्रवननि सोभ सतोल॥ ४६॥
ब्रह्मसूत्र कटिसूत्र कटि, किंकिनि नूपुर हार॥
बाजूबंध मुंदरी कटक, मुकट किरीट सुढार॥ ४७॥
कौस्तुभ मनि संजुत इतै, सोभित भूषन अंग॥
बनमाला धारै हियै, पींरै बस्त्र सुरंग॥ ४८॥
रूप अधिदैवक धारै, आयुध ठाढै पास॥
जंघ दाहिनी कै उपरि, वाम चरन सुष रास॥ ४९॥
मुसल लौह कै कौ कियौ, हुतौ पीस कै चूर॥
तामैं तैं बचि रह्यौ हौ, तनक लौह बिच धूर॥ ५०॥
जरा नांम कौ बधिक सौ, लौहा कहुँ बिधि पाय॥
लगवत भौ निज तीर कै, वांकी भाल बनाय॥ ५१॥
ताकौ कियौ प्रहार उन्ह, बधिक प्रभुहि मृग जांनि॥
फेरि चतुर्भुज रूप लषि, आप महा भय मांनि॥ ५२॥
गिरत भयौ प्रभु चरन मैं, थरहर कांपित देह॥
करत भयौ प्रभु की अस्तुति, हाथ जोरि जुत नेह॥ ५३॥
हे मधुसूदन म्हैं कियौ, बिनु जांनै अपराध॥
ताकौ कीजै छमा प्रभु, उत्तमश्लोक अगाध॥ ५४॥
सुमरन कीनै रावरौ, मिटत अग्यांन अंधार॥
महाजोग असरन सरन, तुम्ह स्वांमी करतार॥ ५५॥
हौ निर्विकार सर्वव्यापी, सर्वसक्तिमांन आप॥
महाघौर अनिष्ट किय इहि, हौं बधिक महा पाप॥ ५६॥
म्हैं बधकर्ता जीवन कौ, अति निरदय अघ रूप॥
तिन्ह इहि कार्ज महा बुरौ, किय अग्यांन संजूप॥ ५७॥
मोकौ अैसौ दंड अब, दीजै हे करतार॥
तासौ अवग्या बडुन की, हौं न करौं किहुँ बार॥ ५८॥

प्रभु तुम्ह नाभी कंज तैं, प्रगट भयौ मुष च्यार॥
तासौ सिव अरु अंगिरा, प्रगट भयौ निरधार॥५९॥
जे तुम्ह माया सौं मुहित, हौत बीच संसार॥
बिसर जात है रावरौ, कबहुँक ग्यांन बिचार॥६०॥
तिन्हकैं श्रृजै जु हम्ह मनुष, अलप बुधि तिन्हीं मांहि॥
तै माया सौं मुहित ह्वै, तिहँ कछु अचिरज नांहि॥६१॥

॥ श्री भगवानुवाच॥

प्रभु बोलै हे जरा तू, सावधांन उठि हौहि॥
इहि कारिज हम्हही कियौ, कछु दूसन नहिं तौहि॥६२॥
प्राप्त हौत पुन्यातमा, जास स्वर्ग कौ जाय॥
तहँ तू प्रापति हौहिगौ, मो आग्या अनुभाय॥६३॥

॥ श्री सुक उवाच॥

निज ईछा करि निज धर्यो, सुंदर वपु करतार॥
अैसै हरि दिय जरा कौ, यौं आग्या जिहँ बार॥६४॥
जरा प्रभुहि परनांम करि, दै परक्रमा उमांहि॥
चढि विमांन फिरि स्वर्ग कौ, जात भयौ दुष दांहि॥६५॥
प्रभु कौ ढूंढत फिरत हौ, सारथि दारुक नांम॥
तुलसि गंध सौं पवन वसि, सूंघि नासिका ठांम॥६६॥
समुष पवन कै जात भौ, प्रभु दैषन कै काज॥
महा विकल ह्वै बिनु लषै, प्रभू गरीब निवाज॥६७॥
जिन्हकी तीछन क्रांति है, आयुध जुत भगवांन॥
बैठै पीपर ब्रछ कै, नीचै क्रिपा निधांन॥६८॥
तिन्ह पै दारुक आय कै, दरसन करि अभिरांम॥
गदगद कंठ सु प्रेम करि, ह्वै जल द्रिग छय ठांम॥६९॥
रथ तैं दारुक सारथी, उत्तर तांह भुव ठांम॥
करत भयौ भगवांन कौ, प्रेम सहित परिनांम॥७०॥
बोल्यौ प्रभु तुव पद कमल, म्हैं जब देषै नांहि॥
जात रही तब दिष्टि यौ, रही ठिकानै नांहि॥७१॥
अंधकार सौ रात्रि मैं, उडुगन छिपि जांहि॥
भूलि दिसा तब मनुष इहि, सांति प्राप्त लहि नांहि॥७२॥
त्यौं म्हैं भूल्यौ सुधि सबै, तुम्हहिं लषै बिनु नाथ॥
अबै भयौ हू अति मुदित, नाय तुम्हहिं निज माथ॥७३॥
यौं सारथ प्रभु सौं बचन, कहत भयौ जिहँ बार॥
उतरत देष्यौ स्वर्ग तैं, रथ अस्व सहित सुढार॥७४॥

गरुड चिह्न संजुत धुजा, ता रथ पै फहरात॥
दिव्य सस्त्र भगवांन कै, ता मांही दरसात॥ ७५ ॥
दारुक कै अचिरज भयौ, अैसै रथ कौ दैषि॥
प्रभू स्वारथी सौं बचन, बोलै क्रिपा सपैषि॥ ७६ ॥
है द्वारक तू द्वारिका, बेगौ जाहु सचाल॥
मो जुत सब जादवन की, कहहुँ दसा या काल॥ ७७ ॥
अरु तू कहियौ द्वारिका, मधि न रहहुँ जन कौय॥
म्हैं त्याग्यौ पुर ना लियै, दै हैं सिंधु डबौय॥ ७८ ॥
सिसु अस्त्री सब ग्याति कैं, अरु म्हैरै पित मात॥
लै जैं है अर्जुन सबनि, इंद्र प्रस्थ अग्यात॥ ७९ ॥
अरु तुम्ह म्हैरै धरम मैं, स्थित हौहि जुत ग्यांन॥
मो माया जग रच्यौ तिहँ, गति जांनि तू निदांन॥ ८० ॥
सांत दांत कौ हौहिगौ, प्रापति भलै प्रकार॥
प्रभु दारुक सौं अैं बचन, कहत भयै करतार॥ ८१ ॥
सौ सुनि कैं परनांम करि, दै परक्रमां सुभाय॥
जात भयौ पुर द्वारिका, दारुक अति दुष पाय॥ ८२ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते त्रिंसोऽध्यायः ॥ ३० ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अैकत्रिंसोऽध्यायः ॥

(श्रीभगवान का स्वधामगमन)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - सुक बोलै बिधि इंद्र सिव, पारवती सुर सर्व॥
मरीचादि सनकादि मुनि, पितर सिद्ध गंधर्व॥ १ ॥
जछि रछि चारन बिद्याधर, किंनर अपछर पनंग॥
अरु षगपति कै लौक मैं, बसही जितै बिहंग॥ २ ॥
अै सबही आवत भयै, जांह हुतै भगवांन॥
प्रभु दरसन सौं मुदित अति, हुव निज हृदै सथांन॥ ३ ॥
पुर बैकुंठ पधारिबौ, प्रभु कौ ईछा भाय॥
जाहि समैं कै लषन की, जिन्ह बांछा अधिकाय॥ ४ ॥

अरु प्रभु कै गुन कर्म सब, गावत कहत सुढार॥
सुर विमांन आकास मैं छाय रहै अनपार॥ ५॥
फूलन की बरिषा करत, प्रभु पै अमर उमांहि॥
परम भक्ति जुत भीर अति, उहिं ठां भई अथांहि॥ ६॥
प्रभु जांनत भय सबनि लषि, मो विभूति अै आंहि॥
निज सरूप करि निज विषै, द्रिग मुद्रित किय चांहि॥ ७॥
लौकनि कौ आनंद दयन, मंगल रूप उदार॥
अैसै अपुन सरीर कौ, बिनां दगध करतार॥ ८॥
जोग धारनां ध्यांन करि, अग्नि विषै भगवांन॥
भयै पधारत लोक निज, पुर बैकुंठ सथांन॥ ९॥
भयै बजावत मिलि दुंदुभि, सुरगन बिच आकास॥
फूलन की बरिषा करी, उर धरि अमर हुलास॥ १०॥
सत्य कीर्ति धीरज धरम, श्री संजुत अैं बस्त॥
जात भई प्रभु संग ही, हुव प्रिथवी तैं अस्त॥ ११॥
प्रभु लौक बैकुंठ कौ जु, गवनै किहिं मग हौय॥
सौ बिधि आदिक अमर सब, जांनै भयै न कौय॥ १२॥
प्रभु की गति किहुँ भांत करि, किनहूं जांनी नांहिं॥
तासौ अचिरज जुक्त सब, हौत भयै या ठांहिं॥ १३॥
ज्यौं बिजुरी आकास मैं, आवत अरु रहजात॥
सो मनुषनि जांनि न परत, आई गई अग्यात॥ १४॥
त्यौंही पुर बैकुंठ तैं, प्रभु कौ आवन जांन॥
देवतानिहूं किहूं विधि, जान्यौ नांहि निदांन॥ १५॥
प्रभु की अदभुत जोग गति, दैषि सबै वां बार॥
ब्रह्मादिक सुर ह्रदै निज, हुव विस्मय निरधार॥ १६॥
चतुरानन जुत सकल सुर, सोचि सोचि वां ठांम॥
करत अस्तुति भगवांन की, गवनैं निज निज धांम॥ १७॥
हे राजा जदुकुल विषै, प्रभु कौ प्रगट सुहौंन॥
बहुर्यौं पुर बैकुंठ कौ, करनौं अैसै गौंन॥ १८॥
इहि माया हे नृपति हरि, समझहुँ भेद सुजांन॥
ज्यौं नट धरि बहु रूप फिरि, छौडहुँ देत निदांन॥ १९॥
अपुन विषै करता पुरष, स्त्रजत इहै संसार॥
तामैं हौत प्रविष्ट फिरि, बहुरि करत संघार॥ २०॥

तबै आप रहि जात है, अैक रूप भगवांन॥
सकल बिस्व धरि लैत है, अपनैं उदर सथांन॥ २१ ॥
गुर सांदीपन नांम तिहँ, पुत्र जु मर्यौ दुष पाय॥
ताकौ प्रभु जमलौक तैं, लै आयै सुषदाय॥ २२ ॥
हे नृप किय ब्रह्मास्त्र सौं, तौ रिछया करतार॥
तौ माता कै गरभ मैं, पैठे दया प्रकार॥ २३ ॥
जमहूं कै सिरदार सिव, तिन्हकौं श्रीभगवांन॥
बानांसुर कै जुद्ध मैं, जीतै करि घमसांन॥ २४ ॥
जे प्रभु अपनैं अंग की, रिछया करै सुभाय॥
ताकौ अचिरज नांहिनैं, कबहुँ किहूं कौ आय॥ २५ ॥
अैंपरि जो संसार मैं, आयौ तन कौ धारि॥
सोभै है इक दिन सु ही, इहि दिषवन अनुसारि॥ २६ ॥
भयै पधारत कृस्न जू, पुर बैकुंठ निदांन॥
मंगल रूप सरीर निज, तिहँ करि अंतरध्यांन॥ २७ ॥
उतपति अरु पालन प्रलै, करनौं इहि संसार॥
कारन ताकै हेत प्रभु, धरै सकति अनपार॥ २८ ॥
निज सरीर कौ राषिबै, इछा न किय भगवांन॥
अपनीं गति दिषवत भयै, जगतहि क्रिपा निधांन॥ २९ ॥
प्रातकाल उठि कै मनुष, सावधांन ह्वै आप॥
प्रभु की पदवी परम इहि, कहि भलै करि जाप॥ ३० ॥
सो निश्चै करि प्राप्त है, उत्तम गति कौ जाय॥
जनम मरन कौ ताहि दुष, हौहि न काहू भाय॥ ३१ ॥
पुरी द्वारिका आनि कै, सारथि दारुक नांम॥
उग्रसैंन बसुदैव कै, गिर्यौ सुचर्नन ठांम॥ ३२ ॥
प्रभु कौ जाकै विरह है, बहत द्रिगनि जलधार॥
नास परसपर सबन कौ, कहत भयौ वां बार॥ ३३ ॥
हे राजा वां बात कौ, सुनि प्रांनिन हिय मांहि॥
हुव उदवेग सुं सोक करि, मुरछि गिरै भुव ठांहि॥ ३४ ॥
हरि तैं न्यारै हौन सौ, विकल हौहि नरनारि॥
छैत्रप्रभास गयै जांह, हुव जादव संघारि॥ ३५ ॥
बसु देवकी रोहिनी, मृतक पुत्रन निज दैषि॥
भूलि जात भय आप सुधि, करिकै सोक अलैषि॥ ३६ ॥

आतुर ह्वै प्रभु विरह सौं, तजत भयै निज देह॥
अरु अस्त्रीन कै हिर्दै फटि, बढि बढि दुष अनछेह॥ ३७॥
अपनैं अपनैंपतिन कौ, लै लै तन सब नारि॥
हौत भई सहगमन तहँ, पूरन प्रीत सम्हारि॥ ३८॥
हलधर जू की तियां लै, उन्ह तन अपनैं पासि॥
किय प्रवेस बिच अग्नि कै, अपनीं प्रीति प्रकासि॥ ३९॥
अैसै ही बसुदेव की, पतनीन पति जु लारि॥
किय प्रवेस बिच अग्नि कै, पतिव्रत पूर्न प्रकारि॥ ४०॥
अरु जितनैं भगवांन कै, पुत्र सु प्रदुमन जु आदि॥
तिन्ह तन संग तिन्ह तिय भइ, जरत सकल अहलादि॥ ४१॥
आदि रुकमनी जू सबै, प्रभु की तिय तां ठौर॥
जोग अगनि सौं जरत भइ, धरि प्रभु ध्यांन सुतौर॥ ४२॥
अर्जुन प्रभु कौ हौ सषा, तिहँ हुव विरह अपार॥
पै गीता कौ ग्यांन प्रभु, दीनौं हौ सुषसार॥ ४३॥
तासौ अपनौं आपही, समाधांन पुनि कीन॥
सांचौ भेद बिचारि प्रभु, ध्यांन हृदै धरि लीन॥ ४४॥
कर्म जादवन कै करन, बंसी बच्यौ न कौय॥
तातै अर्जुन आपनैं, सगै जांनि हित सौय॥ ४५॥
कर्म जादवन कैं उहां, करत भयौ ज्यौं रीति॥
कहत भयौ हा हे दई, इहि हुवि बड़ी अनीति॥ ४६॥
प्रभु द्वारिका पुरी कौ, प्रभु त्यागी जिहिं बार॥
सिंधु उमडि कैं बोरि दिय, अदभुत पुरी सुढार॥ ४७॥
हे नृप इक भगवांन कौ, मंदिर रह्यौ ठिकांन॥
तामैं मारन मधु दयत, प्रभु निति बसत निदांन॥ ४८॥
जिन्ह प्रभु की सुधि कियै तैं, पाप हौहि सब दूरि॥
प्रगट हौहि मंगल महा, बढि आनंद सपूरि॥ ४९॥
अस्त्री बालक ब्रध जे, बचै द्वारिका मांहि॥
लै आयौ अर्जुन तिहैं, इंद्रप्रस्थ की ठांहि॥ ५०॥
बच्यौ रह्यौ हरिबंस मैं, बज्र नांम इकबाल॥
ताकौ मथुरापुरी कौ, कीनौं भलै नृपाल॥ ५१॥
हे राजा पांडव जु वै, सुनत भयै इहि बात॥
तब तौकौ अपनौ तिलक, दैत भयै बिषयात॥ ५२॥

पांडव निज तन त्याग किय, जाय हिमालय ठौर॥
पउंचै प्रभु कै लौक कौ, धरि हरि ध्यांन सुतौर॥ ५३ ॥
देवतांन कै देव हरि, तिन्हकौ जनम रु कर्म॥
सरधा करि तिन्ह कीरतन, कियै मिटत अघ मर्म॥ ५४ ॥
ऐसै प्रभु अवतार जे, सुंदर परम रसाल॥
तिन्हकौ कहै सुनै बढै, हिय मैं भक्ति बिसाल॥ ५५ ॥
परम हंस गति लहत सौ, लहै अंति कौ फेरि॥
समझि लैहुँ निज हिर्दै मैं, सुषद भेद कौ हेरि॥ ५६ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अैक त्रिंसोऽध्यायः ॥ ३१ ॥)

(इति एकादस - स्कंध - संपूर्णम्)

॥ पोथी को सं. १८३४ वि. ॥ श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कुल छन्द - २२६५, छंद योग क्रम - १८३५२

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

***

॥ श्री सर्वेश्वरोजयति ॥

॥ श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

(कृष्णगढ़ महाराजाधिराज श्री राजराजेश्वर राजा श्री राजसिंघ जी की महाराणी श्रीमती ब्रजकुंवरी जी बांकावती 'श्री ब्रजदासी' जी कृत श्रीमद्भागवत भाषा द्वादस स्कंध लिष्यते)

॥ द्वादस - स्कंध ॥

॥ अथ प्रथमोऽध्यायः ॥

(कलियुग के राजवंशों का वर्णन

(मंगलाचरण)

छप्पय - जयति जयति ब्रषभांन, नंदनी विस्वस्वामिनी ॥
सकल सक्ति जिहँ सेव, करत हरि हिर्दै गामिनी ॥
तिहँ अंसाअवतार, रमा गिरजा रु सावित्री ॥
दासिनि अति आनंद, दैंनि मानत निज मैत्री ॥
जें परम प्रिया भगवांन की, भगतवछल करुना ढरन ॥
उहिं बारम्बार बंदन करत, ब्रजदासी गहि पद सरन ॥ १ ॥
जयति जय श्रीराधा चर्न, नमो पूरन सुष रासिय ॥
नंदनंदन ब्रजचंद, सदा वृंदावन जु वासिय ॥
जय श्री वृंदावन गुरु, क्रिपाल आनंद निवासं ॥
जिन्हकी क्रिपा प्रताप, पाइयत दंपति जु पासं ॥
पुनि जयति जयति बैस्नव सकल, ब्रजदासी वंदन करत ॥
द्वादस स्कंध बरनन करन, अति उमाह निज हिय धरत ॥ २ ॥

॥ अथाख्यान ॥

॥ राजोवाच ॥

दोहा - नृप बोल्यौ जदुवंस कै, भूषन कृस्न कुमार ॥
भये पधारत लौक निज, तिन पाछै निरधार ॥ ३ ॥
बंस चल्यौ किहि नृपति कौ, सौ मुहि कहौ सुनाय ॥
तुम्ह हौ सबै वक्तानि मैं, महाश्रेष्ठ मुनिराय ॥ ४ ॥

॥ श्रीसुक उवाच ॥

बोलै श्री सुक देव जू, सुनि राजा अभिरांम ॥
नृप ब्रहद्रथ कै कुल विषै, नृपति पुरंजय नांम ॥ ५ ॥
जाकै इक मंत्री हुतौ, सुनक नांम हौ जास ॥
जिन्ह संग्राम कै बिच कियै, नृप पुरंजय कौ नास ॥ ६ ॥
देत भयौ निज पुत्रहि कौ, नृपता पद वा ठांम ॥
जाकौ नांम प्रदौत हौ, तिहं सुत पालक नांम ॥ ७ ॥
तिह सुत यूप विसाष हुव, जिह सुत राज्यक नांम ॥
पुत्र नंदवरधन प्रगट, हौत भयौ उहि धांम ॥ ८ ॥

अैं प्रदौत कै बंस मैं, भयै पांच अवनीस ॥
तै अठतीस रु अैक सौ, बरष भयै भुव ईस ॥ ९ ॥
जा पाछै नृप हौहिगौ, जास नाम सिसु नाग ॥
काक वरन तिहँ सुत प्रगट, नृप ह्वै है पित जाग ॥ १० ॥
जास षैमधरमा सुवन, षैत्रग्य ह्वै सुत जास ॥
जाकै ह्वै पुत्र विधि सार, नांम तैं जिहीं भास ॥ ११ ॥
जाकै ह्वै है सुत प्रगट, अजित सत्रु जिह नांम ॥
जिह सुत दर्भक हौहिगौ, जय सुत ताकै धांम ॥ १२ ॥
जास नंद वरधन सुवन, जिहि ह्वैहि महानंद ॥
बरष तीन से साठ लौं, ह्वै है इतै नरिंद ॥ १३ ॥
पुनि राजा महानंद कै, सूद्री तिय गर्भाय ॥
अैकहि पुत्र ह्वै है प्रगट, सुनहुँ परीछत राय ॥ १४ ॥
महानंद कौ कहत है, महा पद्म पति कौय ॥
सौ करि है छत्रीनहि कौ, नास बली अति हौय ॥ १५ ॥
ताकै पीछै हौहिंगै, राजा सूद्र समांन ॥
अति अधर्म रूपी पुरस, ह्वै है प्रगट निदांन ॥ १६ ॥
महापद्म नृप छत्र अैक, तपि है सब भुव ठांम ॥
जिहिं आग्या चलि है भलै, मनहुँ दुतिय प्रसरांम ॥ १७ ॥
ताकै गेह ह्वै है प्रगट, आठ पुत्र जु बुधिवांन ॥
तिन्ह मैं ह्वै है मुष्य सुत, नांम सुमाल्य सुजांन ॥ १८ ॥
सौ ह्वै है सौ बरष लौं, प्रिथवी कौ सिरदार ॥
और आठ सुत जांहिगै, किहुँ द्विज सरन सुढार ॥ १९ ॥
तब वहि इहि संसार तैं, करि है नवनि उधार ॥
जब उन्हकौ रहिहै नांहि, कछू बंस वां बार ॥ २० ॥
मौरिय दस तब हौहिगै, छत्री या भुवहि ठौर ॥
नृप पदवी कौ पाय कैं, करि है राज सुतौर ॥ २१ ॥
मौरिय दस मैं मुष्य है, चित्रसैंन जिहीं नांम ॥
नृपता पद ताकौ तबै, दै है द्विज अभिरांम ॥ २२ ॥
ताकै ह्वै है पुत्र अैक, वारि सारि जिहँ नांम ॥
सुत असौकवर्धन प्रगट, ह्वै है ताकै धांम ॥ २३ ॥
ताकै सुत ह्वै है सुयस, तिहँ सुत संगति नांम ॥
सालि सूक सुत हौहिगौ, उहि नृप कै ग्रह ठांम ॥ २४ ॥
जास सोमसर्मा सुवन, जिह सतधन्वा पूत ॥
ताकै ब्रहद्रथ नांम कौ, ह्वै है सुत अदभूत ॥ २५ ॥

अै दस राजा हौहिगै, मउरी कुल कै मांहि॥
अैक सौ सैंतिस बरष भु, भुक्तैंगै कलि ठांहि॥ २६॥
ब्रहद्रथ कै सुत हौहिगौ, अग्निमित्र जिही नांम॥
जाकै पुत्र ह्वैहि सुजेष्ठ, वसुमित्र पुत्र तिह ठांम॥ २७॥
ताकै भद्रक पुत्र तिही, पुत्र पुलिंद सुजांनि॥
जिहँ सुत ह्वै है घौष तिहँ, ब्रजमित्र सुत मांनि॥ २८॥
ताकै सुत हुव भागवत, देवभूति सुत जास॥
कछुक आगलै सौ बरष, करि है राज्य अन्यास॥ २९॥
थोरे गन रहि जाहिंगै, तब या प्रिथवी मांहि॥
ता पीछै नृप हौहिगौ, देवभूत भुव ठांहि॥ ३०॥
सौ नृप ह्वै है तियन सौं, अति मोहित वां बार॥
तिहँ मंत्री बसुदेव उहिं, नृपकौं करि संघार॥ ३१॥
आप करैगौ राज्य लै, नृपता पद भुव ठांम॥
ताकै सुत भूमित्र तिहँ, सुत नारायन नांम॥ ३२॥
पैंतालीस रु तीन सौ, वरष भलै अनुभाय॥
कलि मैं भुव कौ राज्य अैं, करिहै कन्व कहाय॥ ३३॥
बहुरि सुसर्मा नांम कौ, नृप ह्वै है भुव ठांम॥
ताकौ सेवक तिहँ नृपहि, हति है बलिहिक नांम॥ ३४॥
सौ सूद्री तिय गरभ तैं, प्रगटैगौ निरधार॥
प्रिथवी कौ कछु इक दिवस, करि है भोग सुढार॥ ३५॥
तिहँ भ्राता कृस्न नांम फिरि, ह्वै है भुव कौ राय॥
जिहँ सुत ह्वै है प्रगट, श्री सांतकर्न नामाय॥ ३६॥
पौर्नमास तिहँ पुत्र जिह, सुत लंबोदर नांम॥
ताकै चिवलक पुत्र सुत, मैघस्वाति तिहँ धांम॥ ३७॥
ताकै सुत अष्टमांन तिहँ, अटकमांन सुत चीन॥
जिह अनिष्टकर्मा अरु सुत, तिलक हालैय तीन॥ ३८॥
हुव अनिष्टकर्मा बडौ, तिह सुत पुरियसभौर॥
ताकै भयौ सुनंद जिहँ, ह्वै है पुत्र चकौर॥ ३९॥
तिह सुत ह्वै है वटक जिह, सुत सिवसांति सुजांन॥
ताकै अरिदम हौहिगौ, जास पुत्र पुरिमांन॥ ४०॥
भेदिसिरा जिही पुत्र तिहँ, पुत्र हुव सुसिविस्कंध॥
जिहँ सुत ह्वै है जिग्यश्री, विजय नांम जिहँ नंद॥ ४१॥
चंद्रविग्य जिहँ पुत्र तिही, पुत्र सुलौमधि जांन॥
बरष च्यार सै छपन अैं, नृप हुव तीस निदांन॥ ४२॥

ता पीछै नृप हौहिगै, सात नांम आभीर॥
पाछै दस नृप हौहिंगै, नांम गर्दभि जु सधीर॥ ४३॥
ता पीछै नृप हौहिगै, सौरह कंक सुनांम॥
तै नृप चंचल हौहिंगै, बीच सु प्रिथवी ठांम॥ ४४॥
ता पाछै नृप हौहिंगै, आठ जवन निरधार॥
बहुर्यो चवदह तुरुष्क नृप, ह्वै है ताही वार॥ ४५॥
बहुर्यो दस नृप हौहिगै, गुरुंड जु नामाय॥
अैकादस नृप हौहिंगै, मौन नांम अनुभाय॥ ४६॥
अैक सहस निंनानवै, वरषन लौं अहलादि॥
भुक्तैंगै भुव पंचसठि, नृप आभीरहि आदि॥ ४७॥
अरु अैकादस हौहिंगै, मौन नांम कै राय॥
भुक्तैंगै भुवी तीन सै, वरषन लौ सुष पाय॥ ४८॥
भूतनंद नृप हौहिगौ, पुरी किलकिला ठांम॥
ताकै भ्राता हौहिगौ, तिह सिसुनंदि जु नांम॥ ४९॥
जसौनंद अरु प्रवीरक, राजा भलैं प्रकार॥
छ ऊपरि सौ बरष लौं, भुक्तैंगै भुवी भार॥ ५०॥
तैंरै सुत ह्वै है प्रगट, भूतनंद कै धांम॥
तिन्ह मैं ह्वै है मुष्य इक, तिहँ वाह्लीक सुनांम॥ ५१॥
ताकौ ह्वै है नांम भुव, ऊपरि अति सौभाय॥
पाछै वाकौ बंस ह्वै, है वाह्लिकी कहाय॥ ५२॥
ताकै सुत ह्वै है प्रगट, पुष्य मित्र नामांय॥
जाकै ह्वै है पुत्र दुर, मित्र नामा अनुभांय॥ ५३॥
सप्त अंध कौसल सपत, और निषध वैडूर्ज॥
इन्ह देसन कै नांम सौ, नृप विष्यात ह्वै तूर्ज॥ ५४॥
अैक समैं भुव भोग्य है, आछी भांत निदांन॥
बहुरि जरासिंधु बंस मैं, विस्फुरजित नृप जांन॥ ५५॥
सौ पुरंजय कौ पुत्र नृप, चहू वरन कै नांम॥
और और ठहराय है, सौ सुनि नृप गुन धांम॥ ५६॥
ब्राह्मन छत्री वैस्य इन्ह, नांम निगम निरधार॥
जदु पुलिंद मद्रक सुनौ, करिहै नांम उचार॥ ५७॥
सो दुर्मति नृप प्रजा कौ, दै हैं धर्म छुडाय॥
जवन प्राय करिहै प्रगट अति अधर्म ठहराय॥ ५८॥
ब्राह्मण छत्री वैस्य कौ, जु करिहै सत्यानास॥
सूद्र मलैच्छन बंस कौ, करिहै बउत बिकास॥ ५९॥

ह्वै है बडौ पराक्रमी, विस्फुरजित अवनीस॥
सौ औरन कौ पराक्रम, मैटन बिस्वाबीस॥ ६० ॥
पुरि पद्मावती नांम की, तांकी हौहि नृपाल॥
हरिद्वारहि तैं प्राग लौं, आग्या चलहि विसाल॥ ६१ ॥
सउराष्ट्रक उजैंन अर्बुद, मालव अरु आभीर॥
इन्ह देसनि सम सूद्र नृप, द्विज ह्वै है बिनु धीर॥ ६२ ॥
सिंधु नदी कै तट सरित, कउंती भागाचंद्र॥
कासमीर पुनि देस इन्ह, ठौरनि रचि रचि मंद्र॥ ६३ ॥
म्लैच्छ प्राय नृप करहिगै, राज अधिक सुषपाय॥
ब्रह्म तैज सौ रहित बै, पाप सरूप सदाय॥ ६४ ॥
म्लै़च्छ प्राय नृप इक समैं, ह्वै है अधरम रूप॥
बोलैंगे झूठै बचन, ह्वै है क्रौध संजूप॥ ६५ ॥
दै है थोथै दांन लै, है परतिय धन छीन॥
गौ अस्त्री द्विज बालकन, जें दुषदाय सरीन॥ ६६ ॥
करिहै थौरै ही दिवस, भू कौ राज निदांन॥
अरु उन्ह कीरत राजहू, ह्वै है अल्प प्रमांन॥ ६७ ॥
कहै वेद नृप कर्म तै, उन्ह मैं ह्वै है नांहि॥
भली क्रिपाहू वै कछू, करि है नहिंन सदांहि॥ ६८ ॥
रज तम गुन जुत नृपति वै, ह्वै है जवन समांन॥
करि भछन प्रजाकौ, निरदय महा अग्यांन॥ ६९ ॥
अधम रूप नृप लषि प्रजा, ह्वै है रूप अधर्म॥
नास पाय है प्रजा लहि, नृप सौं दुष कौ मर्म॥ ७० ॥
करि है राजा अरु प्रजा, रज तम गुन आचार॥
झूठै क्रौधी आलसी, ह्वै है सबै कुचार॥ ७१ ॥
आयुर्बल हीन सबै सु, संसकार विपरीत॥
रज तम गुन वस अंध ह्वै, करिहै सदा अनीत॥ ७२ ॥
म्लैच्छन सम रूप नृप, करिहै अत्याचार॥
रछकहि भछक ह्वै है तब, करि करि स्वेछाचार॥ ७३ ॥
जथा राजा तथा प्रजा, ह्वै है बिस्वाबीस॥
लूट षसौट करिहै सब, मरिहै करि करि रीस॥ ७४ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे द्वादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥

(कलियुग के धर्म)

। श्री सुक उवाच ॥

दोहा - बोलै श्री सुकदेव जू, ता पाछै नित प्रत्य॥
आर्बल दया पवित्रता, छिमा धर्म सुधि सत्य॥ १॥
अैं सबही बस्तु सुभग नहिं, कालबली अनुभाय॥
प्राप्त हौत भइ नास कौ, रहि है नहिं ठहराय॥ २॥
कलजुग में वितवांनही, ह्वै है सर्व प्रधांन॥
सदगुनि सदाचारि मनहु, ह्वै है पाप निधांन॥ ३॥
कलिजुग में नर कर्म गुन, उदै भलौ आचार॥
इन्हमें कारन श्रैष्ठता, कौ द्रविही निरधार॥ ४॥
धर्म न्याव मर्जाद कौ, कारन बल बिसतार॥
समझहु आछी भांत सौं, हे नृप परम उदार॥ ५॥
तिय पुरषन कौ कलि विषै, हुवै है नांहि बिबाह॥
वैही तिय पति हौंहिंगे, जिह चित जांकी चाह॥ ६॥
अप अपनैं कुल गौत्र कौ, रहिहै किहुँ न बिचार॥
करिहै सबही मनुष मिलि, कपट रूप विवहार॥ ७॥
ब्राह्मन अपनौं धर्म सब, तजि दै है बिनु ग्यांन॥
अैक जनेऊ धरन सौं, परिहैं द्विज पहचांन॥ ८॥
नहिं सदाचार सहिष्णुता, संजम जुत ग्रहाचार॥
दंपति राषै इही रुचि, रति कलित ब्यौहार॥ ९॥
ब्रह्मचारी अरु ग्रहस्थी, वानप्रस्थ संन्यास॥
इन्ह च्यारौंहि आश्रम कौ, मिटि है धर्म प्रकास॥ १०॥
जा जा आश्रम कै निगम, दीन्है चिह्न बताय॥
तिन्ह चिह्न न करिकै सकल, आश्रम परत लषाय॥ ११॥
आश्रम तैं आश्रमहि कौ, अनुक्रम भलै प्रकार॥
करै जांहिगै नांहिनैं, वा कलि जुग की बार॥ १२॥
अरु वां बैरि न हौहिगौ, दुर्बल जन कौ न्याव॥
बउत बोलि है ताहि सब, कहि है पंडित राव॥ १३॥
जा घर धन नहिं हौहिगौ, सौ कहाय है चौर॥
दंभी कौ कहि है सबै, महा साधू सुतौर॥ १४॥
करनौं अंगीकार सोइ, ह्वै है धरम विवाह॥
करन सनांन सोइ सकल, भूषन पहरन लाह॥ १५॥
तीरथ सोइ कहाय है, जोजन ह्वै है दूर॥
जिह सिरह्वै है केस तिह, कहि है सुंदर पूर॥ १६॥

करनी निज आजीविका, पूरन भलै प्रकार॥
ताही कौ कहिहै सबै, है स्वारथ बडवार॥ १७॥
धिष्ट हौहिगौ पुरष तिह, कहिहै बक्ता सत्य॥
अरु साचै कौ नहिं कोउ, गनि है काहू भृत्य॥ १८॥
करनौं पालन प्रजा कौ, इही बडी चतुराय॥
सैवन करनौं धर्म कौ, निज जस काज सुभाय॥ १९॥
अैसी दुष्ट प्रजा बहू, ह्वै है प्रिथवी ठांहि॥
द्विज छत्री सूद्र बैस, चहू वरन इन्ह मांहि॥ २०॥
पराक्रमी जो हौहिगौ, सोई करिहै राज॥
ते राजा करिहै भलै, दुष्ट चोर कै काज॥ २१॥
अस्त्री द्रव्य प्रजांन कै, नृपति लैहिंगै छीन॥
तिन्ह सौं डरि वन नगन मैं, प्रजा बसैगी दीन॥ २२॥
साक मूल फल पुसप अरु, बीज मांस अैं बस्त॥
उदर पूरनां कै निमत, भषि है प्रजा समस्त॥ २३॥
बरसैंगे नहिं मैह जब, परिहै काल अपार॥
सीत घांम बरिषा पवन, करिहै प्रजा संघार॥ २४॥
भूष प्यास संताप अरु, चिंता व्याधि प्रभावु॥
बीस तीस बरषन बडी, कलि बिच ह्वै है आयु॥ २५॥
ह्वै है कलिकै दोष करि, लघु सरीर बिच स्त्रिष्ट॥
वरनाश्रम कै धर्महू, सकल हौहिगैं नष्ट॥ २६॥
धरम महा पाषंडमय, चलिहै बिच संसार॥
अरु चौरन कै सम नृपति, ह्वै है प्रगट अपार॥ २७॥
हिंसा चोरी झूठ सौं, सकल मनुष विवहार॥
पूरन निज आजीविका, करिहै सब निरधार॥ २८॥
चहूं बरन ह्वै जांहिगै, निश्चै सूद्र समांन॥
बकरी सम ह्वै है सुरभि, सोउ अल्प पयवांन॥ २९॥
ग्रहस्थाश्रम सम हौहिगै, चहूं वरन यक संध॥
भ्रात बहनि नातौ ठहरि, रहिहै इतौ समंध॥ ३०॥
बडे ब्रछ लघु हौहिगै, ह्वै है अल्प सुअंन॥
छनमात्र घन बिजुरी सम, रहि है मनुष प्रसंन॥ ३१॥
ग्रहस्थ कोउ करिहै नांहि, दांन पुन्य किहुं भाय॥
यौं कलि दै है पराक्रम, जीवनि विषै जताय॥ ३२॥
कलि जुग यौं वितहै जबै, प्रभू सत्वगुन रूप॥
रिछया करिबै धरम की, ह्वै है प्रगट अनूप॥ ३३॥

सकल चराचर कै सुहरि, है गुर आत्मा ईस्व॥
साधुन की रिछया करन, प्रगटैंगै जगदीस्व॥ ३४॥
जिन्ह प्रभु कै जनम रु करम, सबनि कृतार्थ करंत॥
तीन ताप कौ दुष महा, मैटन पद भगवंत॥ ३५॥
विप्र विस्नु जस नांम इक, संभल ग्रामहि मध्य॥
तिह घर प्रगटैंगै प्रभू, कलकी रूप प्रसध्य॥ ३६॥
अस्व देवदत्त नांम तिह, सीघ्र पवन तैं चाल॥
तापर चढिकै मारिहै, दुष्टन कौ उहि काल॥ ३७॥
अनिमादिक जेंहि सिधि अरु, सुभ गुन जुत भगवांन॥
जिन्ह की क्रांति विसाल जे, दैंन मुक्ति सुषदांन॥ ३८॥
जे अस्व पै चढि वौर चहु, फिरि है प्रिथवी मांहि॥
चोर धरै नृप चिह्न तै, हति है सबही ठांहि॥ ३९॥
देस नगर वन कै सबै, मारै जेंहै चौर॥
तब उन्ह कै बालक कोउ, बचि है प्रिथवी ठौर॥ ४०॥
प्रभु कलकी कै अंगतैं, ह्वै है प्रगट सुगंध॥
ताहि सूंघि उन्ह सिसुन मन, ह्वै है सुद्ध सुसंध॥ ४१॥
वासुदेव भगवांन हरि, सत्व रूप करतार॥
ब्रजमांन उन्ह सिसुनि उर, ह्वै है ताहि जु बार॥ ४२॥
तब फैलैगी प्रजा सौ, धर्म रूप निरधार॥
मोटै ह्वै है अंग अरु, दीर्घ देह बिसतार॥ ४३॥
प्रभु कलकी पति धर्म कै, प्रगटैंगै जिहँ बार॥
सतजुग ह्वै है प्रगट सत, जुग मय प्रजा सुढार॥ ४४॥
ससि रवि ब्रहस्पति करहिंगें, पुष्य निछत्र पर वास॥
तिहुँ ह्वै है इक रासि तब, सतजुग परिहै भास॥ ४५॥
ससि सूरज कै बंस मैं, जितै भयै अवनीस॥
अरु जे है विद्यमांन ते, वरनैं बिस्वाबीस॥ ४६॥
हे नृप तेरै जनम सौ, लैकरि कलियुग मांहि॥
प्रगट हौहिगै नंद नव, राजा प्रिथवी ठांहि॥ ४७॥
तिन्ह तांई इक सहस अरु, पंद्रह बितहै वर्ष॥
अग्यांननि दुषदाय कलि, ग्यांननि बाढत हर्ष॥ ४८॥
सुनहुँ नृपति रिषि सप्त है, गाडा कै आकार॥
रात्र समैं आकास मैं, उदै हौत निरधार॥ ४९॥
ता समैं रिषि पुलह क्रतु, पहल दिषाई दैत॥
तिन्ह पाछै सबही नछित, दीसत ध्रुवहि समैत॥ ५०॥

सताईस नच्छत्रिन मैं, सप्त रिषन कै मध्य॥
सौ सौ वरषनि रहत है, इक इक नछित प्रसध्य॥ ५१॥
सुनौ परीछित राय तुम्ह, वै रिषि सप्त सुढार॥
अबै ह्वै मघा नछित्र पै, सथित भलै अनुसार॥ ५२॥
गवनै जब बैकुंठ कौ, रवि सरूप श्रीकृस्न॥
तबही पैल्यौ प्रिथी परि, कलि अघ रूप सप्रस्न॥ ५३॥
अरु प्रवर्ति सबही मनुष, भयै पाप कै मांहि॥
सत्य धर्म सौ किहूं की, हौत भई रुचि नांहि॥ ५४॥
जबलौं प्रभू कौ सपरस, भुवहि रह्यौ सुषसार॥
तबलौं कलि निज पराक्रम, करि न सक्यौ निरधार॥ ५५॥
जबैही मघा नछत्र तैं, दूरि सप्तरिष हौय॥
रु नछित पूर्वाफालगुनी, परि जै है रुचि गौय॥ ५६॥
तबही कलिजुग हौहिगौ, प्रापति प्रिथवी ठांहि॥
बारह सै सुर बरष कलि, विक्रम करहि अथांहि॥ ५७॥
मघा छौड़ि कै सप्त रिष, चलिहै ताही बार॥
नव नछित्र है और तिन्ही, कौ करि भोग सुढार॥ ५८॥
पूर्वाषाढा नछित्र पै, ह्वै है सथित निदांन॥
तब कलिजुग की हौहिगी, व्रधि अधिक अप्रमांन॥ ५९॥
भयै पधारत लोक निज, कृस्न चंद्र दिन जास॥
बडै कहत कलि प्राप्त ह्वै, विक्रम कियौ परकास॥ ६०॥
वर्ष सुरन कै चव सहस, ह्वै है जबै वितीत॥
तब फिरि प्रापति हौहिगौ, सतजुग परम पुनीत॥ ६१॥
मनुषन कै तन आतमा, ताही समयै मांहि॥
ह्वै है रूप प्रकास पुनि, मलिन रहैंगै नांहि॥ ६२॥
तुम्हहि कह्यौ मनु बंस हम्ह, तइसै ही अनुभाय॥
जुगन जुगन मैं बयस द्विज, सूद्र बंस प्रगटाय॥ ६३॥
महात्मा जु पुरस तिन्ह कै, कहै चिह्न अरु नांम॥
जिन्हकी कीरति कथा अब, रहि गइ प्रिथवी ठांम॥ ६४॥
नृप संतनु कौ भ्रात इक, जास नांम देवापि॥
ससि बंसी राजा बडौ, दीरघ धरम प्रतापि॥ ६५॥
अरु इक्ष्वाकु कै बंस मैं, रवि वंसी अवनीस॥
भयौ अैक मरु नांम कौ, धर्मग्य बिस्वाबीस॥ ६६॥
जु निकट सुबद्रीनाथकै, है इक ग्राम कलाप॥
जांह वसत वे दुहु नृपति, करत प्रभू कौ जाप॥ ६७॥

सतजुग ह्वै है प्राप्त अरु, कलिजुग रहिहै जात॥
तब वै दोनूं नृपति लहि, प्रभु आग्यां बिषयात॥ ६८ ॥
वरनाश्रम कै पहल ज्यौं, थपि है धर्म सुढार॥
उन्हतैं रवि ससि वंस दुहु, प्रगटै वाही बार॥ ६९ ॥
फेरि फेरि अै चहू जुग, अैसै ही अनुभाय॥
प्रिथवी पर प्रांनीन मैं, हौत प्रवर्ति सदाय॥ ७० ॥
ते ममता या प्रिथी सौं, करिहै बउत प्रकार॥
प्राप्त हौत भयै मृत्यु कौ, तजि भुव भोग प्रकार॥ ७१ ॥
अैसी गति या देह की, अंत समैं कौ हौत॥
कै विष्टा कै भस्म कैं, क्रिमि कौ हौय उदौत॥ ७२ ॥
जु अैसौ तुछ सरीर लहि, करै नरन सौं द्वेष॥
तामैं कछु स्वारथ नांहि, भुक्तै नर्क अलेष॥ ७३ ॥
इक छिनहू की षबर नहिं, इहि तन रहै कि जाय॥
अैसै तन सौं करत नर, यौं बिचार बहु भाय॥ ७४ ॥
बड्डे हमारै प्रिथवी कौ, भोग कियौ किहु भाय॥
अरु अब हम्हरे वंस मैं, जे बालक प्रगटाय॥ ७५ ॥
ते कइसै या प्रिथी कौ, पालैंगै निरधार॥
पुनि कइसै उन्ह पै इहै, रहिहै भुव कौ भार॥ ७६ ॥
इहि तन तैज सुअंन कौ, ताकौ प्रांनी पाय॥
मूरष ममता प्रिथी सौं, मांनत है अधिकाय॥ ७७ ॥
पूरन मनोरथ चित्त कै, करि न सकत उदौत॥
इक दिन इहि तन छूटिकै, प्राप्त मृत्यु कौ हौत॥ ७८ ॥
बड्डे बड्डे नृप आपनौं, बड्ड प्रताप बिसतार॥
भोग करत रहै प्रिथि कौ, निज ईछा अनुसार॥ ७९ ॥
माटि जल उपजि देह पै, इतनौ बडौ गुमांन॥
वै नृपति डींग हांकतै, प्रिथवी अपनीं मांन॥ ८० ॥
तेहू नृप मरि मरि गयै, घात काल की लागि॥
कथा मात्र संसार मैं, उन्ह रहि गाथ अथागि॥ ८१ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे द्वादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

(राज्य, युग धर्म और कलि-दोषों से बचने का उपाय नाम संकीर्तन)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - सुक बोलै सब नृपन कौ, प्रिथवी हसत सुजांन॥
कहत षिलौना काल कै, ऐ नृप लष्यौ निदांन॥ १ ॥
जो मो जीतन की इछा, राषत बिनां बिचार॥
सौ अति अचिरज की इहै, बात बीच संसार॥ २ ॥
इहि कारिज सब नृपनि कौ, निरफल ह्वै निरधार॥
मो जीतन कै काज जिन, हौहि रहै चितधार॥ ३ ॥
पंडित मांनत आपकौ, चित मैं कुबुधि प्रकास॥
नीर फैन सम देह इहि, ताकौ धरि बिसवास॥ ४ ॥
पहलै षट इंद्रीन कौ, जीति भलै अनुसार॥
मंत्री सेवक नृपन कै, फेरि जीति निरधार॥ ५ ॥
पुरवासी सेवक बहुरि, सकल नृपन जुत जीति॥
दसौं दिसा कौ जीति फिरि, करिहै अपनी कीर्ति॥ ६ ॥
निहकंटक करि प्रिथ्वी कौ, करिहै भोग सुढार॥
अैसै सिंधु प्रजंत भुव, जीतैंगै निरधार॥ ७ ॥
यौं आसा करिकै बंध्यौ, जिन्हकौ चित भुव मांहि॥
जम निज निकटहि बसत है, ताकौ दैषत नांहि॥ ८ ॥
प्रिथ्वी समुद्र परजंत लौं, जीति कितैक नृपाल॥
अपुन पराक्रम सौं धसत, बिच सागर किहु काल॥ ९ ॥
या जीतन मैं कहा है, लाभ लहत नहिं कौय॥
निज आतम कौ जीतियै, जातैं सफल जु हौय॥ १० ॥
हे राजा सुनि परीछित, या प्रिथवी कौ जीति॥
मनु अरु मनु कै पुत्र सबै, जात रहै वय बीति॥ ११ ॥
ज्यौं आयै त्यौंही गयै, लरि लरि जुध कै मांहि॥
कुबुधी है ते अजहुँ मुहि, जीत न राषत चांहि॥ १२ ॥
पिता पुत्र रु भाईन मैं, हौत सकल मो काज॥
उन्ह चित ममता करि बध्यौ, झूठ भोग भुव साज॥ १३ ॥
प्रिथ्वी हम्हारी है सही, कौ इक कहत नरेस॥
कहत दूसरै नृपति हे, मूढ न भुव तौ लैस॥ १४ ॥
प्रिथ्वी हम्हारी है सदा, तौकौ कौनै दीन॥
अैसै करि करि ईरषा, आपस मांहि सरीन॥ १५ ॥
मिलि मिलि कै जुध करत है, जुगन जुगन कै मांहि॥
पूर्न मनोरथ हौत नहिं, लरि लरि कै मरि जांहि॥ १६ ॥

प्रथु पुरूरवा नहुष रघु, अर्जुन भरत जजाति॥
राम सगर त्रिनबिंदु गय, मांधाता सरियाति॥ १७॥
कुवलयास्व संतनु निषध, न्रग षट्वांग उदार॥
संबर नमुचि भगीरथ रु, हरिन कस्यप निरधार॥ १८॥
लौकन कौ दुषदाय अति, रावन बड बलबांन॥
भौमासुर हरिनाछ अरु, तारक नांम निदांन॥ १९॥
इन्ह सबहिंन जुत औरहू, बड्डु दैयत नृपाल॥
जे जांनत सब [illegible]त कौ, जौधा महा बिसाल॥ २०॥
सबकौ जीतनहार जें, जिह्नैं न जीतै कौय॥
ते मो मैं ममता लगै, इक दिन मरि रहि सौय॥ २१॥
समैं पाय रहि गई तिन्ह, कथा बीच संसार॥
मानहुँ हुतै न वै नृपति, कबहूं कहुँ निरधार॥ २२॥
इन्हहिं बड्डु राजांन की, कथा भलै अनुसार॥
हे राजा तोसौ कही, हम्ह करिकै बिसतार॥ २३॥
जाकौ सुनि अनभव सहित, प्रगट हौहि बैराग॥
अरु इहि सुनै न हौहि कछु, गति परलौकहिं जाग॥ २४॥
जें प्रभु उत्तम श्लोक हैं, जिन्हकौ गुन सुषसार॥
ताकौ कहै सुनै मिटै, महा पाप कौ भार॥ २५॥
उन्हही प्रभु कै गुन सुभग, कहै सुनै चितलाय॥
जो चाहै निरधार करि, प्रभू भक्ति सुषदाय॥ २६॥

॥ राजोवाच॥

बोल्यौ राजा परीछित, करिकै कौनुँ उपाय॥
प्रभु कलिजुग कै जियन कै, दैही पाप मिटाय॥ २७॥
हे मुनि सौ तुम्ह मुहि कहौ, आछै अबै सुनाय॥
और जुगन कै धरम पुनि, प्रलै सुदेहुँ बताय॥ २८॥
बिस्नु महा परमातमा, ईस्वर काल सरूप॥
तिन्हकी गति कहियै भलै, विधि कै दिवस संजूप॥ २९॥

॥ श्री सुक उबाच॥

सुक बोलै सतजुग बिषै, च्यार धरम कै पांव॥
सत्य दया तप दांन सौ, धरिय तजत न प्रभाव॥ ३०॥
करुना जुत संतुष्ट सब, रु मित्र सु आपस मांहि॥
सांत दांत सहि रहन सम, दिष्ट मुदित चित ठांहि॥ ३१॥
अैसै सब प्रांनी भयै, वा सतजुग की लार॥
तबै धरम कै पांव चहु, हुतै स्थिर निरधार॥ ३२॥

फिरि तैता जुग हौत भौ, प्राप्त समैं अनुभाय॥
तब अधरम राषत भयौ, तीन धर्म कै पाय॥ ३३॥
असंतोष हिंसा कलह, झूठ सहित अैं च्यार॥
प्रगट सु पांव अधरम कै, जांनहुँ नृपति उदार॥ ३४॥
वा समयै तप करत है, प्रांनी भलै प्रकार॥
हिंसा नांहिंन करत है, नहिं विषई निरधार॥ ३५॥
वेद त्रई की विधि रही, रह्यौ विप्रन अधिकार॥
बुरौ जांनि अघ करत सौ, डरतौ सब संसार॥ ३६॥
झूठ द्वेष हिंसा अवर, असंतोष अघ आंहि॥
तिन्ह करि त्रय पद धरम कै, तूटै द्वापुर मांहि॥ ३७॥
जिन्ह असतूति बडी रही, कीरति वंत धनवांन॥
निति रति वेदाधैन मैं, मुदित कुटंब सुजांन॥ ३८॥
अैसै छत्री रु बिप्र मुष्य, बरन रहै वां बार॥
बयस सूद्रहू थिर रहै, अपनैं धरम मंझार॥ ३९॥
अरु कलिजुग कै विषै इक, रह्यौ धर्म कौ पांव॥
सौउ पांव है नास बढि, अधरम कौ अधिकाव॥ ४०॥
अैसै कलिजुग कै बिषै, ह्वै है प्रजा निदांन॥
जिन्ह आचार बुरौ दया, हीन झूठ मुषवांन॥ ४१॥
भाग्यहीन त्रिस्नां अधिक, सूद्र जनन कै दास॥
ह्वै है अैसी मुष्य प्रजा, जिन्ह हिय पाप प्रकास॥ ४२॥
सतगुन रजगुन तमोगुन, अै तिहुँ गुन बिषयात॥
प्रेरै समैं रु काल कै, आत्मा मैं दरसात॥ ४३॥
मन बुधि इंद्री हौहि जब, सतगुन मध्य प्रवर्त॥
प्रगटै रुचि तप ग्यांन मैं, पाप भैद करि गर्त॥ ४४॥
तब निश्चै करि जांनियै, सतजुग समैं निदांन॥
अै बातैं सतजुग बिनां, हौत न बीच जहांन॥ ४५॥
कर्म कामनां मैं प्रगट, मनुषन की रुचि हौत॥
तब त्रैता जुग जांनियै, रजगुन रूप उदौत॥ ४६॥
अरु ईर्षा असंतौष पुनि, लौभ दंभ अभिमांन॥
काम कर्म जुत इन्ह विषै, रुचि उपजै मनुषांन॥ ४७॥
तब रज तम गुन दुहू कौ, रूप सु द्वापर जांनि॥
अब कलिजुग कै समैं की, बात सु कहौं बषांनि॥ ४८॥
जब निंद्रा आलस कपट, झूठ सोक भय मोह॥
हिंसा दुष अरु दीनता, अैं प्रगटै जुत छोह॥ ४९॥

तबही कलिजुग जांनियै, महा तमोगुन रूप॥
तामैं प्रभु कै नांमही, सूं सुष हौत अनूप॥ ५० ॥
कलिजुग मैं ह्वै है मांनु, तुछ भाग रु बुधि मंद॥
द्रव्य हीन बहु रोग मय, हृदै कांम कौ दंद॥ ५१ ॥
अइसै उपजैंगै मनुष, निश्चै कलिजुग मध्य॥
पर पुरषन की चाह तिय, उर ह्वै है सप्रसध्य॥ ५२ ॥
चोरन करिकै हौहिंगै, देस दुषित अधिकाय॥
अरु ह्वै है पाषंड मग, वेदन कौ दुषदाय॥ ५३ ॥
करिहै अपनी प्रजा कौ, भौजन राजा आप॥
उदर भरै विषई महा, ह्वै है कुविप्र अमाप॥ ५४ ॥
ह्वै है निज आचारवत, सौ ब्रह्मचारी हीन॥
भिछुक ग्रहस्थ ह्वै किहूं कौ, दै है भिछा कधीन॥ ५५ ॥
तपसी बसिहै नगर मैं, संन्यासी सब त्याग॥
फिरि चाहैंगै संपदा, त्रिसंना बढै अथाग॥ ५६ ॥
भोजन करिहै तिय बउत, अरु जिन्हकी लघु दैह॥
ह्वै है जिन्ह संतान बहु, निरलजता अनछैह॥ ५७ ॥
कुवचन कहनौं सजन सौं, करनी चोरी चांहि॥
अति साहस उर कै विषै, कपट प्रकार अथांहिं॥ ५८ ॥
अैसी अस्त्री हौहिंगी, कलिजुग मैं निरधार॥
स्वारथ ही की जें सगी, नहिं कछु धरम बिचार॥ ५९ ॥
सूद्र वैस्य करिहै कपट, बीच बिनज व्यौपार॥
करिहै आजिवका बुरी, बिना विपति वां बार॥ ६० ॥
सब मैं उत्तम नृपति पै, ह्वै है द्रव्य करि हीन॥
सेवक करिहै त्याग जिहँ, लषि निज स्वारथ छीन॥ ६१ ॥
अरु नृप रोगी सेवकनि, तजि दै है बिनु चाह॥
दया कछू धरिहै नांहि, गनिहै स्वारथ लाह॥ ६२ ॥
जाति सुहृद भाई पिता, सौ तजि दै है प्रीत॥
मानैंगै सालैन कौ, कह्यौ समझि सुभ रीत॥ ६३ ॥
अस्त्री कै आधीनही, ह्वै है पुरष अग्यांन॥
तिय आगै रहिहै सदा, ह्वै कै दीन निदांन॥ ६४ ॥
पतिग्रह लै है सूद्र जन, बिनु निज धर्म बिचारि॥
निज आजिवका करिहिंगै, भेष जती कौ धारि॥ ६५ ॥
उत्तम आसन बैठि निज, धर्म सरूप बनाय॥
सबहिंन धर्म उपदेस सुभ, करिहैं आछै भाय॥ ६६ ॥

जिन्हहिं मन निति उदै बिघन, रहि है पाप प्रभाय॥
अरु अकालकरि रहैंगै, पीडत अति दुषछाय॥ ६७॥
हे राजा जब प्रिथी मैं, बरसैंगे नहिं मैह॥
अंन रहैंगे जात तब, बढि है भूष अछैह॥ ६८॥
ता दुष सौं सब हौहिंगी, पीडत प्रजा निदांन॥
तजिहिं अैक कौडी लियै, मित्रताय जुत सुप्रांन॥ ६९॥
कौडी काजै करहिंगै, अपनन कौ संघार॥
सब अनर्थ मय हौहिगैं, मानुष चतुर अपार॥ ७०॥
लघु बुधि विषइ उदर भरन, सुत ह्वै है कलि मांहि॥
तें ब्रध माता पिता की, रिछा करैंगै नांहि॥ ७१॥
जें है जग कै परम गुर, तिहू लौक कै नाथ॥
अैसै प्रभु कै पद कमल, अरु उन्हकी सुभ गाथ॥ ७२॥
तजि कलिजुग कै जीव सब, ह्वै पाषंड संजुक्त॥
करिहै पूजन और कौ, अधिक हौहि अनुरक्त॥ ७३॥
गिरत परत उषटत मरत, जो कौ लै हरिनांम॥
सौ सब कर्मनि त्यागि कै, पावत गति अभिरांम॥ ७४॥
कलिजुग मैं अैसै प्रभुहिं, पूजैंगै नर नांहि॥
लगै रहैगै निसि दिवस, निज आजिवका मांहि॥ ७५॥
कलिजुग करिकै लगत है, जे पुरषन कौ दोष॥
पुन हिय आत्मा दैषतै, प्रगटत दोष अमोष॥ ७६॥
दूर करत निरधार करि, अैं सब दोष अथांहि॥
पुरषोतम भगवांन जब, स्थित हौत हिय ठांहि॥ ७७॥
सुनै कथा भगवांन की, करै कीरतन ध्यांन॥
नम्र हौहि पूजा करै, प्रीत लाय अप्रमांन॥ ७८॥
प्रभू हिर्दै कै विषै जब, स्थित हौहि सुषदाय॥
जनम जनम कै पाप सब, छिन मैं दैत मिटाय॥ ७९॥
जइसै अग्निही राषियै, जब सुबरन कै मध्य॥
तब सोनै कौ मैल सब, पावत नास प्रसध्य॥ ८०॥
जइसै जोगीस्वरन कै, हिय मधि वसि भगवांन॥
भस्म करत है पाप सबै, देत परम सुषदांन॥ ८१॥
भगवत नांम रूप गुनहुं, श्रवन कीरतन ध्यांन॥
लीला कथन सुमरन अरु, पूजन सादर मांन॥ ८२॥
इन्ह करमन सौं हिर्दै मैं, स्थित हौहि भगवांन॥
सहस्त्र जनम कै पाप सब, भसम करै जु निदांन॥ ८३॥

तपस्यां विद्या रु प्रांन कौ, रौकन तीरथ सनांन॥
जप व्रत सहित विधान अरु, दैनौं आछै दांन॥ ८४॥
इन्ह करि निरमल हौत नहिं, जइसौ हिय निरधार॥
तइसौ निरमल हौत है, स्थित भयै करतार॥ ८५॥
तातैं सब परकार करि, प्रभु करता सुषदाय॥
अपनैं हिय मैं स्थित करि, हित जुत आछै भाय॥ ८६॥
सावधांन मरतै समैं, ह्वै कै भलै प्रकार॥
निश्चै करि उत्तम गतिहि, प्राप्त हौत निरधार॥ ८७॥
माया बंधन तौरिकै, अंत समै कै मांहि॥
प्रभु कौ राषै ध्यांन तौ, लहै परम पद ठांहि॥ ८८॥
कलिजुग दोष समुद्र पै, इक बड गुन जा मध्य॥
लियै नांम भगवांन कौ, सुभ पद लहै प्रसध्य॥ ८९॥
तपस्या करि सतजुग विषै, जिग्य करि त्रैता मांहि॥
सेवा करि द्वापुरहिं मधि, पावत सुभ पद ठांहि॥ ९०॥
सौ गति हरि कै नांम सौं, कलि बिच प्रापति हौय॥
बिनु परिश्रम प्रांनी तिरै, यामैं भैद न कौय॥ ९१॥
कलजुग जनम जु धन्य है, नाम भगति अनुसार॥
करम सफल ह्वै हैं सबै, कीरतन करि कर्तार॥ ९२॥
हे नृपति या कलिजुग मैं, ब्यापत दोष अपार॥
पै याहि समैं प्रभु नांम, सूं छुटि जाहि संसार॥ ९३॥
कलिजुग मैं कीर्तन करै, मृत्यु समैं मैं ध्यांन॥
लीन करहिं निज रूप मैं, परमाश्रय भगवांन॥ ९४॥

(इति श्री भागवते महापुराणे द्वादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते तृतीयोऽध्यायः ॥ ३॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

(चार प्रकार के प्रलय)

॥ श्री सुक उवाच ॥

चौपई - सुक बोलै सुनियै हौ राय॥ तो आगै हम्ह आछै भाय॥
सूछिम काल तैं लै बड काल॥ विधि आर्बल लौं कह्यौ त्रपाल॥ १॥
अरु कह्यौ च्यारौ जुगनि प्रमांन॥ अब सुनियै कहूं प्रलै विनांन॥
चव हजार जुग कौ दिन अैक॥ विधि कौ हौत म्रजाद सुटैक॥ २॥
ब्रह्मा कै इक दिवसहि मांहि॥ चवदह मनु प्रगटनि तामांहि॥
राज करत है अनुक्रम भाय॥ आछै धर्म म्रजाद चलाय॥ ३॥

विधि कौ दिन जब हौत वितीत॥ फिरि निस ह्वै दिन ही सम रीत॥
सब लौकनि कौ तब निस मांहि॥ हौहि जात है प्रलै सदांहि॥ ४॥
निति नैमिति प्रलै इहि कहीय॥ सुतौ सदा विधि की निसि महिय॥
करि निज विपै लीन संसार॥ सोय रहत है आनन च्यार॥ ५॥
अरु विधि कै सौ वर्ष बिताय॥ तब ब्रह्मांड नास कौ पाय॥
नास सकल ब्रह्मांड सुपावत॥ जु इहि माया प्रलै कहावत॥ ६॥
हे राजा जिहँ समै सुमांहि॥ प्रिथवी इहै नास कौ पांहि॥
ताहि समैं सौ बरष अगार॥ बरसैंगे न मैह निरधार॥ ७॥
तब भुव मैं अंन ह्वै है नांहि॥ बढि है भूष सु अति अधिकांहि॥
सकल प्रजा तब आपस मध्य॥ षांन लगैंगी करि करि बध्य॥ ८॥
भूष बउत लगि है वा बार॥ मिलि है अंन अलप निरधार॥
काल उपद्रव कै अनुभाय॥ प्रजा नास पै है दुष पाय॥ ९॥
रस समुद्र कौ भुव कै तनकुँ॥ प्रलैं काल मैं नृपति ग्रहन कुँ॥
अपनीं किरननि सौं करि पांन॥ फिरि रस छोडैगौ न निदांन॥ १०॥
अग्नि प्रलै कौ ताकै पाछि॥ कढि है फन पति मुष तैं आछि॥
सो पावक पवन करि प्रेरति॥ सुन्य लोक दाहैगौ बढि अति॥ ११॥
तैंरै अग्नि ऊपरि रवि किरनैंहि॥ तासुं लगि है सब जग जरनैंहि॥
जरि चुकि है जब सोभा ताकि॥ ह्वै है सम म्रतिका डगला कि॥ १२॥
कछु दिन अधिक बरष सौ तांइ॥ चलि हैं पवन सुअति अधिकांइ॥
तासौ रजि उडि सब आकास॥ आछादित ह्वै परहि न भास॥ १३॥
ताकै पीछै नांम सु अंग॥ चित्र विचित्र जू जिन्हकै रंग॥
अैसै मेघनि कुल जलधार॥ बरसैंगे सौ बरष अपार॥ १४॥
करिहै सब्द भयानक भारि॥ हौहिगी भुवी जल मय सारि॥
पुनि गुनि गंधहि प्रिथवी सबहि॥ प्रबल नीर हरि लै है तबहि॥ १५॥
जबै गंध प्रिथवी कौं जेंहि॥ नास तबै प्रिथवीहूं पैंहि॥
अग्रि सौषि है जल कौ गुन रस॥ तब जल पैहि नास समै वस॥ १६॥
गुन अरु रूप अग्नि कौ फेर॥ लै है पवन सुहरि बिन झेर॥
अग्नि रूप करि रहित सुह्वैहि॥ लीन पवन मांही जब ह्वैहि॥ १७॥
परस वाय कौ गुन आकास॥ ग्रसि लै है परि है नहिं भासटहौ॥
तब बहि पवन अकासहिं मध्य॥ जायैगौ हौहिं लीन प्रसध्य॥ १८॥
नभ कौ गुन अरु सब्द प्रकार॥ ग्रसि लै है तामस अहंकार॥
तब तामस अहंकार मंझार॥ लीन हौहिगौ नभनिरधार॥ १९॥
मधि तैजस अहंकारहि जब॥ इंद्रीन लीन हौहिंगी तब॥
इंद्रिन कै सुर सब वा बार॥ सकल व्रत्य संजुत निरधार॥ २०॥
बैकारिक अहंकारहि मांहि॥ लीन हौहिहै कहूं जतांहि॥

अहंकारहिं महतत ग्रसि लैहि॥ महतत मैं अहंलीन सु ह्वैहि॥ २१॥
महतत कौ सतगुन लौं आदि॥ माया ग्रसि लै हैं अहलादि॥
तबै ब्रह्म रहि जै हैं अैक॥ रहि है नहिं निसदिन की टैक॥ २२॥
जो नहिं आदि अंत संजूप॥ निति अविनासी कारन रूप॥
अैसौ ब्रह्म अनूप उदार॥ इकलौ ही रहि है वां बार॥ २३॥

दोहा - सत रज तम महतत्त्व मन, वच बुधि इंद्री प्रांन॥
सुरन सहित रचनां कछू, जब रहिहै न निदांन॥ २४॥
स्वपन जागनौं सौवनौं, जल प्रिथवी आकास॥
पवन अगनि सूरज कछू, जातन न रह्यौ प्रकास॥ २५॥
अैसौ ब्रह्म अनूप सौ, रहि जै हैं वां बार॥
और कछू रहि है नांहि, रचना जुत संसार॥ २६॥
कछू दिषाई दैत नहिं, ज्यौं सुसुप्त कै मांहि॥
त्यौंहि प्रलै कै समैं मैं, कछू दरसि है नांहि॥ २७॥
प्रकति पुरष की सक्ति कौ, हौत काल करि नास॥
सौ कहियत प्राकृत प्रलै, नांम है महाजास॥ २८॥
पुनि बुधि इंद्रिय अर्थ या, रूपहि करि निरधार॥
ताकैं आश्रय ग्यांन ही, है जुत सौभ सुढार॥ २९॥
जाकैं आदि रु अंत है, अस पदार्थ दरसाय॥
सो बहि पूरन ब्रह्म कौ, है सरूप सब भाय॥ ३०॥
दीपक नैत्र सरूप अै, जुदै अग्नि सौं नांहि॥
अै तनमात्रा बुधि इंद्री, ब्रह्म तैं जुदै न आंहि॥ ३१॥
जइसै हौत न हौत है, मेघ सुबिच आकास॥
त्यौं ही ब्रह्म मैं हौत नहिं, हौत जुक्त सब भास॥ ३२॥
जो सति मांनत हौ सकल, सुनौ पदार्थ न ईव॥
तो बिनु अर्थ प्रतीत नहिं, निश्चै हौत सदीव॥ ३३॥
जइसी भांत सुबस्त्र कै, है अवईव जु सूत॥
तइसै ही या जक्त कै, प्रभु अवईव अभूत॥ ३४॥
कारन कीयै रूप करि, जो जग मैं दरसाय॥
सो सब झूठै है सही, सत्य भेद न कहाय॥ ३५॥
परसपर कै आश्रहि तैं, आदि अंत कै मध्य॥
है जो बस्त सुजांनियै, झूठी प्रगट प्रसध्य॥ ३६॥
चैतन रूप संसार कौ, कह्यौ जात है नांहि॥
चैतन भेद कह्यौ सबनि, आत्म सु याकै मांहि॥ ३७॥
तातैं निरनौं ह्वै सकत, जग कौ आत्महि संग॥
भिन्न आत्म तैं कियै ह्वै, नहि निरनौं किहु बंग॥ ३८॥

रूप अनैक सु हौत नहिं, सत्य पदार्थ निदांन॥
सत्य पदार्थ सु रहत है, सदा अैक उनमांन॥ ३९ ॥
मांनत पंडित जो कोउ, सत्य इहै जु संसार॥
सौ अैसी भांत न जगहि, जांनत है निरधार॥ ४० ॥
जइसै सबही ठौर है, प्रति अैक आकास॥
पै घटकै ठांमै जुदौ, जुदौ परत है भास॥ ४१ ॥
अरु जइसै दिनकर बसत, अैक अकासहि मांहि॥
पैं अनैंक दिसि परत है, जल कै बहु घट ठांहि॥ ४२ ॥
पुनि जइसै है पवन इक, पै सरीर कै मांहि॥
पंच प्रांन निरधात करि, कहियतु प्रगट सदांहि॥ ४३ ॥
या संसार उपाधि तैं, ब्रह्म बहु रूप लषाय॥
जइसै अैक सुवर्न तैं, केउ भुषन प्रगटाय॥ ४४ ॥
जइसै ही प्रभु जांन तू, है निति अैक अनूप॥
वेद लौक नर बचन करि, दीसि परत बहु रूप॥ ४५ ॥
जइसै रवि की किरनि तैं, उपजत मेघ निदांन॥
अरु रवि ही तैं हौत है, घन प्रकास अप्रमांन॥ ४६ ॥
पै रवि ही कौ अंस है, नैत्र दुहू निरधार॥
तिन्ह नैंत्रन कौ करत है, उमडि मेघ अंधियार॥ ४७ ॥
अैसी भांत सुब्रह्म तैं, प्रगट भयौ आकार॥
अरु प्रकास अहंकार कौ, करत ब्रह्म सुभढार॥ ४८ ॥
अैपरि जीव निदांन है, ब्रह्म अंस अवतार॥
ताही कौ बंधन करत, निश्चै करि अहंकार॥ ४९ ॥
रवि तैं उपज्यौ मेघ जब, हौहि जात है दूर॥
तब दैषत है नैत्र जुग, बिच अकास कै पूर॥ ५० ॥
अैसै आत्मा सौं लग्यौ, है निश्चै अहंकार॥
सौ निवर्त ह्वै जात जब, दिसत ब्रह्म सुषसार॥ ५१ ॥
ग्यांन सरूपी षडग सौं, काटि प्रकति अहंकार॥
ब्रह्म रूप है आप इक, रहै भलै अनुसार॥ ५२ ॥
हे राजा कहियतु इहै, प्रलै अत्यंत सुनांम॥
सकल भेद ताकौ कह्यौ, तुम्ह सौं नृप गुन धांम॥ ५३ ॥
मनुषन तैं लै बिधिहिं लौं, जिन्ह की सूछिम द्रिष्टि॥
छिन छिन मैं उतपति प्रलै, तै मांनत बिच सृष्टि॥ ५४ ॥
काल प्रवाह महाबली, निश्चै तिहि अनुभाय॥
हरी जात छिन छिनहि मधि, सब मनुषन की आयु॥ ५५ ॥

प्राप्त भई परिनांम कौ, जें अवस्था निरधार॥
ते उतपति अरु प्रलै की, कारन बिच संसार॥ ५६॥
आदि अंत जाकौ न अस, ईस्वर रूपी काल॥
ताकरि कीनी अवस्था, सौ दरसत न नृपाल॥ ५७॥
जइसी भांत अकास मैं, चलै नछित्रन्हिं सु जात॥
कछू दिषाई दैत नहिं, उन्ह गनर्ना बिषयात॥ ५८॥
नित नैमित्य प्राकृत्य अंतिक, प्रलै सु च्यार प्रकार॥
सहित काल गति तुम्हहिं हम्ह, दिय जताय निरधार॥ ५९॥
है नृप करता जगत कै, नारायन करतार॥
ते संपूरन जियन कै, घर है अति सुषसार॥ ६०॥
तिन्हकी लीला इहि अती, करि संषैप प्रकार॥
कथा रूप बर्नन करी, हम्ह तुम्हसौं सुषसार॥ ६१॥
लीला उन्ह भगवांन की, संपूरन निरधार॥
कहनैं कौ सामर्थ नहिं, सुर नर जुत मुष च्यार॥ ६२॥
जगत रूप सामुद्र इहि, ताकै उतरन पार॥
प्रभु पुरषौतम बिनु कोउ, नउका और सुढार॥ ६३॥
प्रभु की लीला कथा रस, तिहँ सैवन अनुसार॥
दुष रूपी पावक मिटत, बढि आनंद अपार॥ ६४॥
कथा भागौत पुरांनहिं, है कलजुग सुषसार॥
इहि सनातन लीलामृत, मैटत कलैस अपार॥ ६५॥
संहिता रूप पुरांन कौ, अरु इहि कथा सुढार॥
अविनासी करता कही, नारद सूं जुत प्यार॥ ६६॥
फिरि नारद कहि व्यास सौं, इहै कथा सुषदाय॥
बहुरि व्यास जू कहत भय, मुहि हरि रूप सुनाय॥ ६७॥
कथा भागवत वेद करि, संमत संहिता रूप॥
कहत भयै मुहि व्यास जू, जें प्रभु रूप अनूप॥ ६८॥
हे कुरुनंदन जिग्य कौ, करि आरंभ सुभाय॥
सौनक आदि जु रिष सहस, बैठैंगै सुषपाय॥ ६९॥
तें सब करिहै सूत सौं, प्रस्न सहित चित चाहि॥
मिलै जांनिकै सूत सौं, मांनैंगै अति लाहि॥ ७०॥
तबै सूत जू इहि कथा, नैमिषारं वन ठांम॥
सौनक रिषि सौं कहहिगैं, बरनि भैद अभिरांम॥ ७१॥

(इति श्री भागवते महापुराणे द्वादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ पंचमोऽध्यायः ॥

(श्री सुकदेव जी का अंतिम उपदेश)

॥ श्री सुक उवाच ॥

दोहा - सुक बोलै वसु आत्म हरि, या पुरांन कै मांहि॥
बार बार बरनन करै, जिन्ह कै चरित अथांहि॥ १ ॥
जास प्रभु की प्रसंनता, सौं प्रगट्यौ मुष च्यार॥
अरु प्रगटै जिन्ह क्रौध तैं, महादेव निरधार॥ २ ॥
हे नृप तू मरि जाहिंगौ, इहि पसु बुधि निरवारि॥
पंचभूत महा ज्यौं पहल, प्रगट्यौ तू न बिचारि॥ ३ ॥
सब सरीर ज्यौं नास कौ, प्रापत ह्वैगौ नांहि॥
मरन जनम रु सुष दुष है, लषै आत्म हिय ठांहि॥ ४ ॥
फिरि मरि प्रगट न हौहिंगौ, पुत्र रु पउत्र सरूप॥
प्रगटै अंकुर बीजज्यौं, तू न प्रगटि है भूप॥ ५ ॥
या सरीर तैं जीव है, न्यारौ सदा निदांन॥
जइसै न्यारौ काष्ट तैं, अग्नि रहत बलवांन॥ ६ ॥
कट्यौ लषत सिर आपनौं, आप सुपन कै मांहि॥
अरु इहि जांनत है कि म्हैं, मर्यौ पर्यौ भुव ठांहि॥ ७ ॥
आप सथित है देह मैं, तातै इहै जनाय॥
अजर अमर आत्मा जुदौ, है तन तैं सुषदाय॥ ८ ॥
जइसै घट फुट जाय जब, वां घट कौ आकास॥
मिलत बडै आकास मैं, जुदौ न परही भास॥ ९ ॥
अइसै ही छुट जात है, इहि सरीर जिहिं बार॥
जीव जात मिलि ब्रह्म मैं, ब्रह्म जु है सुषसार॥ १० ॥
मन आपन पै विषै गुन, कर्म देह प्रगटाय॥
ता मन कौ माया प्रगट, करत समैं अनुभाय॥ ११ ॥
मन प्रगटै तै जीव कौ, लागत है संसार॥
तबै जीव निज रूप कौ, भूलि जात निरधार॥ १२ ॥
पात्र तेल बाती अग्नि, इन्ह संजोग प्रभाय॥
कहियतु प्रजुरित अग्नि ही, दीपक नांम कहाय॥ १३ ॥
देह कर्म मन जीव इन्ह, कै संजोग अनुसार॥
बंध मोछ दुहु हौत है, समझहु नृपति उदार॥ १४ ॥
सतगुन रजगुन तमौगुन, इन्हकी वृत्यि अनुभाय॥
उपजत है अरु मरत है, बउत बार दुषपाय॥ १५ ॥

परै स्थूल रु सूछम तै, आत्मा जौति सरूप॥
नहिं उपजत नहिं मरत है, निति अविनास अनूप॥ १६॥
निरविकार है स्थिर है, नभ ज्यौं रूप अधार॥
जास आद नहिं अंत नहिं, सब व्यापक करतार॥ १७॥
यौं अपन पै विषै करि, स्थित जु आत्मा मांहि॥
निज बुधि करि अनुमान करि, करि प्रभू चिंता चांहि॥ १८॥
जांनै आत्म सरूए कौ, आछी भांत सुजांन॥
तौ डर कबहूं मृत्यु कौ, नांहिंन हौहि निदांन॥ १९॥
द्विज बालक कै बचन करि, तुहि अहि डसि है नांहि॥
करि है मृत्यु तौ नास नहिं, मृत्यु कौ मृत्यु प्रभु आहि॥ २०॥
म्हैं हूं ब्रह्म कौ रूप ब्रह्म, म्हेरौ रूप निदांन॥
अैसै आपन पै विषै, दैषि आत्म जुत ग्यांन॥ २१॥
पुंनि आपन पै कै विषै, राषि आत्म सुष सार॥
छौडै आप सरीर कौ, प्रकृति भेद निरवार॥ २२॥
विष मुष करि अहि पांव कौ, काटत लषि है नांहि॥
जुदौ न लषि है आत्म तैं, इहि संसार अथांहि॥ २३॥
हे नृप हरि बिस्व आतमा, तिन्हकी कथा सुढार॥
तुम्ह पूछी जइसै कही, हम्ह तुम्ह सौं निरधार॥ २४॥
अब तैंरै का सुनन की, है फिरि चित मैं चाह॥
सो कहि मोहि सुनाइयै, हे नृप सहित उमाह॥ २५॥

(इति श्री भागवते महापुराणे द्वादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

(परीक्षित की परमगति, जनमेजय का सर्प सत्र और वेदों के शाखा
भेद वर्णन)

॥ सूत उवाच ॥

दोहा - सूत कहत सउनक रिषनि, व्यास पुत्र या भाय॥
पूछयौ नृप सौं जब नृपति, उन्हकै निकट सुजाय॥ १॥
सुक मुनि कै पद पंकजनि, करत भयौ परिनांम॥
हाथ जोरि बोल्यौ बचन, अमृत सम अभिरांम॥ २॥

॥ परीछित उवाच ॥

जिन्ह कौ आदि न अंत है, ऐसै प्रभू अनूप॥
तिन्हहि चरित्र मो सौं कह्यौ, मुनि तुम्ह करुना रूप॥ ३ ॥
तासौं हे मुनि रावरौ, हुव अनुग्रह अधिकाय॥
ता करिकै म्हैं सिध हुवै, जांनि तत्व सुषदाय॥ ४ ॥
बडै साध ह्वै लगि रह्यौ, जिन्ह कौ चित हरिमांहि॥
तै अग्यांननि पै दया, करै सु अचिरज नांहि॥ ५ ॥
तीन ताप सौं दुषित जें, दीन मनुष अग्यांन॥
तिन्हकी कौनुँ दया करै, साधुन बिनां निदांन॥ ६ ॥
हे मुनि म्हैं तुम्ह सौं सुनी, संहिता पुरांन रूप॥
तामैं उत्तम श्लोक कौ, आछै चरित अनूप॥ ७ ॥
हे सुक तच्छक मृत्यु सौं, म्हैं डरपत हूं नांहि॥
तुम्ह दिषयौ मग मुक्ति ता, करि मिलहुँ ब्रह्महिं मांहि॥ ८ ॥
हे सुक आग्या देहु मुहि, वसि करि म्हैं इंद्रीन॥
हरि मैं चित्त लगाय कै, करूं कामनां छीन॥ ९ ॥
म्हैं निज चित्त कौ हरि विषै, करिकै निश्चै लीन॥
या सरीर कौ दैहुँ तजि, जो है श्राप अधीन॥ १० ॥
अनभव करि पुनि ग्यांन करि, म्हैरौ मिट्यौ अग्यांन॥
जें कल्यांन कै रूप प्रभु, तिन्हकौं दिषयौ थांन॥ ११ ॥

॥ सूत उवाच ॥

सूत कहत ऐसै कहै, राजा बचन सुढार॥
तबै व्यास़ भगवांन कै, सुक मुनि पुत्र जु उदार॥ १२ ॥
सकल रिषिन जुत जात भय, उहिंतैं उठि किहुँ ठांहि॥
उन्हकी नृप पूजा करी, नम्र हौय अधिकांहि॥ १३ ॥
नृपति परीछित अपन पौ, करि सु अपनपै मध्य॥
राषि आपकौ करत भय, प्रभु कौ ध्यांन प्रसध्य॥ १४ ॥
अंग सकल निश्चल भयै, राजा कै वां बार॥
जइसै निश्चल हौत है, बृछ सु बिनां बयार॥ १५ ॥
जिन्ह मुष पूरब ओर अस, कुस तट गंगा ठौर॥
तिन्ह आसन बैठौ नृपति, मुष करि उत्तर वौर॥ १६ ॥
ब्रह्म रूप जोगैस बड, जिन्हहिं न किहुँ कौ संग॥
दूरि भयै संदेह जिन्ह, नृप हुव ऐसै ढंग॥ १७ ॥
द्विज वा करिकै जुक्त कौ, पठयौ तच्छिक नाग॥
आवत हौ नृप हतन कौ, वां गंगा तट जाग॥ १८ ॥

मारग मैं दैषत भयौ, ब्राह्मन कस्यप नांम ॥
अहि विष टारन कौ वहै, वैद्य हुतौ अभिरांम ॥ १९ ॥
बऊत द्रव्य वा बिप्र कौ, दै तच्छिक मग मांहि ॥
फैरि राह ही सौं दियौ, जांनि न दिय नृप ठांहि ॥ २० ॥
बडौ सामर्थी सर्प बहि, चहै सु धारै रूप ॥
सौ अहि काटत भौ नृपहि, ह्वै द्विज रूप संजूप ॥ २१ ॥
ब्रह्म भूत जो राज रिषि, तच्छिक काट्यौ तांहि ॥
तब नृप वेगहि भस्म हुव, बढि विष अग्नि अथांहि ॥ २२ ॥
नभ भुव दिसा दिसानि मैं, हुव बड हाहाकार ॥
विसमय हुव सुर असुर नर, सब लषि लषि वा बार ॥ २३ ॥
बजै नगारै स्वर्ग मैं, किय गंधर्वनि गांन ॥
सुमन बृष्टि अमरन करी, किय नृत्य अप्छर सुजांन ॥ २४ ॥
साध साध है अस बचन, कहत भयै सब कौय ॥
नृपति परीछित कौ सुजस, क्यूं न जगत बिच हौय ॥ २५ ॥
सुपुत्र परीछित नृपति कौ, जनमैजय अवनीस ॥
सौ सुनि पित तछिक भष्यौ, धरि चित मैं अति रीस ॥ २६ ॥
बड पंडित ब्राह्मननि कौ, ताही बार बुलाय ॥
हौम जिग्य मैं अहिन कौ, करवावत भौ राय ॥ २७ ॥
जरत भयै अहि उर महा, जिग्य बीच कुंड मांहि ॥
इहि लषि तछिक चित्त विषै, हुव संताप अथांहि ॥ २८ ॥
बिकल हौहि अहि जात भौ, इंद्र सरन वां बार ॥
जनमैजय जिग्य मैं न लषि, तच्छिक बड विष धार ॥ २९ ॥
द्विजनि कहत भौ अधम है, तच्छिक सर्पन मांहि ॥
अग्निकुंड मैं दाह कौ, क्यूं प्रापति ह्वै नांहि ॥ ३० ॥
इहि राजा कौ बचन सुनि, बोलै द्विज या भाय ॥
हे राजा बासव सरन, तच्छिक प्राप्त भौ जाय ॥ ३१ ॥
ताकी रिछया करतहै, इंद्र सुभलै प्रकार ॥
तातैं पावक कुंड मैं, बहि न परत निरधार ॥ ३२ ॥
इहि बिप्रननि कौ बचन सुनि, जनमैजय बुधिवांन ॥
कहत भयौ द्विज रित्वजननि, अैसै बचन निदांन ॥ ३३ ॥
हे ब्राह्मन हौ इंद्रजुत, तच्छिक कौ या बार ॥
अग्नि कुंड कै मध्य तुम्ह, क्यूं न दैत हौ डार ॥ ३४ ॥
बिप्र जिग्य करता जु इहै, सुनि राजा कौ बैंन ॥
तछिक इंद्र दुहु हौमिबै, कौ किय जतन सुषैंन ॥ ३५ ॥

इंद्र सहित तच्छिक इहां, परौ कुंड कै मांहि॥
इह कहि आहुत अग्नि मैं, दैत भयै वां ठांहि॥ ३६॥
द्विजनि बचन करि इंद्र जुत, तच्छिक अहि वां बार॥
चलयमांन निज सथल तैं, हौत भयौ निरधार॥ ३७॥
बासव तछिक बिमांन जुत, गिरतै नभ तैं दैषि॥
नृप सौं यौं बृहस्पति कह्यौ, चित द्रिढ भेद सपैषि॥ ३८॥
हौ मनुषन कै इंद्र तुम्ह, हे जनमैजय राय॥
बध करनौं या सर्प कौ, तुम्हहि न जोग्य कहाय॥ ३९॥
तष्यक सर्प नैं कियौ है, सुनि अमृत कौ पांन॥
अजर अमर पुनि इंद्रहूं, है निश्चै उनमांन॥ ४०॥
प्रांनिन कौ जीवन मरन, गति कर्मनि सौं हौत॥
तातैं नांहिंन और कौ, दुष सुष करन उदौत॥ ४१॥
रोगादिक अरु चोर अहि, अग्नि भूष जल प्यास॥
इन्ह करिकै निज कर्म सौं, हौत जियन कौ नास॥ ४२॥
और सबनि निमत ही है, प्रारब्ध कर्म अनुसार॥
जीव भुक्तत है कर्मफल, दुष सुष कौ इहिं सार॥ ४३॥
टौना रूप सुजिग्य है, अब नहिं करियै राय॥
दगध भयै अपराध बिनु, इहिं अनैंक अहि आय॥ ४४॥
अपनैं कर्मन कौ करत, भोग मनुष निरधार॥
सुष दुष कौ दाता कोउ, और न बचि संसार॥ ४५॥
अैसै ब्रहस्पति कै बचन, सुनि राजा लिय मांन॥
भौ निवर्ति अहि हौम तैं, पूजै रिषि बुधिवांन॥ ४६॥
इहि माया भगवांन की, वाधि रु वाधिक रूप॥
यामैं प्रापति मोह कौ, ह्वै ग्यांनहु संजूप॥ ४७॥
आत्म बिचारहि प्रकति करि, दंभी प्राप्त न हौय॥
जइसै बैगहि हौत है, प्रापति ग्यांनहि कौय॥ ४८॥
पंडित वा प्रभु सरन ह्वै, करत विवाद सुनांहि॥
कछु सुष प्रापति हौत नहिं, वाद विवादन मांहि॥ ४९॥
बासुदैव भगवांन कौ, बंदन बारंबार॥
जीति किहूं सौं जात नहिं, जिन्ह माया निरधार॥ ५०॥
प्रकति मुहित जिन्ह बुधि बुरी, मांनत अपुन पराय॥
जे मोही कौ जगतगुर, जांनत कहत सदाय॥ ५१॥
जांह कर्म अहंकार करि, जीव लिप्त ह्वै नांहि॥
माया बंधन रूप इहि, कीनी दूर अचांहि॥ ५२॥

अैसौ करि मुनिजन सबै, आछी भांत बिचार॥
प्राप्त हौत भय विरामहि, छौडि भेद संसार॥५३॥
इह नहिं इह नहिं यौं कहत, जाकौ वेद बताय॥
ताहि परम पद कहत है, पंडित प्रगट सुनाय॥५४॥
वाकी नहिं नहिं करन मैं, पाछै जोरहि जात॥
जो सथांन है प्रभू कौ, समझहुँ भेद अग्यात॥५५॥
जा हरि कौ निज हृदै मैं, धारत ध्यांन सुजांन॥
सावधांन इंद्रीन करि, मैटि सु प्रकति विनांन॥५६॥
जिन्ह कै गेह सरीर मैं, नांहिंन अपुन पराय॥
तें पावत है बिस्नुं कै, परम पदहि सुषदाय॥५७॥
करै न किहुं कि अवग्या सहि, रहै जु वाद विवाद॥
नर तन लहि किहुं सौं नहिंन, करै बैरस विषाद॥५८॥
नमसकार वा प्रभुहि धरि, जिहँ पद पंकज ध्यांन॥
संहिता भागवत रूपहिं, म्हैं भौ प्राप्त निदांन॥५९॥

॥ सौनक उवाच॥

सौनक बोलै व्यास कै, सिष रिषि पै लहि आदि॥
बड आचारी वेद कै, धरै ग्यांन सुभ ज्यादि॥६०॥
वेद बांटि दिय ब्यास जू, तिन्हकौ कई प्रकार॥
सो तुम्ह आछी भांत सौं, हम्हहि कहौ या बार॥६१॥

॥ सूत उवाच॥

सूत कहत भय सौनकनि, सावधांन ह्वै जाद॥
ब्रह्म कै मन हृदै तैं, प्रगट भयौ इक नाद॥६२॥
उपासना जिहँ नाद की, करि आछै जोगैस॥
अपनौं मन वसि करत है, रहत न माया लैस॥६३॥
अधिभूतक अध्यातमक, अधि दैवक तिहुँ काल॥
इह्वै दूर करि परम पद, पावत महा रसाल॥६४॥
तीन अषर मिलि नाद बहि, प्रगट्यौ रूप उंकार॥
ताही सौं हुव बेद कै, सकल सबद निरधार॥६५॥
प्रगट ब्रह्म परमातमा, तैज रूप भगवांन॥
तिन्ह सरूप उंकार है, समझहुं भेद सुजांन॥६६॥
सोवत मैं वा नाद कौ, प्रगट सुनत है जीव॥
कढै बचन उहिं नाद सौं, ब्रह्म तैं प्रगट सदीव॥६७॥
ब्रह्म कौ घर उंकार है, जांनि लैहुँ निरधार॥
वेद उपनिषद मंत्र सब, इन्हकौ जिय उंकार॥६८॥

हे सौनक उंकार तैं, प्रगटै वरन सु तीन॥
'उं अ म' अैं त्रय आषर अरु, इन्हकै भेद सरीन॥ ६९ ॥
सत रज तम तीन गुन इहि, रीगु जजु साम्र नांम॥
इहि भू भुवः स्वः त्रय अर्थ स्वप्न, जाग्रति सुषुप्ति वांन॥ ७० ॥
इन्हतैं श्रजत भयै प्रभू, अषिर समूह अपार॥
ह्रस्व दीर्घ सबही अषिर, प्रगट भयै निरधार॥ ७१ ॥
सपरस अंतस्थ उष्म अरु, अनुनासिक अनुस्वार॥
इन्हहि तैं उपजै वर्न सब, संग्या सब्द विवहार॥ ७२ ॥
सदा सृष्टि प्रगटनि समैं, इन्हिं आषर अनुसार॥
विधि कै च्यारौ मुषन तैं, वेद प्रगट हुव च्यार॥ ७३ ॥
ओ उंकार व्याहृत सहित, आछी भांत निदांन॥
प्रगट करत भौ वेद चव, जिग्य निमित्त निदांन॥ ७४ ॥
तेइ बेद चव सिषन की, परंपरा अनुभाय॥
प्रापति चारों जुगन मैं, हौत भयै सुषदाय॥ ७५ ॥
जुग द्वापुर कै आद मैं, निश्चै आछी भांत॥
रिषीस्वरन करि जुक्त किय, भयै वेद विषयात॥ ७६ ॥
अलप पराक्रम आयु जिन्ह, षीन बुद्धि बसि काल॥
अइसै प्रांनिन दैषि कैं, व्यास मुनेस क्रिपाल॥ ७७ ॥
अैक वेद हौ ताहि निज, हृदै मध्य निरधार॥
प्रभु करि प्रैरित करत हुव, च्यार प्रकार विचार॥ ७८ ॥
है ब्रह्मन्य या लोक कौ, धरम सुपालन हार॥
ताकी रिछया निमित या, काल विषै सुभ ढार॥ ७९ ॥
चतुरानन जोगेसादि, सब सुरगन करि जोरि॥
ताकी प्रारथना भलै, गहि प्रभु सरन अकोरि॥ ८० ॥
पारास्वर रिषि तै तबै, सत्यवती गर्भाय॥
महाभाग श्री व्यास जू, प्रगट भयै सुषदाय॥ ८१ ॥
जिन्ह कीनैं इक वेद तैं, च्यार वेद सुभ भाय॥
जुदे जुदे निज सिषन कौ, दीनै भलै सिषाय॥ ८२ ॥
यजुरवेद रिगवेद पुनि, साम अथर्वन वेद॥
हुतौ पहल चहुँवेद कौ, अैक समूह सुभेद॥ ८३ ॥
इन्ह इक च्यार विभाग किय, रिचा सोभ सरसाय॥
मनु समूह हीरांन कौ, जगमगात दरसाय॥ ८४ ॥
बडी बुध्यि जिन्ह की महा, अैसै व्यास सुजांन॥
तैं अपनैं चहुँ सिषनि निज, निकट बुलाय निदांन॥ ८५ ॥

हे सौनक इक इक निगम, दिय चहुँ सिषनि सिषाय॥
सीषे सिष तिन्हकै जुदे, अब कहुँ नांम सुनाय॥ ८६॥
रिचा बउत जा मध्य है, सौ रिग वेद सुढार॥
पैल नांम कै सिष्य कौ, दिय सिषाय निरधार॥ ८७॥
वैसंपायन सिष्य पै, करि अनुग्रह श्री व्यास॥
यजुरवेद सिषवत भयै, निगद नांम हौ जास॥ ८८॥
छंद रूप संहिता सहित, सामवेद सुषदाय॥
सौ जईमुनि रिषि कौ दिय, आछी भांत सिषाय॥ ८९॥
प्रगट अंगिरा कुल विषै, भयौ सुमंत जु नांम॥
बेद अथर्वन ता सिषहि, दिय सिषाय अभिरांम॥ ९०॥
अैसै च्यारौं सिषन कौ, व्यास दैव भगवांन॥
कीनौं च्यारौं वेद कौ, सुभ उपदेस सुजांन॥ ९१॥
फिरि वै सिष निज सिषन कौ, करत भयै उपदेस॥
अैसै साषा वेद की, भई अनैक बिसेस॥ ९२॥
इंद्रप्रमद वाषकल दुहु, अपनैं सिषनि सुभाय॥
पैल रिषीस्वर वेदरिग, आछै दियौ सिषाय॥ ९३॥
च्यार सिषन कुं वाषकल, करत भयौ उपदेस॥
नांम चहूं जिन सिषन कै, अबहूं सुनौ रिषैस॥ ९४॥
अग्निमित्र इंद्रप्रमति पुनि, जाज़वल्क अै तीन॥
और परासर सिष्य अै, वाषकल कै प्रबीन॥ ९५॥
निज सुत मांडुक नांम कौ, ताहि भलै अनुसार॥
इंद्रप्रमति उपदैस किय, करिकै क्रिपा सुढार॥ ९६॥
देवमित्र संजुत सौभरि, आदिकनि सिष्य जांनि॥
कहत भयौ मांडूक जिन्ह, सौं रिगवेद बषांनि॥ ९७॥
मांडुक पुत्र साकल्य कै, पांच पुत्र अभिरांम॥
वात्स्य मुदगल सिसिर अरु, सालिय गौषल्य नांम॥ ९८॥
रिष मांडुक इन्ह सुतन कौ, हित जुत आछी भांत॥
सब कीनौं रिगवेद कौ, सुभ उपदेस बिषयात॥ ९९॥
सिष्य भयौ साकल्य कै, जातूकर्न सु नांम॥
अरु हुव जातूकर्न कै, च्यार सिष्य अभिरांम॥ १००॥
बिरज बलाक वैताल रु, पैज सिष्य अै च्यार॥
भयै सुजातूकर्न कै, जिन्हकी बुद्धि उदार॥ १०१॥
पुत्र जु भयौ बाषकल कै, बाषकल्य जिह नांम॥
वालषल्य नामा करी, जिन्ह संहिता अभिरांम॥ १०२॥

सिष्य कासार नांम कौ, ताकौ किय उपदेस॥
वा संहिता अनुसार सौं, बढि गई बुधि बिसेस॥ १०३॥
हौत भई रिगवेद की, संहिता रिचा अपार॥
या प्रकार सब रिषीस्वर, धारत भयै सुढार॥ १०४॥
जो कौ वेद विभाग्य इहि, सुनै भलै चित लाय॥
ताकै पाप निवर्त सब, हौहि जात दुषदाय॥ १०५॥
सिष्य व्यास जू कै हुतै, वैसंपायन नांम॥
जुजुरबेद कौ उपदेस, ताहि कियौ अभिरांम॥ १०६॥
द्वै सिष्य वैसंपाय कै, अध्वरिचरक सुनांम॥
तिन्हकौ वैसंपाय किय, उपदेस जु अभिरांम॥ १०७॥
निज गुर की आग्या नहिंन, उन्ह मानी अग्यांन॥
तातैं ब्रह्म हत्या लगी, उन्ह दुहु सिषनि निदांन॥ १०८॥
वैसंपायन सिषन पै, कीनौं क्रौध अपार॥
जाग्यवल्क सिष तीसरौ, बोल्यौ ताही वार॥ १०९॥
इन्ह दोनूं ही सिषन कै, तन मैं है नहिं सार॥
तातै आग्या रावरी, नहिं मानी निरधार॥ ११०॥
तातै दुष्कर कार्ज इहै, हौं करिहौं जुत चाय॥
जाज्ञबल्क कौ बचन इहि, सुनिकै बैसम्पाय॥ १११॥
क्रौध जुक्त बोलै कि तै, बिप्र अवग्या जु कीन॥
तातै मो सौं पढ्यौ जो, ताकौ त्यागि सरीन॥ ११२॥
दैवरात्र कौ पुत्र जु इहि, जाग्यवल्क नामांय॥
अपनैं गुर कै बचन अै, सुनि कै अति पछितांय॥ ११३॥
जुजरवेद की करत भौ, उलटी ताही बार॥
अरु निज गुर कै सथल तैं, जात रह्यौ निरधार॥ ११४॥
जुजरबेद कौ और रिषि, पर्यौ दैषि भुव ठांहि॥
करि तीतर कौ रूप पिय, जात भयै जुत चांहि॥ ११५॥
तातैं पुनि वा बेद की, इक साषा तैं फेर॥
साषा तैंतरिनांम की, हौत भई बिनु झेर॥ ११६॥
जाग्यवल्क अवग्या करी, निज गुर की वां बार॥
तातै सबही भूलगौ, वेद भेद बिसतार॥ ११७॥
तब आश्रम तैं निकसि रवि, सरन प्राप्त भौ जाय॥
करत भयौ रवि की अस्तुति, आछै चित्त लगाय॥ ११८॥

॥ याज्ञवल्क्य उवाच॥

जाग्यवल्क बोल्यौ कि तुम्ह, बिस्नु रूप रवि आप॥
तिन्हकौं बारंबार है, मो परिनांम अमाप॥ ११९॥

आत्मरूप अनुसार अरु, काल रूप अनुसार॥
प्रांनिन की संसार मैं, सृष्टि सुच्यार प्रकार॥ १२०॥
स्वेदिज हौत पसैव सौं, उदभिज वृछ कहाय॥
अंडिज कहियतु पंछी जे, अंडा तैं प्रगटाय॥ १२१॥
मानुष कहियतु जरायजु, श्रृष्टि तरह यौं च्यार॥
मछर प्रजंत विधि आदि सब, श्रृष्टि भेद आकार॥ १२२॥
तिन्ह हिय मधि बाहरि सदा, व्यापक ज्यौं आकास॥
काल रूप रवि रहत है, जग बिच करन उजास॥ १२३॥
लव निमैष छिन इन्हहिं करि, बरष प्रजंत जु काल॥
ताकौ सूर्ज सरूप है, समझहुँ भेद बिसाल॥ १२४॥
नीर बरषनौं सौषनौं, निज किरननि अनुभाय॥
या प्रकार संसार की, जात्रा रचत बनाय॥ १२५॥
है अमरन मैं श्रेष्ठ रवि, दिन दिन करन प्रकास॥
वेद रीत सौं जाहि जें, पूजत सहित हुलास॥ १२६॥
तिन्हकैं सबही पाप अरु, सब पापन कै बीर्ज॥
दूरि करन वारौ प्रगट, रवि भगवांन सधीर्ज॥ १२७॥
निन्हकौ रूप प्रकास है, मंडल महा सुढार॥
जिन्हकौ हम्ह निज हृदे मैं, ध्यांन धरत निरधार॥ १२८॥
थिर चर जियनि समूह कै, जिय मन इंद्री प्रांन॥
अंतरजामी आप जिन्ह, ह्वै प्रेरत सुनिदांन॥ १२९॥
अंधकार रूपी सरप, सकल लौक ग्रसि लीन॥
तब सब प्रांनी मृतक सम, भयै सोक आधीन॥ १३०॥
तब उन्ह पै करिकै क्रिपा, दयावंत ग्रहराय॥
क्रिपा द्रिष्ठि सौं लोक सब, कियै सचैत उठाय॥ १३१॥
बार बार रवि उदै ह्वै, आप रूपकल्यांन॥
धर्म प्रवर्त सुकरत है, बिच संसार निदांन॥ १३२॥
चक्रवर्त जइसै नृपति, फिरत दिसाननि मध्य।
तबै दुषित प्रांनीन कौ, मैटत दुष प्रसध्य॥ १३३॥
अरु छोटै राजा सबै, भेंट करत सिर नाय।
हाथ जोरि करही अस्तुति, नम्र हौहि अधिकाय॥ १३४॥
तइसै ही रवि फिरत है, दसौं दिसानि उमांहि॥
ताकी पूजा भेट सब, लौक करत चित चांहि॥ १३५॥
उन्ह सबहिन की भेट कौ, आदर करि रवि लैत॥
अरु अंधियार सरूप भय, ताहि मिटाय सुदैत॥ १३६॥

हे प्रभु चरन सु रावरै, है पंकज छबि लीन॥
जैं हैं गुर तिहुँ लौक कै, म्हैं तिन्ह वंदित कीन॥ १३७॥
जिन्ह चरनन कै सरनहूं, प्राप्त भयौ हौं आय॥
जजुरवेद कै पढन की, मुहि ईछा अधिकाय॥ १३८॥

॥ सूत उवाच ॥

सूत कहत ऐसै जबै, अस्तुति सूर्ज की कीन॥
तब रवि धरि अस्व रूप कौ, बेद सिषाय सुदीन॥ १३९॥
जजुरवेद की जब भई, साषा सौ दस पंच॥
रवि अस्वरूपी कै बचनि, तैं निकसी सुष संच॥ १४०॥
माध्यंदिनीहि आदि सब, साषा सुषद अपार॥
करत भयै तिन्हकौ ग्रहन, पंडित कितै सुढार॥ १४१॥
सिष्य व्यास जू कौ हुतौ, जइमन्य नांम सुजांन॥
सामवेद कौ कियौ हौ, जिह उपदेस निदांन॥ १४२॥
हुव ताकै पुत्र पौत्र द्वै, सुमंत रु सुन्वान नांम॥
इक इक संहिता कौ तिह्वै, किय उपदेस सुठांम॥ १४३॥
अरु जइमनि कौ सिष्य इक, रह्यौ जु सुकर्मा नांम॥
सामबेद मैं सौ बउत, हुव प्रवीन अभिरांम॥ १४४॥
जईमनि कौ सिष सुकर्मा, जिह बुधि परम उदार॥
सांमवेद संहिताहि कै, कीनै भेद हजार॥ १४५॥
हिरनिनामि कौसल्य अरु, पौष्यंजि सिष्य त्रय और।
भयै सुकर्मा कै भलै, जांनि भेद सुभ तौर॥ १४६॥
जांनन वारै बेद कै, पुरी अवंती मध्य॥
सिष्य सुकर्मा कै बउत, हौत भयै सप्रसध्य॥ १४७॥
सामबेद साषा सुभग, तिन्हकै पढवै वार॥
हौत भयै सिष पांच सै, उत्तर दिसा मंझार॥ १४८॥
हिरननाभ पौष्यंजि अरु, आवंति सुतिहुं नांम॥
सामबेद कौ पढत भय, चाह धारि हिय ठांम॥ १४९॥
भयै पांच सौ सिष्य तहँ, सामवेद पढवार॥
तातैं साषा पांच सै, हौत भई निरधार॥ १५०॥
मांगल्य कुल्य लौगाषि अरु, कुषिस्य कुसीद सु नांम॥
अै सिष हुवै पौष्यंजि कै, जिन्हकी बुधि अभिरांम॥ १५१॥
तै सौ सौ संहिता पढत, इक इक भयै सुजांन॥
अइसै साषावेद की, हौत भई अप्रमांन॥ १५२॥

हिरण्यनाभ कौ सिष्य क्रतु, पढि साषा चौबीस॥
अइसै निज निज सिषन कौ, सिषवत भयै रिषीस॥१५३॥

(इति श्री भागवते महापुराणे द्वादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

(अथर्ववेद की शाखायें और पुराणों के लक्षण)

॥ सूत उवाच ॥

दोहा - सूत कहत श्री व्यास कौ, सिष इक नांम सुमंत॥
वेद अथर्वन उन्ह पढ्यौ, हुतौ महा बुधिवंत॥१॥
ताकै नांम कमंध इक, सिष भौ महा सुजांन॥
बेद दरस अरु पथ्य द्वै, सिष हुव जास निदांन॥२॥
तिह्नैं अथर्वन वेद की, संहिता महा सुढार॥
सिषवत भयौ कमंध निज, हित करि भलै प्रकार॥३॥
वेद दरस कै च्यारि सिष, भयै परम अभिरांम॥
सौल्कायन मोदोस ब्रह्म, बलि पिपलायन नांम॥४॥
कुमुद सुनक रु जाजलियै, सिष्य पथ्य कै तीन॥
भयै अथर्वन वेद कै, जांननहार प्रवीन॥५॥
वभ्रु रु सैधवांयन भयै, सिष्य सुनक कै दौय॥
ते दुहु द्वै संहिता पढै, गुर आग्या चित गौय॥६॥
अरु साबर्नि लौं आदि द्वै, सिष्य हुव और अपार॥
संहिता गुर सिषई तिह्नैं, सीषी सोइ सुढार॥७॥
सांति रु कस्यप नषत्र कल्प, आंगिरस लौं आदि॥
वेद अथर्वन कै भयै, आचारी अहलादि॥८॥
हे मुनि पौराणिक भयै, तैं अब सुनौ सुजांन॥
उन्हकै नांम गनाय कै, आछै कहौं निदांन॥९॥
त्रइयारुणि सावर्णि अरु, सिसपायन हारीत॥
कस्यप अक्रतव्रण भयै, पौराणिक जुत नीत॥१०॥
सिष्य व्यास जू कौ भयौ, रोम हर्षण जिहँ नांम॥
सूत पौराणिक जु कहत, जिन्ह कौ बिच जग ठांम॥११॥

हे प्रभु चरन सु रावरै, है पंकज छबि लीन॥
जैं हैं गुर तिहुँ लौक कै, म्हैं तिन्ह वंदित कीन॥ १३७॥
जिन्ह चरनन कै सरनहूं, प्राप्त भयौ हौं आय॥
जजुरवेद कै पढन की, मुहि ईछा अधिकाय॥ १३८॥

॥ सूत उवाच ॥

सूत कहत अैसै जबै, अस्तुति सूर्ज की कीन॥
तब रवि धरि अस्व रूप कौ, बेद सिषाय सुदीन॥ १३९॥
जजुरवेद की जब भई, साषा सौ दस पंच॥
रवि अस्वरूपी के बचनि, तैं निकसी सुष संच॥ १४०॥
माध्यंदिनीहि आदि सब, साषा सुषद अपार॥
करत भयै तिन्हकौ ग्रहन, पंडित किते सुढार॥ १४१॥
सिष्य व्यास जू कौ हुतौ, जइमन्य नांम सुजांन॥
सामवेद कौ कियौ हौ, जिह उपदेस निदांन॥ १४२॥
हुव ताकै पुत्र पौत्र द्वै, सुमंत रु सुन्वान नांम॥
इक इक संहिता कौ तिह्नै, किय उपदेस सुठांम॥ १४३॥
अरु जइमनि कौ सिष्य इक, रह्यौ जु सुकर्मा नांम॥
सामबेद मैं सौ बउत, हुव प्रवीन अभिरांम॥ १४४॥
जईमनि कौ सिष सुकर्मा, जिह बुधि परम उदार॥
सांमवेद संहिताहि कै, कीनै भेद हजार॥ १४५॥
हिरनिनामि कौसल्य अरु, पौष्यंजि सिष्य त्रय और।
भयै सुकर्मा कै भलै, जांनि भेद सुभ तौर॥ १४६॥
जांनन वारै बेद कै, पुरी अवंती मध्य॥
सिष्य सुकर्मा कै बउत, हौत भयै सप्रसध्य॥ १४७॥
सामबेद साषा सुभग, तिन्हकै पढवै वार॥
हौत भयै सिष पांच सै, उत्तर दिसा मंझार॥ १४८॥
हिरननाभ पौष्यंजि अरु, आवंति सुतिहुं नांम॥
सामबेद कौ पढत भय, चाह धारि हिय ठांम॥ १४९॥
भयै पांच सौ सिष्य तहँ, सामवेद पढवार॥
तातैं साषा पांच सै, हौत भई निरधार॥ १५०॥
मांगल्य कुल्य लौगाषि अरु, कुषिस्य कुसीद सु नांम॥
अै सिष हुवै पौष्यंजि कै, जिन्हकी बुधि अभिरांम॥ १५१॥
तै सौ सौ संहिता पढत, इक इक भयै सुजांन॥
अइसै साषावेद की, हौत भई अप्रमांन॥ १५२॥

हिरण्यनाभ कौ सिष्य क्रतु, पढि साषा चौबीस॥
अइसै निज निज सिषन कौं, सिषवत भयै रिषीस॥१५३॥

(इति श्री भागवते महापुराणे द्वादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

(अथर्ववेद की शाखायें और पुराणों के लक्षण)

॥ सूत उवाच॥

दोहा - सूत कहत श्री व्यास कौ, सिष इक नांम सुमंत॥
वेद अथर्वन उन्ह पढ्यौ, हुतौ महा बुधिवंत॥१॥
ताकै नांम कमंध इक, सिष भौ महा सुजांन॥
बेद दरस अरु पथ्य द्वै, सिष हुव जास निदांन॥२॥
तिह्नैं अथर्वन वेद की, संहिता महा सुढार॥
सिषवत भयौ कमंध निज, हित करि भलै प्रकार॥३॥
वेद दरस कै च्यारि सिष, भयै परम अभिरांम॥
सौल्कायन मोदोस ब्रह्म, बलि पिपलायन नांम॥४॥
कुमुद सुनक रु जाजलियै, सिष्य पथ्य कै तीन॥
भयै अथर्वन वेद कै, जांननहार प्रवीन॥५॥
वभ्रु रु सैधवांयन भयै, सिष्य सुनक कै दौय॥
ते दुहु द्वै संहिता पढै, गुर आग्या चित गौय॥६॥
अरु साबर्नि लौं आदि द्वै, सिष्य हुव और अपार॥
संहिता गुर सिषई तिह्नैं, सीषी सोइ सुढार॥७॥
सांति रु कस्यप नषत्र कल्प, आंगिरस लौं आदि॥
वेद अथर्वन कै भयै, आचारी अहलादि॥८॥
हे मुनि पौराणिक भयै, तैं अब सुनौ सुजांन॥
उन्हकै नांम गनाय कै, आछै कहौं निदांन॥९॥
त्रइयारुणि सावर्णि अरु, सिसपायन हारीत॥
कस्यप अक्रतव्रण भयै, पौराणिक जुत नीत॥१०॥
सिष्य व्यास जू कौ भयौ, रोम हर्षण जिहँ नांम॥
सूत पौराणिक जु कहत, जिन्ह कौ बिच जग ठांम॥११॥

जें है म्हैरे पिता छह, संहिता पढै सुढार॥
तिन्ह पौराणिक सूत कै, छ सिष हुवै निरधार॥१२॥
अैक अैक संहिता छहू, पढत भयै चितलाय॥
अरु म्हैं संहिता छहूंही, पढी महा सुषदाय॥१३॥
उग्रश्रवा सावर्णि अक्रत, व्रण कसयप उदार॥
तिन्ह सौं सुक मुनि पढत भय, संहिता मूल सुढार॥१४॥
अहो ब्रह्मण ब्रह्मरिषन जो, बरनै लछिन पुरांन॥
वेदसास्त्र अनुसार बुध्यि, थिर कर सुनहुँ सुजांन॥१५॥
विस्व सर्ग विसर्ग सथांन, मन्वंतर कथ ईसांन॥
पौषन ओति निरोध अरु, अपाश्रय मुक्ति प्रमांन॥१६॥
जामैं अै दस लछिन सौ, महापुराण कहाय॥
लछिन पांच जा मध्य सौ, अलप पुराण सदाय॥१७॥
प्रकति पुरष कै छौभ तै, महतत्व भयौ सुढार॥
तासौ सत रज तम तिहूं, गुन प्रगटै निरधार॥१८॥
पंचभूत इंद्री सकल, अमरन जुत प्रगटाय॥
इन्हकी उपजत सृष्टि सौ, निश्चै स्वर्ग कहाय॥१९॥
इन्ह तत्वन पै पुरष नै, जबै अनुग्रह कीन॥
तातैं प्रगट्यौ बिस्व सौ, भेद विसर्ग सरीन॥२०॥
भछिन करत थिर जियन कौ, जीव सुचलिवै बार॥
इहि आजीविका करिहै, निज स्वभाव अनुसार॥२१॥
पंछी मनुष सुर रिषन मैं, जुग जुग मधि भगवांन॥
धरत आप अवतार पुनि, लीला करत सुजांन॥२२॥
इही निरोध कहावही, समझहु बुध्धि उदार॥
दसम मध्य जें हम्ह कही, तैं लीला अनपार॥२३॥
मनु सुर मुनिहुँ कै पुत्र रिषि, इंद्र प्रभू अवतार॥
जामैं छह अै हौहि सौ, मन्वंतर भेद सुढार॥२४॥
ब्रह्मा तैं त्रयकाल मैं, प्रगटै जितै नृपाल॥
हौत भयै तिन्ह बंस मैं, राजा बुद्धि विसाल॥२५॥
बर्नन है तिन्ह चरित सो, हित सुँ कथैं ईसांन॥
जाहि सुनै तैं जांनियै, पहल रीत अनुमांन॥२६॥
निति नैमित्तिक प्राकतिक, आत्यंत च्यार प्रकार॥
लै सुभाव तैं प्रलै यक, बिनु जु कहै निरधार॥२७॥
अविद्या करि अरु कर्म करि, जियहि लग्यौ संसार॥
आनुसयन जिह नाम सो, कहियतु हेत सुढार॥२८॥

अरु अव्याक्रत कहत है, ताही कौ कितनैक॥
आनुसयन अव्याक्रत सु, नांम भेद है अैक॥ २९॥
जागत सुपन सुषौप्त अै, तिहू अवस्था रीति॥
सो माया की व्रत्यि है, जीवहि लगी अभीति॥ ३०॥
आत्मा इन्ह तिहुँ अवसथा, मधि अरु न्यारौ आंहि॥
ताकौ कहियतु है भलै, आश्रय भेद सदांहि॥ ३१॥
ज्यौं माटी घट मध्य है, अरु न्यारीहू आहि॥
रूप नांम मात्र विषै, सांमिल जुदी सदांहि॥ ३२॥
लै कै गरभाधान तैं, मरनैं तक इहि भाय॥
आत्मा भुक्तत है सही, अरु न्यारौ दरसाय॥ ३३॥
माया की तिहुँ व्रतिन तैं, करिकै जोग सुढार॥
सांत दांत चित आपही, तैं ह्वै भलै प्रकार॥ ३४॥
प्रांनिन की ईछा सबै, जब निवर्त ह्वै जाय॥
तब इहि आत्म सरूप कौ, जांनै आछै भाय॥ ३५॥
इन्ह लछिन लषै जाहि मधि, जांनै ब्रह्म निरधार॥
ताकौ कहियतु है भलै, नांम पुरांन सुढार॥ ३६॥
मुनिन कहै तै दीर्घ लघु, दस अरु आठ पुरांन॥
तिन्ह कै नांम गनाय अब, तुम्ह पै करूं बषांन॥ ३७॥
पद्मपुरांन पुरांन ब्रह्म, अरु पुरांन वाराह॥
बिस्नुं पुरांन पुरांन सिव, नार्द पुरांन अथाह॥ ३८॥
गरुड पुरांन पुरांन लिंग, अरु भागौत पुरांन॥
ब्रह्मवैवर्त्त पुरांन पुनि, अग्नि पुरांन प्रमांन॥ ३९॥
मार्कंडैय पुरांन अरु, सकंद पुरांन सुजांनि॥
मत्स्य भविस्य पुरांन द्वै, कूर्म वांमन निदांनि॥ ४०॥
जुत ब्रह्मांड पुरांन अैं, दस अरु आठ पुरांन॥
कियै स्थापन मुनिन जें, जिन्ह बड बुद्धि प्रमांन॥ ४१॥
कियै वेद साषांन कै, मुनिन विभाग सुभाय॥
अहो ब्रह्मन सो तुम्हहि हम्ह, दीनौं भलै सुनाय॥ ४२॥
सो इहि तिन्हकै सिष्य अरु, तिन्हकै सिष्य तिन्ह सिष्य॥
जिन्हकौ बढवनहार है, तेज सुबडौ प्रतष्य॥ ४३॥

(इति श्री भागवते महापुराणे द्वादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते सप्तमोऽध्याय ॥ ७ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ अष्टमोऽध्यायः ॥

(मार्कंडेय जी की तपस्या और वर-प्राप्ति)

॥ सौनक उवाच ॥

दोहा - सौनक बोलै सूत जू, तुम्ह जीवौ बहु काल॥
कथा कहत है जिन्हनि मधि, तुम्ह हौ श्रेष्ठ विसाल॥ १ ॥
जगत रूप अंधियार मैं, प्रांनी भ्रमत अपार॥
तिन्हकौ तुम्ह हौ सूत जू, पार दिषावन हार॥ २ ॥
रिषि मार्कंड जू पुत्र तिहँ, मार्कंडेय सुनांम॥
चिरंजीव ताकौ कहत, बीच सकल जग ठांम॥ ३ ॥
महाभयंकरि प्रलै नैं, ग्रस लियै सब संसार॥
बच्यौ मारकंडैय रिष, जास प्रलै मंझार॥ ४ ॥
सौ हम्ह कुल मैं प्रगट भौ, मारकंडै बुधिवांन॥
बिनां प्रलै कै समैं जिन्ह, देष्यौ प्रलै निदांन॥ ५ ॥
प्रलै काल कौ समैं नहि, यासु कल्प कै मांहि॥
उन्हकौ कां तैं प्राप्त हुव, प्रलै समैं जग ठांहि॥ ६ ॥
हौय गई प्रिथवी सबै, जल सरूप वां बार॥
हौ तां जल कै मध्य इक, बटकौ बृछि सुढार॥ ७ ॥
जा बट कै इक पात परि, बालक महा रसाल॥
ताकौ दरसन करत भौ, मारकंडै वां काल॥ ८ ॥
इहि संदेह हे सूत जू, चित्त हम्हारै आय॥
प्रलै समैं नहिं रह्यौ अरु, प्रलै पर्यौ दरसाय॥ ९ ॥
इहै बडौ आश्चर्य है, चित संदेह प्रगटाय॥
ताकौ करियै दूरि अब, अहौ सूत सुषदाय॥ १० ॥
कह्यौ पुरांननि हौ विषै, इहि गाथा अनुसार॥
सो तुम्ह आछी भांत सौं, हम्हहि कहौ निरधार॥ ११ ॥

॥ सूत उवाच ॥

सूत कहत सौनक इहै, तुम्ह किय प्रस्नं सुढार॥
जासौ सब संसार कौ, दूरि हौय भ्रम भार॥ १२ ॥
नारायन की कथा है, जास प्रस्नं कैं मांहि॥
वहै कथा सब जगत कै, टारन मैल अथांहि॥ १३ ॥
जग्यौपवीतहिं प्राप्त हुव, पित तैं मार्कंडैय॥
वेद पढै तपस्या करत, भयै समझि सुभ भैय॥ १४ ॥
धरै दीर्घ व्रत सांत है, भोज पत्र सुपट अंग॥
मसतक पै सौभित जटा, कर कुस लियै सुधंग॥ १५ ॥

धरै जनैऊ मैषला, दंड कमंडल पांनि॥
वौढै है मृगचर्म उर, जगमगाय सुभ ग्यांनि॥ १६॥
नियम बढन कै काज कौ, दोनूं संध्या बार॥
गुर ब्राह्मन रवि अग्नि हरि, पूजत भलै प्रकार॥ १७॥
प्रातकाल की बार अरु, सायंकाल की बार॥
वनतैं भौजन ल्याय गुर, आगै धरत सुढार॥ १८॥
निज गुर आग्या दैहि जब, भौजन करही आप॥
नहि तौ व्रत ही कर रहै, मांनै कछु न संताप॥ १९॥
हुव वितीत लाषन वरष, यौं तप करत सुभाय॥
ता तपस्या सौं प्रभू कौ, किय प्रसंन अधिकाय॥ २०॥
किहुँ सौं जीती जाय नहिं, ऐसी मृत्यु लिय जीति॥
निज मन इंद्री वस कियै, छौडि विषै विपरीति॥ २१॥
विधि भृगु दछि रु विधि पुत्र नर, पितर भूत सब देव॥
याकी तपस्या दैषि किय, अचिरज अति बिनु भेव॥ २२॥
यौ बड व्रत कौ है धरै, तपसा वेदाधैंन॥
इंद्री वसि करि धरत भौ, प्रभु कौ ध्यांन सुषैंन॥ २३॥
जासौ मिटै कलेस सब, आत्मा कै निरधार॥
प्रापति परमानंद कौ, भयौ भलै अनुसार॥ २४॥
यौं वा जोगीस्वरहि चित, लावत जोग मंझार॥
मन्वंतर छह बिति गयै, जास रही न संभार॥ २५॥
भयौ मन्वंतर सातमौ, जिह बेरां सुरराय॥
तपसा मारकंडेय की, सुनि अति विसमय पाय॥ २६॥
वा तपसा कै नांम कौ, लागौ करन बिचार॥
पै भय करि जांनत भयौ, मति मो हौय बिगार॥ २७॥
अप्सरा काम गंधर्व मद, लोभ सु और बसंत॥
सथल मारकंडैय कै, पठवत भौ वा तंत॥ २८॥
वै सब मुनि आश्रमहि मधि, जात भयै निरधार॥
उत्तर दिस हिमगिर निकट, आश्रम हुतौ सुढार॥ २९॥
नांम पुस्पभद्रा नदी, बहत रही वां ठांम॥
अरु इक चित्रा सुनांम की, सिला हुती अभिरांम॥ ३०॥
इतनीं बस्त पवित्र जु है, वौ आश्रम कै मध्य॥
पंछी सब्द द्रुमलता जुत, आश्रम वहै प्रसध्य॥ ३१॥
आश्रम मध्य सरौवर सु, विमल पवित्र रु सुढार॥
प्रफुलित है तामैं कमल, भ्रमर करत गुंजार॥ ३२॥

सब्द करत है कोकिला, निर्त करत है मौर॥
मदमत्त बहु पंछीन जुत, बहि आश्रम की ठौर॥ ३३॥
झरना पुहपन मध्य ह्वै, वा आस्त्रम कै मांहि॥
मंद सुगंधित चलत है, पवन सु सबनि सुहांहि॥ ३४॥
करत उदीपन कांम कौ, बहै पवन सुषसार॥
बृछि लताननि समूह अरू, गुछा प्रवालि सुढार॥ ३५॥
तिन्ह कैं मध्य प्रगटत भयौ, कांम महाबलवांन॥
रु बिहु बाजित्र बजाय कै, करत गंधर्व सुगांन॥ ३६॥
तियन जूथ जुत कांम पुनि, लियै हाथ धनुबांन॥
भयौ दिषाई देत वा, ठौर भलै उनमांन॥ ३७॥
अग्नि हौम करि चुकै रिषि, सावधांन ह्वै बैठि॥
मुद्रित द्रिग जिन्ह करि लियै, आत्म रूप मधि पैठि॥ ३८॥
वा मुनैस कौ तैज बड, किहुँ सौं सह्यौ न जाय॥
मानहु बैठ्यौ है अगनि, धरै सरीर सुभाय॥ ३९॥
अैसौ मार्कंडेय कौ, देष्यौ सकल समाज॥
जो पठयौ हौ इंद्र नै, भंग करन रिषि काज॥ ४०॥
वा रिषि आगै करत भइ, निर्त अप्सरा नारि॥
बीन मृदंग बजाय किय, गांन गंधर्व सुढारि॥ ४१॥
पणव नांम सुबाजित्र मन, हरण महासुषदाय॥
अैसैहिं बहु बाजित्र कौ, बजवत भयै सुभाय॥ ४२॥
धनुष अनंग चढाय किय, पंच बांनकी मार॥
मधु मद रज अरु तोक अै, भ्रत इंद्र कै च्यार॥ ४३॥
अपुन पराक्रम करत भय, रिषि पै बैठि अपार॥
इन्हकी बिद्या कौ कछू, रिषि कै चित न बिचार॥ ४४॥
पुंजिक सथली नांम की, अप्सरा अैक सुढार॥
सो बह क्रीडा गैंद सौं, करत भलैं अनुसार॥ ४५॥
स्तन कठोर जाकौ सुभग, कटि अति सूछिम छीन॥
कुसम माल कैसन गुंथी, सौ छुटि सोभा लीन॥ ४६॥
गैंद हाथ लै प्रिथी परि, पटकत करत अदाय॥
गैंद गिरत कर मार सौं, वाम दछिन दिस जाय॥ ४७॥
गैंद जात तित चलि तिया, करसौं करत प्रहार॥
बस्त्र हरत है पवन छुटि, किंकनि परी सुढार॥ ४८॥
वांन अनंग चलाय कै, जान्यौ म्हैं लिय जीत॥
पै इन्हकैं कारज सकल, निरफल भयै बितीत॥ ४९॥

भाग्यहीन कौ हौत ज्यौं, उद्यम निर्फल निदांन॥
त्यौंहि कांम कै बांन सब, निरफल हुव अप्रमांन॥५०॥
अैसै अपनौं पराक्रम, कियौ प्रगट सबहीन॥
अैंपरि रिषि कै तैज सौं, जरन लगै हुव दीन॥५१॥
तब उन्ह बहि कारज तज्यौ, डरै अधिक मन मांहि॥
इन्ह इहि यौ किय काज ज्यौं, बालक नाग जगांहि॥५२॥
हे सौनक सुनि इंद्र कै, सेवक निज भुज ठौरि॥
मारकंडैय मुनैस कौ, देत भयै भय घौरि॥५३॥
पै मुनि कौ चित तप कछू, डुल्यौ नांहिं वा बार॥
बडैन की या बात कौ, अचिरज नहिं निरधार॥५४॥
बासव कै सेवक सबै, गयै इंद्रपुर हार॥
इन्ह सबहिन कौ तैज बिनु, लषै इंद्र वा बार॥५५॥
मारकंडैय मुनैस कौ, बल सुनि कैं सुरराय॥
अति अचिरज मांनत भयौ, डर्यौ हियै अधिकाय॥५६॥
यौं चित लावत जोग मैं, दिन हुव बउत वितीत॥
तपस्या वेदाधेन करि, लिय मन इंद्री जीत॥५७॥
नरनारायन प्रसंन हुव, इन्ह बातन अनुभाय॥
मुनि आश्रम आवत भयै, करन क्रिपा सुषदाय॥५८॥
नरनारायन दुहुन कौ, स्यांम रु सेत सरूप॥
नैत्र कंवल दल सै सुभग, सौभा महा अनूप॥५९॥
च्यार भुजा जिन्हकैं सुभग, परमधर्म कै मित्र॥
भोज पत्र मृग चर्म कै, पहरै बस्त्र पवित्र॥६०॥
छड़ी कमंडल रु पवित्री, सूत सुहनि त्रय दंड॥
हाथ दुहुन मैं लियै है, हदै जनैऊ मंड॥६१॥
माला गरै पद्माष की, सौभित महा अनूप॥
बेद तपसया कौ मनू, है साष्यात सरूप॥६२॥
बिजुरी देदिप्यमांन जनु, अैसौ जिन्ह तन तैज॥
श्रैष्ट सुरन मैं जें करत, तिन्ह पूजा बिनु जैज॥६३॥
नरनारायन प्रभू कौ, मारकंडैय निहार॥
उठि ठाढौ है जोरि कर, किय आदर अनपार॥६४॥
उन्हकै दरसन सौं प्रगट, हुव आनंद हिय ठांम॥
थिर करि इंद्री देह मन, करत भयौ परिनांम॥६५॥
नैत्रन तैं आनंद कै, आंसू चलै अपार॥
गदगद कंठ रुमांच तन, हौत भयौ वा बार॥६६॥

तातैं नरनारायनहि, आछै सकत न दैषि॥
उन्हकैं दरसन कार्ज चित, अरबरात अनलैषि॥ ६७॥
नम्रत ह्वै कर जोरि उठि, कहत भयौ यौं बैंन॥
तुम्हकौ है परिनांम प्रभु, ईस्वर महासुष दैंन॥ ६८॥
आसन उह्वैं बिछाय दिय, जल सौं धोयै पांव॥
चंदन धूप रु पहुप लै, पूजा करी सुभाव॥ ६९॥
बैठे आसन उपरि नर, नारायन सुषपाय॥
उह्वैं प्रसंन लषि नमसकृत, करि मुनि कह्यौ सुनाय॥ ७०॥

॥ मार्कण्डेय उवाच॥

हे प्रभु अस्तुति सुरावरी, हम्ह का करै बनाय॥
चयतन इंद्री मन बचन, तुम्ह तैं हौत सदाय॥ ७१॥
सिव विधिहू तन धरत तउ, तुम्हहिं भजत जें कौय॥
तिन्हकैं तुम्ह हौ बंधु प्रभु, धारै मूरति दौय॥ ७२॥
तुम्ह दुहु इक भगवांन की, मूरति सांवल गौर॥
बडभागी जो हौय सौ, दैषै तुम्हहिं सुतौर॥ ७३॥
मैटन जग संताप अरु, करन महा कल्यांन॥
आप धरत हौ रूप बहु, जुग जुग मांहि निदांन॥ ७४॥
तुम्हही उपजावत जगत, तुम्हही करत सुनांस॥
मकरी जाला काढि ज्यौं, निगल जात है जास॥ ७५॥
थिरचर जग कै जीव जिन्ह, रिछया करिबै बार॥
चरन कंवल प्रभु रावरै, सुषदायक निरधार॥ ७६॥
तिन्ह चरनन कै सरन हौं, प्राप्त भयौहूं स्वांम॥
तातैं जान्यौ परत कछु, पूर्व पुन्य अभिरांम॥ ७७॥
प्रभु तुव पद पंकज सरन, जें कौ प्रापति हौत॥
माया गुन तिन्ह पै नहिंन, विक्रम करत उदौत॥ ७८॥
अस्तुति करत जो रावरी, अरु करही परिनांम॥
बारंबार सौ ध्यांन धरि, पूजत पद अभिरांम॥ ७९॥
बेद सुहै जिन्ह हृदै मैं, ऐसै मुनि जुत ग्यांन॥
भलै भलै कारज करत, मिलवै तुम्हहिं निदांन॥ ८०॥
तुम्ह चरनन बिनु और ठां, हम्ह जांनत न कल्यांन॥
हे ईस्वर इन्ह जियन कौ, भय है सकल सथांन॥ ८१॥
चतुरानन की आंयु है, द्व परारध उनमांन॥
तौहू डरपत रहत है, ह्वै निर्भय न निदांन॥ ८२॥
तुम्ह हौ काल सरूप तिन्ह, भय जग जीवनि हौय॥
ताकौ हे करता पुरस, अचिरज नांहिन कौय॥ ८३॥

त्यागनि कर सब बस्त कौ, तुव पद सरन रहंत ॥
तब वांके कारज सकल, पूर्न हौहि अगनंत ॥ ८४ ॥
हे ईस्वर तम प्रकति की, सत रज तम है सक्ति ॥
तिन्ह करि प्रगट सुहौत है, चहूं जुगनि मधि जक्ति ॥ ८५ ॥
उतपति पालन प्रलै जग, करिबै काज सुढार ॥
प्रकति सक्तिहूं करत हौ, आपसु अंगीकार ॥ ८६ ॥
तामैं सतगुन मूर्ति सौ, मैटन निति अग्यांन ॥
तातैं वाही मूर्ति कौ, सेवत साध सुजांन ॥ ८७ ॥
ता कारन तैं रावरै, सेवक हे करतार ॥
उज्जल तनकौं करत है, सेवन भलैं प्रकार ॥ ८८ ॥
अरु ताही तैं भक्तजन, धरत सत्व गुन रूप ॥
सत्त्वगुन ही तैं अभय सुष, प्रापति हौत अनूप ॥ ८९ ॥
परम देवता जगत गुर, पुरष रूप भगवांन ॥
भूमा उत्तम नरन मैं, हंस सरूप सुजांन ॥ ९० ॥
नारायन रिषि वेद कै, ईस्वर क्रिपा निधांन ॥
अैसै तुम्ह तिन्हकौ करत, हौं परिनांम अजांन ॥ ९१ ॥
जें यौं जांनत नांहि तिन्ह, बुद्धि महा अग्यांन ॥
भ्रमत विषै मैं रहत है, पावत दुष्ष निदांन ॥ ९२ ॥
हरी गई उन्हकी सुबुधि, तुम्ह माया अनुसार ॥
तातैं जांनत नांहिनै, अपन भलौं किहुँ बार ॥ ९३ ॥
जब विषैन कौ त्याग करि, चलै वेदमग मांहि ॥
रूप रावरौ जांनही, तब तुम्ह प्रापति पांहि ॥ ९४ ॥
कीनै वेद बिचार सुभ, जांनै आतम ग्यांन ॥
वेद कठिन अस जा मही, बडडै मुहित निदांन ॥ ९५ ॥
अस तुम्हहि महा पुरस हौ, तिन्हकौ मो परिनांम ॥
तुम्ह आश्रय तैं पाइयै, महामुक्ति सुषधांम ॥ ९६ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे द्वादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते अष्ठमोऽध्यायः ॥ ८ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ नवमोऽध्यायः ॥

(मार्कण्डेय जी का माया-दर्शन)

॥ श्री सूत उवाच ॥

दोहा - सूत कहत ऐसै अस्तुति, करी मारकंडैय॥
नरनारायन प्रसंन है, बोलै तबै सुभैय॥ १॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

ब्रह्म रिषन मैं श्रेष्ठ तुम्ह, मुनी मारकंडैय॥
करी भक्ति निहकाम तै, आछै हित चित दैय॥ २॥
आत्मा विषै समाधि तू, लगवत आछै भाय॥
वेदाधेन अरु नेम यम,, साधत है जुत चाय॥ ३॥
ब्रह्मचर्य सौं रहत है, दीरघ व्रतनि करंत॥
इन्ह बातनि करि प्रसंन हम्ह, तौ सौ भयै अनंत॥ ४॥
तातै तौ वंछित जु है, सौ वर लीजै मांगि॥
दैंनहार हम्हवर सुभग, बैठै है तौ जांगि॥ ५॥

॥ मार्कण्डेय उवाच ॥

कह्यौ मारकंडैय रिषि, हे दैवन कै देव॥
सरनागत कै दुषहरन, तुम्ह हौ प्रभू अजेब॥ ६॥
तुम्ह मुहि लीनौं जीत करि, अनुग्रह तारन दीन॥
हे अच्युत इहि ही बडौ, वर तुम्ह दरसन कीन॥ ७॥
ब्रह्मादिक तुव चरन कौ, तप करि भलै प्रकार॥
निज मन वसि करि लषत है, तुम्हकौं ध्यांन मंझार॥ ८॥
सौ तुम्ह मुहि साष्यात ही, दरसन दिय करतार॥
यातैं आगै वर कहा, हौं मांगौ या बार॥ ९॥
हे पंकज दल नैंन प्रभु, दीनबंधु करतार॥
तुम्ह साधन की सिषा कै, मणि हौ बिच संसार॥ १०॥
अरु जो मुहि वर दैत हौ, तुम्ह करि क्रिपा सुढार॥
तो जग मोहन तुम्ह प्रकति, सो दिषवहुँ निरधार॥ ११॥

॥ श्री सूत उवाच ॥

सूत कहत मांग्यौ इहै, वर सु मारकंडैय॥
नर नारायन बद्रि धांम, गयै हँसि वर दैय॥ १२॥
तहँ मारकंडैय रिषि निज, आश्रम कै मांहि॥
बैठै करत बिचार कबुँ, लषूं प्रकति या ठांहि॥ १३॥
अग्नि सूर्ज ससि जल प्रिथी, पवन आत्मा प्रकास॥
इन्ह मैं माया कौ करत, भयै बिचार उदास॥ १४॥

कबै दिषाई दैहिगी, मुहि माया अब आय॥
या बिचारही मध्य चित, राष्यौ अपन लगाय॥ १५॥
सब ठां करि हरि ध्यांन कौ, करत मांनसी सेव॥
प्रेम लछिनां सुभक्ति उर, प्रगटत भई सुभेव॥ १६॥
तासौ ह्वै मुनि मत्त हरि, पूजनहुँ गयै भूलि॥
अैक प्रभू कै ध्यांन ही, मधि मांनत चित फूलि॥ १७॥
हे सौनक हौ मुनिन मैं, श्रेष्ठ मारकंडैय॥
इक दिन पुष्पभद्रा सरित, तट बैठै नियरैय॥ १८॥
करत रहै संध्या भलै, प्रभु मैं निज चित लाय॥
चलत भयौ ताही समैं, प्रबल पवन अधिकाय॥ १९॥
मैघ भयंकर पवन करि, प्रेरत घिरि चहुँ वोर॥
आवत भौ ताही समैं, उमड्यौ गरजत घोर॥ २०॥
बिजुरी चमकत झमाझम, बरषत दीरघ धार॥
दैषि मारकंडेय चित, हुव अचिरज अधिकार॥ २१॥
उमडि सिंधु चहुँ वोर तैं, आव्रत प्रिथी डबौत॥
बढत तरंगै पवन करि, भ्रमरि भयानक हौत॥ २२॥
मगर मच्छादिक आदि लै, जल कै जीव अपार॥
दीसत महा डरावनै, सब्द हौत भयकार॥ २३॥
इन्ह बातन करि दुषित है, च्यार तरह की श्रृष्टि॥
ताकौ मारकंडैय लषि, त्रासित भयौ सद्रिष्टि॥ २४॥
प्रेरित पवनहि करि समुद्र, हुव कंपाय सुमांन॥
प्रिथवी मेघ समुद्र करि, ह्वै गइ पूर्न निदांन॥ २५॥
दिसा स्वर्ग नभ नछित भुव, ह्वै गय जलमय सर्व॥
और कछू दीसि न परै, बढ्यौ नीर बड जर्व॥ २६॥
बचै मारकंडैय इक, सौहू वा जल मध्य॥
जटा बिषैरै बहत है, ज्यौं जड़ अंध प्रसध्य॥ २७॥
भूष प्यास करि जुक्त है, जल कै जीव अनंत॥
तिन्ह करि मुनि प्रापत भयौ, उपद्रव कौ वां तंत॥ २८॥
इक तरंग कौ इतै मैं, धका लग्यौ वां बार॥
तासौं जात रहै परै, सुझत न बिच अंधियार॥ २९॥
प्रिथी दिसा आकास कौ, गयौ मुनैस भुलाय॥
प्रापति परिश्रम बउत कौ, हौत भयौ दुष पाय॥ ३०॥
कबहूं दीरघ भ्रमरि मैं, परत मुनैस्वर जाय॥
ताडित कबहूं तरंग करि, हौत उलट पुलटाय॥ ३१॥

आपस मैंहि भछन करत, बडडै जल कै जंतु॥
तें सब मिलि कै षात भय, मुनि कौ वाही तंतु॥ ३२॥
कबहूं सोक रु कबहुँ भय, कबहूं सुष प्रगटाय॥
कबहुँ मोह दुष कबहुँ ह्वै, कबहुँ व्याधि मित्र पाय॥ ३३॥
इन्ह करि अति पीडत भयौ, मुनी मारकंडैय॥
बीतै बरष सहस्त्र बहु, यौ पावत दुष भैय॥ ३४॥
हे सौनक प्रभु प्रकति करि, मुहित मारकंडैय॥
तिन्हकौ जल मैं भ्रमत ही, बउत बरष बीतैय॥ ३५॥
भ्रमत भ्रमत जल मांहि यौं, इक दिन प्रिथवी मांहि॥
बटकौ ब्रछ दैषत भयौ, ऊंचै टापू ठांहि॥ ३६॥
सौ फल पल्लव जुक्त अति, सौभित महा रसाल॥
ताकैं उत्तर वोर की, साषा महा बिसाल॥ ३७॥
वा साषा के पत्र उपरि, सौवत है इक बाल॥
लष्यौ मारकंडैय सौ, अदभुत रूप रसाल॥ ३८॥
बहि बालक निज तैज सौं, दूरि करत अंधियार॥
मर्कत मनि सौ स्यांम है, प्रसंन वदन सुषसार॥ ३९॥
कंठ संष उनिहार जिहँ, दीरघ ह्दै उदार॥
वंक उच्चा भुँह नासिका, सुंदरता कौ सार॥ ४०॥
स्वास लैत त्रिवली हलत, हाँसी सुधा समांन॥
अधर लाल मूंगान सै, दारिम दसन निदांन॥ ४१॥
नैत्र कंवलदल सै सुभग, चितवत सहित कटाछि॥
उदर सू पीपर पत्र सौ, नाभि भ्रमरि जल ताछि॥ ४२॥
कर सुपांव अंगुष्ट निज, चूषत मुष मैं मेलि॥
हाँसि ह्दै तैं कढि मुषै, आवत सौभहु झेलि॥ ४३॥
लष्यौ मारकंडैय मुनि, ऐसौ सुंदर बाल॥
आश्रचर्ज कौ प्राप्त हुव, ह्वै रुमांच वा काल॥ ४४॥
दिव्य अनुपम बालक लषि, भयौ कलैस कौ नास॥
विकसै हिर्दै नैत्र कमल, तन मन प्रांन उल्लास॥ ४५॥
वा बालक कौ पूछिबै, वाकौ भेद प्रकार॥
गयै मारकंडैय वां, बाल निकट निरधार॥ ४६॥
तब बहि ताही समैं सिसु, आप लैत भौ स्वास॥
तबै स्वास कै संग रिषि, किय सिसु उदरहि वास॥ ४७॥

सब रचनां मुनि लषत भौ, वाही उर मंझार॥
लषि कै पुनि अचिरज अधिक, निज चित किय वां बार॥ ४८ ॥
सातौंसिंधु नछित्रहि अरु, स्वर्ग लौक आकास॥
सातौं दीप दिसा नदी, वन पुर प्रिथी निवास॥ ४९ ॥
देव दयत करसांन कै, गांव धातु की षांन॥
आजिवका चहु वर्न की, गउवनि रहन सथांन॥ ५० ॥
श्रष्टि पंच महाभूत की, आश्रम च्यार प्रकार॥
जासौ हौहि अनैक कल्प, अैसौ काल अपार॥ ५१ ॥
सब पदार्थ इन्ह आदि तैं, जितनैं बिच संसार॥
लषै मारकंडैय मुनि, बालक उदर मंझार॥ ५२ ॥
देषत देषत हिमालय, परबत लष्यौ बिसाल॥
नदी पुष्पभद्रा अरु निज, आश्रम लष्यौ रसाल॥ ५३ ॥
और रिषीस्वर रहत जें, उहिं आश्रम कै ठांहि॥
उन्हहू कौ दैषत भयौ, वासि सुउदरहि मांहि॥ ५४॥
लेत भयौ बालक बहै, इतनैं मांहि उसास॥
तब ज्यौं कै त्यौं निकसि वा, जल मैं परै सत्रास॥ ५५ ॥
वाही भुव मैं नीर कै, टापू पै बट ब्रच्छ॥
सौवत ताकै पत्ता पैं, बालक लष्यौ प्रतच्छ॥ ५६ ॥
इंद्रियातित भगवांन की, सिसु क्रीडा अनुभाय॥
मोहित मुनि आतुर भयै, आलिंगन की चाय॥ ५७ ॥
करि कटाछ बालक वहै, चितवत है मुसकाय॥
जासौ मौहित हौत मन, दिष्टि रहत ठहराय॥ ५८ ॥
अैसौ बालक दैषि मुनि, धर्यौ हिर्दै पुनि ध्यांन॥
तबलौं अंतरध्यांन नहिं, हौत भयै भगवांन॥ ५९ ॥
फिरि देषै द्रिग षौलि मुनि, तौ उहां कछू नांहि॥
नहिं बालक नहिं ब्रछि बट, नांहिंन जल वा ठांहि॥ ६० ॥
माया भई निवर्त्त सबै, लषत मारकंडैय॥
निज आश्रम मैं सदा ज्यौं, बैठै सथित सुभैय॥ ६१ ॥

(इति श्री भागवते महापुराणे द्वादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ दसमोऽध्यायः ॥

(मारकंडेय जी को भगवान् शंकर का वरदान)

॥ श्री सूत उवाच ॥

दोहा - सूत कहत प्रभु प्रकति कौ, बडौ पराक्रम दैषि॥
फिरि वा प्रभुही कै सरन, मुनि रहि अति सुष लैषि॥ १॥

॥ मारकण्डेय उवाच ॥

कहत मारकंडैय प्रभु, म्हैं तुव दरसन पाय॥
सरनागति कौ अभय तुम्ह, दैनहार सुषदाय॥ २॥
हे प्रभु माया रावरी, है बलवांन अपार॥
ताकरि पंडित बडैहू, मुहित हौत निरधार॥ ३॥
सूत कहत किहुँ इक दिवस, मुनी मारकंडैय॥
निश्चल ह्वै बैठै उहां, सुमरत प्रभू सुभैय॥ ४॥
चढै सिवासिव बैल पै, अपनैं गनन समैत॥
जात हुतै कहुं कौ सु तहिं, निकसै आय विजैत॥ ५॥
दैषि मारकंडैय कौ, आश्रम मारग मांहि॥
कहत भई अैसौ बचन, सिवहि सिवा वा ठांहि॥ ६॥
हे सिव तुम्ह इहि रिषि लषौ, महातपी दरसाय॥
बस किय इंद्री आत्म अरु, अंतहकरन सुभाय॥ ७॥
ज्यौं जल जंतु न उछलही, अरु नहिं चलत बयार॥
तब जल निश्चल रहत है, निरमल हौय सुढार॥ ८॥
ज्यौ ही निरमल रिषि इहै, या तप कौ फल दैहु॥
दैंनहार तुम्ह सिद्धि कै, क्रिपावंत बिनु छैहु॥ ९॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

सिव बोलै हे सिवा इहि, रिषि न चहत वर कौय॥
पूरन प्रेमाभक्ति उर, प्रगट रही थिर हौय॥ १०॥
मुक्तिहुँ याकौ जो कोउ, दै तौ इहि नहिं लैय॥
लगै प्रेमा हरि भक्ति मैं, सिथिर मारकंडैय॥ ११॥
कहै तुम्हारै तैं सिवा, म्हैं वर दैहूं याहि॥
पै इहिं लै है नांहिंनै, कछु वर चित धरिचाहि॥ १२॥
म्हैरै अरु या साध कै, ह्वै है बात रसाल॥
साधुन सौं मिलिहैं सोइ, कहियतु लाभ रसाल॥ १३॥

॥ श्री सुक उवाच ॥

सूत कहत भगवत भगति, तिन्हकी गति तिन्ह रूप॥
करन प्रवर्ति विद्या सबै, जीवन ईस्व अनूप॥ १४॥

ऐसै सिव भगवांन कहि, पारवती सौं बैंन॥
ग्रेह मारकंडैय कै, जात भयै त्रय नैंन॥१५॥
आवन सिव अरु सिवा कौ, निज आश्रम कै मांहि॥
मुनी मारकंडैय नहिं, जांनत भौ वां ठांहि॥१६॥
जोग ध्यांन करि प्रभू मैं, राष्यौ निज चित लाय॥
तातैं सिव अरु सिवा कौ, आवन नांहि जनाय॥१७॥
महादेव इहि जांनि कै, जोग सक्ति अनुभाय॥
हृदै मारकंडैय कै, मधि पैठति भय जाय॥१८॥
जइसै छिद्रननिबीच ह्वै, घट मधि पैठत वाय॥
त्यौं ही सिव पैठत भयै, मुनि हिय मांहि सुभाय॥१९॥
जात रह्यौ मुनि हृदै तैं, जबै प्रभू कौ ध्यांन॥
और तरह कौ रूप मुनि, देष्यौ बिच हिय थांन॥२०॥
तीन नैत्र पीरी जटा, दस भुज रवि सम तैज॥
हिर्दै सुमाल रुद्राछ की, सौभित भाल सरैज॥२१॥
धनुष तीर फरसी डमरु, ढाल त्रिसुल तरवारि॥
जुत कपाल अैं सस्त्र सब, धारै है त्रिपुरारि॥२२॥
अैसौ हिय मैं ध्यांन लषि, पहलै भ्रम भटकाय॥
आश्चर्ज फिरि हौत भौ, मुनि कै चित अधिकाय॥२३॥
मन मैं कियौ बिचार मुनि, इहि का है भगवांन॥
कौनुं तरह कौ म्हैं लष्यौ, ध्यांन सुहृदै सथांन॥२४॥
भई निवर्ति समाधि तैं, मुनि करि इहै बिचार॥
देषै तौ द्रिग षोल करि, अपनैं स्थल मंझार॥२५॥
ठाढै है निज गनन जुत, पारवती महादैव॥
तिन्हकौ लषि मुनि करत भौ, नमसकार सुभ भैव॥२६॥
भलौ बचन कहियौ सुभग, आसन दियौ बिछाय॥
अर्घ दैन जल पात्र मुह, आगै धरियौ लाय॥२७॥
धूप दीप सौगंध सब, इन्ह जुत भलै प्रकार॥
पारवती सिव गन सहित, पूजै मुनि वां बार॥२८॥
पूजा करि बौलत भयौ, मुनी मारकंडैय॥
पूर्न काम तुम्ह तिन्ह कहा, पूजन करै सभैय॥२९॥
तुम्हहीं तैं करिकै इहै, प्रगट भयौ संसार॥
सांत रूप अरु सत्त्वगुन, रूप सु तुम्ह निरधार॥३०॥
भोग रजोगुन कौ करत, जो प्रांनी जग मांहि॥
तिह्नै भयंकर रूप हौ, तुम्ह भूतेस सदांहि॥३१॥

तिहूं काल कौ ग्यांन अरु, ब्रह्म तैज बैराग॥
इतनीं बातैं प्राप्त तुहि, होहुँ बिप्र बडभाग॥ ६४॥
अरु तू होहुँ पुरान कौ, आचारी अभिरांम॥
इहि हम्ह तोकौ वर दियौ, ह्वै प्रसंन चित ठांम॥ ६५॥
सूत कहत मुनि कौ इतै, सिव वर दै सुषदाय॥
निज सथांन कौ सिवा जुत, जात भये मुसकाय॥ ६६॥
मुनि सुमारकंडैय कौ, लषिबौ प्रकति प्रकार॥
मारग मैं सिव सिवा सौं, कहत भये वां बार॥ ६७॥
साधन मैं उत्तम इहै, मुनी मारकंडैय॥
सो प्रापत बडजोग कौ, हौत भयौ सुभ भैय॥ ६८॥
अब हौ है संसार मैं, सो मुनि महा उदार॥
प्रभु की प्रेमाभक्ति कौ, प्राप्त भयौ निरधार॥ ६९॥
हे सौन्नक बुधिवांन अति, मुनि सु मारकंडैय॥
जास चरित बरनन कियौ, हम्ह तुम्ह पै सुभ भैय॥ ७०॥
जामै प्रभु की प्रकति कौ, वैभव अदभुत भांत॥
वरनन करि तुम्ह सौं कह्यौ, हम्हहि हितन कै नांत॥ ७१॥
माया कौ वैभवहि कौ, कहत कितैक विद्वान॥
लषि है मारकंडैय यौं, आगै भलै निदांन॥ ७२॥
इहै प्रलै निति हौत है, बिधि कै रात्रि मंझार॥
सौ चलि आयौ है सदा, प्रभु ईछा अनुसार॥ ७३॥
हम्हनैं हे भृगुवरिय इहि, माया वैभव भेव॥
तुम्ह सौं वर्नन है कियौ, क्रिपा दिषाय सुदेव॥ ७४॥
सुनैं सुनावै जो कोउ, इहै चरित सुषसार॥
तौ बंधन बहु कर्म कै, हौय न बिच संसार॥ ७५॥

(इति श्री भागवते महापुराणे द्वादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते दसमोऽध्यायः ॥ १० ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ ऐकादसोऽध्यायः ॥

(भगवान के अंग-उपांग एवं आयुधों का रहस्य तथा विभिन्न सूर्यगणों का वर्णन)

॥ श्री सौनक उवाच॥

दोहा - सौनक बोलै सूत तुम्ह, सब तत्व जांननहार॥
तातैं तुम्हकौं बात इक, हम्ह पूछत निरधार॥ १॥
तंत्रन मैं भगवान कौ, पूजन कौनुं प्रकार॥
तुम्ह जांनत हौ सौ कहौ, हम्ह सौं इहि निरधार॥ २॥
तुम्ह हौ सब वेत्तांन मैं, तत्त्ववेत्ता सुषदाय॥
अहौ सूत कल्यांन तौ, हौहुं सदा सुभ भाय॥ ३॥
कइसै सेवा प्रभू की, बतई तंत्रन मांहि॥
सौ अनुग्रह करिकै कहौ, हम्हहिं भलै या ठांहि॥ ४॥
आयुध अंग उपांग अरु, भूषन तंत्रन मध्य॥
इन्हकौ का कहत है सो, कहौ हम्है सु प्रसध्य॥ ५॥
प्रभू पूजा मार्ग कहौ, हम्हहि सुनन की चांहि॥
जिह पूजा की निपुनता, सौ नर मुक्ति सुपांहि॥ ६॥
विधि तंत्रन मैं वेद मैं, प्रभु की कही विभूति॥
सो निज गुरहि प्रनांम करि, लगै कहन कौ सूति॥ ७॥

॥ श्री सूत उवाच॥

प्रकति आद नव तत्व तिन्ह, तैं ब्रह्मांड प्रगटाय॥
तामैं तीनौं लोक की, रचना परत लषाय॥ ८॥
इहि ब्रह्मांड भगवांन कौ, है सरूप निरधार॥
प्रिथी चरन ब्रह्मलौक सिर, नभ नाभी आकार॥ ९॥
पवन नासिका श्रुति दिसा, ससि मन सूरज नैंन॥
बिधि मृत्यु दुहु मलमूत्र कै, जांनहु अंग सुबैंन॥ १०॥
लोकपाल इंद्रादिक सु, प्रभु की भुजा सुढार॥
दंत चांदनी भौंह जम, रोम ब्रछ अनपार॥ ११॥
लज्या ऊपर कौ अधर, अधर तरै कौ लौभ॥
कैस सीस कै मेघ है, वेद पीत पट सौभ॥ १२॥
अपनीं सात बिलांद कौ, है नर तन उनमांन॥
तइसै ही सब लोक की, रचना रचनि निदांन॥ १३॥
अपनी सात बिलांद कौ, पुरष विराटहूं आप॥
बहु गुन जुत प्रभु प्रकृति सौ, उर वनमाल सथाप॥ १४॥
कौस्तुभ मनि कै मिसहि करि, धरै जियन की जोत॥
जास तैज करि व्याप्त भौ, चिन्ह श्री वत्स उदौत॥ १५॥

जिहं श्री चिह्नहि निज हृदै, विषै धरै भगवांन ॥
है सरूप उंकार कौ, जिग्यौपवीत निदांन ॥ १६ ॥
मकराकृत कुंडल दुहू, सास्त्र सांख्य पुनि जोग ॥
ब्रह्मलौक करता अभय, सौ प्रभु पाद्य प्रयोग ॥ १७ ॥
माया कौं आसन सुभग, प्रभु ईछा कै टेक ॥
धर्म ग्यांन गुन सत्व कौ, तापर पंकज अैक ॥ १८ ॥
जाहुँ उपरि बैठे प्रभू, करता पुरष क्रिपाल ॥
पास धरै आयुध सकल, सोभित महा रसाल ॥ १९ ॥
बल इंद्री मन देह कौ, है तत्व गदा सुढार ॥
चक्र सुदर्सन तैज कौ, तत्व प्रगट निरधार ॥ २० ॥
जलकौ तत्व सुसंष है, नभ कौ तत्व तरवार ॥
कर्म तत्व तूनीर है, ढाल तत्व अंधियार ॥ २१ ॥
काल तत्व सारंग धनुष, तत्व इंद्रीन कै तीर ॥
मुद्रा वरद की है सही, क्रिपा रूप सुभ सीर ॥ २२ ॥
अरु रथ है भगवांन कौ, मन की सक्ति निदांन ॥
बस्त सुरथ कै धरन की, तनमात्रा पहचांन ॥ २३ ॥
पूजा स्थल मंडल अमर, दिसा आत्म संसकार ॥
पूजै यौं हरि ध्यांन धरि, अघमैटन अनुसार ॥ २४ ॥
छह गुन जुत लीला निमत, धरै कमल प्रभु पांन ॥
बिजन चमर है धर्म जस, धरै पास भगवांन ॥ २५ ॥
छत्रलौक बैकुंठ है, जामैं कछु भय नांहि ॥
भक्ति स्वामिनी कौ रमां, अंस रूप प्रभु ठांहि ॥ २६ ॥
अरु संजुत उंकार हैं, वेद गरुड आकार ॥
जिग्य रूप लै चलत है, प्रभु कौ आछै ढार ॥ २७ ॥
विषुक सैंन पार्षद प्रगट, मूर्ति तंत्र सु सदांहि ॥
अनिमादिक सिधि अष्टनंद, आदि पार्षद आंहि ॥ २८ ॥
वासुदेव संकरषन रु, प्रदुमन अनिरुध च्यार ॥
चतुर्व्यूह इहि प्रभूकौ, पूरन रूप उदार ॥ २९ ॥
सोइ ईस्व निरधार करि, बिस्व तैजस रु प्राग्य ॥
इन्ह तीनौं ही व्रतन तैं, न्यारौ है जग जाग्य ॥ ३० ॥
जाग्रत स्वप्न सुषौप्त अैं, सदा अवसथा तीन ॥
इन्हकै द्रिष्टा है सही, चौथौ प्रभू सरीन ॥ ३१ ॥
जाग्रत विषै कहाय बिस्व, तैजस स्वप्न मंझार ॥
मध्य सुषौप्त कहावही, प्राग्य नांम निरधार ॥ ३२ ॥

आयुध अंग उपांग जुत, चव प्रभु मूर्त्ति अकाम ॥
वासुदेव संकरषन रु, प्रदुमन अनुरुध नांम ॥ ३३ ॥
अै चहुँ मूरति अैक है, हरि ईस्वर भगवांन ॥
तिन्हकै सुमरन तैं लहत, प्रांनी मुक्ति सथांन ॥ ३४ ॥
हे रिषि सौनक ब्रह्म है, आपहि रूप प्रकास ॥
निज महिमा करि जुक्त है, पूरन धरै हुलास ॥ ३५ ॥
माया करि अवतार त्रय, है बिधि बिस्नुं महैस ॥
उतपति पालन प्रलै जग, करत सदा बिस्वैस ॥ ३६ ॥
अरु है माया तैं जुदै, पूरन ब्रह्म भगवांन ॥
तै भक्तन कै संग करि, पइयतु भल उनमांन ॥ ३७ ॥
है अर्जुन कै सषा हरि, श्रेष्ठ जादवन मध्य ॥
जै श्रीकृस्नं क्रिपाल प्रभु, असरन सरन प्रसध्य ॥ ३८ ॥
द्रौह प्रिथी कौ करत नृप, तिन्ह कुल कौ किय नास ॥
जासौ जिन्ह कौ पराक्रम, गायौ सुषद विलास ॥ ३९ ॥
गौपन की अस्त्री रु हरि, दासन मुष निरधार ॥
रूप पवित्र चरित्र सुभ जो, गायौ अति सुषसार ॥ ४० ॥
सौ सुनि श्रवनन कौ लगत, अति प्रिय मंगल रूप ॥
अैसै तुम्ह निज सेवकनि, रिछया करहुँ अनूप ॥ ४१ ॥
महापुरष कौ लछिन है, याहि चरित्र कै मांहि ॥
सोइ चरित्र सुमरै भलै, प्रातहि उठि जुत चांहि ॥ ४२ ॥
अरु उन्ह महापुरष विषै, ह्वैहि पवित्र चित लाय ॥
ब्रह्म स्थित है हिर्दै मैं, तिह जप करै सुभाय ॥ ४३ ॥

॥ सौनक उवाच ॥

सौनक बोलै सूत जू, श्री सुकदेव उदार ॥
नृपति परीछित कै सुनत, कह्यौ चरित्र सुढार ॥ ४४ ॥
तामैं रवि कौ सप्तगुन, मास मास कै मांहि ॥
नउतम नउतम हौत सौ, कहत भयै जुत चांहि ॥ ४५ ॥
तिन्हकै नांम रु कर्म अब, कहियै हम्हैं सुनाय ॥
प्रगट हम्हारै भई है, सरधा अति अधिकाय ॥ ४६ ॥
सूरिज आत्म सरूप है, तिन्हकौ कहौ समूह ॥
ताहि चरित्र कै सुनतही, रहत न पाप कछूह ॥ ४७ ॥

॥ श्री सूत उवाच ॥

इहि सुनि बोलै सूत जू, आदि अंत जिहँ नांहि ॥
अैसै प्रभु की प्रकति है, अति बलवांन सदांहि ॥ ४८ ॥

ताकरि कै संसार की, यात्रा सूर्ज करंत॥
सब प्रांनी कै लियै इहि, रीत रची भगवंत॥ ४९॥
लौकनि कौ रवि अै कही, आत्मा करता आंहि॥
सकल वेद की क्रिपा कौ, निश्चै मूल सदांहि॥ ५०॥
अैसै बउत प्रकार करि, रिषि जन कह्यौ जताय॥
प्रकति क्रिपा कै भेद करि, रवि नव तरह कहाय॥ ५१॥
काल देस करता क्रिया, करन कार्ज द्रव्य मंत्र॥
फल जुत यौं नव तरह सौ, है इक सूर्ज सुतंत्र॥ ५२॥
चैत्र मासकौ आदि लै, काल रूप कर भास॥
जग की जात्रा कै निमत, फिरही बारह मास॥ ५३॥
न्यारौ न्यारौ जिहि समै, हौत सूर्ज कौ नांम॥
अरु सूरज है अैक ही, बीच सकल जग ठांम॥ ५४॥
गनती मासन की अबै, करूं वेद अनुसार॥
सो तुम्ह आछी भांत सौ, सुनियै मुनि या बार॥ ५५॥
धाता सूर्ज कृतस्थली, अपसर राछि सहैति॥
रथकृत जछवासुक सरप, रिषि पुलस्त पुनि कैति॥ ५६॥
नांम महीना चैत्र कौ, सुनि मधु मास कहाय॥
तामैं अै सब हौत है, सूर्ज समाज सुभाय॥ ५७॥
सूर्ज अरियमा पुलह रिषि, सर्प नांम कछनीर॥
पुजस्थली अपसरा जछ, अथौजा हैति वीर॥ ५८॥
राछस नांम प्रहैत अरु, नारद नाम गंधर्व॥
माध्व नांम बैसाष कौ, तामैं अैं है सर्व॥ ५९॥
मित्र सूर्ज रिषि अत्रि रु अहि, तुष्यक रथस्वन जच्छ॥
पौरसैय राछिस हहा, नांम गंधर्ब सुअच्छ॥ ६०॥
अप्सर मैनका जुक्त अै, जेठ मास मैं हौय॥
जेठ मास कौ कहत है, श्रुक्र नांम सब कौय॥ ६१॥
रिषि वसिष्ठ रंभा अप्सर, अहि सुक्र सह जन्य जच्छ॥
हू हू गंधर्व बरुण रवि, राछि चित्रस्वन सपच्छ॥ ६२॥
नांम सुमांस असाढ कौ, कहियतु सुचि निरधार॥
तामैं अैं सब हौत है, समझहु भलै प्रकार॥ ६३॥
इला पत्र अहि इंद्र रवि, बिस्वावसु गंधर्व॥
श्रोता जछ रिषि अंगिरा, राछस वरिय सगर्व॥ ६४॥
अरु प्रमलौचा अपछरा, अैहै सावण मध्य॥
नांम सुश्रावण कौ कहत, नभ्र मास सप्रसध्य॥ ६५॥

उग्रसैंन गंधर्व भ्रगु, रिषि आसारण जच्छ॥
व्याघ्र राछिस सषपाल अहि, रवि विस्वान प्रतच्छ॥ ६६ ॥
अप्सरअनुमलौचा सहित, अै ह्वै भादव मांहि॥
कहियतु भादव नांम मभ्र, समझहुँ निज चित ठांहि॥ ६७ ॥
पूषा रवि अहि धनंजय, जछ श्रुचि राछस वात॥
अप्सर ध्राताचि गौत्म रिषि, सुसैंन गंधर्व बिष्यात॥ ६८ ॥
अै सब निश्चै हौत है, माघमहीना मध्य॥
तपौ नांम कहियतु प्रगट, माघ नांम सप्रसध्य॥ ६९ ॥
वर्चा राछिस जच्छ रितु, अप्सर सैनजित भांम॥
बिस्वागंधर्व भरद्वाज रिषि, रवि रु पर्जन्य सुनांम॥ ७० ॥
अईरावति अहि जुक्त अै, सब ह्वै फागुन मांहि॥
नांम सुफागन मास कौ, है तपमास सदांहि॥ ७१ ॥
अप्सरा उरवसी अंसु रवि, रिषि कस्यप तार्ष्य जच्छ॥
महासंष अहिछत्र विद्यु, राछिस वली प्रतच्छ॥ ७२ ॥
जुत रितसैंन गंधर्व अैं, हौत मार्गसिर्स मांहि॥
नांम मार्गसिर्स कौ सही, कहियतु वेदनि ठांहि॥ ७३ ॥
भग रवि राछस स्फूर्ज जछ, ऊर्न रिषीस्वर आयु॥
अहि कर्कोटक पूर्वचित, अप्सर नाम कहाय॥ ७४ ॥
अरिष्टसैंन गंधर्व है, पुष्य पौस कौ नांम॥
ता मधि अै सबहौत है, सुनि रिषि बुधि अभिरांम॥ ७५ ॥
त्वष्टा रवि जमदगनि रिष, कंबल सर्प सतजेत॥
अप्सर नांम तिलोतमा, राछस ब्रह्मापेत॥ ७६ ॥
धृतराष्ट्र गंधर्व अरु, जछ सतजित नामाय॥
इसंभरा संसार मैं, आश्वनि नांम कहाय॥ ७७ ॥
सूर्जवर्चा गंधर्व सतजित, जछि रिष विस्वामित्र॥
अस्वतर अहि रंभा अप्सर, सूरिज बिस्नुं पवित्र॥ ७८ ॥
मषापेत राछिस सहित, अै सब अैकहि बार॥
उर्ज मास कार्तिकहि कहि, तामधि ह्वै निरधार॥ ७९ ॥
बरनैं बारहुँ मास अै, वेद बचन अनुसार॥
उलट पुलट कौ मति करौ, कछु संदेह विचार॥ ८० ॥
सूर्ज बिस्नुं भगवान की, इत्ती विभूति बिष्यात॥
सायंकाल कै समैं जो, सुमरै याहि अग्यात॥ ८१ ॥
तौ वा प्रांनी कै सकल, दिवस दिवस कै पाप॥
दूर हौहि निरधार करि, सुष प्रगटै अनमाप॥ ८२ ॥

बारै मासन कै विषै, इन्ह सप्तकहि समेत॥
सूरज च्यारौ वोर कौ, फिरही महा विजेत॥ ८३॥
सौ या लीनैं फिरत है, समझहुँ भेद विचार॥
प्रांनिन की परलौक मैं, बुधि ह्वै भलै प्रकार॥ ८४॥
अस्तुति सुवेद रिचांन सौं, करत रिषीस्वर चांहि॥
गांन करत गंधर्व नृत्य, करहि अप्सर उमांहि॥ ८५॥
नाग उठावत है सदा, रविरथ कौ बलधार॥
जछि रथजोतन वार है, राछिस धकुवन हार॥ ८६
बालषिल्य या नांम कै, ब्रह्म रिष साठि हजार॥
अस्तुति करत सूरज समुष, दौरै जात सुढार॥ ८७॥
हरि ईस्वर भगवांन रवि, जाकौ आदि न अंत॥
कल्प कल्प मैं आपु करि, जग की रिछा करंत॥ ८८॥

(इति श्री भागवते महापुराणे द्वादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते अैकादसोऽध्यायः ॥ ११ ॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ द्वादसोऽध्यायः ॥

(श्रीमद्भागवत की संक्षिप्त विषय सूची)

॥ श्री सूत उवाच ॥

दोहा - सूत कहत है धर्म कै, थपनहार भगवांन॥
अैसै कृस्नकुमार कौ, वंदन सहित विधांन॥ १॥
अरु बिप्रननि परिनांम कर, कहूं सनातन धर्म॥
सो सुनि आछी भांत तुम्ह, समझहुँ वाकौ मर्म॥ २॥
इतनौ हम्ह तुम्ह सौं कह्यौ, बिस्नुं चरित्र सुनाय॥
तुम्ह पूछौ पूर्षन चरित, सौहू दियौ जताय॥ ३॥
रिषीकेस भगवांन हरि, नारायन करतार॥
भक्तन कै पति पाप सबै, निश्चै टारनहार॥ ४॥
तिन्है श्रीमद्भागवत मधि, जु कह्यौ चरित सुनांय॥
जाहि चरित कै सुनत ही, ह्वै आनंद अधिकाय॥ ५॥
उतपति पालन प्रलै जग, जासौ निश्चै हौत॥
परम ब्रह्म है गौपि सौ, प्रगट रहत ऊदौत॥ ६॥

उपाष्यांन जिह ग्यांन जुत, अनभव करि सुभ भाय॥
बरन्यौ मधि श्रीभागवत, आछी भांत सुनाय॥ ७॥
प्रथम सकंध मैं कह्यौ, भक्ति जोग बैराग॥
नारद पुनि परीछित कौ, कह्यौ चरित जु अथाग॥ ८॥
नृपति परीछित कौ लग्यौ, रिषि बालक कौ श्राप॥
तातैं बैठ्यौ गंग तट, अनसन व्रत लै आप॥ ९॥
तबै परीछित कौ कियौ, श्री सुक मुनि उपदेस॥
मुनि नृप कौ संवाद सौ, हम्ह कह्यौ बरन बिसेस॥ १०॥
कह्यौ जोग अष्टांग अवरु, बिधि नारद संवाद॥
सब अवतारन कौ चरित, बरनन कियौ अनाद॥ ११॥
माया तैं लै स्रष्टि की, उतपति कही सुनाय॥
उद्धव कौ अरु बिदुर कौ, कह्यौ संवाद सुभाय॥ १२॥
कह्यौ विदुर मैत्रेय कौ, मिलिवौ चरचा जुक्त॥
संहिता प्रस्न पुरांन कौ, कह्यौ भेद जो मुक्त॥ १३॥
कही स्थिति महापुरष की, विधि उपजनि संप्रष्टि॥
सात तरह की कही पुनि, प्राकृत वैकृत श्रष्टि॥ १४॥
कही उपजि ब्रह्मांड की, जासौ भयौ बिराट॥
सूछिम स्थूल सुकाल गति, बरनन करी सुघाट॥ १५॥
बध्य कह्यौ हरनाछ कौ, प्रिथवी कौ उद्धार॥
उर्ध्व तिर्जक अर्वाक अैं, श्रष्टि सु तीन प्रकार॥ १६॥
कही श्रष्टि सिव की रची, आछी भांत सुनाय॥
तिय जुत स्वायंभूव मनु, व्रिधि तन तैं प्रगटाय॥ १७॥
कह्यौ धर्म की तियन कौ, हम्ह संतान गनाय॥
सौ तुम्हहू आछे सुन्यौ, अपनौं चित्त लगाय॥ १८॥
कर्दम कौ अरु कपिल कौ, बरन्यौ प्रगट सुहौंन॥
देवहूति प्रभु कपिल कौ, कह्यौ संवाद सुठौंन॥ १९॥
उतपति नव रिषवरन की, दछि कै जिग्य कौ नास॥
ध्रुव चरित प्रथु चरित जुत, बरनैं सहित हुलास॥ २०॥
चरित बरहि प्राचीन कौ, प्रियव्रत नार्द संवाद॥
नाभि रिषभ मुनि भरत कौ, चरित अनूप अनाद॥ २१॥
दीप सिंधु नग षंड नदी, जुत अै बर्नन कीन॥
जोतिस चक्र सथांन नरक, पाताल सु कहि दीन॥ २२॥
दछि प्रजापति प्रगटत भौ, प्रचैतांन कै ग्रैह॥
जिन पुत्रिननि की स्रष्टि सब, बरनन करी अछैह॥ २३॥

जातैं सुर नर असुर पसु, पंछी नग प्रगटाय॥
सोउ स्त्रष्टि हम्ह बरनि कै, आछै कही सुनाय॥ २४॥
दिति पुत्रननि मृत्यु पुनि, त्वष्टा जनम सुहौंन॥
दैतेस्वर कौ चरित पुनि, प्रह्लाद चरित सुठौंन॥ २५॥
बरनन मन्वांतरन कौ, मोष गजेंद्र चरित्र॥
मन्वंतरन कै जु विषै, अवतार चरित पवित्र॥ २६॥
वामन कूर्म नृसिंघ मच्छ, इन्हकौं चरित सुढार॥
अमृत कै काजै कियौ, सिंधु मथन निरधार॥ २७॥
सुर असुरनहि कौ जुध पुनि, बरनन नृपगन बंस॥
जन्म बंस इष्वाकु कौ, प्रद्युमन जन्म प्रसंस॥ २८॥
इला कन्या कौ चरित अरु, तारा कौ जु चरित्र॥
बरननहि सूरज बंस कौं, जगतहि करन पवित्र॥ २९॥
जामैं नृग रु ससादि सै, प्रगट भये अवनीस॥
जिन्ही चरित्र कल्यांन कौ, करता बिसवाबीस॥ ३०॥
कन्या त्रप सरजात की, जास सुकन्या नांम॥
जिह चरित्र अरु ककुस्थ कौ, चरित परम अभिरांम॥ ३१॥
मांधाता सौभर सगर, जुत षटवांग चरित्र॥
कौसलपुर पति राम जू, जिन्हकौं चरित पवित्र॥ ३२॥
निमि कौ चरित रु त्याग कौ, निकसि जान वन ठांम॥
उतपति राजा जनक की, पुनि चरित्र प्रसरांम॥ ३३॥
चंद्रवंस बर्नन सुभग, नहुष पुरुरवा गाथ॥
दुष्यंत नंदन सु भरत, भीष्म पिता नरनाथ॥ ३४॥
नृप जजाति कौ पुत्र बड, जदु जिह चरित सुढार॥
प्रगटै जिन्ह कै वस मै, कृस्न कुंवर करतार॥ ३५॥
तिन्ह प्रभु कौ हौनौ प्रगट, नृप बसुदैवहि गैह॥
गौकुल मैं बढि ब्रजजननि, देनौं सुष अनछैह॥ ३६॥
जिन्ह प्रभु कै गुन कर्म कौ, कौउ लहत नहिं पार॥
पै अमरनि कछु गुन कहे, सौ कहुँ भलै प्रकार॥ ३७॥
करन बकी पय पांन दै, नौं सकठासुर डारि॥
त्रिनब्रतही उडावनौ, बक ब्रछ मारन मारि॥ ३८॥
प्रलंब हतन धेनुक हतन, करन दावाग्न पांन॥
करनी गौपन की रिछा, काली दमन विधांन॥ ३९॥
अहि तैं पितहि छुडावनौं, ब्रतचर्जा कन्यांन॥
वा व्रत करि हौ नौ प्रसंन, प्रभु कौ भलै निदान॥ ४०॥

करनी द्विज पतनीन पै, परम क्रिपा निरधार॥
गिर गौवरधन हाथ निज, धरनौं भलैं प्रकार॥ ४१॥
कांमधैनु अरु इंद्र किय, प्रभुहि राज अभिषैक॥
सरद निसा मधि रास किय, लै संग गौपि अनैंक॥ ४२॥
संषचूड कैसी अरिष्ट, इन्हकौं करनौं नास॥
पुनि अक्रूर कौ आवनौं, धरि प्रभु दरसन आस॥ ४३॥
फिरि मधुपुरी पधारनौं, प्रभु कौ अग्रज संजुक्त॥
ब्रज अस्त्रीन कौ विरह दुष, परमानंद सुरुक्त॥ ४४॥
मथुरा पुर दैषन हतन, गज सुकुंवलया पीड॥
चाणूर मुष्टक कंस कौ, हतनौं लषि नर भीड॥ ४५॥
सांदीपन गुर ग्रेहरहि, पढै विद्या सुषसार॥
दछिना मैं गुर सुत मर्यौ, दैनौं ल्याय सुढार॥ ४६॥
कर भलौ जादवननि कौ, बसन मधुपुरी मध्य॥
अग्रज उधव सहित कियै, प्रभु बहु कार्ज प्रसध्य॥ ४७॥
कई बेर मगधैस कौ, लैनौं जीत सुभाय॥
वाकी दीरघ सैंन कौ, हतनौं चित रिस छाय॥ ४८॥
कालजमन करनौं भसम, बसन द्वारका मांहि॥
पारजात तरु ल्यावनौं, सुर पुर तैं भुव ठांहि॥ ४९॥
दुष्ट नृपन कौ मारिबौ, गर्व रुकम कौ गारि॥
हरि ल्यावन रुकमनी कौ, करि घमसांन मुरारि॥ ५०॥
भुजा बांन की काटि कै, भार उतार्यौ स्यांम॥
महादैव जू सौं कियौ, प्रभू महा संग्राम॥ ५१॥
प्रागजौतिस पुर कौ नृपति, भौमासुर जिह नांम॥
ताहि मारि ल्यायै प्रभू, बउत कन्या निज धांम॥ ५२॥
वासुदैव मिथ्या द्विवि, दंतबक्रत्र सिसुपाल॥
संबर सालव पीठ मुरि, अैं मारै सुरसाल॥ ५३॥
बरनन करि तिन्ह महातम, उन्हकौ कीनौं नास॥
कासी पुरी जराय किय, सुद्ध जांह सिव वास॥ ५४॥
कौरव अरु पांडवन सौ, प्रभु करवाय सिंग्राम॥
भार दूर या प्रिथी कौ, कियौ स्यांम सुषधांम॥ ५५॥
बिप्र स्त्राप लगवाय कैं, किय निज कुल कौ नास॥
आत्म बिद्या कौ उद्धवहि, किय उपदेस प्रकास॥ ५६॥
हौन धर्म निरनौं दियौ, उद्धव कौ प्रभु ग्यांन॥
भयै पधारत फैरि निज, लौक कृस्नं भगवांन॥ ५७॥

जुग जुग कौ सुलछिन धरम, ताकौ कलि मधि नास॥
प्रलै सुच्यार प्रकार कौ, उतपति त्रय विधि भास॥ ५८॥
परिछित कौ तन त्याग पुनि, बर्नन साषा वेद॥
कथा मारकंडेय की, अरु बर्नन रवि भेद॥ ५९॥
सूत कहत सौनक अहौ, प्रभु लीला अवतार॥
कर्मनि जुत इतनैं कहै, भेद सु हम्ह निरधार॥ ६०॥
गिरत परत ठौकर लगत, संकट स्थल मंझार॥
पराधीन हौ नै समैं, लै प्रभु नांम सुढार॥ ६१॥
तौ सबही निज पापतैं, ह्वै निवर्त नर आप॥
छूटि सकल संतापि तैं, लहै आनंद अमाप॥ ६२॥
अैसै प्रभु के चरित कौ, कीजै कीर्तन चांहि॥
जिन्ह प्रभाव करिकै लगै, निज चित हितहि उमांहि॥ ६३॥
तब वा नर कै चित्त मैं, ह्वै प्रविष्ट करतार॥
दूरि करत है मैल ज्यौं, रवि टारत अंधियार॥ ६४॥
बहि वांनी झूठी बुरी, जामैं नहिं हरिनांम॥
वा वांनी कै सुनन सौं, कछु न सिद्ध ह्वै कांम॥ ६५॥
अरु बहि वांनी सत्य है, मंगल रूप पवित्र॥
जा वांनी कै मध्य है, प्रभु कौ सुषद चरित्र॥ ६६॥
वांनी बही नवीन है, सुंदर उत्सव कारि॥
सोक सरूप समुद्र की, निश्चै सौषन हारि॥ ६७॥
अरु रचना चित्र विचित्र है, जा वांनी कै मांहि॥
अरु जग करन जु पवित्र हरि, चरित हौय कछु नांहि॥ ६८॥
सो वांनी सुभ पद नांहि, वायस तीर्थ कहाय॥
तामैं विरमत साध नहिं, कछु धीमनहिं लगाय॥ ६९॥
जइसै ठौर असुधहि मैं, हंस न बैठै जाय॥
मग्न हौहिकैं बैठही, मिलि मिलि काग कुभाय॥ ७०॥
छंद बंध अर्थान करि, बहि वांनी ह्वै हीन॥
अरु जिहि पद पद मध्य है, प्रभु कौ चरित सरीन॥ ७१॥
तौ बहि वांनी जक्त कै, पाप करत सब दूरि॥
गावै सुनै बिचारही, साधु हित पूरि॥ ७२॥
वर्जित ह्वै हरि भाव करि, मुक्ति सरूपी ग्यांन॥
सोहू पावत नांहिनैं, सोभा कछू निदांन॥ ७३॥
जिन्ह कर मन कै कियै तै, लहियै मुक्ति सुभाय॥
सौ न समर्पित प्रभू मैं, कियै सौभ नहिं पाय॥ ७४॥

तौ संसारी कर्म जें, सदा अमंगल रूप ॥
तैं कां तै सौभा लहै, समझहु भेद अनूप ॥ ७५ ॥
वरनाश्रम आचार जें, सुनै जिन्हकैं मध्य ॥
जें सब श्री कै निमत अति, परिश्रम करत प्रसध्य ॥ ७६ ॥
जिन्ह प्रांनिन कौ प्रभू कै, पद पंकज गुनसार ॥
देत महा आनंद बहि, परिश्रम टारि अपार ॥ ७७ ॥
प्रभु पद पंकज की करै, छिनकहु सुधि जो कौय ॥
ता सब अघ मिटि जांहि पुनि, अति कल्यांन सु हौय ॥ ७८ ॥
हौय सुधहि अंतहकरन, प्रभु मैं उपजै भक्ति ॥
अनभव जुत बैराग अरु, ग्यांन हौय सुभ सक्ति ॥ ७९ ॥
हे सौनक रिषि तुम्ह बडै, भागवंत निरधार ॥
जिन्हकै मन हरि गुन सुनन, सरधा बढी अपार ॥ ८० ॥
जें निति सबकै हृदै मधि, हरि ईस्वर भगवांन ॥
तिन्हकौ निसदिन भजत हौ, तुम्ह आछै उनमांन ॥ ८१ ॥
मुहि तुम्ह आतम तत्व कौ, सुमरन ध्यावौ आदि ॥
म्हैं सुक मुनि मुष तैं सुन्यौ, अधिक हृदै अहलादि ॥ ८२ ॥
जिहँ बेरा नृप परीछित, अनसन ब्रत लै आप ॥
गंगातट सब रिषिन जुत, बैठ्यौ सथल सथाप ॥ ८३ ॥
जिह बेरा हम्ह सुन्यौ सो, तुम्ह कौ कह्यौ सुनाय ॥
सौ तुम्हहू आछै सुनायौ, अपनौं चित्त लगाय ॥ ८४ ॥
कर्म कहन जिह जोग्य है, अैसै प्रभु करतार ॥
तिह्नैं महातम सब असुभ, निश्चै टारनहार ॥ ८५ ॥
हरि मैं चित्त लगाय जो, सुनै श्रधा सौं आहि ॥
तो बहि प्रांनी आपकौ, करै पवित्र जु सदाहि ॥ ८६ ॥
अैकादसि द्वादसि दिवस, सुनै याहि जो कौय ॥
निश्चै करि या मनुष की, बडी आर्बल हौय ॥ ८७ ॥
निर्जल व्रत करि पढै तौ, सकल पाप मिटि जाय ॥
सुधी हौय भगवांन सौ, प्रीति लगै अधिकाय ॥ ८८ ॥
पुस्कर मथुरा द्वारिका, इन्ह तीर्थन कै मांहि ॥
आत्मा वसि करि व्रतहि करि, धरि निज चित अति चांहि ॥ ८९ ॥
पढै सु श्रीमदभागवत, समझि भेद सुषसार ॥
तौ सब भय दुष समूलहि, दूरि हौहि निरधार ॥ ९० ॥
सुनत बिचारत भागवत, कीर्तन करत उमांहि ॥
याही की पुनि लालसा, लागी रहै सदांहि ॥ ९१ ॥

जुग जुग कौ सुलछिन धरम, ताकौ कलि मधि नास॥
प्रलै सुच्यार प्रकार कौ, उतपति त्रय विधि भास॥ ५८॥
परिछित कौ तन त्याग पुनि, बर्नन साषा वेद॥
कथा मारकंडेय की, अरु बर्नन रवि भेद॥ ५९॥
सूत कहत सौनक अहौ, प्रभु लीला अवतार॥
कर्मनि जुत इतनैं कहै, भेद सु हम्ह निरधार॥ ६०॥
गिरत परत ठौकर लगत, संकट स्थल मंझार॥
पराधीन हौ नै समैं, लै प्रभु नांम सुढार॥ ६१॥
तौ सबही निज पापतैं, ह्वै निवर्त नर आप॥
छूटि सकल संतापि तैं, लहै आनंद अमाप॥ ६२॥
ऐसै प्रभु कै चरित कौ, कीजै कीर्तन चांहि॥
जिन्ह प्रभाव करिकै लगै, निज चित हितहि उमांहि॥ ६३॥
तब वा नर कै चित्त मैं, ह्वै प्रविष्ट करतार॥
दूरि करत है मैल ज्यौं, रवि टारत अंधियार॥ ६४॥
बहि वांनी झूठी बुरी, जामैं नहिं हरिनांम॥
वा वांनी कै सुनन सौं, कछु न सिद्ध है कांम॥ ६५॥
अरु बहि वांनी सत्य है, मंगल रूप पवित्र॥
जा वांनी कै मध्य है, प्रभु कौ सुषद चरित्र॥ ६६॥
वांनी बही नवीन है, सुंदर उत्सव कारि॥
सोक सरूप समुद्र की, निश्चै सौषन हारि॥ ६७॥
अरु रचना चित्र विचित्र ह्वै, जा वांनी कै मांहि॥
अरु जग करन जु पवित्र हरि, चरित हौय कछु नांहि॥ ६८॥
सो वांनी सुभ पद नांहि, वायस तीर्थ कहाय॥
तामैं विरमत साध नहिं, कछु धीमनहिं लगाय॥ ६९॥
जइसै ठौर असुधहि मैं, हंस न बैठै जाय॥
मग्न हौहिकैं बैठही, मिलि मिलि काग कुभाय॥ ७०॥
छंद बंध अर्थान करि, बहि वांनी है हीन॥
अरु जिहि पद पद मध्य ह्वै, प्रभु कौ चरित सरीन॥ ७१॥
तौ बहि वांनी जक्त कै, पाप करत सब दूरि॥
गावै सुनै बिचारही, साधु हित पूरि॥ ७२॥
वर्जित ह्वै हरि भाव करि, मुक्ति सरूपी ग्यांन॥
सोहू पावत नांहिनैं, सोभा कछू निदांन॥ ७३॥
जिन्ह कर मन कै कियै तै, लहियै मुक्ति सुभाय॥
सौ न समर्पित प्रभू मैं, कियै सौभ नहिं पाय॥ ७४॥

तौ संसारी कर्म जें, सदा अमंगल रूप ॥
तैं कां तै सौभा लहै, समझहु भेद अनूप ॥ ७५ ॥
वरनाश्रम आचार जें, सुनै जिन्हकैं मध्य ॥
जें सब श्री कै निमत अति, परिश्रम करत प्रसध्य ॥ ७६ ॥
जिन्ह प्रांनिन कौ प्रभू कै, पद पंकज गुनसार ॥
देत महा आनंद बहि, परिश्रम टारि अपार ॥ ७७ ॥
प्रभु पद पंकज की करै, छिनकहु सुधि जो कौय ॥
ता सब अघ मिटि जांहि पुनि, अति कल्यांन सु हौय ॥ ७८ ॥
हौय सुधहि अंतहकरन, प्रभु मैं उपजै भक्ति ॥
अनभव जुत बैराग अरु, ग्यांन हौय सुभ सक्ति ॥ ७९ ॥
हे सौनक रिषि तुम्ह बडै, भागवंत निरधार ॥
जिन्हकै मन हरि गुन सुनन, सरधा बढी अपार ॥ ८० ॥
जें निति सबकै हृदै मधि, हरि ईस्वर भगवांन ॥
तिन्हकौ निसदिन भजत हौ, तुम्ह आछै उनमांन ॥ ८१ ॥
मुहि तुम्ह आतम तत्व कौ, सुमरन ध्यावौ आदि ॥
म्हैं सुक मुनि मुष तैं सुन्यौ, अधिक हृदै अहलादि ॥ ८२ ॥
जिहँ बेरा नृप परीछित, अनसन ब्रत लै आप ॥
गंगातट सब रिषिन जुत, बैठ्यौ सथल सथाप ॥ ८३ ॥
जिह बेरा हम्ह सुन्यौ सो, तुम्ह कौ कह्यौ सुनाय ॥
सौ तुम्हहू आछै सुनायौ, अपनौं चित्त लगाय ॥ ८४ ॥
कर्म कहन जिह जोग्य है, अैसै प्रभु करतार ॥
तिह्नैं महातम सब असुभ, निश्चै टारनहार ॥ ८५ ॥
हरि मैं चित्त लगाय जो, सुनै श्रधा सौं आहि ॥
तो बहि प्रांनी आपकौ, करै पवित्र जु सदाहि ॥ ८६ ॥
अैकादसि द्वादसि दिवस, सुनै याहि जो कौय ॥
निश्चै करि या मनुष की, बडी आर्बल हौय ॥ ८७ ॥
निर्जल व्रत करि पढै तौ, सकल पाप मिटि जाय ॥
सुधी हौय भगवांन सौ, प्रीति लगै अधिकाय ॥ ८८ ॥
पुस्कर मथुरा द्वारिका, इन्ह तीर्थन कै मांहि ॥
आत्मा वसि करि व्रतहि करि, धरि निज चित अति चांहि ॥ ८९ ॥
पढै सु श्रीमदभागवत, समझि भेद सुषसार ॥
तौ सब भय दुष समूलहि, दूरि हौहि निरधार ॥ ९० ॥
सुनत बिचारत भागवत, कीर्तन करत उमांहि ॥
याही की पुनि लालसा, लागी रहै सदांहि ॥ ९१ ॥

ताहि मनुष तैं सुर पितर, सिध रिषि मनु अवनीस॥
सकल कामनां चहत है नम्रत बिसवाबीस॥ ९२॥
ब्राह्मन ह्वै चव वेद कौ, पाठ करै चितलाय॥
मधु कुल्या धतकुल्या पय, कुल्या दांन जो द्याय॥ ९३॥
इन्हतैं जो कछु हौय पुनि, प्रांनिन कौ सुषदाय॥
सोइ भागवत कै पढै, पुनिफल हौत सुभाय॥ ९४॥
सावधान ह्वै भागवत, पढै समझि सुभ भेव॥
तो नर पावै परमपद, जो प्रभु कह्यौ अजेव॥ ९५॥
जो कौ ब्राह्मन पढै तो, बुधि आछी ह्वै जाय॥
जु नृपति पढै तो सिध लौं, भूपति पदवी पाय॥ ९६॥
वैस्य पाठ जो करै तो, द्रव्य हौहि अनपार।
सूद्र पढै तौ अघन तैं, ह्वै निवर्त निरधार॥ ९७॥
कलि अघ मैटनहार है, श्री भागौत पुरांन॥
और पुरांनन मध्य नहिं, अस प्रभु चरित निदांन॥ ९८॥
श्री भागवत बिच जु कथा, प्रसंग अनैंकन मध्य॥
पद पद मैं भगवांन कौ, बरन्यौ चरित प्रसध्य॥ ९९॥
अज है आतम तत्व है, है अनंत करतार॥
पूरन ब्रह्म अनादि जैं, भक्त बछल सुषसार॥ १००॥
जग उतपति पालन प्रलै, करन काज निरधार॥
सबसक्तनि कौ प्रभु करी, आपसु अंगीकार॥ १०१॥
सिव ब्रह्मा करि सुरन करि, जान्यौ उन्हकौं रूप॥
नमसकार तिन्हकौं करत, म्हैं अति प्रीत संजूप॥ १०२॥
अपनैं सुभग सरूप करि, जें आनंद सरूप॥
जिन्हचित इक हरि कै विषै, लगि रह्यौ पर्म अनूप॥ १०३॥
अैसै श्रीसुकदेव जू, व्यास सुपुत्र बुधिवांन॥
हरि लीला कौ सार इहि, कीनौं प्रगट पुरांन॥ १०४॥
जिन्हकौ मो परिनांम है, हित जुत बारंबार॥
जिन्हकै मुष तैं म्हैं सुन्यौ, इहि पुरांन सुषसार॥ १०५॥

(इतिश्री भागवते महापुराणे द्वादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी
कृते द्वादसोऽध्यायः ॥ १२॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

॥ अथ त्रयोदसोऽध्यायः ॥

(विभिन्न पुराणों की श्लोक संख्या तथा श्री मद्भागवत की महिमा)

॥ श्री सुत उवाच॥

दोहा - सूत कहत जा प्रभू की, वायु वरुन विधि रुद्र॥
दिव्य स्तोत्रनि सौं करत, अस्तुति छौडि बुधि छुद्र॥ १॥
बेद उपनिषद अंग पद, क्रम गावत है जांहि॥
जोगेस्वर जिह ध्यांन धरि, देषत नहिं या मांहि॥ २॥
लहत न जांकै अंत कौ, सुर नर आसुर कौय॥
ता प्रभु कौ परिनांम हौं, करत प्रीत चित गौय॥ ३॥
कच्छप जू की पीठ परि, गिर मंदिराचल राषि॥
मथत भयै सुर असुर मिलि, सिंधुहि अति अभिलाषि॥ ४॥
वा पर्वत कै फिरन मैं, मिट गई पिष्ट षुजारि॥
जांसौ निंद्रा अयगई, कछु आनंद अनुसारि॥ ५॥
स्वांस लैत भय तिह समैं, उन्ह स्वासन अनुभाय॥
बढी तरंगै सिंधु की, सौ अबहूं दरसाय॥ ६॥
सिंधु न तजत म्रजाद निज, उन्ह प्रभु क्रिपा प्रभाय॥
जिन्ह कच्छप जू कै करौ, म्हैरी स्वास सहाय॥ ७॥
पुरांननि की संष्या उपजि, पढनौं सुननौं जोग्य॥
याकौ करनौं दांन पुनि, दांन महातमप्रोग्य॥ ८॥
रु महातम या पाठ कौ, कहौ सुनौ चित लाय॥
याकैं सुननैं तैं सकल, दीरघ पाप पलाय॥ ९॥
ब्रह्म पुरांन दस सहस पंच, सहस सु पद्म पुरांन॥
दोय सहस अरु तीन सै, बिस्नुं पुरांन निदांन॥ १०॥
पुनि चौबीस सहस्त्र है, सिव पुरांन उनमांन॥
सहस्त्र अठारह भागवत, कहियतु महापुरांन॥ ११॥
दोय सह अरु पांच सै, कहियतु नारद पुरांन॥
मार्कंडैय पुरांन है, नव सहस्त्र सुनिदांन॥ १२॥
पंद्रह सहस्त्र रु च्यार सै, अग्नि पुरांन कहाय॥
गनती लिंग पुरांन की, ग्यारह सहस गनाय॥ १३॥
सहस आठ दस जांनियै, ब्रह्म वैवर्त पुरांन॥
श्रीराधावर नांम कौ, तामैं समैं विधांन॥ १४॥
है वाराह पुरांन की, गनति सहस चौबीस॥
गरुड पुरांन प्रमांन है, सुनहुं सहस उगनीस॥ १५॥
सहस इक्यासी अैक सौ, स्कंध पुरांन गनाय॥
कूर्म पुरांन सत्रह सहस, बरन्यौ व्यास सुभाय॥ १६॥

वामन पुरांन सहस दस, बरन्यौ व्यास बिचार ॥
मच्छ पुरांन चवदै सहस, दीरघ गाथ सुढार ॥ १७ ॥
अरु है बारह सहस्त्रहि, ब्रह्मांड पुरांनि मांन ॥
गनती सकल पुरांन की, च्यार लाष उनमांन ॥ १८ ॥
तिन्ह मैं अष्टादस सहस, श्रीभागवत पुरांन ॥
सकल वेद कौ सार है, सुषदाता अप्रमांन ॥ १९ ॥
प्रभु कै नांभी कंज मैं, डरि पैठौ मुष च्यार ॥
तब ताकौ श्रीभागवत, कह्यौ प्रभू करतार ॥ २० ॥
या भागवत पुरांन कै, आद अंत कै मध्य ॥
किय बर्नन बैराग प्रभु, चरित समूह प्रसध्य ॥ २१ ॥
जास कथा सौं सजन सुर, सब पावत आनंद ॥
सकल वेद कौ सार है, इहि पुरांन सुष कंद ॥ २२ ॥
महापुरांन ब्रह्मरूप है, अद्वितीय बस्त अनूप ॥
सब प्रांनिन की मुक्ति कै, निमत्त इहै सद्रूप ॥ २३ ॥
पूरनमासी भाद्रु की, ताकै दिवस सुभाय ॥
सुवरन सिंघासन ऊपरै, भागवतहि पधराय ॥ २४ ॥
द्विज कौ दै संकल्प करि, वेद रीत अनुसार ॥
तौ प्रापति पद कमल की, हौहि मनुष निरधार ॥ २५ ॥
जबलौं और पुरांन सब, आपहि करत प्रकास ॥
तब लौं श्रीमदभागवत, नहिंन परत है भास ॥ २६ ॥
त्रिपत भयै है भागवत, कै रस सौं जें कौय ॥
तिह्नै और रस स्वाद नहिं, लगत कबहुँ चित गौय ॥ २७ ॥
जइसै गंगा नदिन मैं, अमरन मैं भगवांन ॥
कासी पति तू जांनि सिव, साधुन मध्य निदांन ॥ २८ ॥
तइसै है सौनक सुनौ, सकल पुरानन मध्य ॥
है इहि श्रीमदभागवत, श्रैष्ठ सरस प्रसध्य ॥ २९ ॥
अति उज्जल श्रीभागवत, प्रिय बैस्नवन सदाय ॥
तामैं दाता मुक्ति कौ, कह्यौ ग्यांन सुभ भाय ॥ ३० ॥
ग्यांन भक्ति बैराग जुत, कही मुक्ति जा मांहि ॥
पढै बिचारै सुनै इहि, धरि चित्त भक्ति सदांहि ॥ ३१ ॥
तौ प्रांनी संसार तैं, मुक्त हौहि निरधार ॥
तीन ताप कौ दुष प्रबल, हौहि न काहू बार ॥ ३२ ॥
पहल कह्यौ श्रीभागवत, ब्रह्मा सौ भगवांन ॥
बिधि फिरि नारद सौं कह्यौ, करिकैं भलै बषांन ॥ ३३ ॥

नारद व्यास जु सौं कह्यौ, सुक मुनि सुं कह्यौ व्यास॥
सुनि प्रभु गुन मनहरन सुक, सीषै सहित हुलास॥ ३४॥
सुध उज्जल सौं कहि सहित, अम्रत रूप प्रमांन॥
सत्य रूप अैसौ प्रभू, तिन्ह हम्ह धारत ध्यांन॥ ३५॥
बासुदेव साछी सदा, जिन्ह निज क्रिपा प्रकारि॥
विधि सौंश्री भागौत कौ, किय उपदेस बिचारि॥ ३६॥
ता प्रभु कौ परिनांम है, म्हेरौ बारंबार॥
सदा रहौ म्हेरै हिदै, प्रभु कौ ध्यांन सुढार॥ ३७॥
अहि संसार सरूप नैं, डस्यौ परीछित राय॥
ताकौ श्री सुकदेव जू, दीनूं तुरत छुडाय॥ ३८॥
तिन्हकौं मो परिनांम है, नित प्रति हित अनुभाय॥
सदा रहत है मग्न जें, प्रभु सौं चित्त लगाय॥ ३९॥
जनम जनम मैं हे प्रभू, तुव पद पंकज मांहि॥
निश्चै म्हैरे भक्ति हौ, इहि चाहत चित ठांहि॥ ४०॥
तुम्ह प्रभु हौ मो दीन कै, असरन सरन क्रिपाल॥
सरन रावरै प्राप्त भौ, हौं ह्वै मुदित बिसाल॥ ४१॥
लैनौं जिन्ह प्रभु नांम कौ, हरता पाप अपार॥
अैसै प्रभु कौ दंडवत, म्हेरौ बारंबार॥ ४२॥
महापुरांन (श्री) भागवत जु, परमानंद सरूप॥
पुस्कर थल गढ रूप मधि, पूरन भयौ अनूप॥ ४३॥
कूर्म वंस लउवानि पति, नृप (श्री) आनंद रांम॥
बषत कुंवर चहुवांन जिन्ह, ग्रेह धर्मधर वांम॥ ४४॥
जास गर्भ तैं हूं भई, बिच धौलपुर अस्थांन॥
नांम भयौ बृज कुंवरि मो, सबहिंन कहि बतरांन॥ ४५॥
महाराज (श्री) रूपसिंघ, रूप नगर अवनीप॥
तिन्ह सुत (श्री) महाराज हुवै, मानसिंघ कुलदीप॥ ४६॥
जिन्ह सुत सौं सनमंध मो, किय पित मात बिचारि॥
चीरघाट पै मो भयौ, पांनिग्रहन निरधारि॥ ४७॥
परम भागवत रूप जें, प्रभु अवतारि क्रिपाल॥
श्रीवृंदावन नांम जिन्ह, आदि महंत बिसाल॥ ४८॥
जिन्ह म्हैरै सिर हाथ धरि, करी क्रिपा करिदास॥
महामुक्तिदाता दियौ, मंत्र सुसहित हुलास॥ ४९॥
तिन्हकै क्रिपा प्रताप सौं, कहन भागवत चांहि॥
प्रगट भई म्हैरै हिदैं, द्रिढ ह्वै अधिक उमांहि॥ ५०॥

बिद्या गुरू बृजनाथ भट्ट, कह्यौ भागवत भेव॥
तिहँ गुर गमि सौं म्हैं कर्यौ, पुस्तक देवनि देव॥५१॥
सो हरि गुर की क्रिपा सौं, संग सुमित्र पति पाय॥
बर्नन किय श्री भागवत, म्हैं निज मति अनुभाय॥५२॥
संवत विक्रम अष्टादस, बारौतरा निदांन॥
साका सौला सै सतरि, ऊपरि सप्त प्रमांन॥५३॥
क्वार मास पुनि पछ सुकल, तिथि द्वादसी सुढार॥
पूर्न भयौ श्री भागवत, सुभदिन बृहस्पति बार॥५४॥
बृजदासी पै करि क्रिपा, श्री हरि गुरु सुषदाय॥
कियौ मनोरथ पूर्न इहि, दीन जांनि अपनाय॥५५॥
म्हैं म्हैरी मति सम कह्यौ, श्री भागवत बषांनि॥
पढि है साधु सुधारि जे, परम सुजांनि निदांनि॥५६॥
या श्रीमत भागवत कौ, भेद प्रताप अपार॥
लह्यौ जास क्यूं पार हौ, मो मति तुछ निरधार॥५७॥

(इति श्री भागवते महापुराणे द्वादस स्कंधे भाषा ब्रजदासी कृते त्रयोदसोऽध्यायः ॥ १३ ॥)

(इति श्री भागवते महापुराणे महारानी श्री बृजकुँवरी जू कृत भाषा भागवत द्वादस स्कंध पर्जंत संपूर्णम् ॥ पोथी को संवत १८३४ वि. ॥)

(ठिकाना श्री निंबारक पीठ सलेमाबाद)

(श्री श्रुभमस्तु - श्रीरस्तु - श्री कल्याणमस्तु)

(कुल छंद १०२३ - संपूर्ण छंद योगक्रम १९,३७५)

:: इति ::

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

***

महारास का कलात्मक चित्रण (छन्द विराज)

प्रभू रूप रासी। बड़ै ही बिलासी ॥ घनस्यांम रंग । प्रभा अंग अंगं ॥ १२ ॥
प्रसंनं वदंनं। सुसौभा सदंनं ॥ लसै मुक्टं सीसं। महासौभ दीसं ॥ १३ ॥
लटै घुंघरारी। कपौलं विहारी ॥ छुटै बार स्यांमं। जघंलौं सुठामं ॥ १४ ॥
ललाटं उदारं। सुनासा सुढारं ॥ बड़ै नैंन बांकै। मदं मैंन छाकैं ॥ १५ ॥
कटाछै अपारं। मनौं बांन मारं॥ श्रुतं कर्णफूलं। झुमंकं सझूलं ॥ १६ ॥
फबी मोर वारी। सुबेसं सुढारी ॥ चढी उच्च भौंहें। कटाछैंन मौंहैं ॥ १७ ॥
मुषं मंद हासं। सुधा रूप भासं ॥ हृदै ठां विसालं। बनी मुक्त मालं ॥ १८ ॥
लरी दौय मुक्तं। बंधी ग्रीव जुक्तं ॥ वनं माल सोभै। चषं चाह लोभै ॥ १९ ॥
भुजाबंध हीरं। फुंदी झूम सीरं ॥ करं कंज पंत्रं। तिहूं लौक छंत्रं ॥ २० ॥
पहूची पहुंची। लरी मुक्त षंची ॥ अंगूठी नमंतं। झमाझंम कंतं ॥ २१ ॥
मणिं लाल मांनौं। नषं वौप जांनौं ॥ कटिं ठौर छीनं। अलंकार लीनं ॥ २२ ॥
पदं मुक्त दैनं। अभै सुष्ष अैनं ॥ पटं रंग पीतं। तडिंतं जु जीतं ॥ २३ ॥
मनं मोहि लैंहीं। द्रिगं चैंन दैंहीं ॥ लषें नंद कुारं। मनोजं नछारं ॥ २४ ॥
लियै संग गौपी। बडी सौभ वौपी ॥ रच्यौ सांम रासं। अनूपं विलासं ॥ २५ ॥
नचै कृस्न कुारं। चहूं वोर नारं ॥ थट्यौ है संगीतं। रंगीनं जु रीतं ॥ २६ ॥
तथुं थुंग थुंग्गं। धुमाकं धलुंग्गं ॥ झिनं किट झंझं। तुधिं दां मधं धं ॥ २७ ॥
तत्त ता त रंग्गं। थरी त्रक थंग्गं ॥ बुलै [illegible] ऐसे। दृढं ताल वैसै ॥ २८ ॥
गतिं लै सुधंगं। बढावै उमंगं ॥ करै [illegible]। अनेकं विनानं ॥ २९ ॥
बजावै बजिंत्रं। सुरं मेलि सिंत्रं ॥ [illegible]। [illegible] अथाहं ॥ ३० ॥
कटिं ग्रीव मोरै। करं कंज [illegible] ॥ [illegible]। नचे हैं [illegible] ॥ ३१ ॥
कसै भौह वंकं। भरै रीझ अंकं ॥ गतिं लै [illegible]। [illegible] ॥ ३२ ॥
करं कंज फेरैं। तिरंछाय हेरैं ॥ भलैं हाव [illegible]। करैं नृत्त [illegible] ॥ ३३ ॥
पटं पीत छौरं। गहैती सुतौरं ॥ लचंकंन लंकं। नचे है निसंकं ॥ ३४ ॥
डुलै पीठ बैंनी। द्रिगं चैंन दैंनी ॥ बजें नूपुरंगं। [illegible] ॥ ३५ ॥
चरंनं धरंनं। फिरंनं करंनं ॥ गतिं [illegible]। [illegible] चाढे ॥ ३६ ॥
छकें वाह बोलै। हसें ओक लोलै ॥श्रमं [illegible]। [illegible] ॥ ३७ ॥
घनं बीज जोरी। छबिं स्यांम गोरी ॥ श्रमंतं [illegible]। [illegible] ॥ ३८ ॥
थकें बैठ जांहीं। पिया कंठ लांहीं ॥ [illegible]। [illegible] ॥ ३९ ॥
प्रतीतं सुमूलं। लगें चांप फूलं ॥ मनोर्थं फलैंहैं। [illegible] ॥ [illegible] ॥
बढं बार बेलं। रसं नीर मेलं ॥ रिझं पत्र [illegible]। [illegible] ॥ [illegible] ॥
लपटिं रसालं। सुस्यांम तमालं ॥ श्रमंतं [illegible]। [illegible] ॥ [illegible] ॥
जचै आप पानं। पटं लैं सुजांनं ॥ पुंछे बूंद स्वेदं। [illegible] ॥ [illegible] ॥
निहारं बिहारं। थकें चंद तारं ॥ थकें पांन पांनी। [illegible] ॥ [illegible] ॥
थिरं है चलांनं। चरं थाकि थानं ॥ सुरं कैं बिमानं। [illegible] ॥ [illegible] ॥
धनुं बेंनु गानं। सुनिं थांन थानं ॥ मुनिं जोग ध्यानं। [illegible] ॥ ४६ ॥
बढ्यो रंग भारी। बृजदासि वारी ॥ लष्यौ माह रासं। हृदे [illegible] भाव ॥ ४७ ॥

(ब्रजदासी–भागवत १०/३३/१२–४७)

छन्द विराज

मोहनी – अवतार का नखशिख अलंकारिक –चित्रण

प्रसंनं वदंनं। सुसोभा सदंनं । छुटै बार सीसं । महासोभ दीसं ।
बडै नैंन बांकै। बज्र दंत वांकै । चढी ऊँच भोहैं। मनौं चाप सौहैं ॥ क ॥
छबिं धाम नासा। सुगंधाय स्वासा । अछै दोउ जुल्फैं। बिषै जुक्त हुल्फैं।
ससी अर्ध भालं। कपोलं रसालं। करैं कंज पंत्रं। हथेली जु तंत्रं ॥ ख ॥
भुजा चंप डारं। अदाहैं अपारं । उरोजं नवीनं । कटिं ठौर छीनं ।
नितंबं सुढारं। उरं ठां उदारं । जंघं षंभ केरं । पदं मुक्त फेरं ॥ ग ॥
नषं कांति ऐसी। मणी औप जैसी । सजैहैं सिंगारं । अनैकं प्रकारं ।
मिहीं पीत सारी। लरी मुक्त वारी । अलंकार अंगं । जथा जोग बंगं ॥ घ ॥
बन्यौ माल बैनां। द्रिगं चैन दैनां । फब्यौ फूल सीसं । रबिं जोत दीसं ।
लरी मुक्त मांगं। छुटी केस जागं। बिचं भौंह टींकी। मुक्त फूल नीकी ॥ ङ ॥
श्रुतं कर्न फूलं। नथं मूल रूपं । छरा पोति ग्रीवा। सुभं सोभ सींवा ।
तरै जास झुंक्तं। लरी दोय मुंक्तं । कली चंप सोभै । चषैं चाहिं लोभै ॥ च ॥
हराऔ हियै लैं। अनीं मैंन ठेलैं । भुजा बंध हीरं । फुंदी पूच सीरं ।
चुरी नील छाजं। कंकंनं बिराजं । बिछं और ढारं । झुमंकं बिहारं ॥ छ ॥
पहूंचू अगूंठी। मिहींदी अनूंठी । कटिं किंकनी है। निबी बंधनी है ।
गरैं फूल माला। चलै मंद चाला । करं कंज फेरै। तिरंछाय हेरै ॥ ज ॥
तुला पाय बाजं। बजै साज बाजं । झरैं फूल केसं । लंगैहा सुदेसं ।
लज्जा जुक्त हासं। भ्रकुंटी बिलासं । चित्तौनं अनूपं । कटाछं संजूपं ॥ झ ॥
झुकायै सुनैना। बतायै सुसैना । भक्ति जुक्त वानी। कहै जू सयानी ।
धरैं रूप ऐसौ। कहै कौनु जैसौ । सुमोहं सुरूपं । अनंन्त अनूपं ॥ ञ ॥ ७० ॥

(ब्रजदासी–भागवत ८/८/६१–७०)

शुद्धि – पत्र

ब्रजदासी – भागवत (द्वितीय – खंड)

शुद्ध	अशुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	शुद्ध	अशुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
पुरुषन	अस्पष्ट	६२६	१२	ठगै	ढगै	७०१	३५
प्रापति	अस्पष्ट	६४८	२३	कह्यौ कृस्न	अस्पष्ट	७७९	१८
अणु पुरु द्रुहिय	अस्पष्ट	६५८	८	अधिक	अस्पष्ट	७८०	१६
लषि जजाति–सौं रूठि	अस्पष्ट	६५८	९	उदारं ।	(पूर्ण विराम छूट गया)	८०६	२९
प्रणाम	प्रणम	६९५	२३	बेहाल	अस्पष्ट	८५५	०२
				कुंदिन	अस्पष्ट	८९४	८
		भूमिका					
श्रीमद्भागवत	श्रीमद्भावत	१	३६	सांवतसिंह	सावंतसिंह	२०	११

॥ गोपिका गीत ॥

॥ श्री सुक उबाच ॥

करत भई श्रीकृस्नं की, गौपी अस्तुति सुढार। तनमय ह्वै हरि ध्यांन मैं, परम प्रेम अनुसार॥

॥ गोप्य ऊचुः ॥

हे हरि जा दिन तैं प्रगट, भयै आय ब्रजमांहिं। ता दिन तैं बृज की भई, सौभा अति अधिकांहिं॥
तातैं निज दरसन हम्हहिं, दैहूं मित्र सुषदाय। तुम्हहिं लषन लगि आस हम्ह, प्रांन रहै ठहराय॥
पंकज-द्रिग तैं रावरै, लगि कटाछि हिय मांहिं। बिकल भई ढूंढत फिरत, महा सघन बन ठांहिं॥
हे बर दाता सस्त्रहीं, सौं न जीव बध हौय। द्रिग प्रहार सौं जीव बध, हौत सु जांनत कौय॥
हम्ह दासी बिन मोल की, निज दरसन द्यौं स्यांम। तरफत बिनु जल मीन ज्यौं, बिकल भई ब्रजभांम॥
काली दर कौं नीर बिष, व्यौम ब्रषभ दावागि। अति रिस करि बरिषा करी, बासव महा अथागि॥
इन्ह बिघनन तैं तुम्ह करी, रछा हम्हारी नाथ। अबै बिना कारन हम्हहिं, क्यूं मारत निज हाथ॥
अंतरजामी तुम्ह सही, नहिं जसुमति सुत आप। बिधि बिनती सौं प्रगट हुव, जदुकुल विषै सजाप॥
जें तजि भय संसार कौ, झूठी प्रकृति पिछांनि। तुम्ह पद पंकज कैं सरन, आवत भल उनमांनि॥
तिनकौं दाता अभय कैं, सुभग रावरै पांनि। जिनसौं हम्ह सपरस करौं, हे पिय स्यांम सुजांनि॥
तुम्ह सब ब्रजवासीन कैं, दुष कैं टारनहार। गर्ब जगत कौं हरत हौ, निज मुसक्यांन प्रकार॥
हम्ह दासी हैं रावरी, दीजै दरसन सांम। तुम्ह बिनु बिरह कलैस अति, है हम्हकौं या ठांम॥
तुम्ह चरनन कौं करत है, जें प्रांनी परिनांम। तिन्हकैं अघ मिट जात सब, सुष पावत अभिरांम॥
अैसै तुव पद कंवल कौं, दरसन हम्हकौं दैहुँ। टारि हम्हारौ बिरह दुष, द्यो आनंद अछैहुँ॥
मधुरी बौलनि रावरी, मोहि प्रवीननि लैत। तासौ हम्ह मौहित भई, धारि हिदैं अति हैत॥
जिन्हैं अधर रस रावरौ, पिय करवइयै पांन। हाहा अबै जिबाइयै, हम्हकौं सांम सुजांन॥
हासि चितवनौ प्रेम जुत, अदभुत बिबिध बिहार। रहसि बात अैकांत की, दैंनहार सुषसार॥
अैं बातैं पिय रावरी, हे कपटी सुधि आय। अति ब्याकुल हम्हकौं करति, सौं कछु कही न जाय॥
गौचारन कैं काज जब, ब्रज तैं तुम्ह बन जात। तबै सोच हम्हकौं उपजि, हिय अति दुष सरसात॥
कोमल तुम्ह पद कंवल मैं, त्रिन कांकरी गडंत। सौ दुष अति बाढत हम्हहिं, क्यूंहूं सहि न सकंत॥
घूंघरवारी अलक जुत, पंकज बदन रसाल। गौरज सूं मंडित सुभग, अरु द्रिग बंक बिसाल॥
अैंसौ तुम्ह निज मुष हम्हहिं, सांझ समैं दरसाय। उपजावत हौ कांम उर, ब्रज आवत सुषदाय॥
तुम्ह पद पंकज कौं करत, जें कौं जन परनांम। तिन्हकैं सब बिधि हौत है, निश्चै पूरन कांम॥
जिन्ह चरनन की करत हैं, पूजा रमा उमांहिं। जें करता कल्यांन कैं, भुव कैं मंडन आंहिं॥
तैं पद पंकज रावरै, धरहुँ हिदैं हम्ह ठौर। दासि तुम्हारि गौपि सब, अब कीजै पिय गौर॥
बढ़वेन हारौ सुरति कौ, करन सौक कौं नास। जांकौ चुंबन करत है, बंसी सहित हुलास॥
अैसौ अधरा अमृत रस, हम्हकौं दीजै सांम। तुम्ह बिनु ब्याकुल हैं सबै, बिरहाबसि ब्रज भांम॥
बृंदावन बिच दिन समैं, फिरत आप पिय प्रांन। तब तुम्हकौं बिनहीं लषै, छिन भौ कलप समांन॥
घूंघरवारी अलक जुत, तुम्ह मुष कंवल रसाल। हम्ह दैषत जब कहत हैं, बिधिकौं अैसौ साल॥
ब्रह्मा अति मूरष पलक, लगई आंषन ठांम। कोटि कलप बीतत हम्हहिं, छिन बिन देषैं स्यांम॥
पति सुत भाई बंधु तजि, हम्ह आई तुव पास। मुहित भई सुनि बैंन धुन, प्रगट्यौ प्रेम प्रकास॥
अैसी निस मैं तुम्ह बिनां, हम्हकौं छौडे कौंनुं। हे प्रिय कपटी आप अति, हौ निश्चै ब्रिज भौंनुं॥
दुष हरता मंगलकरन, जनम तुम्हारौ स्यांम। दुष हरियै अपनैंन कौं, हे प्रीतम अभिरांम॥
कुच कठौर हम्ह जांनि कैं, तिन्ह परि हे पिय प्रांन। चरन कमल मृदु रावरै, धरतै डरत सुजांन॥
अरु या कानन कैं बिषै, फिरत फिरत घनस्यांम। कांटै कंकर चरन मैं, गडि है प्रिथवी ठांम॥
बुधि हम्हारी भ्रमत है, इही सौच कैं मांहिं। अरु हम्ह जीवनहूं सही, तुम्ह आधीन सदांहिं॥

(ब्रजदासी-भागवत दशम स्कंध पूर्वार्द्ध अ. ३१/१-३७)